1886

1886
107

150670

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

150670

150670

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

श्रीभविष्यपुराण

150670

का

भाषाअनुवाद

بھوکہہ پوران

जिसमें अनेक प्रकार के मनोहर इतिहास चारों वर्णों के धर्म विद्या औ धनकी आवश्यकता स्त्रियों को शिक्षा स्त्री परीक्षा राजा साधारण पुरुष औ स्त्रियों के लक्षण प्रतिपदा आदि तिथियों के व्रतों का उद्यापन औ कथा सहित विधान सर्पों का विस्तार पूर्व्वक वर्णन सर्प चिकित्सा जाति भेदका खण्डन चार वर्णों के भिन्न होने का कारण-सूर्य्यपूजन का विस्तारसे वर्णन शुभ स्वप्नों का वर्णन प्रासाद औ प्रतिमाओं के लक्षण शाकद्वीपीय ब्राह्मणों की उत्पत्ति औ प्रशंसा योग औ भूगोल का वर्णन होने वाले राजाओं का राज्य समय संसार दोषपातक नरक आदि का बर्णन गर्भिणी स्त्री के धर्म- दशधेनु दान का विधान जलाशय देवालय बनाने औ बृक्ष लगाने का फल गोदान विद्यादान धान्याचल आदि दान सदाचार पुराण श्रवण महिमा इत्यादि हज़ारों उत्तम २ विषय विस्तार से वर्णित हैं ॥

जिसको

सद्गुणग्राहक आर्य्यभाषा के हितैषी अवध समाचारपत्र सम्पादक ढूसरवंशावतंस श्रीयुत मुन्शीनवलकिशोरसाहिब के निदेश से काश्मीरेन्द्र महाराज गुलाबसिंह के मुख्य दैवज्ञ श्री पण्डित ब्रजलालजी के पुत्र अलवर प्रान्तवर्ति हमजापुर ग्रामनिवासि चौरासियाख्य ब्राह्मणकुलोत्पन्न वर्त्तमान कालमें जयपुर देशाधीश श्रीमहाराजाधिराज श्री१०८ माधवसिंह जी के आश्रित पण्डित श्रीदुर्गाप्रसादने संस्कृत भविष्यपुराण से आर्य्य भाषा में अनुबाद किया ॥

दूसरीबार

लखनऊ

मुंशीनवलकिशोर के छापेखाने में छापागया

सितंबर सन् १८८६ ई० ॥

HkV
150670

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

बिज्ञापन ॥

इस महीने अर्थात् सितम्बर सन् १८८६ ई० पर्य्यंत जो पुस्तकें बेचनेके लिये तय्यारहैं उनमें से कुछ इससूचीपत्रमें लिखीहैं और उनका मोल बहुत किफ़ायतसे घटाके नियत हुआहै और व्योपारियोंके लिये और भी सस्तीहोंगी जिनको व्योपारकी इच्छाहो वह मुंशीनवलकिशोर के छापेख़ाने मुक़ाम लखनऊ हज़रतगंजके पतेसे ख़तभेजकर क़ीमत का निर्णयकरलें ॥

नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब
(अ)	ऐक्ट २० सन् १८७६ ई०	(ग)
अमरकोषतीनोंकांड	ऐक्ट २६ सन् १८६० ई०	गुटिका तीनोंखण्ड
अध्यात्मरामायणभाषाटीकासहित	ऐक्टमजमूआ अवधलगान १६ सन् १८६८ ई०	गर्गसंहिता
अमृतसागरबड़ा व छोटा	ऐक्ट १८ सन् १८६६ ई०	गरुड़पुराणप्रेतकल्प
अरिथमेटिक तीनों भाग	ऐक्ट २४ सन् १८७० ई०	गणितप्रकाशचारोंभाग
(इ)	ऐक्ट १६ सन् १८७३ ई०	(च)
इलाजुल्गुरबा	(क)	चित्रचन्द्रिका
ईशावास्यबाजसनेयसंहितोपनिषत्	कायस्थकुलभास्कर	चाणक्यनीति
इतिहास तिमिरनाशक	कायस्थविनोद	चौरासीवार्तिक
इंगलिस्तानका इतिहास	कर्मविपाकसंहिता	(छ)
(उ)	कृष्णबाललीला	छन्दोर्णवपिंगल
उमापतिदिग्विजय	कालिंजरमाहात्म्य	(ज)
(ऐ)	कृष्णसागर	जातकालंकार
ऐक्ट १ सन् १८७६ ई०	कथा श्रीगंगाजी	जातकाभरण
ऐक्ट १२ सन् १८८१ ई०	कैवल्यकल्पद्रुम	जगद्विनोद
ऐक्ट १० सन् १८७२ ई०	कृष्णप्रिया	जातकचंद्रिका
ऐक्ट १४ सन् १८८२ ई०	कविकुलकल्पतरु	(त)
ऐक्ट १० सन् १८८२ ई०	कवितरंग	तुलसीकृतरामायण
ऐक्ट १० सन् १८५६ ई०	केनोपनिषत्	तशरीहुलहरूफउर्दूवनागरी
ऐक्ट १० सन् १८७३ ई०	काव्यसंग्रह	(द)
	कवित्वरत्नाकर दोभाग	दुर्गास्तोत्रमूल व सटीक
	कृष्णचालीसी	

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अ०	विषय	पृष्ठसे	पृष्ठतक
	के लिये ग...		
	...नवकी निंदा, मगोंकी उत्पत्ति, शाकद्वीप से		
२३	पुरुषो... ...न	२६५	२६६
२४	पुरुषो... ...क्षन का वर्णन औ उनके विवाहों का		
२५	पुरुषो...	२६६	२७१
२६	राजा... ...बिवाह औ संतानका बर्णन, ..	२७१	२७२
२७	स्त्रिय... ...ा लक्षण औ माहात्म्य, ...	२७२	२७३
२८	गणप... ...ण को अर्घ्य औ धूपदेने का बिधान उनके		
	प्रयोग, ...न, ...	२७३	२७५
२९	तीन... ...प्रशंसा सूर्यमंडल का बर्णन, ..	२७६	२७७
	चतुर्थी ...भगवान् के प्रति ब्यासजी का कहा मग		
३०	पंचम... ...ा बर्णन, ...	२७७	२७८
	शापहो... ...हृदय स्तोत्र, ...	२७६	२८८
	का फल... ...नेवाले राजाओं का बर्णन औ उनके		
	सर्प... ...राय, ...	२८८	२६१
	प्रथ...		
	अव...		
	दंशके ...		
	का...		
	लक्षण...		
	सर्पका...		
२३	बि...		
	धातुओं...		

॥ अग्निपुराणके पूर्व्वार्द्धकासूचीपत्रसमाप्तभया ॥

अ०	
६३	जयं...
६४	अपर...
६५	महा...
६६	नंदी...
६७	भग...

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

भविष्यपुराणके उत्तरार्द्ध का सूचीपत्र ॥

अ०	विषय	पृष्ठसे	पृष्ठतक
१	मंगलाचरण, सुमंतुमुनिके प्रति राजा शतानं का प्रश्न युधिष्ठिर की सभा में व्यास आदि मुनियों का आगमन युधिष्ठिर का प्रश्न व्यासजी वर्णन औ अपने आश्रम प्रति गमन, ...	२९२	२९४
२	सृष्टिकी उत्पत्ति और भूगोल का वर्णन, ..	२९४	२९७
३	नारदजीको विष्णु माया का दिखाना, ..	२९७	३०२
४	संसार के दोषों का वर्णन, ...	३०२	३०८
५	महापातक पातक आदि का वर्णन, ..	३०८	३११
६	शुभाशुभ कर्मोंके फल औ नरकों का वर्णन ..	३११	३१९
७	शकटव्रत कामाहात्म्य, ..	३१९	३२१
८	तिलकव्रतका विधान औ माहात्म्य, ..	३२१	३२२
९	अशोकव्रत का माहात्म्य औ बिधान, ..	३२३	३२४
१०	करबीरव्रतका बिधान औ माहात्म्य, ..	३२३	३२५
११	कोकिल व्रतका बिधान औ माहात्म्य, ...	३२४	३२५
१२	बृहद्व्रत का बिधान औ फल, ...	३२५	३२७
१३	भद्रव्रतका फल औ बिधान, यमद्वितीया का बिधान	३२७	३३१
१४	अशून्य शयन व्रतका बिधान औ फल, .. .	३३२	३३
१५	गोत्रिरात्र व्रतका बिधान औ फल, ...	३३३	३३
१६	हरकाली व्रतकाबिधान औ फल, .. .	३३४	३३
१७	ललिता तृतीया व्रतका बिधान औ फल, ..	३३५	३३
१८	अवियोग तृतीया व्रतका बिधान औ फल, ..	३३७	३३
१९	उमामहेश्वर व्रत का बिधान औ फल, .. .	३३९	३३
२०	सौभाग्य शयन व्रतका बिधान औ फल, ...	३४०	३३
२१	अनंतफलदा तृतीयाका बिधान औ फल. ..	३४२	३३
२२	रसकल्याणिनी तृतीयाका बिधान औ फल ..	३४४	३३
२३	आर्द्रानंद करी तृतीया का बिधान औ फल, ..	३४५	३४६
२४	चैत्रभाद्र औ माघशुक्ल तृतीया का बिधान औ फल,	३४७	३४९
२५	अनतादि तृतीयाका बिधान औ फल, ...	३४९	

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

०	विषय	पृष्ठ से	पृष्ठतक
२६	अक्षय तृतीयाका फल औ बिधान, ...	३५२	३५३
२७	अंगारक चतुर्थीका बिधान औ फल, ...	३५३	३५५
२८	गणपति करके उपद्रुत पुरुष के लक्षण औ गणपति के अभिषेक का बिधान,..	३५५	३५७
२६	बिघ्न विनायक चतुर्थी का विधान औ फल,..	३५७	३५७
३०	शांति ब्रतका बिधान औ फल, ...	३५७	३५८
३१	सरस्वती ब्रतका विधान औ फल, ...	३५८	३५६
३२	नागपंचमी के ब्रत का विधान औ फल, ..	३५६	३६२
३३	श्री पंचमी के ब्रत का विधान औ फल, ..	३६२	३६५
३४	विशोक षष्ठी ब्रत का विधान औ फल, ..	३६५	३६६
३५	कमलषष्ठी का विधान औ फल, ...	३६६	३६७
३६	मंदारषष्ठी का विधान औ फल, ...	३६७	३६८
३७	ललिताषष्ठी का विधान औ फल, ...	३६८	३६६
३८	कुमारषष्ठी का विधान औ फल,..	३६६	३७०
३६	विजय सप्तमी का विधान औ फल, ...	३७०	३७१
४०	आदित्य मंडकदानका विधान, ...	३७२	३७२
४१	वर्ज्य सप्तमीका विधान औफल, ...	३७२	३७३
४२	कुक्कुटी ब्रत का फल औविधान, ...	३७३	३७५
४३	सप्तमी कल्पका विधान औफल, ...	३७५	३७६
४४	कल्याण सप्तमी का विधान औ फल, ...	३७६	३७७
४५	शर्करा सप्तमी का विधान औ फल, ...	३७७	३७८
४६	अचला सप्तमी को स्नान का माहात्म्य औ विधान, ...	३७८	३८०
४७	बुधाष्टमी का विधान औ फल, ...	३८१	३८३
४८	श्रीकृष्णजन्माष्टमी का विधान औ फल, ..	३८४	३८७
४६	दूर्वाष्टमी का विधान औ फल, ...	३८७	३८८
५०	प्रतिमासकी कृष्णाष्टमी का विधान औ फल, ..	३८८	३८६
५१	दत्तात्रेय औ कार्तवीर्य की कथा अनघाष्टमी का विधान औ फल, ...	३८६	३६२
५२	सोमाष्टमी औ अर्कांष्टमी का विधान औफल,	३६३	३६४

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. Digitized by eGangotri Foundation, USA

अ०	विषय	पृष्ठसे	पृष्ठतक
५३	श्रीवृक्ष नवमी का विधान औ फल, ..	३९४	३९४
५४	ध्वज नवमी का विधान औ फल नवदुर्गास्तोत्र,	३९४	३९
५५	उल्का नवमी का विधान औ फल, ...	३९७	३९
५६	दशावतार व्रत का विधान,औ फल, ...	३९८	३९
५७	तारक द्वादशी का विधान, फल औ एक राजा की कथा, ...	४००	४०
५८	अरण्य द्वादशी का विधान, औ फल, ...	४०२	४०
५९	रोहिणी व्रतका विधान औ फल, ...	४०४	४०
६०	अवियोग व्रत का विधान औ फल, ...	४०४	४०
६१	गोवत्सद्वादशी का विधान, फल गौओं का माहात्म्य, मुनियों की कथा, राजा उत्तानपाद की कथा, ...	४०६	४१
६२	गोविंदशयन व्रत का विधान, चातुर्मास्यके नियम,औफल, ...	४१०	४१
६३	सब प्रकारकी शांति करने हारा नीराजन विधान, ...	४१३	४१
६४	भीष्मपंचकका विधान औ फल, ...	४१५	४१
६५	मल्लद्वादशीका विधान, ...	४१६	४१
६६	वामनद्वादशीकाविधान औ फल, ...	४१७	४१
६७	प्राप्तिद्वादशी का विधान औ फल, ...	४२१	४२
६८	गोविंदद्वादशी का विधानऔ फल, ...	४२१	४२
६९	अखंडद्वादशी व्रत का विधान औ फल, ...	४२२	४२
७०	मनोरथद्वादशी का विधान औ फल, ...	४२३	४२
७१	तिलद्वादशी का विधान औ फल, ...	४२४	४२
७२	एक वैश्यकी कथा औ सुकृत द्वादशी का विधान,	४२५	४२
७३	धरणीद्वादशी व्रत का विधान औ फल, ...	४२८	४२
७४	विशोक द्वादशी का विधान औ फल गुड़धेनु आदि दश धेनुओं के दान का विधान, ...	४३५	४३
७५	विभूतिद्वादशी का विधान, फल, औ राजा पुरूरवा-इन की कथा, ...	४३८	४३

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पृष्ठसे	पृष्ठतक	अ०	विषय	पृष्ठसे	पृष्ठतक
३९४	३९४	७६	मदनद्वादशी का विधान औ फल, गर्भिणी के		
३९४	३९७		धर्म, ...	४४१	४४३
३९७	३९८	७७	दुर्गा महिमा औ अंकपाद व्रत का विधान, ..	४४३	४४४
३९८	३९९	७८	दुर्गंधनाशन व्रत का विधान, ...	४४४	४४४
		७९	यमादर्शन व्रत का विधान औ फल, ...	४४४	४४५
४००	४०२	८०	अनंग त्रयोदशी व्रत का विधान औ फल, ..	४४६	४४७
४०२	४०३	८१	पालीव्रत का विधान औ फल, ...	४४७	४४८
४०३	४०४	८२	रंभाव्रत का विधान औ फल, ...	४४८	४४९
४०४	४०५	८३	उतथ्यमुनि औ अंगिरा मुनिकी कथा, शिवच-		
			तुर्दशी का विधान औ फल, ...	४४९	४५४
		८४	श्रवणिका व्रत का विधान औ फल, ...	४५४	४५५
		८५	नक्त व्रत का विधान औ फल, ...	४५५	४५६
४०६	४१०	८६	प्रतिमास की शिवचतुर्दशी का विधान औ फल,	४५६	४५७
		८७	सर्वफलत्याग व्रत का माहात्म्य औ फल, ..	४५८	४५९
४१०	४१३	८८	तारा के निमित्त देवताओं से चन्द्रमा का युद्ध		
			विजय पूर्णिमा व्रत का विधान, फल, औ अमावास्या		
४१३	४१५		को आद्धआदि करने का फल, ...	४५९	४६२
४१५	४१६	८९	वैशाखी कार्तिकी औ माघी पूर्णिमा का वि-		
४१६	४१७		धान औ फल, ...	४६२	४६४
४१७	४१८	९०	युगादि तिथियोंका माहात्म्य औ विधान, ...	४६४	४६५
४२१	४२१	९१	सत्यवान् औ सावित्रीकी कथा- सावित्री व्रत		
४२१	४२२		का विधान औ फल, ...	४६५	४७०
४२२	४२३	९२	कलिंगभद्रा रानी की कथा, कृत्तिका व्रत का		
४२३	४२४		बिधान औ फल, ...	४७०	४७३
४२४	४२५	९३	मनोरथ पूर्णिमा का विधान औ फल, ..	४७३	४७४
न, ४२५	४२८	९४	अशोक पूर्णिमा का विधान औ फल, ...	४७४	४७५
.. ४२८		९५	रानी शीलघना की कथा औ अनंत व्रत का वि-		
घनु			धान औ फल, ...	४७५	४७८
.. ४३५		९६	सांभरायिणी की कथा औ मास नक्षत्र व्रत क		
वा-			माहात्म्य, ...	४७८	४८१
४३८					

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अ०	विषय	पृष्ठसे	पृष्ठतक
९७	वैष्णव नक्षत्र पुरुष व्रत का विधान, ...	४८१	४८३
९८	शैव नक्षत्र पुरुषव्रत का विधान औ फल, ...	४८३	४८४
९९	संपूर्ण व्रतका विधान, औफल, ...	४८४	४८६
१००	वेश्याओं को कल्याण देनेहारे काम व्रत का विधान औफल, ...	४८६	४८९
१०१	बृन्ताक त्याग विधान औ फल, ...	४८९	४८९
१०२	ग्रह नक्षत्र व्रत का फल सहित विधान	४९०	४९१
१०३	पिप्पलाद मुनिकी कथा औ शनैश्चर व्रत का विधान तथा फल, ...	४९२	४९४
१०४	संक्रांति व्रत का विधान औ फल, ...	४९४	४९४
१०५	भद्रा की कथा, भद्रावत का विधान औ फल, ...	४९५	४९७
१०६	अगस्त्य मुनि के चरित्रों का वर्णन, अगस्त्य दानका विधान औ फल, ...	४९७	५००
१०७	नवीन चन्द्र को अर्घ्य देने का विधान, ...	५०२	५०३
१०८	शुक्र औ बृहस्पति को अर्घ्य देने का विधान, औ फल, ...	५०२	५०३
१०९	पंचाशीति व्रतोंका फल सहित विधान, ...	५०३	५१३
११०	माघ स्नानका विधान, ...	५१३	५१५
१११	नित्य स्नान का विधान औ तर्पणकी विधि,	५१५	५१७
११२	रुद्रस्नान का विधान औ फल, ...	५१७	५१८
११३	ग्रहणारिष्ट हर स्नान का बिधान,	५१८	५२०
११४	मरण का विधान, ...	५२०	५२२
११५	तड़ाग आदि की प्रतिष्ठा का विधान, समुद्र स्नानकी विधि औ तड़ाग आदि बनाने का फल,	५२२	५२६
११६	वृक्षलगाने का माहात्म्य, औ बृक्षोद्यापन का विधान, ...	५२७	५२६
११७	देवे प्रसाद बनाने का देवप्रतिमा स्थापन का औ देवता को गंधादि उपचार समर्पण करने का फल, ...	५२६	५३०
११८	देवालय में दीपदान का विधान, फल औ न-		

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अ०	विषय	पृष्ठसे	पृष्ठतक
	लितानाम एकरानो की कथा, ...	५३०	५३३
११९	वृषोत्सर्ग का विधान औ फल, ...	५३३	५३४
१२०	होलिका की उत्पति औ फल सहित विधान,	५३४	५३७
१२१	दमनकोत्सव औ दोलोत्सव का फल सहित विधान, ...	५३७	५४०
१२२	रथयात्रा का विधान औ फल, ...	५४०	५४३
१२३	कामदेव का चरित औ मदनत्रयोदशी का विधान, ...	५४३	५४५
१२४	भूतमाता के उत्सव का विधान, ...	५४५	५४७
१२५	रक्षाबंधन का विधान, ...	५४७	५५०
१२६	महानवमी का विधान, ...	५५०	५५६
१२७	इन्द्रध्वज का विधान, ...	५५६	५५८
१२८	दीपमाला की कथा औ विधान, ...	५५८	५६१
१२९	ग्रहयज्ञ, अयुतहोम औ लक्ष होम का विधान,	५६१	५६६
१३०	कोटि होमका विधान, ...	५६६	५६९
१३१	महाशांति का विधान, ...	५६९	५७१
१३२	दानकी प्रशंसा गोदान का विधान औ फल,	५७२	५७४
१३३	तिलधेनुका विधान औ फल, ...	५७४	५७६
१३४	जलधेनु का विधान, फल, औ मुद्गल मुनि की कथा, ...	५७६	५७९
१३५	घृत धेनु का विधान औ फल, ...	५७९	५८०
१३६	लवण धेनु का विधान औ फल, ...	५८०	५८१
१३७	सुवर्ण धेनु दान का विधान औ फल, ...	५८१	५८२
१३८	रत्नधेनु के दान का विधान औ फल, ...	५८३	५८३
१३९	उभय मुखी धेनु के दान का विधान औ फल, ..	५८३	५८४
१४०	बृषभ दान का विधान औ फल, ...	५८४	५८५
१४१	महिषी दान का विधान औ फल, ...	५८५	५८६
१४२	मेषी दान का विधान औ फल, ...	५८६	५८७
१४३	भूमि दान का विधान औ फल, ...	५८७	५८९
१४४	सुवर्ण भूमि दान का विधान औ फल, ...	५८९	५९०

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अ०	विषय	पृष्ठसे	पृष्ठतक
१४५	हल पंक्ति दान का विधान औ फल, ...	५९०	५९२
१४६	राजाबभ्रुवाहन की कथा औ अपाक दानका विधान,	५९२	५९४
१४७	गृहदान का विधान औ फल, ...	५९४	५९५
१४८	अन्नदान का माहात्म्य राजा श्वेत की कथा औ एक वैश्य की कथा, ...	५९५	५९९
१४९	स्थालीदान का विधान औ फल, ...	५९९	६०१
१५०	दासीदान का विधान औ फल, ...	६०१	६०२
१५१	प्रपादान औ जल दान का विधान, औ फल,	६०२	६०४
१५२	शीतकाल में अंगीठी दान का विधान, औ फल,	६०४	६०५
१५३	पुस्तक दान औ विद्यादान का बिधान औ फल,	६०५	६०६
१५४	तुलादान का विधान औ फल, ...	६०६	६११
१५५	हिरण्यगर्भ दान का विधान औ फल, ...	६११	६१४
१५६	ब्रह्मांड दान का विधान औ फल, ...	६१४	६[illegible]
१५७	भुवन प्रतिष्ठा का विधान औ फल, ...	६१६	६[illegible]३
१५८	नक्षत्र दान का फल सहित विधान, ...	६१९	६२[illegible]
१५९	तिथि दान का फल सहित विधान, ...	६[illegible]	६२[illegible]
१६०	वराह दान का विधान औ फल, ...	६२५	६२६
१६१	धान्याचल के दान का विधान औ फल, ...	६२६	६२[illegible]
१६२	लवणाचलके दान का विधान औ फल, ...	६२८	६२९
१६३	गुड़ पर्वत के दानका बिधान औ फल, ...	६२९	६३०
१६४	सुवर्ण पर्वतके दान का विधान औफल, ...	६३०	६३१
१६५	तिल पर्वत के दान का विधान औ फल, औ तिलों की उत्पत्ति सहित प्रशंसा, ...	६३१	६३२
१६६	कर्पासाचल दान का विधान औ फल, ...	६३२	६३३
१६७	घृताचल दान का विधान औ फल, ...	६३३	६३४
१६८	रत्नाचल दान का विधान औ फल, ...	६३४	६३६
१६९	रजताचल दान का विधान औ फल १ राजाकी कथा,	६३६	६३६
१७०	सदाचार निरूपण, ...	६३६	६४५
१७१	पुराण श्रवण आदि का माहात्म्य और पुराणसमाप्ति,	६४५	६४६

भविष्यपुराणके उत्तरार्द्ध का सूचीपत्र समाप्तमया॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

भविष्य पुराण ॥

पूर्वार्द्ध ॥

पहिला अध्याय ॥

दो० बिबुध मुकुट मणि दीपिका नीराजित दिन रैन ।
बिघन हरैं हेरंबके चरण कमल सुख दैन ॥ १ ॥
भजौ नित्य गौरी गिरिश सकल सिद्धि के हेतु ।
भक्त मनोरथ कल्पतरु भवसागर के सेतु ॥ २ ॥

अथ कथा प्रारम्भ ॥

एकसमय व्यासजीकेशिष्य सुमन्तुमुनि पाण्डववंश के राजा शतानीककी सभामें जातेभये राजानेभीमुनिकोदेख बहुतआदर सत्कारकरउत्तम आसनपर बैठाया औ भलीभांति उनका पूजन कर करजोर विनयसे प्रार्थनाकरी कि महाराज आपके आगमन से हमसपरिवार कृतार्थभये और आपऐसे महात्माओंका आगमन केवल परोपकारकेही अर्थ है क्योंकि आप तो परमेश्वर के परमभक्त हैं इसीसे सदा कृत कृत्य हैं अब आपके मुखारबिन्द से अमृतभरी बाणी श्रवण कियाचाहते हैं कि जिसके श्रवणसे अनेक पातक निवृत्त हों औ शुभ फलकी निरन्तर प्राप्ति होय यह राजाका वचनसुन प्रसन्नहो सुमंतु मुनि बोले कि हे राजा हम आपको भविष्य पुराणका श्रवण कराते हैं जिस के श्रवण

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

करने से ब्रह्महत्या आदि बड़े २ पातक बिलाय जाते हैं इस-
पुराण में पांचपर्व ब्रह्माजीने कहेहैं पहिलाब्रह्मपर्व दूसराबिष्णु
पर्व तीसरा शिवपर्व चौथा त्वाष्ट्र पर्व औ पांचवां प्रतिसर्ग नाम
पर्वहै ये पांचतो पर्वहैं औ पुराण में पांच लक्षण होतेहैं उनको
हम कथन करतेहैं सर्ग प्रति सर्ग वंश मन्वंतर औ वंशानुचरित
इन पांच लक्षणों से युक्त औ(चौदह विद्याओं करके युक्त पुराण
होता है चारवेद उनके छः अङ्ग पुराण धर्मशास्त्र मीमांसा औ
न्याय ये चौदहविद्याहैं आयुर्वेद धनुर्वेद गांधर्व औ नीतिशास्त्र
के मिलने से अठारह विद्या होजाती हैं/हे राजा अब हमभूतों
के सर्गका अर्थात् जीवोंकी उत्पत्ति का वर्णन करते हैं जिसके
सुनने से सब पाप निर्मुक्त होय मनुष्य को शांति प्राप्तहोती है
पूर्व कालमें यह सम्पूर्ण जगत् अंधकारसे व्याप्त था औ किसी
पदार्थका लक्षण नहीं विदित होताथा उस समय सूक्ष्म
न्द्रिय औ सर्व भूतमय परमात्मा की सृष्टि करनेकी इच्छ
औ प्रथमही परमेश्वरने जलको सिरजा औ उसमें अपना
डाला जिससे देवता असुर मनुष्यआदि सब जगत् उत्पन्नभ
बीज शुक्र रेत उग्रवीर्य्य आदिनामब्रह्माजीने वीर्य्यके कहेहैं क
वीर्य्यजलमें गिरनेसे अत्यंत प्रकाशवान् सुवर्णका अण्डहोगया
उस अण्ड के मध्यसे सब लोगों के रचनेहारे ब्रह्मा जी उत्पन्न
भये क्षेत्रज्ञ पुरुष वेधा शम्भु नारायण बिरंचि कमलासनआदि
सबनाम ब्रह्मकेहीहैं औ येशब्द आपसमें पर्यायशब्दहैं अर्थात्
इन सब शब्दों का एकही अर्थहै जलका नाम नारहै और जल
नरसूनुहै वह नार अर्थात् जल उसका अयन अर्थात् निवास-
स्थानहै इसलिये उसको नारायण कहतेहैं उस सत् असत् रूप
अव्यक्त नित्य कारण से उत्पन्न भये इससे उनका नाम ब्रह्मा
भया ब्रह्माजीने बहुतकाल ध्यानकिया औ उस अण्डके दोखण्ड

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by eGangotri Foundation USA

केये एक खण्डसे भूमि औ दूसरे से आकाश को रचा औ आठौ
दिशा तथा बरुणका स्थान अर्थात् समुद्र बनाया महत्तत्त्व अहं-
कार तीनगुण येहीसब भूतोंकी उत्पत्तिके हेतुहैं प्रथम परमात्मा
ने आकाशको उत्पन्नकिया औ पीछे क्रमसे बायुआदि तत्त्वरचे
औ देवताओं के तुषित आदिगण ग्रह नदी समुद्र पर्बत आदि
उत्पन्न कर कालके बिभाग औ ऋतु कल्पना किये काम क्रोध
आदिको रच कर्मों के बिबेकके लिये धर्म औ अधर्म को सिरजा
औ भांति २ की प्रजासिरज कर उनको सुख दुःख आदिद्वंद्वोंसे
युक्त किया जो कर्म जिसने पहिले कियाथा वह कर्म उसको
आपही प्राप्तहोगया हिंस्र अर्थात् हिंसा करनेहारा अहिंस्र मृदु
क्रूर धर्म अधर्म सत्य असत्य आदिजीवों को आपही प्राप्त भये
जिस ऋतु में वृक्षके पुष्प फल आदि आपही प्राप्त होतेहैं लोक
की वृद्धिके अर्थ ब्रह्माजीने अपने मुखसे ब्राह्मण भुजासेक्षत्रिय
ऊरु अर्थात जांघसे बैश्य औ चरणों से शूद्रों को उत्पन्न किया
ब्रह्माजी के पूर्ब मुखसे ऋग्बेद उत्पन्न हुआ उसको बशिष्ठमुनि
ने ग्रहण किया दक्षिण मुखसे यजुर्बेद प्रकट भया वह याज्ञ-
बल्क्यमुनिने पाया पश्चिममुखसे सामबेद निकला वह गौतम
ऋषिने धारण किया औ उत्तरमुख से अथर्बण बेदकी उत्पत्ति
भई वह शौनकऋषिने ग्रहणकिया औ ब्रह्माजीके लोक प्रसिद्ध
पंचम मुखसे अठारह पुराण इतिहास औ स्मृति उत्पन्न भईं
इस भांति चारबेदों को उत्पन्न कर ब्रह्माजीने अपने देहके दो
भागकिये दहिने भागको पुरुष औ बांयें भाग को स्त्री बनाया
औ उनसे बिराट् उत्पन्न भया औ भांति २ की प्रजा उत्पन्न
करनेकेअर्थ बहुतकाल तपकिया औ प्रथम दश ऋषियोंको उत्पन्न
किया जो प्रजापति कहलाये उनकेनाम येहैं नारद भृगु प्रचेता
पुलह क्रतु पुलस्त्य अत्रि अंगिरा औ मरीचि जो पहिला प्रजा-

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पतिहै इसभांति औरभी बड़े २ तेजस्वी उत्पन्न किये पीछे देवता
ऋषि दैत्य यक्षराक्षस पिशाच गंधर्ब अप्सरा पितरमनुष्य नाग
सर्प आदिकों के अनेक गण उत्पन्न किये बिजली बादल बज्र
इंद्रधनुष धूमकेतु अर्थात् पूंछलतारे उल्का निर्घात औ नक्षत्र
आदिरचे किन्नर बानर मत्स्य शूकर पक्षी हाथी घोड़े मृगकीट
पतंग मक्खी मच्छर आदि छोटे २ जीव सिरजे इस भांतिब्रह्मा
जीने सब सृष्टिकोरचा जिनजीवों का जैसा कर्म है और जन्म
जो क्रमहै अब हम वह बर्णन करतेहैं हाथी मृग भांति २ के
पशु पिशाच मनुष्य आदि जरायुज हैं मत्स्य कछुवे मगरअनेक
प्रकारके पक्षी अण्डज हैं अर्थात् अण्डे से उत्पन्न होतेहैं मक्खी
मच्छर जूं खटमल आदिजीव स्वेदज हैं अर्थात् पसीने की ऊष्म
से उपजते हैं वृक्ष औषधी आदि उद्भिज्ज हैं अर्थात् भूमिके
उद्भेदन करके उत्पन्न होतेहैं जो फलके पकनेतक रहैं औरपी १३
नष्ट होजायँ वे औषधी कहातीहैं बिना पुष्प जिनकेफललगें
बनस्पतिहैं पुष्प औ फल करके जो युक्त होयँ उनको वृक्ष कहते
हैं इसी भांति गुल्म बल्ली प्रतान आदि और भी भेद जानो
ये सबबीज से औ काण्डसे अर्थात् उसवृक्षकी छोटीसी शाखा
काट कर भूमिमें गाड़देने से उत्पन्नहोतेहैं वृक्षआदिभी अंतः
संज्ञ हैं अर्थात् हृदयमें सुख दुःख आदि सब समझते हैं परन्तु
कर्मरूप घोर तमसे घिररहेहैं इसहेतु मनुष्योंकी भांतिबातचीत
आदि नहीं करसक्ते इस प्रकार यह अति बिचित्रसंसार ईश्वर
से उत्पन्न हुआहै जबवह परमात्मा निद्राबशहोकर शयनकरता
है तबयह सब संसार उसमें लीन होजाताहै औ जब निद्राका
त्याग करता है तब सब सृष्टि उत्पन्न होतीहै औ जीव पहिली
भांति अपने २ धंधेमें लगते हैं कल्पके प्रारंभमें सृष्टि औकल्प
के अन्तमें प्रलय परमेश्वर करता है कल्प परमेश्वरका दिनहै

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by S3 Foundation USA

इस कारण परमेश्वर के दिनमें सृष्टि औ रात्रिमें प्रलय होताहै हे राजाशतानीक अब हम कल्प की संख्या कहते हैं अठारह निमेष अर्थात् आंखके झपकनेसे एककाष्ठाहोतीहै अर्थात् जितने कालमें अठारह बार नेत्रका निमेष होय उतने कालको काष्ठा कहते हैं तीस काष्ठाकी एककला तीसकलाका एकक्षण बारह क्षणका एकमुहूर्त्त तीसमुहूर्त्तका एकदिनरात तीसदिनरात्रि का एकमहीना दोमहीनों का एकऋतु तीनऋतु का एक अयन दो अयनका एकबर्षहोताहै इसप्रकार सूर्य भगवान् दिनरात्रिकरके कालके विभागकरते हैं सम्पूर्णजीव रात्रिकोबिश्रामकरतेहैं औ दिनमें अपने२ कर्ममें प्रवृत्त होते हैं इसीभांति पितरोंका दिन रात्रि एकमहीनेका होताहै अर्थात् शुक्लपक्ष रात्रि औ कृष्णपक्ष दिन होता है देवताओंका अहोरात्र एकबर्षकाहै अर्थात् उत्तरायण दिन औ दक्षिणायन देवताओंकी रात्रि गिनीजाती है अब ब्रह्माजी के दिन रात्रि औ युगोंका प्रमाण कहते हैं सत्ययुग चारहजार बर्षका है औ आठसौ बर्ष उसकी सन्ध्या औ सन्ध्यांशहैं अर्थात् चारसौबर्षसंध्या औ चारसौबर्ष संध्यांशगिनाजाता है इसीभांति तीनहजार बर्ष का त्रेतायुग होता है औ तीनर२ सौबर्ष के उसके संध्या संध्यांश हैं द्वापरयुग दोहजार बर्षकाहै और चारसौबर्ष द्वापरके सन्ध्या सन्ध्यांश हैं कलियुग का प्रमाण एकहजारबर्ष है औ दोसौबर्ष कलि के सन्ध्या औ संध्यांश गिनेजाते हैं ये सब बर्ष मिलके बारहहजार बर्ष होते हैं यही देवताओं का एकयुग कहलाता है देवताओं के हजार युगहोनेसे ब्रह्माजीका एकदिन होताहै औ यहीप्रमाण उनकी रात्रिका है अर्थात् एकहजार युगकीही ब्रह्माजी की रात्रिहोती है जब ब्रह्माजी अपनी रात्रिके अन्तमें सोकर उठते हैं तब सत् असत्रूप मनको उत्पन्न करते हैं वह मनसृष्टिकरने की इच्छा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

से विकारको प्राप्तहोता है तब उससे आकाश उत्पन्न होता है जिसका गुण शब्दहै आकाश विकृतहोता है तब अतिबलवान् वायुको उत्पन्न करता है जिस वायुका गुण स्पर्शहै इसीप्रकार वायु से रूपगुण करके युक्त तेज तेजसे रसगुण करके युक्त जल औ जलसे गंधगुण युक्त भूमिकी उत्पत्ति होती है जो हम ने बारह हजार बर्षका एक दिव्ययुग कहा वैसे इकहत्तरयुग होनेसे एक मन्वंतर होताहै औ ब्रह्माजीके एकदिन में चौदह मन्वंतर व्यतीत होतेहैं अब युगों की व्यवस्था कहते हैं सत्य युगमें धर्म के चारों पाद वर्तमान रहतेहैं फिर त्रेताआदि युग में क्रम से एक २ चरण घटता जाता है सत्ययुग के मनुष्य आरोग्य धर्मनिष्ठ सत्यवादी होते हैं औ चारसौ बर्ष तकजी हैं फिर त्रेता आदि युगों में इन सब बातोंका एक २ चतुर्थ न्यून होताजाता है त्रेता के मनुष्यों का आयुष तीन सौ द्वापर के मनुष्योंका दो सौ औ कलियुग के मनुष्योंका अ एकसौ बर्ष होताहै औ इन चारों युगों में धर्म भी भिन्न भांति केहैं सत्ययुग में तप त्रेतामें ज्ञान द्वापरमें यज्ञ औकलि युग में दान करनाहीं मुख्यहै ब्रह्माजीने सम्पूर्णसृष्टिकीरक्षाके हेतु अपने मुख भुजा ऊरु अर्थात् जांघ औ चरणों से ब्राह्मण आदि चार वर्ण उत्पन्न किये पढ़ना पढ़ाना यज्ञ करना यज्ञक राना दान देना औ दान लेना येछः कर्म ब्राह्मण के अर्थ नि यत कियेगये पढ़ना यज्ञकरना दानदेना प्रजाकाप इच्छ करना औ विषयों का भोग करना ये सब बातें क्षत्रिनकर लिये कल्पित की गईं पढ़ना यज्ञ करना दान देना प निद्राका करना खेती करना व्यापारसे धन संपादन क पहिली- श्योंके लिये ठहरायेगये औ शूद्रके लिये इनतीष्ट औकल्प करना यही मुख्य कर्म नियत कियागया

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by eGangotri Foundation USA

से ऊपरका भाग उत्तमहै उसमें भी मुख प्रधानहै और ब्राह्मण ब्रह्म के मुख से उत्पन्न हुआ इसलिये ब्राह्मण सब से उत्तम है यह वेदकी श्रुति है ब्रह्मा जी ने बहुत काल तप करके ब्राह्मण को उत्पन्न किया इससे ब्राह्मण सृष्टि भरका स्वामी है देवता और पितर हव्य औ कव्यको मुख से भक्षण करते हैं औ ब्राह्मण मुख स्वरूप है इसलिये सबमें प्रधान है सब भूतों में प्राणी श्रेष्ठहै प्राणियोंमें बुद्धिमान् बुद्धिमानोंमेंमनुष्य, मनुष्योंमें ब्राह्मण ब्राह्मणोंमें विद्वान् विद्वानों में कृतबुद्धि कृतबुद्धियों में कर्म्म करनेहारे औ कर्म्मकरनेहारोंमें भी ब्रह्मवेत्ता श्रेष्ठहोते हैं ब्राह्मण काजन्म धर्म्मसम्पादन करनेके लियेहै औ धर्म्मके आचरणसे ब्राह्मण ब्रह्मलोकको जाताहै धर्म्मकी रक्षा औ सृष्टिकी उत्पत्ति केलिये ब्राह्मणकाजन्महै सृष्टिमें जितने पदार्त्थहैं सबकास्वामी [illegible]ण है ब्राह्मण अपने धन का उपभोग करता है और वर्ण [illegible]णकी कृपासे ब्राह्मणकेही धनसे अपना कालक्षेप करतेहैं [illegible]वर्णोंके भाव औ अभावकरनेमें ब्राह्मण समर्त्थहै जो प्रसन्न [illegible]तो तीनों वर्णोंका कल्याण औ क्रोधकरै तो तीनों वर्णोंका अभाव करसक्ताहै इसलिये ब्राह्मण सदा पूजनीयहै ब्राह्मण के आगे किसीका प्रभुत्व नहीं चलसक्ता ब्राह्मण अपनी इच्छासे स्वर्ग में जाता है स्वर्ग से महर्लोक महर्लोक से जनलोक को चलाजाता है औ ब्रह्मत्वको भी प्राप्तहोता है इतनी कथासुन राजा शतानीक बोले कि हे सुमन्तुमुनि ब्रह्मलोक औ ब्रह्मत्व अति दुर्गिनै किनगुणों करकेयुक्त ब्राह्मण ब्रह्मलोक को जाता है औ देवताको प्राप्तहोता है यह आप कृपाकरके वर्णनकरें युगहोनेसे ब्रह्मवचनसुनि मुनिनेकहा कि हे राजा जिसब्राह्मणके रात्रिका है अथदे अड़तालीस संस्कार विधिपूर्बक हुयेहों वही है जब ब्रह्माजी क औ ब्रह्मत्वको प्राप्त होताहै संस्कारही ब्रह्म-

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

असत्रूप मनको

लोककी प्राप्तिका कारणहै यहसुन राजानेकहा कि हे मुनीश्वर
जी वे संस्कारकौनसेहैं आपसुनाइये तब मुनिबोले कि हे राजा
आपने बहुतअच्छा प्रश्नकिया वेदमें औ शास्त्र में जो संस्कार
कहेहैं वे हम वर्णनकरतेहैं गर्भाधान पुंसवन सीमन्त जातकर्म
नामकरण अन्नप्राशन चौड़मेखला चारप्रकार का वेदव्रतस्नान
बिवाह पंचमहायज्ञोंकाकरना जिनसे देवता पितर मनुष्य भूत
औ ब्रह्मकी तृप्तिहोतीहै अष्टकाश्राद्ध पार्वणश्राद्ध श्रावणी आ-
ग्रहायणी चैत्री आश्वयुजी अग्निहोत्रदर्श पौर्णमास चातुर्मास्य
निरूढ़पशुबंध सौत्रामणी अग्निष्ठोम अत्यग्निष्ठोम षोड़शी बा-
जपेय अतिरात्र औ सप्तसोम ये सबब्राह्मणके संस्कारहैं औआ
गुणभीब्राह्मणमें होनेचाहिये जिनसेब्रह्मकी प्राप्तिहोतीहै वेये
अनसूया दया क्षांति अनायासमङ्गल अकार्पण्य शौच औ स्पृह
अब इनआठ गुणोंके लक्षणसुनिये गुणीके गुणों को न छिप
निर्गुणीकीभी स्तुतिकरना दूसरेके दोषसे भी अप्रसन्न न ह
अनसूया कहाता है अपने में परायेमें मित्रमें औ शत्रुमें अ
समान वर्तना औ दूसरेका दुःखदूर करनेकी इच्छारखन्मै
कानाम दयाहै मन बचन कर्म करके कोईपुरुष दुःख देवे तौभ
उसपर क्रोधनकरना इसको क्षमाकहतेहैं अभक्ष्यवस्तु नखाना
निन्दितपुरुषोंका संगनहीं करना औ आचारमें रहना इसका
नाम शौचहै जिस शुभ कर्म करके भी शरीर को कष्टहोय उस
कर्मको अत्यन्त नकरना यही अनायासहै नित्य भलेकाम करना
औ बुरेकर्मोंको त्यागना इसको मंगलकहतेहैं कष्टसे उपार्जित
कियेहुये धनसे भी थोड़ाबहुत नित्यदेना इसकानाम अकार्पण्य
है ईश्वर की इच्छा से जो थोड़ा बहुत मिलजाय उतने ही में
संतुष्ट होजाना औ पराये धनकी इच्छा न रखना इसका नाम
स्पृहा है इन आठगुणों औ संस्कारों करके जो ब्राह्मण युक्तहो

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

य वही ब्रह्मत्व को प्राप्त होय ब्रह्मलोक को जाताहै निषेकआदि वैदिक पवित्र संस्कारों से शरीर को शुद्ध करनाचाहिये जिसकी गर्भशुद्धि हो औ सब संस्कारहुये हों औ वर्णाश्रमधर्म्मका आचरणकरता रहै वह अवश्य मुक्तिपाता है यह निश्चय इसपुराण का है इन संस्कारों को जो सुने अथवा पढ़ै वह ऋद्धि लक्ष्मी कीर्ति धन धान्य यश पुत्र बन्धु औ उत्तमरूप को पाता है औ कुछ काल सूर्य्यलोकमें रहकर ब्रह्मलोकमें प्राप्तहोता है॥

दूसरा अध्याय॥

इतना सुन राजा शतानीक ने कहा कि महाराज इनसंस्कारोंके लक्षण औ वर्णाश्रम धर्म्म आप मुझे श्रवण कराइये यह राजा का बचन सुन सुमन्तुमुनि कहने लगे कि हे राजा गर्भाधान पुंसवन सीमन्त जातकर्म्म नामकरण अन्नप्राशन चौड औ उपवीत इन संस्कारोंकरके बीजके औ गर्भके सबदोष निवृत्त होतेहैं औ स्वाध्याय व्रत होम महायज्ञ यज्ञ औ इज्यादि करि यह शरीर ब्रह्मरूप होजाता है नालच्छेदन से पहिले जात कर्म्म होता है जिससे वेदके मन्त्रों करके सुवर्ण शहत औ घृत का बालक को प्राशन करायाजाता है दशवें दिन बारहवें दिन अठारहवें दिन अथवा एकमहीना पूरा होनेपर नामकरणअच्छे मुहूर्त्त में कियाजाता है उससमय ब्राह्मणका नाम मंगलदायक रखना चाहिये जैसा शिव शर्मा क्षत्रियका बल युक्त नाम जैसा इन्द्रवर्मा वैश्य का धन युक्त जैसा धनवर्द्धन औ शूद्र का नाम जुगुप्सित अर्थात् बुरा रखनाचाहिये जैसा सर्व्वदास औ मनु जीने कहाहै कि ब्राह्मण के नाममें शर्म्मा लगा देना क्षत्रियका नाम रक्षायुक्त वैश्य का पुष्टि संयुक्त और शूद्र का दासांतनाम रखना अर्थात् जिसके अंतमें दास आदि शब्दहों औ स्त्रियों का

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नाम ऐसा रखनाचाहिये कि जिसके बोलने में कष्ट न पड़े क्रूर न हो अर्थ स्पस्ट और अच्छा हो जिसके सुननेसे मनप्रसन्नहो मंगल दायक आशीर्बाद युक्त औ जिसकेअन्त में आकार ईकार आदि दीर्घ स्वरहों बारहवें दिन अथवा चौथे महीने बालक को घरसे बाहर लेजाना छठे मास अन्नप्राशन कराना पहिले बर्ष अथवा तीसरे बर्ष चूड़ाकर्म अर्थात् मुण्डन करना गर्भसे आठवें बर्षमें ब्राह्मण का यज्ञोपवीत गर्भसे ग्यारहवें में क्षत्रियका औ गर्भसे बारहवें बर्ष में वैश्य का करनाचाहिये परन्तु ब्रह्मबर्चस की इच्छावाला ब्राह्मण पांचवेंबर्षमें बलकी इच्छावाला क्षत्रि छठें बर्षमें औ धनकी कामना वाला वैश्य आठवें वर्षमें अपने बालकों का यज्ञोपवीत करैं सोलहबर्ष तक ब्राह्मण बाईस ब तक क्षत्रिय औ चौबीस बर्षतक वैश्य गायत्रीके अधिकारीरह ते हैं इसके अनन्तर गायत्री के अधिकारी नहींरहते औ ब्र कहाते हैं जब तक ब्रात्यस्तोमनामक संस्कार उनका न कि जाय तब तक शुद्ध नहीं होते इन ब्रात्यों के साथ आपत्ति कभी पठन पाठन का अथवा विवाह आदिका सम्बन्ध न यज्ञोपवीत के समय तीन वर्णों के लियेक्रम में तीन चर्म होतेहै सिंहका रुरुनाम मृगका औ बकरे का इसीप्रकार तीनप्रकारके वस्त्र शणके अलसी के औ भेड़की उनके तीनवर्णोंके लिये कहे हैं तीन लड़ी की सुन्दर चिकनी मूंज की मेखला ब्राह्मण के लिये मुरानाम तृणकी क्षत्रिय के लिये औ शण तन्तुओं की वैश्य के लिये कहीहै मूंज आदि न मिले तो कुशा अश्मतक औ बल्वज नाम तृणकी मेखला बनावै मेखला को तिलड़ा करके एकतीन अथवा पांच ग्रन्थि उसमेंलगावै ब्राह्मण कर्पासके सूत्रकायज्ञो पवीत पहिने क्षत्रिय शणके सूत्रका औ वैश्य भेड़के ऊनकाज नेऊ धारण करै ब्राह्मण विल्व औ पलाश के काष्ठका दण्डशिर

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

तक ऊंचा धारे क्षत्रिय बड़ और खैरके काष्ठका दंड मस्तक पर्यंत ऊंचा ग्रहण करै औ वैश्य पीपल औ गूलर के काष्ठकादंड नाशिका पर्यंत ऊंचा धारण करै ये दंड सूधे चिकने और व्रण रहित होने चाहिये यज्ञोपवीत के समय माता बहिन अथवा मौसीसे पहिले भिक्षा मांगे जो इसका अपमान न करै वह भी सुवर्ण चांदी औ अन्न इसकेपात्रमें डाले इसभांति भिक्षाग्रहण कर गुरुके आगे निबेदन करै औ गुरु की आज्ञापाय आचमन कर पूर्वाभिमुख बैठ उसी अन्नको भक्षणकरै पूर्वको मुखकरके भोजन करनेसे आयुष की वृद्धिहोतीहै दक्षिणको यशकोपश्चिम को लक्ष्मीकी औ उत्तरको सत्यकी आचमन करके एकाग्रचित्त हो उत्तम अन्नको भोजन करै औ भोजन करके फिर आचमन कर सब इंद्रियों को जलसेस्पर्श करै अन्न की नित्य स्तुतिकरै औ [illegible] को देख प्रसन्न होजाय औ हर्षसे भोजन करै कभी अन्न [illegible] निंदा नकरै यह मनुजीकी आज्ञाहै पूजित अन्नके भोजनसे [illegible] औ तेजकी वृद्धि होतीहै औ निन्दित अन्नके भोजनसे दोनों [illegible] हानि इस कारण सदा सुंदर अन्नको भोजन करै उच्छिष्ट किसीको नदेवै औ भोजन करके जिस अन्नको छोड़देवे उसको फिर न भक्षणकरै अर्थात् बार २ में छोंड़कर भोजन न करैएक बार बैठकर तृप्ति पूर्बक भोजन कर लेवे जो पुरुष बीच २ में बिच्छेद करके भोजन कर्त्ताहै उसके दोनोंलोक नष्टहोतेहैं जिस भांति पूर्बकाल में धनबर्द्धन नाम वैश्य के भये यहसुन राजाने पूछाकि महाराज वैश्यने क्योंकर भोजनकिया औ उसकोक्या फल प्राप्तहुआ यह आप बर्णनकरैं तब सुमंतु मुनि बोले किहे राजा सत्ययुग में एक धनबर्द्धन नाम वैश्य पुष्कर में रहताथा एकदिन ग्रीष्मऋतुमें मध्याह्नके समयबलि वैश्वदेव करअपने पुत्र मित्र बन्धुआदि के संग बैठा भोजन करता था इतने में

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अकस्मात एक बड़ा दीन शब्द बाहर हुआ वह उस शब्द को सुनतेही दयासे भोजन छोड़ उठधाया बाहर गया तब तकवह शब्द निवृत्त होगया और वैश्य ने भी अपने घर में आय उसी भोजन को खाया जो पात्र में छोड़गया था भोजन करतेही वह मृत्युबशहुआ औ इसीअपराध से परलोक में भी उसकी दुर्गति भई इसलिये अन्तर करके भोजन न करे अधिक भोजन भी न करै औ उच्छिष्ट होकर अर्थात् जूठेमुख से कहीं बाहर न जाय बहुतखानेसे रसकी उत्पत्ति होतीहै औ रसहोने से अनेकभांति के रोगशरीरमें खड़ेहोतेहैं जब अजीर्णहोय तब स्नान,दान,जा होम,तर्पण,पूजा,पाठ, आदि कोईकर्म नहींबनपड़ता अति भो जनकरने से अनेकरोग उत्पन्न होतेहैं आयुष घटताहै लोक नि निन्दा होती है औ अन्त में सद्गति भी नहीं होती इसकारण कभी बहुतभोजन न करै जो पुरुष उच्छिष्टहो उसको यक्ष पिशाच राक्षस आदि दबालेतेहैं औ पबित्रपुरुषके समीप आते इससे सदाशुचि रहनाचाहिये पवित्रमनुष्य यहां सु रहताहै औ अन्तमें स्वर्गमें जाताहै इतनासुन राजानेपूछा हे मुनीश्वर ब्राह्मण कौनकर्म से पवित्र होताहै यहआप वर्णन करैं यहराजाका वचनसुनि मुनि कहनेलगे कि हे राजाविधिसे जो ब्राह्मण आचमनकरे वह पवित्र होजाताहै औ आचमनकी विधि यहहै कि हाथ पांव धोय पवित्रस्थान में आसनके ऊपर पूर्बकीओर अथवा उत्तरकीओर मुखकरके बैठे औ दहिनेहाथको जानु के भीतरकर दोनोंचरण बरोबररख शिखामें ग्रंथिलगाय निर्मल औ शीतल जलसे आचमन करै खड़े२ बातकरते इधर उधर देखते शीघ्रता से और क्रोधयुक्त होकर आचम न न करै और गरमजलसे अथवा मलिनजलसेभी आचमननकरै ब्राह्मण के हाथमें पांचतीर्थहैं देवतीर्थ पितृतीर्थ ब्रह्मतीर्थ प्राजापत्य

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by eGangotri

वअौ सौम्य अब इनके लक्षण कहते हैं अँगुलियोंके आगे देवतीर्थ तर्जनी और अंगुष्ठ के बीच पितृतीर्थ अंगुष्ठ केमूल में ब्रह्मतीर्थ कनिष्ठा के मूल में प्राजापत्यतीर्थ औ हाथ के मध्य भाग में सौम्य तीर्थ है देव पूजा औ बलि देव तीर्थ से करै औ ब्राह्मण को दक्षिणाभी देव तीर्थसेही देवै तर्पण पिण्डदानआदि कर्म्म पितृतीर्थ करके करै ब्रह्मतीर्थ करके आचमन करै विवाह केसमय लाजाहोम औ सोमपान प्राजापत्य तीर्थकरके करै कमण्डलु ग्रहण औ दधिप्राशन नाम कर्म्म सौम्य तीर्थसे करै हाथकी अँगुलियों को इकट्ठाकर एकाग्र चित्तहो तीनआचमन पवित्रजल करै औ मुखसे शब्द नकरै उसको बहुत फल होताहै पहिले आचमन से ऋग्वेद की तृप्तिहोतीहै दूसरे आचमन से यजुर्वेद औ तीसरे से सामबेदकी तृप्तिहोतीहै आचमनकरके दहिने हाथ से जल करके मुखको स्पर्श करै तो अथर्वणवेदकी तृप्ति होवै ओष्ठके मार्जन से इतिहास औ पुराणों की तृप्ति होतीहै शिर में अभिषेक करनेसे रुद्रभगवान् प्रसन्नहोते हैं शिखाके स्पर्श से ऋषि दक्षिण बामनेत्र के स्पर्शसे सूर्य औ चन्द्र नासिका स्पर्शसे बायु करणों के स्पर्श से दिशा भुजाके स्पर्श से यम कुबेर बरुण इन्द्र अग्नितृप्त होतेहैं पैर धोनेसे बिष्णु भगवान् प्रसन्न होते हैं भूमिमें जल छोड़ने से वासुकि आदि नागसंतुष्ट होते हैं औ बीचमें जो जल बिन्दुगिरें उनसे चार प्रकारके भूत ग्राम की तृप्ति होतीहै अंगुष्ठ औ तर्जनीसे नेत्र स्पर्श करै अंगुष्ठ अनामिका से नाशिका अंगुष्ठ मध्यमा से मुख अंगुष्ठ कनिष्ठासे कर्ण औ सब अँगुलियोंसे भुजाओंको स्पर्श करै अंगुष्ठ करके नाभि औ सब अँगुलियों से शिरको स्पर्श करै अंगुष्ठ अग्निरूप है तर्जनी बायु रूप मध्यमा प्रजापति रूप अनामिका सूर्यरूप औ कनिष्ठा इन्द्र रूप है इस बिधि से ब्राह्मण आचमन करै तो

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

संपूर्ण जगत् देवता औ लोक तृप्तहोते हैं ब्राह्मण सदा पूजनी
है क्योंकि वह सर्ब देव मय है ब्राह्मतीर्थ करके आचमन क
अथवा प्राजापत्य औ देवतीर्थ करके करै परंतु पित्रतीर्थ कर
कभी आचमन न करै ब्राह्मण इतने जल से आचमन करै
जल हृदय तक जाय तब पवित्र होता है क्षत्रिय कण्ठ त
जाने से औ वैश्य जलके प्राशन मात्र से शुद्ध होजाता है
शूद्रभी जलके स्पर्श से शुद्ध होता है दहिनाहाथ उठारहै
बामके ऊपर यज्ञोपवीत रहै उसको उपवीत कहतेहैं बामह
उठे रहनेसे प्राचीनावीती औ जिसका जनेऊ कंठमें लटकै व
निवीती कहाता है मेखला मृगचर्म दंड यज्ञोपवीत औ कम
डलु इनमें से कोई बस्तु नष्ट होजाय तो आचमन कर दूस
वस्तु का ग्रहण करै उपवीती होकर औ दहिने हाथको जा
अर्थात् घुटने के भीतर रख कर जो ब्राह्मण आचमन करै
पवित्र होजाताहै ब्राह्मणके हाथकी सब रेखा गंगा आदि
हैं औ अँगुलियों के पर्ब हिमालय आदि पर्बत हैं इसलिये
ह्मण का दहिना हाथ सर्ब देवमय है हे राजा हमने जा
आचमनका बिधानकहा इसबिधिसेजो आचमन करै वह अवश्य
स्वर्ग्ग को जाय॥

तीसरा अध्याय॥

सुमंतु मुनि कहते हैं कि हे राजा केशांत नाम संस्कार
ब्राह्मण का सोलहवें वर्षमें क्षत्रिय का बाईसवें में औ वैश्यका
पचीसवें वर्ष में होता है केशांत संस्कार होनेके अनंतर चाहै
तो गुरु के घरमें रहै अथवा अपने घरमें आय बिवाह कर
अग्नि होत्रका ग्रहणकरै स्त्रियोंकेलिये मुख्य संस्कार विवाह है
हे राजा यह उपनयन का बिधान हमनेकहा अब इसके आगे

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वका कर्म्म कहते हैं शिष्य का यज्ञोपवीतकर गुरु पहिले उसको शौच आचार सन्ध्योपासन औ अग्निकार्य्य सिखावे औ वेद पढ़ावै शिष्यभी आचमनकर उत्तराभिमुख बैठि दोनों हाथोंकरके ब्रह्मांजलि बांध एकाग्र चित्त हो वेद पढ़ै पढ़ने के आरम्भ औ समाप्ति में गुरुके चरणोंका बंदनकरै पढ़ने के समय दोनोंहाथों की जो अंजली बांधीजातीहै उसको ब्रह्मांजली कहते हैं शिष्य दहिने हाथ से गुरु का दहिना चरण औ बायें से बायां ग्रहण करै पढ़ने के आरम्भ में (अधीष्वभोः) यह वाक्य शिष्य से गुरु कहै औ समाप्ति के समय (विरामोस्तु) यह वाक्य कहै वेद पढ़नेके समय आदिमें औ अन्तमें ओंकारका उच्चारणकरै बिना ओंकारके उच्चारण करने से फल नहीं होता पहिले पवित्र हो कर प्राणायाम करै पीछे ओंकार का उच्चारण करै प्रजापतिने अकार उकार औ मकार ये तीनवर्ण तीनों वेदोंका सारनिकाला जिनसे ओंकार बनता है औ भूःभुवःस्वः ये तीनों व्याहृति औ गायत्री के तीन पाद तीन वेदों से निकले हैं इसलिये जो ब्राह्मण दोनों सन्ध्याओं में इसको जपै वह वेद पाठके फलको प्राप्त होता है जो घरके बाहर नदी के तट पर बैठ एक सहस्र गायत्रीनित्यजपै वह बड़ेभारी पापसेभी एकमहीने में छूटजाता है जो ब्राह्मण क्षत्रिय औ वैश्य अपनी क्रिया से हीन होते हैं उनकी साधु पुरुषों में निन्दा होतीहै औ परलोकमेंभी कल्याण के भागी नहीं होते इसकारण कर्म्मका त्याग न करनाचाहिये प्रणवतीन व्याहृति औ त्रिपदा गायत्री ये सब मिलके जो मंत्र होताहै वही ब्रह्माका मुखहै इसको जो तीनबर्ष नित्य जपै वह परब्रह्म में लीन होता है होम दान यज्ञ आदि क्रियाओं का क्षरण अर्थात् नाश होजाता है औ प्रणवस्वरूप एकाक्षर ब्रह्म अक्षर है विधि यज्ञों से जपयज्ञ उत्तमहै जपों में भी उपांशु जप

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

करने से सौगुणा फल होता है औ मानस जपसे सहस्र गुण
संपूर्ण विधि यज्ञ जप यज्ञकी सोलहवीं कला को भी तुल्यता
नहीं करसक्ती ब्राह्मण को सब सिद्धि जपसे ही प्राप्त होती हैं
औरकुछकरैअथवा नकरै परन्तु ब्राह्मणको गायत्रीजप अवश्य
करना चाहिये क्योंकि ब्राह्मण मैत्र कहलाता है तारा दीखते
होंयतब प्रातःसंध्याका आरम्भकरै औ सूर्य्योदय पर्यंतगायत्री
जप करतारहै इसी भांति सूर्य्यास्त से पहिलेही सायं सन्ध्या
का आरम्भ करै औ तारादर्शनतक गायत्रीजपै प्रातःकालकी
संध्यासे रात्रिके किये पाप दूरहोते हैं औ सायंसंध्यासे दिनके
किये इसलिये दोनोंकालकी संध्या अवश्य करनी चाहिये जो
दोनों संध्या न करै वह शूद्रके समान होताहै घरके बाहरजल
जलके तटपर गायत्रीजप औ संध्या करने से बहुतफलहैसंध्या
के मंत्र होम मंत्र और जो ब्रह्म यज्ञ आदि नित्यकर्म्महो
मंत्रों के उच्चारण में अनध्याय का विचार न करै यज्ञोप
अनन्तर समावर्त्तन संस्कारतक गुरुके घर में रहै भूमि
करै औ सर्वप्रकारसे गुरुकी शुश्रूषा करतारहै औवेदपढ़ै
पूछे किसीको न बोलै औ जो अन्यायसे पूछै उससे भी कुछन
कहै जानताहुआ भी जड़कीभांति होजाय जो अधर्मसे पूछै औ
अधर्म्म से कहै वहदोनों नरकमें जातेहैं औ जगत्में भी सबके
अप्रिय होतेहैं जिसको पढ़ानेसे धर्म अथवा अर्थकी प्राप्तिनहो
औ वह कुछ शुश्रूषा भी नकरै उसको कभी न पढ़ावै क्योंकि
ऐसे विद्यार्थीको विद्यादेनाऊषरमें बीज बोनाहै विद्या ब्राह्मण
से यह कहती है कि मेरी भली भांति रक्षाकर तो मैं तेरे लिये
शेवधिहूं औ असूयावाले पुरुष को मुझे मतदे जिससे बलवती
रहूं सेवनाम सुख औ ज्ञानका है इन दोनों को जो धारण करै
वह शेवधि कहलाती है अर्थात् सुख और ज्ञानके देनेहारीऔर

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

बिद्या यहभी कहती है कि जोब्राह्मण शुचिब्रह्मचारीओ प्रमादसे रहितहो उसको मुनेदे जो गुरुकेबिनावेदशास्त्र आदिको आपही ग्रहण करै वह अति भयंकर रौरव नरकमें बास कर्ताहै जिससे वेदपढ़ै सदा श्रथम उसको प्रणामकरै केवल गायत्री जानताहो परंतु श[illegible]की मर्यादा में चलै वह सबसेउत्तमहै ओ जो सब वेद ओ शास्त्र जान कर भी मर्यादा में न रहै सब वस्तु भोजन करै ओ सब पदार्थबेंचै वह अधम है गुरु के आगे शय्या अथवा आसन आदि पर न बैठै जो बैठाहोय तो गुरुको आतेदेख नीचे उतर कर अभिवादन अर्थात् प्रणाम करै वृद्धको आतेदेख तरुणपुरुष के प्राण ऊपर को उठते हैं जब वह वृद्धकोअभ्युत्थान अरुर प्रणाम करलेवै तब फिर ठिकाने आजाते हैं जो पुरुष [illegible]की सेवाकरै ओ उनको प्रणाम आदिकरै उसके आयुष यश ओ बलकी वृद्धि होतीहै बड़े को जब अभिवादन करै अपना नाम लेवैकि मैं अमुक शर्मा आपको अभिवादन अथवा केवल इतनाही कहै कि मैं प्रणाम करताहूं गुरु अभिवादन सुनकर आशीर्बाद देवै कि(आयुष्मान्भव)अर्थात् बड़े आयुषवाला हो जो अभिवादन के अनंतर प्रत्यभिवादन अर्थात् लौट कर अभिवादनकरना न जाने उसको कभी अभिवादन न करै वह शूद्र के तुल्यहै ओ जो अभिवादन करनेपर अभिमानसे प्रत्यभिवादन न करै अथवा आशीर्बाद न देवै वह नरक को जाताहै ब्राह्मण को कुशल पूछै क्षत्रिय को अनामय वैश्य को क्षेम ओ शूद्र को आरोग्य पूछै जो यज्ञकी दीक्षालिये हो वह चाहै अपने से छोटा भी हो परन्तु उसको नाम लेकर नहीं पुकारना पराई स्त्रीको जिससे कुछ संबंध नहो उसको भवती सुभगे भगिनि इनसंबोधनों से बोलै पितृव्य अर्थात्चाचा ओ ताऊ मामा श्वशुर गुरुक गुरु इनको सदा उत्थान देवै

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by eGangotri Foundation USA

मासी मामी सासु बूआ अर्थात् पिताकी बहिन औ गुरु की
ये सब मान्य हैं बड़े भाई को जो सवर्णा स्त्री उसका नित्य
आदर करै औ माताके समान जानै वह बिष्णु लोक पावैमा
की बहिन पिताकी बहिन औ अपनी बड़ी बहिन ये तीनों
माता के समान होती हैं परंतु माताका आदर सबसे अधि
रखना चाहिये बड़ापुत्र मित्र औ भानजा इनको अपने समा
समझै दश वर्षका ब्राह्मण हो औ सौबर्ष का क्षत्रिय परन
उनमें पितापुत्रका संबंधहोताहै अर्थात् ब्राह्मण पिता औक्षत्रि
पुत्र इस भांति ब्राह्मण क्षत्रिय का पिता वैश्य का पितामह अ
शूद्रका प्रपितामह होताहै धन बंधु अवस्था आचरण औ बिद्
ये पांचो बड़ाईके हेतुहैं इनमें पहिले से दूसरा औ दूसरेसे
सरा तीसरेसे चौथा औ चौथेसे पांचवां अधिक हैं अति वृ
भी मानके योग्यहोता है अति वृद्ध रोगी भारयुक्त स्त्री ऋ
राजा इनको रस्तादेना चाहियेअर्थात् ये आगेसे आते
मार्गछोड़ अलगखड़ाहोजाय औ बिवाह करने के अर्थ
जाताहोय उस को भी मार्ग देवै इनमें जो दो तीन आगे
आजावैं तो ऋषी औ राजा मुख्य हैं औ इन दोनो में भी ऋषि
प्रधान है जो यज्ञोपबीत करके शिष्य को रहस्य औ कल्प के
सहित वेदपढ़ावै उसको आचार्य्य कहतेहैं जो वेद का एकभाग
अथवा वेद के अंगजीविका के अर्थ पढ़ावै उसकी उपाध्या
संज्ञा है जो निषेक अर्थात् गर्भाधान आदि सब संस्कार करै
औ खानेकोअन्नदेवै उसको गुरुकहतेहैं जो अग्निष्टोम आदियज्ञ
वरणी लेकर जिसके अर्थ करै वह उसका ऋत्विक् कहलाता है
जो पुरुष के दोनों कान वेदसे भरताहै औ पबित्र करताहै वही
माता पिता है उसके साथ कभी द्रोह न करना चाहिये उपा
ध्याय से दश गुणा गौरव आचार्य का औ आचार्यसे सौगुणा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पूर्व तृप्ति होतीहै घरके
पिताका औ पिता से भी हजार गुणे दूर हो तौ भी
चाहिये जन्मदेने हारा औ वेद पढ़ाने हा त्याग करने
परन्तु वेद पढ़ाने हारा मुख्य है क्योंकि ब्राह्मण कर कोई
तो वेद पढ़नेसेही होताहै औ माता पिता तो काम रहने
करतेहैं ये उपाध्याय आदि जितने पूज्य हमने कहे इन
अधिक गौरव के योग्य महा गुरु होताहै औ चारों वर्णों में
जनीय है यहसुन राजानेपूछा कि महाराज उपाध्याय आदि
लक्षण तो मैंने सुने अब कृपाकर महागुरुका लक्षण भी वर्णन
कीजिये यह राजा का वचनसुन सुमन्तुमुनि ने कहा कि हेराजा
जो ब्राह्मण जपोपजीवीहो अर्थात् जपसे अपना उपजीवनकरै
औ अठारह पुराण रामायण भारत विष्णुधर्म्म आदित्यधर्म्म
र्म्म औ वेद इन सबको भली भांति जाने वह महागुरु
है वह सबकापूज्यहै हेराजाशतानीक जो जिसको थोड़
ढ़ावै वह उसका गुरुहोताहै चाहै अवस्थामें छोटाहीहो
बालक वृद्धका भी पिता होसक्ताहै पूर्बकालमें अंगिर
बालक पु त्र वृहस्पति बड़े वृद्ध पितरोंको पढ़ाताथा औ
पढ़ाने के समय यह कहता कि हे पुत्रो भली भांति पढ़ो पि-
तर बालक के इसवच औ को सुन क्षोभ कर देवताओं के समीप
गये औ सब वृत्तान्त क का तब देवताओंने कहा कि हे पितरोजो
अज्ञ हो अर्थात् कुछ न जानता हो वह बालक कहाताहै औ जो
पढ़ावै वह पिता गिना जाता है न तो अवस्था अधिक होने से
न श्वेत केश होनेसे औ बहुतसे मित्र बंधु होनेसे बड़ाहोता
है ऋषियों ने यह धर्म योजित कियाहै कि जो विद्यामें अधिक
हो वही सबसे वृद्ध गिना माय ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य औ शूद्रों
में जो ज्ञान बल जन्म शील विद्याआदि से बड़ा हो वही बड़ा
होताहै शिरके बालश्वेत हो जाने से वह नहींहोता

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

भी हो परन्तु भलीभांतिविद्या सम्पादनकरलेवै उसी को वृद्ध जानो जैसे काठ हाथी अथवा केवल चर्म्मका मृग किसी काम का नहींता इसी भांति बिना पढ़ा ब्राह्मण नाम मात्र को ब्राह्म है जिस भांति स्त्रियोंका परस्पर समागम निष्फल होह जैसे मूर्ख को दानदेना बिफलहै इसीभांति वेदसे हीन ब्राह्मणका जन्म वृथाहै जो वेदपढ़के भी वैश्वदेव आदिकर्म न करै वह शूद्रके समान है जो वेद न पढ़ै वैश्यकी वृत्तिकरै शूद्र की सेवाकरै नटवृत्ति चोरी औ चिकित्सासे अपना निर्बाहकरै वह भी शूद्रही कहाताहै जिस ग्राममेंवेदबिना पढ़े औ व्रतसे हीन ब्राह्मणोंको भोजनमिलै वह ग्राम राजाको दंडनीयहै वेद पढ़कर अग्निहोत्रका ग्रहणकरै तब वेदपढ़ना सफलहै यह वे[illegible] मेंही लिखाहै जो वेद पढ़कर अग्निहोत्र नहींकरते उनका[illegible] पढ़ने का परिश्रम वृथा होताहै वेद कहतेहैं कि जो हमव[illegible] कर हमारा अनुष्ठान न करै वह हमारे पढ़नेका व्यर्थक्लेश [illegible] ताहै इसलिये वेद पढ़कर वेदमें कहेहुये कर्मोंको अनुष्ठा[illegible] तब वेदपढ़ना सफलहै वेदकोजानकर जो [illegible] तीन आगे वही उपदेश ठीकहै जो मूर्ख वेद बिना [illegible] हैं औ इन दोनो में भी ऋषि हैं वे बड़े पापके भागी होतेहैं शौचसेहीन शिष्य को रहस्य औ कल्प के ब्राह्मणको जो अन्नदियाजाताहै वह अ[illegible]र्य कहतेहैं जो वेद का एकभाग क्या पाप कियाथा जो ऐसेमूर्ख ब्राह्म[illegible] अर्थ पढ़ावै उसकी उपाध्याय अन्न जो जपोपजीवीको दियाजाय तो [illegible]र्भाधान आदि सब संस्कार करै मेरे बड़े भाग्यहैं जो ऐसे पात्रमें आ[illegible]गुरुकहतेहैं जो अग्निष्टोम आदियज्ञ ब्राह्मण जब घरमें आवै तब सब औकरै वह उसका ऋत्विक् कहलाता है अतिप्रसन्न होतीहैं औ कहतीहैं कि[illegible]दसे भरताहै औ पबित्र करताहै वही जायगी व्रत वेद औ जपसे हीन [illegible]थ कभी द्रोह न करना चाहिये उपा- [illegible] नाव नदीके पारव आचार्यका औ आचार्यसे सौगुणा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कोहीहव्य कव्य देनेसे देवता औ पितरोंकी तृप्ति होतीहै घरके समीप मूर्ख ब्राह्मण रहताहो औ विद्वान् घरसे दूर हो तौ भी विद्वान् को ही बुलाकर दानदेना मूर्ख ब्राह्मण का त्याग करने में कुछ दोष नहीं क्योंकि प्रज्वलित अग्नि को छोड़कर कोई बुद्धिमान् भस्ममें हवन नहीं करताहै परन्तु घरके समीप रहने हारा ब्राह्मण जोगायत्री मात्रभी जानता होय तो उसका त्याग न करै जो उसका त्यागकरै तो रौरवनरकको जाय क्योंकि ब्रा- ह्मणचाहै निर्गुणहो वा गुणवान् परन्तु गायत्री जानता होयतो [illegible]म देव स्वरूपहै परन्तु पतित न होय धान्यसे हीन ग्राम औ [illegible] बिन कुए जैसे किसी अर्थनहींआते ऐसेही बिनापढ़ाब्राह्मण [illegible] ब्राह्मणकेसाथ स्नेहसे अथवाभयसे भोजनआदिका [illegible]ाररक्खै वह ब्रह्महत्या समान पातक को प्राप्तहोताहै सब [illegible]ों को अहिंसासे शासन करै औ सदामीठा सच्चावचन बोलै [illegible]नके मन औ बचन शुद्धहैं वहवेद औ यज्ञका पूराफल पाता [illegible]ा बचन कभी नकहै कि जिससे किसीका आत्मादुःखपावै [illegible] को अच्छा न लगै पुरुषको [illegible] आनन्दन चन्द्र [illegible]का बालक पु[illegible] [illegible]नसे न शीतल छाया से औ न ठंढे जल से पढ़ाने के समय यह [illegible] सुनकर मिलताहै आदरसे ब्राह्मण सदा तर बालक के इसवच[illegible] औ अव मानको सदाअमृतके समानमानै गये औ सब वृत्तान्त क[illegible]करो उसकीकुछहानिनहींहोती अवमान अज्ञ हो अर्थात् कुछ न [illegible]प्तहोजाताहै वेद पढ़करतपकरै वहीवेदके पढ़ावै वह पिता गिना [illegible]केअर्थ वेदपढ़ै औ उससे और जीविका न श्वेत केश होनेसे औ [illegible]ताहै ब्राह्मणके तीनजन्महोते हैं एक तो है ऋषियों ने यह धर्म [illegible]ोपवीतसे औ तीसरा यज्ञकी दीक्षालेने हो वही सबसे वृद्ध गि[illegible]यत्री माता औ आचार्य्य पिताहोताहै में जो ज्ञान बल जन्म शील[illegible]ी कर्म्मका अधिकारी नहीं होता इस होताहै शिरके बालश्वेत [illegible]

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कारण वहकभी वेदका उच्चारण नकरै जब यज्ञोपबीत होजाय तब वेद पढ़ने का अधिकारी होता है यज्ञोपबीत के समय से मेखला चर्मदंड औ यज्ञोपबीतका धारणकरै औ तभीसे देवता पितर मनुष्योंका तर्पण कियाकरै पुष्प फलजल समिधामृत्तिका कुशा औ अनेक प्रकार के काष्ठोंका संग्रह रक्खै मद्य मांस गंध पुष्पमाला अनेक प्रकार के रस औ स्त्रियोंका त्यागरक्खै अनेक प्रकारके शुक्त अर्थात् सिर्के औ अर्कोंका खानापीना आंखोंमें सुर्माडालना शरीर में तेल लगाना जूता औ छत्र का धारण गीत सुनना नांचदेखना जूआ खेलना झूठबोलना निन्दाकरना स्त्रियोंके समीप बैठना काम क्रोध लोभ आदिके बशहोना व्यभिचारिणी स्त्रियोंसे बातचीत करना वीर्यपात करना ये सब बातें ब्रह्मचारी के लिये निषिद्धहैं अथात् ब्रह्मचारी येबातें नकरै स्वप्नमेंब्रह्मचारीका वीर्यस्खलन होजाय तो उठकरस्नानकरै सूर्यनारायणकी पूजाकर गायत्री जपै तब शुद्धहोताहै जल गोबर मृत्तिका कुशा औ भिक्षा इनको नित्य लायाकरै परंतु पुरुष अपने कर्ममेंतत्परहैं औ वेदपढ़ेहैं अतिथिका आदरकर्ते हैं उनके घरोंसेही भिक्षा ग्रहणकरै गुरुके कुलमें औ अपने जाति के घरोंमें भिक्षा न मांगै जो अन्यत्र भिक्षा न मिलै तौ इनकी भी ग्रहण करै परन्तु जो किसी भांति कलंकितहोय उनकी भिक्षा न लेवै नित्य समिधा लाकर सायङ्काल औप्रातःकाल हवनकरै भिक्षा मांगने के समय मौनसे रहै जो ब्रह्मचारी भिक्षा के अन्न बिना सातदिन पर्य्यन्त और अन्न खाय औ रोगआदि निमित्त के बिना सातदिन अग्निहोत्रभी न करै वह नष्ट ब्रत होजाता है ब्रह्मचारी के लिये भिक्षाका अन्न मुख्यहै इसकारण एकका अन्न नित्य नलेवै भिक्षान्नके भोजनसे नित्य उपवासका फल होताहै यह धर्म्म केवल ब्राह्मण का कहाहै क्षत्रिय औ वैश्यके धर्म्म में

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ब्रह्मालन गुरुके सन्मुख हाथजोड़ खड़ारहै जब गुरुकी आज्ञा
सोवै परन्तु आसन पर न बैठै गुरुके सोते उठनेसे पहिले
हमाताने से पीछे शयन करै गुरुके सन्मुख अति नम्रतासे
कर फल बातमें गुरुका अनुकरण अर्थात् नकल न करै गुरुकी
ाःतीनकरै औ जहां निन्दा होतीहोय वहां से उठकर चला
ोयनावा कान मूंदलेवै गुरुकी निन्दा सुननेसेगर्दभकी योनि
ग्गिहै औ निन्दा करनेसे श्वानहोताहै वाहन पर चढ़ाहुवा
अभिवादन न करै अर्थात् सवारीसे उतरकर प्रणाम करै
साथ एकबाहन शय्या आसन शिला चटाई पट्टा आदिपर
जो गुरु समीप न होंय तो यही आचरण गुरु पुत्र के
खै परन्तु उच्छिष्ट भोजनगुरुकाहो करै गुरुकी सवर्णा
ी गुरुके समान मानै परन्तु गुरुपत्नीके देहमें तैल लगाना
कराना इत्यादि कर्म्म न करै औ तरुणशिष्य अनेकप्रकार
ण दोष समझ कर गुरुपत्नीके पैर भी न दबावै क्योंकिस्त्रियों
से पुरुषों को अनेक दूषण लगते हैं इस लिये बुद्धिमान्
नसे बचतारहै माता बहिन अथवा अपनी कन्याहोपरन्तु
इनके साथ भी एकान्त में बातचीत न करै क्योंकि ये इन्द्रियबड़े
बलवान्हैं विद्वान्की बुद्धिभी चलादेतेहैं राजाकी स्त्री औगुरुकी
स्त्रीकी अपनानाम लेकर प्रणामकरै जिसप्रकारभूमिको खोदते२
जल मिलजाता है इसी भांति शुश्रूषा करते २ गुरु से विद्या
प्राप्त होतीहै शिर मुड़ाये रहै अथवा जटा धारण करै सुर्य्योदय
औ सूर्य्यास्तके समय ग्राममें न रहै अर्थात् जलके तटपर जाय
सन्ध्याबन्दन करै जिसके सोते २ सूर्य्योदय अथवा सूर्य्यास्त
होय वह बड़े पापका भागी होताहै बिना प्रायश्चित्त शुद्ध नहीं
होता माता पिता औ आचार्य्यका बिपत्ति में भी अनादर नकरै
माता पृथिवीकी मूर्त्तिहै पिता प्रजापतिकी औआचार्य्य ब्रह्माकी

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

इसलिये इनका सदा आदर रक्खै पुत्रके उत्पन्न करने औ पालन
करने में मातापिता जितना क्लेश उठाते हैं उसका बदला सौवर्ष
तक सेवा करनेसे भी पुत्र नही दे सक्ता इस लिये सदा माता
पिता औ गुरुकी शुश्रूषा करै जिससे सब प्रकार के तपका फल
हो औ इनकी शुश्रूषाही बड़ा तपहै ये तीनों तीन लोकहैं तीन
आश्रमहैं तीनवेदहैं औ येहीतीन २ अग्निहैं माता गार्हपत्यना-
मक अग्निहै पिता दक्षिणाग्निहै औ गुरु आहवनीय नामअग्नि
का रूपहै जिसपर येतीन प्रसन्नहोंय वह तीनोंलोक जीतले ता
औ देवताओंकी भांति स्वर्ग्गमें बिहार करताहै जो इनका अना
न रक्खै उसकी सब क्रिया निष्फल हैं जबतक येतीनों जीवे
तबतक इनकी शुश्रूषाके बिना और कोई धन्धा न करै यही
तपव्रत औ धर्म्महै औ जो कुछकर्म्मकरै तौभी इनकी आज्ञासे
उत्तम बिद्या अधम पुरुषमें होय तौभी ग्रहणकरलेवै क्योंकि
से अमृतबालकसे सुभाषित अर्थात् अच्छी बातशत्रुसे भी
आचरण कर्दम अर्थात् कीच से भी काञ्चन औ दुष्कुल से
स्त्री रत्नअर्थात् उत्तमस्त्री ग्रहण करते हैं उत्तमस्त्री रत्न बिद्या
शौच सुभाषित औ अनेक प्रकारके शिल्प जहांसेमिलैं वहांसेही
ग्रहण करलेवै औ बिपत्तिकाल में क्षत्रिय औ वैश्य सेभी वेदपढ़ै
परन्तुउतने कालतकही उनके समीपरहै औ ब्राह्मण गुरुकेसमीप
तो शरीररहै तबतक रहनेमें कुछ दोषनहीं जो जन्मभर गुरुकी
शुश्रूषा करै वह ब्रह्मलोक में निवास कर्त्ता है पढ़नेके समयगुरु
को कुछदेने की इच्छा न करै पढ़नेके अनंरत गुरुकी आज्ञापाय
भूमि सुवर्ण गौ घोड़ा छत्र धान्य बस्त्र आदि अपनी शक्तिके अ-
नुसार समर्पण करै गुरुका जब देहांत होजाय तब गुरुपुत्र औ
गुरुस्त्रीको गुरुकेस्थान में मानै औ येभी नहोंयतो जोगुरुकेभाई
बंधुहोंय उनकोमानै औ अग्निहोत्र नित्य कर्त्तारहै इसभांति जो

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ब्रह्मचारी धर्मका आचरण करै वह ब्रह्मलोकमेंजाय ब्रह्माजीके समीप निवास करै इतनाकह सुमंतुमुनिबोले कि हे राजा यह हमने ब्रह्मचारीका धर्म बर्णनकिया अब गृहस्थके धर्मका बर्णन करते हैं आप सुनो ब्राह्मण आदि अपने २ समयमें व्रतकी समाप्ति करैं औ ब्राह्मण का यज्ञोपवीत बसंत ऋतुमें क्षत्रिय का ग्रीष्ममें औ वैश्यका शरत् ऋतुमें करना चाहिये ॥

चौथा अध्याय ॥

मंतुमुनि कहते हैं कि हे राजा यह ब्रह्मचारिव्रत जो कहा है करै इससे आधा अथवा चतुर्थांशही करै व्रतके अंतमेंगुरु क[illegible]हासन पर बैठाय माला पहिनाय पूजाकरै औ उत्तम गो दक्षिणा दान करै फिर समावर्तन नाम संस्कार कर गुरु कीआज्ञा पाय घरआय सुन्दर लक्षणों से युक्त अपने बर्णकी स्त्रीसे बिवाह करै यहसुन राजाने कहा किहे मुनीश्वर प्रथम आप स्त्रियों के लक्षण बर्णन कीजिये कि किन लक्षणों करके युक्त कन्या शुभदायक होती है यह राजा का बचन सुनि मुनि कहने लगे किहे राजा पूर्वकाल में ऋषियों के प्रति जो ब्रह्मा जी ने स्त्री लक्षण कहा है वह हम बर्णन करते हैं आप एकाग्र चित्त होकर सुनो जिसके श्रवण करने से सब शुभाशुभ ज्ञात होय एक समय ब्रह्माजी अपने लोकमें सुखपूर्वक बैठेथे उससमय संपूर्ण ऋषि गये औ ब्रह्माजी को प्रणाम कर बिनय से प्रार्थना करते भये कि महाराज संपूर्ण लोकोंके कल्याण के अर्थ हम स्त्रीके लक्षण सुनना चाहते हैं आप कृपा कर कथन कीजिये यह सुन ब्रह्मा जी कहने लगे किहे मुनीश्वरो हमस्त्री लक्षण कहते हैं आप सब एकाग्र चित्तहो श्रवण कीजिये रक्त कमल के समान औ भूमि पर संपूर्ण टिक जांय बीच से ऊंचे न रहैं औ अति कोमल हों

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ऐसे स्त्रीके चरण उत्तम होते हैं भोग के देने हारे हैं औ जिनके चरण रूखे फटे हुये मांससे हीन नाड़ियों करके व्याप्त होंय वे स्त्री दरिद्रा औ दुर्भगा होतीहैं पैरकी अंगुली आपुस में मिली हुई सीधी गोल औ सूक्ष्म नखों करकेयुक्त औलंबी अति ऐश्वर्य देने हारी हैं औ स्त्रीको राणी बनाती हैं छोटी २ अंगुली होने से आयुष् न्यून होताहै औ बिरली अंगुलियों से धनकी हानि होती है मूलमें जो टेढ़ीहोंय तो दारिद्र करैं औमोटी अंगुलियों वाली स्त्री दासीहोंय जिसस्त्रीकी अंगुलीएककेऊपरएक चढ़जाय इस भांति सब अंगुली हों वह अनेक पतियों को मार अंत दासी होय पैरकी अंगुलियोंकेनख स्निग्ध अर्थात् चिकने ल ऊंचे औ छोटे होंय तो सौभाग्य धन पुत्र औ राज्य मिलै श रंगके फूटे हुये रूखे नीले धुंधले नखों से दरिद्र होय औ पी नखहोंय तो अभक्ष्य बस्तुखाय गुल्फ अर्थात् टंकनेगोल स्निग्ध औ नसैं जिनमें नदीखतीहोंय वेगुल्फउत्तमहोतेहैं रोमोंसे रहित गोल गौरवर्ण की जंघा सौभाग्य औ चढ़नेके लिये हाथी पाल की देने हारी होतीहैं रोमयुक्त जंघा होंय तो वहस्त्री भ्रमण क जिसकी पिंडली ऊपर को खिचीहों वह स्त्री क्लेश भोगै काक के समान जिसकी जंघा हों वह पति को हनन करैं जिसके जानु अर्थात् घुटने मार्जार अर्थात् बिल्ली औ सिंहके जानु के समान होंय वह पुत्र धन औ सौभाग्य को पाती है औ जिसके जानु घटके समान होंय वह निर्द्धन होय निर्मांस जानुओं से कलह करने हारी होय नारी दीखती होयँ तो हिंसाकरै जिस स्त्री के रोम अथवा केश कुंचित अर्थात् घुंघरू वाले होंय रूखे आगे से फटे औ एक २ रोम कूपमें तीन २ चार २ हों औ उस स्त्री का पिंगलबर्ण हो वह बिषके समान प्राणहरने हारी होती है वह सात दिनके भीतर अपने पतिके प्राण हरै स्त्रियों के ऊरु बधुहोय उनका [illegible]

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हाथीकी सूंडकेसमान गोल औ केलाके स्तंभसे गौर औ कोमल होंय तो कामदेवका सुखदेने हारेहोते हैं औसूखे रोमोंसे व्याप्त ऊरुदौर्भाग्य देतेहैं जिसकी भगरोमों से हीनहो औ उसकीसंधि आपसमें श्लिष्ट हों वह स्त्री चाहे नीच कुलमें भी उत्पन्न भई हो परंतु राजाकी रानी होय पीपलके पत्रके समान कछुवाकी पीठ के सदृश ऊंची औ चन्द्रबिंब के समान योनि अनेक प्रकार के सुख देतीहै जो योनि तिल पुष्प के सम हो औ आगे से खुरके सदृश हो वह दरिद्र करने हारी होती है नितंब पुष्ट होय तो उत्तम होताहै ऊखल के समान होय तो शोकदेनेहाराहोता है स्तनोंके भारसे नम्र रोमावलीसे भूषित अतिकृश औ त्रिबली करके शोभित मध्यभाग शुभहोताहै इससेविपरीतलक्षण होंय तो अशुभ जानिये पीठ ऊंची न होय औ रोमों से रहित होय तो उत्तम होतीहै और जो कुबड़ी औ रोमों करके युक्त होय तो उसको कभी पतिका सुख नहीं प्राप्त होता वह पति के प्राण हरतीहै जिनके पेट सुकुमार औ चौड़ेहोंय उनके सन्तान बहुत होतीहै जिसकी कुक्षिमंडूकके समानहो वह राजाकीमाताहोय ऊंचे पेट वाली बंध्या गोल पेटसेव्यभिचारिणी औ दासी होतीहै औ ऊंचे नीचे पेटवाली स्त्री क्षुद्रा होतीहै गोल ऊंचे भारी औ बिस्तार युक्त स्तन उत्तम होतेहैं गर्भकेसमय जिसस्त्रीका दहिना कुच ऊंचा होजाय उसके पुत्र उत्पन्न होय औ बायां कुच ऊंचा होनेसे कन्या जिसका चिबुक अर्थात्ठोढी लम्बी होय वह स्त्री धूर्तहोय औ जिसकी ठोढी दबी हुई होय वह पतिके साथ द्वेष रक्खै जिनके कुच सर्पके फण के समान अथवा कुत्ताकीजीभके तुल्यहों वे दरिद्रा होतीहैं जिसका वक्षस्थल अर्थात्छाती मांस से पुष्ट रोम औ नाड़ियोंसे रहित हो वह अनेकप्रकारके भोग भोगै गोल छातीवाली हिंसाकरै रोमयुक्तछातीहोयतो कुशीला

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

होय निर्मासहोय तो बिधवा औ बहुतचौड़ी छातीहोनेसे कलह करनेहारी होय जिस स्त्री के हाथ की रेखा गहरी स्निग्ध औ रक्त बर्ण होंय वह सुख भोगै औ टूटी रेखाओंसे दरिद्र होताहै जिसके हाथमें कनिष्ठाके मूल से तर्जनी तकएकपूरी रेखाचली जाय वह सौ बर्षका आयुष् पावै जो रेखान्यूनहोय तो आयुष् भी न्यून होय हाथकी अँगुली गोल लम्बी पतली छिद्र रहित औ कोमल तथा रक्तबर्ण होंय तो अनेक प्रकार के भोग मिलैं अत्यन्तलाल ऊंचे औस्निग्ध नखहोंय तो ऐश्वर्य्यमिलै जो रूखे श्वेत नीले पीले नख होंय तो दौर्भाग्य औ दरिद्र होय स्त्री के हाथ फटे हुये रूखे औ बिषम अर्थात् ऊंचेनीचे व छोटे बड़ेहोंय वह क्लेशभोगै औकोमलरक्त बर्णस्निग्ध औ छोटे २ हाथोंवाली स्त्री सुखमें रहती हैं जिसके अंगुलियों के पर्वोंमें यव के चिह्न होंय उसको बहुत सुख औ धन धान्य मिलता है जिस स्त्री का मणिबंध अर्थात् हाथकी कलाईतीनरेखाओंसे भूषितहोवह उत्तम भोग औ दीर्घ आयुपपातीहैजिसके हाथमेंश्रीवत्सध्वजा कमल हाथी घोड़ा चक्र स्वस्तिक बज्र खड्ग पूर्ण कलशअंकुश प्रासाद अर्थात् महल छत्र मुकुट हार केयूर कुंडल शंख तोरण आदिके चिह्न होंय वह राजाकी स्त्रीहोतीहै तुलाअर्थात्तखड़ी का चिह्नहोनेसे धनवान् वैश्यकीस्त्रीहोय दरातीजूआहल फाल ऊखल आदिकाचिह्नहोनेसे धनाढ्य कृषीवलअर्थात् ज़मींदार की पत्नी होय स्त्रीकी भुजा ऊपरसे नम्र रोमरहित औ गोपुच्छ के आकारहोंय तोउत्तमहोतेहैं कूर्परअर्थात् कुहनीभी रोमरहित औ गूढ़होय तो श्रेष्ठहै स्कन्धनत अर्थात् नयाहुवा उत्तमहै स्थूल स्कन्ध होनेसे बन्ध्या होतीहै जिसका कंधा ऊंचा नीचा स्त्री वह व्यभिचारणीहोय जिसकी ग्रीवामें तीनरेखा होंय वह रत्नों के भूषण पहिनै दुर्बल ग्रीवावाली स्त्री निर्धन स्थूलग्रीवा रु

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

बधुहोय उनकोमान औ

वाली दुःख भोगनेहारी छोटीग्रीवावालीमृतवत्सा अर्थात्जिस के संतानहोकर मरजायऔलम्बीग्रीवावाली स्त्रीव्यभिचारिणी होय जिसके दोनों कंधे औ कृकाटिका अर्थात् घेंटू ऊंचे न होंय वह स्त्री दीर्घ आयुष् पातीहै औ उसका पतिभी चिरकाल तक जीताहै जिसका मुख चोखूंटाहोय वह स्त्री धूर्ता होती है गोल मुखवाली शठ छोटे मुखवाली संतानहीन बड़ेमुखवालीदुर्भगा होतीहै श्वानशूकर भेड़िया उल्लू बंदर औकाककेसमान जिस का क्रूरमुख होयवहपापिनी औसंतान तथाबंधुओंसेहीन होती हैजिनकामुख कमल दर्पण अथवा चन्द्रके समान होय वेसब उत्तमभोग पातीहैं रक्तवर्ण स्निग्ध औ पतलाओष्ठअच्छा होता है जिसका ऊपरका ओष्ठ मोटाहोय वह कलहकरै नीलेआदि रंग का ओष्ठ होय तो दुःख भोगै औ जिसका ऊपरका ओष्ठ तीक्ष्ण होय वह अति क्रोध युक्तहोय जीभलालवर्णथोड़ेजलसे युक्त पतली औ लंबी अच्छी होतीहै मोटी छोटी टेढ़ी फटी हुई औ बुरे रंगकी अच्छी नहीं अतिश्वेतस्निग्ध औऊंचेदांत उत्तम होतेहैंछोटे फूटे बिरल रूक्ष बिकट औ ऊंचेनीचदांत दुःखदायकहैं नबहुत मोटी न पतली न बहुतलम्बी औऊंची नासिका श्रेष्ठहै नील कमल के समान औ सुन्दर पक्ष्म अर्थात् बांरुन करकेयुक्तनेत्र उत्तमहोतेहैं खंजनाक्षी मृगाक्षीऔबराहकेसमान नेत्रोंवाली स्त्री उत्तम भोग भोगतीहैं औ शहतकेसमान पिंगल वर्ण रेखा युक्त औ मल आदिसे रहितनेत्र ऐश्वर्यदेतेहैं जिसके नेत्र गड़े हुयेहोंय औअति पिंगल बर्णहोंय वह दुःख भागिनी होतीहै लालनेत्र छोटे बड़ेधूम्रवर्ण प्रेतकेनेत्रोंकेसमानऔश्वान के नेत्रोंके तुल्य जिसके नेत्रहोंय वह स्त्री सदा त्यागने योग्यहै जिसके नेत्र उद्भ्रांत औ केकर अर्थात् ऐंचेताने होंय वह स्त्री व्यभिचारिणी होय औ मद्य मांस खानेवालीहोय जिसकेकान

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कोमल औ लम्बेहोंय वहअनेकप्रकार के भूषणपहिने औगर्द
ऊंट नकुल उल्लू अथवा बानरके समान जिसके कान होंय व
दुःखभोगै गोल कोमल औ रोमोंसे रहित कपोल उत्तमहोते
अर्द्धचन्द्रकेसमानओचमकता हुआललाट अच्छा होताहैमस्त
न बहुतबड़ा न छोटा अच्छाहोता है हाथी केसमानमस्तक उत्त
नहीं पतले काले स्निग्ध औ लंबेकेश उत्तमहोतेहैं हंसकोयलभ
मर मयूर वीणा अथवा बांसुरी के तुल्य जिनका स्वर होय
भाग्य करके युक्त होती हैं जिनका स्वर फूटी थालीके समा
अथवा काक के तुल्यहो वे अनेक भांतिके दुःखभोगतीहैं हंसक
अथवा मस्तहाथी के समान जिसकी गतिहोय वह अपनाकु
विख्यातकरै औ राजाकी राणी होय जिसकीगति श्वानजंबु
काक औ मृगकेसमान होय औ बहुत जल्दीचलै वह दासी
गोरोचन सुवर्ण चंपाके पुष्प अथवा केसरके समान स्त्री कारं
उत्तम होता है संपूर्ण स्त्री के अंग कोमल रोमों से औ पसीने
रहित अच्छेहोते हैं कपिल वर्णकी स्त्री हीनांगी अधिकांगीरोम
से रहित अथवा बहुत रोमोंसे व्याप्त जिसका देहहोय वृक्षनद
औ पर्वतके नामवाली अथवा यक्ष प्रेत आदिके नामवाली स्त्री
न व्याहै जिसके अंग सब ठीक हों औ केश रोम दंत सूक्ष्मह
ऐसी स्त्री से बिवाह करै क्रियासेहीन पुरुषों से रहित वेद शा
से बर्जित क्षय कुष्ट अपस्मार आदि रोगों से पीड़ित औ बहु
रोमों करके युक्त जो कुलहोय उसकी कन्या से बिवाह न क
इतना कह ब्रह्माजीने ऋषियों से कहा कि ये सब उत्तमलक्ष
जिस स्त्री मेंहोंय औ आचारण भी अच्छाहोय ऐसीसे बिवाहक
तोधन धान्य संतान कीर्ति औ ऐश्वर्यपावै हे मुनीश्वरो स
लक्षणोंसे अधिक सद्वृत्त अर्थात् भला चालचलन है यहस्त्री
अवश्य देखना चाहिये॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पांचवां अध्याय ॥

इतनासुन राजाशतानीकने कहाकि महाराज स्त्रियोंकेलक्षण तो मैंने आपकेमुखारविन्दसे सुने अब स्त्रियोंका सद्वृत्त सुनना चाहताहूं यहराजाकी बिनतीसुन मुनि बोलेकि हे राजा ब्रह्माजीनेही ऋषियोंके प्रतिसद्वृत्तभी कहा हैवहीहमआपको कहते हैं ऋषियोंके प्रश्नके अनंतर ब्रह्माजी कहनेलगेकि हेमुनीश्वरो पहिले गुरु कुल में विद्या पढ़कर धन संपादन करै पीछे सुंदर लक्षणोंस युक्त औ सुशील स्त्रीसे शास्त्रकी रीतिकरके विवाहकरै धनकेबिना गृहस्थाश्रम बड़ी बिडंबना है इसलियेधन संपादन करकेपीछेगृहस्थीबनैनरककादुःखभोगना अच्छापरन्तु स्त्रीपुत्रों को भूखकेमारे रोतेहुये देखना अच्छानहीं फटेऔ मैलेवस्त्रपहिने अतिदीन औ भूखे स्त्री पुत्रों को देख जिनका हृदय नहींफटता वेअतिकठोर हैं परन्तु उनके जीवनकोधिक्कारहै उनकेलियेमृत्यु परम उत्सवहै इसलिये जो धनबिना बिवाह करै उसकोस्त्रीका सुख प्राप्तनहीं होता केवल अपने गलेमें स्त्रीरूप फांसीडालता है औ स्त्री बिना गृहस्थाश्रम नहीं होसक्ता इसलिये धनमुख्यहै कोई कहते हैं कि संतानसे त्रिवर्ग अर्थात्धर्म्मअर्थ औकामकी प्राप्तिहोती है परन्तु नीतिवेत्ताओंका यहमतहै कि धन औउत्तम स्त्री ये दोनों त्रिवर्ग के हेतुहैं दो प्रकार का धर्म्महै एक तो इष्ट अर्थात् यज्ञ आदि करना दूसरा पूर्त अर्थात् बापी कूपतलाव धर्म्मशाला आदि बनाना ये दोनों धनसेहोसक्तेहैं दरिद्रोकेबन्धु भी उससेलज्जा करते हैं औ धनाढ्य के अनेकबन्धु बनजातेहैं धनही त्रिवर्ग का मूलहै धनवान् में अनेक उत्तम गुणहोजातेहैं औ निर्धन के विद्यमान गुणभी नष्ट होजाते हैं सब वस्तुओंका साधन धनहै धनकेबिना अजागलस्तन अर्थात् बकरी के गल-

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

थने की भांति पुरुषका जन्म व्यर्थ है पूर्व्व जन्म के पुण्यसेधन मिलताहै औ धनसेपुण्यहोताहैइसलियेधनऔपुण्य अन्योन्याश्रय अर्थात् एक दूसरे के सहारेहै इसकारणपहिलेउत्तमरीति से धन सम्पादन करके विवाहकरै जबतक विवाह न करै तब तक पुरुष अर्द्ध शरीर होता है जिस भांति एक पहिये का रथ अथवा एक पर का पक्षी किसी काम का नहीं होता इसी भांति स्त्री हीन पुरुष भी किसी कर्म्म के योग्य नहीं विवाह तीनप्रकार का होताहै नीच कुलमें समान कुलमें औ उत्तमकुलमें नीचकुल में विवाहकरनेसे निन्दाहोतीहै उत्तम कुलवाले अपना अनादर करतेहैं इसकारण समान कुलमें विवाह करनाचाहियेऔ विजातीय सम्बन्ध भी ठीकनहीं जैसा कोयल औ हंसका जिससम्बन्ध में प्रतिदिन स्नेहकी वृद्विहोय औ विपत्ति सम्पत्ति के समय प्राणतक भी देनेमें विचार न करैं वह उत्तम सम्बन्ध कहाताहै परन्तु यह बात उनमेंही होतीहै जो कुल शील औ धनमेंसमान होतेहैं मनुष्योंके स्नेह औ कृतज्ञताकीपरीक्षा बिपत्तिमेंही होती है विवाह औ मंत्र अर्थात् सलाह समानों के साथहीकरै उत्तम औ अधमोंके साथ कभी न करै जिससे सुख होय॥

छठा अध्याय॥

ब्रह्माजी कहतेहैं कि हे मुनीश्वरो जोकन्या माताकी सपिण्ड न होय औ पिताकी सगोत्रा न होय वह तीन वर्णों को विवाह के योग्य होतीहै धर्म्म साधन केलिये ब्राह्मण ब्राह्मणकीकन्यासे विवाहकरै और काम वशहोकर क्षत्रिय आदि तीनवर्णोंकीकन्या बिवाहै इसी भांति क्षत्रिय अपने वर्णकी कन्या को धर्मसे औ वैश्य तथा शूद्रकी कन्या को कामसे बिवाहै वैश्य धर्म्म के लिये अपने वर्णकी कन्या से औ काम वश हो शूद्रकी कन्यासे भी

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

बिवाह करै परन्तु शूद्र के लिये शूद्र की कन्याही भार्य्या कहीहै ब्राह्मण के लिये चारों वर्णकी कन्या ब्याहनी लिखी हैं परन्तु शूद्रासे बिवाह करना योग्यनहीं शूद्रासे बिवाहकर औ पुत्र उत्पन्न कर उतथ्य शौनक भृगु आदि ऋषि पतित भये शूद्रा के साथ संग करनेसे ब्राह्मण अधोगति को जाता है औ उसमेंपुत्र उत्पन्न करके ब्राह्मणपने से हीन होजाता है अर्थात् वह भी शूद्र होजाता है देवता पितर उसका हव्य कव्य ग्रहण नहीं करते हे मुनीश्वरो अब हम आठ प्रकारके बिवाह कहतेहैंब्राह्म दैव आर्ष प्राजापत्य आसुर गांधर्ब राक्षस औ आठवां पैशाच नामक बिवाह होता है इनमें पहिले चार बिवाह ब्राह्मण को करने योग्य हैं पिछले चार का अधिकारी क्षत्रिय है आसुर औ रा[illegible]स का अधिकारी बैश्य है औ शूद्रभी इनदोकाही अधिकारी है पहिले चार बिवाह ब्राह्मण के लिये उत्तम हैं राक्षस बिवाह क्षत्रिय के लिये औ आसुर बैश्य औ शूद्रके लिये मुख्यहै पैशाच औ आसुर ये दो बिवाह निंद्य हैं वेद शास्त्र पढ़े हुये उत्तम कुलके वरको बुलाय बिधि पूर्बक बिवाह करदेना इसको ब्राह्म बिवाह कहते हैं यज्ञ होरहा है औ ऋत्विक् अपना कर्म कररहे हैं उस समय कन्या को अलंकृत कर उत्तमवर से बिवाह देना इसका नाम दैवबिवाह है एक बैल औ एक गौ बरसे लेकर बिधि पूर्बक उसको कन्या देना यह आर्षबिवाह कहलाता है वधूबर का बिवाह करदेना औ यह कह देना कि ये दोनोंसाथ धर्मका आचरण करैं इसका नाम प्राजापत्य बिवाह है कन्याके मातापिता औ बंधुओंको धनदेकर बिवाहकरना आसुर बिवाह कहलाता है कन्या औ बर परस्पर अनुरक्तहो बातचीतकर आप ही बिवाह करलेवैं इसका नाम गांधर्बबिवाह है मारपीटकरके रोती चिल्लाती कन्याको ले आना राक्षसबिवाह होता है सोई

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हुई अथवा मत्तकन्या को गुप्त उठा लाना यह पैशाच नामक
बिवाह है ब्राह्मबिवाह से उत्पन्नहुआ पुत्र दश अगले औ दश
पिछले कुलोंका उद्धार करताहै दैवबिवाह से उपजा पुत्रसात२
अगले पिछले कुलोंको तारता है आर्षबिवाह से उत्पन्न हुआ
सुत तीन अगले औ तीनपिछले पुरुषोंका उद्धार करता है बाकी
चार प्रकार के बिवाहोंसे उत्पन्न हुये पुत्र क्रूरस्वभाव धर्म्म के
द्वेषी झूठ बोलनेहारे औ दुष्ट होते हैं अनिंदित बिवाहों से सं-
तान उत्तम होती है औ निंदितबिवाहों से निन्दित इस कारण
आसुर आदि निन्दितबिवाह न करै बिवाहरूप संस्कार सवर्णी
स्त्री से बिवाह करकेही होता है कन्या का पिता यत्किंचित
धनभी बरसे न लेवे बरकाधन लेनेसे वह अपत्यबिक्री अर्त्थात्
संतान बेचनेहारा गिना जाता है जो पुरुष कन्या के [illegible]
अपना जीवन करते हैं कन्याकेदिये बस्त्रपहिनते हैं अथवाकन्या
देकर मिलेहुये बाहनों पर चढ़ते हैं वे नरक में जाते हैं आर्ष
बिवाह में गो मिथुन अर्त्थात् एक बैल औ एक गो लेनी कहीहै
परन्तु वहभी ठीकनहीं क्योंकि चाहै थोड़ा लो चाहे बहुत परन्तु
वहकन्या का मूल्यही गिना जाता है इसलिये बरसे कुछ भी
न लेना चाहिये इस भांति बिवाह करके ब्राह्मण उत्तम देश में
निवास करै जिससे बहुत यशहोय यह ब्रह्माजी का वचनसुन
ऋषियों ने पूछा कि महाराज कौनसा देश निवास करने के
योग्य है कि जहां बसने से धर्म औ यशकी वृद्धि होय यहमुनि
वचन सुन ब्रह्माजी कहनेलगे कि हे मुनीश्वरो जिस देश में
धर्म अपने चारों चरणों करके सहितहो औ विद्वान्लोग बसते
हों सबव्यवहार शास्त्रकीरीति से होतेहों वह देश उत्तम है औ
निवास के योग्य है इतना सुन ऋषियों ने पूछा कि महा-
राज विद्वान् जिस आचरण को ग्रहण करें औ धर्म शास्त्र में जो

बधुहोय उनका [illegible]

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कहा है इसको आप कथन करैं तब ब्रह्माजी बोले कि उत्तम विद्वान् राग द्वेष से रहित होकर जिस धर्म का आचरण करैं वह मुख्य है नतो अत्यन्त निष्काम हो औ न सब कर्म कामना से ही करै संकल्प से काम होता है वेद पढ़ना यज्ञ करना व्रत नियम धर्म्म आदिक करना सब कामसेही होते हैं ऐसी कोई क्रियानहीं जिसमें कामनहीं हो श्रुति स्मृति सदाचार औ अपने मनकी प्रसन्नता इन चार बातों से धर्म का निर्णय करै श्रुति स्मृति में कहे हुये धर्म के आचरण से इस लोकमें बहुत यश मिलता है औ परलोक में इन्द्रलोक की प्राप्ति होतीहै श्रुति वेदको कहते हैं स्मृति धर्मशास्त्र का नाम है इन दोनों से सब बातोंका विचार करै क्योंकि धर्मकी जड़ येहीहैं जो इनदोनों का तर्कशास्त्र आदि से अपमान करै उस नास्तिक औ वेद निन्दक को सत्पुरुष अपने समीप न रहने देवैं निषेकसे लेकर मरण पर्य्यन्त जिसके सब संस्कार वैदिकमंत्रोंसेहुयेहोंय उसी को वेद का अधिकार है सरस्वती दृषद्वती औ गङ्गा इन तीन नदियों के बीच में जो देश हैं वह देवताओं का बनाया हुवा है उसको ब्रह्मावर्त्त कहते हैं जिसदेश में चारों वर्ण औ उपवर्णोंमें जो आचार परंपरासे चला आया होय उसका नाम सदाचार है कुरुक्षेत्र मत्स्यदेश पांचालदेश शूरसेन देश ये देश भी ब्रह्मऋषियों करके सेवित हैं परन्तु ब्रह्मावर्त से कुछ न्यूनहैं इन देशों में उत्पन्न हुये ब्राह्मणों से सब देशके मनुष्य अपना २ आचार सीखते हैं हिमालय औ बिंध्यपर्वत के बीच कुरुक्षेत्र से पूर्व औ प्रयाग से पश्चिम जो देश हैं इसका नाम मध्यदेशहै औइन्हीं दोनों पर्वतों के बीच पूर्व समुद्र से पश्चिम समुद्र तक जोदेशहैं उसको आर्यावर्त कहतेहैं जिसदेशमें कृष्णसारमृग अपनीइच्छा से बिचरैं वह देश यज्ञ करने के योग्य होताहै इनके बिना और

सब म्लेच्छदेशहैं इन देशोंमें ब्राह्मणउत्तम देखके कहींनिवास
करै हे मुनीश्वरो यहहमने संक्षेपसे देश व्यवस्था आपकोसुनाई
है बिस्तार से नहीं ॥

सातवां अध्याय॥

ब्रह्माजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो इसके अनंतर जोब्राह्मण
को करनाचाहिये वह हम बर्णन करते हैं पहिलीरीतिसे उत्तम
देशमें जाय ऐसास्थान ढूंढै कि जिसमें अपने धन औ स्त्रीकीरक्षा
भली भांति रहै क्योंकि ये दोनोंहीं त्रिवर्गका हेतु हैं इसलिये
इनकीरक्षाअवश्यकरनीचाहिये पुरुषस्थान औ आश्रयइनतीनों
से धनआदि का रक्षण होताहै कुलीन नीतिजाननेवालाबिनय
करके युक्त धर्मात्मा त्यागी औ दृढ़व्रत ऐसा पुरुष आश्रय के
योग्यहोताहै नगर ग्रामखर्वटअथवा खेटमेंनिवासकरैजहांब
से धर्मात्मा मनुष्य बसतेहों वहां गुरुकी आज्ञासे अथवाजे
में मुख्यहोय उसकी सम्मतिसे रहनेकेलिये घर बनावै प
किसी पड़ोसी को क्लेश न देवै नगरका द्वार चौक शाला शि
अर्थात् कारीगरों के घर जुआखेलनेकास्थान मांस औ
बेचनेका स्थान नटोंके पाखंडियों के औ राजाके नौकरोंके घर
देवताका स्थान राजमार्ग्ग औ राजा के महल इनसबसे दूर
अपना घर बनावै ऐसे स्थान में घर बनावै जहां पड़ोसी उत्तम
मनुष्यहों औ उस भूमि का झुकाव पूर्व्व को अथवा उत्तरकोहो
बहुतदृढ़ ऊंचा एक द्वारकरके युक्त जिसमें दृढ़ कपाटलगेहोंय सब
ऋतुओंमें सुखदेनेहारा घर बनावै स्नानका स्थान रसोई का
मकान भंडार गोशाला अश्वशाला दासी दासके रहनेका स्थान
शौचकास्थानशयनका घरबैठनेकाऔ पढ़नेकास्थानअग्निहोत्र-
शाला देवगृह औ अंतःपुर अर्थात् स्त्रियोंके रहनेका स्थान ये

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सब वस्तु शास्त्र की बिधिसे घरके बीच अलग २ बनावै औ गृहस्थ के सब उपकरण उसमें संचय करै इस प्रकार के घरमें निवास करके भी स्त्रियोंको सदा रक्षा करनो चाहिये क्योंकि स्त्रियोंकी रक्षा न करने से वर्णसंकर उत्पन्न होते हैं औ अनेक प्रकारके औरभी दोष होतेहैं स्त्रियोंको कभी स्वतंत्र न होनेदेवै औ रसोई आदि घरके कामबिना और किसीकामका अधिकार भी नदेवै किसीसमय भी स्त्रीको खाली न बैठना चाहिये घरका कुछ धंधा करती रहैं घरमें दरिद्र अतिरूप खोटासंग स्वतंत्रता खाली बैठना पानकरना मेलाआदिमेंजाना भिक्षुकी कुट्टनी दाई नटी आदि दुष्टस्त्रियों के संग निमंत्रणमें जाना बहुत तीर्थयात्रा अथवा देवताके दर्शनोंकेलिये घूमना पतिकेसाथ बहुत बियोग होना पतिका अतिक्रूर अति सौम्य ईर्षालु औ कृपणहोना औ स्त्रीके बशहोजाना येसब स्त्रीके नाशहोनेके हेतुहैं इनसे बुद्धिमान् पुरुष स्त्रीको सदा बचावै स्वामी अच्छा न होय तो भृत्य औस्त्री बिगड़जातेहैं ताड़नसे औ लालन से जिसभांति होसकै स्त्रियों की रक्षाकरै जो बहुत पत्नी होंय तो सबका तुल्य आदर रक्खै बिना कारण उनका मान अथवा अपमान कभी न करै भृत्य अर्थात् नौकर औ स्त्रियोंके साथ इसभांति बरतै जिससेसुखऔ यश मिलै स्त्री पुरुषका आधा शरीरहै उसके बिना धर्म क्रियाओं का साधना नहीं होसक्ता इसकारण सदा स्त्रीका आदर रक्खै उनमें जो अधिक प्रिया होय उससे अपनी प्रीति एकांत में प्रकटकरै प्रकटमें सबकेसाथ तुल्य व्यवहाररक्खै अर्थात् वृत्ति वस्त्र भूषण आदि उपचार सबको समान देवै औ ऋतुकाल में सबके समीप गमनकरै औ नित्यभी क्रमसे सबके पास रहै एक के साथ जो बातचीत एकांत में करै वह दूसरीसे न कहै औ जो एक दूसरीके दोष ईर्षा से कहै तौ उसका अनादर न करै सुनलेवै

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

परंतु अपनेमनमें सबबिचार करउनके जितने संतान होंयउन-
को बस्त्रभूषण औ भोजन तुल्य देवै माताके दोषसे संतान पर
पिताको स्नेह न्यून न करनाचाहिये उनसबको प्रीति द्वेषअभि-
प्राय शौच अशौच आदि गुप्तरीतिसे सब जानतारहै पुरानेसेवक
बूढ़ीदासी दाई आदि अनेक प्रकारकीकथा सुनाय उनकेअभि-
प्राय को जानै औ कथा कहने के समय उन के नेत्र मुख
आदिकी चेष्टा देखै जिससे अभिप्राय विदित होजाय सीता
अरुंधती शकुंतला आदि के चरित सुनाय उनके भावको भली
भांति जानै इनबातोंसे दुष्टस्त्री को जान उससे अपने प्राणोंको
बचाता रहै अपने केशोंमें शस्त्र छिपाय रानी ने राजा बिदूरथ
को मारदिया मेखलामणि देनेसे सौवीर राजाके प्राणहरे भाई
से मिलकर रानीने राजा भद्रसेनको यमलोक दिखाया काशि-
राज औ रैवत नाम राजा दोनों उनकी रानियों ने बिष देकर
मारे इसभांति अनेक राजा औ ब्राह्मण स्त्रियोंने मारेहैं औरोंकी
तो क्या कथाहै इसकारण सावधानहो स्त्रियोंकी रक्षा करै औ
दुष्टस्त्रियों से आपभी बचै स्त्रीका अपराध देख उसके साथ सं-
भोग नकरै यही उनके लिये दंडहै भर्त्ताके साथ द्वेष होजानेसे
स्त्री नष्ट होती है औ वह सत्कुल आचार धर्म गुण आदि कुछ
भी नहीं देखती इसलिये इनदोषों से बचावै स्त्री के पतिव्रता
होनेके तीन कारण हैं पुरुष न मिलै एकांतस्थान नहोय औघर
के धंधेसे अवसर नमिलै उत्तम स्त्रीको साम औ दानसे अपने
अधीन रक्खै मध्यमको दान औ भेदसे औ अधम स्त्रीको भेद
औ दंडसे स्वाधीन करै परंतु दंडदेने के अनन्तर भी सामदान
आदिसे उसको प्रसन्नकरलेवै भर्त्ताका बुराकरनेहारीओठ्यभि-
चारिणी स्त्री कालकूट नाम बिषकेसमान होतीहै इसलिये उस-
का त्याग करै उत्तमकुल में उत्पन्न पतिव्रता विनीता औ भर्त्ता

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

का हित चाहनेवाली स्त्रीका सदा आदर रक्खे हे मुनीश्वरो यह जो हमने स्त्रियोंका व्यवहार वर्णनकिया इसरीतिपर जो पुरुष चलै वह त्रिवर्ग औ संसार में सुखपावै ॥

आठवां अध्याय ॥

ब्रह्माजीकहतेहैंकिहेमुनीश्वरोयह मनुष्योंकोस्त्रियोंकेसाथजैसे बरतनाचाहियेवहहमनेकहाअब हमपुरुषोंकेसाथस्त्रियोंकोजिस बिधिबरतनायोग्यहै वहवर्णन करतेहैं संपूर्णकार्य विधिसे किये हुयेउत्तमफलदेतेहैं औविधि निषेध शास्त्रसेजानाजाताहै परन्तु स्त्रियोंको शास्त्रका अधिकारनहीं इसलिये उनको दूसरेसे विधि निषेध जाननेकी अपेक्षा रहतीहै पहिले तो भर्त्ता सब धर्मोंका उपदेश करतारहै औ भर्त्ता मरनेके अनंतर पुत्र सबबिधवा औ पतिव्रताके धर्म बतावै कोई स्त्री शास्त्रको भी समझतीहैं उनको उपदेशकरना कुछआवश्यकनहीं सबबात शास्त्रसेही ज्ञातहोती हैं परन्तु परम्परासेभी जानतेहैं जैसेव्याध कहार अहीरआदि ग्रामीण निकृष्ट मनुष्य भी भद्रा भौमवार व्यतिपात आदिको बुराजानतेहैं इसवास्ते चारोंवर्ण औ आश्रमोंमें मुख्य औ गौण भेदकरके सबशास्त्र के अधिकारी हैं अर्थात् कोई मुख्य अधिकारीहै औ कोई गौणहै लोकका औ शास्त्रका पौर्वापर्य जानना कठिन है अर्थात् लोक व्यवहार शास्त्रसे निकला है अथवा लोक व्यवहार के अनुकूल शास्त्र रचेगये यह निश्चय होना कठिनहै नास्तिकपना औ बुद्धिके विकल्पों को छोड़ शास्त्र के अनुसार अपने बड़े पुरुष जिसमार्ग में चलेहों उसपर चला जाय इसीमें सबप्रकारका कल्याण है गृहस्थ के धर्मोंका मूल पतिव्रतास्त्रीहै वह पतिव्रता पतिका आराधन किसविधिसेकरै अब हम इसका वर्णन करते हैं ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by S3 Foundation USA

परंतु अपनेमनमें सबबिचार करउनके जितने संतान होंयउन-
को बस्त्रभूषण औ भोजन तुल्य देवै माताके दोषसे संतान पर
पिताको स्नेह न्यून न करनाचाहिये उनसबकी प्रीति द्वेषअभि-
प्राय शौच अशौच आदि गुप्तरीतिसे सब जानतारहै पुरानेसेवक
बूढ़ीदासी दाई आदि अनेक प्रकारकीकथा सुनाय उनकेअभि-
प्राय को जानै औ कथा कहने के समय उन के नेत्र मुख
आदिकी चेष्टा देखै जिससे अभिप्राय विदित होजाय सीता
अरुंधती शकुंतला आदि के चरित सुनाय उनके भावको भली
भांति जानै इनबातोंसे दुष्टस्त्री को जान उससे अपने प्राणोंको
बचाता रहै अपने केशोंमें शस्त्र छिपाय रानी ने राजा बिदूरथ
को मारदिया मेखलामणि देनेसे सौवीर राजाके प्राणहरे भाई
से मिलकर रानीने राजा भद्रसेनको यमलोक दिखाया काशि-
राज औ रैवत नाम राजा दोनों उनकी रानियों ने बिष देकर
मारे इसभांति अनेक राजा औ ब्राह्मण स्त्रियोंने मारेहैं औरोंकी
तो क्या कथाहै इसकारण सावधानहो स्त्रियोंकी रक्षा करै औ
दुष्टस्त्रियों से आपभी बचै स्त्रीका अपराध देख उसके साथ सं-
भोग नकरै यही उनके लिये दंडहै भर्त्ताके साथ द्वेष होजानेसे
स्त्री नष्ट होती है औ वह सत्कुल आचार धर्म गुण आदि कुछ
भी नहीं देखती इसलिये इनदोषों से बचावै स्त्री के पतिव्रता
होनेके तीन कारण हैं पुरुष न मिलै एकांतस्थान नहोय औघर
के धंधेसे अवसर नमिलै उत्तम स्त्रीको साम औ दानसे अपने
अधीन रक्खै मध्यमको दान औ भेदसे औ अधम स्त्रीको भेद
औ दंडसे स्वाधीन करै परंतु दंडदेने के अनन्तर भी सामदान
आदिसे उसको प्रसन्नकरलेवै भर्त्ताका बुराकरनेहारीऔव्यभि-
चारिणी स्त्री कालकूट नाम बिषकेसमान होतीहै इसलिये उस-
का त्यागकरै उत्तमकुल में उत्पन्न पतिव्रता विनीता औ भर्त्ता

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

का हित चाहनेवाली स्त्रीका सदा आदर रक्खे हे मुनीश्वरो यह जो हमने स्त्रियोंका व्यवहार वर्णनकिया इसरीतिपर जो पुरुष चलै वह त्रिवर्ग औ संसार में सुखपावै ॥

आठवां अध्याय ॥

ब्रह्माजीकहतेहैंकिहेमुनीश्वरोयह मनुष्योंकोस्त्रियोंकेसाथजैसे बरतनाचाहियेवहहमनेकहाअब हमपुरुषोंकेसाथस्त्रियोंकोजिस बिधिबरतनायोग्यहै वहवर्णन करतेहैं संपूर्णकार्य विधिसे किये हुयेउत्तमफलदेतेहैं औविधि निषेध शास्त्रसेजानाजाताहै परन्तु स्त्रियोंको शास्त्रका अधिकारनहीं इसलिये उनको दूसरेसे विधि निषेध जाननेकी अपेक्षा रहतीहै पहिले तो भर्त्ता सब धर्मोंका उपदेश करतारहै औ भर्त्ता मरनेके अनंतर पुत्र सबविधवा औ पतिव्रताके धर्म बतावै कोई स्त्री शास्त्रको भी समझतीहैं उनको उपदेशकरना कुछआवश्यकनहीं सबबात शास्त्रसेही ज्ञातहोती हैं परन्तु परम्परासेभी जानतेहैं जैसेव्याध कहार अहीरआदि ग्रामीण निकृष्ट मनुष्य भी भद्रा भौमवार व्यतिपात आदिको बुराजानतेहैं इसवास्ते चारोंवर्ण औ आश्रमोंमें मुख्य औ गौण भेदकरके सबशास्त्र के अधिकारी हैं अर्थात् कोई मुख्य अधिकारीहै औ कोई गौणहै लोकका औ शास्त्रका पौर्वापर्य जानना कठिन है अर्थात् लोक व्यवहार शास्त्रसे निकला है अथवा लोक व्यवहार के अनुकूल शास्त्र रचेगये यह निश्चय होना कठिनहै नास्तिकपना औ बुद्धिके विकल्पों को छोड़ शास्त्र के अनुसार अपने बड़े पुरुष जिसमार्ग में चलेहों उसपर चला जाय इसीमें सबप्रकारका कल्याण है गृहस्थ के धर्मोंका मूल पतिव्रतास्त्रीहै वह पतिव्रता पतिका आराधन किसविधिसेकरै अब हम इसका वर्णन करते हैं ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नवां अध्याय॥

ब्रह्माजीकहतेहैं कि हे मुनीश्वरो सबआराध्य अर्थात् आराधन करने के योग्य पुरुषों के आराधन की यह विधि है कि उनकी चित्तवृत्तिको भलीभांति जानकर उसके अनुकूलचलना औ सदा उनका हित चाहना भर्त्ता के चित्त के अनुकूल चलना यह पतिव्रता का मुख्यकार्य है पतिके माता पिता ज्येष्ठभ्राता पितृव्य गुरु मामा बहनोई आदि का बड़ा आदर रक्खै औ जो अपने से सम्बन्ध में छोटे होंय उनको आज्ञा दिया करै पति के मित्र औ देवर आदिसे भी हास्य न करै किसी पुरुषके समीप एकांतमें बैठना औ हास्यकीबातकरना ये पतिव्रताधर्म के नाशके हेतुहैं इसकारण उत्तम स्त्री इनको कभी न करै दुष्टों का संग स्वतंत्रता बहुत हँसी करना अपने हाथसे किसी पुरुष को बस्तुदेना अथवा लेना घरके द्वारपर ठहरना राजमार्गका देखना बहुत पुरुषों के आगे निकलना ऊंचेस्वरसे बोलना औ हँसना दृष्टिसे बचनसे औ शरीरसे चंचलता करना दुष्टस्त्रियों का संग करना इत्यादि और भी बुरीबातें पतिव्रता स्त्री न करै जो कोई पुरुष अपनेको कुदृष्टिसेदेखै उसको आप पिता अथवा भाई के समान मानै इसरीतिसे स्त्रीका शील नहीं बिगड़ता है औ कुलकी निन्दा भी नहीं होतीहै॥

दशवां अध्याय॥

ब्रह्मा जी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो उत्तम स्त्री पतिको मन बचन कर्मकरके देवताके समानजानै औ सदा उसकेहितकरने में तत्पर रहै पतिके मित्रों को मित्रजानै औ शत्रुओं को शत्रु अधर्म औ अनर्थसे पतिकोबचावै देवता औ पितरोंकेकृत्यअभ्या-

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

गतों का सत्कार औ पतिके स्नान भोजन आदि कर्म समयपर सावधान होकर करै रहनेका घर औशरीर इनदोनों को तुल्य समझै औ शरीरसे भी अधिक घरको स्वच्छ औ भूषित रक्खे प्रातःकाल मध्याह्न औ सायंकाल के समय घरको मार्जनकरके स्वच्छकरै गोशालासे दासियोंकेहाथ गोबर उठवाय वहां झाड़ू दिलावे दास दासियों को भोजन आदिसे सन्तुष्ट कर अपने २ काममें लगादेवै गृहस्थीकोउचितहै कि शाक मूल फल बेल कंद औषधी आदिका अपने २ समयपर संग्रह करावै औ समयपर इनको खेत आदिमें बुआदे तांबा कांसी पीतल लोह काष्ठ बांस औ मृत्तिकाके वर्त्तनोंका संग्रह रक्खै जलकेलिये कुंड कूंड़ी कलश झारी उदंचन अर्थात् बड़े पात्रसे जलनिकालने के छोटेपात्र घीतेलरखने के बर्तन दूध दही छाछ आदि धरनेकेपात्र भांति२ केरसोईकेपात्र मूसल ऊखल छाजचलनी सिल लोढ़ी चक्की दही मथनेकी रई सनसी चिमटे पली कड़छी कड़ाही तवे तखड़ी तोलनेकेबांट पिटार पिटारियां संदूक़ पलंग चौकी आदि अनेक प्रकारके उपकरण हींग जीरा धनियां पीपल राई मिरच सूंठ आदि अनेकप्रकारके मसाले लवण भांति२ के खार सिर्के अचार कांजी सबभांति की दाल सब प्रकारके तेल स्नेह अनेक दूध दही के पदार्थ सूखाकाष्ठ आदि जोजो बस्तु नित्य औ नैमित्तिक कार्योंमें अपेक्षित हो सब पहिलेसे संग्रह कररक्खै कि समयके ऊपर ढूंढ़नी न पड़ै जिस बस्तु का आगे काम लगना हो वह पहिलेही संग्रह करलेवै सूखे गोले पीसे बिन पीसे कच्चे पक्के आदि भांति २ के अन्नोंका संग्रह बिचारकर करलेवे॥

ग्यारहवां अध्याय॥

ब्रह्माजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो अन्न कोदों कँगुनी गेहूं

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by eGangotri

आदि अन्न अपने२ समयपरसंग्रहकरै औ पतिव्रतानारी शय्या आसन पीढ़े कंचुकी ओढ़नी लहँगे कुरते आदि अनेक वस्त्रों का संग्रह रक्खे गुरु बालक वृद्ध अभ्यागत औ पतिकी शुश्रूषा में आलस्य न करे देवरआदिके पहिनेहुये माला वस्त्रभूषण आदि कभी न पहिनै औ उनकेशयन करनेकी शय्याको कभीआक्रमण न करे अर्थात् उसपर पैरभी न रक्खै घरमें पाककियाहुआ जो बासी अन्न बचै वह गौओंके खानेमें डालदेवै गौका दूध इतना निकालै कि जिसमें उनके बछड़े भूखे न रहैं औ दहीकोबिलोय उससे घी निकाललेवै वर्षा शरत् औ बसंत ऋतु में दोनों वक़्त गौ दुहै औ बाक़ी ऋतुओंमें एकबारहीदूध निकालै छाछकरके घरकी रक्षा के अर्थ पालेहुये कुत्तोंका पोषण करै गोप आदिकों को गौकी चराईमें अन्न देवै अथवा रुपयादेवै परंतु यहभी दृष्टि रक्खै कि गाय भैंसोंका दूध न पीजावैं समयके ऊपर आयकर दोहन करनेवाला गोप आदि दूध निकाल जाया करै जब गौ ब्यावै तब एक महीने तक उसका दूधननिकालै बछड़ेकोचूंखने देवै पीछे एक महीनेतक एकथनका फिर एक महीनेतक दोथन का औ इसके अनंतर तीन थनका दूध निकालै एक थन सदा बछड़ेके लिये छोड़ता रहै तिलकीखल कोमलतृण लवण आटा आदिसे बछड़ोंका पालन करै औ समयपर उनको जल पिलावै बूढ़ी गौ गर्भिणी दूधदेतीहुई औ बछड़े बछियाओं का बराबर पोषण करै न्यून अधिक न समझे तीनगौओंके अर्थ एक ग्वाल होना चाहिये औ पांच बछड़ोंकेलियेभी एकहीहोय गौके गले में घंटा अवश्य बांधनीचाहिये एकतो घंटा बांधनेसे शोभाहोतीहै दूसरे उसके शब्दसे कोई दुष्ट जीव गौके समीप नहीं आता औ गौ कहीं दौड़कर चलीजाय तो घंटाके शब्द के अनुसार उसको ढूंढ़सक्ते हैं जहां सिंह व्याघ्र आदि दुष्ट जीव न होयँ तृण औ

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by eGangotri

जल बहुत होय छायाकेलिये घने वृक्ष होयँ औ पशुओंके कोई रोग न होय ऐसे स्थान गोष्ठ अर्थात् गौओं के रहने का स्थान बनावै औ भेड़ बकरियों के लिये गुप्तस्थान बनावै औ वर्ष में दोबार चैत्र औ आश्विन में उनका ऊन उतारै गौओं के यूथ में चार अथवा पांच सांड़ चाहिये औबकड़ियों के यूथमें दशसांड़ होने आवश्यक हैं घोड़े ऊंट औ महिषों के यूथ में जितने होयँ उतनेहीं ठीकहैं कुछ नियम नहीं खेतीकरानेकेअर्थ जिनसेवकों को रक्खै उनकोभोजन औ कुछ बेतन अर्थात् तनख़्वाह देवै औ जहां खेत खलिहान अथवा बाटिका आदिमें वे काम करतेहोयँ वहां बार २ जायकर देखे औ उनमें जो अच्छा कामकरता होय उसका सत्कार अधिक करै औ उसको भोजनभी औरोंसे कुछ उत्तम देवै समय २ पर सब प्रकार के अन्न का संग्रह करै औ समयपर सबको खेतों में बुआवै घरका मूल स्त्री है औ गृहस्थ का मूल अन्न इसकारण अन्नमें मुक्त हस्त न होय अर्थात् अन्नको वृथा न ख़र्चै सदा संचयकरता रहै संचयकरनेमें औख़र्चकरनेमें अन्न कोथोड़ासा समझ अवज्ञा न करे देखो थोड़ा २ शहदइकट्ठा करते२ मक्खी कितना इकट्ठा करलेती हैं चींटी जरा२सी मट्टी लाकर कितना ऊंचा वल्मीक बनालेतीहैं औ बहुतसा अंजनभी नित्य २ आंखमंडालते २ निबड़जाताहै इसी भांति सबबस्तुओं का संग्रह औ ख़र्चभीहोताहै इसमें थोड़ीबस्तुकीअवज्ञा न करनी चाहिये सब घरकेकाम स्त्री पुरुष एकमतहानेसे अच्छेहोते हैं औ जगत्में ऐसे भी हज़ारों पुरुष हैं कि जिनके सब कामों में स्त्री प्रधान रहती हैं परंतु जो स्त्री बुद्धिमान् औ सुशीला होय तो कुछ हानि नहीं होती नहीं तो अनेक प्रकारके दुःख भी होते हैं इस कारण स्त्री की योग्यता अयोग्यताकोसमझ बुद्धिमान्पुरुष उसको कार्य में नियुक्त करै कांगनी का पांचवां भाग धान का

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

तीसरा भाग यव गेहूं मूंग उड़द आदिका चौथाभाग भूनने से कमती होजाताहै औ येहीअन्नरांधनेसे द्विगुण होजाते हैंकंगुनी कोदों चीना औ चावल इनका भात चौगुणा होताहै औ पुराने चावलोंका चौगुनेसे भी अधिक होताहै परंतु पाक करने हारा चतुर चाहिये लाई परमल खील औ भुनेहुये चने पांचवां भाग अधिक होजातेहैं इसी भांति मूंग उड़द मसूर आदि भी जानो अलसीमें छठांभाग तेल निकलताहै सरसों कैथकेबीज औ नीब के बीजों में पांचवां भाग तिल महुआ कुसुंभ के बीजऔ इंगुदी अर्थात् एकप्रकार का पहाड़ीफल उसके बीज इनमेंचौथाई तेल निकलताहै बाक़ी सबखल होतीहै ये सबबातैं अनुमानसे कही हैं समय भेद औ देश भेदसे इनमें अंतर भी पड़जाताहै गौ के सोलहसेर दूधमें एकसेर घी औ भैंस के सोलहसेर में सवासेर घी निकलता है परंतु भूमि औ तृण अर्थात् चारे के भेद से न्यून अधिकभी होताहै इसलिये इन सब बातोंको अपने अनुभवसे निश्चय करलेवै रेशम कपास शण आदिका सुधारना लोढ़ना आदि कंघी लंगड़ी बहरी आदि स्त्रियों से करावै थोड़ी मजूरी पर करदेवैं बालक वृद्ध अंधे भूखे आदि मनुष्यों से भोजन आदि देकर काम करालेवै भर्ता विदेश में गया होय तो ये सब काम सावधान होकर स्त्री कराया करै सूत्रों का व्यवहार भी भली भांतिजाने अलसी औ कपास में पांचवां भाग सूत बैठताहै रुई के धुनने से तेईसवां भाग घट जाता है परन्तु धुनियां जानकर न उड़ा देवै औ छिपा भी न लेवै अच्छे सूत्रका वस्त्र बनानेसे पचासवां भाग घटताहै परंतु माड़ी देकर तंतुवाय उसमें दशवां अथवा ग्यारहवांभाग बंधादेतेहैं औ सूत्रके मोटे महीन होनेपर भी घटती बढ़ती देखीजाती है औ बुनवाई भी सूत्र के ऊपरही है इन सब बातों को जो गृहस्थ

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पुरुष भली भांति जानै औ देश कालके अनुसार सब व्यवहार समझै वह सुखसे रहता है ॥

बारहवां अध्याय ॥

ब्रह्माजी कहतेहैं कि हे मुनीश्वरो घरमें स्त्री प्रभात सबसे पहिले उठै औ रात्रिको सबके पीछे भोजनकरै औ पीछेही सोवै औ आवश्यककार्य के बिना घरकी देहली के बाहर पैर न धरै जो बहुत प्रभात उठबैठै तो भर्ताके समीप बैठकरही सबसेवकों को अपने २ कामको आज्ञा देवै बाहर न जाय जब पतिभी जग उठे तबवहांका आवश्यक कार्यकरघरकेधंधेमें लगै रात्रिकेपहिले उत्तम वस्त्र भूषण उतार घरके कार्यके योग्य बस्त्रपहिन साव-धानहो सबकामकरै पहिले रसोई के मकान औ चूल्हेको लीप पोतकरस्वच्छकरै और रसोईके पात्रोंकोमांजिधोय औ पोंछकर वहांरक्खै औ औरभीसबरसोईकी सामग्री वहांइकट्ठीकरै रसोई का स्थान भी न तो अतिगुप्तन बहुत प्रकटस्वच्छ विस्तीर्ण औ जिसमें धुंआनहोय ऐसाहोनाचाहिये दूधदहीकेबर्तनोंको सीपी रस्सी अथवा वृक्षकी त्वचासे खूब रगड़करधोडालै पीछे धूपनें सुखालेवै जिससेदहीदूधमेंकुछविकृतिनहोयबुरेपात्रोंमेंदही दूध बिगड़ जातेहैं घी दही दूध छाछआदिको सावधानीसेरक्खै फिर स्नानादि आवश्यक कृत्यकरके पतिकेलिये अपने हाथसेरसोई बनावै औ यह बिचार करै कि कौनसा पदार्थ उनको प्रिय है अग्निकी वृद्धिकिस भोजनसे होतीहै क्यापथ्यहै क्याअपथ्यहै औ आरोग्यदेनेहारादेशकालके अनुकूल कोनभोजनहै यहसब बिचार कर प्रीतिपूर्वक रसोईबनावै औ रसोईके स्थानमें ऐसे वैसे स्त्री पुरुषों को न आनेदवै इसबिधि रसोई बनाय सब प-दार्थोंको स्वच्छ पात्रोंसे ढक बाहर आकर शरीरका प्रस्वेदपोंछ

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

गंध ताम्बूल मालाबस्त्र आदिसे अपने को थोड़ासा भूषित करै फिर भोजनकेलिये पतिकोबुलाय सबप्रकारके व्यंजन भात रोटी मिठाई आदिपरसै जो देशकालके विपरीतनहो औ जिनकापरस्पर विरोधभीनहोजैसा दूधऔलवणकाहै पतिके भोजनसमय आप पंखालेकरधीरे धीरेपवनकरै औजिसपदार्थपरपतिकीअति रुचिदेखैवह औरपरसै इसभांतिपतिकोभोजनकरावैसब सपत्नियोंको अपनी सगी बहिन के समान जानै औ उनके संतानों को अपनेसंतानसेभीअधिक प्रियसमझे उनकेभाई बन्धुओंकोअपने भाइयों के बराबरमानै भोजन बस्त्र अभ्यङ्ग भूषण ताम्बूल आदि जबतक सपत्नियोंको न देलेवे तबतक आप भी न ग्रहण करै जो सपत्नीके अथवा अपने घर में और किसी मनुष्य के कुछ रोगहो जाय तो उसकी भलीबिधि चिकित्सा करावै नौकर बंधु सपत्नी आदिको दुःखीदेख आपभी दुःखपावे औ उनकोप्रसन्न जानआप भीसुखमाने घरकासब वृत्तान्त पतिसे एकान्तमें सुनादेवै परंतु सपत्नियोंकेदोष न कहैजोकोई व्यभिचार आदि बड़ादोषदेखैकि जिसके गुप्त रखने से कुछ अनर्थ हो ऐसेदोष को अवश्यपति से कहदेवै दुर्भगा जिसकापति सदा तिरस्कारकरै औ सन्तानहीन हो ऐसीसपत्नीको भी सदा आस्वासनकरै औ भोजनबस्त्र भूषण आदि से दुःखी न होने देवे और भी जो किसी नौकर के ऊपर पतिकोपकरै उसकाभीआस्वासनकरदेवै परन्तु पहिलेयहबिचार लेवैकि इसकाआस्वासनकरनेसे कुछहानिनहोय जोदेखैकिबहुत कालव्यतीत होगया औ मेरेकोईसन्तान न भया तो पतिकोदूसराबिवाह करनेके लिये समझाय प्रीति से अपनेहाथ पतिका बिवाहकरै औ नईसपत्नीको छोटीबहिन के समान जानै औ उस केभाईबन्धुओंका आदर प्रसन्नचित्त होकरकरै औ मात की भांति घरकेसब कामउसको सिखावै औ सासुससुरके समय भली भांति

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by eGangotri

शृङ्गारकराय रात्रिको पतिके समीप पहुंचाय देवै इसप्रकारसब रीति से पतिको प्रसन्न रक्खे क्योंकि स्त्रियों का देवता पति है बर्णोंका देवता ब्राह्मण ब्राह्मणों का देवता अग्नि औ प्रजाओंका देवता मेघ है स्त्रियोंका त्रिबर्ग प्राप्तिके दो उपाय हैं एकतो सब प्रकारसे पतिको प्रसन्न रखना दूसरे आचरण शुद्धचित्तके अनुकूल चलनेसे जैसी पतिकीप्रीति स्त्रीपर होतीहै वैसी न रूपसे न यौवनसे औ न उत्तमशृङ्गार करनेसे होय क्योंकि प्रायः देखतेहैं कि उत्तमरूप औ तरुण अवस्थाकरके युक्तस्त्री भी पतिकेविपरीत आचरण कर दौर्भाग्य को प्राप्त होती है औ अति कुरूपा औ अवस्थासे हीन भी पतिके चित्तके अनुकूल चलने हारा सुखभोगती हैं इसलिये पतिके चित्तका अभिप्राय भलीभांति समझना औ उसके अनुकूल चलना यही स्त्रीके लिये सबसुखों का हेतु है जब जाने कि बाहर से अब पतिको आनेका समयहै तबघरको स्वच्छकर उत्तम आसनबिछाय सावधानहोकर बैठे औ पतिके आतेही अपनेहाथ उनकेचरणधोय आसनपरबैठायपंखालेधीरे २ पवन करै ये सबकाम दासीआदिसे नकरावै अपनेबंधु औपतिके बंधुओंका सत्कारआदि पति को इच्छानुसार करै अर्थात् जिस पर पतिकीरुचि न देखै उससेअधिक शिष्टाचार न करैकोईकुलीन पुरुष अपनी कन्यासे उपकार की आशा नहीं रखता औ जो रक्खै वह अधम पुरुषहोताहै कन्याबिवाहि कर फिर उससे अपनीवृत्तिकी इच्छाकरना यहमहात्मा औकुलीन पुरुषोंकी रीति नहीं यहमार्ग्गनट भांड़दास आदि नीचमनुष्योंका है इसलिये स्त्रीके बंधु केवल प्रीतिकेलिये व्यवहार रक्खें औ यथाशक्तिकुछ देतेभी रहैं उनसे आपकोई बस्तुलेनेकी इच्छानरक्खैं इसप्रकार जो स्त्री सद्वृत्त को जान सबबातकरै वहपति औ उसकोसबबन्धुओंको संमत होतीहै परन्तु पतिकी प्रिया औ सुशीलाहोकर भी

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

स्त्रीको लोकापवाद से डरना चाहिये क्योंकि सीता आदि उत्तम स्त्रियोंकोभी लोकापवाद होजानेसे अनेक भांति के दुःख भोगने पड़े उत्तम आचरणवाली स्त्री भी जो बुरासंग करै अपनीइच्छासे चाहेजहांचलीजाय उसके अवश्य कलंक लगता है औझूठादोष लगनेसे भी कुलकलंकित होजाता है उत्तम कुलकी स्त्रियोंकोये बातें आवश्यक हैं कि किसी भांति अपनेकुलको दूषित न होने देना पतिकेधर्म अर्थ औ कामका साधन करना औ संततिस्थापन करना बुरे आचरणवाली स्त्री अपने कुलोंको नरक में डालती हैं औ भलेआचरण वाली नरक में गिरेहुओं को भी निकालतीहैं पतिके चित्त की अनुकूलता औ शुद्ध आचरण ये दोनों स्त्रियोंके भूषणहैं सुवर्ण रत्नआदि भूषण तो केवल शरीर पर बोझलादना है जो स्त्रीपतिको औ लोकको भली भांति आराधन करै अर्थात् पतिके चित्तके अनुकूल चलै औ लोक व्यवहार भली भांति समझ उसके ऊपर आचरणकर कीर्तिसंपादन करै किसीभांति काकलंक अपनेको न लगने देवै वहनारी धर्मअर्थ औ कामको निर्विघ्न पाती है ॥

तेरहवां अध्याय ॥

ब्रह्माजीकहतेहैं किहेमुनीश्वरो अबहम प्रोषितपतिकाअर्थात् जिसका भर्ता परदेशमें गयाहो उसका आचरण कहते हैं पति जब विदेशमें गयाहोय तब बहुत भूषण न पहिने मंगलकेलिये एक आध कंठसूत्र नथ आदि पहिने रहै पतिने जिस कामका आरंभ कियाहो उसको अपनी शक्तिके अनुसारकरतीरहै देहका अधिक संस्कार न करै केशों को एक बेणीरक्खै रात्रिको सास आदि पूज्य स्त्रीके समीप सोवै बहुत ख़र्च न करै व्रत उपवास आदि करतीरहै पतिका वृत्तांत सदा पूछतीरहै नित्य उसके आने

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by eGangotri Foundation USA

की बाट देखै औ विदेश में उस के कल्याणके लिये नित्यदेव-
पूजाआदि शुभकर्म करतीरहै जाति विरादरीमें किसीके घर न
जाय जो आवश्यक कार्यहोय तो अपनेबड़ोंकीआज्ञालेघरमेंसे
किसीशिष्ट दासीआदिको संगकरजाय परन्तु वहांबहुत कालन
ठहरै औ स्नानभोजन आदिभी नकरै जबपति विदेशसेआजाय
तबसुंदर वस्त्र भूषण पहिन देवताओं के जो उपयाचितक अर्थात्
मन्नतमानरक्खीहोयँ सबपूरीकरदेवै अपनेसे बड़ीसपत्नीकोमाता
केसमान जानै औ उसके संतान को अपनीसंतानसे भीअधिक
मानै पिताके घरसेजो कुछवस्तुआवै पहिले उसको देवै वहभी
थोड़ीसीग्रहणकरले औबाक़ीको भलीभांतिरखदे जब २ छोटीको
उसवस्तुकी अपेक्षाहोतब २ देतीरहै छोटीसपत्नीके दियेहुयेपदार्थ
काअनादर न करै सपत्नियों में परमद्वेष होजाता है परन्तु बुद्धि
मती स्त्रीअपने उदार आचरणसे कभी द्वेषनहीं होनेदेतीहै ऋतु-
स्नान के अनंतर बड़ी सपत्नी की प्रेरणासे औ उसीसे अपनाशृ-
ङ्गार करवाय लज्जासे संकुचित होती हुई पतिके निकटजाय औ
वहांजाय एकांतमें उससमय के योग्य हावभाव औ बातचीतसे
पतिकामन हरलेवै औ प्रभातउठकर लज्जित हुई २ बड़ी सपत्नी
के समीपजाय औ सदा उसके साथ प्रीति रक्खै परन्तु अपनी
बुद्धिमानी से पतिको अधीन करलेवै सब कालमें लज्जास्त्री का
भूषणहै परन्तु एकांतमें पतिके समीप प्रगल्भताही परमभूषणहै
पतिको सब प्रकारसे अनुकूल करके भी बड़ी सपत्नी आदि का
गौरव औ आदर न्यून नकरै औ घरके काममें जो पति आज्ञा
देवै उसमें ऐसी बुद्धिमत्ता करै कि सपत्नीकी आज्ञा ले लेवै औ
वह यही जानै कि मेरीही आज्ञासे काम करती है बड़ी सपत्नी
भी जब देखै कि पतिका चित्त इसमें आसक्त होगया है तबकुछ
क्षोभ न करै औ अपनी बेटीके समान उससे प्रीतिरक्खै इसीसे

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by eGangotri

उसकीबड़ाई औ पतिकी अनुकूलताहोतीहै मनबचन कर्मकरके पतिकी अनुकूलता करै किसी भांति पतिके आगे उद्धतपना औ द्वेषप्रकट नकरै इस प्रकार सौभाग्यकी वृद्धिहोतीहै औ पतिकी अतिप्यारी नारीसे विरोधकरनेसे पतिसे द्वेषहोजाताहै इसलिये बड़ीस्त्री पतिसे औ सपत्नी से प्रीति रक्खै घरका सबकाम मन लगाय करै नौकरों का भरण पोषण औ पूज्योंकी पूजा भली भांति करतीरहै औ सबप्रकार से अपने शीलकी रक्षारक्खै वह इसलोकमें औ परलोकमें सुखपाती है औ यशकमाती है॥

चौदहवां अध्याय॥

ब्रह्माजी कहतेहैं कि हेमुनीश्वरो अबहम दुर्भगा अर्थात् जिस पर पति अति क्रोधयुक्तहो औ कभीउसका आदर न करै उसके लिये जो आचरण योग्यहै उसका वर्णन करतेहैं दुर्भगास्त्री व्रत उपवास आदिकिया करै औ जिसदिन कुछ विशेषकृत्य घरमेंहो उसदिन सबकाम प्रीतिसेकरै अपनीनिंदा सपत्नियों की प्रशंसा करै औ भर्ताके आगेकभी ईर्षाप्रकट न करै औ सदायह कहती रहै कि मेरीसरीखी स्त्रीको यही बहुत कुछहै कि ऐसे उत्तमपति की भार्या कहातीहूं भूषण उत्तम वस्त्र आदिसदा पहिनेरहै परंतु बहुतउद्धतभीनबनै शरीरकोहाथपैरोंको दांतोंकोअतिस्वच्छरक्खै बैतसीवृत्ति धारणकर सबसपत्नियोंमेंरहै अर्थात्जैसे बेतकावृक्ष बड़ेबेगसेआतेहुये जलमेंझुकजाताहै औ जलका बेगनिकलजाने पर फिर खड़ाहोजाता है औ आनंदसे उसीस्थानपर बनारहता है औ जो वृक्षनहीं झुकते वेजड़से उखड़कर जलकेसाथही बहे चलेजाते हैं इसका नाम वैतसीवृत्तिहै जो पतिकी बहुत प्रिया हो उससे बहुतस्नेह रक्खै जिसकार्य में पतिकीइच्छा देखै उस कोकरै भंडारवस्त्र अन्न तांबूल गंध औषध पात्रकेद्रव्य आदिको

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by eGangotri Foundation

आज्ञाबिनाहाथनलगावै औ घरमेंझाड़ूदेनाचौकालगाना आदि काम आज्ञाबिनाभीकरै सपत्नीके संतानोंकी स्नान वस्त्रभूषण भोजन आदिसे सदाशुश्रूषाकरतीरहै जातिसे कोई स्त्री दुर्भगा अथवा सुभगा नहींहै उत्तमस्त्री भी भर्त्ताके चित्तका अभिप्राय न जाननेसे उसकेप्रतिकूलचलनेसे औ लोकविरुद्धआचरणसेदुर्भगा होजातीहै औ पतिकेअनुकूल चलनेसे सुभगा होतीहै इसलिये सबअवस्थामें मनवचनकर्मकरके पतिकेचित्तकेअनुकूलचलै जिस सपत्न को पति इच्छाकरै उसको पति से मिलायदेवै पति कीप्रिया जो मानवती होगईहोय तो उसकोसमझाय क्रोधशांत कर पतिकेअनुकूल करदेवै पैरदबाना अंगोंकोमर्दनकरना शिर मलनाआदि भलीभांतिसीखै औ पतिकीसेवाकरै अंगोंकासंबाहन अर्थात् दबाना तीनप्रकारका है मृदु मध्य औ गाढ़ भुजा ऊरु कटि पृष्ठ कंधे शिर औ पैरोंमेंगाढ़मर्दनकरनाचाहिये अर्थात् इनको ज़ोरसेदबावै इनकेबिना और अंगों में मध्यम औ नीचे अंगनाभि मर्म्मस्थान हृदय गल कपोलआदिमें मृदुसंबाहनकरै अर्थात् इनअंगोंको धीरे२ दबावै जो पति जागताहोय तो गाढ़ मर्दनकरै आधा सोयाहोय तो मध्य औ भलीभांतिसोगयाहोय तो मृदुमर्दन करै अथवा न करै ऐसीयुक्तिसे अंग संबाहनकरै कि पतिको आनन्दहोय रोमांचहोजाय औ दबाते२ निद्राआजाय सोताहोय चाहे बैठाहोय जब पतिको एकांतमें देखै तब उसकेअंगोंको मर्दनकरै औ जिसअंगके मर्दनकरनेसे आंखमूंदै रोमांच होय कामका उद्दीपन होय उस अंगको विशेष करके दबावै औ ऊरुमूलको तथा जिसअंगपर पति बार२ हाथरक्खै उसअंगको भलीभांति धीरे२ संबाहनकरै इसभांति जो दुर्भगा स्त्री भी पतिका सेवनकरै वह पति को अनुकूल करलेती है औ संसार के सुख भोगतीहै औ त्रिवर्ग पातीहै॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पन्द्रहवां अध्याय॥

सुमन्तुमुनिकहते हैं कि हे राजाशतानीक इसप्रकार स्त्रियोंके सम्पूर्णलक्षण औ सदाचार ऋषियों के प्रति कहकर ब्रह्माजी हिमालयकोगये औ सबऋषिभी प्रसन्नहोतेहुये अपने२आश्रम को जातेभये हे राजा यह स्त्रीलक्षण औ स्त्रीका आचरण जान आगे जो कुछ गृहस्थी को करनाचाहिये वह हम वर्णनकरतेहैं वैवाहिकअग्निमें गृह्यकर्म करनाचाहिये गृहस्थीकेघर पंचसूना अर्थात् जीवहिंसाके स्थानहैं वहांजीव मरनेसे गृहस्थ स्वर्गको नहींजाता उखली चक्की चूल्हा मार्जनी अर्थात् झाड़ू औ उदकुंभी अर्थात् जलका घड़ा इन पांचो स्थानों में जीवहिंसा होती है उस हिंसादोष की निवृत्ति के लिये पांच महायज्ञ गृहस्थी को अवश्य करने चाहिये ब्रह्मयज्ञ पितृयज्ञ देवयज्ञ भूतयज्ञ औ अतिथियज्ञ वेदपाठको ब्रह्मयज्ञ कहते हैं तर्पणका नाम पितृयज्ञहै होम देवयज्ञ कहाताहै भूतयज्ञ बलिवैश्व देव की संज्ञाहै औ अतिथियज्ञ अभ्यागतके सत्कारको कहते हैं इन पांचयज्ञों को जो नियम से करै वह घरमें बसकर भी पंचसूना दोषों से लिप्त नहींहोता औ जो समर्थ होकर भी न करै वह वृथाजीता है श्वास लेताहुआ भी मरे के समान है इतनासुन राजाशतानीक ने पूछा कि महाराज जिस ब्राह्मणके घरमें अग्निहोत्र नहीं वह मृतकके समानहोताहैयहआपनेकहा परन्तुवहदेवपूजा आदि क्योंकर करै देवता पितर उससे संतुष्ट कैसेहोयँ औ उस का उद्धार किसविधिहोय यह आपमेरा सन्देह निवृत्तकरैं यह राजाका प्रश्नसुन सुमन्तुमुनिबोले कि हे राजाजिन ब्राह्मणों के घरमें अग्निहोत्र न हो उनकाउद्धार व्रत उपबास दान देवताकी स्तुति औ देवभक्ति आदिसे होताहै औ जिसदेवताकी जो तिथि

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हो उसमें उपवास करनेसे वहदेवता बिशेषकरके प्रसन्न होताहै यहसुनराजानेफिरपूछा कि महाराज तिथियोंकीविधि तिथियों के दिन जो अलग२ भोजन होयँ औ उपवासविधि यह सब आप वर्णन करैं जिसके करने से संसार के जीव पाप से मुक्त होजायँ यह राजाका वचनसुन सुमंतु मुनिने कहा कि हे राजा तिथियोंकीविधि हम वर्णनकरतेहैं जिसके सुनने से भी पाप कट जायँ प्रतिपदाकेदिन क्षीरका भोजनकरै पुष्पोंका भोजन द्वितीयाको लवणरहित भोजन तृतीयाको तिल चतुर्थीकोक्षीर पंचमीकोफल षष्ठीको शाक सप्तमीको विल्व अष्टमीको पिष्ट नवमीको अग्निविना सिद्धकिया भोजन दशमीको घृत एकादशीको खीर द्वादशीकोगोमूत्र त्रयोदशीको यवचतुर्दशीकोकुशाकाजल पौर्णमासीको औ मूंग चावलआदि हविष्य भोजन अमावास्या को करै यहसब तिथियोंके भोजनकी विधि है इसविधि से जो एक पक्ष भोजन करै वह दश अश्वमेध यज्ञों के फलको प्राप्तहोय एक मन्वन्तर स्वर्गमें रहताहै औ गंधर्वोंसहित अप्सरा उसके आगे नाचती गाती हैं जो इस विधिसे चारमहीने भोजन करै वह सौ अश्वमेध औ सौ राजसूय यज्ञका फलपाय स्वर्गमेंजाय गंधर्व औ अप्सराओंकरके सेवित दोमन्वन्तर आनंदसेनिवास करताहै आठमहीने पर्यंत जो इसविधिसे भोजनकरै वहहज़ार यज्ञोंका फलपावै औ चौदह मन्वन्तर स्वर्ग में निवास करै जो एकबर्ष इस भोजनके नियमसे व्यतीतकरै वह सूर्यलोकमें कई मन्वन्तर सुखसे निवास करै ब्रह्मचारी गृहस्थ वानप्रस्थ स्त्री पुरुष शूद्रआदि सब इन तिथिव्रतोंके अधिकारी हैं इन व्रतोंका आरम्भ आश्विनकी नवमी माघकी सप्तमी बैशाखकी तृतीया कार्तिककी पूर्णिमासेकरै इनकाकरनेहारा सूर्यलोकको जाताहै जिनपुरुषोंने पूर्वजन्ममें व्रतउपवास आदिकियेदानदिये अनेक

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

प्रकारसे ब्राह्मणोंकोसंतुष्टकिया माता पिता औ गुरुकीशुश्रूषा करी तीर्थयात्रा विधिसेकरी वे पुरुष स्वर्गमें बहुतकाल रहकर जब भूमिपर जन्मलेते हैं तब उनके चिह्न प्रत्यक्षही देखपड़ते हैं हाथी घोड़े पालकी रथ सुवर्ण रत्न कंकण केयूर हार कुण्डल मुकुट उत्तम वस्त्र सुन्दर सुन्दर स्त्री अच्छे सेवक आदि उनको मिलतेहैं आधिव्याधिसेरहित होकर बहुतआयुष भोगतेहैं औ पुत्र पौत्रादिका सुख देखते हैं औ बंदीजनों के स्तुति शब्द से सोतेहुये उठतेहैं औ जितने व्रतदानआदि सत्कर्म नहींकिये वे काणे अंधे लंगड़े कुबड़े गूंगे रोग औ दरिद्रसे पीड़ितहोतेहैं यह ही पुण्य औ पापकी प्रत्यक्ष परीक्षाहै इतनीविधि सुमंतुमुनिसे सुन राजानेकहा कि महाराज आपनेसंक्षेपसे तिथियोंकावर्णन किया अब यह वर्णन कीजिये कि कौनदेवताकी किसतिथिमें पूजाकरनीचाहिये औव्रतआदिकिसविधिसेकरनेचाहियेकिजिन केकियेसेयज्ञोंकाफलप्राप्तहोय यहराजाका प्रश्न सुनिमुनिकहने लगे कि हे राजातिथियोंकारहस्य पूजाकाविधान फलनियम देवता अधिकारी हमकहतेहैं आपश्रवणकरें यहसब आजतक हमने किसीसे नहींकहाहै पहिले संक्षेपसे हम सृष्टिका वर्णन करतेहैं प्रथमपरमात्माने जलउत्पन्नकर उसमेंअपनावीर्यडाला जिससे एक अंड बनगया उस अंड से ब्रह्मा उत्पन्नभये औ-सृष्टिकरनेकी इच्छाकर अंडके एककपालसे भूमि औ दूसरेसे आकाश रचा औ दिशा उपदिशा देवता दानवआदि रचे औ जिसदिन यह सबकामकिया उसकानाम प्रतिपदारक्खा सब तिथियोंमें ब्रह्माजीने इसको प्रवर अर्थात् उत्तम बनाया सब तिथियोंकेप्रारंभमेंप्रतिपादनकिया औ सबतिथियोंकापद इससे आगेभया इसलिये इसकानाम प्रतिपदारक्खा हेराजाअबइस तिथिके उपवास औ नियमोंका हम वर्णन करतेहैं प्रतिपदा के

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by eGangotri Foundation USA

दिन यथाशक्ति दुग्ध ब्राह्मणको देवै औ पीछे यहकहै कि ब्रह्मा जी मेरे ऊपर प्रसन्नहोयँ औ आपभी क्षीरही भोजनकरैइसविधि एकवर्ष व्रतकर अंतमें गायत्री सहित ब्रह्माजीका पूजन कर व्रत समाप्तकरै इसविधि व्रतकरनेसे सबपाप दूर होतेहैं औ सुंदर अप्सराओं करकेयुक्त दिव्यरत्नोंसे जड़ाहुआ सुवर्णका बिमान ब्रह्माजी उसको देतेहैं जिसमें बैठकर सबलोकोंमें जासक्ताहै इस भांति बहुतकाल स्वर्ग आदिलोकोंमें निवासकर पृथिवीमें जन्म लेताहै तबभी दशजन्मतक बेदविद्याका पारगामीधनवान्दीर्घा-युष आरोग्यभोगी औ यज्ञकरनेहारा ब्राह्मणहोताहै विश्वामित्र मुनिने ब्राह्मण होनेके लिये बहु काल तक घोर तपकियापरन्तु ब्राह्मण न बने तब नियम से प्रतिपदाका व्रतकरनेलगे इससे थोड़ेकालमें ही प्रसन्न हो ब्रह्माजीने उनको ब्राह्मण बनादिया क्षत्रिय वैश्य शूद्र आदि कोई इस तिथिका व्रतकरै वहसबपापों से मुक्त हो दूसरे जन्म में ब्राह्मण होता है यह प्रतिपदा का रहस्य हमने वर्णनकिया है हैहय तालजंघ तुरुष्क पवन शक आदि म्लेच्छ जातिके मनुष्यभी इसव्रतसे ब्राह्मण होसकते हैं यह तिथिपरम पुण्य औ कल्याण के देनेहारी है जो इसकेमाहा-त्म्य कोभी पढ़ै अथवा सुनै वह ऋद्धि वृद्धि औकीर्तिपाकर अन्त में सद्गति पाता है ॥

सोलहवां अध्याय ॥

राजाशतानीक पूछते हैं कि हे सुमंतुमुनि प्रतिपदाका कल्प ब्रह्माजी के पूजनका बिधान औ पूजनका फल आप बिस्तार से वर्णनकरैं यहसुन सुमंतुमुनि कहनेलगे कि हेराजा पूर्वकाल में जब सब स्थावर जंगम जगत् नष्टहुआ औ सर्वत्र जलही जल होगया उससमय ब्रह्माजी उत्पन्नभये औ अनेक प्रकारकेदेवता

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. Digitized by S3 Foundation USA

भूत मनुष्य नदी पर्वत समुद्र आदि उनने सिरजे इससे ये सब देवताओंके पिता औ और जीवोंके पितामहठहरे इसकारणइन कीसदा पूजाकरनीचाहियेयेहीजगत्को उत्पन्नकरतेहैंऔसंहार करनेहारे भी येहीहैं रुद्रइनकेमनसे उत्पन्नभये विष्णुवक्षस्स्थल से औ अपने२ अंगोंसहित चारोवेद इनके चारोमुखोंसे निकले हैं सब देवता दैत्य गन्धर्व यक्ष राक्षस नाग आदि इनकी पूजा करतेहैंसंपूर्णजगत्ब्रह्ममयऔ ब्रह्मामेंस्थितहै इसलियेब्रह्माजी सबके पूज्य हैं जो ब्रह्माजी को भक्तिसे नहीं पूजता वह राज्य स्वर्ग औ मोक्षकभी नहींपाता ये तीनों पदार्थ इनके सेवन से मिलतेहैं इसकारण सदाप्रसन्नचित्त हो ब्रह्माजीकी पूजाकरनी चाहियेब्रह्माजीका पूजनबिनकियेभोजनकरनेसे प्राणत्यागदेना अथवा नरकमें गिरना अच्छा है जो भक्तिसे सदा ब्रह्माजी का पूजनकरै वहमनुष्य रूपमें साक्षात्ब्रह्माही है ब्रह्माजी के पूजन से अधिक कोई पुण्य नहीं यह समझ सदा ब्रह्माजी का अर्चन करतारहे ऐसेपुरुषके दर्शन औ स्पर्श से इक्कीस कुलोंकाउद्धार होजाताहैब्रह्माजी को पूजनेहारामनुष्य बहुत कालब्रह्मलोकमें निवासकर मर्त्यलोक में जन्म लेवै तब चक्रवर्तीराजा अथवा वेदवेदांगकापारगामी कुलीन ब्राह्मणहोय नतो बड़े कठिनतपों से औ न यज्ञोंसे कुछ प्रयोजनहै केवलब्रह्माजीकी पूजासेहीसब पदार्थ मिलसक्तेहैंमट्टी ईंट काष्ठ अथवापत्थरोंसे जो ब्रह्माजीका मन्दिर बनावै वह अपने इक्कीस कुलोंसहित ब्रह्मलोकमेंनिवास करै मृत्तिका करके मन्दिर बनानेसे कोटिगुणपुण्य काष्ठ औईंट से मन्दिर बनाने करके होताहै और इससेदूना पुण्यपाषाणों से मन्दिर बनानेकरकेप्राप्त होता है जो क्रीड़ा करके भी ब्रह्माजी के नाम से एक शाला बनवा देवै वह ब्रह्मलोक में निवास करै औ उत्तम अप्सराओं करके युक्त पुष्पमाला मोतियोंके हारघंटा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

चामर दोला आदिसेभूषितमधुरशब्द करनेहारी किंकिणियोंकी मालाओं से अलंकृत औ सब ऋतुओंमें सुख देनेहारा विमान पाताहै औ उसमें बैठसब उत्तम लोकोंमें देवताओंकेसाथबिहार करताहै ब्रह्माजीके मंदिर में जो छोटे जीवोंको बचाकरधीरे २ झाड़ूदेवै वह चांद्रायणव्रत का फल पाताहै वस्त्रसे जलछानजो मंदिरमें लेपन करै औ जीवोंको बचावे वहभी चांद्रायणके फल का भागी होताहै जोएक पक्षतक ब्रह्माजीके मंदिरमेंजीवरक्षा पूर्व्वक झाड़ूलगाय उपलेपनकरै वह सौकोटि युगसेभीअधिक ब्रह्मलोकमें निवास करताहै औ उसके अंतमें भूमिपरआयसब गुणों करकेयुक्त धर्मात्मा राजा होताहै जो कपट सेभीब्रह्माजी के मंदिरमें मार्जन आदिकरै वहभी ब्रह्मलोकपावै जबतकभक्ति से ब्रह्माजीका पूजन नकरै तबतकही संसारमें भटकताहैजैसा मनुष्यका चित्तबिषयोंमें मग्नहोताहै ऐसाजो ब्रह्माजी में लगेतो कौन पुरुष मुक्ति नपावै जोब्रह्माजीके मंदिरका जीर्णोद्धार करै अर्थात् फूटेटूटे मंदिरको सुधरावै वहभी ब्रह्मलोकमेंनिवासकरै ब्रह्माजीके समान देवता गुरु ज्ञान औ तप कोईभीनहीं प्रतिपदा आदिसब तिथियोंमें भक्तिसे ब्रह्माजीका पूजनकरै औपूर्णमासी को बिशेष करके पूजाकर शंखभेरी आदिके शब्दों सहित आरतीकरै औ गीतनृत्यभीकरावै इसभांतिजितनेपर्बोंमेंआरती करे उतने हज़ारयुग ब्रह्मलोक में निवास करै औ आनंद भोगै कपिला गो के पंचगव्य औ कुशाके जलसे वेदमंत्रोंकरके ब्रह्माजीको स्नानकरावै इसका नामब्रह्मस्नान है औ और स्नानोंसेसौ गुणापुण्य इसमेंअधिकहैदेवकार्य औ अग्निकार्यके लिये ब्राह्मण क्षत्रिय औ वैश्य कपिला गोको रक्खैं शूद्र कभी कपिला को अपने घरमें न लावैं जोशूद्र कपिलाकादुग्ध पानकरै वह महा घोर रौरव नरकमें गिरै ब्रह्माजीकी मूर्त्तिको सुगंधतैलसे अभ्यंग

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

करै तो करोड़ों वर्षों के किये पापोंसे मुक्तहोय ब्रह्माजीको घृतसे स्नानकरावै तो अनेकजन्मोंके पापदग्ध होजांय प्रतिपदाके दिन जोघृतसेस्नानकरावै वहइक्कीस कुलकाउद्धारकरै सुवर्णवस्त्रआदि से भूषित दशहज़ार सवत्सा गो वेदवेत्ता ब्राह्मणों को देनेसे जो पुण्य होताहै वही पुण्य ब्रह्माजी को दुग्ध करके स्नानकराने से प्राप्तहोताहै एकबारभी जोपुरुषचारसेर दूधसेब्रह्माजीको स्नान करादेवे वह सुवर्णकेविमानमें बिराजमानहो ब्रह्मलोकको सिधारै दहीसेस्नानकराय बिष्णुलोक पावै शहत से नहवाय बीर लोकको जावै ईखकेरससे स्नानकराय सूर्य्यलोककी प्राप्तिहोय फलोंकेरससे जो स्नानकरावै वह सबपापोंसे मुक्तहो ब्रह्मलोक में निवास करै जो पुरुष वस्त्रसे छने हुये जलकरके ब्रह्माजीको स्नानकरावै वह सदा तृप्तरहै औ अन्तमें ब्रह्मलोकपावै सर्व्वौषधियोंकेजलसेस्नानकरायब्रह्मलोक चन्दनकेजलसेस्नानकराय रुद्रलोक औ गंगाजलसे स्नानकराय बिष्णुलोकपावै कमल के पुष्प नीलकमल पाटला करबीर मालती बाण आदि पुष्पों से स्नानकराने से चन्द्रलोककी प्राप्तिहोती है कपूर औ अगर के जलसे स्नानकरावै अथवा गायत्रीमंत्रसे सौबार जलको अभिमंत्रितकर उससे स्नानकरावै तो ब्रह्मलोक पावै शीतल जलसे अथवा धारोष्णदुग्ध अर्थात् थनसे निकलते२ गरम२कपिला केदूध से स्नानकराय पीछेघृत से स्नानकरावै तो सबपापों से मुक्तहोजायये तीनोंस्नानकराय भक्तिसे पूजाकरै तो हज़ारअश्वमेधका फलपावै मृत्तिका के घटसे स्नानकरावै तो एकगुण फल ताम्रकेघट से सौगुणा चांदीकेसे लाखगुणा औ सुवर्णके कलश से ब्रह्माजीको स्नानकरावै तो कोटिगुणफल पावै ब्रह्माजीके दर्शनसे उनकास्पर्शकरना उत्तमहै स्पर्शन से अर्चन औ अर्चन से भी घृतस्नान अधिकफलदायकहै कायिकवाचिकमानसिकपाप

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

घृतस्नानकरानेसे कटजातेहैंइसविधि स्नानकराय भक्तिसेपूजन करैपवित्रवस्त्र पहिनआसनपरबैठ सम्पूर्णन्यासकरै पहिलेचार हस्तके बिस्तारमें एकअष्टदललिखकर उसकेमध्यमें द्वादशदल यंत्रलिखै औ पांचरंगों से उसको भरै इसबिधि यंत्र लिखकर गायत्रीके वर्णोंकान्यासकरै मस्तकसे चरणोंतकप्रणवकान्यास करतत्को मस्तकमें स-कोमुखमें वि-को कंठमें तुः-अंगसंधियोंमें व- हृदयमें रे-दोनोंपार्श्वोंमें णि-दक्षिणकुक्षिमें यं-बामकुक्षिमें भ कटि औ नाभिमें गो-जानुओंमें दे-जंघाओंमें व-चरणोंमें स्य-अं-गुष्ठोंमें धी-ऊरुओंमेंम-जानुओंमें हि-गुह्यमेंधि-हृदयमें यो२ओष्ठों में न-नासिका में प्र-नेत्रों में चो-भ्रूमध्य में द-प्राण में य-मस्तक में औ अन्तके तू-कोकेशों में न्यासकरै अपनेदेह में ये न्यासकर देवताके शरीरमेंभीकरै केसर अगर चंदन कपूर आदिकरकेयुक्त जलसे गायत्री मंत्र पढ़ सबपूजा द्रव्यों को मार्जन करै प्रणव करके पीठस्थापन करै औ प्रणवकरकेही तेजोरूप ब्रह्माजी का आवाहनकरै पद्ममेंबिराजमान चारमुखों करके युक्त सब जगत् के सिरजनेहारे श्रीब्रह्माजी का ध्यानकर पूजाकरै गायत्री मन्त्र करके पाद्यअर्घ आचमन स्नान गंध पुष्प धूप दीप भांति२ के नैवेद्यपकेहुयेफल ताम्बूलआचमन आदि उपचारोंसेभक्तिकरके ब्रह्माजी का पूजन करै पहिले मूल मंत्रकरके ब्रह्माजी की मूर्त्ति कल्पना करै प्रथम देहशुद्ध के लिये तीन प्राणायाम कर पीठ में अनन्त कालाग्नि रुद्र औ कूर्मरूप बिष्णुका ध्यानकर उसके ऊपर कमल में बिराजमान ब्रह्माजीको ध्यावै औ ऋग्वेद यजु-र्वेद सामवेद अथर्ववेद ज्ञान वैराग्य ऐश्वर्य औ धर्म इनकीपूजा दिशा बिदिशाओंमेंकर शिक्षाकल्प व्याकरण निरुक्तछन्द ज्यो-तिष उपवेद इतिहास पुराण आदिका पूजनकरै शिक्षा औ व्या-करणका ब्रह्माजीके संमुख पूजनकरै औ बाकी चारोंओर पूजे-

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

प्रणव सहित महा व्याहृतियों का पूर्वादि दिशाओं में पूजनकरै ये व्याहृति ब्रह्माजीकीशक्तिहैं इसलिये अवश्य पूजनीयहैं सात समुद्र नक्षत्र ग्रह ऋषि नाग गरुड़ देवता नदी कुल पर्वतआदि सबकी यथायोग्य पूजाकरै पीछेशुद्ध जलसे आचमन देवै फिर शिखा नेत्र कवच औ अस्त्र इनचारोंका न्यासकर पूर्वआदि चारों दिशाओंमें पूजनकरै इसबिधि भक्तिसे पूजनकर बिसर्जन मुद्रा सेब्रह्माजी का बिसर्जनकरै औ आपोहिष्ठा इस ऋक् से हृदय ऋतंचसत्यं इससेशिखा उदुत्यं इसकरकेनेत्र चित्रन्देवानां इस से अस्त्र मर्माणितेवर्मणा इसकरके कवच औ गायत्रीमंत्र करके शिरका न्यासकरै यहषड़ंगन्यास है गायत्रीमंत्रमुख्यहै औसब कर्म साधनेहारा है इससेब्रह्माजी का पूजन प्रणवयुक्त गायत्री मंत्र करके करै केवल प्रणवकरके ऋग्वेद आदि का पूजनकरै आवाहन बिसर्जन आदि गायत्रीमन्त्रसेही करै इस प्रकार जो पुरुष प्रतिपदा के दिन भक्तिपूर्वक गायत्रीमन्त्र करके ब्रह्माजी कापूजनकरै वह चिरकालपर्य्यन्त ब्रह्मलोकमें निवासकरै॥

सचहवां अध्याय॥

सुमन्तमुनिकहतेहैं कि हे राजाशतानीक कार्त्तिकमासमें जो ब्रह्माजी की रथयात्राकरै वह ब्रह्मलोक को जाताहै कार्त्तिक की पूर्णमासीको मृगचर्मके ऊपर सावित्रीसहित ब्रह्माजीको बिराजसवउपचारोंसे उनकापूजनकरै औ उनकेअग्रभागमें शांड़िली पुत्रकी पूजाकरै जो ब्रह्माजी का परमभक्त ब्राह्मण था ब्राह्मण भोजनकराय बड़ेउत्सवसे ब्रह्माजीको रथपर बैठावै औ रथ के आगे शांड़िलीपुत्रको स्थापनकरै उसरातको जागरणकरै नृत्य गीतआदिउत्सवभांति२केतमाशे ब्रह्माजीकेसंमुखरातभरहोतेरहैं इसबिधि जागरणकर प्रतिपदाकेदिन ब्रह्माजीकापूजनकरै औ

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ब्राह्मणकोभोजनकरायरथयात्राकरैचारोंवेदोंकेजाननेहार उत्तम ब्राह्मण उसरथकोखैंचैं औ रथकेआगे ब्राह्मण वेदपढ़तेचलैं शूद्र इसरथको स्पर्शनकरै आगेशङ्खभेरी मृदंगआदि भांति२ के बाजे बाजतेचलैंइसप्रकार सारेनगरमेंरथकोघुमाय औ नगरकी प्रदक्षिणाकराय अपनेस्थानपर लेआवैंऔआरतीकर ब्रह्माजीकोउनकेमंदिरमें स्थापनकरैं इसप्रकार जोरथयात्राकरैं जो रथको खैंचैं जोदर्शनकरैंवैसब ब्रह्मलोक कोजांय दीपमालाको जो ब्रह्माजीके मन्दिरमें दीपप्रज्वलित करै वह ब्रह्मलोकपावै दूसरेदिनप्रतिपदाको ब्रह्माजीका सब उपचारोंसे पूजन करै औ अपनेको भी वस्त्रभूषण आदिसे अलंकृतकरै यहतिथि ब्रह्माजीको बहुतप्रिय हैऔ इसीतिथिसे बलिके राज्यकीप्रवृत्तिभईहै जो इसदिन ब्रह्माजीका पूजनकर ब्राह्मणभोजन करावै वहबिष्णुलोकपावैचैत्रमें कृष्णप्रतिपदाके दिनचांडालको स्पर्शकर स्नानकरैतोअधिव्याधियोंसे छूटजाय उसदिन गो भैंस आदिकोभूषितकर तोरणके नीचेसेनिकालै औ ब्राह्मणोंको भोजन करावै चैत्र आश्विन औ कार्त्तिकइन तीनों महीनोंकी प्रतिपदा उत्तम हैं परन्तु कार्त्तिककी विशेषकरके प्रधानहैउसमेंकियाहुवा स्नानदानआदि सोगुण फलको देताहै औ राजाबलिको राज्य उसी दिन मिलाहै इसलिये कार्त्तिककी प्रतिपदा बहुत उत्तम मानीजातीहै॥

अठारहवांअध्याय॥

सुमंतुमुनि कहतेहैं कि हे राजा शतानीक द्वितीया के दिन च्यवन ऋषि ने इन्द्रके देखते २ अश्विनीकुमारोंको यज्ञमें सोमपानकरादिया यहसुन राजानेपूंछा कि महाराज इन्द्रकेदेखते २ च्यवन मुनिने किसबिधि अश्विनीकुमारों को सोमपिलाया वया च्यवन जीके तपकाप्रभाव ऐसाप्रबल है कि इन्द्रभीकुछ न कर

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सका तप सुमंतुमुनि कहनेलगे हे राजा सत्ययुग की पिछली संध्यामें च्यवनमुनि गंगातीर समाधि लगाय बहुतकाल से तप करतेथे एक समय अपनी सेना औ अंतःपुरको साथलेकर राजा शर्याति गंगास्नानकरनेआया औ च्यवनके आश्रममें उतरगंगा स्नानकर देवता औ पितरोंका तर्पणकिया इतनेमेंसबसेनाव्याकुलभई औ मूत्रविष्ठा सबकेबन्द होगये यहसेना की दशादेख राजाभी घबराया औ प्रतिमनुष्यसे पूछनेलगा कि किसीनेकुछ अपराधतो नहींकियाहै यहबड़े तपस्वी च्यवनमुनि का आश्रम है इसबिधि सबमनुष्योंसे पूछा परन्तु किसीनेकुछ न बताया तब राजाकीपुत्री सुकन्यानाम अपनेपितासे बोलीकि महाराज एक आश्चर्य्य मैंनेदेखा वहआपसेवर्णनकरतीहूं मैं अपनीसहेलियों कोसंगलिये वनबिहार कररहीथी कि एकओरसे यहशब्दहुआ कि हे सुकन्ये इधरआवइधरआव यहसुनतेही मैं अपनीसखियों सहितउस शब्दकी ओरगई वहां जाकर बहुतऊंचा एकमट्टीका बल्मीकदेखा औ उसकेभीतर छिद्रोंमें दीपककीभांति जलतेहुये दो पदार्थ देखे वे देख मुझे बड़ाआश्चर्य्यहुआ कि यहपद्मराग मणिसे क्याचमकरहेहैं औ मैंने मूर्खता औ चंचलता से कुशाके अग्रभागकरके दोनोंफोड़दिये तब वहतेज शान्तहोगया यहसुन राजा अति व्याकुलभया औ अपनीकन्या को साथले वहांगया जहांच्यवनऋषितपकरतेथे औ उनकोइतनाकाल वहांबैठेबीत गयाथा कि उनकेऊपर बल्मीक बनगया औ उनके सुकन्या ने जो कुशासे फोड़डाले वे उनकेअति प्रकाशमाननेत्रथे राजावहां जाय अतिदीनतासे बिनतीकरनेलगा कि महाराज मेरीकन्यासे बड़ाअपराधबनपड़ा आपक्षमाकरें यहराजाकी प्रार्थनासुन मुनि बोलेकि हे राजाअपराध तो हमनेक्षमाकिया परन्तु अपनीकन्या हमसे बिवाह दे इसी में तेरा कल्याणहै यहमुनिका बचन सुन

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

राजाने झटपट सुकन्या को च्यवनऋषिसे व्याहदिया औ सब सेनाभी सुखी होगई इस विधि मुनिको प्रसन्नकर सुख पूर्व्वक अपनेनगर में आय राजकरनेलगा सुकन्याभी विवाहकेअनंतर भक्तिसेमुनिकीसेवाकरनेलगी वृक्षकीछाल औ मृगचर्म्मपहिन लिया राजकेवस्त्रभूषण उतारडाले इसभांति मुनकीसेवाकरते २ कुछकाल व्यतीतहुआ औ बसन्तऋतु आया सबबन फूलगया कोकिलबोलनेलगे भ्रमरोंने कोलाहलमचाया मंद२ सुगंधपवन बहनेलगा ऐसेसमयमें एकदिन मुनिने अतिरूपवतीअपनीपत्नी सुकन्यासे कहाकि हेप्रिये हमारेसमीपआओ इसउत्तम ऋतुमें हमतुमभीबिहारकरैं औ दोनोंकुलोंकोआनंददेनेहारापुत्रतुम्हारे गर्भ सेउत्पन्नहोय यहसुन सुकन्याने करजोर विनय से बिनती करी कि महाराज आपकीआज्ञा मैं किसीप्रकार नहीं भंगकर-सकती परन्तु जैसीउत्तमशय्यापर मैं अपनेपिता के घरमें सोती थी वैसीशय्याहोय औ आप सुन्दररूप औ यौबनकरके युक्तहो उत्तमवस्त्रभूषण औ सुगन्धसेअपनेकोअलंकृतकरैं औ मैंभीसब शृंगारकरूंतब इसउत्तमऋतुमें बिहारकरनेकाआनन्दहैयहसुन च्यवनमुनि उदासहोबोले कि हेप्रिये न तो मेरा उत्तम रूपहोय न तेरेपिताका सा धनमेरेपास कि जिससे सबभोगकी सामग्री इकट्ठीकरूं यहसुन सुकन्याबोली कि महाराज आपतपकेप्रभाव से सबकुछकरनेको समर्थ हैं यहतो कितनीबड़ीबातहै तबमुनिने कहाकिहेराजपुत्रि इसकामकेलियेमैंअपनातपव्यर्थनहीं करूंगा इतना कह पहिलीभांति तपकरनेलगे औ सुकन्या भी उनकी सेवामें तत्परभई इसप्रकार बहुतकाल व्यतीतहोने के अनन्तर अश्विनीकुमार वहांआये औ दोनोंसुकन्याका अतिरूपदेखबोले कि हे भद्रे तू कौनहै औ इसघोरबनमें इकल्ली क्योंकर रहतीहै यहसुन सुकन्याने कहा कि शर्याति राजाकीसुकन्यानाममैंपुत्री

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हूं मेरे पति च्यवनमुनि यहां तपकरते हैं उनकी सेवाके लिये मैं उनकेसमीप रहती हूं यहमेरा वृत्तान्तहै अब तुमभीकहो कि दोनों कौनहो तब अश्विनीकुमारोंने कहा कि हम देवताओं के वैद्य अश्विनीकुमार हैं औ इस वृद्धपतिसे तुझेक्यासुख मिलेगा हम दोनोंमेंसेएककोबरले तबसुकन्याबोली कि हेदेवताओआप ऐसामतकहो मैं पतिव्रताहूं औ सब प्रकारसे अनुरुक्तहोकर दिन रात अपनेपतिकीसेवाकरतीहूं यहसुन अश्विनीकुमारोंनेकहाकि जो ऐसीबातहै तो तू अपनेपतिकोबुलाला हमउसको उत्तमरूप बनादेंगे औ तीनोंगंगामेंस्नानकर बाहरनिकलैं तबजिसपरतेरी इच्छाहोय उसको बरलेना यहसुन सुकन्याने कहाकि मैं अपने पतिसे पूछआतीहूं अश्विनीकुमारोंनेकहा कि अच्छापूछ आ जब तक तू आवेगी तबतक हमयहांहींठहरते हैं यहसुनसुकन्याअपने पतिके समीपगई औ सबवृत्तान्तकहा उनने भी स्वीकारकिया औ सुकन्या अपनेपति च्यवनमुनिको संगले अश्विनीकुमारोंके समीप आई च्यवनमुनि ने कहा कि हे अश्विनीकुमारो आपका वचन हमको स्वीकारहै आप हमारा रूप उत्तम बनादेवैं पीछे सुकन्या चाहै जिसकोबरलेवे यहकहनेकेअनन्तरअश्विनीकुमार च्यवनमुनिकोलेकर जलमें प्रविष्टभये औ थोड़ेकालके अनन्तर निकले तब सुकन्याने देखा कि ये तीनों समानरूप समानअवस्थावाले समानवस्त्रभूषणोंसे अलंकृतहैंइनमेंमेरेपतिका निश्चय क्योंकरहोय इसचिन्तामें बिचारकर अश्विनीकुमारोंकी प्रार्थना करनेलगी कि हेदेवो अतिकुरूपपतिकामी मैंने त्यागनहींकिया अबतो उसकारूप आपकेसमान होगया फिरमैं क्योंकर त्याग करूं इससे आकेपशरणहूं यहसुकन्या की प्रार्थना सुन प्रसन्न हो अश्विनीकुमारोंने अपने देवचिह्न धारणकिये तब सुकन्या ने देखा कि दो पुरुषोंके नेत्रनिमेष नहीं करते औ उनके [illegible]

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

भी भूमिको नहीं स्पर्शकरते केवल तीसरा पुरुष भूमि पर खड़ाहै औ नेत्रोंसे निमेष कररहाहै यह चिह्नदेख सुकन्या ने च्यवन मुनिको बरलिया तब उसके ऊपर आकाशसे पुष्प वृष्टिभई औ देवताओंने दुन्दुभि बजाये इस प्रकार उत्तम रूप पाय च्यवन मुनिने अश्विनीकुमारों से कहा कि तुमने मेरेऊपर बड़ाउपकार किया कियहउत्तमरूप दियाऔपत्नीदी अबमैंतुम्हारे साथइसके बदले क्या प्रत्युपकारकरूं जोउपकार करनेहारेके संग प्रत्युपकार नकरै वह इक्कीस नरकों में क्रमसेजाताहै इसकारण मैं तुम्हारे ऊपर बड़ाभारी प्रत्युपकार किया चाहताहूं जो तुम्हारी इच्छाहोय सोकहो उनने च्यवन मुनिको प्रसन्नदेख कहा कि हमको यज्ञमेंभागदिलाइयेयहबातच्यवनमुनिने अंगीकारकरी औउनको बिदाकरअपने आश्रममेंआये यहसबवृत्तान्तसुनराजा शर्याति भी अपनी रानीसहित च्यवन ऋषिके आश्रममें आये औ प्रणामकरी च्यवनमुनिने भी उनका आदर सत्कार किया सुकन्या अपनीमाताकेगले लगकर मिली राजाभी अपने जामाताको उत्तमरूप करकेयुक्त देख बहुत प्रसन्नभया च्यवनमुनि ने राजासे कहा कि यज्ञकी सामग्री इकट्ठीकरो हमतुमको यज्ञ करावेंगे यहच्यवन मुनिकी आज्ञापायअपनी राजधानीमेंआय सबयज्ञकी सामग्री इकट्ठीकरीऔ मंत्री पुरोहित आचार्य आदि कोबुलायेयज्ञकी आज्ञादी च्यवनभीअपनीपत्नीसहितयज्ञमेंआये औरभी सबऋषियज्ञमें निमंत्रणदेकर बुलायेगये यज्ञहोनेलगा ऋत्विक् हवनमें प्रवृत्तभये सबदेवता अपना २ भाग लेनेआये औ च्यवनमुनिके कहनेसे अश्विनीकुमार भी आयपहुंचे उनके आनेका प्रयोजन जान इन्द्रने च्यवनमुनिसे कहा कि ये दोनों देवताओंके बैद्यहैं इसलिये यज्ञभाग के अधिकारी नहीं आप इनका पक्ष न कीजिये तब च्यवनमुनिने कहा कि ये देवताहैं औ

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मेरेऊपर इनकाबड़ा उपकारहैमेरेबुलायेसे यहांआये हैं इस-
लियेमैं इनकोअवश्य यज्ञमेंभागदूंगा यहसुनक्रोधसेइन्द्रनेकहा
कि हेमुनि जोमेरा बचन नमानेगातोबज्रसे तेरामस्तकउड़ादूंगा
इन्द्रका कठोर बचन सुनकर भी मुनिने क्रोधनकिया औ
अश्विनीकुमारोंकोभाग देदियातबतोइन्द्रनेअति कोपकरच्यवन
मुनिके ऊपर बज्रउठायाच्यवनने अपनेतप के प्रभावसेइन्द्रको
स्तम्भनकरदिया कि हाथमें बज्रउठायेखड़ेकेखड़े रहगयेच्यवन
मुनिनेभी अश्विनीकुमारोंको भागदे अपनीप्रतिज्ञा पूरीकरयज्ञ
समाप्तकिया इस अवसरमें ब्रह्माजीने आयकर च्यवनसे कहा
कि इन्द्रकास्तम्भन खोलदोऔयही बचनइन्द्रने भीकहाऔयह
भीकहा कि आपके तपकी ख्यातिहोनेके लिये मैंनेइनकोभाग
देनेमें निषेधकिया आजसे सब यज्ञोंमें इनको भाग मिलाकरैगा
औ इसआपके प्रभावको जो सुनैगा अथवा पढ़ैगा वहभीउत्तम
रूप औ यौबन पावैगा यह सुन च्यवनमुनिने इन्द्रकोबिसर्जन
किया आप अपनी स्त्री सहित आश्रमको आये वहांदेखा कि बहुत
उत्तममहल बनगयेहैं जिनमें सुन्दर उपबन औ बापीबिहारके
लियेबनेहैं भांति २कीशय्याबिछीहैं रत्नोंके जड़ाऊभूषणोंऔनाना
प्रकारके उत्तम २ बस्त्रोंके ढेरलगे हैं सब भक्ष्य भोज्य रक्खे हैं
यह सब देखच्यवनमुनि बहुत प्रसन्नभये औ इन्द्रकीप्रशंसाकरी
इतनीकथा सुनाय सुमंतुमुनि बोले किहेराजा इसप्रकारद्वितीया
केदिन अश्विनीकुमारोंको यज्ञभाग मिलाथा अब हमइसकेव्रत
की बिधि कहतेहैं जो पुरुष उत्तमरूपकी इच्छाकरै वहकार्तिक
शुक्लद्वितीयासे व्रतका आरम्भकरै औ पुष्पभोजन करैइसबिधि
प्रतिद्वितीया को व्रतकरै औ जो उत्तम हविष्यपुष्पउस ऋतु में
होंय उनका फलाहार करै इसभांति एकबर्ष व्रतकर चांदीसोनेके
पुष्पबनाय ब्राह्मणों को देवै औ व्रतसमाप्तकरै उसको अश्विनी-

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by eGangotri

कुमार उत्तम रूपदेते हैं और वह उत्तम बिमान में बैठ स्वर्ग में जाय अप्सराओं से बिहार करता है फिर मर्त्यलोक में जन्म लेकर वेदवेदांग जाननेहारा दानी निरोग पुत्रपौत्रों करकेयुक्त औ उत्तम पत्नीकरके सेवित ब्राह्मण होताहै अथवा मध्यदेशके उत्तम नगर में राजाहोता है हे राजा यह पुष्प द्वितीया का बिधान हमने कहा ऐसीही फल द्वितीयाभीहोतीहै जिसकोअशून्य शयना भी कहते हैं फलद्वितीया को जो श्रद्धा से व्रत करै वह ऋद्धि वृद्धिपाय अपनी भार्यासहित आनन्द भोगता है ॥

उन्नीसवां अध्याय ॥

राजाशतानीक कहतेहैं किहेसुमंतुमुनि अबआपकृपाकरफल द्वितीया का विधानकहैं जिसके करनेसे उत्तमफलहोय यह सुन सुमंतुमुनि कहनेलगे कि हे राजा हम फल द्वितीया के व्रतका बिधान कहतेहैं जिसव्रतके करनेसे स्त्री बिधवा नहींहोती औस्त्री पुरुष का कभी बियोगभी नहींहोता जब भगवान् लक्ष्मीजी के संग क्षीरसागर में शयन करैं तब यह व्रतहोताहै श्रावणकृष्ण द्वितीया के दिन लक्ष्मी सहित भगवान्का पूजनकर हाथजोर येश्लोकपढ़ै (श्रीवत्सधारिन्श्रीकांतश्रीवत्सश्रीपतेप्रभो। गार्हस्थ्यंमाप्रणश्येतममधर्मार्थकामद १) गावश्चमाप्रणश्यन्तुमाग्रणश्यन्तुमेजनाः। जामयोमाप्रणश्यन्तुमत्तोदाम्यत्यमदतः२)लक्ष्म्यावियुज्यतेदेवनकदाचिद्यथाभवान्। तथाकलत्रसंबन्धोदेव मामेवियुज्यतु ३) लक्ष्म्यानशून्यंबरदयथातेशयनंसदा। शय्या ममाप्यशून्यांस्तुतथाकुमधुसूदन ४) इसप्रकार प्रार्थनाकर व्रत करै औ जो फल भगवान् को प्रियहैं वे भगवान् के शयन में चढ़ावै औ रात्रिके समय वेहीफल आपभी भोजनकरै दूसरे दिन ब्राह्मणोंको भोजन कराय दक्षिणादेवै इतनासुन राजाशतानीक

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ने पूंछा कि महाराज कौनफल भगवान् को प्रियहैं सोआप कहैं औ दूसरेदिन ब्राह्मण को क्यादानदेवै यह आप वर्णनकरैं यह राजाका बचन सुन सुमंतुमुनिने कहा कि हे राजा जो फल उस ऋतुमें मीठेऔ पकेहोंय वही भगवान् के अर्पण करै कडुवे कच्चे औ खट्टे फल न चढ़ावै ऐसेफलों से भगवान् प्रसन्न नहींहोते हैं औदूसरेदिन ऐसेही फल बस्त्र औ अन्न सुवर्ण ब्राह्मणकोभीदेवै इसप्रकार जो पुरुष चारमहीने व्रतकरै तीनजन्मपर्यन्तउसका घर न बिगड़ै औऐश्वर्यभंग न होय औ जोस्त्री इसव्रतकोकरै वह तीनजन्म बिधवादुर्भगा औ पतिसे बियुक्तनहोय परन्तुभगवान् को खजूर नारिकेल मातुलुंग अर्थात् बिजौरा आदि फलचढ़ाये बिना यह व्रत सफल नहींहोताहै इसकारण फलअवश्यचढ़ाने चाहिये औ ब्राह्मण को भी अपनी शक्तिके अनुसार दानदेना चाहिये औ इस व्रतके दिन अश्विनीकुमारों का भी पूजन करै हेराजा यह द्वितीयाका कल्प हमने वर्णन किया इसके सुननेसे लक्ष्मी मिलती है॥

बीसवां अध्याय॥

सुमंतुमुनि कहतेहैं कि हेराजा जो स्त्री सबप्रकारकासुखचाहै वह तृतीयाका व्रतकरै औ लवण न खाय तो उसकोगौरीभगवती रूप सौभाग्य औ लावण्य देती हैं इसव्रतका बिधानगौरी ने अपने मुखसे धर्मराज प्रतिकहाहै वहीहम वर्णनकरतेहैंगौरी देवीने कहाहै कि जो स्त्री इस व्रतको करै वह सदा अपनेपतिके साथ आनंद भोगै जैसा शिवजीके साथमैं भोगतीहूं बिवाह के प्रथम कन्या यह व्रतकरै सुवर्ण की गौरी की मूर्त्ति स्थापनकरै औ भक्तिसे चित्त लगाय पूजाकर भांति २ का नैवेद्य लगावै औ रात्रिको लवणरहित भोजन कर स्थापन की हुई मूर्त्ति के आगे

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

शयनकरै औ दूसरेदिन ब्राह्मणोंको भोजनकराय दक्षिणादेवै इसप्रकार जो व्रतकरै वह उत्तमपतिपावै औ चिरकालतकभूमि पर उत्तमभोग भोगकरसंतानको स्थापनकर पतिसहित सूर्य्य लोककोजाय वहां बहुतकाल सुख भोगकर ब्रह्मलोक को वहां से सप्तऋषियोंके लोक को औ वहां से शिव लोक में प्राप्तहोय बिधवा स्त्री इसव्रतकोकरै तो वहभी अपनेपतिसे जायमिलैऔ बहुतकाल स्वर्गकेसुख अपनेपति के सहित भोगकरै औ पहिले कहाहुआ सबफलपावै इन्द्राणीने यहव्रत पुत्र के अर्थकिया तब जयन्त नाम पुत्रपाया अरुन्धती ने उत्तम स्थान के लियेकिया जिसकेप्रभाव से पति सहित सबके ऊपर स्थानपाया औ आज-तकआकाशमें देखपड़तीहै रोहिणीने सबपत्नियोंकेजीतनेकेलिये यह व्रतकिया औ लवण न खाया तब सब सपत्नियों में प्रधान औ अपनेपति चन्द्रमा की अति प्रिया भई इसप्रकार यह व्रत उत्तमफल देनेहाराहै बैशाख भाद्रपद औ माघकी तृतीया सब तृतीयाओंमेंउत्तमहैंजिसमेंभाद्र औ माघकीतृतीयास्त्रियोंकेलिये विशेष फल देनेहारी हैं औ बैशाखकीतृतीया सब के लिये सा-धारणहै माघकीतृतीयाको गुड़ औ लवणकादानकरै गुड़केदान सेइन्द्र औ लवणके दानसे शचीप्रसन्न होतीहैं गुड़के अपूपभाद्र कीतृतीयाकोदानकरै औ पायसदानकरैतोशिवपार्वतीप्रसन्नहोंय औ बैशाखकीतृतीयाको मोदक औ शीतलजलकादानकरैतो सब देवताप्रसन्नहोंय बैशाखकीतृतीया अक्षयतृतीयाकहाती है इस दिन अन्नबस्त्र भोजन सुबर्णजल आदि जो दानकरैवहअक्षयहो-जाताहै इसीसे इसतृतीयाकानामअक्षयतृतीयाहै इसतृतीयाको शीतलजल से भरेहुयेपात्रकाजोदानकरै वहसूर्य्य लोकको जाय हेराजाशतानीक इसतिथिकोउपबासकरैतो ऋद्धिवृद्धिऔ लक्ष्मी यह तृतीयाका कल्पजोसुनै वहभीउत्तमफलकाभागी होताहै ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

इक्कीसवां अध्याय॥

सुमन्तुमुनिकहतेहैं किहे राजाचतुर्थीके दिनव्रतकरैऔ गणेश कापूजनकर ब्राह्मणकोतिलदेकर आपभीतिलही भोजनकरैइस प्रकार दो बर्षव्रतकरै तब बिघ्ननायक श्री गणेश जी प्रसन्नहोंय मनोबांछितफल देतेहैं असाध्यकार्य भी इसव्रतके करने से सिद्ध होजातेहैं हाथी घोड़े धन पुत्र पौत्र उत्तम स्त्री विद्या यश औ बुद्धि गणेशजी प्रसन्नहोकर देतेहैं औ सातजन्मतक वह पुरुष राजा होताहै औ पीछे बिघ्नराजके लोकको जाताहै यहसुन राजा ने मुनिसेपूछा कि महाराज गणेशजीने किसको बिघ्न कियाजिस-से उनकानाम बिघ्नराज भया यहआप वर्णन करैं यहराजा का बचनसुन सुमन्तुमुनिकहनेलगे किहे राजा स्वामकार्तिकेय स्त्री औ पुरुषोंकालक्षण बनातेथे उसमेंगणेशजो ने बिघ्नकिया तब कार्त्तिकेय ने इनकाकिया बिघ्न समझ क्रोधकर गणेश जी का एकदांतउखाड़लिया औ गणेशजीकोही मारनेचले तब महादेव जी ने कार्तिकेय को निवारणकिया औ पूछा कि तुम ने इतना क्रोध क्यों किया तब कार्तिकेयबोले कि महाराज मैं स्त्री पुरुष लक्षणबनाताथा उसमें इसनेबिघ्नकिया इससे मुझे बहुत क्रोध आयायहसुनमहादेवजी ने कार्तिकेयकाक्रोपशान्तकिया औ हँस कर पूछा कि हेपुत्र तुमपुरुष लक्षण जानते हो तो कहो कि हम मेंक्या लक्षणहैं तब कार्तिकेय ने कहाकि महाराज आपमेंऐसा लक्षणहै कि थोड़ेहीदिनोंमें आपहाथमें कपालधारोगे औ जगत में आपका नाम कपाली होजायगा यहपुत्रका बचनसुन महा-देवजीने क्रोधकर उनकी पुरुषलक्षणकी पुस्तक उठाकर समुद्र मेंफेंकदिया औ आप अन्तर्द्धानभये कुछकाल के अनन्तर ब्रह्मा जी औ महादेवजीका बिवादभया ब्रह्माजी ने कहा किहम बड़े

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

औ महादेवजी ने कहा कि हम बड़ेहैं हमारी उत्पत्ति कोई नहीं जानता औ तुम्हाराजन्म हमजानतेहैं तब ब्रह्माजी का पांचवां मुखहँसकर बोला कि हे शिवतुम्हारी उत्पत्तिहम जानतेहैं यह सुनशिवजी ने कोपकिया औ अपनेनख से उसब्रह्मा के शिरको काटअपनेहाथ में लेकर सुमेरुपर्वत में जहांबिष्णु भगवान् तप करतेथे वहां चलेआये इसअवसर में ब्रह्माजी ने क्रोधकिया औ उनके कटेहुये शिरस्थान से श्वेतकुण्डलधारे कवच पहिने धनुष बाण हाथमेंलिये अतिक्रूर एकपुरुष निकला औ करजोर ब्रह्मा जीसे कहनेलगा क्या आज्ञा है तब ब्रह्माजी ने कहा कि जिस दुर्बुद्धिने मेरामस्तक काटलिया उसकोजाकर मारदे यहसुनतेही वहपुरुष उठधाया औ जहांबिष्णु भगवान् तपकरतेथे वहां पहुंचा उसकोदेख भगवान् ने शिवजी से कहा कि आपत्रिशूल से हमारीभुजाको भेदनकरो तब शिवजी ने बिष्णुजी की भुजा भेदनकरी उसमें से एकरुधिर की धार निकलकर आकाश को उछली पीछेशिवजीके हाथमें जो ब्रह्माकेशिरकाकपालथाउसमें गिरी औ कपालरुधिर से भरगया उसरुधिर को शिवजी ने अपनी तर्जनीअँगुली से मथा तब उससे कवच पहिने रक्तस्वर्ण के कुण्डलधारे धनुषबाणलिये एकपुरुष अति भयंकर निकला औ हाथजोड़शिवजीसेबोला कि हेप्रभू क्याआज्ञाहै तब महादेव जीने आज्ञादी कि इसब्रह्मा के भेजेहुये श्वेत कुण्डली को मारदे यहसुनतेही वह रक्तकुण्डली पुरुष श्वेतकुण्डली से लिपटगया औ दोनोंकायुद्ध होनेलगा जैसा प्रलयके समय मंगल औ केतु काहोय बहुतकाल उनदोनोंका घोर युद्धहुआ परन्तु जयकिसी का न भया औ सम्पूर्णलोक व्याकुलभये तब आकाशबाणीभई कि युद्धमतकरो औ बिष्णुभगवान् ने दोनोंको समझाय युद्ध से निवृत्तकिया औ कहा कि भूमिकाभार उतारनेकेलिये तुमदोनों

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सहित मेरा अवतारहोगा इतनाकह भगवान् ने श्वेतकुण्डली सूर्य्यनारायण को दिया औ रक्तकुण्डली इन्द्रकेहवाले किया वे दोनों भी इनक्रोध से उत्पन्नहुये पुरुषोंको लेकर अपने२ धाम कोगये औ शिवजी से भगवान् ने कहा कि इसकपालको आप धारणकरैं औ इसआपके कपालव्रतको जो धारणकरेंगे उनको कोईपदार्थ दुर्लभ न होगा औ समुद्र को बुलाकर शिवजी ने कहा कि स्त्री पुरुषलक्षण तू बनाये यह सुनकार्तिकेय से क्रोध करकहा कि बिनायकका दांत जो तैंने उखाड़ लियाहै वह देदे तेरे पुरुषलक्षणमें विघ्नहोनाथा सो होगया और जो तुझेलक्षण की अपेक्षा होय तो समुद्र से ले ले परन्तु नाम समुद्रकाही रहैगा अर्थात् यहलक्षण सामुद्रिक कहावैगा यहशिव जी का बचन सुन कार्तिकेय ने कहा कि आपकीआज्ञा से मैं गणपति को दांत देता हूं परन्तु गणपति भी इसको सदा धारण करैं जो इसदांत को कहीं फेंकदेंगे तो उसी क्षण भस्महोजांयगे इतनाकह कार्तिकेय ने वहदांत गणेशजीको देदिया औगणेश जी ने भी वह धारणकिया औ आज तक धारेहीहैंइतनी कथा सुनाय सुमन्तुमुनि बोलेकि हे राजा यहदेवताओंकी गुप्त बात आपसेकहीहै इसको जो वेदवेत्ता ब्राह्मणक्षत्रिय वैश्य औ उत्तम गुणोंकरकेयुक्त शूद्रकोसुनावै औ जो भक्तिसे सुने उसको कोई पदार्थ दुर्लभनहीं औ किसीकार्य्यमें बिघ्न न होय ऋद्धिसिद्धि औ लक्ष्मीमिलै॥

बाईसवां अध्याय॥

राजाशतानीक पूछतेहैं हेसुमन्तुमुनि गणेशजी को बिघ्नों के राजाकिसने बनाया औ गणोंकेस्वामी क्योंकर कहाये यहआप वर्णनकरैं यहराजाका प्रश्नसुन सुमन्तुमुनि ने कहा कि हेराजा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by eGangotri Foundation USA

हुत उत्तम बात तुमने पूछी हम वर्णन करतेहैं प्रीतिसेश्रवण करो पूर्वकालमें प्रजाओं के सबकाम निर्विघ्न सिद्ध होजाते थे इसलिये प्रजाको बहुत अहंकार बढ़ा तब ब्रह्माजी के कहने से प्रजाके कार्यों में बिघ्नकर्नेके लिये शिवजीने गणेशजीकोउत्पन्न कियातबसे गणेशजीके अनुग्रह बिना किसी का कार्य निर्विघ्न सिद्धनहीं होता इसीसे बिघ्नराज कहाये जिसपुरुष परगणपति का कोप होय उसके लक्षण सुनो वह स्वप्न में तैल में स्नान कर्ताहै नंगे मुंडे मूड़के पुरुषोंका देखताहै क्रव्यादअर्थात् मांस खानेहारे सिंह व्याघ्र आदि जीवों पर चढ़ताहै चाण्डाल गधे ऊंट आदि के बीच बैठता है ऊंट पर चढ़ कषाय वस्त्रधारे हुये पुरुषों करके वेष्टित यमके समीप जाताहै औ करबीरकेफूलों की माला गलेमें पहिनताहै ये सबलक्षण स्वप्नमें देखता है औ जागता हुआ बिना कारण उदास रहताहै चलता फिरता यह देखता है कि कोई मेरे पीछे चला आताहै औ जिस कार्य का आरम्भकरै उसीमेंविघ्नहोजाताहै गणपति करके उससृष्ट राजा राज्यको नहीं प्राप्त होता कन्याको पति नहीं मिलता गर्भिणी स्त्रीके संतान नहीं होती आचार्य पढ़ा नहीं सक्ता विद्यार्थी पढ़ नहीं सक्ता वैश्यको व्यापारमें लाभ नहींहोता खेती करनेहारा खेतीमें कुछफल नहीं पाता इनसब विघ्नों के निवृत्त करनेकेलिये शुक्लचतुर्थी वृहस्पतिबार अथवा पुष्य नक्षत्र के दिन गणेशजी कास्नान करावै उसकी हमविधि कहतेहैं सिंहासन परगणेशजी की मूर्तिको स्थापन कर सरसों का उबटना लगाय सर्वोषधि औ सुगन्ध वस्तुओं का तैल मर्दन करस्नानकरावै औ ब्राह्मणों सेस्वस्तिवाचन कराय पूजा करै पहिले शिव पार्वती की पूजा कर गणेशजी का पूजन करे और कार्त्तिकेय वृहस्पति बुध राहु की भी पूजा करै औ चारकलश जलके मँगाय उनमें घोड़ों के

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

स्थान की हाथियोंके स्थानकी बल्मीककी नदियों के संगम की औ सरोवर की मृत्तिका डाले तथा गूगल औ गोरोचन आदि द्रव्य औसुगन्ध पदार्थ उस जलमें मिलाय गणेशजीके सिंहासन को लाल वृषभ के चर्मके ऊपर बिराज इन मंत्रोंसे पूर्वोक्त जल करके गणेशजीको स्नानकरावै। स्नान के मंत्रयेहैं। सहस्राक्षंशतवारंऋषिभिःपावनैःकृतम।तेनत्वामभिषिञ्चामिपावमान्यः पुनन्त्विह १ भगंतेवरुणोराजाभगंसूर्योबृहस्पतिः। भगन्मित्रश्चवायुश्चभगंसप्तर्षयोददुः २ यञ्चकेशेषुदौर्भाग्यंसीमन्तेयञ्चमूर्द्धनि। ललाटेकर्णयोरक्षोरापह्यद्घ्नन्तुतेजसा ३ इन मंत्रोंसे स्नान कराय सरसों के तेलका हवनकरै हवन के लिये गूलर के काष्ठका स्रुवा बनावै मित संमित शाल कटंकट कूष्माण्ड औ राजपुत्र इन नामों के अंतमें स्वाहालगाय हवनकरै औशूर्पे अर्थात् छाजमें कुशा बिछाय उसमें कच्छपके चावल मांस भात कच्छामांस कच्छपके मत्स्य तीनप्रकार की सुराभांति २ के पुष्प अतर आदि सुगन्ध द्रव्य लड्डू पूरी अपूप दही बरे खीर गुड़ के पक्वान्न औ अनेक प्रकार के फल मूल रखकर नमस्कारान्त नाम औ बलिमंत्र करके चतुष्पथ अर्थात् चौराहे में बलिदेवैइस प्रकार बलिदेकर अंजलिमें पुष्प दूर्वा औ सर्षप लेकर गणेशजी की माता पार्वतीजीकी प्रार्थना करैकि। रूपंदेहियशोदेहिभगं भवति देहिमे। पुत्रान्देहिधनंदेहिसर्वान्कामांश्चदेहिमे॥ इस मंत्र से भगवतीकी प्रार्थनाकर ब्राह्मणोंको भोजन करायदोवस्त्र औ कुछ दक्षिणा गुरुके समर्पण करै इस विधि गणेशजी औ ग्रहोंकी पूजाकरै तो सबकाम निर्विघ्न होंय औ लक्ष्मी मिलै सूर्य गणेश औ कार्त्तिकेय की पूजा करनेसे सदा विघ्न निवृत्त होते हैं॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

तेईसवां अध्याय ॥

राजा शतानीकपूंछतेहैं कि हेसुमंतुमुनि जो स्त्री पुरुषों के लक्षण स्वामिकार्त्तिकने बनाये औ शिवजीने क्रोध कर समुद्र में फेंकदिये वे लक्षण फिर कार्त्तिकेय को प्राप्त भये कि नहीं यहआप वर्णन करैं यहसुन सुमंतुमुनि बोले कि हे राजा वे लक्षण जिसविधि कार्त्तिकेयको प्राप्त भये वह हम वर्णन करते हैं कार्त्तिकेय ने जब अपनी शक्तिसे क्रौंचपर्वतको विदारण किया तब ब्रह्माजीने प्रसन्न हो कार्त्तिकेय से कहा कि हम तुमसेबहुत प्रसन्न हैं वरमांगो उस समय कार्त्तिकेयने कहा कि महाराज जो स्त्री पुरुष लक्षण मैंने बनाये थे वे मेरे पिताने क्रोध कर समुद्र में फेंक दिये औ मुझे भी स्मरण न रहे अबउनके श्रवण करनेकी इच्छा है आप अनुग्रह करैं कथन कीजिये यह कार्त्तिकेयका बचन सुनब्रह्माजी बोले कि हे कार्त्तिकेय वे सब लक्षण समुद्रने जिसप्रकार कहेहैं वैसेही हम तुमको सुनाते हैं उत्तम औ अधम ये तीन प्रकारके लक्षण समुद्रने कहेहैं अ[ध्या]य में मध्याह्न के पूर्व पुरुषके लक्षण देखे प्रमाण संह[ति] कथा गति सम्पूर्ण अंग दांत केश नख औश्मश्रु अर्थात् दा[ढ़ी] मोछके लक्षण देखे पहिले आयुषकी परीक्षा करै लक्षण आयु थोड़ा होय तो सब लक्षण वृथाहैं अपने अंगुलों से [पु]रुष एकसौ आठ अंगुलहोय वह उत्तम होताहै सौअंगुल हो[य] मध्यम औ नब्बे अंगुल ऊंचा पुरुष अधम गिना जाता है [अ]ब पुरुष के अंगों का लक्षण समुद्र ने कहा है [प्र]थम पुरुष के अंगों का वर्णन करतेहैं जिसके चरणसमान छोटा [सि]र होयतो मा[नु]ष पसीने हीन हों औ नाड़ियेंलुप्तहोय तौभी मनुष्य [ल]लाट पाल ललाट [उ]न्नत होय औ पुरुष राजाको [प्रि]य जाहोय सिंधौ कीर्ति [ल]क्ष्मी भोगी [हो]यहोयमुलम्बा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

चिह्न होय वह सदा सुखी रहै कूर्म के समान ऊंचे [illegible] कोमल औ रक्त अंगुली जिनकी परस्पर मिली हुई [illegible] पार्ष्णि अर्त्थात् एड़ी कर्के युक्त औ निगूढ़ गुल्फ अर्त्थात् [illegible] टंकने गुप्त हों उष्ण अर्त्थात् सदा गर्म रहैं परन्तु प्रस्वेद न आवै औ लालबर्णके नखोंसे भूषित ऐसे चरण राजाही के होते हैं शूर्पके समान रूक्ष श्वेत नखों कर्के युक्त टेढ़े रूखे नाड़ियों कर्के व्याप्त बिरल अंगुलियोंवाले औ जिनमें पसीना आवै ऐसे चरण दरिद्री औ दुःखी पुरुषोंके होतेहैं जिनके चरण तल अर्त्थात् तलुवे पकीमृत्तिका के समान वर्णहोंय वह पुरुष ब्रह्म हत्या करै पीततलवाला अगम्या स्त्रीसे संगकरै कृष्णवर्णचरण तल होनेसे सदा पानमें आसक्त रहै औ जिसके [illegible] वर्णहोंय वह अभक्ष्य पदार्थ भोजनकरै जिन[illegible] पै[illegible] बहुत मोटेहोंय वे भाग्यहीन होतेहैं बिकृत [illegible] चलतारहै चिपटे टूटेहुये अंगुष्ठ होंय तो [illegible] अतरछोटे औ फटेहुये अंगुष्ठ जिसकेहों[illegible] [illegible] न छोटे रक्तवर्ण नखोंसे भूषित औ कोमल [illegible] राज्यमिलै जिसपुरुषके पांवकी त[illegible] प्रसकोसदास्त्री भोगमिलै औ क[illegible] [illegible] प्राप्तिहोय चपटी बिरल सूखी औ [illegible] धनहीन होय औ सदादुःख [illegible] औ [illegible] [illegible] दुःखमिलै बुरेनखहोंय [illegible] हित [illegible] काम भोगसे हीन होय हरेनखहोंय तो वहपुरुषब्रह्महत्याकरै बन्धुओं से बियो[illegible] अपने [illegible] संहार करै इन्द्र गोप अर्त्थात् वीर[illegible] गणेश औ कार्त्तिकेय की पूजा जिसके अति अरुणनखहोंय होते हैं ॥

[illegible] नकी जंघाहोंय वेभाग्य-

[illegible] होंय वे ऐश्वर्य्यपावैंऔ

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

बन्धन भोगैं मृगके समान जंघाहोंय तो राजाहोयशृगाल औ काककी जंघाके समान जिनकीजंघाहोंय वे भाग्यहीनऔदुःख भोगनेहारे होतेहैं दीर्घ अर्त्थात् लम्बी औ मोटी जंघावालेभी भाग्यहीन होतेहैं औ सिंह तथा व्याघ्रके समान जिनकी जंघा होंय वे धनवान् होतेहैं एक २ रोम कूपमें एक २ रोमहोय तो राजाहोय दो २ रोमहोंय तो पण्डित तथा श्रोत्रिय होय औ तीन २ रोमहोनेसे धनहीन औ दुःखी होय इस प्रकाररोमऔ [illegible] रे होते हैं जिसके जानु अर्त्थात् घुटनेमांसरहित [illegible] मरै बिकट जानुहोंयतो दरिद्री होय निम्नहोंय [illegible] स्त्रीजित होय औ मांस करके सहित जानुहोंय तोराजाहोय [illegible] भास शुक वृष सिंह हाथी औ औरजो उत्तम पक्षीहैं उनके [illegible] नगति होय तो राजाअथवा भाग्यवान होय जलकेतरंगों [illegible] समानऔ काकउलूक आदिदुष्टजीवोंके समान अथवाश्वान [illegible] महिष गधा शूकर आदिके तुल्य जिनकी गतिहोय वे दुःख [illegible] शोक करके युक्त होते हैं तथा भाग्यसे भी हीन होतेहैं यह [illegible] का बचन है इसमें संदेह नहीं ॥

चौबीसवां अध्याय ॥

ब्रह्माजी कहतेहैं कि हे कार्त्तिकेय जिसका लिंग दहिनीओर [illegible] तो उसके पत्रहोंय औबाईं तरफ़ झुकेरहनेसे कन्याहोताहै [illegible] यबर्छी बाण तोमत औ विषमलिंग होय तो दरिद्री होय [illegible] द्धमें जयपावैध्वज तो पुत्रहोंयनिम्नपादोंपर बैठेहुयेजिसका [illegible] पार करै औ धन्य वह राजा होय औ स्त्रियोंका अतिप्रिय [illegible] लिंग [illegible] का चिह्न व्याघ्रके समान छोटा लिंगहोयतो भागीहोय [illegible] के अंगूठेमें जिस लिङ्गहोय तौभी [illegible] जाहोय सिंऔ कीर्ति [illegible] नेहाराहोयजिस भागको [illegible] भोगी [illegible] लम्बा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

युक्तहो वह राजा होय पांडुर मलिन रूक्ष औ लम्बामणि होय तो देशाटनकरै समऊंचा औ स्निग्धमणि जिनकेहोय वेधनका भोग करनेहारे औ स्त्रियोंके बल्लभ होतेहैं मध्यमें नीचा मणिहोय तो कन्या बहुत होंय औ धनहीनभी होय दहिनी ओर एकधारा होकर मूत्रगिरै तो राजाहोय औ स्निग्ध दो धारामूत्रकीगिरैंतो धनवान् औ भोगवान् होय जिसके बहुतसी रूक्षधारागिरैंऔ शब्द भी होय वह अधमपुरुष होय जिसके वीर्य्य में मक्षी का गन्धहोय वह धनवान् औ पुत्रवान् होय घृतका गन्धहोयतो धनी औ वेदवेत्ता होय मेषका गन्धहोय अथवा कमल का तो राजा होय औ लाख मद्य तथा क्षारके समान जिसके बीर्य्य में गन्धहो वह धनहीन कन्या सन्तानवाला औ युद्धकरनेहारा हो जो पुरुष शीघ्र मैथुन करै वह दीर्घायु होताहै औ जो [illegible] देरतक मैथुनकरै उसका आयुष्थोड़ा होताहै जिसकेबीर्य्य [illegible] होय उसके कन्याही होंय जिसका रक्त कमलके पुष्पके स[illegible] बर्णहोय वह धनवान् होता है कुछ लाल औ कुछ कालरु[illegible] होय वह मनुष्य अधम औ पापकर्म्म करनेहाराहोय कुछ[illegible]ल औ कुछपीला रुधिर होय वह मध्यम पुरुष होता है औ कभी सुखभोगै कभीदुःख में पड़ै जिसका रुधिर प्रवाल अर्त्थात्मूंगे के समान अति रक्तबर्ण औ स्निग्ध होय वह सप्त द्वीपों का राजा होय चौड़ी मांससे पुष्ट औ स्निग्धवस्ति अर्त्थात् [illegible]भिका अधोभाग होय तो अच्छा होताहै औ नि[illegible] [illegible]हत [illegible]थारूक्ष वस्ति अच्छीनहीं होती जिसकी वस्ति [illegible] ऊंट औ महिष के समान हो वह पुरुष सदा दु[illegible] [illegible]सके एक वृषण अर्त्थात् अंड होय वह जलमें प्राण[illegible]के अति [illegible]बड़े वृषण होते हैं॥ [illegible]य दोनों समान हों[illegible]की जंघा[illegible]न्होयऊपर [illegible] आ[illegible] भोगै औ[illegible]होंय [illegible] लटकतेहुये

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

लम्बे हों यतो वह ७६ रुष धन-
कटिके ऊपरके मांसपिण्डके स्फिक् अर्थात् न बहुत
होय दोनों समान होंय तो होंय वह धनहीन
स्फिक् होंयतो राजा होतेहैं डक ओ सिंहतुल्य
सके स्फिक् होंय वह पुरुष बानरके समानजि-
मृग अथवा मोर के समान भोगनेहाराहोय
पुरुष उत्तम होताहै व्याघ्र अर्थात् पटहोयबह
राजाहोय मांससे पुष्टसीधे समान उदरहोनेसे
बाड़ेहोंय वे राजा होतेहैं पृष्ठ अर्थात्पस-
सेनकापतिहोताहै सिंहकेसके समान होय वह
मेंगिरताहै अर्थात् क़ैद हो वाला मनुष्यबन्धन
होवे रहा होतेहैं जिनका पीठकछुवकेसमान
युक्तहोयवे पुरुष उत्तम होतेहैं पृष्ठ औरोमोंकरके
वान् तथा भोगी होतेहैं जिन भोगतेहैं औधन-
बिरल होंय वह धनहीन अंगुली सूखीरूखी औ
मत्स्यरेखा होय उसके सब ताहै जिसकेहाथमें
पुत्रवान्होय जिसके हाथमें य औ धनवान्तथा
उसको व्यापारमें लाभहोय वेदीका चिह्नहोय
धनीहोय औ यज्ञ करै पर्व्वतोमकी बेलहोयव
रहै औ वह पुरुष बहुत सेवक तो लक्ष्मी स्थिर
खड्ग औ धनुष का चिह्न होयवर्छी बाण तोमर
शक्ति गदा का चिह्न होय तो जुद्धमें जयपावैध्वजा
घा हे होय श्रीवत्स कमल बज्र पार करै औ धन-
स्प के हाथमें हो वह राजाहो कलश का चिह्न
थवा का चिह्न होय वह सबबिद यके अंगूठेमें जिसके
वा हाथ के नीचेसे तर्ज नेहाराहोयजिसके

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

बीचमें टूटैनहीं वह पांडुर मलिन रूक्ष औ लम्बामणि होय
ा औ स्निग्धमणि जिनकेहोय वेधनका
के बल्ल होतेहैं मध्यमें नीचा मणिहोय
ब्रह्माजी कहतेहैं धनहीनभी होय दहिनी ओर एकधारा
उनका कहतेहैं जिसहोय औ स्निग्ध दो धारामूत्रकीगिरैंतो
होताहै बिषम कुक्षिहोय जिसके बहुतसी रूक्षधारागिरैंओ
निम्नकुक्षिहोयतो रा पुरुष होय जिसके वीर्य्य में मक्षी का
होयवह दरिद्रीओ औ पुत्रवान् होय घृतका गन्धहोयतो
ओ गोल नाभि होयगका गन्धहोय अथवा कमल का तो
होतेहैं नीची ओ छो तथा क्षारके समान जिसके वीर्य्य
बलिके बीचनाभि हो या सन्तानवाला ओ युद्धकरनेहारा
णावर्तना भि अच्छी करै वह दीर्घायु होताहै ओ जो
कमलकी कर्णिकाक पुष्थोड़ा होताहै जिसकेवीर्य्य
पेटमें एकबलिहोय तजिसका रक्त कमलके पुष्पके स
भोगीहोय तीनहोंय है कुछ लाल ओ कुछ कालरु
होनेसे बहुतपुत्रहोंय पापकर्म्म करनेहाराहोय कुछ
ओ सीधी वलिहोंय ह मध्यम पुरुष होता है ओ
समान ऊंवाकंपसेरा जिसका रुधिर प्रवाह अर्थात् मूंगे
रोमतथा नाड़ियोंकर स्निग्ध होय वह सप्त द्वीपों का
समानहोंयतोधनवा ओ स्निग्धवस्ति अर्थात् नाभिका
धनहीन ओ बड़ेछोटे ताहै ओ नि थारूक्ष
जिसक जत्रु अर्थात् की वस्ति ऊंट औ
समहोंयतो सुखभोगे रुप सदा दु सके एक
जिसकी ग्रीवा चपर्ट जलमें प्रा के अति अतिबड़े वृषण
के समान हो वह शू समान हों की जंघा न्हायऊपर
होय शुक हाथी औ भोगे अ होंय को लटकतेहुये

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

लम्बेवृषण होंयतोवह पुरुष सौवर्षजीवैजि होय वहपुरुष धन-
कटिके ऊपरके मांसपिण्ड स्थूल औ बिषम करकेयुक्त न बहुत
होय दोनों समान होंय तो धनीहोय ब्याघ्र ताहै पुष्ट पसीना औ
स्फिक् होंयतो राजा होताहै औ ऊंट अथवा अर्त्थात् कांखहोयतो
सके स्फिक् होंय वह पुरुष धनहीन औ दुः बन्धन में पड़ै छोटी
मृग अथवा मोर के समान जिनका उदर तो चोरहोय लम्बी
पुरुष उत्तम होताहै ब्याघ्रमेंडक औ सिंहके ओंतक लम्बीसमान
राजाहोय मांससे पुष्टसीधे औ गोल जिनके ाहोंय तो राजाहोय
बाड़ेहोंय वे राजाहोतेहैं जिसकी पीठ ब्याघ्र उसको पिताकाधन
सेनकापतिहोताहै सिंहकेसमान लम्बीपीठ अर्त्थात् डरनेवाला
मेंगिरताहै अर्त्थात् क़ैद होताहै औ जिनकी बिषमकरतल होंयतो
होवे रहां होतेहैं जिनका हृदय चौड़ा मांस होंय तो राजा होय
युक्तहोयवे पुरुष उत्तम होतेहैं सौवर्षका आयु लेहोंय तो नहींपान
वान् तथा भोगी होतेहैं जिसके हाथकी अंग्र हाथकीरेखागहरी
बिरल होंय वह धनहीन औ नित्यदुःखी हो नहीं जिनकीअँगुली
मत्स्यरेखा होय उसके सब कार्य्य सिद्धहों गहरी अँगुलीहोंय
पुत्रवान्होय जिसके हाथमें तखड़ी अथवा हैं जिनकामुख चन्द्र
उसको ब्यापारमें लाभहोय जिसके हाथमें ढ़ाटूटाहुआबिकृत औ
धनीहोय औ यज्ञ करै पर्ब्बत औ वृक्षहोंय जिनका मुख सम्पूर्ण
रहै औ वह पुरुष बहुत सेवकोंका स्वामीहो करे अथवा बन्दर के
खड्ग औ धनुष का चिह्न हाथमें होय तो खहोयतोदुर्भग होय
औ शङ्ख का चिह्न होय तो जहाज़ से ब्या औ पापीऔचौखूंटा
धाहे होय श्रीबत्स कमल बज्र चक्र स्थ मुखहोय तो वहपुरुष
स्पर्श के हाथमें हो वह राजाहोय दहिने हाथ जिसकेकपोल ललाट
थवा का चिह्न होय वह सबबिद्याओंका जा राजाहोय सिंऔ कीर्ति
वा हाथों के के नीचेसे तर्ज्जनी के मध्य भोगी होयलम्बा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

बीचमें टटैनहीं वह पुरुष सौवर्ष जीवै यह समुद्र ने कहाहै।

पचीसवां अध्याय ॥

ब्रह्माजी कहतेहैं कि हेकार्त्तिकेय अब हमजो लक्षणशेष रहेहैं उनको कहतेहैं जिसकी कुक्षि अर्त्थात् पेटसमान होय वह भोगी होताहै बिषम कुक्षिहोय तो अनेक माया औ छलकरनेहारा होय निम्नकुक्षिहोयतो राजाहोयऔ जिसकापेटसर्प्पकेसमान लम्बा होयवह दरिद्रीऔ बहुत भोजन करनेहारा होय बिस्तीर्ण गंभीर औ गोल नाभि होयतो सुखभोगनेहारे औ धनधान्ययुक्त पुरुष होतेहैं नीची औ छोटी नाभि होयतो भांति २ के क्लेशभोगै जो बलिके बीचनाभि होय औ बिषम होयतो धनकी हानिकरै दक्षिणावर्तनाभि अच्छीहोतीहै औ बामावर्त्त नाभि उत्तम [illegible] होती कमलकी कर्णिकाके समान जिसकी नाभि होय वह राजा होय पेटमें एकबलिहोय तो शस्त्र से माराजाय दो बलिहोंय तो स्त्री भोगीहोय तीनहोंयतो राजा अथवा आचार्य्यहोय औचारवलि होनेसे बहुतपुत्रहोंय बिषम वलिहोंय तो अगम्या स्त्रीसेसङ्ग करै औ सीधी वलिहोंय तो भोगीहोय परन्तु परस्त्रीसे स्पर्श न करै समान ऊंचाकंपसेरहित औपुष्ट हृदय राजाका होताहै औकठोर रोमतथा नाड़ियोंकरके व्याप्तहृदय दरिद्रीका होताहैदोनों कन्धे समानहोंयतोधनवान् होयपुष्ट होंयतो शूरवीर होयछोटेहोंय तो धनहीन औ बड़ेछोटेहोंयतो धनहीनहोय औ शस्त्रसे माराजाय जिसके जत्रु अर्त्थात् कन्धोंकी सन्धि बिषमहोय वहदरिद्रीहोय समहोंयतोसुखभोगै औ ऊंचेजत्रुहोंयतोअनेकप्रकारके सुखभोगै जिसकी ग्रीवा चपटीहोय वह धनहीनहोय जिसकीग्रीवा महिष के समान हो वह शूरबीर होय मेषके तुल्य होय तो डरनेवाला होय शुक हाथी औ [illegible]कपक्षीकेतुल्य ग्रीवाहोय औ [illegible]

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

तथा सूखीहोय वह धनहीनहोय छोटीग्रीवाहोय वहपुरुष धन-
वान्होय औ धूर्तभीहोय गोलतीन रेखाओं करकेयुक्त न बहुत
लम्बी न बहुतछोटी ग्रीवाहोय तो राजाहोताहै पुष्ट पसीना औ
दुर्गन्धसेरहित समथोड़ेरोमोंकरकेयुक्त कक्षअर्त्थात् कांखहोयतो
धनीहोय जिसकेभुजा ऊपरको खिचेहों वह बन्धन में पड़ै छोटी
भुजाहोंय तो दासहोय छोटीबड़ी भुजाहोंय तो चोरहोय लम्बी
भुजाहोंय तो सबगुणोंकरके युक्तहोय जानुओंतक लम्बीसमान
हाथीकी शूंड़केतुल्य औ रोमों से रहित भुजाहोंय तो राजाहोय
जिसके हाथकातल निम्न अर्त्थात् गहराहो उसको पिताकाधन
न मिलै आपहीधनका उपार्ज्जनकरे औ भीरु अर्त्थात् डरनेवाला
होय औ ऊंचे करतल होंय तो दानीहोय बिषमकरतल होंयतो
अच्छेनहीं लाख के समान रक्तवर्ण करतलहोंय तो राजा होय
पीलेहोंय तो अगम्या गमनकरै काले औ नीलेहोंय तो नहींपान
करनेकीबस्तुपीवै औ रूखेहोंय तो निर्द्धनहोय हाथकीरेखागहरी
औ स्निग्ध धनवानोंकीहोतीहैं दरिद्रियोंकीनहीं जिनकीअँगुली
बिरलहोंय उनकेपास धन नहीं ठहरता औ गहरी अँगुलीहोंय
जिनमेंछिद्र न होयतो धनका संचय करते हैं जिनकामुख चन्द्र
मण्डलके समानहोय वे धर्म्मात्मा होतेहैं टेढ़ाटूटाहुआबिकृत औ
सिंह के समान मुख होय तो चोरहोता है जिनका मुख सम्पूर्ण
सुन्दर औ कान्ति युक्तहो वे राजाहोते हैं बकरे अथवा बन्दर के
मुखसमान मुखहोयतो धनवान्होय बड़ामुखहोयतोदुर्भग होय
छोटाहोय तो कृपण लम्बाहोयतो धनहीन औ पापीऔचौखूंटा
होयतो धूर्त्त औ स्त्रीकेमुखके तुल्य औ निम्नमुखहोय तो वहपुरुषो
पुत्रहीनहोय उत्पन्नहोकर पुत्रनष्टहोजाय जिसकेकपोल ललाट
दलकेसमान कोमल औ कान्तियुक्तहों वहराजाहोय सिंऔ कीर्ति
अथवा हाथी के समान कपोलहोंय तो महा भोगी [illegible]लम्बा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

स्वामीहोय जिसका नीचेकाओष्ठ रक्तवर्णहो वह राजा होता है
औ मोटे फटे हुये नीले औ रूखे ओष्ठ होंय तो दरिद्री पापी
औ चोर होय दाढ़ी स्निग्ध आगे से जिसके बाल फटे न हों
औ सम्पूर्ण मुखपर होंय तो अच्छीहोतीहै रक्तवर्ण रूखी थोड़ी
सी होय तो अच्छी नहीं जिसके कान मांस से हीन होंय वह
अपने पाप से नाशको प्राप्त होताहै चपटे कान होंय तो रोगी
छोटेहोंय तो कृपण शंकुकेतुल्य कानहोंय तो सेनापति नाड़ियों
करके व्याप्त होंय तो क्रूर केशों करकेयुक्त होंय तो बहुत दिन
जीनेहारा औ बड़ेपुष्ट तथा लम्बेकानहोंय तो भोगीदेव ब्राह्मण
की पूजाकरनेहारा औ राजाहोय जिसकी नासिकाशुककीचोंच
के समान हो वहसुख भोगै औ सूखी नासिका होय तो बहुत
दिन जीवै ऊंची नासिका होय तो राजा होय लम्बी होवे तो
भोगी छोटीहोय तो धर्म्मसेहीन विकृत आगेसेमोटी औ ऊपर
को खिंची हुई नासिकाहोय तो पापी मनुष्य होय हाथी घोड़ा
सिंह अथवा सूची अर्थात् सुईके भांतितीखी जिसकी नासिका
होय वह व्यापार में लाभ पावै कुन्द पुष्प की कली के समान
जिनके दांतहोंय वे राजाहोतेहैं रीछ औ बन्दर के समान दन्त
होंय तो सदा क्षुधा से व्याकुल रहै कराल रूखे बिरल औ फूटे
हुये दांत होंय तोदरिद्री होय बत्तीस दांत होंय तो राजा होय
काली अथवा चित्र वर्ण की जीभ होय तो वह पुरुष और की
सेवाकरै अर्थात् दासहोय मोटी और रूखीजीभहोय तो पाप
करनेहारा होय श्वेत वर्णजिह्वाहोय तो शौच आचारयुक्त होय
जिनिस्निग्ध रक्तवर्ण औ छोटीजिह्वाहोय तो विद्वानहोय कमल
के समानके समान पतली लम्बी न बहुतमोटी और न बहुत चौड़ी
होय शुक होय तो राजाहोता है काले रङ्गका जिसपुरुष का तालु
पने कुलका नाशकरै पीलातालुहोय तो सुख भो

Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

औ लालहोय तो राजाहोय सिंहहस्तीकेतालुकेसमान औ कमल के तुल्यजिसका तालुहोय वह भी राजाहोय श्वेततालु हो य तो धनवान् औ रूखाफटा तथा बिकृत तालुहोय तो दरिद्रीमनुष्य होय हंस मेघ दुन्दुभि औ हाथीकेसमान जिसका गम्भीरस्वर होय वहराजाहोताहै रूखा घर्घर फटाहुआ क्षीण काक के स्वर के तुल्य पशु के स्वर समान औ फूटी कांसे की थाली के ध्वनि के सदृश जिनका स्वरहो वे अधमहोतेहैं औ सदा क्लेशभोगतेहैं दाड़िम के पुष्पके समान नेत्रहोंय वहराजा होय व्याघ्रकेसदृश नेत्र क्रोधीपुरुष के होतेहैं बिल्ली औ हंसके समान नेत्र होंय तो अधम पुरुषहोय मयूर औ नकुलकेतुल्य नेत्रहोंय तो मध्यमहोय अर्त्थात् न बुरा न भला शहतके तुल्यपिङ्गलवर्ण जिसके नेत्रहोंय उसके कभी लक्ष्मीनहीं त्यागती गोरोचन औ हरिताल के तुल्य पिङ्गलनेत्र होंय तो बलवान् औ राजाहोय दो मात्राकालमें जो नेत्रोंका निमेषकरैंवे अधमहोते हैं तीनमात्रा तुल्य काल में करैं वे सुखी चारमात्रा समानकालमें निमेषकरैं व राजा औजो पुरुष पांचमात्रा इतनेकालमें निमेषकरतेहैं वे चक्रवर्ती राजा दीर्घायुष औ धर्म्मात्माहोतेहैं अर्द्धचन्द्रकेतुल्य ललाटहोय तो राजाहोता है बड़ाललाट होयतो धनवानहोताहै छोटेललाटमे धर्म्मात्माहोय ललाटके बीच जिसस्त्री अथवा पुरुषके पांच आड़ीरेखा हों वह सौ बर्षजीवै औ ऐश्वर्य्य भी पावै चाररेखाहोंयतो अस्सीबर्ष तीन होंय तो सत्तरबर्ष दो होंयतोसाठबर्ष एकरेखा होयतोचालीसबर्ष औ एकभी रेखा न होय तो पच्चीसबर्ष आयुषपाताहै इनरेखाओं से हीन मध्यम औ पूर्णआयु की परीक्षाकरै छोटीरेखाहोंय तो अल्पायुष औ लम्बी२ रेखाहोंयतो दीर्घायुषपावै जिसकेललाट में त्रिशूलअथवा पट्टिशकाचिह्नहोय वह बड़ाप्रतापी औ कीर्ति युक्तराजाहोय छत्रकेसमान शिरहोय तो राजा होयलम्बा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

शिरहोय तो दरिद्रीबिषमहोय तो दुःखी समान तथा गोलशिर होयतो सुखी औ हाथीके शिरके सदृशशिरहोय तोराजा होता है जिनके केश अथवा रोममोटे रूखेकपिल औ आगेसे फटेहुये होंय वे पुरुष अनेकप्रकार के दुःखभोगते हैं औ बहुतगहरे औ कठोर केश भी दुःखदेनेहारे होतेहैं बिरलस्निग्ध कोमल भ्रमर अथवा अंजन के समान अतिकृष्ण जिन के केशहोंय वे अनेक प्रकार के सुखभोगते हैं औ राजाहोतेहैं ॥

छब्बीसवां अध्याय ॥

कार्तिकेयजी पूछते हैं कि हे ब्रह्माजी आपसंक्षेप से राजा के अंगों के शुभलक्षण कथन कीजिये यहकार्तिकेय का बचन सुन ब्रह्माजी ने कहा कि अबहम राजाके शुभलक्षणोंका वर्णन करते हैं कि जो लक्षणसाधारण पुरुषके भी पड़जांय तो अवश्य राजा होय जिसपुरुषके तीनगम्भीर तीनविस्तीर्ण छः उन्नत अर्थात् ऊंचे चारह्रस्व अर्थात् छोटेसात रक्तबर्ण पांचदीर्घ और पांच सूक्ष्म होंय वह चक्रवर्तीराजाहोय औ दीर्घ आयुष पावै नाभि स्वर औ सत्व ये तीन गम्भीर होंय बदन ललाट औ छाती ये तीन विस्तीर्ण होंय बक्षस्स्थल कक्ष नख नासिका मुख औ कृकाटिका अर्थात् घेंटू ये छः ऊंचेहोंय लिंग पीठ ग्रीवा औ जंघा ये ह्रस्व होंय नेत्रों के प्रान्त हस्त पाद तालू ओष्ठ जिह्वा औ नखये सातरक्तवर्णहोंय हनु नेत्र भुजा नासिका औ दोनों स्तनों का अन्तर ये दीर्घहोंय दन्तकेश अँगुलियोंकेपर्व त्वचा औ नख ये पांच जिस पुरुष के सूक्ष्म होंय वह सप्त द्वीपवती पृथिवी का राजा होय राजाओं की छींक इकहरीहोती है और सुन्दर शब्दकरके युक्तहोतीहै औ दोहरा तेहराछींक धनवानोंकी होती है जिसकेनेत्रकमलदल के तुल्यहोंय औ अन्त में रक्त बर्ण होंय

Uploaded by S3 Foundation USA

वह भूमिकास्वामीहोय शहतकेतुल्य पिंगलनेत्रहोंयतो महात्मा पुरुष होय हरिणके तुल्य नेत्रहोंय तो भीरु अर्थात् डरनेवाला होय गोलऔचक्रयुक्त नेत्रहोंयतो चोर औ दुष्टहोयकेकर अर्थात् भेंगे नेत्रहोंय तोक्रूरहोय नीलकमलके तुल्यनेत्रहोंय तोविद्वान् होय श्यामनेत्र होंय तोसुभगहोय विशालनेत्रहोंयतो भोगी औ स्थूल नेत्रहोनेसे राजमंत्रीहोय औदीननेत्रहोंय तो दरिद्रीपुरुष होय नेत्रोंके ऊपर भ्रू ऊंचीहोंय तो अल्पायुष् होयविषमअथवा बहुत लंबी भ्रू होंयतो दरिद्रीहोय औदूनौंभ्रू मिलजांय तोधन हीन औ पापीहोयमध्यभागमेंनीचे भ्रू होंयतो परस्त्रीगामीहोय चन्द्रकलाके तुल्य वक्र औविशाल जिनके भ्रूहोंय वे राजाहोंय ऊंचा औ निर्मललल्लाटहोय तोउत्तमपुरुषहोयनीचाहोयतो पुत्र औ धनसे हीनहोय कहींऊंचा कहींनीचा ललाटहोय तोदरिद्री औ शुक्तिअर्थात् सीपकेतुल्य ललाटहोय तोआचार्यहोयस्निग्ध हास्यकरके युक्त दीनता औअश्रुपातसे रहितमुखहोय तो राजा होताहै औदीनमुख अश्रुपातकरकेयुक्त रुक्षहोय तो अच्छानहीं उत्तम पुरुषका हास्य धीरेहोताहै औबड़े शब्दसे अधमहँसतेहैं जो हँसते समय आंखमूंदै वहपापी होताहै जिसका गोलशिर होय वह बहुत गौओंकास्वामीहोताहै चपटाशिर होयतोमाता पिता को मारै घटके समान शिर होय तो सदा मार्ग में चलै निम्नशिरहोयतो अनेकप्रकारके अनर्थकरनेवालाहोय हेकार्तिकेय यहपुरुषोंके शुभ औ अशुभलक्षणहमनेकहे हैं अबस्त्रियोंके लक्षण कहतेहैं ॥

सत्ताईसवां अध्याय ॥

हतेहैं कि हे कार्तिकेय अबहम आपसेस्त्रीलक्षण परस्त्रियोंकाशुभ अशुभ जानाजाय अच्छेमुहूर्तमें

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कन्याके हस्त पाद अंगुली नख हाथकी रेखा जंघा कटि नाभि ऊरु जघन उदर पीठ कुच भुजा कान जिह्वा ओष्ठ दंतकपोल गल नेत्र नासिका ललाट शिर केश रोम रोमावली स्वर वर्ण औ आवर्त अर्थात् भौंरी इन सबके लक्षण देखे जिसकीग्रीवामें रेखा होंय औनेत्रोंके अंत कुछ लालहोय वह स्त्रीजिसघरमेंजाय उसकी प्रतिदिन वृद्धिहोतीहै जिसकेललाट में त्रिशूलकाचिह्न हो वह कई हज़ारनारियों की स्वामिनी होय राजहंसकेसमान गति मृगकेसे नेत्र सुवर्णके तुल्य शरीर का वर्ण औसम सूक्ष्म औ श्वेत दंत जिसकन्याके हों वह उत्तम होतीहै मेडकके तुल्य जिसकी कुक्षि हो वहएक पुत्र उत्पन्न करती है परन्तु वह पुत्र राजा होता है हंसके तुल्य स्वर मेघ के समान वर्ण औ शहत से पिंगल नेत्र जिस कन्या के हों वह आठ पुत्र उत्पन्न करै औ धन धान्य करके युक्त होय लंबे कान सुन्दर नाक औ धनुष के तुल्य टेढ़ी भ्रू जिसकी होंय वह कन्या अत्यन्त सुख भोगै तन्वी अर्थात् पतली श्याम बर्ण मीठे बचन बोलनेहारी शङ्ख के तुल्य अतिश्वेत दांतोंवाली औ स्निग्ध अंगों करकेयुक्तजोकन्या होय वह अति ऐश्वर्य पावै जिसका जघन बिस्तीर्ण होय मध्य भाग वेदीके तुल्य अति कृश होय औ बिशाल नेत्रहों वहराजा की रानीहोय जिसके बायें स्तनपर हाथमें कान के ऊपर अथवा गले पर तिल अथवामसहोंय उसस्त्रीके प्रथम पुत्रउत्पन्न होय जिसके चरण रक्तवर्ण गूढ़ गुल्फ अर्थात्जिनमें टकने बहुत ऊंचे न होंय छोटी एड़ीकरके युक्त औ परस्पर मिलीहुई सुंदर [illegible] अंगु-लियोंसे शोभित हों वह कन्या सुख भोगै जिसके [illegible] पृथिव रूखे ऊंचे नख औ टेढ़ी अंगुलियोंकरके युक्तहों उसकन्या और सुन्दर जिसका के [illegible] अंगतो बहुत बड़ा औ कोई अंगोंकी होत बवाहै गर्दभी होतीहै औ कभी सुख नहीं पाती जिस रक्त बर्ण होंय वह

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अंगुली अंगूठेसे लम्बीहो वह व्यभिचारिणी होय जिसके पैर की मध्यमा अंगुली भूमि को स्पर्श न करै वह पतिके समीप न रहे औ व्यभिचार करै इसी भांति जिसकी अनामिकाभी न स्पर्शकरै वहभी व्यभिचारिणी होय नदी वृक्ष पर्बत अन्न औ पुरुषके तुल्य जिसका नाम हो वहभी अच्छी नहींहोती जिसके पीठपर औ नाभिके ऊपर आवर्त हो वह संतान उत्पन्न करै परंतु अल्पायुष् होय पीठपरही आवर्त्त होय तो पति को हनन करै कटिमें आवर्त्त होय तो व्यभिचारिणी होय औ नाभि में आवर्त होनेसे पतिब्रता होती है जिस स्त्री के हँसने के समय कपोलों में गढ़े पड़जांय वह व्यभिचारिणी होय जिसके बड़े २ चरणडों सब अङ्गोंमें रोम होंय औ छोटे औ मोटे हाथ हों वह दासी होय जिसके पैर कांपैं मुख बिकृत होय औ ऊपर के ओष्ठ पर रोम होंय वह बहुत शीघ्र अपनेपतिको भक्षण करै जो स्त्री पवित्र रहै पतिब्रता हो औ देवता गुरु औ ब्राह्मणों की भक्त हो वह मानुषी होती है नित्य स्नान करै सुगन्ध लगावै मधुर बचन बोलै थोड़ा खायऔथोड़ासोवै सदापबित्र रहै वह स्त्री देवता है गुप्त पाप करै निंदा से डरै औ चित्तकाअभिप्राय किसीसे प्रकट न करै वहस्त्री मार्जारी कहातीहै कभी हँसैकभी क्रीड़ा करै किसी समय क्रोधकरै औ कभी प्रसन्नहोय औ पुरुषों में रमै वह गर्दभी होतीहै पतिके तथा बंधुओं के हित बचन न मानै औ अपनी इच्छानुसार बिहार करै वह स्त्री आसुरी है जो नारी बहुत खा[illegible] लवै [illegible]गावै अति क्रोध करै नित्य खोटे बचन बोलै औ [illegible] स्वाहा वह [illegible]सी जानो शौच आचार औरूप से हीनहे [illegible] औअति भयंकरहो वहपिशाची होतीहै नि[illegible] सुगन्ध लगावै बगीचेआदिमेंप्रच बैठ औ कांस[illegible] पर बहुत प्रीतिरक्खै वह यक्षणी कह्य जिसको

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

का स्वभाव अतिचंचलहो नेत्र चपलहों इधरउधर बहुत देखै औ लोभ युक्त हो वहनारी बानरी होतीहै चन्द्रके समान मुखमस्त हाथीके तुल्य गति रक्त वर्णके नख औ हस्त औ संपूर्ण अंग शुभ लक्षणों करकेयुक्तहों वहविद्याधरीहै जिसकी बीणा मृदंग वंशी आदिका शब्द सुनने में प्रीतिहो औ पुष्पोंमें तथाभांति २ के सुगन्ध द्रव्यमें अधिक रुचिहो उसको गन्धर्वी जानो इतनी कथा सुनाय सुमंतुमुनिबोले कि हेराजा ब्रह्माजी इसप्रकार स्त्री पुरुषोंका लक्षण कार्तिकेय को सुनाय अपने लोकको गये॥

अट्ठाईसवां अध्याय॥

राजा शतानीक कहतेहैं कि हे सुमन्तुमुनि आपगणेशजी के आराधनका विधान वर्णन करैं जिसके करनेसे गणपति प्रसन्न हों यह राजाका बचनसुन सुमंतु मुनि कहने लगे कि हे राजा गणेश के आराधन में तिथिबार नक्षत्र आदि की कुछ अपेक्षा नहीं औ उपवास आदि करनेकाभी कुछ प्रयोजन नहीं है चाहै जिस अवस्था में रहकर आराधनकरै गणपति अनुग्रह करतेही हैं श्वेत अर्ककामूल लेकर अंगुष्ठ मात्र गणेश की मूर्ति बनावै मूर्तिका यह लक्षण होवै कि चार भुजाओं में दन्त अक्ष माल परशु औ मोदक पच हों पद्मासन पर बैठी सब भूषण पहिने सर्पका यज्ञोपवीत धारे मस्तकपर चन्द्रकला चढ़ाये औ अति सुन्दर होय इस प्रकार की मूर्ति बनाय केसर चन्दनबस्त्रभूषण रक्त वर्णके पुष्प सुगन्ध धूप दीप लड्डू आमि उत्तमनैवेद्यतांबूल आदि से उस मूर्तिकी पूजा करके उसके सम्मुख बामन अथवा कुब्ज अर्थात् कुबड़े ब्राह्मणको भोजन कराय उससेआशीर्बाद लेना उससे सब सिद्धि होती है अब हम मंत्र कहतेहैं (ओं गं- गर्दभी होती मूल मंत्र है ओं गां हृदयायनमः ओं शिर से स्व

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ओंगूंशिखायैवषट् ओंगैंकवचायहूं ओंगौंनेत्रत्रयायवौषट् ओंगः अस्त्रायफट् ये छः षडंगन्यास के मंत्रहैं ओंआगच्छोल्कामुखाय स्वाहा इस मंत्र से आवाहन करै ओं गंगंधोल्कायनमः इससे चंदनचढ़ावै पुष्पोल्कायनमःइसकरके पुष्पओंधूपोल्कायनमःइस सेधूप ओंदीपोल्कायनमः इसकरकेदीप गंमहोल्कायनमः इससे नैवेद्य औ बलि निवेदन करै फिर पूर्वमें दुर्जयायस्वाहा दक्षिण में महागणपतयेबीरायस्वाहा पश्चिममें सदामहोल्कायस्वाहा उत्तरमें कूष्मांडायस्वाहा अग्निकोणमेंएकदंतत्रिपुरांतकाय स्वाहा नैऋत्यमें श्यामदंतविकटघ्राणायस्वाहा बायव्यमें चलदंतलंबनासाय स्वाहा ईशान में पद्मदंतगजाननाय स्वाहा इन मंत्रों से पूजनकरै औ हवनकरै गणेशजीके आगे हुंफट् २ इस मंत्र करके ब्राथोंकी तालीबजावै औनाचैगावैओंगच्छोल्कायस्वाहा यह विसर्ज्जन का मंत्रहै यह तो पूजनका बिधानहै अबप्रयोग कहतेहैं तीनदिन कालेतिलोंकरके मूलमंत्रसे आठहज़ारआहुति देवै तो राजाबशहोय तिल औ यवके हवन से सब मनुष्य बश होयँ औ रूपवतीकन्याके वशकरनेको यहहवनकरै तोवहपीछे उठलगै लवण औ चावलके हवन से अजित होजाय अर्थात् कोई उसको न जीतसके निम्बपत्रमिलाकर हवनकरनेसे विद्वेषणहोय चन्द्रग्रहण के समय जलमेंखड़ाहोकर आठहज़ार जप करै तो युद्धमें जयपावै सूर्यकीओर मुखकरके आठहज़ार जपै तो सूर्यनारायण प्रसन्नहोयँ शुक्लचतुर्थीको उपवास करके सब उपचारोंसे गणेशजी का पूजन करै औ तिल चावल का हवन कर मूलमंत्र को अष्टगंधसे भूर्जपत्रपर लिख शिरमें धारणकरै तो सर्बत्रजयपावै अपामार्गके काष्ठसे अग्निप्रज्वलितकर तीन दिन इक्कीस आहुति देवै तो शत्रुको मारै वृक्ष के नीचे बैठ रुद्राक्ष बनाय सातबार अभिमंत्रण कर नेत्रमेंलगाय जिसको

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

देखे वह वश होजाय पुष्प फल अथवा मूल आठहज़ार बार अभिमंत्रणकर जिसको देवै वह वशहोय मूलमंत्र से जो काम करै वह सिद्ध होताहै इसके जपसे सबग्रह प्रसन्न रहतेहैं नगर के द्वार पर जाय आठहज़ार जपै औ द्वार को देखता जाय तो वह नगर ज्वर करके पीड़ितहोजाय दक्षिणमुख होकरजपै तो शत्रुका उच्चाटन करै जलमें खड़ाहो सातरात्रि जपै तो अकाल में भी वृष्टिहोय इस मंत्रके जपसे आकर्षण स्तम्भन उच्चाटन आदि करसक्ताहै हज़ारबार अभिमंत्रणकर गोरोचन को हाथ में बांधै तो सौ योजन जाकर लौट आवे खदिर वृक्ष का कील मंत्रित कर जिस स्त्री पुरुष के नामसे गाड़ देवे वह उसी क्षण मृत्युवश होय इसमंत्रकाजपकरनेहाराअति तेजस्वी औ अपराजितहोताहै अंगुष्ठप्रमाण निम्बकाष्ठकीमूर्त्तिबनायधूपगन्धे आदिसेउसका पूजनकर शिरके ऊपर धारै तो सब मनुष्योंका प्रिय होय इसी भांति श्वेत आककी जड़की मूर्त्ति बनाय धारण करै तो सबवर्णवशहोजाँय श्वेत चन्दनकी अंगुष्ठप्रमाण मूर्त्तिबनाय शुक्लचतुर्थी अथवाअष्टमीकेदिनपूजनकर बलिदेवै औआठहज़ार हवनकर उसमूर्त्तिको शिरपर धारै तो राजावशहोय इसीभांति रक्तचन्दनकी मूर्त्तिबनाय घृतका हवनकर धारण करै तो प्रजा वशहोय रक्त करबीर के मूलकी मूर्त्तिबनाय रक्तचन्दन रक्तपुष्प आदिसे पूजनकर बलिदेवै औ तिल घृत औ लवणकाहवनकर मूर्तिको धारण करै तो दशग्रामों को वशकरै इसीप्रकार मूर्त्ति बनाय पूजन कर तिल दही दूध घृत औ हलदी मिलाकर हवनकरै तो वेश्या वशहोय तेंदूके काष्ठकरके हवनकरै स्त्री शत्रु वशहोय विल्वमूल की मूर्ति बनाय पहिली भांति पूजन आदि कर घी शहत औ शर्कराका हवनकरै तो राजाके संतोष होय शिरमें मूर्तिको धार राजद्वार में जाय तो प्र[illegible] शिर स[illegible]

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

दांतसे उखाड़ीहुई मृत्तिकाकी अंगुष्ठ प्रमाण मूर्त्ति बनाय कृष्ण चतुर्थीके दिन एकान्तमें नग्नहोपूजाकरै तो स्त्रियोंकाअतिप्रिय होय बैलके सींगसे खुदी हुई मृत्तिका से मूर्त्ति बनाय पूजनकरै औ गूगुलकाधूपदेवै तो घोष अर्थात् जहां बहुतसेगोपओं गौ रहतेहों उनके स्वामीको बशकरै बल्मीक की मृत्तिका से मूर्त्ति बनाय कटुतैल से उसको लिप्तकरै औ धतूरे के काष्ठ से अग्नि जलाय उसमें सातहज़ार हवनकरै तो जिसकन्यासे चाहै उसी से बिबाहहोय(ओंनमोगणपतये बक्रतुण्डाय गुलगुलेतिनिनाद कराय चतुर्भुजाय त्रिनेत्राय मुशलवज्रहस्ताय सर्वलोक वशंकराय सर्वदुष्टोपघातजननाय सर्वशत्रुविमर्द्दनाय सर्वराजसंमोहनाय हन २ पच २ वज्रांकुशेनफटस्वाहा) ओंहस्तिपाशिनेगं स्वाहा) यहभी गणपतिकामंत्रहै इसकेअंगन्यासध्यान औ पूजा विधान पहिले मंत्रके ही तुल्यहैं ओंमहाकर्णाय बिद्महेवक्रतुण्डायधीमहितन्नोदंतीप्रचोदयात्) यहगणेशगायत्रीहैइससे पूजनकरै पद्मदंतमाला प्रहर्षिणी परशु पाश अंकुश औ पटह ये आठमुद्रा पहले दिखाय सर्वकर्मकरै जो शिवजीके पूजनका मंडल पीठ औ बिधानहै वहीगणपति पूजनकाभीहै केवलमंत्रों मेंभेदहै इसबिधिसे जो पुरुषपार्वतीकेपुत्रश्रीगणेशजीका पूजन करै उसके सबबिघ्न औ अरिष्ट निवृत्तहोजाते हैं चतुर्थीको उपवासकर जो गणेशजीका पूजनकरै उसके सब कार्य सिद्ध होते हैं गणेशजी अनुकूलहोयँ तो सबजगत् अनुकूल होजाय जिस पुरुषपर गणपति संतुष्टहोयँ उससे देवता पितर मनुष्य आदि सब तुष्टहोते हैं इसकारण श्रद्धासे गणेशजीका आराधनकरै केसर चन्दनचमेली धतूरेकमलआदिके पुष्पअनेकभांतिकेमोदक आदिनैवेद्यतांबूलआदि अनेकउपचारोंसेसंपूर्णविघ्न निवृत्तहोने के लिये बुद्धिमान् पुरुषोंको भक्तिसेपूजनकरै औमनबांछितफलपावै॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

उनतीसवां अध्याय॥

सुमंतुमुनि कहते हैं कि हे राजा तीन प्रकार की चतुर्थी हैं शिवा शान्ता औ सुखा इनके हम लक्षण कहते हैं भाद्र महीने की शुक्लचतुर्थीका नाम शिवाहै उसदिन जो स्नानदानउपवास जप आदि सत्कर्म्मकरै वहगणपतिके प्रसादसे सौगुणाहोजाता है उसचतुर्थीको गुड़ लवण औ घृतकादानकरै औ गुड़केअपूपों से ब्राह्मणों को भोजन करावै उस दिन जो स्त्री अपने सास औ श्वशुरको गुड़के पुये खिलावै वह गणपतिके अनुग्रहसे सौभाग्यपावै पतिकीकामनावालीकन्या विशेषकरके इसचतुर्थीका व्रतकरै औ गणेश जीकी पूजाकरै हे राजा यहशिव चतुर्थी का बिधानहै माघकीशुक्लचतुर्थीको शान्ताकहतेहैं इसदिन कियेहुये स्नानदानआदिकर्म्महज़ारगुणे होजातेहैं इसचतुर्थीको उपवास कर गणेशजीका पूजनकरै औ लवण गुड़ शाक औ गुड़के अपूप ब्राह्मणको देवै औ स्त्री भी अपने श्वशुरआदि पूज्यों को भोजन करावैइसव्रतकेकरनेसेसबविघ्नदूरहोतेहैं औगणेशजीकाअनुग्रह होताहै सुमंतुमुनि कहतेहैं कि हेराजा अबहमसौभाग्यदेनेहारी सुखा चतुर्थीका बिधान कहतेहैं यहव्रत स्त्रियोंकारूप उत्तमहाव भावऔसौभाग्यदेनेहाराहै जो भौमबारकरकेयुक्त शुक्लचतुर्थीहो वही सुखा चतुर्थी कहातीहै पूर्वकाल में शिव पार्वती के मैथुन के समय रुधिर का बिन्दु गिरा उसको भूमि ने अपने मुख में धारण किया उसीसे भौम ग्रह उत्पन्न भया भूमि पुत्र होने से भौम कहाया औ अंगोंका देनेहाराहै अंगोंका करनेहारा है औ सौभाग्य देताहै इससे इसको अंगारक कहते हैं भौमबार युक्त शुक्ल चतुर्थी को उपवास करै औ भक्ति से गणेशजी का पूजन कर रक्त चन्दन रक्तपुष्प आदि करके भौमका पर से स्मरण

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पुरुष अथवा स्त्रीको सब सम्पत्ति रूप औ सौभाग्य मिलता है पहिले संकल्प करके स्नानकरै फिर हाथमेंशुद्ध मृत्तिका लेकर यहमंत्र पढ़ै (इहत्वम्बंदितापूर्वं कृष्णेनोद्धरिताकिल। तस्मान्मे दहपाप्मानं यन्मयापूर्वसंचितम्) फिरमृत्तिकाको सूर्य्यकेसन्मुख कर अपनेशिर आदि सब अंगोंमें लगाय स्नानकरै औ जलके बीचखड़ाहोय मंत्रपढ़ै (त्वमापोयोनिसर्वेषां देवदानवरक्षिसाम् स्वेदाण्डजोद्भिदानांच रसानांपतयेनमः) औ यह ध्यानकरै कि सबतीर्थोंमें नदियोंमें सरोवरोंमें झरनोंमें औ तड़ागोंमें मैंनेस्नान किया यहध्यानकरताहुआ गोतेलगाकरस्नानकरै फिरघरमें आ करमंत्रपढ़दूर्बापीपलकावृक्षशमीवृक्ष औ गऊका स्पर्शकरैइनके स्पर्शकेमंत्रयेहैं(त्वन्दूर्बेऽमृतनामासिसर्वदेवैस्तुबन्दिता। बन्दिता हरतत्सर्वं यन्मयादुरितंकृतं) यह दूर्बाका मंत्र है (पवित्राणां पवित्रात्वं काश्यपिप्रथिताश्रुतौ। शमीशमयमेपापं यन्मयाचिर-संचितम्) यह शमी का मंत्र है (नेत्रस्पदंभुजस्पदं दुःखघ्नन्दु-र्विचिन्तनम्। शत्रूणांचसमुद्योगमश्वत्थशमयस्वमे) यह पीपल केवृक्षको स्पर्शकरनेका मंत्रहै (सर्वदेवमयीदेवी मुनिभिस्तु सु-पूजिता। तस्मात्स्पृशामिवन्देत्वां बन्दितापापहाभव) पहिले गौकी प्रदक्षिणाकरै इसमंत्रकोपढ़ स्पर्शकरै जो गौकीप्रदक्षिणा करै उसको सम्पूर्ण पृथ्वी की प्रदक्षिणा का फल होता है इस प्रकार इनको स्पर्शकर हाथ पैर धोय आसन पर बैठ आचमन कर खदिर के समिधाओं से अग्नि प्रज्वलितकर घृत दुग्ध यव तिल औ भांति२ के भक्ष्यपदार्थों से इनमंत्रोंकरके हवनकरै (ओं शर्वायस्वाहा ओं शर्वपुत्रायस्वाहा ओंक्षोणयुत्संगभवायस्वाहा ओं कुजायस्वाहा ओंललितांगायस्वाहा ओंग्रहेशायस्वाहा ओं अंगार कायस्वाहा इनप्रत्येकमंत्रों से एकसौआठ२ आहुति देवै अथवा [illegible] शक्ति के अनुसार देवै फिर सवर्ण चांदी चन्दन अथवादेव-

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

दारु के काष्ठकी मूर्ति बनाय सुबर्ण अथवा चांदीकेपात्रमें स्थापने कर रक्तचन्दनपुष्प नैवेद्य आदिसेपूजाकरै अथवा ताम्रमृत्तिका अथवा कांसकेपात्र में मूर्तिलिखकर पूजनकरै अग्निमूर्द्धा इत्यादि वैदिक मंत्र से सबउपचार समर्पण करै पीछे वह मूर्ति ब्राह्मण कोदेवै औ घी दूध चावल गेहूं गुड़ आदि बस्तु भी ब्राह्मण को देवै इसमें बित्तशाठ्य अर्थात् खर्च का संकोच न करै बित्तशाठ्य करने से फलनहीं होता इसप्रकार चार मौस युक्तचतुर्थी व्रत करै फिर दश तोले सुबर्ण की अथवा पांच तोले की मंगल औ गणपति की मूर्ति बनाय बीस पल अथवा दशपल के सोने चांदी ताम्र आदि के पात्र से स्थापन करै औ इसी प्रकार शिव पार्व्वती की मूर्त्तिबनाय पात्रमें स्थापन करै औ उत्तम बस्त्रउढ़ावै औ सब उपचारों से पूजन करके दक्षिणा सहित सत्पात्र ब्राह्मण को देवै तब व्रत का सम्पूर्ण फल होय हे राजा यह उत्तम तिथि हमने कही इस दिन जो व्रतकरै वह चन्द्र के तुल्यकान्ति रबिका सा तेज औ बायु के समानबलपावै औ अन्तमें गणपति के अनुग्रह से शिवलोक में निवास करै इसतिथि के माहात्म्य को भी जो पुरुष भक्ति से पढ़ैं अथवा सुनैं वे भी ब्रह्महत्या आदि पापोंसे छुट उत्तम लोक पावैं औ व्रत करनेहारे स्त्री पुरुषों को जो फल होताहै उसका तो कहांतक वर्णन करैं॥

तीसवां अध्याय॥

सुमन्तुमुनि कहते हैं कि हे राजा शतानीक अब हम पंचमी का कल्प कहते हैं पंचमी तिथि नागों को आनन्द देने हारीहै इसदिन नागों के लोक में बड़ा उत्सव होता है पंचमी को जो पुरुष दुग्ध करके नागोंको स्नान करावै उसके कुल में बासुकि तक्षक कालिय मणिभद्र ऐरावत धृतराष्ट्र कर्कोटक औ

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

बड़े२ नाग अभयदेतेहैं अर्थात् उनके कुलमें सर्पका भय नहीं होता माताके शापसे नाग दुग्ध होनेलगतेथे इसलिये अब भी यह दाहकीव्यथा दूरहोने के अर्थ गौ के दूधसेनागों को स्नान कराते हैं यहसुन राजा ने पूछा कि महाराज माता ने नागोंको क्यों शापदिया और फिर क्यों कर बचे यह आप वर्णन करैं यह राजाका प्रश्नसुन सुमन्तु कहने लगे कि हे राजा देवताओं ने समुद्र मथनकिया उससे अतिश्वेतवर्ण उच्चैःश्रवा नाम घोड़ा निकला उसकोदेख नागोंकीमाता कद्रू ने अपनीसपत्नीविनतासे कहा कि यहघोड़ा श्वेतवर्णहै परन्तु इसकेबाल कालेदेखपड़तेहैं तब विनता बोली कि यह अश्व सर्ब श्वेत है न तो काला है न लाल यहसुन कद्रु ने कहा कि मेरे साथ प्रणकर कि जो मैं कृष्णवर्ण के बाल इस अश्व के दिखादूं तो मेरी तू दासी होजा यदि न दिखा सकूं तो मैं तेरी दासी हूं विनता ने भी यह प्रण अंगीकार किया औ दोनों अपने२ स्थानको गईं कद्रु ने अपने पुत्र नागों से बुलाकर सब वृत्तान्त सुनाया औकहा कि हे पुत्रो तुम बाल के तुल्य सूक्ष्म बनकर उच्चैःश्रवा के शरीर में चिपट आओ जिससे वह कृष्णवर्णदेखपड़े तब मैं अपनीसपत्नी विनता को जीत दासी बनाऊं यह माता का वचन सुन नागों ने कहा कि हे माता यहछल तो हमनहीं करते चाहे तू जीत चाहे हार यह अति अधर्म्म है कि छलसे जीतना यह पुत्रोंका बचन सुन कद्रू कोपकर बोली कि तुम मेरी आज्ञा नहीं मानते इसलिये मैं तुमको शापदेतीहूं कि पाण्डवों के बंशमें उत्पन्न राजा जनमेजय सर्प सत्र करेगा उसयज्ञ में तुमअग्नि में दग्ध होजाओ गे इतना कह कद्रू चुपहोरही नाग भी माता का शाप पाय बहुत घबराये औ बासुकि को साथ ले सब ब्रह्माजी के समीप आये [illegible] ब्रह्माजी से कहा तब ब्रह्माजी बोले कि हे

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

बासुकि चिन्तामतकरो या यायवंश में बड़ा तपस्वी जरत्कारु नामक ब्राह्मण उत्पन्न होगा उसको तुम यह जरत्कारु नाम अपनी बहिन बिवाहदेना औ उसका वचन मानना उसकेआस्तीक नामकपुत्र उत्पन्नहोगा वहजनमेजयकेसर्पयज्ञकोरोकेगा औ तुम्हारी रक्षाकरेगा यह ब्रह्माजीका बचनसुन सब बासुकि आदि नागअति प्रसन्न हो ब्रह्माजीको प्रणाम कर अपने धाम को आये इतनी कथा सुनाय सुमंतु मुनि बोले कि हे राजा वहयज्ञ तेरे पिता राजा जनमेजयने किया यह बात श्रीकृष्ण भगवान् ने भी युधिष्ठिर से कहदी थी कि हे राजा आज से सौवर्षके अनन्तरसर्पयज्ञहोगा जिस में बड़ेबिषधर औ दुष्टनाग क्षयको प्राप्तहोंगे जब करोड़ों नाग अग्नि में दग्ध होने लगेंगे तब आस्तीकनामब्राह्मण नागोंकीरक्षा करेगा ब्रह्माजीनेपंचमी के दिन नागोंको बरदिया औ आस्तीक ने पंचमीको ही नागों की रक्षाकरी इसलिये पंचमी नागों को अति प्रिय भई पंचमी के दिन नागोंकी पूजाकर यह प्रार्थनाकरै कि जो नाग पृथ्वी में आकाश में स्वर्ग में सूर्यकी किरणों में नदियों में सरोवरों में औ बापी कूप तालाब आदिमें रहते हैं वे सबहमारेऊपर प्रसन्न हों उनको हमबारम्बार नमस्कार करतेहैं इसप्रकार नागोंको बिसर्जन कर ब्राह्मणों को भोजन कराय आप अपने कुटुम्ब के साथ भोजन करै पहिले मीठा भोजन करै पीछे जिसपर रुचि होय सो खाव इस प्रकार जो नियम से नागों का पूजन करै वह नागलोक में जाय उत्तम विमान में बैठ अप्सराओंकेसाथ बिहारकरै औ बहुत काल के अनन्तर भूमिपर आयपांचजन्मतक बड़ा पराक्रमी आरोग्य औ प्रतापी राजा होय इतनीकथा सुन राजानेपूछा कि महाराज जो पुरुष सर्पके काटनेसे मृत्युबशहोय वह किस गतिको प्राप्त होताहै औ जिसके [illegible]

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

भाई पुत्रआदि सर्प्पके काटनेसे मरेहों वह उनकेउद्धारके लिये कौन व्रतदान अथवा उपवासकरै यह आपकृपाकर वर्णनकरैं यह राजाका वचनसुन सुमन्तुमुनि कहनेलगे कि हेराजा सर्प्प के काटेसे जो मरै वह निर्विष सर्प्प होताहै औ जिसके माता पिता आदि सर्प्पके काटेसे मृतकहुयेहों वहउनकी सद्गति होने के अर्थ भाद्र शुक्ल पंचमी का उपवासकर नागों का पूजन करै इसप्रकार बारहमहीनेशुक्लपंचमीकोव्रतकरके सुवर्णअथवाचांदी कापांचफण करकेयुक्त नागबनाय पंचमीकेदिन करवीर कमल चमेली आदि पुष्प धूपदीप औ अनेकप्रकारके नैवेद्योंसेउसका पूजनकर घृत खीर औ लड्डू ब्राह्मणों को भोजन करावै अनन्त वासुकि शंख पद्म कंबल कर्कोटक अश्वतर धृतराष्ट्र शंखपाल कालिय तक्षक औ पिंगल इन बारहनागोंका बारहमहीनों में क्रमसे पूजनकरै चतुर्थीकेदिन एकबारभोजनकरै औ पंचमीको व्रतकर नागपूजाकरै औ रात्रिको भोजनकरै अन्तमें सुवर्णका नाग औ एक उत्तमगौ ब्राह्मण को देकर ब्राह्मण भोजनकरावै यह उद्यापनकोविधिहै हे राजा तेरेपिताने भी अपनेपितापरीक्षितके उद्धारकेलिये यहव्रतकिया औ सुवर्णका बड़ाभारीनाग औ बहुतसी गौ ब्राह्मणोंकोदी तबपितासे अनृणभया औ परीक्षितभी उत्तमलोकोंमें प्राप्तभया हे राजा जोपुरुष इसकथा को भक्तिसे श्रवणकरै उसके कुलमें कभी सर्प्पकाभय नहीं होता है औ इस पंचमी व्रतके करनेसे उत्तमलोककी प्राप्ति होतीहै ॥

इकतीसवां अध्याय ॥

राजाशतानीक पूछते हैं कि हे सुमन्तुमुनि सर्प्पोंके कितने रूपहैं क्या लक्षणहैं के रंगहैं औ क्या जातिहै यहआप वर्णनकरैं यह सुनसुमन्तुमुनिबोले कि हे राजाहिमालय पर्वत में कश्यप औ

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

गौतमका सम्बाद जो भयाथा वहहम वर्णनकरते हैं एकसमय कश्यपमुनि अग्निहोत्रकर स्वस्थचित्तहो हिमालयपर्वतमेंअपने आश्रम के बीच बैठेथे उससमय गौतमने प्रणामकर विनय से पूछा कि महाराज सर्पोंके लक्षण जाति वर्ण औ स्वभाव आप वर्णनकरैं औ सर्प किसप्रकार उत्पन्नहोताहै विषकैसेछोड़ताहै विषके वेग कितनेहैं विषनाड़ी कितनी हैं सर्पकीदंष्ट्रा कैप्रकार की हैं सर्प्पिणीकोगर्भकबहोताहै औ प्रसवकितनेदिनकेअनंतर होताहै स्त्री पुरुष नपुंसकसर्प्पका क्यालक्षणहै औ ये क्योंकर काटते हैं यहसबभेद आप कृपाकर मुझे बतावैं यह गौतम का वचन सुन कश्यपने कहा कि चित्तलगाय श्रवणकरो हम सर्पों कासबभेदकहतेहैं ज्येष्ठ औ आषाढ़मेंनागोंकोमदहोताहै तबहीं मैथुनकरते हैं औ वर्षाऋतुकेचारमहीने सर्प्पिणी गर्भधारती है औकार्त्तिकमें दोसौचालीसअण्डेदेतीहै औ उनकोनित्यआपही खानेलगतीहै अन्तमें दयासे थोड़ेसे छोड़तीहै उनमें जो अण्डे सुवर्णकीभांति चमकते हों उनमेंपुरुष ककोड़ाके फलकेतुल्य हरे औ लम्बीरेखाओं करकेयुक्तअण्डोंमेंस्त्री औ शिरीषपुष्पकेसमान रंगवाले अंडोंकेबीच नपुंसकसर्प होते हैं उनअण्डोंको सर्प्पिणी छःमहीनेतक सेतीहै पीछे अण्डेफूटकर उनसे सर्प निकलते हैं औ वेबच्चे अपनीमातासे स्नेहकरते हैं अण्डेकेबाहिरनिकलनेसे सातदिनमें उन बच्चों का कृष्णवर्ण होजाताहै सर्प्पका आयुष एकसौबीस वर्षकाहै औ मृत्युआठप्रकारकाहै मयूरसे मनुष्यसे चकोरपक्षीसे बिल्लीसे नकुलसे शूकरसे वृश्चिकसे औ गौआदि पशुकेखुरसेइनसेबचै तो एकसौबीसवर्षजीवै सातदिनकेअनंतर दंष्ट्राऊगती हैं औ इक्कीसदिनमें विषहोजाताहै परन्तु सर्प्पदंश करनेकेसमय बिष त्यागदेताहै फिर और विषइकट्ठाहोजाताहै सर्प्पिणीकेसाथ जो फिरै वह बालसर्प्पकहाताहै पच्चीसदिनमें

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वहबच्चा प्राणहरनेमें समर्थहोजाताहै छःमहीनेमेंकञ्चुकत्याग-
ताहै दोसौबीसपैर सर्प्पके होते हैं परन्तु गौकेरोमके तुल्यअति
सूक्ष्महोते हैं इसीसेदेखनहींपड़ते चलनेकेसमय निकलआते हैं
नहीं तो भीतरप्रविष्टरहते हैं इनकेशरीरमें दोसौबीसपसलीओं
दोसौबीसही सन्धिहोती हैं अकालमें अर्थात् अपनेसमयबिना
जो सर्प उत्पन्नहोते हैं उनमें विषन्यूनहोता है औ सत्तर वर्षसे
अधिक जीतेभीनहीं जिनकेदांत लाल पीलेनीलेहों औ विषका
वेगभीमन्दहोवे अल्पायुषहोते हैं औ बहुतभीरुअर्थात्डरपोकने
होते हैं सर्प्पोंके एकमुख दो जीभ बत्तीस दांत औ विषसे भरी
हुई चारदाढ़ होती हैं उनकेनाम मकरी करालो कालरात्रि औ
यमदूतीयेहैं औ क्रमसेब्रह्माविष्णुरुद्र औ यमइनचारोंकेदेवता
हैं यमदूती नाम दाढ़ सबसे छोटीहोतीहै इससे जिसको सर्प्प
काटे वह तत्क्षणमरजाय मंत्र यंत्र औषधीआदि इसपरकुछभी
नहींचलता मकरीदाढ़का चिह्न शस्त्रकासा होताहै करालीकाक
पदके तुल्य कालरात्रि टकारअक्षरके सदृश औ यमदूती कूपके
समानहोतीहै येचारों क्रमसे एकदोतीन औ चारमहीनेमेंउत्पन्न
होती हैं औ क्रमसे बातपित्तकफ औ सन्निपातइनमेंहोताहैगुड़
युक्तभात कषायरसयुक्तअन्नकटुपदार्थ औ सन्निपातमेंहितवस्तु
क्रमसे इनकेभोजनहैं श्वेत रक्त पीत औ कृष्ण इन चारदाढ़ोंके
रङ्गहैं औ क्रमसे ब्राह्मणक्षत्रियवैश्य औ शूद्र येचारइनकेवर्णहैं
सर्प्पोंकी दाढ़ों में सदा विष नहींरहता विषके रहनेका स्थान
सर्प्पके दहिने नेत्रके समीपहै सर्प्प जब क्रोधकरताहै तब विष
नाड़ियों के द्वारा दाढ़ में पहुंचजाता है आठ कारणों से सर्प्प
काटताहै दबनेसे पूर्ववैरसे भयसे मदसे क्षुधा से विषका वेग
होनेसे सन्तानकी रक्षाकेलिये औ कालकी प्रेरणासे जो सर्प्प
[illegible] पेटकी ओर उलटा होजाय औ उसकी दाढ़ टेढ़ी हो

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

जाय उसको दबाहुआ जानो जिसके काटेसे बहुत गहरा घाव होजाय उसको बैरसे काटा जानो एक दाढ़का चिह्नहोय वह भी भलीभांति न देखपड़े तो भयसे रेखाकीभांति दाढ़लगे तो मदसे दो दाढ़लगैं औबड़ाघावहोय तो क्षुधासे दोदाढ़लगैं औ घावमेंरुधिरभरजाय तो विषकेवेगसे दोदाढ़लगैं औगहराघाव न होय तो सन्तानकी रक्षाकेलिये औ काकपदकी भांति तीन दाढ़गहरीलगैं अथवा चारदाढ़लगैंवहकालकी प्रेरणासेकाटता है उसका कुछउपाय नहीं असाध्य होताहै दष्ट दष्टानुपीत औ दंष्ट्रोद्वृत्त ये तीन काटनेकेभेदहैं सर्प्पकाटै औ ग्रीवाङ्कै उसको दष्ट कहते हैं काटकरपानकरै उसको दष्टानुपीतकहते हैं इसमें तिहाई विषचढ़ताहै औ काटकर सबविष उगिलदेवै औ आप निर्विषहो उलटजाय अर्थात् पीठकेबलउलटाहोय औ उसका पेट देखपड़ै उसदंशको दंष्ट्रोद्वृत्त कहते हैं॥

बत्तीसवां अध्याय॥

कश्यपमुनि कहते हैं कि हे गौतम अब हम कालसर्प्पकरके काटेहुये पुरुष का लक्षण कहते हैं जिसको काल सर्प्प काटै उसकी जिह्वा भंग होजाय हृदय में शूल होय नेत्रों से देख न पड़ै दांत औ शरीर कृष्ण वर्ण होजायँ विष्टा औ मूत्र निकल जाय कन्धे कमर औ ग्रीवा टूटेपड़ैं नीचेको मुख होजाय आंखैं ऊपर को चढ़जायँ शरीर में दाह औ कम्पहोय शस्त्रसे काटने करकेभी शरीरमें रुधिर न निकलै बेत मारनेसेभी देहमें रेखा न पड़ैं औ काटने का स्थान पके जम्बूफल की भांति नीलवर्ण सूजाहुआ रुधिरसे भरा औ काकपद के तुल्यहो हिचकी चलै कंठ रुकजाय श्वासबढ़ै शरीरकी त्वचा पांडुवर्णहोजाय उसको काल सर्पका काटाजानो घाव सूजजाय नीलवर्णहोय

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

बहुत आवै अनुनासिक अर्थात् नाकसे बोलै ओष्ठ लटक पड़ै हड़फूटनहोय हृदयकांपै तो काल सर्पका डसाजानो दांतपीसै नेत्रफिरजायँ लंबेश्वासलेवै ग्रीवालटकपड़ै नाभिफरकै तो काल का काटा जानो दर्पण अथवा जलमेंअपनी छाया न देखैसूर्य्य तेजसे हीन देखपड़ैं नेत्रलालहोयँ पीड़ासे सब शरीर कांपैउस-को कालदष्ट जानो वहशीघ्रही मृत्यबशहोय अष्टमीनवमी कृष्ण चतुर्दशी औ नागपंचमीके दिन जिनको सर्प काटै उनके जीनेमें संदेहहै आर्द्रा श्लेषा मघा भरणी कृत्तिका बिशाषा तीनोंपूर्व्वा मूल स्वाती औ शतभिषा नक्षत्र में सर्पकाकाटा नहीं जीता औ इन नक्षत्रों मेंजो बिषखाय वहभी तत्कालमरैपूर्व्वोक्त तिथि औ नक्षत्र दोनों मिलजायँ औअग्निहोत्र शालामेंश्मशानमें औसूखे वृक्षके नीचे जिसको सर्पकाटै वह न जीवै मनुष्यों के शरीर में एकसौ आठ मर्महैं उनमेंभी शंख अर्थात् ललाटकी अस्थि नेत्र भ्रूमध्य वस्ति अण्डकोशोंका मध्य कक्ष कन्धे हृदय तालुठोड़ी औ गुदा येमर्मस्थान मुख्यहैं इनमें सर्पकाटै अथवा चोट लगै तो मनुष्य कभी न जीवे सर्प काटनेके अनन्तरवैद्यको जोबुलाने जाय उस दूतके लक्षण कहते हैं उत्तम वर्णका हीन वर्णदूत औ हीन वर्णका उत्तम वर्णदूत अच्छानहीं वहदूतदण्ड हाथमें लिये हो दो दूतहों कृष्ण अथवा रक्त बस्त्र पहिने हों शिर परही एक वस्त्र लपटेहो शरीरमें तेल लगाये हो केश खोलेहो घोर शब्द करता हुआ आवै औ हाथ पैरपीटै ऐसादूत बहुत बुरा होताहै जिस रोगीका दूत इन लक्षणों करकेयुक्त वैद्यक समीप आवै वह रोगी अवश्य मरै अब नागोंका उदय कहते हैं जो शिव जीने कहा है अनन्त नाग सूर्य्य हैं बासुकि चन्द्रमा तक्षक भौम कर्कोकट बुध पद्म बृहस्पति महापद्म शुक्र कुलिक औ [illegible] दोनों शनैश्चर का रूपहैं रबिबार के दिन दशवां

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

औ चौदहवां यामार्द्ध सोमबार को आठवां बारहवां भौमबार को छठा दशवां बुधको चौथा आठवां वृहस्पति को दूसरा छठां शुक्रकोचौथाआठवां औ दशवां औ शनिबारकोपहिला सोलहवां दूसराऔ बारहवां प्रहरार्द्ध निंद्यहैं इनमेंसर्पकाटै तो जीवेनहीं॥

तेतीसवां अध्याय॥

कश्यपजी कहतेहैं किहेगौतम जोजानै कि यमदूती नामदाढ़ लगीहै तो उसकी चिकित्सा न करै दिनमें औ रात्रिमें दूसराऔ सोलहवां प्रहरार्द्ध सर्पका है उसमें काटै तो चिकित्सा न करै बालके अग्र से जितना जल उठ सक्ता है उतना विष सर्प डालताहै वह सब देहमें फैल जाताहै जितनी देरमें भुजा को पसारै अथवा समेटै इतनेकालमें काटनेके अनन्तर विषमस्तक में पहुंच जाताहै रुधिरमें पहुंचनेसे विषकी बहुत वृद्धि होती है जैसे जलमें तैलकी बूंद फैलजाय त्वचामें पहुंचविष दूनाहोता है रक्तमें चौगुणा पित्तमें आठगुणाकफमें सोलह गुणा बात में तीसगुणा मज्जामें साठगुणा औ प्राणोंमेंपहुंच वहीविष अनन्त गुणाहोय सब शरीरके स्रोत रोक लेताहै तब वह जीव श्वास नहींलेता औ मृत्युबशहोजाताहै शरीर पृथिवी आदि पांचभूतों से बनाहैमृत्युके अनन्तर येभूत अलग२ होजाते हैं औ अपने२ मेंलीनहोजातेहैंविषकीचिकित्साबहुत शीघ्रकरनीचाहियेबिलंब होनेसेरोगी असाध्यहोजाताहै जैसाजंगम विषअर्थात्सर्पादि जीवोंकाविषप्राणहरनेहाराहै ऐसाही स्थावरविषसंखिया आदि भीहै बिषकेपहिलेवेगमें रोमांच होताहै दूसरेवेगमेंपसीनाआता है तीसरेमें शरीर कांपताहै चौथेमें भीतरसे शरीरके स्रोतरुकने लगतेहैं पांचवेंमें हिचकी चलतीहैंछठेमेंग्रीवा लटकजाती है औ सातवें वेगमें प्राणचले जातेहैं इनसात वेगोंमें शरीरको

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by eGangotri Foundation USA

धातुओं में विष व्याप्त होजाताहै अबइन धातुओं में पहुंचे हुये विषके अलग २ लक्षण कहतेहैं आंखों के आगे अँधेरा होय औ खड़ा न रहसके तो जाने कि विष त्वचा में है तब आककी जड़ अपामार्ग तगर औ प्रियंगु इनको जलमें घोटकर पिलादेवे तो विषकी बाधा शान्तहोजाय त्वचासे रुधिर में विष पहुंचता है तब शरीरमें दाह औ मूर्च्छा होती है शीतल पदार्थ अच्छेलगते हैं उशीरअर्थात् खसचन्दनकूठ तगरनीलोफर सिंदुवारकी जड़ धतूरेकीजड़ हींग औ मिरच इनको पीसकर देवै इससेशान्त न होय तो कटेली इंद्रायण की जड़ सर्पगंधा औ वृश्चिकाली इन को घृतमें पीस देवै इससे भी शांति न होय तो सिंदुवार औ हींग को नासदेवै औ यही पिलावै इसीका अंजन औ लेपन करै तो रक्तमें प्राप्त विषकी बाधा निवृत्तहोय रक्तसे पित्तमेंविष पहुंचताहै तब पुरुष उठ २ कर गिरताहै शरीर पीला होजाता है सब दिशा पीत वर्ण देखपड़तीहैं मूर्च्छा औ दाह होता है तब पीपल शहत महुआ घी तूंबेकी जड़ इंद्रायणकी जड़ इनसबको पीस नस्य लेपन औ अंजन करै तो बिषका वेग निवृत्त होय पित्तसे विष कफमें प्रवेश करताहै तबशरीरजकड़ जाताहै श्वास भली भांति नहीं आताकण्ठमें घर्घर शब्द होता है मुखसे लार गिरतीहै यहलक्षणदेख पीपल मिरच शुंठी लोध को शहतकी अर्थात् तुरई औ मधुसार इनको गोमूत्रमें पीस नस्य लेपन अंजन करै औ यही पिलावे तो विषका वेग शान्त होय कफसे बात में विष प्रवेश करताहै तब पेट अफर जाताहै कोई पदार्थ देख नहीं पड़ताहै औ दृष्टिभंग होजाताहै यह लक्षण होय तो अरलूकी जड़ खिरनी गजपीपल भारंगी पीपल देवदारु मधुसार सिंदुवार औ हींग इनसबको पीसगोली बनावै वहगोली पिलावै औ नस्य लेपन अंजन आदि भी इसीसे करै यहगोली

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सब विषों को हरतीहै औ ब्रह्माजीने कही है बातसे मज्जा में विष पहुंचता है तब दृष्टि नष्ट होजाती है औ सब अंग बेसुध हो गिर जाते हैं यह लक्षणहोय तो घी शहत खांड़ नख चन्दन औ खस इन सबको घोटकर पिलावै औ नस्य आदि भीदेवैतो विषका वेग निवृत्त होय मज्जासे विष मर्मस्थानों में पहुंचता है तब सब इन्द्रिय नष्ट होजायँ काटनेसे रुधिर न निकले केश उखाड़नेसे भी पीड़ा न होय उसको मृत्यकेबश हुआ जानै ऐसे लक्षणोंकरके युक्त मनुष्यकी साधारण वैद्य चिकित्सा नहींकर सक्ते हैं जिनकेपास सिद्धमन्त्र औ ओषधी होयँ वे वैद्यऐसेरोगी का उपाय करने में समर्थ होते हैं इसकेलिये साक्षात् रुद्रने एक औषध कहाहै मयूरनकुल औ मार्जार इनतीनोंका पित्ताधनाली की जड़ केसर भार्गवी कूठ काशमर्द की छाल उत्पल कुमुद औ कमलइन तीनोंके केसरइनसबके समानभाग लेकरगोमूत्र में पीस नस्य आदि देवे औ खानेकोभी देवै तो कालसर्प करके डसाहुआभी अतिशीघ्र निर्विषहोय यहऔषध मृतसंजीवनीहै अर्थात् मरेकोभी जिलादेतीहै इसलिये अवश्य देनीचाहिये॥

चौंतीसवां अध्याय॥

गौतम पूछते हैं कि हे कश्यप जी सर्प सर्पिणी बाल सर्प सूतिका नपुंसक औ व्यंतरनाम सर्पके काटेमें क्या भेद होता है इनके अलग२ लक्षण कहो यहसुन कश्यपमुनि कहने लगे कि हे गौतम यह सब हम संक्षेप से कहते हैं औ नागों के रूप का लक्षण भी वर्णन करते हैं सर्प काटै तो ऊपरको दृष्टिहोजाय सर्पिणी के काटने से नीचे को बालकसर्प के काटे से दहिनी ओर को औ बालसर्पिणी के डसने से बाँ[illegible]

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

जातीहै गर्भिणीके काटेसे पसीना आताहै प्रसूतीकाटै तो रोमांच औ कंप होताहै नपुंसक के काटने से शरीर टूटताहै सर्प दिनमें सर्पिणी रात्रिमें औ नपुंसक संध्यासमय अधिकबिष करिकेयुक्त होताहै अंधकार में जल में बनमें सर्पकाटै तथा सोतेहुये मत्तहुये को काटै तो सर्प नहीं देखपड़ै औ देख भी पड़ै तो उसकी जाति न पहिचानी जाय औ पूर्वोक्त लक्षणभी न जानता होय तो वैद्य क्योंकर चिकित्सा करसक्ताहै चार प्रकारके सर्पहोते हैं दर्वीकर मंडली राजिल औ व्यंतर इनमें दर्वीकर बात स्वभाव है मंडली पित्तस्वभाव राजिल कफस्वभाव औ व्यंतर सन्निपात स्वभाव है अर्थात् उसमें बात पित्त औ कफ तीनो अधिक हैं दर्वीकर में रुधिर कृष्णवर्ण औ स्वल्प होताहै मंडलीमें गाढ़ा बहुत औ रक्त वर्ण रुधिर निकलता है औ राजिल तथा व्यंतरमें बहुत गाढ़ा थोड़ासा रुधिरहोताहै इनचारजातियों बिना पांचवींकोई जाति सर्पोंकी नहीं मिलती है ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य औ शूद्र इन चार वर्णों के सर्प होतेहैं ब्राह्मण सर्पकाटैतो शरीरमें दाह होय मूर्च्छा होय मुखकाला पड़जाय ग्रीवा स्तंभहोजाय औ संज्ञा जातीरहै ये लक्षण होंय तो अश्वगंधा अपामार्ग सिंदुवार औ हींगको घृत में पीस नस्य देवै औ पिलावै तो बिष निवृत्त होय क्षत्रिय सर्प काटै तो शरीर कांपै मूर्च्छाहोय ऊपरको दृष्टि होजाय पीड़ाहोय यह लक्षण देख आककी जड़ अपामार्ग इंद्रायण औ प्रियंगु को घीमें पीस पिलावै औ इसीका नस्य देवै तो बिषकी बाधा मिटै वैश्य सर्पडसै तो कफ बहुत आवै मुख से लार बहैं मूर्च्छा होय संज्ञा जातीरहै येलक्षण होंयतो अश्वगंधा गृहधूमगूगुल शिरीष अर्क पलाश औ श्वेत फूलवाली गिरिकर्णिका इन सब को गो मूत्रमें पीस नस्य देवै औ यही पिलावै तो वैश्य सर्पके बिषकी बाधा तत्क्षण दूरहोय शूद्र सर्प जिसको काटै उसको शीत लगै

CC-0. Gurukul Kangri University, Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कांपै ज्वरहोय सबअंग चुलचुलावै यह लक्षणजान कमलकमल के केसरलोध शहत मधुसार औ श्वेतगिरिकर्णी इनको समान भागलेकर शीतल जलसे पीस नस्य आदि देवै औ पान करावै तो बिष का वेग शांत होय ब्राह्मण सर्प मध्याह्न के पहिले क्षत्रिय मध्याह्नमें बैश्य मध्याह्नके पीछे औ शूद्रजातिका सर्प संध्यामें बिचरताहै ब्राह्मणसर्प पुष्प भोजन करताहै क्षत्रियमूषक वैश्य मेंडक और शूद्रसर्प सब पदार्थ भक्षणकरताहै ब्राह्मणसर्प आगे डसताहै क्षत्रिय दहिने वैश्यबायें औ शूद्र पीछे काटता है मदके समय मैथुनकी इच्छा करके पीड़ित सर्प बिषके बढ़ने से व्याकुलहो बिना समयभी काटताहैब्राह्मण सर्पमें पुष्पकेसमान गंधहोताहै क्षत्रियमें चंदनका वैश्य में घृतका और शूद्र में मत्स्य का गंध आताहै नदीकूप तालाब झरने बाग औ पबित्र स्थानों में ब्राह्मण सर्प रहतेहैं ग्राम नगर आदिके द्वार चतुष्पथ तोरण आदि स्थानोंमें क्षत्रिय गोशाला ऊषर भस्म घास आदिके ढेर औ वृक्षोंमेंवैश्य औ अपवित्र स्थान बन शून्यघर श्मशानआदि बुरेस्थानोंमें शूद्रसर्पनिवासकरतेहैं श्वेत कपिल अग्निकेसमान तेजस्वी औ सात्विक ब्राह्मण सर्प होतेहैं मूंगेके समानरक्तवर्ण अथवा सुवर्णके तुल्यवर्णसूर्यके समानतेजवालेक्षत्रिय सर्पजानो अलसी अथवा बाणपुष्पके समान वर्ण अनेक रेखाओंकरकेयुक्त वैश्य होतेहैं औ अंजन अथवा काककेसमान कृष्णवर्ण औ धूम्र वर्ण शूद्रसर्प होतेहैं एकअंगुल अंतरमें दंशहोय तो बालक सर्प का काटाजानो दोअंगुल अंतरहोयतो तरुणका औ ढाईअंगुल अंतर होयतो वृद्धसर्पका दंश पहिचानो अनंत संमुख देखताहै वासुकि बाईंओर तक्षकदहिनीओर औ कर्कोटककीदृष्टिपिछली तरफ होतीहै अनंत वासुकि तक्षक कर्कोटक पद्ममहापद्म शंख पाल औकुलिक ये आठोंनाग पूर्वआदि आठदिशाओंके स्वामीहैं

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पद्म उत्पल स्वस्तिक त्रिशूल पद्म शूल छत्रओ अर्द्ध चन्द्र ये आठों इनके आयुधहैं अनन्तओ कुलिक ये दो ब्राह्मणहैं शंखओ वासु किक्षत्रिय हैं महापद्म ओ तक्षक वैश्यहैं पद्म ओ कर्कोटक शूद्रहैं अनन्त ओ कुलिक शुक्लवर्ण औब्रह्मासे उत्पन्नहैं वासुकि ओ शंखपाल रक्तवर्ण ओ अग्निसे उत्पन्नहैं तक्षक औमहापद्म पीतवर्ण ओ इन्द्रसे उत्पन्नहैं पद्मओ कर्कोटक कृष्णवर्णओ यमसे उत्पन्न भयेहैं दर्वीकरोंके सोलह भेदहैं सात भेतमंडली सर्पोंकेहैं दशभेद राजिल सर्पोंकेहैं ओ व्यंतर चौसठ भेदके हैं वराहकर्णी गजपीपल गांधारिका पीपल देवदारु मधूकसार सिंदुवार ओ हींग इनको समभागले गोमूत्रमेंपीसगोलीबनाय सदा समीप रक्खे इतनी कथा सुनाय सुमंतुमुनि बोले कि हेराजायहसबसर्पोंके लक्षण ओ चिकित्सा कश्यपमुनिनेगौतम को उपदेश करेहैं सदा भक्तिसे नागोंकी पूजाकरै ओ पंचमीको विशेषकर दुग्ध खीर आदिसे पूजै श्रावण शुक्ल पंचमीकोद्वारके दोनो ओर गोबर से नाग बनाय दही दूध दूर्बा पुष्पकुशागंध अक्षत ओ अनेक प्रकार के नैवेद्योंसे पूजनकर ब्राह्मण भोजन करावै उस पुरुषके कुलमें कभी सर्पभय नहीं होताइसीप्रकार भाद्रपदकी पंचमी को अनेक रंगके नाग लिख कर घी पायस दूध पुष्प आदिसे पूजनकर गूगुलका धूप देवै तो तक्षकआदि नागप्रसन्न होतेहैं ओ उसके सातपीढ़ी तक सर्प भय नहींहोता आश्विनकीपंचमीको कुशाके नागबनायइन्द्राणी सहितउनका पूजन करै दुग्ध घृत ओ जल से स्नान कराय दूध में रंधे हुये गेहूं ओ भांति २ के भक्ष्य भोज्य चढ़ावै इस पंचमी को जो नागपूजा करै उसपर वासुकि आदि नाग संतुष्ट होतेहैं औवह पुरुष नागलोक में बहुतकाल सुख भोगताहै हेराजा यहपंचमी तिथिका फल हमने वर्णन किया है जहां यह पढ़ा जाय वहां

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सर्प भयनही होताहै (ओंकुरुकुल्लेहुंफट्स्वाहा) यह मंत्रभी सर्प भय निवृत करताहै ॥

पैंतीसवां अध्याय ॥

सुमंतुमुनि कहतेहैं कि हे राजा अब हमषष्ठीतिथिका कल्प वर्णन करतेहैं जिसका राज्य छुटगया हो वह षष्ठीका व्रतकरै औ रात्रिको फलखाय वह अवश्य अपना राज्यपावै यह तिथि स्वामि कार्त्तिकेय को बहुत प्रियहै इसी तिथिको स्वामिकार्तिक देव सेनाके स्वामीभये हैं इसतिथिको व्रतकर घृतदही जलओ पुष्पों करके स्वामिकार्तिक को दक्षिण की ओर मुखकरके अर्घ्य देवेओ ब्राह्मणको अन्नदेकर रात्रिको फल भोजन करै ओ व्रत के दिन शुक्ल वस्त्र पहिरै पवित्र ओ ब्रह्मचर्यसे रहै ओ शुक्लपक्ष तथा कृष्णपक्ष की दोनो षष्ठियों को यह व्रतकरै वह स्कंधके अनुग्रह से सिद्धि धृति तुष्टि राज्य आयुष ओ मुक्तिपाताहै जो पुरुष उपवास नकरसकै वहनक्तव्रतही करै तौभी दोनोलोकोंमें उत्तम फलपाताहै इस व्रतके करनेहारे पुरुषको देवताभीनमस्कार करतेहैं ओ वह इसलोक में आय चक्रवर्ती राजा होताहै हेराजाजोपुरुष षष्ठी व्रतके फलको भक्तिसे श्रवणही करै वहभी स्वामिकार्त्तिकेयकीकृपासेभांति २ के उत्तमभोगसिद्धितुष्टिधृति औलक्ष्मी पाताहैओ परलोकमें उत्तम गतिकाअधिकारी होताहै

छत्तीसवां अध्याय ॥

राजा शतानीक पूछते हैं कि हेसुमंतुमुनि स्वामिकार्तिक के जन्मको सुन हमको अति संदेह होता है कि अनेकोंसे स्वामि कार्त्तिक की उत्पत्ति भई ओ उनका माहात्म्य तथा प्रभाव अत्यंत वर्णन किया है इसमें जाति उत्तम है कि कर्म यहमेरा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

संदेह आप निवृत्त करैं औ इन दोनों में जो श्रेष्ठ हो वह कहैं यह राजाकाबचनसुन सुमन्तुमुनि कहिने लगे कि हेराजायही बात मुनियों ने ब्रह्माजी को पूछीथी जो ब्रह्माजीने मुनियों को कहा वही हम आप को श्रवण कराते हैं एक समय ब्रह्माजी अपने लोकमें सुखसे बैठेथे उस अवसरमें सबऋषि ब्रह्माजीके समीप गये औ प्रणाम कर कुशल प्रश्न के अनन्तर पूछने भये कि महाराज विश्वामित्र को क्षत्रिय से ब्राह्मण भये देख हमारे हृदय में परम संदेह उत्पन्न हो रहा है ब्राह्मणत्व क्या पदार्थ है जाति वेदाध्यायन देह औआत्माके संस्कार आचार वैदिक कर्मोंका करना इन सबमें ब्राह्मणत्वका हेतु कौनसा है कादचित् कहो कि जीवही ब्राह्मण है तो वह संसारकीक्षत्रिय वैश्य शूद्र चंडाल श्वान सूकर आदि योनियोंमेंघूमता है फिर क्योंकर ब्राह्मणरहसक्ताहै जैसा गौओंके समूह में अश्वपृथक् पहिचानाजाताहै ऐसे मनुष्यों में ब्राह्मण को नहीं जान सक्ते इस कारण ब्राह्मणत्व क्या बस्तु है यह आपकृपाकर बर्णन करैं यह मुनियोंका प्रश्न ब्रह्माजीसुन कहने लगे कि हे मुनीश्वरो मनुजीकी कही सप्तव्याध कथा सुनने से जीव में तो ब्राह्मणत्व सन्देह निवृत्तहोजाता है दशार्ण देश में सातब्याध थे वे सातों कलांजरपर्बतमें मृगभये शरद्वीपमें वेही चक्रवाक मानसरोवर में हंस औ वेही सातों कुरुक्षेत्र में वेद के पारगामी ब्राह्मणभये इसहेतु जीवको तो किसीप्रकार ब्राह्मण नहीं कह सकते औ जैसे गवय अर्थात् नीलगायसे गौका भेद गलकंबलकरके होताहै ऐसाभी कोईचिह्ननहीं किजोब्राह्मण को और मनुष्यों से भेद करै इससे जातिभी ब्राह्मण नहीं गौ महिषी बकरी भेड़ ऊंट गधे खच्चर घोड़े हाथीआदिकी नौकरी [illegible] सरेक सेवबनिया लुहारआदि कारीगर नट आदि

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

का कामकरैं मांस लशुन पलाण्डु अर्थात् प्याजभक्षणकरैं मद्य औऊंटनी का दूध पीवै मांस लवण आदि रस औ दूध बेचैं पुनर्भू अर्थात् जिस स्त्री का दोबार बिवाह हुआहो शूद्री चंडाली दासी आदि स्त्रियोंसे संगकरै शूद्र का अन्न प्रेत का अन्न जन्म औ मरणके अशौच का अन्न जो भोजन करैं देवता माता पिता गुरु आदि से जो मात्सर्यद्वेष औ अहंकारकरैं इत्यादि औरभी अनेक कारणों करके वेद वेदांगका पठनपाठन करनेहारे उत्तम कुल में उत्पन्न ब्राह्मण भी अपने ब्राह्मणत्व से हीन होजाते हैं इसलिये ब्रह्मणत्व एक शरीर में स्थिर भी नहीं होसक्ता मनु-जीने भी यह कहा है कि मांस लवण लाक्षा दूध आदि पदार्थ बेचने से ब्राह्मण शूद्र होजाता है गौओं से अपना निर्बाह करै खेती करै नौकरी करै नट वैश्य आदि का कर्म करै वह ब्राह्मण शूद्रके तुल्य होताहै इस प्रकारब्राह्मणसे शूद्र औशूद्रसे ब्राह्मण भी बनजाताहै॥

सैंतीसवां अध्याय॥

ब्रह्माजी कहतेहैं कि हे मुनीश्वरो वेद पढ़ने से भी ब्राह्मण नहीं होता क्योंकि रावण आदि राक्षसोंनेभी वेद पढ़रक्खाथा और भी शूद्र चंडाल धोबर आदि कोई २ छल से वेद पढ़लेते हैं परन्तु ब्राह्मण नहींहोसकते कईशूद्रदूसरे देशमेंजायब्राह्मण बन वेदपढ़लेतेहैं औ उत्तमब्राह्मणकी कन्यासे बिवाहकरलेते हैं अथवा वेद बिना पढ़ेभी पंचगौड़ पंचद्रविड़ आदिकों में किसी प्रकार के ब्राह्मण बन सत्कुल में बिवाह करलेते हैं इस कारण वेद पढ़नेसे भी ब्राह्मण की पहिचान नहीं होसक्ती शास्त्रकार यह कहते हैं कि आचार हीन को वेद पवित्र नहीं कर सक्ते चाहे सब अंगों सहित भली भांति हो वेद पढ़हमेरा

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. Digitized by eGangotri

ब्राह्मणों का शिल्प है आचरणही मुख्य है कई शूद्र भी संध्यो पासनआदि करते हैं दंड मृगचर्म मेखला यज्ञोपवीतआदिधार लेतेहैं उनको कोई निषेध नहीं कर सकता अभिचार आदिकर्म शूद्र भी कर सकते हैं तप सत्य आदिके प्रभाव से देवता का अनुग्रह औ मंत्रसिद्धि शूद्रोंकोभी होतीहै शाप अनुग्रहकासामर्थ्यभी तप करनेसे शूद्रोंमें होजाता है ये सब बातें ब्राह्मण औ शूद्रोंमें तुल्य हो सकती हैं संस्कार भी ब्राह्मणत्व के हेतु नहीं क्योंकि व्यास आदिकों के गर्भाधान सीमंत आदि संस्कार किसने किये थे शरीर भी सब मनुष्योंके तुल्यही है प्रत्युतम्लेक्ष चौर नास्तिक आदि शरीर से पुष्ट औ बलवान् होते हैं देह आत्माबचनसुख ऐश्वर्यरोग आज्ञा बीर्य्य आकृति इन्द्रिय व्यापार आयुष् दुर्बलता पुष्टता चंचलता स्थिरता बुद्धिबैराग्यधर्म पराक्रम रूप औषध गर्भ देहकी मलिनता उज्ज्वलता अस्थि रोम मांस त्वचा त्रिबर्गमें रुचि इत्यादि पदार्थ ब्राह्मणऔशूद्रमें तुल्यही होतेहैं इन बातोंसे शूद्र औ ब्राह्मणका भेद देवता भी नहीं कर सक्ते औ ब्राह्मण चन्द्रकिरणों के समान श्वेतवर्ण नहीं हैं क्षत्रिय टेसू के फूल की भांति रक्त वर्ण नहींवैश्य हरिताल से पीले नहीं औ शूद्र कोयला से कालेनहींहोते कि सब को अलग २ पहिचान लेवैं चलना फिरना बैठना बोलनासोना सुख दुःख सबको समान है फिर मनुष्य चार प्रकारके क्योंकर भये एक पिताके चार पुत्रहोंवे एकजातिकेही होतेहैंइसीप्रकार इस जगत् का पिता एक परमेश्वर है फिर उसकी संतान में क्योंकर जाति भेद होसकताहै जैसे एक वृक्षके फल रूपस्वाद आदि करके तुल्य होतेहैं इसी बिधि परमेश्वर रूपवृक्षसे उत्प भये मनुष्य रूप फल सब समान हैं कौशिक काश्यप गौत [illegible] वशिष्ठ आत्रेय कौत्स अंगिरा गर्ग [illegible]

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कात्यायन भार्गव भारद्वाजआदि गोत्रभीब्राह्मणत्वका हेतुनहीं क्योंकि ये गोत्र और भी वर्णोंमें होतेहैं जो शरीर को ब्राह्मण कहो तो पहिले यह कहो कि कोई एक अंग ब्राह्मण है अथवा सम्पूर्ण शरीर यदि एक अंगको ब्राह्मण मानो तो वह अंगकट जानेसे ब्राह्मणत्व जाता रहैगा औ यदि सम्पूर्ण शरीर को ब्राह्मण ठहराओ तो मरनेके अनन्तर उस शरीरका जो दाहकरैगा वह ब्रह्महत्या का भागी होगा जो कहो कि ब्राह्मणकी कन्या के साथ जो बिवाह करै वह ब्राह्मण होता है तो वही ब्राह्मण जब क्षत्रियकी कन्या से बिवाहकरैगा तब क्षत्रियहोजायगा क्योंकि ब्राह्मणको चारोंवर्णोंकी कन्यासे बिवाहकरना लिखाहै इसलिये जातिदेह कर्म्म बेदाध्ययन आदि कोई भी ब्राह्मणत्व के हेतु नहीं होसक्ते ॥

अरतीसवां अध्याय॥

ब्रह्माजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो रूपऐश्वर्य बिद्या औ जाति काअभिमान वृथाहै क्योंकि यह जीव बनस्पति शंखचींटीभ्रमर हाथी आदि अनेक योनियोंमें जाय नटकी भांतिनाना प्रकारके देह धारताहै फिर जातिका अभिमान कहांरहा इस लियेबुद्धिमान् मनुष्य कभी जातिका गर्व न करै क्योंकि जाति स्थिर नहीं रहती जो कहै कि संस्कारोंसे ब्राह्मणहोताहै तोगर्भाधान पुंसवन सीमंत जातकर्म अन्नप्राशन यज्ञोपवीतवेदाध्ययन समावर्तनबिवाहआदिसंस्कार जिनके होते हैं उनका कुलतेज अथवा आयुष्यनहींबढ़जाताऔसंस्कारहीनअल्पायुष्यनहींहोते सुखदुःखको दोनो तुल्यहीभोगते हैं उत्तम संस्कार जिनके हुयेहोंवेदुराचरणकरकेपतितहोजातेहैं औनरकमेंपड़तेहैं औ संस्कारहीनउत्तम वेदयह चलन से भले कहातेहैं औ स्वर्गपाते हैं संस्कारयुक्तपुरुषभी सक्ते चा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

द्यूत वेश्या संग आदि कुकर्म्मों में आसक्त होजाते हैं और संस्कारहीन जप तप दान आदि सत्कर्म करते भी देखे हैं व्यास आदि मुनीश्वर संस्कारहीन भी होकर उत्तम आचरण से सब ब्राह्मणों में श्रेष्ठ औ जगत्पूज्य ठहरे हैं इससे संस्कार भी ब्राह्मणत्व का निमित्त नहीं बन सक्ते जो कहो कि जन्मसे ब्राह्मण होताहै तो देखो कि व्यासजी कैवर्त्तीके गर्भ से पराशरमुनि चण्डाली के पेट से शुकदेव शुकी के उदर से कणाद उलूकी से ऋष्य शृंग मृगीसे बशिष्ठ वेश्यासे मन्दपालमुनि लाविका अर्त्थात् लवा नाम पक्षिकी स्त्रीसे मांडव्य मंडूकीके गर्भ से उत्पन्न भये इस प्रकार और भी हजारों अधम योनि से जन्मे औ उत्तम ब्राह्मण गिने गये ये सब संस्कारहीनहैं औ जन्म भी उत्तमनहीं परंतु प्रबल तप करके सबब्राह्मण भये संस्कार होय औ विद्या तप आदि भी होय तो वह उत्तमोत्तमब्राह्मण होजाता है औ सब संस्कारों से संस्कृत होकर भी महापातक करने से ब्राह्मणपना खो बैठताहै इसलिये ब्राह्मणत्व नियतनहीं सांकेतिकहै अर्त्थात् ब्राह्मणत्व एक संकेत है॥

उन्तालीसवां अध्याय॥

ब्रह्माजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो वेद वेत्ता पुरुषोंसे यहभी पूछना चाहिये कि शुक्र शोणित से उत्पन्न बिष्टासे उत्पन्न हुवे कीट के तुल्य यह अति मलीन देह क्योंकर शुद्ध होतीहै मनमें तो दुष्टता भरी रहै औ बाहिर से सब संस्कार होंय कई पुरुष वैदिक संस्कारों से संस्कृत आचरण में शूद्रों से भी अधिक मलीन होजाते हैं क्रूर कर्म करनेहारा ब्रह्मघ्न गुरुदारगामी चोर गोघ्नमद्यप परस्त्रीगामी मिथ्याबादी मदोन्मत्त नास्तिकवेदनिंदक मायावान कलिआदिमें आसक्तअतिदोषोंकरकेयुक्तनिषिद्ध

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

आचरण का सेवन करनेहारा धूर्त शठ पापी सर्ब भक्षी सर्व्व विक्रयी ऐसे जो ब्राह्मण होंय उनके चाहै सब संस्कार भयेहों औ वे सब वेद वेदांग पढ़ेहों परन्तु कभी उनको निष्कृतिनहों होती जो इष्ट अनिष्ट ब्राह्मण को होते हैं वेही शूद्रको भी होते हैंइसलिये वेदपठनअग्निहोत्र यज्ञमेंपशुवधकरनाइत्यादिकोई कर्मभी ब्राह्मणत्व के हेतु नहीं वैधव्य वियोग मरण आदिसब को तुल्य होतेहैं बातपित्त कफ लोभधनकी तृष्णा सबकोहोती है दयाहीन हिंसक परमदांभिक कपटी लोभी पिशुन अतिदुष्ट ऐसे पुरुष वेदपढ़के संसारको ठगते हैं औ वेद विक्रयकरअपना पोषण करतेहैं अनेकप्रकारके छल छिद्रकर प्रजाकीहिंसा करते हैं केवल अपना सांसारिक सुख साधते हैं ऐसे ब्राह्मण शूद्र से भी अधम होतेहैं इसलिये जाति वृथाहै सकामा शूद्रसे ब्राह्मण संग करके गर्भ स्थापन कर देता है औ ब्राह्मणी कोशूद्रके संग से गर्भ होजाता है फिर जातिभेद कहां ठहरा जातिभेदतो गौ ऊष्ट्र घोड़ा हाथी आदि पशुओं में है जो अपनी जाति की स्त्री बिना दूसरी जाति की स्त्रीसे संग नहीं करते औ न दूसरीजाति में गर्भ रख सकते हैं पशु जातिकी स्त्री से मनुष्य संगकरै तो सुख नहीं होता औ न गर्भ रहता है इसी प्रकार मनुष्य स्त्री पशुसे मैथुन करै तो न गर्भ धारै औ न उसके आनंदहोय परंतु मनुष्य जाति में किसी वर्ण के साथ संग करै तबहीं आनंद मिलै औ गर्भधारै इससे जाति भेद नहीं बन सक्ता यह जो मनुष्यों में जाति कल्पना है सो केवल व्यवहार के लिये संकेत है वास्तव में सत्य नहीं है॥

चालीसवां अध्याय॥

ब्रह्माजी कहते हैं कि हे मुनीश्वरो जो ग्राह्य अग्राह्य

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

तत्त्वको जानैं अन्याय औ कुमार्गका त्यागकरैं जितेन्द्रिय सत्यवादी औ सदाचार हों नियम आचार औ सद्वृत्त में स्थिर रहैं सबकेहित में तत्परहों भलीभांति वेदवेदांग औ शास्त्र जानते हों समाधि में स्थित हों क्रोधहीन हों मत्सर मद शोक आदि करके बर्जित हों वेदके पठन पाठनमें आसक्त हों बिशेष करके किसीकासंग न करैं एकान्त औ पवित्र स्थानमें रहैं सुख दुःख में समानहों धर्मनिष्ठहों पाप से डरैं निर्ममनिरहंकार दानशूर ब्रह्मवेत्ता शान्तस्वभाव औ तपस्वीहों वे ब्राह्मण कहाते हैं इस प्रकार के ब्राह्मण जगत्केहितकेलिये उत्पन्नकियेगयेहैं ब्रह्मके भक्तहोनेसे ब्राह्मण क्षत से रक्षा करने करके क्षत्रिय वार्त्ताका सेवन करने से वैश्य औ श्रुतिसे द्रुत होने करके शूद्र कहाये क्षमा दम शम दान सत्य शौच धृति दया मृदुता ऋजुता सन्तोष तप निरहंकारता अक्रोधता अनसूयता अशठता अस्तेय अमात्सर्य्य अपैशुन्य धर्मज्ञान ब्रह्मचर्य्य ध्यान आस्तिक्य वैराग्य पापभीरुत्व अद्वेष गुरु शुश्रूषा इत्यादिगुण जिनमें देखा उनको सृष्टि के समय ब्राह्मण ठहराया जो बलवान् औ दूसरे की रक्षा करनेमें समर्थदेखे वे मनुष्य क्षत्रिय कहाये जो वृत्ति औ धन के उपार्जन करने में तत्पर भये उनकी संज्ञा वैश्य भई औ जो निस्तेज औ अल्पबल पुरुषशोचते औ द्रवते हुये इन तीनों कीसेवा में तत्पर भये वे शूद्र भये इसभांति अपने२ स्वभाव के अनुसार वर्णोंकी कल्पनाभई शम तप दम शौच क्षान्ति आर्जव ज्ञान विज्ञान औ आस्तिक्य ये ब्राह्मणों के स्वाभाविक कर्म्म हैंशौर्य्य तेज धृतिदाक्ष्ययुद्धमेंअपलायन अर्थात्पीछेन फिरना दान औ ईश्वरभाव ये क्षत्रियोंका स्वाभाविक कर्म्म है जिसके ज्ञानरूपशिखा औ तपोरूपसूत्र अर्थात् यज्ञोपवीत हो उसको स्वायम्भुव मनु ने ब्राह्मण कहा है चाहे जिसवर्ण मेंउत्पन्न हो

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

औ पाप कर्मोंसे निवृत्तहोकर उत्तम आचरण रक्खै वहब्राह्मण के समान हीं है शील करकेयुक्त शूद्र ब्राह्मण से अधिकहोजाता औ आचार से रहित ब्राह्मण शूद्र से भी निकृष्ट माना जाता है जो अपने घर में मद्य न बनावै औ बाजार आदि में बेचै भी नहीं वह शूद्र उत्तम होता है पहिले तो जीवमात्र एकजाति हैं फिर मनुष्य आदि जाति अलग २ हैं उनमें स्त्री पुरुष आदि भेदहैं उनमें भी बालक तरुण वृद्ध ये जाति हैं इसकेबिना और जाति की कल्पना संकेत मात्र है हे मुनीश्वरो यह हमने तर्क से पूर्ण वचन जाति के बिषय में कहे परन्तु जिस प्रकार दैव औ पुरुष मिलकर कार्य्यसिद्ध होते हैं इसप्रकार उत्तम जाति औ सत्कर्म्मका योग होने से पूर्ण सिद्धि होती है इतनी कथा सुनाय सुमन्तु मुनि बोले कि हे राजा इस प्रकार ब्रह्मा जी ने ऋषियों को जाति के बिषय में सतर्क बाक्य कहे हैं इसलिये कार्त्तिकेय के जन्म पर आप भी कुछ बिस्मय मत करो क्योंकि देवताओं की लीला दुर्ज्ञेय है यह प्रसङ्ग से हमने जाति का निर्णय कहा है॥

इकतालीसवां अध्याय॥

सुमन्तु मुनि कहते हैं कि हे राजा शतानीक भाद्रपद मासकी षष्ठी बहुतउत्तम तिथिहै औ कार्त्तिकेय को अतिप्रिय है उसदिनकियाहुआ स्नान दान आदि कर्म अक्षयहोताहै दक्षिण दिशामेंप्रसिद्धस्वामिकार्त्तिकका उसतिथिको जो दर्शनकरै वह ब्रह्महत्यादि पापों से छुटै जो भक्ति से कार्तिकेय का पूजनकरै वह मनो बांछित फलपावै औ अन्तमें रुद्रलोकमेंनिवासकरै जो पत्थर ईंटकाष्ठ आदि करके श्रद्धासे कार्त्तिकेयका मंदिर बनावै वह सुबर्ण के बिमानमें बैठ उनकेही लोक को जावै जो मन्दिर

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

परध्वजाचढ़ावैमन्दिरमें मार्जन आदिकरै वह रुद्रलोकपावैचंदन अगर कपूर आदि से जो कार्त्तिकेयका पूजनकरै वह हाथीघोड़े पालकी आदि बाहनोंकास्वामीहोयराजाओंको तो अवश्यकार्त्तिकेयका आराधन करनाचाहिये जो राजाकार्त्तिकेयका पूजनकर युद्धमेंजाय वह अवश्य शत्रुओं को जीतै इसलिये हे राजा सदा भक्ति से कार्त्तिकेय का आराधन करनाचाहिये जो कार्त्तिकेय का पूजनकर भक्ति से अनेक प्रकार की स्तुतिपढ़ै वह सब पापों से मुक्तहो शिवलोककोजाय षष्ठी के दिन तेल न खावै जो षष्ठी के दिन व्रत कर कार्त्तिकेय का पूजन कर रात्रिको भोजनकरै वह कार्त्तिकेय के लोकमेंनिवासकरै जो पुरुषदक्षिणदेश में तीनबार जाय कार्त्तिकेय का दर्शनकरै औ भक्तिसे उनका पूजनकरै वह शिवलोक में निवासकरै॥

बयालीसवां अध्याय॥

सुमन्तु मुनि कहते हैं कि हे राजा हम अब सप्तमी कल्पका वर्णनकरतेहैं सप्तमीकेदिन सूर्य्यभगवान् ने जन्मलियाहै अण्डे सहित उत्पन्नभये औ अंडेमेंहीरहे दक्षने अपनी अति रूपवती कन्या इनको बिवाही जिसमें यमुना औ यम उत्पन्न भये बहुत काल अंडेमेंरहनेसे मार्त्तण्डकहाये दक्षकीआज्ञासे बिश्वकर्मा ने इनके शरीरका संस्कारकिया सूर्य्यभगवान् की भार्य्या दक्षकी पुत्री अतिब्याकुलहो चिन्तना करनेलगी कि इनके अति प्रचंड तेजसे मेरीदृष्टि नहीं ठहरती कि इनके अंग देखपड़ैं औ सुबर्ण वर्ण अतिसुन्दरमेराशरीर इनकेतेजसेदग्धहो श्यामवर्ण होगया इससेमेरानिर्वाहहोना यहांकठिनहै यहबिचारकरअपनी छाया सेएकस्त्रीउत्पन्नकरी और उससेकहा कितू सूर्य्यभगवान्केसमीप मेरेबदले रहना परन्तु यह भेद न खोलना इतना समझाय उस

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

छायाको वहांरख अपनेसन्तान यम औ यमुनाको वहां ही छोड़ कर उत्तरकुरू में जाय घोड़ीका रूपधार मृगोंके साथ विचरने लगी औ बहुतवर्षतक वहांहीरही औ सूर्य्यभगवान ने भी छाया कोही अपनीभार्य्या समुझ रक्खाथा कुछकालके अनन्तर शनैश्चर औ तपतीनामकन्या छायासे उत्पन्नभयो तबछाया अपने सन्तानपर अधिकस्नेह रखनेलगी औ यमुना तथा यमसे स्नेह न करती यमुना औ तपतीका एकदिनबिवादभया औ परस्पर शाप से दोनों नदी होगईं तब छाया ने यमुना के भाई यमको ताड़नकिया यमने क्रोधकर छायाको मारनेकेलिये लात उटाई तब क्रोधकरछाया ने शापदिया कि रे दुष्टयहजो चरणतैंनेमेरे ऊपरउठाया यहगलजावै जबतक सूर्य्यचन्द्ररहैं तबतकमलिन रहै औ जो इस चरण को भूमि पर रक्खै तो कृमि खाजावें यह दोनों का बिवादहोरहा था इसी अवसरमें सूर्य्य भगवान् भी वहां आये तब यम ने कहा कि हे पिता यह नित्य हमको क्लेश देतीहै औ समानदृष्टिनहींरखती यहसुन सूर्य्यभगवान् ने क्रोध करकहा कि तुम को यहउचित नहीं कि अपनी सन्तान में एक से प्रेमकरो औ दूसरे से द्वेष रक्खो जितने सन्तान हों सबको तुल्य समझना चाहिये यह सुन छाया तो न बोली और यम ने कहा कि हे पिता यह दुष्टामेरी माता नहींहै उसकीछायाहै इसीसे उसने मुझे शाप दिया है यह कहकर सब वृत्तान्त सुना दिया तब सूर्य्यभगवान् ने कहा कि मांस औ रुधिरलेकरकृमि भूलोककोजाय औ हे पुत्र तेराचरण अच्छाहोजाय औ ब्रह्मा जी की आज्ञा से तू लोक पाल होजाऔ यमुना का जल गङ्गाजल केसमानहोय औ तपतीकाजल नर्मदाजल के तुल्यमानाजायेगा बिन्ध्य पर्वत के दक्षिणभाग में पुष्पजा नदी के साथ तपती का सङ्गमहोगा औरगङ्गाकेसाथ यमुनाका सङ्गम होगा तब यमुन

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

भी गङ्गा रूप होजायगी दोनों नदी सबपाप हरनेहारी होंगी औ यह छाया सबके देहोंमें स्थितहोगी यह व्यवस्थाकरदक्ष-प्रजापतिके समीपआये औ अपना सब समाचारकहा तब दक्ष ने कहा किआपके अतिप्रचण्ड तेजसेव्याकुलहो तुम्हारीभार्या छोड़कर चलीगई अब विश्वकर्म्मासेतुमअपना रूप सुधरवालो यहकह विश्वकर्म्माको बुलायकहा किइनका रूपप्रकाशितकरो विश्वकर्म्मा बोले कि महाराज जो शस्त्रकी पीड़ा ये सहसकेंतो हम इनको खरादपर चढ़ाय ठीककरदेवें यहसुन सूर्य्यभगवान् ने कहा कि हम पीड़ा सहैंगे परन्तु हमारा रूप उत्तम होजाय यह उनकीसम्मतिपाय विश्वकर्म्मा अपनेशस्त्रोंसेसूर्य्यभगवान् के अंग छीलने लगे तब अति पीड़ा से सूर्य्यभगवान्को बार २ मूर्छा होती थी इससे सब अंग तो छांट कर ठीक कर दिये परन्तु पैरोंकी अंगुली रहगईं सूर्य्यभगवान्नेकहा कि हेविश्व-कर्म्मा तुम अपना कामकरचुके परंतुहम पीड़ासे बहुत व्याकुल हैं तब विश्वकर्म्माने कहा किरक्त चंदन औ करवीर के पुष्पोंका आप सम्पूर्ण शरीरमें लेपकरैं जिससे अभी यह व्यथा शांत हो जाय सूर्य्य भगवान् ने विश्वकर्म्मा के कहनेके अनुसार किया औ वेदना मिटगई उसदिनसे रक्तचन्दन औ कनेरक पुष्प सूर्य्य भगवान्को अति प्रिय भये औरकहा किहमारेपूजनमेंऔरकोई पदार्त्थ देवे चाहे न देवे परन्तु जोपुरुष रक्तचन्दन औ करबीर के पुष्प हमारे अर्प्पणकरै वहमानों प्राणदेताहै इसलियेयेदोनों पदार्त्थ अवश्य हमारे अर्प्पणकरै सूर्य्य भगवान्के देहमें जोतेज उतरा उसकरके दैत्योंके नाश करनेहारा बज्र रचा सूर्य्यभगवान् नेभी उत्तम रूप पाय उत्तर कुरूमें जाय बड़ी उत्कंठा से अपनी भार्याको ढूंढ़ा औ देखा कि मृगोंके साथ अश्वाका रूप धारे चर रहीहै तब सूर्य भगवान् नेभी अश्वका रूपधार उससे सङ्ग किया

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

तब उसघोड़ीकी नासिकासे दो बालक उत्पन्नभये वे अश्विनी-कुमार कहाये औ देवताओंके वैद्य भये तपती शनि औ सावर्णि ये तीन सन्तान छायाके औ यमुना तथा यम संज्ञाके भये सप्तमी केहीदिन दिव्यरूप औ भार्या सूर्य भगवान्ने पाये इससेसप्तमी तिथि उनकी अति प्रियाभई सप्तमीके दिन जो पुरुष उपवास करै अथवा रात्रिके समय भोजन करै औ अनेक प्रकार के भक्ष्य भोज्य औ उत्तम २ सिद्धकियेहुये शाक ब्राह्मणों को देवे औजन्म भर इस व्रतको करै वह अनेक प्रकारके सुख भोगकरै औ सर्वत्र जयपावै औ अन्तमें उत्तम बिमान पर चढ़ सूर्यलोकमें जाय कई मन्वन्तर पर्यंत वहां निवास कर पृथ्वी पर चक्रवर्त्ती राजा होय औ बहुत कालनिष्कंटक राज्यकरै राजा कुरुनेयह सप्तमी का व्रतबहुतकाल पर्यंतकरा औ केवल शाकही भोजनकियातबकुरु-क्षेत्रनाम पुण्यक्षेत्र पाया सप्तमी नवमी षष्ठी तृतीया औ पंचिमी येतिथि बहुत उत्तमहैं औ स्त्री पुरुषोंको मनबांछित फल देनेहारी हैं माघमें सप्तमी आश्विनमें नवमी भाद्रपदमें षष्ठी बैशाखमें तृतीया औ भाद्रपदमेंही पंचमी येतिथि इन महीनों में बिशेषहैं कार्तिकशुक्ल सप्तमी से इसव्रतको ग्रहणकरै उत्तम शाकको सिद्ध कर ब्राह्मणकोदेवै औ आपभी रात्रिके समयशाकही भोजनकरै इस प्रकार चारमास व्रतकरके प्रथम पारणकरै पंचगव्य से सूर्यभगवान् को स्नानकरावै औ आपभी पंचगव्य का प्राशन करै पीछे केसर का चंदन अगस्त्यकेपुष्प अपराजित नाम धूप औ पायस का नैवेद्य सूर्यनारायण के समर्पणकरै औ ब्राह्मणों कोभी पायस भोजन करावे दूसरे पारणमें कुशाके जलसे स्नान करावै आप गोबर प्राशनकरै औ श्वेत चंदन सुगंध पुष्पअगरु का धूप औ गुड़के अपूप नैवेद्य अर्पणकरै औ कर्ष समाप्त होने पर तीसरा पारण बर्षके अंतमें करै सर्षपका उबटन लगाय

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

स्नान करावै औ आपभी उसको प्राशन करै फिररक्त चन्दनकरवीरके पुष्प गूगलकाधूप औ अनेकप्रकारके भक्ष्य भोज्य सहित दहीभात नैवेद्य चढ़ावै औ यही ब्राह्मणों को भोजन करावै औ सूर्य्य नारायणकेआगे ब्राह्मणसे पुराणश्रवणकरै अथवा आपही पुराण बांचै औ अन्तमें ब्राह्मण भोजन कराय पौराणिकको वस्त्र भूषण दक्षिणा आदि देकर प्रसन्नकरै पौराणिक के प्रसन्न होनेसे सूर्य्यनारायण प्रसन्न होतेहैं रक्तचन्दन करवीर के पुष्प गूगलकाधूप मोदकपायस का नैवेद्य घृत ताम्रपात्र पुराणकथा औ पौराणिक ये सब सूर्य्यभगवान्को अतिप्रियहैं हेराजाशतानीक यह सप्तमीव्रत सूर्य्य भगवान्को अति प्रियहै इस व्रतके करनेहारा पुरुष कभी लक्ष्मीसे वियुक्तनहीं होता ॥

तैंतालीसवां अध्याय ॥

राजा शतानीक कहते हैं कि महाराज सूर्य्य भगवान् का माहात्म्य सुनते २ मुझे तृप्ति नहीं होती इस लिये आप विस्तारसे सप्तमी कल्पका वर्णन करैं जिससे सूर्य्यनारायणके गुणानुवाद सुनने में आवें यहसुन सुमन्तुमुनि बोले कि हेराजा इसविषयमें श्रीकृष्ण औ उनकेपुत्र शाम्बसे जो परस्पर सम्बाद हुआथा वह हमवर्णनकरतेहैं एकसमय शाम्बनेअपने पिता श्रीकृष्णभगवान्से पूछा कि महाराज संसारमें जन्मलेकर मनुष्य सुखी क्यों कर रहसक्ताहै अपने मनोवांछित फल किसकर्म्मसे पाताहै औ अन्त में बहुतकाल स्वर्ग्गकेसुख भोग मुक्तिकाभागी किस विधिसे होताहै यह आप वर्णन करैं इस संसार में अनेक प्रकारकी व्याधि देखमेरा चित्त अति उदास होरहाहै क्षणमात्र जीनेकी भी इच्छा नहींहोती इसलिये आपऐसा उपाय उपदेश करैं कि जितने दिन संसारमें रहैं उतने दिन आधि व्याधि से

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पीड़ित न होंय औ फिर इस संसारमें जन्म न होय यह पुत्रकी प्रार्थनासुन श्रीकृष्णभगवान् बोले कि हेपुत्र देवताके आराधन से यह बात प्राप्त हो सक्तीहै देवता अनुमान औ आगम से सिद्धहैं विशिष्ट देवताका विशिष्टपुरुष आराधनकरै तो विशिष्ट ही फलपावै यहसुन शाम्बने कहाकि महाराज पहिलेदेवताओं के होनेमेंहीं सन्देह है कई पुरुष कहते हैं कि देवताहैं औ कई कहते हैं कि नहीं फिर विशिष्ट देवता क्योंकर जानै यह पुत्रका सन्देहसुनश्रीकृष्णभगवान्ने कहाकि हेपुत्र शास्त्रसे अनुमानसे औप्रत्यक्षसे देवताओंकाहोनासिद्धहोताहै यहसुन शाम्बने कहा कि जो प्रत्यक्ष भी देवता सिद्ध होसक्ते हों तो उनके साधन के लियेअनुमान औ शास्त्रकी कुछ अपेक्षा नहींतब श्रीकृष्णने कहा कि हे पुत्र सब देवता प्रत्यक्ष नहींहोते शास्त्र औ अनुमानसेही हज़ारोंदेवताओंकाहोनासिद्धहोताहैशाम्बनेकहाकिमहाराज जो देवता प्रत्यक्षहो प्रथमआपउसीकाबर्णनकरैं शास्त्रऔअनुमानसे सिद्धदेवताओंका बर्णनपीछेकरना तब श्रीकृष्णकहनेलगेकिहे पुत्रप्रत्यक्षदेवता तो सूर्य्यनारायणहैं जिनसे बढ़करकोईदूसरा देवता नहीं सबजगत् इनसेउत्पन्नभया औ इनहींमें लीनहोगा त्रुटि आदि कालकी संख्या इनसेहै ग्रहनक्षत्र योगकरण राशि आदित्य वसु रुद्र वायु अग्नि अश्विनीकुमार इन्द्र ब्रह्मा दिशा भूभुवःस्वः आदिसब लोक पर्ब्बत नदी समुद्र नाग औ सम्पूर्ण भूत ग्रामकी उत्पत्ति के हेतु सूर्य्य नारायणहैं सबजगत् इनकी इच्छासे उत्पन्न भयाहैं इनकीही इच्छासे स्थितहै औ अपने २ व्यवहार में सब प्रवृत्तहैं सूर्य्य भगवान्के उदय के साथ जगत् का उदय औ अस्तके साथअस्त होताहै इनसे अधिक न कोई देवता हुवा न कोई होगा सब वेदों में औ इतिहास पुराणआदि में इनको परमात्मा अन्तरात्मा आदि शब्दोंसे प्रतिपादन किया

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

है इनके सम्पूर्ण गुण औ प्रभाव सौ बर्ष में भी वर्णन नहीं करसक्ते सब के स्वामी सब के सिरजने हारे औ संहार कर्त्ता ये ही हैं मण्डलरच सायंकाल औ प्रातःकाल जो पुरुष इनका पूजनकर उपस्थानकरै वह सब सिद्धिपाता है फिर जो प्रत्यक्ष सूर्य्यनारायण का पूजनकरै उसको कौन पदार्थ दुर्लभ है जो इन का मंत्रजपै हवन करै पूजन करै वह सब कामना पाता है औ अन्तमें इनके लोकमें निवास करताहै हे पुत्र जो तुमसंसार में सुख चाहतेहो औ भुक्ति मुक्तिकी इच्छारखतेहोतो विधिपूर्वक सूर्य्यनारायण का आराधनकरो आध्यात्मिक आधिभौतिक औ आधिदैविकदुःखतुमकोकभी न होंगे जो सूर्य्यभगवान्केशरणमें प्राप्त हैं उनको किसी प्रकार का भय नहीं होता हमने सूर्य्य भगवान्का बहुतकाल आराधनकिया तब यहदिव्य ज्ञानपाया है इससेबढ़कर मनुष्योंके लिये कोईहित उपाय नहींहै हे शांब हमने यह बहुत संक्षेप से कहा है॥

चवालीसवां अध्याय॥

श्रीकृष्ण कहते हैं कि हे शांब अब हम सूर्य्यनारायण के पूजनका बिधान कहतेहैं जिसके करनेसे सम्पूर्णपाप औ बिघ्न निवृत्तहोतेहैं प्रभातउठ शौचआदि से निवृत्तहो नदी आदि के तटपर जाय आचमनकर शुद्धमृत्तिका से शरीरकोलीप सूर्य्योदय समय कालस्नान करै फिर आचमन कर शुद्ध बस्त्र पहिनै सूर्य्यभगवान्को अर्घ्यदेकर सप्ताक्षरमंत्रकरके पूरककुम्भक औ रेचक नाम प्राणायाम कर बायवी आग्नेयी माहेयी औ बारुणी धारणाकरके भूतशुद्धिकी रीतिसे शरीरकाशोषण दहन स्तम्भन औ प्लावन करके नबीनशरीर उत्पन्नकरै औ स्थूल सूक्ष्म शरीर तथा इन्द्रियोंको अपने२ स्थानमें स्थापनकरै खःस्वाहा हृदयाय

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नमः खौ स्वाहा शिरसे स्वाहा उल्का स्वाहा शिखायैवषट् य स्वाहा कवचायहुं स्वाहा स्वाहा नेत्रत्रयाय वौ षट् खखोल्काय स्वाहा अस्त्रायफट् इनमंत्रों से न्यास कर पूजा की सामिग्री को मूलमंत्र से प्रोक्षणकरै फिर सब उपचारों से सूर्य्यभगवान् का पूजन करै दिन के समय मूर्त्ति में औ रात्रि को अग्नि में सूर्य्य नारायणका पूजनकरै प्रभात के समय पूर्वाभिमुख सायङ्काल को पश्चिमाभि मुख औ रात्रि के समय उत्तराभि मुख होकर पूजन करै ओं खखोल्काय स्वाहा इस सप्ताक्षर मूलमंत्र करके सूर्य्यमण्डल के बीच षट्दल कमलका ध्यानकर उसके मध्य में सूर्य्यनारायण की मूर्त्ति ध्यावै फिर रक्त चन्दन करबीर आदि रक्तपुष्प धूप दीप अनेकप्रकार के नैवेद्य वलि बस्त्र भूषण आदि उपचारों करके पूजनकरै अथवा रक्तचन्दन से ताम्रपात्रनें षट् दल कमललिखकर मध्यमें सब उपचारों करके सूर्य्यनारायण का पूजन कर छहो दलों में षड़ङ्ग पूजन उत्तर आदि आठ दिशाओं में चन्द्र आदि आठग्रहों का अर्चन औ दिक्पाल तथा उनके अस्त्रों का अपनी२ दिशा में पूजन करै आदि में प्रणव लगाय चतुर्थी नमोन्त नाममंत्रोंसे सबका पूजनपरै फिर व्यो-ममुद्रा नमस्कारमुद्रा पद्ममुद्रा महाश्वेतामुद्रा औ अस्त्रमुद्रा दिखावै ये सब मुद्रा पूजा जप ध्यान अर्घ्य आदि के अनन्तर दिखानी चाहिये इस प्रकार एक वर्ष पर्यन्त भक्ति से सूर्य्य नारायण का आराधन करै तो भोग औ मोक्ष पावै इस विधि पूजन करके रोगी रोग से छूटै धन हीन धन पुत्र हीन पुत्र औ राज्य हीन राज्यपावै औ चिरकाल जीवै बुद्धि निर्मल हो-जाय उत्तमकुलमें उत्पन्न अति रूपवतीकन्या से बिवाहहोय औ इस विधि के करने से कन्या को बर मिलै औ कुरूपा नारी भी सौभाग्य पावै औ विद्या की इच्छा होय तो विद्या मिलै यह

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सूर्य्य नारायणने अपने मुखसे कहाहै इस पूजनके करनेसे धन धान्य संतान पशु आदि की नित्य बढ़ती होती है औ अन्त में सद्गति मिलतीहै ॥

पैंतालीसवां अध्याय ॥

श्रीकृष्ण कहतेहैं कि हे शाम्बनित्यार्चनका विधान औ फल तो हमने बर्णन किया अब नैमित्तिक यज्ञोंकी विधि कहते हैं सप्तमी शुक्ल पञ्चमी ग्रहण अथवा संक्रांति के पहिले दिन एक बार हविष्य अन्न भोजन कर सायंकाल के समय आचमन कर अरुणको प्रणाम करै औ सब इन्द्रियोंको बशमें कर कुशकी शय्यापर सोवै दूसरे दिन प्रातःकाल उठ विधि से स्नान कर सूर्य्य भगवान्का पूजनकरै औसूर्य्याग्नि में हवनकर तर्पणकरै वेदीबनाय अस्त्रमन्त्रसे उल्लेखन औगायत्रीमन्त्रकरके प्रोक्षणकर पूर्व्वाग्रऔ उत्तराग्रकुशाबिछाकर सबपात्रोंकाशोधनकरैदोकुशा का प्रादेश मात्र एकपवित्रबनाय उसकरके सबवस्तु प्रोक्षणकरै घृतको अग्निपर रखकर गलाय उत्तरकीओर पात्रमेंरक्खै फिर जलताहुआ उल्मुकलेकर पर्य्यग्निकरण औ घृतका उत्पवन करै फिरअग्निमें सूर्य्यनारायणका अर्चनकर मूलमन्त्रसेहवनकरै दहिने हाथमें स्रुवालेवैऔ वामहस्तकरकेभूमि में लिखेहुयेयंत्रको स्पर्श करेरहै हृदय मंत्रसे सब क्रियाकरै फिर पूर्णाहुति देकर तर्पण करै औ ब्राह्मणोंको उत्तम भोजन करावै औ यथा शक्ति दक्षिणादेवै तो मनोबांछित फल पावै माघमें वरुण नामकसूर्य का पूजन करै फाल्गुणमें सूर्य्य चैत्र में श्वेतांशु वैशाखमें धाता ज्येष्ठ में इन्द्र आषाढ़ में रवि श्रावण में भग भाद्रपद में यम आश्विन में पर्जन्य कार्त्तिकमें त्वष्टा मार्गशीर्ष में मित्र औ पोष में विष्णुनामसूर्य्यका अर्चनकरै इसप्रकार एकदिन पूजनकरने

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

से बर्षभर करी पूजा का फलप्राप्त होताहै प्रथम रीति से एक बर्ष व्रत करके रत्नों से जटित सुबर्ण का रथबनाय उसमें सात घोड़ेलगावै रथके मध्य में सुबर्ण कमल के ऊपर रत्नोंके भूषणों से भूषित सुबर्णकी सूर्य्यनारायण की मूर्त्ति स्थापन करै रथ के आगे सारथिबैठावै फिर बारह ब्राह्मण बारह महीनों के सूर्य्यों की भावनासे औ तेरहवें मुख्य आचार्य्यको साक्षात् सूर्य्यनारायण समझपूजनकरै फिर वहरथ छत्र गो भूमि आदि आचार्य्य को देवै औ रत्नों के भूषण बस्त्र दक्षिणा औ एक एक घोड़ा उन बारह ब्राह्मणों को देवै औ हाथ जोड़ यह प्रार्थना करै कि इसके अनन्तर व्रत न करने से मुझे दोष न होय ब्राह्मणों सहित आचार्य्य भी यहआशीर्बाददेवै कि सूर्य्य भगवान् तुमपर प्रसन्न होंय औ जिस मनोरथ के पूर्णहोने के लिये तुमने यह व्रतकिया वह तुम्हारासिद्धिहोय औ अब व्रत न करनेसेभीदोष न होगा इसप्रकार आशीर्वादपाय दीन अन्धे अनाथोंको भोजन कराय औ यथाशक्ति ब्राह्मण भोजन कराय दक्षिणा देकर व्रत समाप्तकरै जो पुरुष इसव्रतको एकबर्षकरै वह सौयोजन लम्बे चोड़े देशकाराजाहोय औ सौ बर्षसे भी अधिक निष्कण्टकराज्य करै औ स्त्री इसव्रत के करने से रानीहोय जो धनहीन व्रतके अन्त में पूर्बोक्त विधिसे तांबेका रथ ब्राह्मणको देवै वह अस्सी योजन लम्बा चौड़ा राज्य पावै पिष्ट अर्थात् आटे का रथ बनाकर देवै तो साठ योजन विस्तार का राज्य मिलै इसव्रत का करनेहारा एककल्प सूर्य्यलोकमें निवासकर राजाहोताहै जो मनकरके भी सूर्य्यभगवान् का पूजन करै उसको आधि व्याधि दारिद्र नहीं स्पर्शकरते फिर जो भक्तिसे यह व्रतकरै औ मंत्रों से सूर्य्यनारायणका पूजन करै वह तो क्यों न आधि व्याधियों से मुक्तहोय हे पुत्र यहविधान सूर्य्यनारायण ने हमको अपनेमुख से उपदेश

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

किया था हमने आज तक इसको गुप्त रक्खा आज तुम से कहा है हमने इसीव्रत के प्रभावसे हज़ारों पुत्र पौत्र पाये दैत्य जीते देवता बश किये इस हमारे चक्र में सदा सूर्य्य भगवान् निवासकरतेहैं नहीं तो इसमें इतनातेज कैसेहोता औ इसकरके दैत्य किसविधि से जीतेजाते सूर्य्यनारायणका नित्य जप ध्यान पूजन आदि करने से हम जगत्पूज्य भये हे पुत्र तुम भी इस विधि से सूर्य्य नरायण का आराधन करो जिससे भांति२ के सुख प्राप्तहोंय औ इसविधानको गुप्तरक्खो जो पुरुष भक्ति से इसविधानकोश्रवणकरै वहभी पुत्र पौत्र आरोग्य औ लक्ष्मीपावै

छियालीसवां अध्याय॥

श्रीकृष्ण कहते हैं कि हे पुत्र माघ शुक्ल पंचमी को एकबार भोजनकर षष्ठीको नक्तव्रतकरै कोई पंचमीको औ कोई षष्ठीको उपबास करना कहतेहैं षष्ठीकेदिन उपबास कर सूर्य्यनारायण का अर्चनकरै रक्त चन्दन करवीर के पुष्प गुग्गुलुधूप औ पायस नैवेद्य आदिसे माघ आदि चारमहीने सूर्य्यनारायण का पूजन करै औ आत्मशुद्धीके लिये गोबरके जलसे स्नानकरै औ गोबर काप्राशनकरै औ यथाशक्तिब्राह्मण भोजन करावै ज्येष्ठ आदि चार महीनेश्वेत चन्दन श्वेतपुष्प अगरका धूप औ उत्तम नैवेद्य सूर्य्यनारायण के अर्पण करै पंचगव्य प्राशन करै औ ब्राह्मण भोजनकरावै आश्विन आदि चारमास अगस्त्यपुष्प अपराजित धूप औ गुड़केअपूप नैवेद्य औ इक्षुरस सूर्य्यभगवान्को समर्पण करै औ यथाशक्ति ब्राह्मणभोजनकरावै कुशाके जलसे स्नानकरै औ कुशोदकही प्राशनकरै व्रतकी समाप्ति में रथ का दान करै औ सूर्य्य भगवान्की प्रसन्नता के लिये रथ यात्रा करै इस रथ सप्तमी को जो उपबासकरै वह धन पुत्र कीर्त्ति विद्याआरोग्य

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

आयुष् औ उत्तमकान्ति पाताहै हे पुत्र तुमभी इस व्रतको करो जिससे तुम्हारा सब अभीष्ट सिद्धि होय इतना कह शंख चक्र गदा औ पद्म के धारनेहारे श्रीकृष्ण भगवान् अन्तर्द्धानभये औ उनकी आज्ञापाय शाम्ब भी भक्तिसे रथसप्तमीका व्रत औ सूर्य्य नारायण का आराधन करने में प्रवृत्तभये औ थोड़ेही काल में अपना मनबांछित फल पाया॥

सैंतालीसवां अध्याय॥

राजाशतानीक पूछतेहैं कि हे सुमन्तुमुनि सूर्य्यनारायण की रथयात्रा किसविधि से करनीचाहिये रथ कैसा बनावै औ यह रथयात्रा किसने प्रवृत्तकरीहै यह आप कृपाकर वर्णनकरैं यह सुन सुमन्तुमुनि कहतेभये कि हे राजा एकसमय सुमेरु पर्वतमें रुद्र ने ब्रह्माजी से पूछा कि हे ब्रह्माजी यहलोकको प्रकाशकरने हारे सूर्य्यभगवान् रथमेंबैठ किसप्रकार भ्रमणकरतेहैं यह आप वर्णनकरैं तब ब्रह्माजीने कहाकि महाराज जिसप्रकार सूर्य्यनारायण रथ में बैठ भ्रमण करतेहैं उसका हम वर्णन करतेहैं आप प्रीति से श्रवण करैं एक चक्र तीन नाभि पांच अर एक नेमि औ साठ बन्धो करके युक्त दशहज़ार योजनलम्बे चौड़े अति प्रकाशवान् सुवर्ण के रथ में विराजमान हो सूर्य्य भ्रमण करतेहैं रथके उपस्थसे ईषादण्ड तीनगुणा है अरुणवहांबैठतेहैं पवनके समान बेगवान् छन्दोरूप सातघोड़े रथमें लगेहैं सम्बत्सर के जितने अवयवहैं वहीरथ के अंगहैं तीनकाल चक्रकीतीननाभि हैं पांच ऋतुअरे औ छठाऋतुनेमिहै दक्षिण औ उत्तरये दोनोंअयनरथके दो भाग हैं मुहूर्त्तरथ का अभिषव क्षण अक्षदण्ड निमेष अनुकर्ष लव ईषादण्ड रात्रिवरूथ औ धर्म्म उसरथका ध्वजहै अर्थ औ काम धुरीकाअग्रभाग गायत्री त्रिष्टुप् जगती अनुष्टुप्पंक्तिवृहती

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

औ उष्णिक ये सातछन्द सातअश्वहैं धुरीपर चक्रघूमताहै औ वहधुरी ध्रुवमें लगीहै ऐसे रथमें बैठ सूर्य्यनारायण आकाश में भ्रमणकरते हैं एकचक्रका रथहै औ बाईंओर अश्वलगेहैं दहिने युग औ धुरीके ऋग्वेद तथा यजुर्वेद धारण किये हैं दो रश्मि अर्थात् घोड़ोंकीबाग युगमें बँधीहैं उत्तरायण में वे रश्मि कम होजातेहैं औ दक्षिणायनमें बढ़जातेहैं ध्रुवके चारोंओर यहरथ भ्रमताहै एकसौअस्सी मण्डल उत्तरायणमें औ इतने ही दक्षिणायन में रथके होते हैं देवऋषि गन्धर्व अप्सरा सर्प ग्रामणी औ राक्षस ये सूर्य्यके रथकेसाथचलतेहैं औ दो२ मासके अनन्तर इनकी बदलीहोतीहै धाता अर्यमा पुलस्त्य पुलह तुम्बरु नारद शंख बासुकि ऋतुस्थला पुंजिकस्थला रथकृत्स्न रथौजा रक्षोहेतु औ प्रहेतु ये सबचैत्र औ बैशाखमें रथकेसाथरहते हैं मित्रवरुण अत्रि वशिष्ठ तक्षक अनन्त मेनका सहजन्या हाहा हूहू रथस्वन रथचित्र पौरुषेय औ बध ये ज्येष्ठ औ आषाढ़में साथ रहते हैं इन्द्र बिवस्वान अंगिरा भृगु एलापर्ण शंखपाल प्रम्लोचा दुन्दुका भानु दर्दूर औ सर्प तथा व्याघ्र ये श्रावण भाद्रपदमें साथरहते हैं पर्जन्य पूषा भरद्वाज गौतम चित्रसेन वसुरुचि बिश्वाचो घृताची ऐरावत धनंजय सेनजित् सुसेन आप औ बात ये आश्विन कार्त्तिकमें साथरहतेहैं अंशु भग कश्यप क्रतु महापद्म कर्कोटक चित्रांगद ऊर्णायु उर्वशी सहजन्या प्रसेन सुषेण नकुल औ गज ये मार्ग पौषमें रहतेहैं पूषा विष्णु यमदग्नि विश्वामित्र कम्बल अश्वतर धृतराष्ट्र सूर्य्यवर्चा तिलोत्तमा रंभा ऋतजित् सत्यजित् ब्रह्म औ उपेत ये माघ फाल्गुण में रथ के साथ भ्रमण करते हैं ब्रह्माजी कहतेहैं कि और भी मन्देहनाम राक्षसोंके वधकेलिये औ सूर्य्यनारायण की रक्षा के लिये जोजो रथकेसाथ भ्रमते हैं उनका हम वर्णन करते हैं ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अड़तालीसवां अध्याय॥

ब्रह्मा जी कहते हैं कि हे रुद्र हमने अपना अवतार अरुण रथका सारथी बनाया इन्द्र ने माठरवायु ने नागबाहन गरुड़ ने तार्क्ष्य नाम अपना अवतार रथ के साथ दिया है जिसके नख और चोंचही शस्त्रहैं औ रथकेआगे उड़तावलता है कालने दंडायुधवसुओंने आयुधऔआगारिक येदोअग्निने पिंगलयमने दंड बरुणने पाशहस्त कुबेर ने बिष्णु अश्विनीकुमारों ने काल उपकाल नरनारायणने वार्क्षऔ प्रधान विश्वेदेवोंने आठोंदिशाओंको रक्षाकेलिये क्षारद्वार विषण कृष्णवैराज शंखपाल पर्जन्य औरजयेआठदियेहैं सात मातृकाओंनेसात मरुत् बेदोंने ओंकार औवषट्कारशिवजीने विनायकसबनागोंने मिलकर शेषऔवासुकि औ हेरुद्र आपने मोषक नाम अपना गण रथके साथ रक्षाके लियेदियाहै ऐसा कोई देवता नहीं जो रथके पीछे न चलै सबइन का सेवन करतेहैं इनसूर्य नारायणके मंडलको ब्रह्मवेत्ता ब्रह्मस्वरूप यज्ञकरनेहारे यज्ञविष्णु भक्तबिष्णु शैवशिवस्वरूपऔगणेश के भक्त गणपतिरूप मानतेहैं येसब स्थानके अभिमानी देवता अपने तेज करके सूर्यनारायण के तेजकी वृद्धि करते हैं देवता औ ऋषि स्तुति पढ़तेहैं गंधर्वगाते हैं अप्सरा रथ के आगे नाचती हैं ग्रामणी रक्षा करतेहैं सर्प रथको धारतेहैं औ राक्षसरथके पीछेर चलतेहैं बालखिल्य नाम साठहज़ार ऋषि रथको चारोंओर घेर लेतेहैं दिवस्पति औ स्वभू रथकेआगे भर्गदहिनी ओर पद्मजबांई ओर कुबेर दक्षिण दिशामें वरुण उत्तर दिशामें यमराज आगे वीतिहोत्र औ हरि रथके पीछे रहतेहैं रथके पीठमें पृथिवी मध्य में आकाश रथकी कांतिमें स्वर्ग ध्वजामें दंड ध्वजाग्रमें धर्म पताकामें ऋद्धि वृद्धि श्री औ पार्वती निवासकरतीहैं वेनाकपर्वत

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

छत्रकादण्ड हिमाचल छत्ररूप होकर सूर्य्यभगवान्के साथरहते हैं इन देवताओं का बल तप तेज योग औ तत्व जैसा है वैसेही सूर्य्यभगवान् तपतेहैं येही सब देवता तपतेहैं बर्षतेहैं जीवों के अशुभकर्म निवृत्तकरतेहैं औ प्रजाको आनन्ददेते हुये सबभूतों कीरक्षा के लिये सूर्य्यनारायण के साथ भ्रमण करते हैं अपने किरणोंसे चन्द्रमाकीवृद्धिकर सूर्य्यभगवान् देवताओंका पोषण करतेहैं शुक्लपक्ष में सूर्य्य किरणों करके चन्द्रमाकी वृद्धि होतीहै औकृष्ण पक्षमें देवताउसको पानकरतेहैं अपनेकिरणोंसेपृथिबी कारसपीकर सूर्य्यनारायण वृष्टिकरते हैं उससे सबओषधी औ अनेक प्रकारकेअन्न उत्पन्न होतेहैं जिनसे पितर औ मनुष्योंकी तृप्ति होतीहै एकचक्र रथमेंबैठ एकदिन में सातद्वीप औ समुद्रों करके युक्त पृथिवी के चारोंओर सूर्य्यनारायण भ्रमण करते हैं उस रथ में अति बेगवान् हरेरङ्ग के वेदस्वरूप औ क्षुधा तथा श्रमसेरहित सात अश्वकल्पकेप्रारम्भमें लगाये हुवेहीप्रलयतक रथ को लिये भ्रमण करैंगे एकबर्ष में तीनसौ साठ भ्रमण होते हैं बालखिल्य ऋषिस्तुति करतेहैं अमरावती नाम इन्द्रकी पुरी में जब मध्याह्न होय उस समय यम की संयमिनी पुरी में सूर्योदय बरुण की सुखा नाम नगरी में अर्द्धरात्रि औ सोम की विभानामपुरीमें सूर्य्यास्तहोताहै संयमिनीमें जब मध्याह्नहोय तब सुखामें उदय विभामें अर्द्धरात्रि औ अमरावतीमें सूर्य्यास्त होताहै सुखामें जबमध्याह्नहोय उससमय विभामें उदय अमरावतीमेंआधीरात्रि औ संयमिनीमें सूर्य्यास्तहोताहै जिस समय विभानगरी में मध्याह्नहोय उस समयअमरावती में सूर्य्योदय संयमिनीमें अर्द्धरात्रि औ सुखानाम वरुणकी नगरी मे सूर्य्यास्त होता है इस प्रकार मेरु पर्बत की प्रदक्षिणा करतेहुये सूर्य्य उदयऔ अस्तकरतेहैं प्रभातसे मध्याहन पर्यन्त सूर्य्य

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

किरणोंकी वृद्धि औ मध्याह्न से अस्तपर्यंत ह्रास होताजाताहै जहां सूर्य्य उदय होंय वह पूर्व दिशा औ जहां अस्त होंय वह पश्चिम दिक् होती है एक मुहूर्त में भूमि के प्रमाण का तीसवां भाग सूर्य्य चलतेहैं दोहज़ार दोसौ दोयोजन सूर्य्यभगवान् का रथ एक निमेषमें चलताहै सूर्य्यभगवान् के उदयहोतेही इन्द्र पूजा करते हैं मध्याह्न में यमराज अस्त के समय बरुण औ अर्द्धरात्रिको सोम पूजन करते हैं बिष्णु शिव रुद्र ब्रह्मा अग्नि बायु निर्ऋति ईशान आदि सब देवता कल्याण के अर्थ सूर्य्य-भगवान् का आराधन सदा करते हैं॥

उनचासवां अध्याय॥

रुद्रभगवान् कहतेहैं कि हे ब्रह्मा जी आपने सूर्य्यनारायण का बहुत माहात्म्य वर्णन किया जिसके सुनने से हमको बहुत आनन्द मिला अब फिर भी आप उनका ही प्रभाव कथन करैं यह रुद्रका वचन सुन ब्रह्मा जी कहने लगे कि हे रुद्र त्रैलोक्य का मूल सूर्य्य हैं देवता असुर मनुष्य इन्द्र चन्द्र ब्रह्मा बिष्णु शिव आदि जितने देवता हैं सब में इनका ही तेज है अग्नि में आहुति दीहुई सूर्य्यभगवान् को पहुंचतीहै वे वृष्टि करतेहैं वृष्टि से अन्नहोताहै औ अन्न से प्रजाका जीवनहै सूर्य्य से जगत् की उत्पत्ति औ सूर्य्यमेंहीलयहोताहै ध्यानकरनेहारे इनकाहीध्यान करतेहैं मोक्षार्थीपुरुषोंकेलिये ये मोक्षस्वरूपहैं जे सूर्य्य भगवान् न होंयतोक्षणमुहूर्त्त दिनरात्रि पक्षमास ऋतुअयुग बर्षयुगआदि कालविभागनहोयकालविभाग न होनेसे जगत्काकोई व्यवहार न चलै ऋतुओं का विभाग न होय फिर फल मूल खेती ओषधी आदि क्योंकर उत्पन्नहोंय औ इनकी उत्पत्तिविना जीवोंकाजीवनकिस बिधिहोय इससे इससंसारकामूल सूर्य्यभगवान्हो

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by eGangotri

सूर्य्यभगवान् बहुत तपैं परिवेषहों और भी किसी प्रकार की बिकृतिहोय तो वृष्टिहोतीहै बसन्तऋतुमें सूर्य्यभगवान् कपिल वर्ण ग्रीष्ममें तप्त सुवर्ण के समान वर्षा में श्वेत शरद में पाण्डु हेमन्तमेंताम्रवर्ण औ शिशिरऋतुमें रक्तवर्णहोतेहैं सूर्य्यभगवान् कृष्णवर्ण होंय तो जगत् में रोगहोय ताम्रवर्ण होंय तो सेनापति का नाश पीतवर्णहोने से राजकुमार का मृत्यु श्वेतवर्ण से राजपुरोहित का ध्वंस चित्र औ धूम्रवर्ण होने से जगत् में चोर औ शस्त्रका भयहोय परन्तु ऐसावर्ण होनेके अनन्तर जो वृष्टि होजाय तो ये अनिष्ट फल नहीं होते॥

पचासवां अध्याय॥

रुद्र पूछते हैं कि सूर्य्यनारायण की रथयात्रा किस काल में औ किसविधि से करनी चाहिये औ रथयात्रा करनेहारे पुरुष को औ जो रथको खैंचैं रथ के साथजांय रथ के आगे नृत्य करैं गावैं उनको क्या फलहोताहै यहआप लोकहित के लियेवर्णन करैं यहसुन ब्रह्माजी कहने लगे कि हे रुद्र आपने बहुत उत्तम प्रश्न किया अब हम इसका वर्णन करतेहैं आप प्रीति से श्रवण करैं सूर्य्य रथयात्रा औ इन्द्रोत्सव ये दोनों जगत् के कल्याणके अर्थ हमने प्रवृत्त कियेहैं ये दोनों उत्सव जिस देश में हों वहां कभी राजचोर दुर्भिक्ष आदि उपद्रव नहींहोते इसलिये उपद्रव शान्तिके लिये ये दोनोंउत्सव करनेचाहिये मार्गशिर की शुक्ल सप्तमी को घृत करके सूर्य्यनारायण को श्रद्धा से स्नान करावै वह पुरुष सुवर्णके विमानमेंबैठ अग्निलोककोजाय वहां दिव्य भोगभोगै जो पुरुष शर्करासहित भातमिठाई औ चित्रवर्ण का भात सूर्य्यनारायण के अर्पणकरै वह ब्रह्मलोक पावै जो सूर्य्य नारायण के उबटनालगावे वह सूर्य्यलोकमें निवासकरै। पौष

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

शुक्ल सप्तमी को तीर्थों के जल अथवा और पवित्र जल से वेद मंत्रों करके सूर्य्यनारायण को स्नान करावै औ प्रयाग पुष्कर कुरुक्षेत्र नैमिष प्रथूदक रुद्रजट शोण गोकर्ण ब्रह्मावर्त्त कुशावर्त्त विल्वक नीलपर्बत गङ्गा द्वार गङ्गासागर कालप्रिया मित्रवन भाण्डीरवन नक्रतीर्थ रामतीर्थ गङ्गा यमुना सरस्वती सिन्धु चन्द्रभागा नर्मदा बिपाशा तापी वेत्रवती गोदावरी पयोष्णीकृष्णा वेणा शतद्रू पुष्करिणी कौशिकी सरयू आदि सबतीर्थ नदी औ समुद्रों का उस समय स्मरण करै औ दिव्य आश्रम औ देवस्थानोंको भी ध्यावै इसप्रकार स्नानकराय तीनदिन सातदिन एकपक्ष अथवा महीनेभर उसस्नान के स्थानमेंहीं सूर्य्यनाराण को रक्खै औ नित्य भक्ति से पूजन करै। माघकृष्ण सप्तमी को पक्कीईंटों से बनीहुई बेदीपर सूर्य्यनारायण को स्थापनकर हवन ब्राह्मण भोजन वेद पाठ औ भांति २ के नृत्य गीत वाद्य आदि उत्सव करावै फिर माघशुक्ल पंचमीको एकबार भोजनकरै षष्ठी कोरात्रिकेसमय भोजन औ सप्तमीको उपबासकरै हवनब्राह्मण भोजन आदि कराय सबको दक्षिणा देकर पौराणिक का भलीभांतिपूजनकर सुबर्ण के रत्नजटितरथमें सूर्य्यनारायण को बिराजमान करै औ वह रथ उस दिन मन्दिरके आगे ही खड़ा रहै रात्रि को सब जागरण करैं औ नृत्यहोता रहै दूसरे दिन अर्थात् माघशुक्ल अष्टमीको रथयात्रा करै रथके आगे भांति२ के बाजेबाजैं नृत्य गीत औ बेदध्वनि होतीचलै पहिले रथनगर के उत्तर द्वारपर जाय फिरक्रमसे पूर्व दक्षिण औ पश्चिमद्वारों पर भी जाय इसप्रकार रथयात्रा करने से राज्य के सबउपद्रव निवृत्त होतेहैं युद्ध में जय मिलताहै सब प्रजा औ पशु निरोग रहतेहैं रथयात्रा करनेहारेकी सन्तान बढ़तीहैं औ रथकोखैंचने वाले तथा रथकेसाथ जानेवाले सूर्य्यलोककों जाते हैं॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

इक्यावनवां अध्याय॥

रुद्र कहते हैं कि हे ब्रह्माजी मन्दिर में स्थापनकरी हुई प्रतिमा को किस प्रकार उठावे औ रथमें स्थापनकरै यह हमको बहुत संशयहै क्योंकि उसप्रतिमाकी तो स्थिर प्रदिष्ठा हो रही है फिर क्योंकर चलासक्ते हैं यह सन्देह आप निवृत कीजिये यह रुद्रका वचन सुन ब्रह्माजी कहनेलगे कि सम्वत्सर के अवयवो करके जो रथ प्रथम हमने वर्णनकिया मुख्यतो वहीरथ है उसको देख विश्वकर्म्माने सब देवताओं के लिये रथ बनाये विश्वकर्म्माका बनायारथ पूजन के लिये सूर्यभगवान्ने अपने पुत्र मनुको दिया मनुने राजाइक्ष्वाकुको दिया तबसे यह रथयात्रा चलीआती है सूर्यभगवान् तो नित्य आकाश में भ्रमण करते हैं इसलिये उनको प्रतिमा के चलाने में कुछ दोष नहीं ब्रह्मा विष्णु शिव आदि देवताओंकी प्रतिमा अस्थापनहोने के अनन्तर न उठानी चाहिये सूर्यनारायणकी रथयात्रा प्रतिवर्ष करै सोने चांदी अथवा उत्तमकाष्ठका अतिसुन्दर औ बहुत दृढ़ रथ बनावै उसके बीच प्रतिमा को स्थापन कर उत्तम लक्षणों करके युक्त अतिसुशील घोड़े रथमेंजोड़ै औ उनघोड़ोंको केशर से रँगकर अनेक भूषण पुष्पमाला चामरआदिसे अलंकृतकरै इसप्रकार रथकोतय्यारकर सबदेवताओंका पूजनकर ब्राह्मण भोजन करवाय दक्षिणादे दीन अंध कृपण अनाथों को भोजन आदिसे संतुष्ठ करै किसीको विमुख न जानेदेवै जो क्षुधा करके पीड़ित कोई विमुख जाय तो पितरोंका अधःपात होताहै इसलिये इस सुर्यभगवान् के यज्ञमें भोजन औ दक्षिणा से सबको संतुष्टकरै औ सबदेवताओं को इसमंत्र से बलिदेवै। बलिंग्रहणं नमोदेवा आदित्योवसवस्तथा। मरुतोथाश्विनौरुद्रः सुपर्णाःपन्न

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

गाग्रहाः१ असुरायातुधानाश्चरथस्थायेतुदेवताःदिक्पालालोक
पालाश्चयेचविघ्नविनायकाः २ स्वस्तिकुर्वंतुजगतोयेचदिव्यामह-
र्षयःमाविघ्नंमाचमेपाप्मामाचमेपरिपंथिनः सौम्याभवंतुतृप्ता-
श्चदेवाभुतगणास्तथा३इनमंत्रोंसे बलिदेकरवामदेव्यमानस्तो
करथंतर औ आकृष्णेन इत्यादि ऋचापढ़ै। फिर पुण्याह वाचन
औ अनेक प्रकारके वाद्योंकाशब्दकर सुन्दरमार्गमें रथचलावै
जिसमें धक्का न लगै घोड़े न होंय तो अच्छे बैल रथ में लगावै
अथवा पुरुषही उसरथकोखैंचैं तीसअथवा सोलहब्राह्मणप्रति-
मा को मन्दिर से उठाकर रथमें बड़ीसावधानी से विराजैं औ
दोनोंओर सूर्यनारायणकी दोनोंपत्नियोंको स्थापनकरै। स दा-
चार औ वेदपाठी दोब्राह्मण प्रतिमाओंके पिछलीओर बैठैं औ
प्रतिमाओं को सम्हालेरहैं सारथी भी चतुरहोय सुवर्ण दंडसे
भूषितछत्र रथकेऊपर लगावै औ अतिसुन्दर रत्नोंसेजड़े सुवर्ण
दंड करके युक्त ध्वजा रथपरचढ़ावै जिसमें अनेकरंगोकी सात
पताका लगीहों रथकेअग्रभागमें सारथिहोकर ब्राह्मणबैठैशूद्र
कभीरथकोस्पर्शनकरै जो शूद्र रथकास्पर्शनकरै उसकी संतति
नष्टहोजाय ब्राह्मण क्षत्रिय औ वैश्योंको ही रथके स्पर्श करने
का अधिकारहै अपने स्थानसे चलकर पहिले नगरकेउत्तरद्वार
पर रथजाय वहांएकदिनरहै अनेक प्रकारके नाच तमाशे वेद
पाठ पुराणकी कथा औ ब्राह्मण भोजनवहांकरावै औ ब्राह्मणही
सब उत्सव करैं नवमी के दिन रथचलकर पूर्वद्वार पर जाय
एकदिनरहै वहां क्षत्रिय उत्सवकरैं तीसरेदिन दक्षिण द्वार पर
रथरहै वहां वैश्यपूजन औ उत्सवकरैं चौथेदिनपश्चिम द्वारपर
रथजावै वहां सबशूद्र उत्सवकरैं वहांसे नगर के मध्य में रथ
आवै औ सम्पूर्ण ब्राह्मण पूजन औ उत्सवकरैं उसदिनराजाभी
बड़ा उत्सव करै दीपमाला करावै ब्राह्मणों को दानदेवै औ

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

भोजन करावे फिर वहांसे अपने मंदिरमें रथआवै तब सबनगर के लोग मिलकर पूजन औ उत्सव करैं औ एक दिन रात रथ-मेंही प्रतिमा रहै दूसरेदिन रथसे उतार बड़ी धूमधाम से मंदिर में स्थापन करैं इस प्रकार सप्तमी से त्रयोदशी पर्यंत रथयात्रा होय औ चतुर्दशी को अपने स्थानमें स्थापन करैं इस रथयात्रा के करने से सब विघ्न निवृत्त होतेहैं॥

बावनवां अध्याय॥

रुद्रपूछते हैं कि हे ब्रह्माजी आप फिर रथयात्राका वर्णनकरैं इसकेसुनने से हमको परमआनन्द प्राप्त होताहै रथ अपनेस्थान से किसप्रकार चलै औ रथके साथ कौनचलैं यहआप कथनकरैं यहसुन ब्रह्माजी कहनेलगे किहे रुद्र रथको धीरे २ सम मार्ग में चलावै जिसमें रथको धक्काआदि न लगे पहिले मार्ग शुद्धि के लिये प्रतीहार औ दंडनायक उस मार्गमें जांय तिसके पीछे सूर्य-नारायण का रथ औ उनकेभी पीछेपिंगलमाठर दंडलेखकआदि सूर्यभगवान् के गणोंके रथचलैं ऐसी युक्तिसे रथको लेजाय कि उसका कोई अंग भंग न होय ईषादंड टूटै तो ब्राह्मणों को भय होय अक्ष टूटै तो क्षत्रियों को भय तुला भंग होय तो वैश्यों को औ शमीके टूट जाने से क्षत्रियों को भय होता है युग के भंग से अनावृष्टि पीठके भंगसे प्रजाभय रथका चक्र टूटने से पर चक्र अर्थात् शत्रुकी सेनाका आगमन ध्वजाके गिरने से राजाका भंग औ प्रतिमा खंडित होजानेसे राजाका मृत्यु होताहै छत्रटूटै तो युवराज को भयहोय जो इनमें कोईभी उत्पात होयतो शांति करै औ ब्राह्मणों को दानदेवै भोजन करावै औ रथके ईशान कोण में वेदी अथवा कुण्ड बनाय घृत औ समिधाओं से देवता औ ग्रहों की प्रसन्नता के लिये हवन करै औ इन मंत्रो से आहुति देवे॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

स्वस्त्यस्त्विहचविप्रेभ्यःस्वस्तिराज्ञस्तथैवचागोभ्यःस्वस्तिप्रजाभ्यश्च जगतःशांतिरस्तुवै १ शंनोस्तुद्विपदेनित्यं शांतिरस्तुचतुष्पदे। शंप्रजाभ्यस्तथैवास्तु शंसदात्मनिचास्तुवै २ भूःशांतिरस्तु देवेश भुवःशांतिस्तथैवचा स्वश्चैवास्तुतथाशांतिः सर्वत्रास्तुगतारवेः३त्वंदेवजगतःस्रष्टा त्वष्टाचैवत्वमेवहि। प्रजापालमहेशानशांतिं कुरुदिवस्पते४इनमंत्रोंसे हवनकर अपनी जन्मराशि से दुष्ट स्थानमें स्थितग्रहों की प्रीतिके लिये समिधाहोमकरै ये समिधा एक २ प्रादेश लम्बी बनावै सूर्यके लिये अर्कको समिधा चंद्र के पलाशकी भौमके खदिर की बुधके अपामार्ग की बृहस्पति के पीपलकी शुक्रके गूलरकी शनैश्चर के शमीकी राहु के दूर्वा की औ केतुके हवन के लिये कुशाकीसमिधा कल्पनाकरै उत्तम गौ शंख लालरङ्गका बैल सुवर्ण वस्त्र श्वेत घोड़ा काली गौ लोहका पात्र औ बकरा ये क्रम से नौ ग्रहों की दक्षिणाहै गुड़ औ भात घी औ खीर हविष्य अन्न खीर दही भात घृत तिल औ उड़द के बने पक्वान्न मांस औ चित्रवर्णका भात और कांजी ये नवग्रहों के भोजनहैं जिस प्रकार शरीरमें कवच पहिन लेनेसेबाण नहीं लगते इसीप्रकार शान्ति करनेसे किसीप्रकार का उपघातनहीं होता अहिंसक जितेन्द्रिय नियममें स्थित औ न्यायसेधनसंपादन करनेवाले पुरुष के ऊपर ग्रह सदा अनुग्रह करते हैं यश धन संतान औ सर्वोपद्रव शांति के लिये सदा ग्रहों का पूजन करना चाहिये संतानहीनकन्यासंतानवाली मृतवत्साओ खोटी संतानवाली स्त्री संतान दोष निवृत होनेके लिये जिसकाराज्य नष्ट होगयाहो वह राज्यके लिये रोगी पुरुष रोगशान्तिकेलिये अवश्य ग्रह शांति करै सुवर्णस्फटिक ताम्र चन्दन सुवर्ण चांदी लोहे औ सीसेकी नवग्रहोंकी प्रतिमा बनावै अथवाइनके चित्रही लिखलेवै औ जिस ग्रहका जो रंगहो उसी रंग के वस्त्र पुष्प

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

चन्दन बलि आदि देवै औ गूगलका धूप सबके अर्पणकरै आ-कृष्णेनरजसाइत्यादि मंत्रोंकरके एक२ ग्रहकेनामसे समिधाघृत शहत औदहीकरके अट्ठाईस २ आहुतिदेवैऔब्राह्मणोंको भोजन कराय यथाशक्तिदक्षिणादेवै मनुष्योंका उदयऔसंपत्तिका नाश ग्रहोंके आधीन हैं इसलिये ग्रह शांति अवश्यकरनीचाहियेग्रहों का जो पूजनकरे उसको ग्रहसब प्रकारकासुखदेतेहैं औ इनका अपमानकरैउसको अनेकभांतिका दुःखमिलताहै यज्ञकरनेहारे सत्यवादी जप होम उपवास आदिमें तत्पर औ धर्मात्मामनुष्यों को ग्रह पीड़ानहींहोती इसप्रकार शांतिकर फिर रथकोचलावै औ बाक़ीके मार्ग में घुमाय कर अपने स्थान में पहुँचावै औ वहां पहुँचरथ में स्थित देवताओंका पूजन करै उत्पातहोने पर ग्रहों की भांति रथमें स्थित सब देवताओंका भी पूजनकरै तब सब प्रकार की शांति होय॥

तिरेपनवां अध्याय॥

ब्रह्माजी कहतेहैं कि हेरुद्र जिन २ देवताओं को जो २ नैवेद्य देना चाहिये वह हम कहतेहैं खीर औ यवागू ब्रह्माजीको कार्त्तिकेयको फल यमराजको मद्य औमांसइन्द्रको अनेकप्रकार के भक्ष्य भोज्य अग्निको हविष्य अन्नविष्णुको उत्तमअन्न राक्षसों को मद्यमांस औ भात रेवंतको मास भात प्रेतराजको तिल औ भात अश्विनीकुमारों को अपूप बसुओं को मांस औ भात पितरों को घी खीर औ शहत कात्यायनी को यवागू लक्ष्मी को दही सरस्वती को त्रिमधुर वरुण को इक्षुरस औ भात खंड औ भात कुबेर को घृत औ तक्र मरुतोंको मातृकाओंको मांस भात दाल सर्व भूतोंको उल्लोपिका नामपक्वान्न गणपतिकोबहुतउत्तम मोदक नैऋति को शष्कुलीविश्वेदेवोंको सर्वभक्ष्यऋषियोंको

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

दूध भात नागों को दूध सूर्यभगवान् को नानाप्रकार की बलि सूर्य के बाहनों को घृत औ सुरा ब्रह्मा को घृत रुद्र को तिल भास्कर को देवदारु इन्द्रको राजवृक्ष विष्णुको सप्तधान्य वायु को मत्स्य औ भात यक्षोंको अनेक प्रकारके अन्नविकंकत वृक्ष के पुष्पोंकी माला यम को कर्णिकार पुष्प अश्विनी कुमारों को लक्ष्मीको कमल चण्डिकाको चन्दन सरस्वतीको मक्खन विनताको विष अप्सराओंको चमेली के पुष्प वरुण को अग्नि मंथ वृक्ष के फूल नैऋत को फल औ मूल कुवेर को वेल के फल मरुतों को कैथ के फल गंधर्वों को सुगन्ध द्रव्य वसुओं को कर्पूर गणाधिपको देवदारु भूतों को बहेड़े पितरों को पिंडमूल गौओं को यव मातृकाओं को अक्षत बिघ्नपति को गूगल ऋषियोंको पलाशके पुष्प विश्वेदेवोंको मोदक नागोंको बिष औ सूर्य नारायणको सब प्रकारके पुष्प धूप औनैवेद्य देवै इसप्रकार प्रातः काल औ सायंकाल के समय सबको बलिदेकर शान्तिके लिये ब्राह्मणोंको तिल देवै अथवा तिलोंका हवनकरै औसबदेवताओं को देवदारुका धूपदेवै कश्यपके अंगसे तिलउत्पन्नभये हैं इसलिये परम पवित्र औ देवता तथा पितरोंके प्रियहैं तिलोंकरके स्नान करै औ तिलोंका दान हवन औ भोजन करै तोबहुत फल है इस प्रकार ग्रह औ देवताओंका पूजन कर सूर्यभगवान् की आरती करै फिर दोनों पत्नियों सहित सूर्यनारायण को वेदी के ऊपर स्थापनकर दशदिन पूजाकरै इस दशाहिका पूजासेबहुत फल होताहै इस प्रकार पूजनकर अपनेस्थानपर स्थापनकरै ॥

चौवनवां अध्याय ॥

ब्रह्माजी कहतेहैं कि हेरुद्रजी इसप्रकार जो रथ यात्रा करै अथवा दूसरेसे करावै वह परार्द्ध वर्ष पर्यंत सूर्यलोकमें निवास

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

करताहै औ उसके कुल में दरिद्री तथारोगी नहीं होता जो सूर्य भगवान् को अभ्यंग के लिये घृत समर्पण करै वह उत्तम लोक पावै गंगाआदि तीर्थोंसे जल लाकर जो स्नान करावै वह वरुणलोक में निवास करै जो लाल रंग का भात और गुड़ नैवेद्य लगावै वह प्रजापति लोक को जाय जो भक्ति से सूर्य्यनारायण को स्नान कराय पूजनकरै वह सूर्य्य लोकमें निवासकरै जो पुरुष रथपर सूर्य्यनारायणको चढ़ावै रथकेमार्ग्गकोशुद्धकरै अथवा पुष्प तोरण पताका आदिसे अलंकृत करै वे वायुलोकमें निवासकरैं जो नृत्य गीत आदि करके बड़ा उत्सव करैंवेसूर्य्यलोक पावैं सूर्य्यनारायण जब रथमें बिराजमान होंय उसदिन जो जागरण करैं वे धन पुत्र आदि से सुखी होंय जब रथ की यात्रा उत्तर अथवा दक्षिण दिशाकी ओर होय उस समय जो दर्शनकरैं वेधन्यहैं जिसदिन रथयात्राकरै उससे बर्षवेंदिन फिर करनी चाहिये यदिवर्षके अनन्तर यात्रा न बनपड़ै तो बारहवें वर्ष बड़े उत्सव से यात्राकरै बीचमें न करै इसीप्रकारइन्द्रध्वज के उत्सव में भी यदि बिघ्न होजाय तो बारहवेंवर्षमेंहीकरैजो पुरुष रथयात्रा करैं वे इन्द्र आदि देवता होतेहैं औयात्रामें बिघ्न करनेहारे संदेह नाम राक्षस हैं इतना कह ब्रह्माजी बोलेकिहे रुद्र इसी प्रकार वैशाख मेंभी रथयात्रा करै रथमें स्थापनकर प्रथम सूर्य्यनारायणका अर्च्चनकरै पीछेपरिवार देवता पूजैसब को वलिदेवै जो सूर्यनारायण का पूजन बिनाकिये और देवता का पूजन करैवह निष्फल होताहै रथयात्राके समय जो सूर्य्यनारायण का दर्शनकरैं वेनिष्पाप होजाते हैं षष्ठी सप्तमीपूर्णिमा अमावास्या औ रविवार के दिन दर्शन करने का बहुत पुण्य है आषाढ़ कार्त्तिक औ माघकी पूर्णिमा को भी दर्शन का बहुत फलहै येतीन मासभी रथयात्रा करनेकेहैं उस समय जो उप-

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वासकर भक्तिसे पूजन करै वहउत्तम गतिपावै लोकों पर अनुग्रह करने के अर्थ प्रतिमा में स्थित होकर सूर्य्यनारायणपूजन ग्रहण करतेहैं जो पुरुषकेश मुंडवाय स्नानजप होमदान आदि करै वहदीक्षित होताहै सूर्य्यभक्त पुरुष अवश्यकेशमुंडवाये रहैं जोइस प्रकार दीक्षित होकर सूर्य्यनारायणकाआराधनकरैंवेपरम गतिको प्राप्त होंय हेरुद्र यह रथयात्रा का बिधान हमने कहाहै इसकोजोपढ़ै अथवा श्रवणकरैं वेसब रोगोंसेमुक्तहोंयऔ इसके करनेहारे सूर्य्यलोक में जायँ॥

पचपनवां अध्याय॥

ब्रह्माजी कहतेहैं कि हेरुद्र माघ महीने के शुक्लपक्षकी षष्ठी को उपवास करै औ सब उपचारों से सूर्य्यनारायण का पूजन करै रात्रिको उनके आगे शयन करै सप्तमी को प्रभातही उठ स्नान कर भक्तिसे पूजन कर ब्राह्मण भोजन करावैबित्तशाठ्यन करै इस प्रकार एक बर्ष व्रत करके रथयात्रा करै तृतीयाको एक भक्त चतुर्थी को नक्त पंचमी को अयाचित औ षष्ठीकोउपवास कर सप्तमी को पारणकरै सुवर्णका रथबनाय उसके बीच ताम्र पात्रमें पद्मराग मोती नीलम पन्ना मूंगा हीरा आदिरत्नों से जड़ा हुवा पद्म स्थापनकर उसके मध्यमें सूर्य्यनारायण की प्रतिमा को बिराजै ध्वजा पताका पुष्प माला घंटा आदिसे रथ को अलंकृत कर आचार्य को देवै जो उपाख्यान सहित सप्तमी कल्प को जानै वह आचार्य होता है सुवर्ण का रथ बनानेका सामर्थ्य न होय तो चांदीका बनावै ताम्र का अथवा काष्ठकाही रथ बनाय पंचरत्न सुवर्ण रेशमी वस्त्र औ ताम्रपात्र सहित आचार्य के अर्पण कर ब्राह्मण भोजन करावै हेरुद्र यह माघ सप्तमी बहुत उत्तम तिथिहै इसदिनकियाहुवास्नानदान आदिकर्म

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सहस्त्र गुण होजाता है ब्राह्मण इसव्रत को करै तो देवता होय क्षत्रियकरै तो ब्राह्मण होजाय वैश्यकरै तो क्षत्रिय होय औ शूद्र इसव्रत के करने से वैश्यहोजाता है कन्या इसव्रत को करै तो बिद्या बिनय आदि गुणोंकरके युक्त पतिपावै विधवा इसव्रतको करै तो फिर किसीजन्ममें बैधव्य न होय अपुत्रास्त्रीको पुत्रमिलै यह रथसप्तमीकाफल औ बिधान हमनेकहा इसकेश्रवण करने से भी ब्रह्महत्या आदि पातक निवृत्त होतेहैं ॥

छप्पनवां अध्याय ॥

सुमन्तु मुनि कहतेहैं कि हे राजा इतनी कथा कह ब्रह्माजी अपने लोककोगये औ रुद्र भी अपनेधामको जातेभये यह रथ सप्तमीका बिधान हमने वर्णनकिया अब आप और क्या श्रवण किया चाहतेहैं यह सुमन्तुमुनि का बचनसुन राजा ने कहा कि महाराज सूर्य्यनारायणका प्रभाव मैं कहांतककहूं उनकेअनुग्रह से युधिष्ठिर आदि मेरेपितामहों को सबप्रकार के भोजन देने-हारा पात्र मिला जिससेबन में भी ब्राह्मण भोजन कराते रहे उनका माहात्म्य सुनतेर मुझे तृप्ति नहीं होती जिनसे सब जगत् उत्पन्नभया दोनोंहाथोंसे ब्रह्मा बिष्णु औ उनके ललाट से रुद्रकी उत्पत्ति भई उनका प्रभाव कौन वर्णन करसक्ता है अब मैं यह श्रवण किया चाहता हूं कि ऐसा मंत्र स्तोत्र दान स्नान जप पूजन होम ब्रत उपबास आदि कौन कर्महै जिसके करनेसे सूर्य्यभगवान् प्रसन्नहो सब क्लेश निवृत्तकरैं औ संसार सागर से मुक्तिहोय वहीस्तोत्र मंत्र रहस्य बिधा पाठ ब्रत उ-त्तमहै जिस में सूर्य्यनारायणका कीर्त्तन हो वह जिह्वा धन्य है जो सूर्य्य भगवान्की स्तुतिकरै पूजा करने हारे हाथ ध्यान में तत्पर मन औ सूर्य्यनारायण के गुण श्रवण में आसक्त कर्ण

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वासकर भक्तिसे पूजन करै वहउत्तम गतिपावै लोकों पर अनुग्रह करने के अर्थ प्रतिमा में स्थित होकर सूर्य्यनारायणपूजन ग्रहण करतेहैं जो पुरुषकेश मुंडवाय स्नानजप होमदान आदि करै वहदीक्षित होताहै सूर्य्यभक्त पुरुष अवश्यकेशमुंडवाये रहैं जोइस प्रकार दीक्षित होकर सूर्य्यनारायणकाआराधनकरैंवेपरम गतिको प्राप्त होंय हेरुद्र यह रथयात्रा का बिधान हमने कहाहै इसकोजोपढ़ै अथवा श्रवणकरैं वेसब रोगोंसेमुक्तहोंयऔ इसके करनेहारे सूर्य्यलोक में जायँ॥

पचपनवां अध्याय॥

ब्रह्माजी कहतेहैं कि हेरुद्र माघ महीने के शुक्लपक्षकी षष्ठी को उपवास करै औ सब उपचारों से सूर्य्यनारायण का पूजन करै रात्रिको उनके आगे शयन करै सप्तमी को प्रभातही उठ स्नान कर भक्तिसे पूजन कर ब्राह्मण भोजन करावैबित्तशाठ्यन करै इस प्रकार एक बर्ष व्रत करके रथयात्रा करै तृतीयाको एक भक्त चतुर्थी को नक्त पंचमी को अयाचित औ षष्ठीकोउपवास कर सप्तमी को पारणकरै सुवर्णका रथबनाय उसके बीच ताम्र पात्रमें पद्मराग मोती नीलम पन्ना मूंगा हीरा आदिरत्नों से जड़ा हुवा पद्म स्थापनकर उसके मध्यमें सूर्य्यनारायण की प्रतिमा को बिराजै ध्वजा पताका पुष्प माला घंटा आदिसे रथ को अलंकृत कर आचार्य को देवै जो उपाख्यान सहित सप्तमी कल्प को जानै वह आचार्य होता है सुवर्ण का रथ बनानेका सामर्थ्य न होय तो चांदीका बनावै ताम्र का अथवा काष्ठकाही रथ बनाय पंचरत्न सुवर्ण रेशमी वस्त्र औ ताम्रपात्र सहित आचार्य के अर्पण कर ब्राह्मण भोजन करावै हेरुद्र यह माघ सप्तमी बहुत उत्तम तिथिहै इसदिनकियाहुवास्नानदान आदिकर्म

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सहस्त्र गुण होजाता है ब्राह्मण इसव्रत को करै तो देवता होय क्षत्रियकरै तो ब्राह्मण होजाय वैश्यकरै तो क्षत्रिय होय औ शूद्र इसव्रत के करने से वैश्यहोजाता है कन्या इसव्रत को करै तो बिद्या बिनय आदि गुणोंकरके युक्त पतिपावै विधवा इसव्रतको करै तो फिर किसीजन्ममें बैधव्य न होय अपुत्रास्त्रीको पुत्रमिलै यह रथसप्तमीकाफल औ विधान हमनेकहा इसकेश्रवण करने से भी ब्रह्महत्या आदि पातक निवृत्त होतेहैं ॥

छप्पनवां अध्याय ॥

सुमन्तु मुनि कहतेहैं कि हे राजा इतनी कथा कह ब्रह्माजी अपने लोककोगये औ रुद्र भी अपनेधामको जातेभये यह रथ सप्तमीका बिधान हमने वर्णनकिया अब आप और क्या श्रवण किया चाहतेहैं यह सुमन्तुमुनि का बचनसुन राजा ने कहा कि महाराज सूर्य्यनारायणका प्रभाव मैं कहांतककहूं उनकेअनुग्रह से युधिष्ठिर आदि मेरेपितामहों को सबप्रकार के भोजन देनेहारा पात्र मिला जिससेबन में भी ब्राह्मण भोजन कराते रहे उनका माहात्म्य सुनतेर मुझे तृप्ति नहीं होती जिनसे सब जगत् उत्पन्नभया दोनोंहाथोंसे ब्रह्मा बिष्णु औ उनके ललाट से रुद्रकी उत्पत्ति भई उनका प्रभाव कौन वर्णन करसक्ता है अब मैं यह श्रवण किया चाहता हूं कि ऐसा मंत्र स्तोत्र दान स्नान जप पूजन होम व्रत उपबास आदि कौन कर्महै जिसके करनेसे सूर्य्यभगवान् प्रसन्नहो सब क्लेश निवृत्तकरैं औ संसार सागर से मुक्तिहोय वहीस्तोत्र मंत्र रहस्य बिधा पाठ व्रत उत्तमहै जिस में सूर्य्यनारायणका कीर्त्तन हो वह जिह्वा धन्य है जो सूर्य्य भगवान्की स्तुतिकरै पूजा करने हारे हाथ ध्यान में तत्पर मन औ सूर्य्यनारायण के गुण श्रवण में आसक्त कर्ण

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सफल हैं जो जिह्वा सूर्य्यनारायण के गुण न गावै वह केवल रोग के तुल्य है अथवा प्रति जिह्वा है सूर्याराधन किये बिना यह शरीरवृथाहै एकबारभी सूर्य्यनारायण को प्रणाम करै तो संसार सागर का पारपावै रत्नों का आश्रय मेरुपर्वत आश्चर्यों का आश्रय आकाश तीर्थोंकाआश्रय गङ्गा औ सबदेवताओं का आश्रय सूर्य्यनारायण हैं ये सबकथा बहुतबार मैंने श्रवणकरी है औ देवता भी सूर्य्यनारायण का ही आराधन करतेहैं यह भी मैंने सुनाहै अब मेरा भी यह दृढ़संकल्पहै कि सूर्य्यभगवान्की उपासना भक्ति से कर संसार से मुक्त हो जाऊं॥

सत्तावनवां अध्याय॥

यह राजाका वचनसुन सुमन्तुमुनि कहने लगे कि हे राजा जिसप्रकार ऋषियों को ब्रह्माजी ने सूर्यनारायण के आराधन का बिधान उपदेश कियाहै वह हम आपको श्रवण कराते हैं एकसमय सब ऋषियों ने ब्रह्माजीसे प्रार्थनाकरी कि महाराज सब प्रकारसे चित्तवृत्ति निरोधरूपयोग आपनेकैवल्यपद देनेहारा कहा परन्तु वह अनेक जन्ममें सिद्ध होताहै इन्द्रियों को आकर्षण करनेहारे विषय दुर्जयहैं मन किसीप्रकारसे स्थिरही नहींहोता राग द्वेष आदिदोष छूटतेनहीं औ पुरुष सदाअल्पायुष् होतेहैं तिसमें कलियुग के मनुष्य तो अतिही अल्पायुष् होंगे इसलिये योग सिद्धिका प्राप्तहोना अति कठिनहै ऐसा कोईउपाय आप उपदेशकरैं कि बिना परिश्रम संसारसे निस्तारहोय यह मुनियों की प्रार्थना सुन ब्रह्माजी कहनेलगे कि हे मुनीश्वरो ऐसाउपाय तो एक सूर्यनारायण का आराधन है यज्ञ पूजन नमस्कार जप ब्राह्मण भोजन आदि से उनकी उपासना करो औ मन बुद्धिकर्म दृष्टिआदि सबसूर्यनारायणमें

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

तत्पर करो वेही परब्रह्म अक्षर सर्वव्यापी सर्व कर्ता अकर्ता अचिन्त्य औ मोक्ष के देनेहारे हैं इसलिये आपउनका आराधन कर अपने मनोवांछित फलपाय संसारसे मुक्तहोजाओयह ब्रह्माजीसे सुन सबमुनि सूर्यनारायणकीउपासनामें तत्परभये हे राजा संसारके दुःखी जीवोंको सुख देने हारा सूर्यनारायण के बिना कोई नहींहै इसलिये उठते बैठते चलते सोते भोजन करते सूर्यनारायणकाही स्मरणकरो औ भक्तिसे उनकेआराधन में प्रवृत्तहोजावो जिससे जन्म मरण आधि व्याधि से छुटो जो पुरुष जगत्कर्त्ता नित्य वरद दयालु औ ग्रहों के स्वामी श्रीसूर्यनारायणके शरणमें प्राप्तहोतेहैं वेअवश्यभुक्ति औमुक्तिपातेहैं ॥

अट्ठावनवां अध्याय ॥

सुमन्तु मुनि कहतेहैं कि हेराजा अबहम तंडीनामशिवजीके गण औसूर्यनारायणकासम्बादकहतेहैं पूर्वकालमें तंडीकोब्रह्महत्यालगगई थी उसकोनिवृत्त करनेकेलिये तंडीने सूर्यनारायण का बहुतकाल आराधनऔस्तुतिकरी तब प्रसन्नहो सूर्यभगवान् उनके समीपआये औ कहा कि हे तंडी तुम्हारी भक्ति से हम बहुत प्रसन्नहैं अपना अभीष्ट वरमांगो तब तंडीनेकहा कि महाराजआपका दर्शनही दुर्ल्लभहै यहहोनेसे हमको अतिहर्षभया औ आप सबके हृदयमें स्थितहैं इससे सबका अभिप्रायजानते हैं हमको ब्रह्महत्यालगीहै यह निवृत्त होय औसंसार से उद्धार करने हारा उपाय आप उपदेश करैं कि जिसके आचरण से जगत् के मनुष्य सुखीहोयँ यह तंडीका बचनसुन सूर्यभगवान् ने उनको निर्बीज योगका उपदेश किया तब तंडी ने कहा कि महाराज यह निष्कल योग अति कठिनहै क्योंकि इन्द्रियोंको जीतना मनको स्थिर करना अहंता औ ममता कोत्यागना औ

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

रागद्वेष से बचना बहुत कष्ट साध्यहै ये बातें कईजन्म अभ्यास करनेसे प्राप्तहोतीहैं इसलिये ऐसाउपाय बतलाइये कि अनायाससे ही फल प्राप्तहोय यहतंडीकी प्रार्थनासुन सूर्य्यनारायण कहतेभये कि हे गणनाथ जो अनायास से मुक्तिकीइच्छा होय तो हमारे में मनको आसक्त करो हमारा भक्ति से यजन करो हमको नमस्कारकरो हमारी भक्तिकरो औ सबजगत् में हमको व्याप्त समझो तो चित्त चंचल होनेपर भी मनोवाञ्छित फल पाओगे सुवर्ण चांदी तांबा पाषाण काष्ठ आदि से हमारी प्रतिमाबनवाय अथवा चित्रही लिखवाकर अनेकप्रकारके उपचारों से उसका भक्तिकरके पूजनकरो औ चलते फिरते भोजन करते आगे पीछे ऊपर नीचे उसीका ध्यानकरो औ सुन्दरतीर्थों के जल से स्नान कराय गन्ध पुष्प वस्त्र भूषण नाना प्रकार के नैवेद्य औ जो२ पदार्थ तुमकोप्रिय हों सो सब अर्पणकरो और जो कभी गान करने की इच्छा होय तो हमारी मूर्त्ति के आगे हमारे गुणानुवाद गाओ कथा श्रवण करने को इच्छाहोय तो हमारी कथा सुनो इसप्रकार हमारे में मन को अर्पण करने से रोग द्वेष आदि नष्ट हुयेबिना भी परमपद को प्राप्तहोंगे सब कर्म हमारे अर्पण करो यह संक्षेप से हमने क्रिया योग तुमको कथनकिया इसके आचरण से सब दोष जालसेछूट मुक्तिभागी होगे यह सूर्य्यनारायणका बचनसुन तंडी ने कहा कि महाराज यह अमृतरूप क्रियायोग आप बिस्तार से कथन करें क्योंकि आप के बिना हमको और कौन पुरुष हित उपदेश करैगा औ अति पबित्र यह परम रहस्य हम कहांसे पावैंगे यहसुन सूर्य्य भगवान् ने कहाकि तुमचिन्तामतकरो यहसम्पूर्ण क्रियायोग बिस्तार से ब्रह्माजी तुमको उपदेश करैंगे औ हमारे प्रसाद से तुम ग्रहण करोगे इतना कह त्रैलोक्य दीप श्रीसूर्य्यनारायण

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अन्तर्द्धान भये औ तंडीभी ब्रह्माजी के स्थान को जाते भये॥

उनसठवां अध्याय॥

सुमन्तुमुनिकहतेहैं किहेराजा शतानीकतंडीब्रह्मलोकमेंजाय ब्रह्माजीको प्रणाम कर कहते भये कि महाराज हमकोसूर्य्यनारायण ने भेजाहै आप कृपा कर क्रियायोग हमको उपदेश करैं किजिसकोकरके हम शीघ्रही सूर्य्य भगवान्को प्रसन्नकरैं यह तंडीकी प्रार्थनासुन ब्रह्माजी बोले कि हे पुत्रब्रह्महत्यातो सूर्य्य नारायणका दर्शन करतेही तुम्हारीनष्टहोगई अबजो सूर्य्यनारायणका आराधन करनेकी तुम्हारीइच्छाहै तोप्रथमदीक्षाग्रहण करो क्योंकि दीक्षाबिना उपासना नहीं होती अनेक जन्म के पुण्यसेसूर्य्यमें भक्तिहोतीहै जोपुरुष सूर्य्यनारायण से द्वेषरक्खें औब्राह्मण तथा वेदकी निन्दाकरैं उनको अवश्यवर्णसंकरजानो मायाके प्रभावसे पाखण्ड में अधम पुरुषों की प्रवृत्ति होती है जब थोड़ा सा पाप शेष रहै तब दीक्षाग्रहण की इच्छाहोतीहै इस संसारसागर में डूबतेहुये मनुष्योंको हाथ पकड़कर उद्धार करनेहारे एक सूर्य्यनारायणहैं इसलिये हे तंडीतुमदीक्षा ग्रहण करके सूर्य्य भगवान् की उपासना करो जिससे शीघ्रहीतुमपर अनुग्रह करैं यह सुन तंडीने पूछा कि महाराजकैसेमनुष्यदीक्षा ग्रहणके अधिकारी होते हैं औ दीक्षाग्रहण करनेके अनंतर क्या करना चाहिये यह आपअनुग्रहकर वर्णन करैं तबब्रह्माजीकहनेलगे कि हेतंडी मन बचन कर्मकरके हिंसानकरैसूर्य्यभगवानमें भक्तिरक्खैदीक्षायुक्तब्राह्मणोंकोनित्य नमस्कारकरैकिसीसेद्रोह नकरै सबदेवताओं सबलोकोंकोसूर्य्यरूप समझैमनुष्य पक्षी पशु देववृक्षपाषाण पिपीलिका आदि जगत्के सबजीव पदार्थ आ आत्माको सूर्य्यसेभिन्ननसमझैऔमनबचनकर्मकरकेजीवोंमेंपाप

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

बुद्धि न रक्खै वह दीक्षाका अधिकारीहोताहै जो गतिसूर्य्यनारा-
यणके आराधनसे प्राप्तहोतीहै वहन तो तपसे औ न यज्ञकरनेसे
मिलै जो सर्वप्रकारसे सूर्य्यनारायणका भक्तहोवह धन्यहै उसके
अनेककुलों का उद्धार होजाता है जो सूर्य्यनारायण की मूर्ति
स्थापनकरै वहसूर्य्यलोक में निवासकरै मन्दिरबनावै तोजितने
बर्षमन्दिरखड़ारहै उतनेहजारबर्षसूर्य्यलोकमें आनन्दभोगै जो
निष्कामउपासनाकरै वहमुक्तिपावैजो उत्तमलेपनसुंदरपुष्प औ
अति सुगंध धूपनित्य सूर्य्यनारायण के अर्पण करै वह यज्ञ के
फलको प्राप्तहोताहै यज्ञ में बहुत सामग्री चाहिये इसलियेदरिद्र
मनुष्य यज्ञ नहींकरसक्ते परन्तु भक्ति करिके दूर्वासे भी सूर्य्य-
नारायणका पूजनकरैं तो यज्ञसे भी अधिक फलपावैं हे तंडागंध
पुष्प धूप वस्त्र भूषण भांति २ के भोजन फल जो तुमको मिलैं
औ प्रिय हों वही भक्तिसे सूर्यनारायण को निवेदन करो तीर्थ
के जल दहीदूधघृत शहतसेस्नानकराओ गीतवाद्य नृत्यस्तुति
ब्राह्मण भोजन हवन आदि से भगवान् को प्रसन्न करो परन्तु
सबकाम भक्तिसे करो हमने सूर्यनारायणकाही आराधनकरके
सृष्टिरची है विष्णु उनके अनुग्रह से जगत् का पालन करतेहैं
औ रुद्र उनकी इच्छासे संहार करते हैं उनके तेजसेही राशि
नक्षत्र औ ग्रह प्रकाशितहैं तुमभी पूजन व्रत उपवासआदि से
सूर्यनारायण का आराधन करो जिससे सबदुःख दूरहोयँ ॥

साठवां अध्याय ॥

तंडीपूछतेहैं कि महाराज उपवासकरके सूर्यनारायण क्यों
कर प्रसन्नहोतेहैं औ उपवास करनेवाले पुरुषोंको कौन२ पदार्थ
त्याज्यहैं औ आराधनमें क्या २ करना चाहिये यह आप वर्णन
करैं यह तंडीकावचन सुन ब्रह्माजी कहनेलगे कि हे [illegible]

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पुष्पआदि करकेपूजन करनेसेहीसूर्य्यनारायण उत्तम फलदेतेहैं उपबासकरनेकरकेतोक्योंनमनोबांछितफलदेवैं पापोंसे उपावृत्त अर्थात् निवृत्तहोकर गुणोंकेसाथ जो निवास करनाहै उसको उपबास कहतेहैं जिसमें सबभोगोंका त्यागहै एकरात्रि दोरात्रि तीनरात्रि अथवा नक्तउपबासकर निष्कामहो मन बचन कर्म करके सूर्य्यनारायण के आराधनमें तत्परहोवह ब्रह्मलोकपावै सूर्य्यनारायण का आराधन बिना किये और किसीप्रकार से सद्गतिनहीं मिलती इसलिये पुष्प धूप चन्दन नैवेद्य आदि से सूर्य्यनारायणका यजनकरो औ उनकोप्रसन्नताकेलिये उपवास करो जो उत्तमपुष्प न मिलैं तो वृक्षोंके कोमलपत्र औ दूर्बा से पूजनकरोपुष्पपत्र फलजल जोमिलै वहीसूर्य्यनारायणकेअर्पण करो परन्तु भक्तिरक्खो जोसूर्य्यनारायण के मन्दिर में झाड़ूदे वहधूलि में जितनीकणिका हों उतनेबर्षस्वर्गमेंरहै गोचर्ममात्र भूमिभी जो मन्दिर में मार्जनकरै वह उसदिनकेकिये पापसे छुट जाताहै जो गोबर से मृत्तिका करके रंगोंकरके मन्दिर में लेपन करै वहसूर्य्यलोकमेंजाय जो जलसेछिड़कावकरै वह बरुणलोक मेंनिवासकरैजोलेपनकियेहुये मन्दिरमेंपुष्पछिड़कावै वह कभी दुर्गतिनपावै जो मंदिरमेंदीपक प्रज्वलितकरै वहसबऋतुओंमें सुख देनेहारा बिमान पावै मंदिर पर ध्वजाचढ़ावै औ उसकी पताका बायु से हिलै तो सबज्ञात औ अज्ञात पापध्वज चढ़ाने वाले के नष्ठ होजायँ जो गीत वाद्य औ नृत्य करके मन्दिर में उत्सव करै वहउत्तम बिमान में बैठै औ गन्धर्ब तथा अप्सरा उसके आगेगावैं औ नाचैं जो मन्दिर में पुराण बांचै वह उत्तम बुद्धिपावै औ जातिस्मरहोय सूर्य्यनारायण के आराधन से जो चाहो सो मिलसक्ताहै इनके आराधनसे कईमनुष्य गन्धर्बकई विद्याधर औ कईदेवता बनगयेहैं इनके आराधनसेही इन्द्रपद

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मिलताहै ब्रह्मचारी गृहस्थ औ बानप्रस्थों के ये ही उपास्य हैं औ संन्यासी भी इनके ही अनुग्रह से मुक्ति पाते हैं क्योंकि ये मोक्षका द्वारहैं इसप्रकार सबवर्ण औ आश्रमों के आश्रयसूर्य्य नारायणहैं हे तगडीअब हम काम्य उपवास औ फलसप्तमीका वर्णन करते हैं जिस फलसप्तमी के व्रत करने से सब पाप निवृत्तहोयँ औ सूर्य्यलोक मिलै भाद्रपद शुक्लचतुर्थीको एक बार भोजनकर पंचमीको अयाचित व्रतकरै फिर षष्ठीकोजित क्रोध औ जितेन्द्रिय होकर उपबास करै औ भक्ति से सब उपचारों करकेसूर्य्यनारायणका पूजनकररात्रिको स्थंडिलकेऊपर शयन करै सप्तमी को प्रभातही उठ स्नान कर पूजन करै औ खजूर नालिकेर आंब मातुलुंग आदि फल नैवेद्य लगावै ब्राह्मणोंको देवै औ आप भी फलहीखाय जो फल न मिलैं तो चावल अथवा गेहूंका आटा लेकर उसमें गुड़ मिलाय उसी से फल बनाकर घी में उतारलेवे औ वेही सूर्य्यनारायण को नैवेद्यलगावै फिर हवनकर ब्राह्मण भोजन करावै इसप्रकार एकबर्ष सप्तमी व्रत करके अन्तमें उद्यापनकरै गोमूत्र गोबर गोदुग्ध दही घृतकुशा का जल श्वेत मृत्तिका तिल औ सरसों का उबटन दूर्वा गौ के शृङ्ग धोने का जल औ चमेली के पुष्प इनसे स्नानकरै औ इन कोही प्राशनकरै औ सबप्रकार के फलउत्तम घर जो सबबस्तु ओं से पूर्णहो सबत्सागौ ताम्रपात्र लालरङ्ग के बस्त्र औ सुवर्ण के बनेहुये फल ब्राह्मणोंको देवै दरिद्र होय तो चांदी के अथवा आटा के फलबनाकर देवै सुबर्ण रत्न औ बस्त्र आचार्यको देवै औ ब्राह्मण भोजनकराय व्रत समाप्तकरै यह फल सप्तमी का विधानहै जो इसव्रत को करै वह पाप दरिद्र औ सब प्रकार के दुःखों से छुटै औ अन्तमें उत्तमबिमानमें बैठसूर्य्यलोकको जावै इसव्रत के करने से ब्राह्मण मुक्तिपावै क्षत्रिय इन्द्रलोक में औ

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

बैश्य कुवेर के लोकमें निवास करै औ शूद्र इस व्रतके करने से जन्मांतर में ब्राह्मण होय अपुत्रा स्त्री पुत्र दुर्भगा सौभाग्य औ कन्या इस व्रतसे उत्तम वर पावै विधवा इस व्रतको करै तो फिर किसी जन्म में विधवा न होय इस व्रतसे सब फल प्राप्त होतेहैं औ इस माहात्म्य के पढ़ने तथा सुनने से भी सब कार्य सिद्ध होते हैं ॥

इकसठवां अध्याय ॥

ब्रह्माजी कहतेहैं कि हे तंडी अबहम रहस्यसप्तमी व्रत का बिधान कहते हैं जिस व्रतके करने से सात अगले औ सात पिछले कुलों का उद्धार होय नियम से जो यह व्रतकरै वहधन पुत्र आरोग्य विद्या बिजय औ धर्म पावै नियम येहैं कि व्रतके दिन तैल को स्पर्श न करै नील वस्त्र न धारै आमले से स्नान न करै औ किसीसे कलह न करै नीलवस्त्र पहिनकर जोसत्कर्म करै वह निष्फल होताहै जो ब्राह्मण एकबार नीलबस्त्र पहिने तो एक उपवास करै औ पंचगव्य पानकरै तब वह शुद्ध होता है नीलका रंगजो रोम कूपमें चलाजाय तो तीन कृच्छ्रचांद्रायण करने से शुद्धि होतीहै जो भूल करके नीलके काष्ठसे दंतधावन करै वह दो कृच्छ्र चांद्रायण करके शुद्धहोय जहां नील एकबार बोया जाय वह भूमि बारह वर्ष तक अपबित्र रहती है यह तो नीलका दोष है औ सप्तमीको जो तैलका स्पर्शकरै उसकी प्रिय भार्य्या नष्टहोजाय इसलिये तेलको भी स्पर्श न करै व्रतकेदिन मांस न खाय मद्य न पीवै चंडाल औ रजस्वला स्त्रीसे संभाषण न करै किसीसेद्रोह औ क्रूरता न करै गीत न गावै नृत्य न करै बाजा न बजावै शवको न देखै वृथाहँसै नहीं स्त्रीके साथ शयन करै द्यूत न खेलै रोदन न करै दिनमें सोवैनहीं शिर से जूं न

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

निकालै असत्य न बोलै दूसरे का अनिष्ट चिन्तन न करै किसी जीवको ताड़न न करै अतिभोजन गलियों में घूमना दंभ शोक शठता औ क्रोध इनसब का यत्न से त्याग करै चैत्र से इस व्रत का आरम्भकरै सूर्य्य अर्य्यमा मित्र बरुण इन्द्र बिवस्वान् पर्जन्य पूषा भग त्वष्टा औ बिष्णु ये बारह सूर्य्य हैं इनका क्रमसे चैत्र आदि महीनों में पूजन करै सप्तमी के दिन भोजक को भोजन कराय घृत सहित पात्र औ एक माशा सुबर्ण देवै औ रक्त बस्त्र भी देवै यदि भोजकनमिलै तो पौराणिक ब्राह्मणकोही भोजन कराय घृतपात्र औ सुबर्णदेवै यह सप्तमी का माहात्म्य हमने वर्णनकिया जिसके श्रवणकरनेसे भी सूर्य्यलोक की प्राप्तिहोती है हे राजाशतानीक इतनाकह ब्रह्माजी अन्तर्द्धानभये औ तंडी भी सूर्य्यनारायण का आराधनकर अपने मनोबाञ्छित फलको प्राप्तभये॥

बासठवां अध्याय॥

राजा शतानीक कहते हैं कि हे सुमन्तु मुनि आप और भी सूर्य्यनारायण का प्रभाव वर्णनकरैं आपका अमृतसमानवचन सुनते२ मुझे तृप्ति नहीं होती यह राजा का वचन सुन सुमन्तु मुनिने कहा कि हे राजा इस विषयमें शंख औ द्विजकासंबादहै हम आपको श्रवण कराते हैं एक अति रमणीय आश्रम था जिसमें वृक्ष फलोंकेभार से झुकरहे थे कहीं मृग अपनेशृङ्गोंसे परस्पर खुजाते थे किसीओर मयूरोंका नृत्य औ भृङ्गोंके मधुर ध्वनिका कोलाहल हो रहाथा ऐसे मनोहर आश्रमके मध्य में अनेक तपस्वियों करके सेवित शंखमुनि बिराजमानथे उसअवसरमें भोजकों के कुमार उनके समीप गये औ विनय से सबने प्रार्थना करी कि महाराज वेदों में हमको सन्देह है वह आप

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

निवृत्त करैं यह उनकी प्रार्थना सुन प्रसन्नहो शंखमुनि उनको वेद पढ़ानेलगे एक दिन वे सब कुमार वेद पढ़तेथे उस समय परम तपस्वी द्विजनाम मुनि वहांआये शंखमुनि ने भी उनका बहुत आदर सत्कारकिया औ आसनपर बैठाय कुमारोंसेकहा कि भाई शिष्ट पुरुष के आगमन से अनध्याय होताहै इसलिये तुम अपना पढ़ना बन्द करो यह सुनतेही कुमारों ने अपनी २ पुस्तकेंबांधलीं द्विजमुनिने शंखसेपूछा कि ये बालक किसकेहैं औ क्या पढ़तेहैं यहसुन शंखमुनिबोले कि महाराज ये भोजकों के कुमारहैं औ कल्पसूत्र सहित चारोंबेद सूर्यनारायणके पूजन औ हवनका विधान प्रतिष्ठा विधि रथयात्राकी रीति औ सप्तमीतिथिका कल्प ये पढ़तेहैं तब द्विजमुनिने पूछा कि सप्तमीव्रत का क्याबिधानहै सूर्य मन्दिरमें गंध पुष्प दीप आदिदेनेसे क्या फलहोता है किस व्रत औ दानसे सूर्य भगवान् प्रसन्नहोते हैं औ कौन पुष्प धूप औ बलिदेनेचाहिये यहसब हमकोआपकथन करैं औ सूर्यनारायणका माहात्म्य भी विशेष करके वर्णन करैं यह द्विज मुनिका बचन सुन शंखमुनि बोले कि महाराज शांब औ वशिष्ठका सम्बाद हम वर्णन करतेहैं एकसमय वशिष्ठजीके आश्रममें शांबगये औ उनके चरणोंमें प्रणामकिया वशिष्ठजीने भी उनका बहुत सत्कारकिया औ अपने समीप बैठाकर पूछा कि हे शांब तुम्हारा सबदेह कुष्टसेफटगयाथा वह क्योंकरअच्छा भया औ यह अति उत्तम रूप औ तथा अधिक तेज किसकर्म के करने से पाया यह कहो यह वशिष्ठजीकी आज्ञा पाय विनयसे शांबने कहा कि महाराज सूर्यभगवान् का मैंने आराधन किया उससे मुझे उन्होंने साक्षात् दर्शनदिये औ उनसे वरभी पाया यहसुन फिर वशिष्ठजीनेपूछा किसविधिसेतुमनेआराधन किया औ सूर्यनारायण का साक्षात् दर्शन क्योंकर भया तब

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

शांबनेकहा कि महाराजआपप्रीतिसे श्रवणकरैं मैं सब वृत्तान्त विस्तारपूर्वक वर्णनकरताहूं पूर्वकालमें मैंनेदुर्वासामुनि से उपहास्यकियाइसलियेउननेक्रोधकर मुझेशापदिया कि कुष्टीहोजा तब मेरेशरीरमें कुष्ट रोगहुआ औ मैंने अति व्याकुल हो अपने पिता श्रीकृष्ण भगवान् से कहा कि महाराज दुर्वासा मुनि के शापसे मैं कुष्टरोगकरके बहुत पीड़ितहूं शरीरमेरागलताहै स्वर दबा जाताहै पीड़ासे प्राण निकलतेहैं अब आपकी आज्ञापाय प्राणत्यागकियाचाहताहूं आपभीकृपाकरयहआज्ञामुझे देवेंकि मैं इसदुःखसे छूटूं यह मेरा दीनवचनसुन पिताने क्षणमात्र विचारकरकहा कि हे पुत्र धैर्यकर घबरा मत धैर्य त्यागनेसे रोग अधिकसताताहैभक्तिसे देवताकाआराधनकरो जिससेसब व्याधिनिवृत्तहोयहपिताकावचनसुनमैंनेकहाकिमहाराज ऐसाकौन देवताहै कि जिसकेआराधनसे यहदुष्टरोग निवृत्तहोय आपही बतावें तब उननेकहा कि हे पुत्र एकसमय याज्ञवल्क्य मुनिने ब्रह्मलोकमेंजाकर ब्रह्माजीको प्रणामकर विनयसेपूछा किमहाराज मोक्षकी इच्छा वाला पुरुष किस देवताका आराधनकरै औ अक्षय स्वर्गकीप्राप्तिकिसकी उपासनाकरनेसेहोययहविश्व किसने उत्पन्नकिया औ किसमेंलीनहोताहै यहआपवर्णन करैं यह याज्ञवल्क्य मुनिका प्रश्नसुन ब्रह्माजीने कहा कि आपने बहुत अच्छी बात पूछी यह प्रश्नसुन हम बहुत प्रसन्नभये अब हम तुम्हारे प्रश्नका उत्तर कथनकरतेहैं जो देवता अपने उदय के साथही सब जगत् का अन्धकार हरलेता है तीनोंलोकों को प्रकाशित करताहै अनादि निधन अव्यय शाश्वत अक्षय कर्म्म साक्षी सर्वदेवता औ जगत्का स्वामी पितरोंका भी पिता देवताओंका भी देव जगत्का आधार सृष्टिस्थिति औ संहारकरने हारायोगीपुरुष वायुरूपहोकर जिसमें लीन होजातेहैं जिसके

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हजार किरणों में देवता मुनि औ सिद्ध निवास करते हैं जैसे वृक्ष की शाखाओं में पक्षी जनक व्यास शुकदेव आदि योगी जिसके मण्डल में प्रविष्ट भयेहैं वे प्रत्यक्ष देवता सूर्य्यनारायण हैं ब्रह्मा विष्णु शिव आदि देवताओंका नाम मात्र श्रवणमेंआता है सबके दृष्टिगोचर नहीं होते औसूर्य्यनारायणसबको प्रत्यक्षहैं इसलिये सब देवताओं से उत्कृष्ट हैं इसलिये हे याज्ञवल्क्य तुमभी सूर्य्यनारायण को छोड़ और किसीकी उपासनामतकरो इस प्रत्यक्ष देवके आराधन से सब फल प्राप्त होसक्ते हैं यह ब्रह्माजीका बचनसुन याज्ञवल्क्यमुनिबोले कि महाराजआपने बहुत उत्तम उपदेश मुझे किया सूर्य्यनारायण का प्रभाव मैंने पहिलेभीबहुत बार श्रवणकियाहै जिनके दक्षिण अंग सेविष्णु वामसे आप औ ललाट से रुद्र उत्पन्न भयेहैं फिर कौन देवता उनकी तुल्यता करसक्ताहै औउनकेगुणकिससेवर्णनकिये जांय जिनको एक बार प्रणाम करने से ही मुक्ति मिलती है अब मैं उनके आराधन का प्रकार सुनना चाहताहूं किजिससे संसार सागरका पार पाऊं कौनसे व्रत उपबास दान होम जप आदि करनेसे सूर्य्यनारायण प्रसन्न होकर समस्त क्लेश हरते हैं यह आप कृपाकर मुझे उपदेशकरैं यहभक्तिसे भराहुवायाज्ञवल्क्य मुनिका बचनसुन प्रसन्नहो ब्रह्माजी कहनेलगे कि हेयाज्ञवल्क्य जो सूर्यनारायणके आराधनकाउपाय तुमपूछतेहो वहहमवर्णन करतेहैं एकाग्रचित्तहोकर सुनो आदि अंतसेवर्जित सर्वव्यापीपर-ब्रह्मलीलासे प्रकृतिपुरुषरूपधारसंसारउत्पन्न करनेहारा अक्षर सृष्टिकेरचनेके समय ब्रह्मा पालनके अवसरमें विष्णुऔ संहार कालमें रुद्ररूप धारनेहारा औ सबदेवोंकरके पूजित सूर्यहैअब हमसूर्य्यनारायणकोप्रणामकर उनकेआराधनका अतिगुप्तक्रम कहतेहैं जो हमकोसूर्य्यनारायणने प्रसन्नहोअपनेमुखसेकहाहै॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

तरेसठवां अध्याय॥

ब्रह्माजी कहतेहैं कि हे याज्ञवल्क्य एक समय हमने स्तुति करके सूर्य्यनारायण से पूछा कि महाराज वेद औ वेदके अंगों में आपकाही प्रतिपादनहै शाश्वत अज परब्रह्मस्वरूपआप हैं यह जगत् आपमें स्थितहै चारों आश्रम आपकी अनेकमूर्त्तियों का पूजन करतेहैं सबके माता पिता औ पूज्य आपहैं फिरआप किस देवताका ध्यान औ पूजन करतेहैं यह आप हमारासंदेह निवृत्तकरैं यह सुन सूर्य्यनारायण हमको कहनेलगेकिहे ब्रह्माजी यह अतिगुप्त बातहै परन्तु आपहमारे परमभक्तहैं इसलिये वर्णन करतेहैं जो परमात्मा सब भूतों में व्याप्त अचल नित्य सूक्ष्मओ इन्द्रियों करके अगम्यहै जिसको क्षेत्रज्ञ पुरुषहिरण्यगर्भ महान् प्रधान बुद्धिआदि अनेकनामोंसे पुकारतेहैं जोनिर्गुण होकर भी अपनी इच्छा से सगुण होजाता है सबकासाक्षीहै आप कोई कर्म्म नहींकरता औ न कर्म्मफलसे लिप्तहोताहैजिस परमात्मा के हज़ारों शिर नेत्र नासिका कान मुख औहजारोंही हाथ पैरहैंजो सब जगत्को आवरण करके स्थितहै सबशरीरों में एकाकी बिचरताहै शरीर औ शुभ अशुभकर्म्मकोक्षेत्रकहतेहैं उनके जाननेसे परमात्मा क्षेत्रज्ञ कहाताहै अव्यक्त पुरमें शयन करने से पुरुष बहुत रूपधारनेसे विश्वरूप औ सर्वोत्तम होने करके महापुरुष कहाताहै वह एकही गुणोंके अनुसार अनेक रूप धारताहै जिसप्रकार एकही वायु प्राण अपान आदिरूप धारताहैऔ जिसविधि एकही अग्निके स्थान भेदसे अनेकनाम होजाते हैं इसीभांति परमात्मा भी अनेक भेदों से बहुत रूप धारता है जिसप्रकार एक दीप से हज़ारों दीप प्रज्वलित होजातेहैं इसी विधि एक परमात्मा से सब जगत् उत्पन्न होता है

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

जब वह अपनी इच्छासे जगत्का संहार करताहै तब एकाकी रहजाताहै जगत्में कोईस्थावरजंगम पदार्थनहींहैजोपरमेश्वर से हीनहो अर्थात् परमात्मा सबमें व्याप्तहैउसअक्षयअप्रमेयओं सर्वगत परमात्मा से त्रिगुण स्वरूप औ सर्व कारण अव्यक्त उत्पन्न भयाहै जिससे बढ़कर कोई दूसरा नहीं है संपूर्ण देवता औ अनेक मतोंमें स्थित सब वर्णाश्रमके मनुष्य उस परमात्मा का पूजन कर उत्तम फलको प्राप्तहोतेहैं उसी आत्मस्वरूपपर परमेश्वरका हम ध्यान करतेहैं औ सूर्य रूप अपने आत्मा का ही पूजन करतेहैं हे याज्ञवल्क्यमुनि यह बात सूर्यभगवान् ने अपने मुख से हमको कथन करी है॥

चौसठवां अध्याय॥

ब्रह्माजी कहतेहैं कि हे याज्ञवल्क्य पद्म रूप सूर्यभगवान् को कमल पुष्प औ गुग्गुल के धूप से हम पूजते हैं व्योम रूप सूर्य को चमेली के पुष्प औ विजय नामक धूप से शिवजी का पूजन करते हैं औ चक्र रूप सूर्य भगवान् का नील कमल औ अगुरु धूपसे विष्णु भगवान् यजन करते हैं कस्तूरी सिल्हक नाम सुगन्धि द्रव्य चंदन अगुरुकपूर नागरमोथाओं शर्करा इन सबको मिलानेसे विजयधूपहोताहै हमने सूर्यनारायण से पूछा कि कौन २ पुष्प आपको प्रियहैं तबउनने जो २ बताये उनका हम वर्णन करतेहैं मल्लिका पुष्प सूर्यनारायण को अर्पण करनेसे उत्तम भोग मिलते हैं श्वेत कमलों से सौभाग्य कुटज पुष्पोंसे अक्षय ऐश्वर्य्यमंदार अर्थात् आकके पुष्पोंसे कुष्ट रोग का नाश औ बिल्वपत्रों करके पूजन करने से लक्ष्मी की प्राप्ति होतीहै आकके पुष्पोंकी माला से धन मिलताहै बकुलपुष्पों की माला से कन्या का लाभ पलाश केपुष्पोंसे अरिष्ट निवृत्ति औ

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अगस्त्य पुष्पोंसें पूजाकरै तोसूर्यनारायणका अनुग्रहहोय कर-
वीर के पुष्प जो सूर्यभगवान् के समर्पण करै वह उनका गण
होय कमल के हज़ार पुष्प चढ़ावै तो सूर्यलोक में निवास करै
उत्तम गंधसे लेपन करै तोसद्गतिपावै सूर्यभगवान्के मंदिरको
जोमार्जन कर गोबरसे लीपै वह सब रोगों से मुक्त होय औ
बहुत सा धनपावै औ भक्ति करके गेरू से लेपन करै तो बहुत
लक्ष्मीपावै केवलमृत्तिकासेही मंदिरमें लेपनकरै तोअठारहकुष्ठों
सेमुक्तिहोयसबपुष्पोंमेंकरवीरकेपुष्पऔ सबविलेपनोंमेंरक्तचंदन
उत्तमहैं इनसे अधिक कोईवस्तु सूर्यनारायण कोप्रियनहीं कर-
वीर पुष्पोंसेजो सूर्यभगवान्का पूजनकरै बहसंसारके सबसुख
भोगकर स्वर्ग में बासकरै मंदिर में लेपनकर मंडल बनावै तो
सूर्यलोक पावै एक मंडल बनावै तो धर्महोय दोमंडल रचने से
आरोग्य तीनसे अविच्छिन्न संतान चारसे लक्ष्मी पांचसे धन
औ धान्य छःसे आयुर्बल औ यशऔ सात मंडल रचने से आ-
युष् धन पुत्र औ राज्यपावै औ अंतमें सूर्यलोक को प्राप्त होय
मंदिर में घृतका दीपकप्रज्वलितकरै तोनेत्ररोग न होय महुवे
के तेल के दीपसे सौभाग्य मिलै तिल तैलके दीपसे सूर्यलोक
की प्राप्ति होय पहिले गंधपुष्प धूपदीप आदिउपचारोंसेपूजन
कर भांति २ के नैवद्य लगावै पुष्पोंमें चम्ली औ कनेरके पुष्प
धूपों में विजय धूप गंधों में केसर लेपों में रक्त चंदन दीपों में
घृत दीप औ नैवेद्योंमे मोदक सूर्य नारायण को परम प्रिय हैं
इन सेही पूजन करना चाहिये पूजन के अनंतर प्रदक्षिणा औ
नमस्कार करके हाथमें सिद्धार्थ अर्थात् श्वेत सर्षपका एकदाना
औ जल लेकर सूर्यभगवान्के सम्मुख खड़ाहो अभीष्ठ कामना
को हृदय में चिंतन करताहुवा सिद्धार्थ सहित जलपीजावै परंतु
दांतोंसे स्पर्श न होय दूसरी सप्तमी को दोदाने श्वेत सर्षप के

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

औ जलपानकरै इसी प्रकार सातवीं सप्तमी पर्यंत एक २ दाना बढ़ाताजाय औ इस मंत्रसे अभिमंत्रण करके पान करै सिद्धार्थ कस्त्वंहि लोके सर्वत्र श्रूयसे यथा तथा मामपि सिद्धार्थ मर्थतः कुरुतांरविः। पीछेजप औ हवनकरै औ यहभी विधिहै कि प्रथम सप्तमी को जलके साथ सिद्धार्थ पान करै दूसरी को घृत के साथ आगे शहत दही दूध गोबर औ पंचगव्य के साथ क्रम से सातवीं सप्तमी तक पान करै इस प्रकार जो सर्षप सप्तमी का व्रत करै वह बहुत धन पुत्र औ ऐश्वर्य पावै उसके सब अर्थ सिद्ध होंय औ सूर्यलोक में निवास करै ॥

पैंसठवां अध्याय ॥

ब्रह्माजी कहतेहैं कि हे याज्ञवल्क्य अब इस स्वप्न का फल कहतेहैं सप्तमी का उपवास कर विधि पूर्व्वक पूजन जप होम आदि करै औ रात्रिके समय सूर्यनारायण का स्मरण करताहुवा कुशकी शय्यापर शयन करै तब रात्रि को स्वप्न होताहै जो स्वप्न में सूर्यका उदय इंद्रध्वज औ चंद्रमा को देखै उसको सब समृद्धि प्राप्तहोंय शंख माला बीणाश्वेतकमल चामर दर्पणपुत्रकीप्राप्ति देखने से औ रुधिर के पान करने औ श्रवण से ऐश्वर्य्य होय घृत करके प्लुत प्रजापति के दर्शन से पुत्रकी प्राप्ति होय वृक्ष पर चढ़ै अथवा अपने मुखमें महिषी गौ अथवा सिंहीका दोहन करै तो ऐश्वर्य पावै जिसकी नाभि से धनुष औ बाण निकलैं उन करके सिंह अथवा सर्पको मारै वह लक्ष्मी पावै सुवर्णचाँदी के पात्रमें अथवा कमल के पत्रमें जो खीर खाय उसकोबलकी प्राप्तिह य द्यूतवाद औ युद्धमें जयहोय तो उत्तम होताहै अग्नि को ग्रास करजायतोजठराग्निकी वृद्धिहोय अपनेअंग प्रज्वलित होंय औ दाढ़ियों का वेध होयतो संपत्ति मिलै श्वेतवर्णके वस्त्र

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पुष्पमाला अन्न औ पक्षियोंका दर्शन श्रेष्ठहै शरीर में विष्टा का लेपकरै शिर औ भुजा अनेक देखपड़ैं अगम्या स्त्रीसे गमन करै श्लोक पढ़ै तौ शुभ है देवता ब्राह्मण आचार्य गुरु वृद्ध तपस्वी स्वप्नमें जो कुछ कहदेवैं वह सत्य होताहै शिर कटजाय अथवा फूटजाय पैरोंमें बेड़ी परजांय तो राज्य मिलै रोदन करै तो हर्ष की प्राप्ति होय घोड़ा बैल औ श्वेतहाथीके ऊपर निर्भयहोकर जोचढ़ै वहराज्यपावै राजाको अथवा कमलको देखैतो लाभहोय ग्रह औतारा ओं को ग्रास करै पृथिवी को उलट देवै औ पर्वतों को उखाड़ै तो राज्य पावे पेटसे आंत निकल पड़ै औ उनकरके वृक्ष को लपेटै नदी अथवा समुद्र को पान करै पर्वत समुद्र औ नदीका लंघन करै तो बहुत ऐश्वर्य पावै सुन्दर स्त्री शरीर में प्रवेश करै बहुत सी स्त्री आशीर्व्वाद देवैं शरीरको कृमि भक्षण करै स्वप्नमें स्वप्न का ज्ञान होय अभीष्ठ बात सुनने औ कहने में आवै औ मंगलदायक पदार्थोंका दर्शन तथा प्राप्ति होय तो धन औ आरोग्य की प्राप्ति होय जिन स्वप्नों का फल राज्य औ ऐश्वर्यकी प्राप्ति है वे स्वप्न रोगी देखे तो रोग से छूटै इस प्रकार स्वप्न देख प्रभातही स्नान कर राजा ब्राह्मण अथवाभोजकको स्वप्न सुनावै॥

छियासठवां अध्याय॥

ब्रह्माजी कहते हैं कि हे याज्ञवल्क्य सप्तमी का व्रत कर दूसरे दिन स्नान पूजन जप हवन आदि करके भोजकपुराणवेत्ता औ वेद के जाननेहारे ब्राह्मणों को भोजन करावै रक्तवस्त्र दूध देनेवाली गो उत्तम भोजन औ जो २ पदार्थ अपने कोप्रिय होवें सब भोजकको देवै भोजक न मिले तो पौराणिक को औ पौराणिक न प्राप्त होय तौ सामवेद के जाननेहारे ब्राह्मण

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

को सब बस्तु देवै भोजन भी पहिलेभोजकको करावै पीछे पौराणिक औ वेदपाठियों को करावै इस प्रकार भक्तिसे सातसप्तमी करै तो अनन्त सुख पावै औ दश अश्वमेध के फल को प्राप्त होय कोई ऐसा कार्य नहीं जो इसव्रतके करने से सिद्ध न होय कुष्ट आदि रोग इस व्रतसे ऐसे डरते हैं जैसे गरुड़ से सर्प व्रत नियम औ तप करके इसप्रकार सात सप्तमी व्रत करै वह विद्या धन पुत्र भाग्य आरोग्य औ धर्म पावै औ अंतमें सूर्य लोक को जाय इस विधि को जो श्रवणकरै अथवा पढ़ै वह भी सूर्यनारायण में लीन होजाय यह पुराण जिन २ देवता औ मुनियों ने सुना वे सब सूर्यनारायण के भक्तहोगये यह आर्ष आख्यान हमने कहाहै इसको सूर्यभक्तके बिना दूसरे पुरुष के आगे न कहना जो पुरुष इस आख्यान को सुनै औ जो सुनावै वे दोनों सूर्य लोक को जांय रोगी इसको श्रवण करै तो रोगसे मुक्तहोय यह पढ़कर यात्रा करै तो मार्ग में कोई क्लेश न होयऔ यात्रा सफलहोय गर्भिणी स्त्री सुनै तो सुखसे पुत्र जनै बंध्या सुनै तो संतान पावै हे याज्ञवल्क्य यह सब कथा सूर्य्यनारायण ने हमको कही औ हमने तुमको श्रवण कराईहै अब तुमभी भक्ति से सूर्यभगवान का आराधन करो जिससे सर्व पातक निवृत्त होंय वह द्वादशात्मा सूर्यनारायणही जगत्का माता पिताबंधु औ गुरू है वह सदा तुम्हारे ऊपर अनुग्रह करै ॥

सतसठवां अध्याय॥

ब्रह्माजी कहते हैं कि हे याज्ञवल्क्य जिन नामों से सूर्य भगवान् प्रसन्न होतेहैं वे नाम हम आपको उपदेश करतेहैं।नमः सूर्यायनित्याय रवयेऽर्कायभानवे। भास्करायपतङ्गायमार्त्तण्डाय विवस्वते ते आदित्यायादिदेवाय नमस्तेरस्मिमानिने। दिवा-[illegible] हुवा य अग्नये मिहिरायच २ प्रभाकरायमित्राय नमस्ते

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

दितिसम्भवे। नमोगोपतयेनित्यं दिशांचपतयेनमः ३ नमोधात्रे विधात्रेच अर्यम्णेवरुणायच। पूष्णेभगायमित्राय पर्जन्यायांश वेनमः ४ नमोहेमद्युतेनित्य धर्मायतपनायच। हरायहरिताश्वाय विश्वस्यपतयेनमः ५ विष्णवेब्रह्मणेनित्यं त्र्यम्बकायतथानमः। नमस्तेसर्वलोकेश नमस्तेसप्तसप्तये ६ एकस्मैहिनमस्तुभ्य मेक-चक्ररथायन। ज्योतिषांपतयेनित्यं सर्वप्राणभृतेनमः ७ हिताय सर्वभूतानां शिवायार्तिहरायच। नमःपद्मप्रबोधाय। नमोद्वादश मूर्तये ८ गाधिनायनमस्तुभ्यं नमस्तारासुतायच। धिषणायनमो नित्यं नमःकृष्णायनित्यदा ९ भीमजायनमस्तुभ्यं पावकायचवै नमः। नमोस्त्वदितिपुत्राय नमोलक्ष्म्यायनित्यशः १० ॥ हे याज्ञ-वल्क्य सृष्टि रचने के समय सूर्यनारायण के ये नाम हमने कहे हैं जो इनको सायंकाल औ प्रातःकाल पढ़े वह हमारी भांति सब मनोबांजित फलपावै इनके पाठसे धर्म अर्थ काम आरोग्य राज्य औ विजय पावै बंधन में होय तो छुटजाय औ सब पापों से मुक्त होजाय यह परम रहस्य हमने कहा है ॥

अठसठवां अध्याय ॥

सुमंतुमुनि कहतेहैं कि हे राजा शतानीक इसप्रकार ब्रह्माजी से उपदेश पाय याज्ञवल्क्य मुनि ने सूर्यभगवान् का आराधन किया औ सालोक्य मुक्तिपाई इसलिये आपभी सूर्यनारायणका आराधनकर परमपद पाओ जो देवताओंको भी दुर्लभहैयहसुन राजाने पूछा कि महाराज जंबूद्वीपमें सूर्यनारायणका स्थान कहां है जहांआराधन करनेसे शीघ्रही मनोवांछितफलपावैं राजाका बचनसुनि मुनिकहनेलगे कि हे राजा इसद्वीपमें तीन स्थान सूर्य नारायण के मुख्यहैं एक इंद्रबन दूसरा मुंडार औ तीसरा तीनों

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

लोकों में प्रसिद्ध काल प्रिय नामक स्थान है एकस्थान इसद्वीप में चंद्रभागा नदीके तटपर और भीहै जिसको सांबपुर कहतेहैं जहां सांबकी भक्तिसेलोकानुग्रहके लिये सूर्यनारायण मित्ररूप सेनिवासकरतेहैं औ जोभक्तिसेपूजनकरैउसकोग्रहणकरतेहैं यह सुमंतुमुनिसेसुनि राजा शतानीकने पूंछा कि महाराज वहसांब कौनथा औ किसका पुत्रथा सूर्यभगवान्ने उसकेऊपर क्योंकर अनुग्रह किया यह आप कृपाकर वर्णनकरैं यह राजा का बचन सुन सुमंतु मुनि कहनेलगे कि द्वादश आदित्य जगत् में प्रसिद्ध हैं उनमें से विष्णु नाम आदित्य श्रीकृष्ण रूपसे जगत् उत्पन्न भये उनकी जांबवतीनाम भार्यासे सांबनाम पुत्रभया वहपिता के शापसे कुष्टीहोगया तब सूर्यनारायण का आराधनकर रोग से मुक्तभया उसीने अपनेनामसे नगरबसाय उसमें सूर्यनारायण का स्थापनकिया है राजाने पूछा कि महाराज ऐसाकौन अपराध सांबसे बनपड़ा कि पिताने दारुण शापदिया थोड़े से अपराधपर तौ पिता पुत्रको शाप नहीं देता तब सुमंतुमुनिबोले कि हे राजा यह वृत्तांत हम विस्तारसे वर्णनकरते हैं सावधान होकर सुनो एक समय बसंतऋतुमें रुद्रकेअवतार दुर्वासामुनि तीनों लोक[illegible] ये द्वारकामें गये उससमय सांबने उनको देखा कि [illegible]रीर कृशहै नेत्रपिंगलहैं मुख अतिकुरूप है [illegible] के अभिमान से सांबने दुर्वासा मुनि का अनु[illegible]ल करी उनके मुखके तुल्य अपना मुख भी विकृ[illegible]न्ही की भांति चलने लगा यह देख औ सांबको [illegible]पन का अति गर्बजान क्रोधकर काँपतेहुये दुर्वासा [illegible]कि हे सांब हमको कुरूप देख औ अपने को अति सांब[illegible]रूान तैंने हमारा अनुकरण किया इसलिये बह[illegible] हुवा इसलिये [illegible] जायगा ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

उनहत्तरवां अध्याय ॥

सुमंतु मुनि कहतेहैं कि हे राजा इसीप्रकार नारद मुनि भी सब ऋषियों को साथले श्री कृष्ण भगवान् के दर्शन के लिये कभी २ द्वारका में जाया करते जब नारद जी वहां जाते तब प्रद्युम्न आदि यादव कुमार पाद्य अर्घ्य से उनका पूजन करते परन्तु भावीकेबलसे औ रूपकेगर्बसे सांब कभी उनका सत्कार नहीं करता सदाअवज्ञाही करता औ खेलमेंलगारहता उसका यह अविनय देख नारद मुनिने अपने मनमें विचार किया कि यह सदाहमारा अनादरकरताहै इसलिये इसकागर्ब दूरकरना चाहिये यह मनमें ठान श्री कृष्ण भगवान् के समीप गये औ उनसेएकांतमेंकहाकि यहआपकापुत्र सांबअतिरूपवान्है इ... तुल्य दूसरा पुरुष त्रैलोक्य में नहीं इसलिये आ... आयोग्य हजार रानी इसपरमोहितहैं औ दिनरात इसकी ... औ सब पापों हैं यह नारद की बाणीसुन श्रीकृष्ण भगवान् ने ... कि स्त्रियों को कुछ विवेक तो होताही नहीहै रूप ... देख अवश्य उनकाचित्त चंचलहोजाताहै इसलिये ... निश्चयकर व्यभिचारदोषसे स्त्रियोंकी र... मनमें विचार नारद मुनि से कहा कि अ... क इसप्रकार ब्रह्माजी निश्चय क्योंकर होय तब नारदजीने व... भगवान् का आराधन निश्चयकरादेवेंगे इतनाकह वहांसे चल... ापभी सूर्यनारायणका तर फिर द्वारकामें आये तब सब ऋतुओं... को भी दुर्लभहैयहसुन कमलोंसेपरिपूर्ण वापियोंकरके शोभायमा... ारायणकास्थान कहां के मधुरशब्दोंसे मनोहररैवतक पर्वतकेबन... तफलपावै राजाका समेत श्रीकृष्णचंद्र बनविहार करतेथे ब... ीपमें तीनस्थान सूर्य क्रीड़ाकरी पीछे मनोहर वृक्षोंकेनीचेबैठ अ... डार औ ती... रा तीनो

Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

उत्तम२ वस्त्र भूषणोंसे अलंकृत अपनी रानियों समेत मदिरापान करनेलगे उस उत्तम मदिरा के पानसे सब स्त्री मत्तहोगईं इस अवसर में नारदजी ने सांबसे कहा कि तुम को श्रीकृष्णचंद्र बुलातेहैं यहां वृथा क्यों बैठेहो यह नारदजी से सुन सांब श्रीकृष्ण भगवान् के समीप गया औ प्रणामकर सन्मुखखड़ा भया परंतु नारद का छल न समझा उन सब स्त्रियों ने भी सांब को उस अवस्था में देखा औ उसका रूप औ यौवन देख उनका चित्त चंचलहुवा मद्यपान से लज्जानहीं रहती औ रूपवान पुरुष को देख स्त्रियों की योनिमें क्लेदन होताहै उत्तम बारुणीका पान स्वादिष्ट मांस का भोजन मनोहर सुगंधिद्रव्य का शरीर में लगाना औ अच्छे २ वस्त्र भूषण पहिनना इन सबसेकामका सेरेपन होताहै इसलिये जो पुरुष स्त्री का पातिव्रत्य चाहै तो यत्न का इससे उसको बचावै इस अवसर में सांब को पहिले अपराध सांबरद मुनि भी वहां आये नारद को देख मदसेविअपराधपर तो स्त्री सब उठीं औ मुनिको प्रणाम किया श्रीकृष्ण कि हे राजा यो देखा कि सांब को देख सबका वीर्य स्खलित होकर सुनो यों को भेदन कर उनके आसनो प गिराहै यह तीनों लोक भगवान् ने शाप दिया कि तुम्हारा चित्त हमको देखा कि पुरुष में आसक्त हुवा इसलिये तुम भी पतिलोककी है प्राप्ति न होगी औ अंतमें चोरों के वश पड़ोगीसुअनु कहतेहैं कि हेराजा उसी शाप से श्रीकृष्ण भगवान् भी विकाने के अनंतर उन सब स्त्रियों को अर्जुन के देखते २ सांबको गये औ उन में जो रुक्मिणी सत्यभामा जांबवती दुर्वासा चित्तथीं वे इस शाप से बचीं इसप्रकार सब स्त्रियोंको को अति र सांब को भी शापदिया कि तेरा अतिरूप देखइनको इसलिये कुष्टी होजा यह पिताका वर सुन हँस

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कर सांबने कहा कि महाराज मेरा तो कुछ दोष नहीं मेरा चित्त तो स्थिरहै इसी अवसर में दुर्वासा मुनि का भी सांबको शाप हुवा औ सांबनेही फिर भी दुर्वासासे छेड़करी तब उनके शापसे लोह का मूसल उत्पन्न भया जिससे सब यादववंश का क्षय हुवा इसलिये बुद्धिमान्पुरुष देवतागुरुब्राह्मण आदिकी अवज्ञा न करैं सदा इनके आगे नम्रही रहैं हे राजा दो श्लोक ब्रह्माजी ने महादेवजीके सम्मुख पढ़ेथे क्या वे आपनेनहीं सुनेहैं॥योधर्म शीलोधृतिमानरोषी विद्याविनीतोनपरोपतापी। स्वदारतुष्टःपर दारवर्जीनतस्यलोके भयमस्तिकिंचित् १ नतथाशशीनसलिलं नचंदननैवशीतलाछाया प्रह्लादयंतिपुरुषं यथाहितामधुरभाषिणीवाणी २ अर्थ जो पुरुष धर्मात्मा धैर्यवान् क्रोध रहित विद्याविनीत दूसरे को संताप नहीं देनेहारा अपनीस्त्रीसेसंपुष्ट औ परनारीसे विमुखहोउसको जगत्मेंकुछभी भयनहींहोताहै पुरुषों को चंद्रमा चंदन शीतलजल औ ठंढी छाया से भी ऐसा आह्लाद नहीं होता जैसा हित औ मीठे वचन सुनने से होताहै देख हेराजा इस प्रकार श्रीकृष्णचंद्र के औ दुर्वासा मुनि के शापसे निश्चसांब को कुष्ट भया औ फिर भी सूर्यनारायण का आराधनकरे मनरूप औ आरोग्यसांबने पाया तबही अपने नामका नगरबसाय निश सूर्य भगवान्का स्थापन किया॥

सत्रवां अध्याय॥

राजा शतानीक पूछतेहैं कि महाराज जो चंद्रभागा नदीके तटपर सांब सूर्य नारायण को स्थापन किया तो वह स्थान प्राचीन नहीं हुवा फिर आप उसका इतना महात्म्य क्यों कर कहते हैं यह राजा का संदेह सुनसुमंतु मुनिनेकहा कि हेराजा स्थान तो पुराण का वहां सनातन है सांबने पहले स्था

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

किया है इसका हमविस्तार से वर्णनकरतेहैं प्रीतिसेसुनोइस स्थान में परब्रह्म स्वरूप जगत् के स्वामी श्रीसूर्यनारायण ने मित्ररूप से तप कियाहै औ सबदेवता तथा मनुष्योंको सिरज कर आपभी बाराहरूपधार अदिति के गर्भसे उत्पन्नभयेइसी से आदित्य कहाये इंद्र धाता पर्जन्य पूषा त्वष्टा अर्यमा भग विवस्वान् अंशु विष्णु बरुणऔमित्र येबारह सूर्यभगवान्की मूर्तिहैं इनने सब जगत् व्याप्तकररक्खाहै इनमेंसेपहिलीइंद्र नामक मूर्ति देवराजमें स्थितहै औ सबदैत्यदानवोंका संहार करतीहै दूसरी धातानामकमूर्त्ति प्रजापतिमेंस्थितहोकर सृष्टि रचती है तीसरीपर्जन्यनाममूर्त्ति किरणोंमें स्थितहोकर अमृत वर्षतीहै चौथीपूषानाम मूर्ति मंत्रोंमें स्थितहोकर प्रजाओं का पोषण करतीहै पांचवींत्वष्टानाममूर्त्तिबनस्पति औ ओषधियों में स्थितहै छठोमूर्ति प्रजाकासंवरणकरनेकेलियेपुरोंमें स्थित है सातवीं भगनाम मूर्ति पृथिवीमें औपृथिवी केधर्म्मोंमें स्थित है आठवींविवस्वान्नाममूर्ति अग्निमेंस्थितहै औ जगत्का नेत्र रूपहैनवीं अंशुनामकमूर्ति सूर्यमेंस्थितहै औ जगत् का आप्यायन करतीहै दसवीं विष्णु नामक मूर्ति दैत्योंका नाशकरनेके लिये सदा अवतारलेतीहैग्यारहवींबरुणनाम मूर्ति जगत्का जीवन करतीहै औ समुद्र में उसका निवासहै इसीसेसमुद्र को वरुणालय कहते हैं औ बारहवीं मित्र नामक मूर्ति लोकों पर अनुग्रह करने के अर्थ चंद्रभागा नदीके तटपर बिराजमान है यहां सूर्यनारायण ने वायु भक्षणकरके तपकियाहै मित्ररूप से यहांस्थितहैइससे इसस्थानकोमित्रपदभी कहतेहैंयहांहीं सांब ने सूर्यनारायण का आराधन कर मनोवांछितफल पायाहै जो पुरुष भक्तिसे सूर्यनारायण को प्रणाम करै औ भक्तिसे उनके आराधन में प्रवृत्त हों वे सूर्यलोक में निवास करते हैं ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

इकहत्तरवांअध्याय॥

राजा शतानीक पूछतेहैंकिहे सुमंतुमुनि सांबको सूर्यनारायणका आराधनकिसनेबताया औ शापकेअनंतर सांबने अपने पिता श्रीकृष्णचंद्र से क्या कहा यह आप कथन करैं यह सुन सुमंतुमुनि कहने लगे किहे राजा शापके अनंतर सांबने अपने पितासे कहा कि महाराज आपके बुलानेसे मैं यहां आया औ कुछ मैंने अपराधभीनहींकिया फिरआपनेऐसाघोर शाप मुझे किसलियेदिया अब आप मेरे ऊपर अनुग्रहकरैंकि इसबिपत्ति सेछूटूं यह सांबका दीनवचन सुन औ सांबको निरपराध जान श्रीकृष्णभगवान् ने कहाकिहेपुत्र भया सो भया अब तुम सूर्य नारायण का आराधन करो जिससे यह तुम्हारा क्लेश निवृत्त होय हमने यहभीजाना कि नारदजीने क्रोध करके तुमको यहां भेजाहै अब तुम नारदजीको प्रसन्नकरउनसेही सूर्यनारायणके आराधन का बिधान सीखो वेभी अनुग्रहकरतुमको सिखावैंगे यह पिताका बचन सुन अति बिकल औ शोकातुर हुआ सांब नारद मुनिके ढूंढ़ने में लगा एक दिन नारदजी द्वारका में श्रीकृष्णभगवान् के मिलने को आये तबसांबने जायनघ्रतासे उनके चरणोंपरप्रणामकिया औ हाथजोड़प्रार्थनाकरी किमहाराजआपऐसाउपायमुझेउपदेशकरैंकिजिससेमेराशरीरआरोग्य होय औ यहदुःखमिटै यहसुननारदजीनेकहाकि सबदेवताजिसकापूजनऔस्तुतिकरतेहैं उसकातुमभी पूजनकरो तबतुम्हारा रोग निवृत्तहोयतबसांबनेपूछाकिमहाराजदेवता किसकापूजन औ स्तुति करते हैं आपही कहैं किमैं उसीके शरण जाऊं यह पिताकी शापाग्नि मुझे दग्ध करे डालती है ऐसाकौन देवताहै जोकरुणा करके इस विपत्ति से मुझे छुटावै यह सांब का [illegible]

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

दीन बचन सुन नारद जी बोले कि सब देवताओं के पूज्यस्तुत्य औ बंदनीय सूर्यनारायण हैं हे सांब अब हम सूर्यनारायण का प्रभाव बर्णन करते हैं॥

बहत्तरवां अध्याय॥

नारद जी कहते हैं कि हे सांब किसी समय हम सब लोकों में विचरते हुये सूर्यलोक में पहुंचे वहां देखा कि देवता गंधर्व नाग यक्ष राक्षस औ अप्सरा सूर्यनारायण की सेवा में तत्पर होरहे हैं गंधर्व गातेहैं अप्सरा नृत्य कररहीहैं राक्षस यक्ष औ नाग शस्त्र धारण किये रक्षाके लिये खड़ेहैं ऋग्वेद यजुर्वेद औ सामवेद शरीर धारे स्तुति कररहेहैं तीनों संध्या मूर्ति धारण कर हाथोंमें बज्र औ बाणलिये सूर्यनारायणके ओर पास खड़ी हैं पहिली संध्या रक्तवर्ण है मध्यम संध्या चंद्रके तुल्य श्वेतवर्ण औ तीसरी संध्या का वर्ण भौम ग्रहके समान है आदित्य बसुरुद्र मरुत् अश्विनीकुमार आदि सबदेवता तीनकाल उनका पूजन करते हैं ऋषि स्तुति पढ़तेहैं इंद्र सदा जय शब्द करते रहतेहैं अंबुजाकार सूर्यभगवान् को प्रभात होतेही ब्रह्माजी पूजते हैं चक्र रूपको मध्याह्न में विष्णु भगवान् और आकाश रूप को सायङ्काल के समय रुद्र भगवान् यजन करते हैं गरुड़ का बड़ा भाई अरुण उनका सारथी है काल के अवयवों से उनका रथ बनाहै हरे रंगके छंदों रूप सात घोड़े उस रथ में लगेहैं राज्ञी औ निक्षुभा नामक दोभार्या सूर्यनारायणके दोनों ओर बैठी हैं और भीदेवता हाथजोड़े चारोंओर खड़ेहैं पिंगललेखक कल्माष पक्षी माठर दंडनायक आदि गण आगे पीछे सेवामें स्थितहैं ब्रह्मा आदि सबदेवता औ ग्रह स्तुति कररहे हैं ऐसा प्रभाव सूर्य नारायण का हमने देखा इससे जाना कि वेही सब देवताओं

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

के पूज्य हैं इसलिये हे सांब तुमभी उनकी शरण में जाओ यह नारद जी का बचन सुन सांबने पूछा कि महाराज भली भांति मैं श्रवण किया चाहताहूं कि सूर्यनारायण सर्बगत क्योंकर हैं उनके किरणकितनेहैं मूर्ति कैहैं राज्ञी औ निक्षुभा नाम उनकी भार्या कौन हैं पिंगल लेखक औ दंडनायक क्या काम करते हैं कलमाष पक्षी कौनहै यह सब शास्त्र के अनुसार ठीक२ वर्णन करैं जिससे मैंभी सूर्यनारायण का प्रभाव जान उनके शरणागत होजाऊं ॥

तिहत्तरवां अध्याय॥

नारदजी कहते हैं कि हे सांब अब हम बिस्तार पूर्वक सूर्य नारायण का वर्णन करते हैं तुमप्रीति से श्रवण करो जगत्का कारण सदसदात्मक है जिसको अव्यक्त प्रधान औ प्रकृतिभी कहते हैं गंध वर्ण रससे हीन शब्द स्पर्शादि रहित अनाद्यंत अज सूक्ष्म अनाकार औ अबिज्ञेय पुरुष है उसने यह सब जगत् व्याप्त कररक्खा है वह पुरुष जो २ इच्छा करता है सो सो सब अव्यक्त से उत्पन्न होता है वही पुरुष सृष्टि के समय चतुर्मुख ब्रह्मा बनता है प्रलय के समय कालरूप औ पालन के समय विष्णुरूप ग्रहण करता है ये तीन अवस्था तीन गुणोंके अनुकूल पुरुषकी हैं वही हिरण्य गर्भ है सबके आदिमें होने से आदित्य न उत्पन्न होनेसे अज महान् होने से महादेव लोक का अधीश होने से ईश्वर वृहत् होने से ब्रह्मा उत्पन्न होनेसे भव प्रजाके पालन से प्रजापति पुरमें शयन करने से पुरुष किसीसे भी न उत्पन्न होनेसे स्वयंभू औ हिरण्य अर्थात् सुवर्ण के अंड में रहने से हिरण्यगर्भ वही परमात्मा कहाता है जलका नाम नारहै नारमें निवास करने से नारायण कहाता है अरु यह

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

शीघ्रता वाचक अव्ययहै समुद्ररूप होजानेसे जलों में शीघ्रता नहीं रहती इसीसे उनको नार कहतेहैं प्रलय के समय सब स्थावर जंगम नष्ट होजाते हैं संपूर्ण जगत् एकार्णव हो जाता है तब वह पुरुष नारायण रूपसे उस समुद्र में शयन करताहै सहस्र शिरों करके युक्त सहस्र भुजा सहस्रही नेत्र चरण औ मुखों करके युत वह पुरुष है वही देवताओंमें प्रथम देवता औ जगत् की रक्षा करनेहारा है॥

चौहत्तरवां अध्याय॥

नारदजीकहतेहैं कि हेसांब हज़ारयुगकी अपनीरात्रिबिताय कर प्रभात होतेही सृष्टि रचनेकी इच्छा उस पुरुष को भई तब उसने जलमें मग्नहुई भूमिको बराहरूप धार उद्धारकिया औ ब्रह्माबन सृष्टि रचनेलगा पहिले अपने तुल्य औ अत्यन्त सौम्य दशपुत्र मनसेउत्पन्नकिये भृगुअंगिराअत्रि पुलस्त्यपुलह क्रतु मरीचि दक्षवशिष्ठ औ प्रचेता ये दश ब्रह्माजीके मानसपुत्र भये मरीचिके पुत्र कश्यप भये दक्षकी कन्या अदिति कश्यप को बिवाही उससे एकअंडा उत्पन्नभया जिससे द्वादशात्मा श्रीसूर्य नारायण निकले नवहज़ार योजन सूर्य मंडलका व्यासअर्थात् विस्तार है औ सत्ताईस हज़ार योजनपरिधि अर्थात् परिणाह है जिसभांति कदम्बका पुष्प चारोंओरके सरोंसे व्याप्त होताहै इसी प्रकार सूर्यमण्डल किरणोंकरके व्याप्तहै वह सहस्र शीर्षा पुरुष जिसको परमात्मा कहते हैं इस मंडलके मध्यमें स्थित है वह अपने हज़ार किरणों करके नदी समुद्र ह्रद कूप आदिसेजलको आकर्षण करता है सूर्यकी प्रभा रात्रिके समय अग्निमें प्रवेश करतीहै इसीसे रात्रिमें अग्निदूरसेही प्रकाशित देख पड़ताहै उदय के समय वह प्रभा सूर्यमें चली जाती

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

है प्रकाश औ उष्णता ये दोनों सूर्यमें औ अग्निमेंभी हैं इस प्रकार सूर्य औ अग्नि रात दिनमें परस्पर आप्यायन करते हैं किरण गो रश्मि गभस्ति अंशु उस्र वसु मरीचि नाड़ी दीधिति मयूख भानु करपाद इत्यादि किरणों के नामहैं एक हजार किरण सूर्य नारायणके हैं उनमें चारसौ किरण वृष्टि करतेहैं उनका नाम चंदन है वे किरण अमृत स्वरूप औ श्वेतवर्ण हैं तीनसौ किरण हिम को वर्षते हैं उनका नाम चंद्र है औ पीत वर्ण हैं बाकी तीनसौ किरण प्रचंड धूप को वृष्टिकरते हैं वर्षा औ शरद ऋतुमें चंदन नामकिरण वृष्टि करतेहैं हेमंत औ शिशिरमें चंद्रनामक तीनसौ किरण हिम अर्थात् बर्फ बरसते हैं बाकी तीनसौ किरण बसंत औ ग्रीष्म में तपते हैं औषधियोंमें बल स्वधा में स्वधा औ अमृतमें अमृत सूर्यनारायण देतेहैं यह द्वादशात्मा औ काल स्वरूप सूर्यनारायण तीनलोकमें तपतेहैं ब्रह्मा विष्णु औ शिव इनहींके रूपहैं ऋक्यजु औ सामभी येहीहैं प्रातःकाल ऋग्वेद स्तुति करता है मध्याह्नमें यजुर्वेद औ मध्यदिन के अनंतर सामवेद स्तुतिमें प्रवृत्त होताहै ब्रह्मा विष्णु औ शिव इनका नित्य पूजनकरतेहैं जिसप्रकार वायुसर्वगतहै इसीविधि सूर्यकिरण भी सर्वव्यापकहैं तीनसौ किरण भूलोक को प्रकाशितकरतेहैं औतीनतीन सौहीबाकीदोनों लोकोंकोद्योतित करते हैं चंद्रमाग्रह नक्षत्र औ तारागणमें सूर्यनारायणकाही प्रकाशहै सूर्यनारायण के हजार किरणोंमें सात किरण मुख्यहैं सुषुम्ण हरिकेश विश्वकर्मा सूर्य विष्णु सम औ सर्वबंधु ये उनसातोंके नामहैं यहसम्पूर्णजगत् सूर्यनारायणकारूपहै इन्द्र आदिदेवता इनसे उत्पन्न भयेहैं जगत्में सम्पूर्ण तेज इनकाहै अग्निमें दीहुई आहुति सूर्यनारायण में प्राप्त होती है उससे वृष्टि वृष्टिसे अन्न औ अन्नसे प्रजाका पालन होताहै जगत् की है औ यहंकार

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सूर्यनारायण से होताहै ध्यान करनेवालों के लिये ध्यान रूप औ मोक्षार्थी पुरुषों के लिये मोक्ष स्वरूपयेहीहैंक्षणमुहूर्तदिन पक्ष मास ऋतु अयन संवत्सर औयुगोंकीकल्पना सूर्यनारायण के बिना नहीं होसक्ती औ कालके नियम विनाअग्निहोत्र आदि कर्म नहीं होसक्ते ऋतु बिभाग बिना पुष्प फलऔ मूलों की उत्पत्ति नहीं होती जगत् में सब व्यवहार नष्टहोजाते यज्ञ न होने से स्वर्गमें देवताभी नहीं रहसक्ते इससे यही जानो कि भूलोक औ स्वर्गकी सब व्यवस्था सूर्यनारायण के होनेसेही ठीक रहती है जब सूर्य बहुत तपै अथवा मंडल के चारों ओर परिवेष होय तब वृष्टि होती है सूर्यभगवान् के बारह नामहैं आदित्य सविता सूर्य मिहिर अर्क प्रतापन मार्तंड भास्कर भानु चित्रभानु दिवाकर औ रवि ये बारह नाम हैं बिष्णु धाता भग पूषा मित्र इंद्र वरुण अर्यमा बिवस्वान् अंशुमान् त्वष्टा औपर्जन्य ये बारह आदित्य हैं चैत्र आदि बारह महीनोंमें येतपतेहैं चैत्रमें विष्णु बैशाख में अर्यमा ज्येष्ठ में बिवस्वान् आषाढ़ में अंशुमान् श्रावण में पर्जन्य भाद्रपदमें वरुण आश्विन में इन्द्र कार्तिक में धाता मार्गशीर्ष में मित्र पोषमें पूषा माघमें भग औ फाल्गुन मास में त्वष्टा नामक आदित्यतपता है विष्णुनामक आदित्य बारह सौ किरणों करके तपतेहैं अर्यमा औवरुणतेरह सौ किरणों करके बिवस्वान् औ पर्जन्यचौदहसौकिरणोंकरके अंशुमान् पांचसौकिरणोंकरके इन्द्रबारहसौकिरणोंकरकेधाता ग्यारहसौ किरणों करके मित्र औ भगसाढ़ेदशसौकिरणोंकरके पूषा हजार किरणों करके औ त्वष्टानामक आदित्य ग्यारहसौ किरणों करके तपताहै उत्तरायणमें सूर्य किरण वृद्धिकोप्राप्तहोतेहैं औ दक्षिणायनमें घटतेजातेहैं इसप्रकारसूर्यकिरणलोकोपकार में प्रवृत्तहैं कोई पुरुष ब्रह्मा को कोई विष्णु को औकोई

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

शिव को जगत् कर्त्ता कहतेहैं परंतु वे इनकारूप हैं जिसप्रकार स्फटिकमें अनेकरंग प्रविष्ट होनेसे वहअनेक वर्णकाहोजाताहै जिस भांति एकही मेघ आकाशमें अनेक रूपका होजाताहैजैसे आकाश से एकप्रकारका जलगिरिकेभूमिकेसंसर्गसे अनेकस्वादुका होजाताहै जिसप्रकार एकही अग्निके स्थानभेदसेअनेक नाम होजातेहैं इसीप्रकार एक सूर्यनारायणही गुणोंके वशहोकर ब्रह्मा विष्णु शिव आदि अनेक रूपधारते हैं इसलिये इनमेंही भक्ति करनी चाहिये आकाशमें जलमें अग्निमें पवनमेंओ सब प्रकारके स्थावर जङ्गम रूपजगत् में सूर्यनारायण व्याप्त होरहे हैं इसप्रकार जो सूर्यनारायण को जानै वहरोगऔपापों से बहुत शीघ्र छुटताहै पापी पुरुषकी सूर्यनारायणमेंभक्तिनहीं होतीहै हे सांब तूभी सूर्यनारायण का आराधनकरजिससेयह व्याधि निवृत्त होय हेसांब जैसे ब्रह्मा औ शिवसूर्यनारायणका रूपहैं इसीप्रकार तेरे पिता श्रीकृष्णचंद्र भी उनकाही रूपहैं ॥

पचहत्तरवां अध्याय ॥

सुमंतु मुनि कहतेहैं कि हे राजा इतना सुन सांब ने नारदजी से कहा कि महाराज आपने सूर्यनारायण का ऐसा माहात्म्य वर्णनकिया जिससे मेरे हृदयमें दृढ़भक्ति उत्पन्नहोगई अब आप राज्ञी निक्षुभा दंडो औ पिंगल आदिका वर्णन करैंयह सांबका बचन सुन नारदजी कहनेलगे किहेसांब सूर्यभगवान् की दोभार्या हमने कही एक राज्ञो दूसरी निक्षुभा उनमेंराज्ञो द्यौः अर्थात् आकाश को कहते हैं औ निक्षुभापृथिवीकानामहै श्रावण कृष्ण सप्तमी को द्यौः के साथ औ माघ कृष्ण सप्तमी को निक्षुभा के संग सूर्यनारायण का संयोग होताहै तब इन दोनोंके गर्भ होता है द्यौः के गर्भ से जल उत्पन्न होतेहैं औ

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

भूमि के गर्भसे जगत् के कल्याण के अर्थ अनेक प्रकारके सस्य अर्थात् खेती उपजते हैं सस्य को देख अति हर्षसेब्राह्मणहवन करते हैं स्वाहाकार स्वधाकार से देवता औ पितरोंकीतृप्तिहोती है अबये दोनों जिसकी कन्या हैं औ इनके जो संतान हैं उनका हम वर्णनकरते हैं ब्रह्माके पुत्र मरीचि मरीचिके कश्यप कश्यप के हिरण्यकशिपु हिरण्यकशिपुके प्रह्लाद औ प्रह्लाद के विरोचन नाम पुत्र भया विरोचन की भगिनीविश्वकर्मा को बिवाही गई जिसकी कन्या संज्ञा भई मरीचिकीकन्यासुरूपा नाम अंगिरा ऋषि को बिवाही जिससे बृहस्पति उत्पन्न भये बृहस्पति की ब्रह्मवादिनी भगिनी आठवें वसु प्रभा से बिवाही गई जिसका पुत्र सबशिल्प जाननेहारा विश्वकर्मा भया उसी का नाम त्वष्टा है विश्वकर्मा की कन्या संज्ञाको राज्ञीकहते हैं औ उसको द्यौः औ सुरेणु भीकहतेहैं उसीसंज्ञाकीछाया का नाम निक्षुभा है सूर्यभगवान् की भार्या संज्ञा नामक बड़ी रूपवती औ पतिव्रता थी परंतु सूर्यनारायण मनुष्य रूपसे उसके समीप नहीं जाते थे औ अति तेज से व्याप्त वह सूर्य नारायणका रूप सुन्दर न था इसलिये संज्ञाको नहीं रुचताथा संज्ञामें तीन सन्तान भये परंतु वह सूर्यनारायणके तेजसेव्याकुल हो अपने पिताके घर चलीगई औ हज़ार वर्षतकवहांरही परन्तु जब पिताने पतिके घर जानेके लिये बहुतकहातबउत्तर कुरुको चलीगई औ घोड़ीका रूपधारतृणचरकेअपनाकालक्षेप करने लगी सूर्यनारायणके समीपसंज्ञाकेरूपसेछायारहतीथी सूर्य भगवान् उसको संज्ञाही जानतेथे उसमेंभी दोपुत्रऔएक कन्या उत्पन्नभई श्रुतश्रवा औ श्रुत कर्मा येदो छायाके पुत्रभये औ तपती नाम कन्या भई श्रुतश्रवातोसावर्णि मनुहुवाऔश्रुतकर्मा शनैश्चर नामक ग्रह भया संज्ञाजिसप्रकार अपने सन्तानों

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पर स्नेह करतीथी वैसा छाया ने न किया इसबात को संज्ञा के ज्येष्ठपुत्र मनुने तो सहा परंतु छोटा पुत्र यमनसहार सका जबछायाने बहुतही क्लेशदिया तबक्रोधसे बालकपनसेऔभावी के बलसे यमने अपनी माताको भर्त्सनकियाऔमारनेकोचरण उठाया यह देख क्रोधकर छाया ने यम को शाप दियाकिहेदुष्ट यह तेरा चरण गिरपड़ै माताके शापसे यम व्याकुलहो पिताके समीप गये औ सब वृत्तान्त कहा कि महाराज यहमाताहमसे स्नेह नहीं करती मैंने भूलसे अथवा बालकपन से केवलचरण उठायाथा परन्तु माताने मुझे घोर शापदिया अबमेरेचरणकी रक्षा आपहीकरैं यह पुत्रका वचनसुन सूर्यनारायणनेकहाकि हे पुत्र इसमें कुछ बड़ा कारण होगा कि अति धर्मात्मा तुझको माताके ऊपर क्रोध आया सब शापोंका प्रति घातहैपरन्तुमाता का दियाशाप कभी अन्यथा नहीं हो सकता पर तेरेस्नेह से कुछ उपाय करते हैं तेरे चरण के मांसको लेकरकृमिभूमिपर जांय इससे माताका शापभी सत्यहो औ तेरे चरणकी रक्षाभी होजायगी सुमंतु मुनि कहते हैं किहे राजा इसप्रकार पुत्र का आश्वासन कर सूर्यनारायण ने छायासे कहाकि इनमेंतुमस्नेह क्योंनहीं करती माताको सब संतान समान माननेचाहियेंयह सुनिकै भी छायाने कुछउत्तर न दिया तब सूर्यनारायणक्रोधकर शापदेने को उद्यत भये छाया ने पतिको अति क्रुद्ध देखभयसे सब वृत्तांत कहदिया इसी अवसरमें विश्वकर्म्मा वहांआयेसूर्य नारायण ने अपने श्वशुरको क्रोधयुक्तदेखमीठेवचनोंसेउनका क्रोध शांतकर आसन पर बैठाया तब विश्वकर्म्माने कहाकिह-मारी पुत्री संज्ञा तुम्हारे प्रचण्ड तेज से व्याकुल हो बन को चलीगई औ तुम्हारा रूप उत्तम होने केलिये वनमें तपकरती है हमको ब्रह्माजी की आज्ञा है कि तुम्हारा रूपउत्तमबना देवें

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

यदि तुम्हारी भी रुचि होय तो हम इस कार्य में प्रवृत्त होयँ यह श्वशुर का वचन सूर्यनारायण ने अङ्गीकार किया तब शाकद्वीप में सूर्यनारायण को भ्रमि अर्थात् खराद पर चढ़ाय विश्वकर्मा ने उनका प्रचण्ड तेज छीलडाला औ उत्तम रूप बनादिया सूर्य नारायण नेभी योगबलसे जाना कि हमारीभार्या घोड़ीके रूपसे उत्तरकुरुमें रहतीहै यह जान आपभी अश्वका रूप धार उसके समीप गये औ मैथुनके लिये प्रवृत्तभये परंतुसंज्ञाने इनको पर-पुरुष जान इनका वीर्य नासिकामें धारण किया उससे देवताओं के वैद्य अश्विनीकुमार उत्पन्न भये नासत्य औ दस्र ये उनके नाम हैं इसके अनंतर सूर्यनारायणने अपना वास्तव रूप धारण किया जिसको देखसंज्ञाबहुत प्रसन्नभई औ सूर्यनारायणसे संगकिया तब रेवंत नामपुत्र सूर्यभगवान् के समान रूपवान् उत्पन्न भया उसनेसूर्यनारायणके आठवें घोड़ेको चढ़ने के लिये लेलिया औ उसपर चढ़के कुदाता हुवा चलता था इसीसे उसका नाम रेवंत हुआक्योंकि रेवृधातुप्लव गति अर्थात् कूद के चलना इस अर्थमें है सूर्यनारायण ने दंडनायक औ पिंगल को आज्ञादी कि हमारा आठवां अश्व रेवंत लेलेआओ परंतु बलसे मत लाना कोई छिद्र पाके हरलेना यह आज्ञा पाय दोनों रेवंत के पास गये औ बहुत काल तक वहां रहे परंतु कोई छिद्र न मिला कि अश्व को हरैं सदा रेवंत को सावधानही देखा मनु यम यमुना सावर्णि शनैश्चर तपती दो अश्वनीकुमार औ रेवंत ये सूर्यनारायणके संतान भये संज्ञा का नाम राज्ञी है औ छाया को निक्षुभा कहते हैं राजृ धातु दीप्ति अर्थ में है जिससे राज्ञी शब्द बनता है सब भूतों से अधिक दीप्ति होनेसे सूर्यनारायण राजा कहातेहैं राजाकी भार्या होनेसेभी संज्ञा को राज्ञी कहते हैं क्षुभ संचल ने धातु है उससे नि उपसर्ग लगकर निक्षुभा शब्द बनताहै सब मनुष्यों को अति

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पीड़ित देख यमने धर्मसे सबका अनुरंजन किया इससे धर्मराज कहाया औ अपने शुद्ध कर्म के प्रभाव से पितरों का स्वामी औ लोकपाल यमराज बना आजकल जो मनु वर्त्तमान हैं इनके वंशमें विष्णु भगवान् का अवतार हुआ यमकी बहिन यमुना नदी भई सावर्णि आठवें मनु होंगे औ यम के बड़े भ्राता मनु आज कल राज्य करते हैं औ सावर्णि मेरु पर्वत के पृष्ठ पर तप कर रहेहैं सावर्णि के भ्राता शनैश्चर ग्रह बने औ उनकी बहिन तपती नदी भई जो बिंध्याचलसे निकल पश्चिम समुद्र में जाय मिली है औ जिसमें स्नान करनेसे बहुत पुण्य होता है सौम्या नदीसे तपती का संगम औ गंगा से यमुना का संगम होता है अश्विनी कुमार देवताओं के वैद्यबने जिनकी विद्या से भूमि पर भी वैद्य अपना निर्वाह करते हैं रेवंत नाम अपने पुत्र को सूर्य नारायण ने सब अश्वोंका स्वामी बनाया रेवंत का पूजन कर जो मार्ग में जाय उसको क्लेश नहीं होता विश्वकर्मा ने सूर्यनारायण की आज्ञासे उनके तेज करके भोजक को बनाया जो सूर्यनारायण की पूजा करनेवाला भया जो सूर्य भगवान् के संतानों की इस उत्पत्ति को सुनै वह सब पापोंसे मुक्तहो सूर्यलोक में बहुत काल पर्यंत निवास कर चक्रवर्ती राजा होय॥

छिहत्तरवां अध्याय॥

सुमन्तु मुनि कहते हैं कि हे राजा शतानीक इसप्रकार सूर्य नारायणका प्रभाव सुन सांबने नारदजी से फिर पूछा कि महाराज सूर्यनारायणके पूजन से क्याफल होता है उनके निमित्त दान देनेसे किस उत्तम फलकी प्राप्ति होती है प्रणाम करने से औ उनके मन्दिरमें गीत वाद्य आदि उत्सवोंसे क्या पुण्य होता है यह आप कृपाकर वर्णन करैं जिससे मैं भी इस क्लेश करके पी-

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ड़ितहुवा २ सूर्यनारायणका दृढ़ भक्तिसे आराधनकरूं यहसांबकी प्रार्थना सुन नारद जी कहने लगे कि हे सांब यह बात दिंडीने ब्रह्माजीसे भी पूंछीथी उनने दिंडीके प्रति जो कहा वह हम वर्णन करते हैं दिंडी के प्रश्नके अनंतर ब्रह्माजी कहने लगे कि हे दिंडी सूर्यभगवान् के पूजन स्तुति जप उत्सव बलि उपवास आदि करनेसे मनोवांछित फल पाताहै सूर्य भगवान् को प्रणाम करने के अर्थ भूमिपर शिरका स्पर्श होतेही सब पातक दूरहोजातेहैं जो भक्तिसे सूर्यनारायणकी प्रदक्षिणाकरै उसको सप्तद्वीपवती भूमि की प्रदक्षिणा का फल होताहै औ वह पुरुष सब रोगोंसे मुक्तहो अंतमें सूर्यलोक को प्राप्तहोताहै परंतु जूता निकालकर प्रदक्षिणा करनाचाहिये जो पुरुष जूतापहिने सूर्य मंदिर में प्रवेश करैं वे असिपत्र बन नामक घोर नरक में पड़ते हैं जो षष्ठी अथवा सप्तमी के दिन एकाहार अथवा उपवास कर सूर्यनारायण का भक्ति से पूजन करै वह सूर्यलोक में निवास करै कृष्णपक्ष की सप्तमी को उपवास कर जितेंद्रियहो कमल करवीर रक्तचंदन केसर उत्तम जल औ मोदक आदि भांति २ के नैवेद्यों से सूर्यनारायण का अर्चन करै वहसूर्यलोकको प्राप्तहोय शुक्ल पक्षकी सप्तमी को सब श्वेत पदार्थों से सूर्यनारायण का यजनकरै चमेलीकेफूल श्वेत कमल खीरआदि उनके अर्पण करै वह सब पापों से मुक्त होय कांति में चंद्रमा के तुल्य होजाय औ अंतमें हंस युक्त बिमान में बैठ सूर्यलोक को जाय यह ब्रह्माजी के मुखसे श्रवण कर फिर दिंडीने कहा कि महाराज आप विस्तारसे सप्तमी कल्पका वर्णनकरैं कि मैं भी सप्तमी का उपवास कर सूर्यनारायण के शरण में प्राप्तहोजाऊं यह दिंडी का बचन सुन ब्रह्माजी बोले कि हे दिंडी बहुत उत्तम [illegible] तमने पंक्ती सप्तमी कल्प का हम वर्णन करते हैं

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

एक समय सूर्यनारायण ध्यान करते थे उस अवसर में अरुण ने कहा कि महाराज आप बैठे क्या ध्यान करतेहैं आपके ध्यान करने से दिनही पूरा नहीं होता इसका कारण मुझे कहैं औ आपको ध्यानकरनाहोय तो चलते २ करैं यहसुन सूर्यभगवान् कहने लगे कि हे अरुण अर्बावसु नामक ब्राह्मण पुत्र के अर्थ हमारा आराधन करताहै परंतु वह बिधि नहीं जानता कि जिस के करने से हम प्रसन्न होकर पुत्र देते हैं वह सप्तमी कल्प नामक बिधि हम तुमको उपदेश करते हैं औ तुमजाकर उस ब्राह्मणको बताओ जिसके करनेसे वह अपना मनोबांछित फल पावै उस बिधि के करने से हम बहुत पुत्र देते हैं यह कहकर सूर्यनारायण ने अपने सारथि अरुण को सप्तमी कल्प का उपदेश किया अरुण ने सूर्यभगवान् की आज्ञानुसार जाय ब्राह्मण को बताया ब्राह्मणने उस सप्तमी कल्पकी बिधिकोकिया जिस से बहुत से पुत्र धन आरोग्य औ संपत्ति पाई औ अंत समय बिमान में बैठ सूर्यलोक को गया॥

बहत्तरवां अध्याय॥

ब्रह्माजी कहते हैं कि हे दिंडी जया बिजया जयंती अपराजिता महाजया नंदा औ भद्रा ये सात सप्तमी हैं शुक्ल पक्ष की सप्तमी को आदित्यवार होय तो उस सप्तमीको बिजया सप्तमी कहते हैं उनदिन किया हुआ स्नान दान होम उपवास पूजन आदि सत्कर्म अनंत फल देताहै पंचमी के दिन एक भक्त षष्ठी को नक्त सप्तमी को उपवास औ अष्टमी के दि[illegible] व्रत पारण करै यह कई आचार्यों का मत है परंतु हमारे मतसे चतुर्थी को एक भक्त पंचमी को नक्त षष्ठीको उपवास औ सप्तमीको पारण करै षष्ठी के दिन उपवासकरै गंध पुष्प आदि उपचारोंसे सूर्यनारा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

यण का पूजन करै औ गायत्री सूक्त त्र्यक्षरमंत्र महाश्वेता अथवा षडक्षर मंत्र जपता हुवा सूर्यनारायण के संमुख शयनकरै सप्तमी के दिन प्रभातही उठ स्नानकर सूर्यनारायण का पूजन करै औ हवन कर यथा शक्ति ब्राह्मणभोजन कराय दक्षिणा देवै औ अपूप आदि भांति २ पक्वान्न घृत खीर आदि नैवेद्य सूर्यनारायण को निवेदन करै करवीर के पुष्प कुंकुम लेपन औ बिजय धूपके अर्पण से सूर्यनारायण प्रसन्न होतेहैं यह बिजय सप्तमी का विधान है इस व्रतके करने से सब पातक नष्ट होजाते हैं इस दिन किया हुआ दान हवन देवता औ पितरों का पूजन अक्षय होताहे हे दिंडो यह बिजय सप्तमी पुण्य तिथिहै इसके माहात्म्य श्रवण करने सेभी धन यश औ आयुष् की वृद्धि होती है

अठहत्तरवां अध्याय॥

दिंडीपूछतेहैं कि हे ब्रह्माजी जे आदित्यवारकेदिन सूर्यनारायण का भक्ति से पूजन करते हैं औ स्नान दान आदि करते हैं उनको क्या फल होता है जिस बार के संयोग से सप्तमी तिथि विजया कहाई उसका माहात्म्य आप कृपा कर वर्णन करैं यह सुन ब्रह्माजी बोले कि हे दिंडी जो पुरुष आदित्यबारको श्राद्ध करैं वे सातजन्म पर्यंत आरोग्य होतेहैं जो नक्तव्रत करैं औ आदित्यहृदय का पाठकरैं वे रोगसे मुक्त होयँ औ सूर्यलोक में निवास करैं जो उपवास कर महाश्वेता मंत्रको जपैं वे मनोवांछित फल पावैं दिन रात्रि नक्त अथवा त्रिरात्रि के नियम से जो महाश्वेता को जपैं वे अपना अभीष्टसिद्ध करैं आदित्यबार के दिन महाश्वेता औ षडक्षर मंत्र के जपने से निःसंदेह सूर्यलोककी प्राप्ति होतीहै सूर्यनारायण के बारह बार हैं नंद भद्र सौम्य [illegible]मिद पुत्रद जय जयंत विजय आदित्याभिमुख हृदय

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

रोगहा औ महाश्वेताप्रिय ये उनके नाम हैं माघ शुक्ल षष्ठी को जो बारहोय उसकी नंद संज्ञाहै उस दिन नक्तव्रत्त कर घृत से सूर्यनारायण को स्नानकरायश्वेतचन्दन अगस्तिकेपुष्प गूगल धूप औ अपूप आदि नैवेद्य चढ़ावै औ ब्राह्मण को अपूप देकर आपभी मौनसे भोजन करै तारादर्शन पर्यंत नक्तव्रत होता है सेर पक्के गेहूं अथवा जौ के आटे में घृत औ गुड़ मिलाय अपूप बनावै औ सूर्यनारायण को नैवेद्य लगाय (आदित्यतेजसोत्पन्नं राज्ञीकरविनिर्मितम्। श्रेयसेममविघ्नत्वंप्रतीच्छापूपमुत्तमम् १) यह मंत्र पढ़ ब्राह्मण को देवै ब्राह्मण भी उस अपूप को ले (कामदंसुखदंधर्म्यंधनदंपुत्रदंतथा।सदातुभ्यंप्रयच्छामिमंडकंभास्कारंप्रियम्) यह मंत्र पढ़ यजमानको देवै ये दोनों ग्रहण करने औदेनेकेमंत्रहैं यहनंदबारका बिधान मनुष्योंके कल्याणके अर्थ कहाहै जो इसबारको इसबिधि से सूर्यनारायण का पूजन करै वह सूर्यलोक पावे उसकीसंतानका क्षय न होय औ उसके वंशमें दारिद्र औ रोग भी न होयँ सूर्यलोक से आय राजा होय इस बिधान के पढ़ने अथवा श्रवण करने से भी कल्याण होताहै औ लक्ष्मी मिलती है॥

उनासीवां अध्याय॥

ब्रह्माजी कहतेहैं कि हेदिंडी भाद्रकृष्ण षष्ठी के दिन जोबार होय उसका नाम भद्रहै उसदिन जो नक्तव्रत्त अथवा उपवास करै वह हंसयुक्त विमान में बैठ सूर्यलोक को जावै श्वेत चंदन मालती के पुष्प विजयधूप औ खीर का नैवेद्य इनसे मध्याह्न के समय सूर्यनारायण का पूजनकर ब्राह्मण भोजन कराय यथा शक्ति दक्षिणा देकर आपभी मौनसे भोजनकरै खीर घृत औ गुड़ इनका भोजन करै इस बिधिसे भद्रबार को अंधकार हारी

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

श्रीसूर्यनारायणका अर्चनकरै वहधन पुत्रआदिसबबस्तुपावैऔ अंत में सूर्यलोक को जावै हे दिंडी यह भद्रबार का विधान हमने कहाहै जिसके पढ़ने औ श्रवण करनेसे भी सब पाप निवृत्त होते हैं॥

असीवां अध्याय॥

ब्रह्माजी कहतेहैं कि हेदिंडी रोहिणी नक्षत्रयुक्त आदित्यबार होय उसको सौम्यबार कहते हैं उसदिन कियाहुआ स्नानदान जप होम पूजन आदि अक्षय होताहै जो इस दिन नक्तव्रत्त कर रक्तचंदन रक्तकमल सुगंध धूप पायस आदि नैवेद्य से सूर्यनारायण का पूजन करै औ ब्राह्मणों को पायस भोजन कराय आपभी भोजन करै इस बिधिसे जो सूर्यनारायण का पूजनसौम्यबार को करै वह उत्तम कांतिधन पुत्र औ आरोग्य पावै बहुत कालसंसार सुख भोग सब पापोंसे छुट सूर्य लोकमें निवासकरै॥

इकासीवां अध्याय॥

ब्रह्माजी कहते हैं कि हेदिंडी मार्गशीर्ष शुक्ल षष्ठी को जो बार होय वह कामद कहाता है उस दिन जो भक्ति औ श्रद्धासे सूर्यनारायण का पूजन करै वह सब पातकों से मुक्त हो सूर्य लोकमें निवास करै उसदिन उपवास अथवा नक्त व्रत कररक्त चंदन करबीर के पुष्प घृतका धूप औ सुगंधि युक्त कसार का नैवेद्य इनसे सूर्यनारायण का अर्चन करै इस बिधि से पूजन करै तो सब मनोबांछित फल पावै इस व्रत के करने से बिद्या कामनावाले को विद्या पुत्र कामनावालेको पुत्र धनकीइच्छा वालेको धन औ आरोग्य की चाह होय तो आरोग्य मिलता हैइस दिन सूर्यनारायण का अर्चन करने से सब कामनाप्राप्त

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

होतीहै इसीसे इसका नाम कामदहै पूर्वोक्त रीति से इस दिन भी जोसूर्य नारायण को अपूप अर्पण करै वह इंद्र के समान ऐश्वर्य पावै औ सूर्यलोकमें निवास करै॥

बयासीवां अध्याय॥

ब्रह्माजी कहते हैं कि हेदिंडी जिस रविबारको हस्त नक्षत्र होय वह पुत्रद कहाताहै उसदिन उपवास करै औ श्राद्ध कर के बिचले पिंड को प्राशन करै औ भांति २ के उपचारों से सूर्य नारायण का पूजनकर महाश्वेता मंत्रको जपता हुआ भूमिमें सूर्यनारायणके संमुखही शयनकरै प्रभात उठ स्नानकर सूर्य भगवान् का अर्चन कर रक्तचंदन औ करवीर के पुष्प जलमें मिलाय अर्घ्य देवै फिर पांच ब्राह्मणों को बुलाय उनमें दिव्य दोब्राह्मणों को भग संज्ञक मान बिधि से पार्वणश्राद्ध करै श्राद्धको समाप्त कर मध्यम पिंड को (सएवपिंडोदेवेशयोभीष्ठ स्तवसर्वदाअश्नामिपश्यतस्तुभ्यंयेनमेसंततिर्भवेत् प्रसादात्तवदे वस्यइतिमेभावितंमनः) इसमंत्र से भक्षणकर जाय इस बिधान के करनेसे सूर्यनारायण अवश्य पुत्र देतेहैं इस व्रतके करने से धन धान्य सुवर्ण सुख औ आरोग्य भी मिलताहै औसूर्यलोक की प्राप्तिभी होतीहै परंतु विशेष करके पुत्र प्राप्ति इस व्रत का फलहै इसीसे इसको पुत्रद कहते हैं॥

तिरासीवां अध्याय॥

ब्रह्माजी कहते हैं कि हेदिंडी दक्षिणायन के दिन जो बार होय उसकानाम जयवारहै उसदिन किया हुआ उपवास स्नान दान जप आदि सत्कर्म सौ गुणा फल देता है इसलिये सूर्यनारायण की प्रीति के लिये उस दिन नक्त आदि व्रतकर

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

भक्ति से सूर्यनारायण का पूजन करै। उत्तरायण के दिन जो वार होय उसको जयंत कहते हैं इस दिन किया हुआ स्नान दानादि सहस्त्रगुणहोजाताहै उसदिन उपवासकर घृत दूधओ इक्षुरस से सूर्यनारायण को स्नानकराय केसरका चंदनचढ़ावै औ गूगल का धूप दे मोदक नैवेद्य लगावै पीछे तिलोंसे हवन कर यथाशक्ति ब्राह्मण भोजन कराय आप भी व्रत पारणकरै इस व्रतके करने से मनोबांछित फल पावै औ सूर्यनारायण का प्रिय होय॥

चौरासीवां अध्याय॥

ब्रह्माजी कहते हैं कि हे दिंडी शुक्लपक्ष की रोहिणी नक्षत्र युक्त सप्तमी तिथिको जोवारहोय वह बिजय कहाताहै उसदिन किया हुवा पुण्य कर्म कोटि गुण होजाता है इसदिन नक्तव्रत अथवा उपवास कर भक्ति से सूर्यनारायण का पूजन कर जप हवन आदि करै औ यथाशक्ति ब्राह्मण भोजन करावै इसव्रत के करने से सप्तद्वीपवती पृथिवी का राजा होय॥

पचासीवां अध्याय॥

ब्रह्माजी कहते हैं कि हे दिंडी माघ कृष्ण सप्तमी को जो वार होय उसको आदित्याभिमुख कहते हैं उस दिन प्रभातही स्नान कर गंध पुष्पादि उपचारों से सूर्यनारायण का पूजन करै औ स्तंभ के सहारे सूर्य के संमुख मुखकर महाश्वेता मंत्र को जपताहुवा सायंकाल पर्यंत खड़ारहै वह स्तंभ रक्त चंदन के काष्ठ का चार हाथ लंबा सीधा औ चिकना होना चाहिये इस प्रकार व्रतकर ब्राह्मण भोजन कराय दक्षिणादे आपभी मौनसे भो[illegible]रै इस व्रत को जो पुरुष करैं उन को धन धान्य पुत्र

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

आरोग्य औ लक्ष्मी सूर्यनारायण के अनुग्रह से प्राप्त होतेहैं ॥

छियासीवां अध्याय ॥

ब्रह्माजी कहते हैं कि हे दिंडी संक्रांति के दिन जो रविवार होय उसकी संज्ञा हृदय है उस दिन नक्तव्रत करै औ मंदिर में जाय सूर्य नारायण के संमुखखड़ा होकर आदित्यहृदय के आठ पाठ करै अथवा सायंकाल पर्यंत सूर्य नारायण का ध्यान करतारहै फिर सूर्यास्तके अनंतरघरमें आयब्राह्मणभोजन कराय मौन से आपभी क्षीर भोजन करै औ सूर्य नारायण का स्मरण करता हुवा भूमि पर सोवै इस व्रत को करै औभक्ति श्रद्धा से सूर्य नारायण का अर्चन करै तो हृदय के सब अभीष्ट सिद्ध होंय औ कांति तथा यश की वृद्धि होय ॥

सतासीवां अध्याय ॥

ब्रह्माजी कहते हैं कि हे दिंडी जिस आदित्यवार को पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्रहो उसको रोगहा कहते हैं इस दिन गंध पुष्प आदि उपचारोंसे जो सूर्यनारायण का पूजन करै वहसब रोगों से मुक्तहोय । आक के पत्रोंकादोना बनाय उसमें आकके फूल तोड़कर लावै औ रात्रिको सूर्यनारायण के संमुख उनको रक्खै औ प्रभात उठ उनसे पूजन कर एक पुष्प आप भी प्राशन करै औ क्षीर भोजन कर व्रत समाप्त करै व्रतके दिन भूमि शयन करै औ यथा शक्ति ब्राह्मण भोजन कराय दक्षिणा देवै इसबिधि से जो सूर्यनारायण का आराधन करै वह सब रोगोंसे मुक्तहोय औ अन्त में सूर्यलोक में निवास करै ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अट्ठासीवांअध्याय॥

ब्रह्मा जी कहते हैं कि हे दिंडी सूर्यग्रहण के दिन जो रविवार होय उसको महाश्वेतप्रिय अथवा खखोल्कप्रिय कहते हैं उसदिन उपवास कर पवित्र हो गंध पुष्पादि उपचारोंसेभक्ति करके सूर्यनारायण का पूजन करै औ महाश्वेता मंत्र अथवा खखोल्क मंत्र का जप करै पहिले खखोल्क का पूजनकर महाश्वेता का पूजन करै पीछे सूर्यनारायण को पूजै महाश्वेता को स्थापन कर गंध पुष्प आदि से पूज उसकेसंमुखसूर्यनारायण का पूजन आदि करै औ स्नानकरघृतसहिततिलोंकाहवनकरै ग्रहण के समय महाश्वेता मंत्रका जपकरै औ ग्रहण मोक्षहोने के अनंतर स्नानकर महाश्वेता खखोल्क औ सूर्यनारायण का पूजन कर ब्राह्मणों से पुराण श्रवण कर उनको भोजन कराय यथा शक्ति दक्षिणा देकर आप भी मौनसे भोजनकरै इसदिन किये हुये स्नान दान जप होम आदि कर्म अनंत फल को देते हैं इसलिये सूर्यनारायण की प्रीति के अर्थ इसदिन दानआदि सत्कर्म्म करने चाहिये इस व्रतके करने से धर्म्म यश संतान औ धनकी वृद्धि होती है औ सूर्यनारायण प्रसन्न होतेहैं उसदिन अपूप का दान करने से गोदान तुल्य फल होता है हे दिंडी ये बारह बार सूर्यनारायण के हमनेवर्णनकिये इनको जो पुरुष पढ़ै अथवा सुनै वह सूर्यनारायण का प्रिय होय औ जो इन व्रतोंको करै वह धर्म अर्थ काम संतान आरोग्य तेज कांति औ स्थिर लक्ष्मी पावै औ बहुत काल संसारकेसुखभोग कर अंत में शिव लोक को जाय॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नवासीवां अध्याय

ब्रह्माजी कहते हैं कि हे दिंडी जो पुरुष सब सत्कर्म सूर्य नारायण की प्रीति के लिये करते हैं उनके कुल में रोगी औ दरिद्री नहीं उत्पन्न होते हैं। सूर्यभगवान्के मंदिरमें जोगोबरसे लेपन करै वह बहुत शीघ्र सब पापों से छुट जाताहै श्वेतरक्त अथवा पीली मृत्तिका से जो लेपन करै वह मनोवांछित फल पावै। अनेक प्रकार के पुष्प जोसूर्यनारायणके अर्पणकरैबरतसे वह अभीष्ट फलपावै। जो घृत अथवा तैलसे मंदिरमें दीपक प्रज्वलित करै वह करोड़ों दीपकों करके आवृतहो सूर्यलोकको जाय। जो सूर्यनारायण की प्रीतिके अर्थचतुष्पथ तीर्थदेवालय आदि में दीपक रक्खै वह उत्तम रूपपावै। जोचंदनके सरअगरु कपूर कस्तूरी आदि का उबटना बनाय सूर्यनारायणके अंगमें लगावै वह करोड़ों वर्ष स्वर्ग में विहार कर भूमिपर चक्रवर्ती राजा होय। चंदन औ केसर सहित तीर्थ जलसे जोसूर्यनारायण को अर्घ्य देवै वह अपने पुत्र पौत्र स्त्री आदि सहित स्वर्ग में बास करै। कमल पुष्पों करके पूजनकरैतो उत्तमअप्सराओं के साथ करोड़ों बर्ष स्वर्ग में विहार करै। गूगल औ घृत का धूप देवै तो सब पातक निवृत्त होयँ। औ एक पक्ष इसधूपको देवै तो घोर ब्रह्महत्या से भी छूटै वर्षभर इसी धूप के देने से अश्वमेधका फल होताहै। सिह्लक नाम सुगंध द्रव्यके धूपसे स्वर्ग की प्राप्ति होतीहै। कपूर औ अगरु का धूप देवै तो राजसूय यज्ञका फल पावै। पूर्वाह्न में सूर्यनारायण का पूजनकरै तो सौ कपिला गोदान का फल होय। मध्याह्न में पूजन करै कगोदान औ भूमिदान का फल प्राप्तहोवै। अपराह्नमें पूजन तोरै तो हजार गोदान का फल होवै। अर्द्धरात्रि के [illegible]पूजन

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

करै तो जातिस्मर होय औ उत्तम कुलमें जन्मपावै । प्रभातही पूजन करै तो स्वर्ग को जाय इसप्रकार सब समयों में जो पुरुष अर्क पुष्पों करके सूर्यनारायण का अर्चन करै वह सूर्यलोक में स्थान पावै । दोनों अयन संक्रांति दोनों विषुव संक्रांति ग्रहण औ षडशीति मुख नाम संक्रांति के दिन जो सूर्यनारायण का अर्चन करैं वे उत्तम गतिको प्राप्त होतेहैं । जो पुरुष सोते उठतेही सूर्यनारायण को प्रणाम करैं वे उत्तम फल के भागी होतेहैं कृसर अपूप मांस औ मोदकों करके सूर्यनारायण को बलिदेवै तो सब कार्य सिद्धिहोयँ । मोदक पायस मधु मांस औ आसव के देनेसे सूर्यभगवान् बहुतही प्रसन्न होतेहैं । घृत से स्नान करावै तो सदा स्निग्ध होय । मांससे तर्पणकरै तो उसी क्षण पापसे छुटै । सूर्योदय के समय घृत से स्नान करावै तो लाख गोदान का फल पावै । मांस औ दूग्ध से तर्पण करै तो पुंडरीक नाम यज्ञ का फल होय । इक्षुरस से स्नान करावै तो अश्वमेध यज्ञका फलपावै। दुग्धदेनेहारी एक उत्तम गौ सूर्यनारायण के अर्पणकरैतो स्थिर लक्ष्मीपावै औ अंतसमय देवलोक कोजावे।गौकेशरीरमें जितने रोमहोयँ उनसेभी अधिक वर्षस्वर्ग में निवासकरै । सौ गौ देवे तो राजसूय यज्ञका फल औ हजार गौ सूर्यनारायण के अर्पण करने से अश्वमेध का फल होताहै गूगल देवदारु औ घृत इनका धूपदेवे तो उत्तम गति पावे।घृत का धूपदेवताओं को स्वभाव सेही सदा प्रियहै । भेरीवंशीआदि वाद्य जो सूर्यनारायण के मंदिरमें बजवावैं वे सूर्यलोक पातेहैं। भक्ति से जा पुरुष चक्र सूर्यनारायण के अर्पण करै तीर्थका जल औ उत्तमअन्न निवेदनकरै वह सैकरों उत्तम नारियों करकेयुक्त विमान में बैठ बहुतकाल विहारकरै औ भूमिपर आय धर्म्मात्मा रा होय । क्षत्र ध्वजा पताका वितान चामर औ सुवर्णकेदंड

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

जो सूर्यनारायण के अर्पण भक्ति से करै वह किंकिणी जाल करके भूषित विमान में बैठ सूर्यलोक में जाय अप्सराओं का पति होय फिर मनुष्य लोक में आय चक्रवर्त्ती राजा होय। वस्त्र औ भूषण सूर्यनारायण को चढ़ावै तौ प्रलयकाल पर्यंत सूर्यलोक में रहै। गाने बजाने औ नृत्य करके जो जागरण करै वह अप्सरा औ गंधर्बों के साथ चिरकाल विहार करै। गंधपुष्प आदिसे सूर्य नारायण का पूजन कर अनेक प्रकार के स्तोत्रों से जो भक्ति करके स्तुति करैं वे परमपद को प्राप्त होयँ। सूर्यनारायण के गायक पाठक चारण बंदी आदि सब स्वर्गको जाते हैं। बैल अथवा घोड़ों करके युक्त सुवर्ण का जड़ाऊ रथ अथवा चाँदीका ही सूर्यनारायण के समर्पण करै वह अति प्रकाशवान् विमान में बैठ स्वर्ग में जाय देवताओं के समूह में क्रीड़ा करै। जो काष्ठका ही रथ बनावै वह भी देदीप्यमान विमान में बैठ सूर्यलोक को जावै। जो पुरुष वर्षभर अथवा छ ही महीने सूर्यनारायण की यात्रा करैं वे ध्यानी अथवा योगी जिस गति को प्राप्त होते हैं उसी उत्तम गति को प्राप्त होयँ औ जन्म मरण से छुटैं। जो सूर्यनारायण के रथ को खैंचैं वे जन्म २ में आरोग्य औ धनवान् होयँ। जो पुरुष सूर्यनारायण की रथयात्रा करते हैं वे देवता हैं औ सूर्यनारायण के परम प्रिय हैं। औ जो पुरुष क्रोधसे अथवा मोहसे रथयात्रा का भंग करैं उन पापियों को संदेह नामक राक्षस जानें। धनधान्य सुवर्ण औ अनेक प्रकार के वस्त्र जो सूर्यनारायण को चढ़ावैं वे परमगति को प्राप्त होते हैं हाथी घोड़े भैंस औ गौ जो पुरुष सूर्यनारायण को अर्पण करैं वे हजार गुणा पावैं। औ अश्वमेध यज्ञ का फल उनको होय। खेती करके युक्त भूमि देवै तो इक्कीस पीढ़ी का उद्धार करै। ग्राम अथवा फल पुष्प आदिसे परिपूर्ण बाग जो सूर्यनारायण के चढ़ावै वह उत्तम विमान में बैठ सूर्यलोक को

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अप्सराओं के साथ क्रीड़ा करै। सूर्य भगवान्को प्रणाम करनेसे मन वचन औ कर्म करके कियेहुये सब पाप नष्ट होजातेहैं। आर्त्त रोगी दरिद्री दुःखी जो पुरुष सूर्यनारायण के शरण में जाय वह सब क्लेशोंसे छुटै। सूर्यनारायण का एकदिन पूजन करने से जो फल प्राप्त होता है वह उत्तम फल सौयज्ञ के करने से भी नहीं मिलता। सूर्य भगवान्के मंदिरमें प्रेक्षणक अर्थात् तमाशा करावै तो राजसूययज्ञ का फलपावै। उत्तम वेश्याओं का समूह जो सूर्यनारायण के अर्पण करै वह सूर्यलोक को जावै। भारत का पुस्तक चढ़ावै तो सब पापों से छुट विष्णुलोक में निवास करै रामायण चढ़ावै तो वाजपेययज्ञ के फल को प्राप्त होकर शिवलोक को जाय। भविष्यपुराण अथवा सांबपुराण सूर्यनारायण के अर्पण करै तो राजसूय औ अश्वमेधका फलपावै। ग्रीष्मऋतु में सूर्यनारायण के मंदिर में जो प्रपा अर्थात् जलशाला बनावै औ शीतकाल में शीत निवारण वस्त्र वहां रक्खै वह अश्वमेध का फल पावै औ स्वर्ग में निवास करै सूर्यनारायण केसम्मुख इतिहास पुराण आदि बचवावै वह हजार अश्वमेध के फल को प्राप्त होताहै। इतिहास औ पुराण की कथासे अधिक कोई पदार्थ सूर्यनारायण को प्रिय नहींहै इसलिये इनके मंदिर में अवश्य पुराण बचवावै अथवा आप बांचै॥

नब्बेवां अध्याय॥

ब्रह्माजी कहतेहैं कि हे दिंडी हम तुमको एक इतिहास सुनातेहैं प्रीतिसे सुनो। एकसमय कुमार हमारे समीपआये हमने भी उनको आदर से आसन पर बैठाय कुशल प्रश्न पूछ यह भी पूछा कि आप कहां से आये हो तब कुमार कहने लगे कि हम आज सूर्यलोक में गयेथे वहां हमने भक्तिसे सूर्य

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नारायण का पूजन किया औ प्रदक्षिणा कर प्रणाम करा औ उनकी आज्ञा से आसन पर बैठे इसी अवसरमें रत्नों के जड़ाऊ विमानमें बैठा हुआ अति तेजस्वी एक पुरुष वहां आया उसको देख सूर्यनारायण अपने सिंहासन से उठे औ उसका दहिना हाथ पकड़ बड़े आदर से आसन पर बैठाय अर्घ्य दे प्रीति से स्वागत प्रश्न करते भये औ प्रीतिसे यह भी उस पुरुषसे कहा कि तुम हमारे परम प्रिय हो अब प्रलयपर्यंत हमारे समीपही रहो फिर ब्रह्मलोक को जाओगे। सूर्यनारायण उस पुरुष का आदर करही रहेथे कि विमानमें बैठाहुआ एक और पुरुष आया उसका भी पहिली भांति सूर्यनारायण ने बहुत आदर सत्कार किया यह देख हमको बहुत आश्चर्य हुवा तब हमने सूर्यनारायण से पूछा कि महाराज ये दोनों कौनहैं इनने ऐसा क्या उत्तम कर्म किया है कि आपने अपने हाथ इन दोनों का पूजन किया। यहदेख हमको बड़ा आश्चर्य हुआहै क्योंकि ब्रह्मविष्णु औ शिव सदा आपकाअर्चन करतेहैंऔ आपने इनकापूजनकिया यह बड़े आश्चर्यकी बातहै कौनऐसा उत्तमकर्म इनदोनोंनेकिया कि जिसका यह फलहै आप कृपा कर हमको कहैं॥

यहसुन सूर्य भगवान् कहने लगे कि आपने बहुतअच्छीबात पूछी हमइसका वर्णन करतेहैं आप श्रवण करो। हमारे वंशके राजाओंकी राजधानी अयोध्यानाम नगरीहै उसमेंधनपालनाम एक वैश्य था उसने एक बहुत उत्तम हमारा मंदिर बनाया औ ब्राह्मणों के समूह का पूजनकर पौराणिक आचार्य को बुलाय पुस्तकका औ आचार्यका भक्तिसे अर्चनकर यह प्रार्थनाकरी कि महाराज आपसूर्यनारायणके संमुख पुराणबांचैं जिससे येचारों वर्णके मनुष्य श्रवणकरैं औ मेरे ऊपर भी सूर्यनारायणका अनुग्रहहो। यह कहकर सौ मोहर आचार्यको समर्पण प्रा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar, Collection. Digitized by eGangotri Foundation USA

करी कि महाराज आप प्रीतिसे कथाबांचैं बर्षके अनंतर आपका और भी पूजन करूंगा यहसुन आचार्य्य प्रसन्नहो कथा कहने लगे परंतु छ महीनेके अनंतर वैश्य का देहांत होगया वहीवैश्य यह पुरुषहै जो पहिले आयाहै हमने इसकेलाने को विमान भेजाथा हेकुमार गंध पुष्प आदि उपचारोंसे पूजन करने करके हमारी वैसी प्रसन्नता नहीं होती जैसी पुराण कथा बँचवायेसे होतीहै गौ सुवर्ण बस्त्र भूषण हाथी घोड़े ग्राम नगर आदि हमारे अर्पणकरै तौभी पुराण कथा बिना हम प्रसन्न नहीं होते हे कुमार बहुत कहां तक कहैं पुराण कथा से अधिक हमारी प्रीति करने हारा कोई कर्म नहींहै जो दूसरे बिमानमें पुरुष आया यह भी उसी नगरमें ब्राह्मण था एक दिन यह कथा श्रवण करने हमारे मंदिर में गया वहां जाय इसने भक्ति से पौराणिक का पूजन कर प्रदक्षिणा करी औ एक मासा सुवर्ण कथा पर चढ़ाया औ कथा श्रवण कर बहुत प्रसन्न भया केवल इसी कर्म के फल से यहां प्राप्त भया औ हमने अपने हाथ इसका पूजन किया हे कुमार भक्तिसे जो पौराणिक का पूजनकरै उसनेब्रह्मा विष्णु शिव आदि सब देवताओं का पूजन किया जो पौराणिक को पूजनकर भोजन करावै उसको पंद्रहवर्ष तककरे हुवे हमारे पूजन का फल प्राप्त होता है यम यमुना तपती शनैश्चर मनु आदि हमारे संतान भी हमको ऐसे प्रिय नहीं हैं जैसा पुराण बांचने वाला पुरुष प्रिय है एकबार पौराणिक का पूजन करने से दोसौ वर्ष पर्यंत हमको तृप्ति रहती है केवल हमारीही तृप्ति नहीं होती इंद्र आदि देवता भी तृप्त होजाते हैं क्योंकि पौराणिक सब देवताओं का प्रीति पात्र है उस के प्रसन्न होने से सब देवता प्रसन्न होते हैं हे ब्रह्माजी यह बात सूर्य नारायण के मु से श्रवण कर बडे आश्चर्य्यसे आपके पास आयेहैं अब

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

आप हमारा संदेह निवृत्त करैं कि क्या पुराण श्रवण का ठीक ऐसाही फलहै हे दिंडी यह सुन हमने कुमार से कहा कि तुम धन्यहो कि ऐसा सत्कर्म करने हारे पुरुषों का दर्शन किया औ सूर्य नारायण के मुख से उनकी प्रशंसा श्रवण करी हे कुमार सूर्य नारायणने जो कथन कियासब यथार्थहै उसमेंकभी भ्रांति मत करो हे कुमार हमने अपने पंचम मुख से इतिहास औ पुराणरचे हैं हमको चारों वेदोंसेभी पुराण औ इतिहास अधिक प्रिय हैं क्योंकि वेदोंका अर्थ गूढ़ है औ येसब स्फुटार्थ हैं धर्म अर्थ काम औ मोक्ष का इनमें विस्तार से वर्णनहै जोइनको श्रवण करै वह अवश्य परम पद पाता है औ पौराणिक को दक्षिणा देवै तो बहुतही फलहै जैसे देवताओं में इंद्र औ शस्त्रोंमें वज्र सर्वोत्तमहै इसी प्रकार मनुष्यों में पुराण बांचने वाला श्रेष्ठहै। जो पौराणिक का पूजन भक्तिसे करै उसको सम्पूर्ण जगत् के पूजन का फल प्राप्त होताहै मनुजीने भी कहाहै कि पौराणिक के समान और कोई पात्र नहीं है ब्रह्माजी कहतेहैं कि हेदिंडी इसप्रकार हमारे मुखसे सुन प्रसन्नहो कुमार अपने धामकोगये हे दिंडी सूर्यनारायण के मंदिरमें जोपुराण श्रवणकरै वह परम गति को प्राप्त होताहै॥

इक्कानवेंका अध्याय॥

ब्रह्माजी कहतेहैं कि हेदिंडी जो पुरुष प्रदक्षिणाकर भूमि पर मस्तक रख सूर्यनारायण को प्रणाम करै वह उत्तम गति पाताहै जूतापहिने जोपुरुष सूर्यमन्दिरमें जायवह अंध तामिस्र नाम घोर नरक में पड़ता है मूत्र बिष्टा अथवा थूक जो सूर्यनारायण के मंदिर में डालतेहैं वेभी नरकमें पड़ते हैं घृतदूध शहत इक्षुरस औ उत्तम जल जो सूर्यनारायण के स्नानके लिये

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

देवैं वे उत्तम गति पावैं स्नान के समय जो सूर्य्यनारायण का दर्शन करैं वे अश्वमेधके फलको प्राप्तहोय शिवलोकको जातेहैं जो भक्तिसेस्नानकरावैं वे अश्वमेध औराजसूयके फलकोप्राप्त होंय परंतु ऐसे स्थानमें स्नान करानाचहिये जहां स्नानकेजल को कोई उलंघन न करै इसजलके उलंघनकरनेसे अशुभहोता है अर्थात् लंघन करने हारा पुरुष नरक में पड़ता है घृत से स्नान करावै तो ब्रह्मलोक को शहतसे स्नान करावै तो वरुण लोकको, जलसे स्नान करावै तो देवलोकको, इक्षुरस से स्नान करवै तो वायुलोक को औसव द्रव्यों से स्नान करावै तो सूर्य-लोक को प्राप्त होता है ॥

बानवें का अध्याय ॥

दिंडी पूछते हैं कि महाराज आपने सातसप्तमी कही उनमें एकका तो विस्तार से वर्णन किया औ बाकी छ सप्तमियों का विधान नहीं कहा इसलिये कृपा कर आप उनका भी वर्णन कीजिये जिनके उपवास करनेसे सूर्य्य लोककी प्राप्ति होय यह दिंडी का बचन सुन ब्रह्माजी कहने लगे कि हे दिंडी शुक्लपक्ष की जिस सप्तमी को हस्त नक्षत्रहोय उसको जया सप्तमीकह-ते हैं उसदिन कियाहुआस्नान, दान, जप, होम, पूजन आदिकर्म सब सौगुणा होजाता है यह सप्तमी सूर्य्यनारायण को बहुत प्रिय है इसके उपबास से धन, यश, पुत्र औ सब मनोबांछित फल प्राप्त होतेहैं जया सप्तमीसे ब्रत का आरम्भ कर चार २ महीनेमें पारण करै इस प्रकार एक बर्ष में तीन पारण होते हैं पहिले पारण में करबीर के पुष्प चढ़ाय कसार का नैवेद्य लगावै औ ब्राह्मणों को भी कसारही भोजन करावै पंचमी को एक भक्त षष्ठीको नक्त औ सप्तमी को उपबास कर अष्टमी को

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पारण करै इस व्रतको अर्कके काष्ठ से दन्तधावनकर श्वेतसरसों का उबटना लगाय स्नानकरै औ गोबरका प्राशन करै यह प्रथम पारण का बिधान है दूसरे पारण में चमेली के पुष्प श्वेत चन्दन विजयधूप पायस नैवेद्य औ भांति २ के उपचारों से सूर्यनारायण का पूजन करै औ ब्राह्मण भोजन कराय आप भी मौनसे खीर का भोजन करै औ यह कहै कि देव देव श्री सूर्यनारायण मुझपर प्रशन्नहोंय इसपारणमें खदिरके काष्ठ से दन्तधावन औपंचगव्यकाप्राशनकरै तीसरेपारणमें श्वेतचन्दन अगस्ति पुष्प औ भातिर् के नैवेद्योंसे पूजनकरै इस पारणको कुशा के जलका प्राशन औ बदरी काष्ठ का दन्त धावन करै वर्षके अंतमें सूर्यनारायण का बड़ा पूजन करै औ नाच तमाशा आदि उत्सव करावै गौ भूमि औसुवर्णआदि दानदेकर ब्रह्मणों को प्रसन्न करै औ वस्त्र भूषण आदि से पौराणिकका पूजनकर सूर्यनारायण के संमुख खड़ाहो यह श्लोक पढ़ै कि देवदेवजगन्नाथ सर्वरोगार्तिनाशन। ग्रहेशलोकतपनविकर्तनभयापहकृते॰ यंदेवदेवेश जयानामेतिसप्तमी मयातवप्रसादेन धन्यापापहरा शिवा। यह पढ़ बारम्बार प्रणाम करै हे दिंडी इस विधिसे जो सप्तमी व्रत करै उसका स्नान आदि कर्म सौगुणा होजाताहै इस व्रतके करने हारा पुरुष धन धान्य पुत्रआयुष औ आरोग्य पाताहै औ बहुत काल सूर्यलोकमें निवास कर वहांउत्तमभोग भोग भूमि पर आय चक्रवर्ती राजाहोय चिरकालपर्यंत निष्कंटक राज्य करताहै हेदिंडी इस माहात्म्यके श्रवणसे भी बहुत फल होताहै॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

तिरानवें का अध्याय ॥

ब्रह्माजी कहते हैं कि हे दिगडो माघ शुक्ल सप्तमी का नाम जयंती है उसका यह बिधान है कि पंचमी को एक भक्त षष्ठी को नक्त औ सप्तमी को उपवास कर अष्टमी को पारणकरै इस व्रतमें चार पारण होते हैं प्रथम पारण में केसरका चन्दन वक पुष्प, मोदक, नैवेद्य औ घृत का धूप इनसे सूर्यनारायण का पूजनकरै ब्राह्मणोंको मोदक औ बहुतउत्तम भात भोजन करावै औ आप पंचगव्य प्राशन करै इस प्रथम पारण के करने से अश्वमेध का फल होताहै दूसरे पारण में कमल के पुष्प रक्त-चंदन, गुग्गुलु, धूप और गुड़ के अपूप ये सूर्य्यनारायण केसमर्पण करै औ ब्राह्मणों कोभी गुड़ के अपूप भोजन करावै आप गोबर का प्राशन करै इस पारण के करने से राजसूय यज्ञ का फल होता है तीसरे पारण में रक्तचंदन, मालतीपुष्प, बिजयधूप औ गुड़ के अपूप नैबेद्य इनसे सूर्य्यनारायण का अर्चनकर ब्राह्मणों कोनी अपूपही भोजन करावै औ कुशोदक प्राशनकरै इसकेकरने से राजसूय औ अश्वमेध का फलप्राप्त होता है चौथे पारण में रक्तचंदन, रक्तकरवीर के पुष्प, अमृतधूप औ पायस नैवेद्य इन करके पूजन करै औ पंचगव्य प्राशन करै चंदन, अगर, मोथा, कस्तूरी औ सिहलक ये सम भागलेकर धूपबनावे उसकोअमृत-धूप कहते हैं चारोंपारणों में चित्रभानु भानु, आदित्यऔभास्कर इन नामोंसे क्रम करके पूजन करै इस बिधिसे इसतिथिको जो सूर्य्यनारायण का पूजन करै वह परम पदको प्राप्तहोताहै इस व्रतके करने से पुत्र, धन, आरोग्य औ यश की प्राप्ति होती है बर्ष पूरा होनेपर बड़ा उत्सव करै ब्राह्मण भोजन करावै वस्त्र भूषण आदि से पौराणिक का पूजन करै औ यह श्लोक पढ़

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सूर्य्यनारायण को प्रार्थनाकरै कि (धर्मकार्येषुदेवेश अर्थकार्येषुनि त्यशः। कामकार्येषुसर्वेषुजयोभवतुसर्वदा १ इसविधिसे जो इस व्रत को करै वहसब पापों से मुक्तहो उत्तम विमान में बैठसूर्य्य लोक को जाय औ सूर्य्य के समान तेजस्वी होय॥

चौरानवें का अध्याय॥

ब्रह्माजी कहते हैं कि हे दिंडो भाद्रशुक्ल सप्तमी को अपरा-जिता कहते हैं चतुर्थी को एक भक्त पंचमी को नक्त षष्ठी को उपवास औ सप्तमी को पारण करै इस व्रत में चार पारण कहे हैं प्रथम पारण में रक्तचंदन करवीर पुष्प गूगल का धूप औ गुड़ के अपूपों का नैवेद्य इनसे सूर्य्यनारायण का पूजनकरै औ गुड़ के अपूपही ब्राह्मणों को भोजनकरावै दूसरे पारणमेंकेसर का चंदन श्वेत पुष्प सिह्लक का धूप औ शाली का भातनैवेद्य सूर्य्यनारायणके अर्पण करै तीसरे पारण में अगुरु का चंदन रक्तकमल, अनंतधूप, गुड़के अपूप, नैवेद्य इनसे पूजन करै चंदन ग्रंथि, पर्ण, अगुरु, सिह्लक, शर्करा, कपूर औ मोथा इन को सम भाग मिलाकर अनंत धूप बनता है यही बिधि चतुर्थ पारणकी है चारों पारणों में भग, अंशुमान, अर्यमा औ सविता इनकाक्रम से पूजन करै औ गोमूत्र पंचगव्य घृत औ गरमजल चारों पारणोंमें प्राशनकरै इस बिधिसे जो इससप्तमीव्रत को करै वह शत्रुओंमें कभी पराजय न पावै औ धर्म अर्थ तथा कामको पाय सूर्य्यलोकमें जावै बर्षपूरा होनेपर ब्राह्मण भोजनकराय पौरा-णिककापूजनकरै और रक्तवर्णकी ध्वजा सूर्य्यनारायणके मंदिर पर चढ़ावै इस व्रत को जो पुरुष करै वह सदा युद्ध में जय पावै औ अंतसमय उत्तम बिमान में बैठ सूर्य्यलोक को जावै॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पंचानवें का अध्याय ॥

ब्रह्माजी कहते हैं कि हेदिंडी जिस सप्तमीको संक्रांति होय उसको महा जया सप्तमी कहते हैं उस दिन किया हुआ स्नान दान, जप, होम, पूजन आदि कर्म्म कोटि गुणित होजाताहै इस तिथिको जो घृतकरके सूर्य्यनारायण को स्नानकरावै वह अश्वमेध का फल पाय स्वर्ग में निवास करता है जो भक्तिसे दुग्ध करके स्नान करावै वह सब पापों से छुट सूर्य्यलोक को जाय औ अनेक प्रकार के उपचारों से पूजन कर भांति २ के नैवेद्य लगावै वह किंकिणी जालकरके युक्त सुवर्णके बिमानमेंबैठ सूर्य लोकमें प्राप्तहोय वहांसे आय सूर्य्य के समान तेजस्वी औ चंद्र के सम कांतिमान होकर बहुत काल धर्म्मसे राज्यकरै हेदिंडी इसव्रतको भक्तिसे करै तो स्थिर लक्ष्मीपावै औ अंतसमय सूर्य नारायण में लीनहोय ॥

छियानवें का अध्याय ॥

ब्रह्माजी कहतेहैं कि हेदिण्डी मार्गशीर्ष महीनेके शुक्लपक्षकी सप्तमी नंदाकहातीहै पंचमीके दिन एकभक्त षष्ठीको नक्त सप्तमी को उपवास और अष्टमी को पारण करै इस व्रत के भी तीन पारणहैं प्रथमपारणमें सुगंध, चंदन, मालतीपुष्प, कर्पूरऔअगुरु का धूप दहीभात औ शर्करा का नैवेद्य इनसे सूर्यनारायणका पूजन करै औ ब्राह्मणों को भी दही भात औ खाँड़ भोजन कराय आप भोजनकरै दूसरे पारण में रक्तचन्दन, पलाश पुष्प यक्षनामक धूप औ खाँड़से वेष्टित पक्वान्न नैवेद्य इनसे सूर्यनारायण का पूजनकरै कपूर, चंदन, कूठ, अगुरु, सिह्लक, ग्रन्थिपर्णि कस्तूरी केसर, गृंजन औ हरड़ इनके समभाग मिलानेसे यक्ष-

न

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

धूप बनता है ब्राह्मणोंको भोजनकराय आप भी मौनसे भोजन करै तीसरेपारणमें चन्दन, नीलकमल, प्रबोध नाम धूप औ खीर खाँड़के नैवेद्य से सूर्य्यनारायण का पूजन कर ब्राह्मण भोजन करावै कालाअगुरु, सिंहलक, बाला, कस्तूरी, चंदन, तगर, मोथा औ खाँड़ इनसे प्रबोधधूप बनता है तीनों पारणों में विष्णु भग औ धाता इनका क्रमसे अर्चनकरै इसबिधिसे जो पुरुष नंदा सप्तमी का व्रतकर पारण करै वह पुत्र धन विद्या यश आदि अपने मनोवाञ्छित फलपाताहै औ बहुतकाल नंदनबनमें अप्सराओं के साथ विहार कर सूर्य भगवान् में लीनहोताहै इसमाहात्म्य के श्रवण करनेसे भी स्वर्गकी प्राप्ति होतीहै॥

सतानवें का अध्याय॥

ब्रह्माजीकहतेहैं कि हे दिण्डी जिस शुक्लपक्षकी सप्तमीको हस्त नक्षत्रहोय वह भद्रासप्तमी कहातीहै उसदिन उपवासकर सूर्यनारायणको स्नानकरावै औ चंदन से लेपनकर करवीर आदि पुष्पचढ़ावै गुड़सहित गेहूंके आटेका भद्र बनावै उसके चारोंशृङ्गों में हीरा मोती पद्मराग औ पन्नालगाय सूर्यनारायण के सन्मुख स्थापनकरै औ उसकेऊपर यथाशक्ति सुवर्णभी धरै चतुर्थीकोएक भक्त पंचमीको नक्तषष्ठीको अयाचित औ सप्तमीको उपवासकरै उपवासके दिन पाखंडी, कुकर्मी, दांभिकआदि पुरुषोंसे संभाषण न करै औ दिनमें न सोवै भक्तिसे सूर्यनारायणका पूजनकर वह भद्रब्राह्मणको देवै इसविधिसे जो उपवासकर भद्रकादानकरै वह सब मनोवांछित फल पावै यहसुन दिंडीनेपूछा कि महाराज यह भद्र कौन पदार्थ है क्योंकर बनता है औ इसके दान से क्या फल होता है यह आप वर्णन करैं तब ब्रह्मा जी बोले कि हे दिंडी यह व्योमभद्र नामक सूर्य्यनारायण का चिह्न है

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

इसके दान से सब पाप निवृत्त होते हैं औ सूर्यनारायण की प्रसन्नता होतीहै गेहूंका आटा घृत श्वेत शर्करा इलायची दालचीनी तजपत्र नागकेसर औ दाख खोपरा आदि मेवा इन सब को मिलाय बहुत स्वादिष्ट औ सुगंध भद्र बनावै उसके चारों शृङ्गों में हीरा आदि चार रत्न औ मध्य में इंद्र नील लगाय सूर्य भगवान् के प्रीत्यर्थ पौराणिक अथवा भोजकको देवै इसप्रकार जो भद्र का दान करै वह सब प्रकार के भद्र अर्थात् कल्याण पावै औ बहुत काल सूर्यलोकमें निवासकर ब्रह्मलोक को जाय फिर भूमिपर आय चक्रवर्ती राजा होय हे दिंडी इसभद्रसप्तमी का जो उपवास करैं अथवा जो इसमाहात्म्य कोही पढ़ैं औ सुनैं वे सब कल्याणके भागी होतेहैं औ अंतमेंउत्तमगतिपातेहैं॥

इतनी कथा सुनाय सुमंतु मुनि बोले कि हे राजा शतानीक इसप्रकार ब्रह्माजी ने दिंडीके प्रति जो सप्तमी माहात्म्य कहा था वही हमने आपको श्रवण कराया। सप्तमी व्रतकोग्रहणकर पारण किये बिना जो पुरुष त्याग दे वह आरूढ़ पतित अर्थात् ऊंचे स्थान पर चढ़ गिरनेवाला होताहै इसलिये उद्यापन किये बिन इस व्रत को न त्यागै जो भक्तिसे इस व्रतको कर उद्यापन करे वह अश्वमेध का फलपाताहै॥

अट्ठानवे का अध्याय॥

सुमंतुमुनि कहते हैं कि हे राजा सब तिथि सूर्यनारायण कोही हैं परंतु उनमें सप्तमी सबसे प्रियाहै जैसे पुरुष की बहुत सी भार्याओं में एक पर अधिक प्रीति होती है यह सुन शतानीक ने पूछा कि महाराज सब तिथियों के सूर्यनारायण स्वामी हैं फिर सप्तमीकोही उनका याग क्यों करते हैं यह राजाका प्रश्न सुन समंतु मुनिने कहा कि हे राजा यहबात विष्णु भग-

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वान् ने ब्रह्माजी से भी पूछी थी तब ब्रह्माजी हँस कर कहने लगे कि महाराज सूर्यनारायण ने सब तिथि देवताओं को बांट दी केवल सप्तमी अपने लिये रक्खी जो तिथि जिस देवताको दी वही उसका स्वामी कहाया औ उस तिथि को पूजन करने से वरप्रदहुआ। भगवान् ने पूछा कि कौन २ तिथि किस २ देवता को दी कि जिसदिन पूजन करने से वह वरदायक होता है तब ब्रह्माजीने कहा कि महाराज प्रतिपदा अग्निको, द्वितीया हमको, तृतीया यक्षराज को, चतुर्थी गणेश को, पंचमी नागराज को, षष्ठी कार्तिकेयको दी औ सप्तमी अपने लिये रक्खी अष्टमी रुद्रको, नवमी दुर्गाको, दशमी यमराज को, एकादशी विश्वेदेवों को, द्वादशी आपको, त्रयोदशी कामदेव को, चतुर्दशी शिवजीको, पूर्णिमा चन्द्रमाको औ अमावास्या पितरोंको दी ये तिथि चन्द्रमाकी कलाहैं कृष्णपक्ष में देवता इनको पानकरजाते हैं औ शुक्लपक्षमें फिर उत्पन्न होतीहैं सोलहवीं कला अक्षय है चन्द्रमाका क्षय औ वृद्धि सूर्यनारायण करतेहैं इसलिये चंद्रमा के भी स्वामी वेही हैं जिस तिथि में पूजन करने से जो देवता प्रसन्न होकर जो फल देताहै उसका हम संक्षेपसे वर्णनकरते हैं प्रतिपदाके दिन अग्निमें घृत आदि का हवनकरे तो धनधान्य पावै द्वितीया को हमारा पूजन कर ब्रह्मचारियों को भोजन करावै तो सब विद्याओं का पारगामी होय तृतीया को कुबेर का पूजन करै तो व्यापार में बहुत लाभ होय औ धनाढ्य हो जाय चतुर्थी को गणेश का अर्चन करै तो सब कार्य निर्विघ्न सिद्ध होंय औ शत्रुओंको विघ्नहोय पंचमी के दिन नाग पूजा करै तो बिषकाभय न होय औ स्त्री पुत्र तथा धनभी पावै षष्ठी को कार्तिकेय का अर्चन करै तो बुद्धिरूप आयुष औ कीर्ति की वृद्धिहोय सप्तमी को सूर्य्यनारायण का पूजन करै तो मनो-

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वाञ्छित फल पावै अष्टमी के दिन शिवका पूजनकरै तो स्थिर लक्ष्मी पावै औ संसार पाश को काटने हारा ज्ञान प्राप्त होय जिससे जन्म मरण का भय छुटै नवमी के दिन भगवती का पूजन करै तो सब प्रकार के कष्टों से छुटै औ युद्ध तथा बिवाद में जय पावै दशमी के दिन यमराज का पूजन करै तो मृत्यु रोग और नरकका भय न होय एकादशी को विश्वेदेवोंकापूजन करै तो संतान धन धान्य पशु औ भूमि पावै द्वादशी के दिन आपका पूजन करै तो विजय पावै औ जगत्पूज्यहोय त्रयोदशी को कामदेव का अर्चन करै तो उत्तमरूप पावै चतुर्दशीके दिन शिवजीको पूजै तो बहुत से पुत्र धन औ ऐश्वर्य पावै पूर्णमासी को चंद्रमा का पूजन करै तो बहुत मनुष्यों का अधिपति बनै औ उसके सब काम पूर्ण होंय अमावास्या के दिन पितरों को पिंडदेवै तो संतान धन औ आयुष्की वृद्धि होय यह तो केवल पूजन का फल है और जो उपवास जप हवन आदिकरैऔमूल मंत्र तथा अंग मंत्रों करके भक्तिसे पूजन करै तो बहुतही फल पावै परंतु पूजन आदि में वित्तशाठ्य न करै बहुतसे घृत दही दूध शहत औ समिधाओं से हवन करै औ शांतचित्त होकरमंत्र जपै तब पूराफलहोताहै देवताकी उपासनासे मनुष्यइसजन्ममें सुखी रहता है औ परलोकमें उपास्य देवताके समीपबहुतकाल निवासकर उत्तम जन्म पाय उसी देवताका भक्त होता है। यह तो तिथियों का पूजन कहा इसी प्रकार नक्षत्रों के भी देवता हैं जिस नक्षत्रमें चन्द्रमाहोय वह उसदिनका नक्षत्र होताहै उसमें उसके देवता का पूजन करै जैसे अश्विनी नक्षत्र में अश्विनीकुमारों को पूजै तो दीर्घ आयुष्पावै भरणी में गन्ध कृष्णवर्ण के पुष्प औ नैवेद्यआदि उपचारोंसे यमराज का पूजनकरै तो अपमृत्युसेबचै कृत्तिकामें रक्तपुष्प औ घृत आदिके होमसे अग्निका

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पूजन करै तौ बहुत संपत्ति मिलै रोहिणीमें प्रजापतिकी अर्थात् हमारी पूजा करै तो संतान औ पशुओं की वृद्धि होय मृगशीर्ष में चन्द्रका पूजनकरै तो धन औ आरोग्य पावै आर्द्रा नक्षत्र में शिवजीका अर्चनकरै औ श्वेत कमलआदि पुष्पचढ़ावै तो विजय यश संतान औ धन पावै औ देह त्यागके अनंतर देवता होय पुनर्वसु में भक्ति से अदिति का पूजन करै तो वह माताकीभांति रक्षा करती है पुष्यमें पीत पुष्पों करके वृहस्पति का पूजनकरै तो धनसंतान आदि की वृद्धि होय श्लेषा में नागों का पूजन कर दुग्ध आदिसे उनका तर्पण करै औ अनेक प्रकार मीठे पक्कान्न नागों को नैवेद्य लगावै तो बिष आदि का भय कभी न होय मघामें हव्य कव्य आदि करके पितरों का पूजन करै तो धन धान्य उत्तम सेवक पुत्र औ पशु पावै पूर्वाफाल्गुनी में भगनाम आदित्य का पूजन करै तो संग्राम में जयहोय उत्तराफाल्गुनी में जो कन्या अर्यमाका अर्चनकरै वह उत्तमपतिपावै औ पुरुष अर्चनकरै तो रूप औ धनकरके युक्तभार्य्यामिलै हस्त में सब प्रकार के पुष्पों से सूर्य्यनारायण का अर्चनकरै तो बहुत धन मिलै चित्रा में त्वष्टा का अर्चनकरै तो राज्यपावै स्वाति में पवनको पूजै तो संपत्ति मिलै बिशाखामें इंद्र औ अग्निकापूजन करैतो धन धान्य औ तेजकी प्राप्तिहोय अनुराधा में रक्त पुष्पों करके मित्रका अर्चनकरै तो सबका प्रियहोय ज्येष्ठा में इन्द्रका अर्चनकरै तो धन पुष्टि औ उत्तम गुणपावै मूल में देवता पितर औ निऋति का पूजन करै तो शरीर औ मानस संताप से छुटै पूर्वाषाढ़ा में जलका पूजन करै तो आरोग्य पावै उत्तराषाढ़ा में पुष्पआदि करके बिश्वेदेवोंका पूजनकरै तो मनोवाञ्छित फल पावै श्रवण में श्वेत पीत औ नील पुष्पों करके भक्ति से आपका अर्चन करै तो लक्ष्मी औ युद्ध में विजय पावै धनिष्ठा में गन्ध

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पुष्य आदिसे बसुओं का पूजनकरै तो महाभयभी निवृत्तहोय शतभिषामें रोगी पुरुष वरुण का पूजन करै तो आरोग्य होय औ आरोग्य पुरुष करै तो बहुत ऐश्वर्य्य पावै पूर्व्वाभाद्रपदा में शुद्ध स्फटिक के समान अजैकपाद नामक रुद्रका पूजन करै तो मुक्ति पावै इसमें कुछ संदेह नहीं उत्तराभाद्रपदा में अहिर्बुध्न्य नाम रुद्रको पूजे तो सब प्रकारकी शान्ति होय रेवती में भक्ति से पूषाका पूजनकरै तो पुष्टि शान्ति धृति संपति औ संततिपावै ये हमने संक्षेप से नक्षत्र यज्ञकहे हैं इनको अपने वित्तानुसार भक्तिसे करै तो सब फलपावै जिस नक्षत्रमें यात्रा अथवा और कोई कर्म करना हो पहिले उस नक्षत्र का याग करै पीछे वह कर्म्म करै तो कभी निष्फल न होय औ याग करनेका सामर्थ्य न होय तो उस देवता के मंत्र का जपही कर लेवै कालचक्र में सूर्य्यनारायण का पूजन करै तो मुक्तिपावै क्योंकि नक्षत्र चंद्रमा तिथि अथवा संपूर्ण जगत् सूर्य्यनारायणके आधीन है जगत्में ऐसा कोई पदार्थ नहीं जो सूर्य्याराधन से न मिलै हेभगवन् आपभी भक्तिसे सूर्य्यनारायणका आराधन करैं यज्ञ पूजननमस्कार शुश्रूषा उपवास औ ब्राह्मणभोजन आदिकरके सूर्यनारायणकाआराधनकरतेहैं वे सबपापोंसे छुट सूर्यलोकको जातेहैं॥

निनानवें का अध्याय॥

ब्रह्माजी कहतेहैं कि हे विष्णु भगवन् जो बहुत दृढ़ मंदिर सूर्यनारायणकी प्रीतिकेलियेबनावै वहअपने सातपुरुषोंसहित सूर्य्यलोकमेंनिवासकरताहै जो पुरुष उत्तम पुष्प सुगंध धूपदीप औ नैवेद्यसूर्यनारायणके अर्पणकरैउसको यज्ञका फलप्राप्तहोता है यज्ञमेंबहुतधनचाहिये इसलिये धनहीनमनुष्य दूर्बाकेअंकुरों करके भी सूर्य्यनारायणका पूजनकरैंतो यज्ञकेफलकोप्राप्तहोंय

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

उत्तम२ भूषण रक्तवर्ण के वस्त्र भांति२ के भक्ष्य भोज्य सूर्यनारायण को निवेदनकरै तीर्थकेजल घृत शहद दूध आदिसेस्नान करावै तो ऐसेलोकमें निवासकरै जहां घृत दुग्ध आदिकेतलाव भरेहों। हेभगवन् सूर्य्यनारायण का आराधनकर सतहत्तरपुरुष तो विदेह राज के औ पचास पुरुष हैहय के मुक्ति को प्राप्तभये इसलिये सूर्य्यनारायणकी अवश्यउपासना करनीचाहिये यह सुन विष्णु भगवान् ने पूछा किहे ब्रह्माजी उपवास करने से किसप्रकार सूर्यनारायणप्रसन्न होतेहैं उपवासमें त्याज्य क्या२ है औ सूर्यनारायण का आराधन किसविधि करनाचाहिये यह आप वर्णन करैं। यह भगवान्का बचन सुन ब्रह्माजी कहनेलगे कि महाराज गंध पुष्प आदि उपचारों से पूजन करै तो सूर्यनारायण अनुग्रह करतेहैं फिर उपवास करने हारे परतो बहुतही प्रसन्न क्यों न होंव पापोंसे निवृत्त होकर गुणों के साथ जो निवास उसका नाम उपवासहै एकरात्र द्विरात्र अथवा त्रिरात्र उपवासकर सूर्यनारायणका ध्यानकरै औ निष्कामहो भक्तिसेपूजन जप आदिकरै तो मुक्तिपावै सूर्यनारायणके आराधनबिना सद्गति नहीं प्राप्तहोती जिस पुरुषका चित्त विषयों में आसक्त हो औसूर्य्यनारायणके आराधनमें अनेक विकल्पकरै वह कभी उत्तमगति नहीं पाता जो संसारसे मुक्त होनेकी इच्छा होय तो सूर्य्य नारायण का आराधन करै पुष्प न मिलैं तो वृक्षके कोमल पत्र औ दूर्वा के अंकुरों सेही पूजन करै पूजन आदि में भक्ति ही प्रधानहै भक्तिस फलहोता है सूर्यनारायण के मंदिर को जो पुरुष बाहिर भीतरसे मार्जन करै वह बाहिर भीतर से निष्पाप होजाय सूर्य भगवान् को एक बार प्रणाम करै तो दश अश्वमेध का फल होय परन्तु दश अश्वमेध करने हारा फिरभी संसारमें जन्म लेताहै औ सूर्य नारायण को प्रणाम करनेहारा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

फिर जन्म नहीं लेता सूर्य्य नारायण का आराधन कर रुद्र भगवान् ब्रह्महत्या से छूटे हमको यह पद उन केही अनुग्रह से प्राप्त भया चारों वर्ण औ आश्रमों के पूज्य सूर्य्य नारायण हैं उनकेही आराधन से सब प्रकार के मनोरथ सिद्ध होते हैं औ उत्तम गति मिलती है॥

सौवां अध्याय॥

ब्रह्माजी कहते हैं कि हे विष्णु भगवन् अब हम उपवासों का वर्णन करते हैं जिनके करने से मनोवांछित फल प्राप्त होते हैं। फाल्गुन शुक्ल सप्तमी को उपवास कर सूर्य्य नारायण का पूजन करै औ चलने में गिरने में छीकने में हेलि इस सूर्य्यनारायण के नाम का उच्चारण करै औ दिन भर इसी नाम को जपै पाखंडी पतित औ पापी पुरुषों के साथ संभाषण न करै औ पूजन के अंत में हाथ जोड़ सूर्य्य नारायण के संमुख यह श्लोक पढ़ै (हंसहंसकृपालुस्त्वमगतीनांगतिर्भव। संसारार्णवमग्नानां त्राताभवदिवाकर) पूर्वाह्नमेंही स्नानकर पूजन करै औ हंस २ इस नाम का स्मरण करै चैत्र वैशाख औ ज्येष्ठ में भी इसीविधि से पूजन करै तो सत्यलोक को जाय आषाढ़ आदि चारमहीने भी इसी रीति से अर्चन कर मार्तंड नाम का जप करै औ गो मूत्र का प्राशन करै तो सूर्य्यलोक में प्राप्त होय कार्त्तिक आदि चार मास पूजन कर दुग्ध का प्राशन करै औ भास्कर नामका जप करै वह भी सूर्य्यलोक में चिरकाल निवास करै प्रतिमास ब्राह्मणों को दान देवै औ प्रति चतुर्मास की समाप्ति पर पौराणिक का पूजन कर पुराण श्रवण करै प्रथम चार मास के व्रत करने से उत्तम भोग मिलते हैं दूसरेसे इन्द्र के समान ऐश्वर्य्य औ तीसरे चातुर्मास्य के उपवास से सूर्य्यलोक की प्राप्ति होय।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

इस सप्तमी व्रतको जो पुरुष अथवा स्त्री करै वह उत्तमगति को प्राप्त होय यह तिथि धन्य है पाप हरने में समर्थ है औ सूर्य्य-नारायण के आराधन योग्य है इसका माहात्म्य भी पढ़ने औ सुनने से सब पाप निवृत्त होतेहैं औ त्रिवर्ग की प्राप्तिहोतीहै॥

एकसौ एकका अध्याय॥

ब्रह्माजी कहते हैं कि हे विष्णुजी फाल्गुन शुक्लसप्तमीकोउप-वास कर अष्टमी को पारण करे अष्टमी के दिन प्रभातही उठ स्नान कर भक्ति से सूर्य्यनारायण का पूजन करै औ सूर्य्यनारा-यण की प्रीतिके लिये अग्निमें घृतसे हवन करै औ ब्राह्मणोंको भोजन कराय दक्षिणादे इन मंत्रों से सूर्य्यनारायणकी प्रार्थना करै कि(यमाराध्यपुरादेवी सावित्रीकाममापवै। समांददातुदेवे-शःसर्वान्कामान्विभावसुः१ यमाराध्यादितिः प्राप्ता सर्वान्का-मान्यथेप्सितान्। सददात्वलिखान्कामान्प्रसन्नोमेदिवस्पतिः२ भ्रष्टराज्यस्तुदेवेंन्द्रो यमाराध्यदिवस्पतिम्। कामार्थमाप्तवान् राज्यंसमेकामंप्रयच्छतु ३) इन श्लोकोंसे प्रार्थनाकर पूजा स-माप्त करै औ हविष्य अन्न भोजन करै फाल्गुन आदि चारमास में करवीर के पुष्प अगुरु धूप औ खंडसे वेष्टित पक्वान्नकानैवेद्य इनसे सूर्य्यनारायण का पूजन करै औ गोशृङ्ग का जलप्राशन करै आषाढ़ आदि चार महीनों में चमेली के पुष्प गूगलका धूप औ पायस नैवेद्य इन करके पूजन करै औ कुशोदक प्राशनकरै आपभी पायस भोजन करै कार्त्तिक आदि चार मासमें रक्तकमल महांगधूप कसार नैवेद्य इन करके सूर्य्यनारायण का पूजनकरै औ गोमूत्र प्राशन करै औ प्रतिमास ब्राह्मणों को दक्षिणा देवै कपूर चन्दन नागरमोथा अगुरु रक्तचन्दन कस्तूरी सिहलक औ शर्करा इनके समभाग मिलाने से महांगधूप बनताहै यह धूप

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सूर्यनारायण को बहुत प्रिय है प्रत्येक पारण में भक्ति से पूजन करै क्योंकि सूर्यनारायण भक्ति सेही प्रसन्न होतेहैं औ प्रसन्न होकर अभीष्ट सिद्ध करते हैं यह सप्तमीव्रतका बिधान है जिसके करने से सब पदार्थ मिलते हैं इस व्रतके करने सेइंद्रको त्रैलोक्य का राज्य सावित्री औ अदिति को पुत्र शुक्रको ज्ञान धौम्य मुनि को वेद आपको लक्ष्मी औ हमको सृष्टि रचने का सामर्थ्य प्राप्त हुआ इस व्रतको ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र स्त्री आदि कोई करैं वह अपना मनोवांछित फल पावै इस व्रतके करने से पुत्र धन औ अरोग्य मिलता है इस व्रतके करने हारा मनुष्य जन्मांतर मेंभी अपुत्र निर्धन औ रोगी नहीं होता औ स्त्री यानिमेंभी नहीं होता औ सुवर्ण के बिमान में बैठ इन्द्रलोक में जाय बहुत काल वहां निवास कर भूमिपर आय प्रतापी राजा होता है ॥

एकसौ दोका अध्याय ॥

ब्रह्माजी कहते हैं कि हे विष्णु जी फिरभी हम तिथियों का माहात्म्य कहते हैं जो सूर्यनारायण ने ऋषियों के प्रति कहाहै जया बिजया जयंती औ अति जया ये तिथि औ उत्तरायण की संक्रांति ये काल सूर्यनारायण के पूजन में उत्तम हैं इनमें एक बार पूजन करने से वर्षदिन करीहुई पूजाका फल प्राप्त होता है यहसुन विष्णुजीने पूछाकि जया बिजया आदि तिथियोंका आप वर्णन करैं तब ब्रह्माजी कहने लगे कि जब शुक्लसप्तमी को हस्त नक्षत्र होय वह जया सप्तमी होती है उसदिन पूजन करै तोसात जन्मों में किये पापों से छुटै जो उपवास करै वह सब पापों से मुक्तहोय सूर्यलोक को जावै उसदिन का कियाहुआ दान हवन आदिकर्म अक्षय होताहै उसदिनसूर्यनारायण के सन्मुख श्रद्धा से जिस वेदका एक मंत्र पढ़ै उस संपूर्ण वेदके पाठकाफल प्राप्त

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

होय जिसप्रकार आकाश में तारा प्रकाशित होरहे हैं इसीभांति इस व्रतके करनेहारा देदीप्यमान होय औ बहुत काल उत्तम लोकों में निवास कर भूमि पर जन्म ले राजा होय॥

एकसौतीनका अध्याय॥

ब्रह्माजी कहतेहैं कि हे विष्णुजी लोकोंके हितके लिये सुमेरु रूपपादपीठ पर दो पदसूर्यनारायणने स्थापन कियेहैं उत्तरायण रूप बामपादको हम औआपपूजतेहैं औ दक्षिणायणरूपदक्षिण चरणका इन्द्र औ रुद्र पूजन करतेहैं सूर्यनारायण का आराधन वही मनुष्य करसकताहै जिसपर उनका अनुग्रह होय उत्तरायण केदिन स्नानकर घृत दुग्ध आदिसेसूर्यनारायणकोस्नान करावे औ अनुलेपन धूप नैवेद्य वस्त्र भूषण आदिसे सूर्यनारायण का अर्चनकर ब्राह्मणभोजनकरावै उस दिनसेपदद्वयव्रतकाग्रहणकरै औ सर्बकालमें चित्रभानुका स्मरणकरै जब तक उत्तरायण होय तबतक इसी नामका स्मरण करता रहै औ नित्य इन श्लोकोंसे प्रार्थनाकरै यावज्जीववधंकञ्चिद्ज्ञानतोऽज्ञानतोपिवा।करिष्येहंत दाचैवकीर्तयिष्यामितंप्रभुम् १ यदावक्ष्येऽनृतंकिंचिद्यदावक्ष्यामिदुर्बचः। अज्ञानादथवाज्ञाना त्कीर्तयिष्येहतंप्रभुम् २ षण्मासानेकजापोमे चित्रभानुमयःपरम्। तंस्मरन्मरणेयातियांगतिंसास्तुमेगतिः ३ षण्मासाभ्यंतरेमृत्युः पदेतस्मिन्भवेन्मम। तन्मयाभास्करस्येह स्वयमात्मानिवेदितः४ परमार्थमयं ब्रह्मचित्रभानुमयंपरम्। यमंतेसंस्मरन्याति समेभानुः परागतिः ५ यदिप्रातस्तथासायं मध्याह्नेवाम्रियाम्यहम्। षण्मासाभ्यंतरेन्यासं कृतंव्रतमतोमया ६ तथाकुरुजगन्नाथ सर्बलोकपरायण। चित्रभानोयथानान्या त्वत्तोभवतिमेगतिः ७ इस प्रकार दक्षिणायण के आरम्भ पर्य्यन्त पूजनकेअंतमेंनित्य प्रार्थनाकरैइस विधिव्रत

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

समाप्तकर ब्राह्मणभोजन करावै औ भक्तिसे पुराण श्रवणकर पौराणिक का बस्त्र भूषण सुवर्ण आदिसे पूजन करै इस पद द्वय नामक व्रत करनेसे सब पाप दूर होतेहैं औ वह पुरुष उत्तरायणमें देहत्याग उत्तम गतिको प्राप्त होताहै जो अनशन व्रतके करनेसे मिलतीहै औ सूर्यनारायण के चरणद्वयके पूजन का फलमिलता है यह सूर्य्यनारायण ने अपने मुखसे शूर के प्रति कहाहै॥

एकसौचौथा अध्याय॥

ब्रह्माजी कहतेहैं कि माघमासकी कृष्णसप्तमी को सर्वाप्ति सप्तमी कहतेहैं उस दिन व्रत करनेसे सबकामना सिद्धहोतीहैं माघ आदि छ मासकी संक्रांतियों को मार्त्तण्ड अर्क चित्रभानु विभावसु भग औ हंस इनका पूजन करै औ क्रमसे प्रतिमास इनकाही स्मरण करै छमास पर्यन्त तिलोंसे स्नान औ तिलही प्राशन करै फिर श्रावण आदि छमहीनों में पंचगव्य से स्नान औ पंचगव्यका प्राशन करै प्रतिमास भक्तिसे सूर्यनारायणका पूजन कर यथा शक्ति दक्षिणा ब्राह्मणोंको देवै औ उपवास के पारणमें तैल औ क्षारसे रहित भोजन रात्रिको करै इसविधि जो उपवास करै औ भक्तिसे सूर्यनारायण का अर्चन करै वह सब उत्तम फल पावै इस व्रतके करने से सब पदार्थ मिलते हैं इसीसे इसका नाम सर्वाप्तिसप्तमी है आपभी इसव्रतसे सूर्य्य-नारायण का आराधन करैं जिस प्रकार पूर्वकाल में गणों के स्वामी दिण्डी ने किया था॥

एकसौपाचवां अध्याय॥

ब्रह्माजी कहतेहैं किहे विष्णुजी पौषशुक्लसप्तमी को मार्तण्ड

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सप्तमी कहतेहैं उस दिन भक्ति से सूर्यनारायण का पूजन कर मार्तण्ड इस नामका जपकरै पाखंडी पातकीआदिसे सम्भाषण न करै औ गौके दुग्ध दधि आदि केवल भोजन करै ब्रह्मणों को दक्षिणा देवै इसी प्रकार दूसरेदिन व्रतकरै औ मार्तण्डनामका सर्बकाल स्मरण करै गौओं को भोजन देवै पांच सुवर्ण शृंगी गौ औ एक उत्तम वृष इनके दान करनेसे जो फल होताहै वही इस व्रतसे प्राप्तहोय इस व्रतको करनेहारा सूर्यलोक में जाताहै इस व्रतको करनेवाले अब तक भी आकाश में प्रकाशित देख पड़तेहैं इसलिये आप भी इस व्रतको करैं॥

एकसौछठा अध्याय॥

ब्रह्माजी कहतेहैं कि हेविष्णु जी भाद्र शुक्ल सप्तमी अनन्त सप्तमी कहाती है उस दिन उपबास कर गंध पुष्प धूप आदि करके सूर्यनारायण का पूजन करै ब्राह्मणोंको दक्षिणादे रात्रि के समय हविष्य भोजनकरै औ पाखण्डादिकोंसे भाषण न करै सर्व कालमें आदित्य नामका स्मरण करै इस प्रकार बारह महीने पर्य्यन्त व्रत करै अन्तमें सूर्यनारायणका पूजन कर व्रत का उद्यापन करै औ पुराण सुनै इस प्रकार जो इस व्रत को करै वह भूमि पर सब उत्तम भोग भोगकर सूर्य लोकको जाय औ स्त्री इस व्रतको करै तो स्वर्ग में बास करै॥

एकसौ सातवां अध्याय॥

ब्रह्माजी कहतेहैं किहे विष्णुजी श्रावणशुक्लसप्तीको अभ्यंग सप्तमी कहतेहैं उस दिन उपबास कर सूर्यनारायणको अभ्यंग करावे अभ्यंग के समय भांति २ के बाजे बजैं ब्राह्मण वेद पढ़ैं जिस प्रकार और देवताओंको श्रावणमें पवित्रारोपण करतेहैं इसी

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

भांति सूर्य्यनारायणको अभ्यंगार्पण होताहै इस प्रकार अभ्यंग कराय बड़ा उत्सव करै औ ब्राह्मण भोजन कराय रात्रिकेसमय आप भी भोजन करैइस बिधिसे बारह महीने उपवासकरअंत में पारण करै औ ब्राह्मणों को यथा शक्ति दक्षिणादेवैइसव्रतको करनेवाला पुरुष दिव्य बिमान में बैठ सूर्य्यलोक को जाताहै॥

एकसौ आठवां अध्याय॥

ब्रह्माजी कहते हैं कि हे विष्णु जी भक्ति से जल मात्रकरके भी सूर्य्यनारायण का पूजन करै तो दुर्लभ फल भी प्राप्तहोतेहैं पुष्प फल जल आदि किसी पदार्थ के देने से सूर्य्यनारायण प्रसन्न नहीं होते केवल शुद्ध हृदय से उनका आराधन करने सेही प्रसन्न होते हैं रागद्वेष आदि से रहित हृदय असत्यआदि से अदूषित बाणी औ हिंसावर्जित कर्म सूर्य्यनारायणके आराधन योग्यहैं रागादि दोषों को करके दूषित हृदय में सूर्य्यनारायण का निवास नहीं होता जैसे कर्दम युक्त जलमें हंसनहीं रहता असत्य आदि युक्त बाणी सूर्य्यनारायणकी स्तुतिकेयोग्य नहीं होती जैसे मेघसे ढकी हुई चन्द्रमाकी कला अंधकारहरणे के योग्य नहीं हिंसादूषित कर्म से कोई जीव प्रसन्न नहीं होता फिर सूर्य्यनारायण तो क्योंकर प्रसन्न हो सकतेहैं कुटिलचित्त पुरुष सर्वस्व भी सूर्य्यनारायण के अर्पणकर देवै तौभी वेसंतुष्ट नहीं होते इस लिये सदा शुद्ध हृदय से आराधन करनाचाहिये

यह सुन विष्णु भगवान् ने ब्रह्माजी से कहा कि उत्तम कुल में जन्म आरोग्य औ ऐश्वर्य ये तीनों पदार्थ जिस कर्म के करने से प्राप्त होंय उसका आप वर्णन करैं यह भगवान् का बचन सुन ब्रह्मा जी कहने लगे कि महाराज मार्गशीर्ष सप्तमी को जब हस्तनक्षत्र औ रबि बार होय उस दिन उपवास कर

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

गंध पुष्प धूप बलिआदि से सूर्य्यनारायण का पूजनकरै एक वर्ष व्रत कर तिल, धान, जौ, सुवर्ण, जलके पात्र, अन्न, पान, छत्र, दुग्ध, गुड़ बताशे, वस्त्र आदि ब्राह्मणोंको दान देवै औ सूर्यनारायणकाअर्चनकरगोमूत्र, जल, घृत, कच्चाशाक, दूर्बा, दही, धान्य तिल, यव, सूर्य किरणों करके तपाहुआजल, औ क्षीर इनका क्रम से प्राशन करै इस व्रतके करने से उत्तम कुलमें जन्म आरोग्य सुख औ ऐश्वर्य्य पावै॥

एकसौ नवां अध्याय॥

बिष्णु भगवान् पूछतेहैं कि हे ब्रह्माजी सूर्य्यनारायण का मन्दिर बनावै मूर्त्ति स्थापन करै भक्तिसे सब उपचारों करकेपूजन करै तो किस फलको प्राप्तहोताहै यह आप वर्णनकरैं यह सुन ब्रह्माजी कहने लगे कि आपने बहुत उत्तम बात पूछी अब आप एकाग्र चित्त होकर श्रवण करैं सूर्य्यनारायण का मन्दिर जो पुरुष बनावै उसके सौकुल पिछले औ सौ अगले सूर्य्यलोक को जातेहैं मन्दिर बनानेका आरम्भ करतेही सातजन्मके पाप कट जातेहैं उत्तम स्थानमें जो मन्दिर बनावै वह अक्षय स्वर्ग पास पाताहै जितने दिन मन्दिरकी ईंट बनी रहैं उतने हज़ार बर्ष स्वर्ग में रहता है लक्षण युक्त मूर्त्ति बनावै तो सूर्यलोक में निवास करै जो भक्तिसे प्रतिमा स्थापन करै वह अपने अगले पिछले सबकुलोंका उद्धार करै जितने कल्प के आदि से कुल व्यतीत भये औ कल्पान्त तक जितने होंगे वे सब प्रतिष्ठाकरतेही उत्तम गतिके भागी होजातेहैं यमराज सदा अपने दूतोंसे यह कहा करते हैं कि भूमि पर कोई पुरुष तुम्हारी आज्ञा भंग न करेगा केवल सूर्य्यभक्तोंसे तुमने बचते रहना जिसको सूर्य्यनारायण का पूजन जप स्तुति नाम स्मरण आदि करते देखो

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

उससे दूर रहो वे यहां नहीं आवैंगे जो नित्य नैमित्तिक उत्सव करते हों उनकी ओर देखना भी नहीं क्योंकि वेहमारे पिताके भक्तहैं जो मन्दिरमें मार्ज्जन अथवा उपलेपन करैं उनकी तीन पीढ़ी छोड़ना जो मन्दिर बनवावै उनके सौ कुलों की ओर दृष्टि भी मत करना जो प्रतिमा स्थापन करैं उनके सब कुल त्यागना कोई तुम्हारी आज्ञा भंग न करैगा केवल हमारे पिताके भक्तोंसे बचना इतना यमराज ने अपने किंकरोंको शासन भी कर दिया तो भी प्रमाद से सूर्यनारायण के परमभक्त सत्राजितको जाय घेरा परन्तु उसके तेजसे मूर्च्छित हो भूमिपर सबदूत गिरे जैसे बज्रके प्रहारसे पर्बत यह मन्दिर आदि बनाने का फल हमने संक्षेप से बर्णन किया है सूर्य नारायणके यज्ञ करै तो सब पापों से मुक्तहो मनोबांछित फल पावै ॥

एकसौदसवां अध्याय ॥

ब्रह्माजी कहते हैं कि स्थापित प्रतिमा का पूजन करने से सब कार्य सिद्ध होतेहैं जो घृतसे प्रतिमाको स्नान करावै वह अनंत फल पाताहै सेर भर घृत से स्नान कराने करके सौ गोदान का फल होताहै चार सेर घृतसे स्नान करावै तो सप्त द्वीपवती भूमि के दानका फल पावै प्रतिमास में शुक्लाष्टमीके दिन सूर्यनारायण को घृतसे स्नान करावै तो सब पापों से छुटै सप्तमी अथवा षष्ठीको गोघृतसे स्नान करावै तो सब पातक दूरहोंय संध्या समय स्नान करावै तो ज्ञात अज्ञात सब पाप दूर होंय सर्बयज्ञ रूप सूर्यनारायण हैं औसब हव्यों में उत्तम घृत है इस लिये उन दोनोंका संगम पोतेही सब पाप बिलाय जाते हैं दुग्ध से स्नान करावै तो ऐसे लोक में निवास करैजहां दूध की नदी बहती है औ सरोवर खीरसे भरेहैं दुग्ध से स्नान करावै तोसात

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

जन्म पर्यंत सुखी आरोग्य और रूपवान् होय जिस प्रकारदुग्ध निर्मल होताहै इसी प्रकार दुग्धसे स्नान कराने करके निर्मल ज्ञानकी प्रीति होतीहै घृत औ दुग्धके स्नानसे सूर्य्यनारायण बहुत प्रसन्न होतेहैं औ तुष्टिपुष्टि सम्पूर्ण मनुष्योंकी प्रीति उस मनुष्यको मिलतीहै जो घृत औ दुग्धसे स्नान करावै॥

एकसौग्यारहवां अध्याय॥

ब्रह्माजी कहते हैं कि हे विष्णुजी कौशल्या औ गौतमी का सम्बाद जो पूर्व कालमें हुआ था वह हम वर्णन करतेहैं स्वर्ग में गौतमी ब्राह्मणी ने कौशल्यासे पूछा कि हे कौशल्येस्वर्गमें देव देवांगना सिद्ध सिद्धपत्नी आदि बहुत हैं परन्तु न तो उनके शरीरमें ऐसा उत्तम गन्ध जैसा तुम्हारे देहमेंहै न ऐसी कान्ति न ऐसा रूप औ न उनके धारण किये हुये वस्त्र भूषण ऐसेशोभित होतेहैं जैसे तुम दोनों स्त्री पुरुषको सजतेहैं औ तुम्हारा चित्त भी अति निर्मल है देवताओं की भांति ईर्षा आदि दोषों से दूषित नहीं यह कौनसे तप व्रत दान अथवा होमका फलहै तुम वर्णन करो॥

यह गौतमी का वचन सुन कौशल्याबोली कि हे गौतमि हम दोनोंने भक्तिसे सूर्य्यनारायण का आराधन कियाहै सुगन्धयुक्त तीर्थ जलोंसे हमने सूर्यनारायण को स्नान कराया उससे देवताओं से भी अधिक कान्ति पाई औ मनमें प्रसन्नता सौम्यता औ शरीर सुख उसीका फलहै हम सबको प्रियहैं यह घृतसे सूर्यनारायण को स्नान करानेका फलहै जो वस्त्र भूषण रत्न अनुलेपनआदिहम दोनोंको प्रियहोते वे सब हम सूर्य्यनारायणके अर्पण करते इसीसे शरीरमें यह उत्तम सुगन्ध पायाहम ने स्वर्ग की कामना से सूर्य्यनारायण का आराधन किया इस

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

से हम दोनों स्वर्गसुख भोगते हैं जो पुरुष निष्काम सूर्यनारायण की उपासना करतेहैं वे मुक्ति पातेहैं इतनी कथा सुनाय ब्रह्माजी बोले कि हे विष्णुजी सूर्यनारायण के आराधनसे सब पदार्थ मिलतेहैं जो वस्तु अपनेको प्रियहो वही सूर्य्यनारायण के अर्पण करै विजयधूप आदि भांति २ के धूप अनेक प्रकारके गन्ध उत्तम नैवेद्य सूर्यनारायण को अर्पणकरैमालती मल्लिका जूही अतिमुक्तक पाटला करवीर जपा कुब्जक कर्णिकारकुरंटक चम्पक बाण कुन्द अशोक तिलक लोध्र बकपुष्प अगस्त्य किंशुक औ कमल आदि पुष्प सूर्यनारायणके अर्पण करै विल्वपत्र शमीपत्र भृङ्गराजकेपत्र तमालपत्र तुलसी कालीतुलसी केतकीकेपुष्प औपत्र नीलकमल श्वेतकमल गुंजाकेपुष्प धतूरेकेपुष्प औ अनेकप्रकारके सुगन्धपुष्प सूर्यनारायणको चढ़ावै परन्तुकुटजपुष्प शाल्मलिपुष्प और भीजो गन्धरहितपुष्प होंय वे सूर्यनारायण पर न चढ़ावै उनके चढ़ानेसे भयरोग औ दारिद्र्यहोताहै जो पुष्प उत्तम गन्ध और रङ्गकरके युक्तहों और जिनकानिषेध न हो वे सूर्यनारायणकेअर्पणकरै कपूर अगुरु मुरा जटामासी आदिउत्तम धूप भांति २ के वस्त्र अनेक प्रकारके नैवेद्य पकेहुवे फल सुवर्ण चांदी मोती हीरे औरभी जो २ पदार्थ अपने को प्रियहों सब भक्तिसे सूर्यनारायणको अर्पण करै॥

एकसौ बारहवां अध्याय॥

ब्रह्माजी कहतेहैं कि हे विष्णु जी ययातिके वंशमें सत्राजित नाम एक बड़ाप्रतापी राजाभया औ सप्तद्वीपवती पृथिवीकाराज्यकर्त्ता भया उसके राज्यमें पुराण जाननेवाले यों कहतेथे कि जहां तक सूर्यका उदय औ अस्त होताहै वहांतक सत्राजितका ही राज्यहै उसके राज्यमें अन्यायी असक्त अदाता औ पापी पु-

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

रुप कोई नहीं था उस राजाकी स्वभावसेही सूर्य्यनारायण में परम भक्ति थी राजाका ऐश्वर्य देखसब मनुष्योंको विस्मयहोता था औ राजा भी निरन्तर इसीचिन्तामें था कि ऐसाकौनउपाय होय जिससे यह ऐश्वर्य दूसरेजन्ममेंभीपाऊं जबबिचार करते२ कुछ निश्चय न हुआ तब अर्वावसु आदि धर्मज्ञ औशास्त्र वेत्ता ब्राह्मणोंको बुलाय भली भांति उनका पूजन कर आसन पर बैठाय प्रार्थना करता भया कि महाराज जो आपका मेरेऊपर अनुग्रह होय तो जो मैं पूछताहूं वह आप कथन करैं यहराजा का बचन सुन ब्राह्मणोंने कहा कि महाराज जो आपके हृदयमें संदेह होय बह पूछिये हम निवृत्त करैंगे हमारा आपने सदा पालन पोषण किया है ब्राह्मण संतुष्टहोंय तो विद्या पढ़ैंधर्म के संदेह हरैं अधर्म से निवारण करैं औ हित उपदेश देवैं यह ही ब्राह्मणोंका काम है आपकी जो इच्छा होय सो पूछियेइसीअवसरमें राजासे उसकी रानी विमलमतिने कहाकि महाराजमेरा भी एक सन्देह इन महात्माओंसे पूछिये आपके सन्देहतोकई प्रकारसेनिवृत्त होसक्तेहैं परन्तुमैं केवल अन्तःपुरमेंरहतीहूं मेरा संदेह आप प्रथम निवृत्त करादीजिये यहसुन राजानेकहाकिहे प्रिये कहो क्या पूछना चाहतीहो प्रथमतुम्हाराभी संदेहपूछैंगे तब रानी बोली कि महाराज मुझे यहसंदेह है कि पहिलेभी बहुत राजा भये हैं परन्तु आपके समान किसी का ऐश्वर्य नहींभया यह कौनसेकर्मका फल है औ मैंने कौन उत्तम कर्म कियाथाजिस से आपकी राणीभई यह आप मुझे पूछदीजिये यह भार्याकाबचन सुन राजा बहुत प्रसन्न भया औ कहनेलगा कि हे प्रियेमेरे मन की बात तुमने जानी मैंभी यही इन महात्माओं से पूछना चाहताहूं यह राणीसे कह विनयसे मुनियों को पूछताभयाकि यह आप कथन करैं कि मैं पूर्व जन्म में कैसा था औ क्या कर्म

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

किया तथा इस हमारी राणीनेक्या उत्तम कर्मकिये हम में परस्पर अति प्रीति है सब राज मेरे वश हैं द्रव्य का अंतही नहीं अप्रतिहत बल है औ शरीर सदा आरोग्य रहताहै इसमेरीभार्या के समान कोई नारी रूपवती नहीं औ मेरे तेजको कोई नहीं सह सकता ये सब किस कर्म के फल हैं आप त्रिकालज्ञ हैं इस लिये कथन करैं यह सुन सब ब्राह्मणोंने सूर्य्यनारायण के परम भक्त परावसु से कहा कि आप इनका संदेह निवृत्त करैं परावसु भी सब ब्राह्मणों की सम्मतिसे राजाके प्रति कथन करने लगे कि महाराज आप पूर्व जन्ममें बड़े हिंसक औ निर्दय शूद्रथेतब भी यह राणी तुम्हारीही भार्य्या थी औ ऐसी पतिव्रता थी कि तुम्हारे क्रूर वचनों करके पीड़ितहोकरभी सदा तुम्हारी शुश्रूषा करहती परंतु तुम्हारी अति क्रूरता देख सम्पूर्ण बंधुतुमसेअलग होगये औ पिता पितामह का संचय किया हुआ धनभी निबड़ गया तब तुमने खेतीकरी परंतु ईश्वरकी इच्छासे वहभी निष्फल भई तब तुम अतिदीन हो औरोंकी सेवा करनेमें प्रवृत्तभये तुम तो अपनी स्त्रीका त्यागकरना बहुत चाहतेथे परंतुउसने तुम्हारा संग न छोड़ा तब तुम दोनों कान्यकुब्ज देशमेंजाय सूर्य्यनारायण के मन्दिर में सेवा करनेलगे वहां नित्य मार्जन उपलेपन जल छिड़कना आदि काम तुम दोनों करते औ मंदिर में पुराण की कथा होती वहभी श्रवण करते तुम्हारी स्त्रीने अपने पिता की दीहुई अंगूठी कथापर चढ़ाई सबकाल तुम्हारे मन में यही चिंता रहती कि यह मंदिर स्वच्छ रहै औ बहुतकाल स्थिररहै इस भांति तुम दोनों निष्काम हो सूर्य्यनारायण की सेवाकरते औ जो मिलता उसीसे निर्वाह करलेते एक समय बड़ी सेना सहित कुवलाश्व राजा वहां आया उसकी संपत्ति औ हज़ारों उत्तम २ राणी देख तुम दोनों कीभी राजाबनने की इच्छाभई

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

औ थोड़ेकालके अनंतर तुम्हारा देहान्तभया उससूर्य्यनारायण की सेवा के औ पुराण श्रवणके प्रभावसे तुमराजा औ तुम्हारी स्त्री राणी भई अबजो आपको जन्मांतरमें भी ऐश्वर्य की इच्छा होय तोसूर्य्यनारायण का भक्ति से आराधन करो गंधपुष्पधूप दीप नैवेद्य बस्त्र भूषण और भी जो पदार्थ अपने को प्रियहों सब सूर्य्यनारायण के समर्पण करो औ उनके मंदिरों में मार्जन उपलेपन आदि कराया करो उत्तम दिनोंमें उपवास कर रात्रि को जागरण करो औ नृत्य गीत वाद्य से बड़ा उत्सव कराओ पुराण इतिहास आदि की कथा श्रवण करो सूर्य्यभगवान्‌केसंमुख वेद पाठ कराओ इन कर्मों के करनेसे प्रसन्नहो सूर्य्यनारायण अभीष्ट फल देतेहैं पुष्प नैवेद्य रत्न सुवर्ण आदि से सूर्य्यनारायण प्रसन्न नहींहोते केवल भक्तिसे संतुष्टहोतेहैं देखोतुमने भक्तिसे मंदिर में केवल मार्जन आदि किया औ तुम्हारी स्त्री ने एक अंगुलीयक पौराणिक को दिया उससे इतना ऐश्वर्य्य पाया अब जो तुम भक्तिसे सूर्य्यनारायण का आराधन करोऔ सब उपचारों से पूजन करो तो इन्द्रसेभी अधिक ऐश्वर्य्य पावो अब आप अपनीराणीसहित सूर्य्यनारायणके आराधनमेंयत्नसे प्रवृत्तहो इससे सब मन वांछितफल पाओगे। ब्रह्माजीकहते हैं किहेबिष्णुजी यह वृत्तांतसुन राजा बहुत हर्षित हुआ औ अति विनय से परावसु के प्रति कहने लगा कि महाराज जैसा इंद्र पद पाय के अथवा अमर होके पुरुष को आनंद होता है वैसा आनंद आपके वचन श्रवण कर हमको भया अज्ञान रूप अंधकार में आपका बचन हमारे लिये दीपकभया हम दोनों संपत्ति के नाश की संभावना कर बहुत व्याकुल रहते थे परंतु आपने सब संपत्तियों का बीज बता दिया यहभी हमनेजाना कि भक्तिमान् दरिद्री भी सूर्य्यनारायण को प्रसन्न कर [illegible] औ भक्ति

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हीन धनवान् परभी उनका अनुग्रह नहीं होता चाहे जितने रत्न सुवर्ण आदि निवेदन करै अब आप सूर्यभगवान् के आराधन का प्रकार हमको उपदेश करैं जिसके करने से शीघ्रही उनका अनुग्रह हो यह राजाका बचन सुन परावसुबोलेकि हेराजन्अब हम सूर्यनारायण के आराधन का विधान कहतेहैं जिसके करने से स्त्री पुरुष संसारसागरका पारपावैं कार्त्तिक मास में नित्य सूर्यनारायण का पूजन कर ब्राह्मण को भोजन कराय आप एक बार भोजन करै तो पूर्व अवस्था में किये हुये ज्ञात अज्ञात पापोंसे छुटै इसी प्रकार जो स्त्री अथवा पुरुष मार्गशीर्ष में एक भक्त व्रतकरैं वे मध्य अवस्था में किये पातकों से मुक्त होंय औ पौषमास में भी इसी विधसे एक भक्त करै तो वृद्धावस्था में किये पापदूर होंय इस त्रिमासिक व्रत कोजोपुरुप अथवा स्त्री करैं वे सूर्यनारायण के कृपापात्रहों औ सबपापोंसे छुटैं दूसरे बर्ष इसी भांति त्रिमासिक व्रत करै तो सब उपपातक निवृत्त होंय औ तीसरे बर्ष इस व्रतकोकरै तो सब महापातक कटैं औ मनोबांछित फलपावै यह व्रत तीनमास में होताहै तीनबर्ष तक करतेहैं औ तीनों अवस्थाओंके तीन प्रकारके पातक हरता है इससे इस सर्वपापहरव्रतको त्रिक्रम करते हैं यह परावसु का बचन सुन राजाने कहा कि महाराज व्रतका विधान तो हमने सुना परंतु भोजन कौन से ब्राह्मण को देना यह आप कृपा कर कहैं यह सुन परावसु बोले कि हेराजा पौराणिक ब्राह्मण को देना चहिये इस विषय में अरुण के प्रति जो सूर्यनारायण ने कहा वह हम आपको कहते हैं एक समय उदयाचल पर अरुण ने सूर्यनारायण से पूछा कि महाराज कौन २ पुष्प नैवेद्य वस्त्र आदि आपको प्रिय हैं औ कौन से ब्राह्मण के पूजन से आप प्रसन्न होतेहैं यह आप कृपाकर बर्णन करैं इस प्रकार अरुण

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

की प्रार्थना सुन सूर्य्यनारायण कहने लगे कि हे अरुण करवीर के पुष्प रक्त चन्दन गुग्गुल अथवा घृतका धूप मोदक नैवेद्यये हमको प्रियहैं औ भोजक हमारा पूजन करै तो हम बहुत प्रसन्न होतेहैं औ हमारी प्रीतिके अर्थ पौराणिक को दान देवै उसीका पूजन करै तो हमारी प्रसन्नता होवीहै गीत बाद्य पूजन आदि से वैसी तृप्ति हमारी नहीं होती जैसी पुराण श्रवण से होतीहै इसलिये सदा पौराणिक का पूजन कर इतिहास पुराण आदि सुनै औ भोजक से पूजन करावै॥

एकसौतेरहवां अध्याय॥

अरुण पूछते हैं कि महाराज यह भोजक कौन है किसका पुत्र है औ इसने ऐसा कौन उत्तम कर्म किया कि ब्राह्मणआदि बर्णों को छोड़ इस पर आपका इतना अनुग्रह भया यह आप कृपाकर वर्णन करैं यह सुन सूर्य्यनारायण बोले कि हे अरुण तुमने बहुत अच्छा प्रश्न किया अब हम जो कथन करतेहैं वह सावधान होकर श्रवण करो ब्राह्मण आदि वर्ण अपने २घरोंमें हमारा अर्चन करते हैं मंदिरों में नहीं पूजते औ मंदिरोंमेंवृत्तिके लियेजो ब्राह्मण पूजनकरैंवे देवल कहातेहैं इसलिये अपनेतेजसे भोजक को हमने उत्पन्नकिया कि जो सर्वत्रहमारापूजनकरैभोजकहमको अति प्रियहै इससेसदा इसकासत्कारकरनाचाहिये॥

पूर्व काल में शाकद्वीप के स्वामी प्रियव्रत राजा के पुत्रने शाकद्वीप में बिमान के समान हमारा मंदिर बनाया औउसमें स्थापन के लिये सब लक्षणों करके युक्त सुवर्ण की प्रतिमाबनवाय चिंतनकरने लगा कि मंदिरओ सूर्य्यनारायणकीप्रतिमाये दोनोंही बहुत उत्तम बने परंतु अबप्रतिष्ठाकौन करावै ऐसाकोई योग्यपुरुष नहीं देख पड़ता इसप्रकार चिन्ताकरतेहमारेशरण

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

में आयाहमने भी अपने भक्त को चिन्ताग्रस्त देख प्रत्यक्ष दर्शन दिये औ उससेपूछा कि हे राजा किसचिन्तासे व्याकुल होरहेहो शीघ्र हमको कहो कि दुष्कर कार्यभी तुम्हारा सिद्धकरैं तुमहमारे परमभक्त हो तब राजा बोला कि महाराजमैंने भक्तिसे आपका मंदिर बनाया औ सुवर्ण की सुन्दर प्रतिमा निर्माण कराई परन्तु इसद्वीपमें ब्राह्मण तो हैं नहीं क्षत्रिय आदि तीन वर्ण हैं वे आप कीप्रतिष्ठा करा नहींसके इससेमुझेबहुत चिन्ताहोरहीहैअबआप जो आज्ञाकरैंवह करीजायराजाकी यहबात सुनसूर्य्यनारायणने कहा कि ठीक है इसद्वीप में तीनही वर्ण हैं वे प्रतिष्ठा नहीं करा सक्ते औहमारे पूजन के भी अधिकारी नहीं यह वचन राजाको कह हमने विचार किया विचार करतेही श्वेतवर्ण के आठपुरुष वेद पढ़ते हुयेहमारे शरीर से निकले ललाट से दो, वक्षस्थलसे दो, किरणों से दो औ हमारेचरणोसे दो इस भांति आठ पुरुषउत्पन्न भये वे सब कषाय बस्त्र पहिने थे औ हाथों में कमल के पुष्प औ करंड धारे थे वे सब हाथ जोड़हम से प्रार्थना करनेलगे कि हे पिता हम आप के पुत्रहैं आपआज्ञा कीजिये किसकार्य के लिये हम को उत्पन्न किया है यह सुन हमने उन आठों से कहा कि तुम सब इस राजा का वचन करो॥

यह कह राजा से हमने कहा कि हे राजन् ये हमारे पुत्र प्रतिष्ठा करावैंगे मंदिरकी प्रतिष्ठा कर वह मंदिर इनको अर्पण कर दो ये सदा हमारा पूजन किया करैंगेपरंतु देकर फिरइनसे हरण मत करना हमारे निमित्त जो धन, धान्य, गृह, भूमि, ग्राम बाग, नगर आदि मंदिर में अर्पण करो उस सब के स्वामी इन हमारे पुत्र भोजकों को बनाओ जिसभांति पिताके द्रव्य काअधिकारी पुत्र होता है ऐसेही हमारे धन के अधिकारी भोजकहैं ब्राह्मण आदि वर्ण नहीं यह हमारी आज्ञा पाय राजाने वैसाही

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

किया औ भोजकों से प्रतिष्ठा कराय वह मंदिर उनके अर्पण किया हे अरुण इस प्रकार हमने भोजक उत्पन्न किये हमारी प्रीति के अर्थ जो देना होय वह भोजक को देवै परंतु भोजक का धन कभी न हरै जो द्वेषसे लोभसे अथवा प्रमाद से हरैतो अंधतामिस्रनाम नरकमेंजाय हमारेसबधनका स्वामीभोजकहै परंतु भोजक में भी ये लक्षण होने चहिये कि पहिले वेद पढ़ै बिवाह करै नित्य त्रिकाल स्नान करै दिन रात्रि में पांचबार हमारा पूजन करै वेद ब्राह्मण औ देवता इनकी कभी निन्दा न करै हमारे नैवेद्य विना कोई पदार्थ भोजन न करै शूद्रकाउच्छिष्ट औ शूद्र के घर जाय कभी भोजन न करै परंतु जो शूद्र अपने घर आय देजावे तो उसका अन्न लेने में कुछ दोषभी नहीं होता नित्य हमारे सन्मुख शंख बजावै छःमहीने पुराण सुनने से जो प्रीति हमको होती है वह एकबार शंखध्वनि श्रवणकरनेसे होजाती है इसलिये भोजक नित्य शंख बजावै अभोज्य पदार्थ नहीं भक्षण करते इससे भोजक कहाते हैं औ नित्य हमको भोजन कराते हैं इससे भी उनको भोजक कहते हैं भोजक सदा अब्यंग को धारण करै अब्यंग विना भोजक अशुचि होताहैजो भोजक अब्यंग धारे बिना हमको भोजन करावै उसकी संतति नष्ट होजाती है औ हमारी प्रसन्नता भी नहींहोती भोजकशिर मुंडवाये रहै परंतुदाढ़ी न मुंडवावै षष्ठो के दिन नक्तव्रतकरसप्तमी को उपबास करै औ संक्रांति का भी व्रत करै तीन काल हमारे सन्मुख गायत्रीजपै परंतु पूजन के समय बस्त्र से अपना मुख लपेट लेवै औ मौनसे पूजनकरै क्रोधका त्यागकरै हमारा निर्माल्य शूद्र औ बेश्या को न देवै जो लोभ अथवा कामसेदेवै तो नरककोजाय हमारे निर्माल्य धारण करनेके ब्राह्मण आदि तीनवर्ण अधिकारी हैं लोभआदि से हमको विनाचढ़ायेपुष्पजो

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by 83-Foundation USA

पहिलेही किसीकोदेदेवै वह हमाराशत्रु है सदाहमारानैवेद्यभोजन करै वह नैवेद्य भोजक को शुद्ध करने के लिये पंचगव्य के समानहै हमारे चढ़ाहुआ गंध पुष्प बस्त्र भूषण आदि बेचै नहीं औ बेश्या आदि कोभी न देवै हमारे स्नान के जल औ निर्माल्यको उल्लंघन न करै करै तो नरक में पड़ै हमारेकोघृत दुग्ध जल आदि से ऐसी युक्ति करके स्नान करावैकि उसको कोई उल्लंघन करै नहीं औ श्वानभी न खाय सदा पवित्र रहै एकवार भोजनकरै औ क्रोध अमंगल वाक्य औ अशुभ कर्म को त्यागै ऐसे लक्षणों करके युक्त भोजक हमको प्रिय है उसका सदसत्कार करना चाहिये जो भोजककी वृत्तिको हरै हमक्रोध कर उसके कुलका संहार करते हैं हे अरुण पौराणिक भी हम को तुम्हारे तुल्य प्रिय है औ हमारे मंदिर में मार्जन उपलेपन आदि करने हारा पुरुष भी हमारा प्रीति पात्र है इतना कह परावसु बोले कि हे राजा इस प्रकार अरुण को उपदेश कर सूर्य्यनारायण आकाश में भ्रमण करने लगे औ अरुणभीसुनके बहुत प्रसन्न भया हे राजा पौराणिक ब्राह्मणसूर्य्यनारायण को बहुत प्रिय हैं इसलिये पौराणिक कोहीदानदेना चाहिये ब्रह्मा जी कहते हैं कि हे विष्णुजी परावसु के मुखसे यहकथा श्रवण कर राजा सत्राजित औ उसकी राणी विमलमति बहुत हर्षित भये पृथिवी पर जहां जहां सूर्य्यनारायण के मंदिरथे सबमें मार्जन औ उपलेपन कराने लगे सब मंदिरों में कथा करने को पौराणिक बैठादिये औ बहुत दक्षिणादे पौराणिकों को प्रसन्न किया भांति भांति के उपचारों से भक्ति करके सूर्य्यनारायणका नित्यपूजन करनेलगे इस प्रकार राजा औराणी सूर्य्यनारायण का आराधन कर मनोवांछित फल पाते भये ॥

—*—

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

एकसौ चौदहवां अध्याय

ब्रह्माजी कहते हैं कि हे बिष्णुजी सूर्य्यनारायणके मंदिरमें दीप प्रज्वलित करै तो यज्ञ के फलको प्राप्तहोताहै कार्त्तिकमास में तो दीपक का बहुतही फलहै हे भगवन् भद्र नाम ब्राह्मण की कथा हम कहते हैं आप श्रवण करैं ॥

माहिष्मती नाम नगरी में एक नागशर्म्मा नाम ब्राह्मणथा उसके सौ पुत्र भये जिनमें सबसे छोटेकानाम भद्र थावह भद्र सदा सूर्य्यनारायणके मंदिरमेंजाय दीपक जलाया करता एक समय उसके सब बड़े भाइयों ने कहा कि हे भद्र एक बात हम पूछते हैं तुम कथन करो तब भद्रबोला कि आप सब मेरे पिता के समान हैं आप के प्रश्न का उत्तर मैं क्योंकरदेसकताहूं परंतु आप पूछैंजो मुझे विदित होगा तो कहूंगा तब उस के भाइयों ने पूछा कि हम नित्यदेखते हैं कि तुम पुष्प धूप नैवेद्य आदि कभी सूर्य्यनारायण के अर्पण नहीं करते और ब्राह्मणभोजनभी कभी नहीं कराते केवल दिन औ रात मंदिर में जाय सूर्य्यनारायण के संमुख दीपक जलाते रहतेहो इसमेंक्या कारण है यह तुम वर्णन करो यह अपने भ्राताओं का वचन सुन भद्र कहने लगा कि हे भ्राताओ जो आपने यही पूछा तो श्रवण कीजिये इक्ष्वाकुनाम राजा के पुरोहित वशिष्ठजी ने सरयू नदी के तट पर सूर्य्यनारायण का मंदिर बनाया औ नित्यवहां गंधपुष्पादि उपचारों से सूर्य्यनारायण का अर्चन करते औ दीपकप्रज्वलित करते विशेषकर कार्तिक मास में दीपोत्सव किया करते एक समय रात्रि को सूर्य्यनारायण के मंदिर का दीपक शांतहोगया मैंभी पूर्वजन्म में अनेक कुष्ट आदि दुष्टरोगोंसे पीड़ित हो उसी मंदिर के समीप पड़ा रहता औ जो कुछ मिल [illegible] उस से

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अपना पेट भरलेता वहां के निवासी भी मुझे रोगी औ दीन जान भोजन देदेते एक दिन मेरी यह दुष्ट बुद्धि भई कि रात्रिके समय सूर्य्यनारायण के भूषण हरलूं इसी विचार में देखतारहा जब वे सब भोजक निद्रावश भये तब मंदिर में धीरे २ घुसा वहां देखाकि दीपक शांत होगयाहै तब मैंने अग्नि जलाय दीप प्रज्वलित किया औ उसमें घृत डाल सूर्य्यनारायण के भूषण उतार ने लगा इस अवसर में वे भोजक जाग उठे औ मुझेहाथ में दीवा लिये देखा देखतेही आकर पकड़लिया मैं भीभयभीत हो बिलाप करने लगा औ उन के चरणों पर गिरा मेरी दीनता पर उनको दया आई औ मुझे छोड़ दिया परंतु वहां राजपुरुष सब यह चरित्र देखतेथे उन्होंने मुझे फिर बांधा औ पूछने लगे कि रे दुष्ट दीपक हाथमें लेकर मंदिर में तू क्यों घुसा यह कह मुझे ताड़न करने लगे रोग की व्यथा से भय से औ उन के ताड़न करनेसे मेरे प्राण उसी समय जातेरहे प्राण मुक्त हो-तेही सूर्य्य नारायण के गण विमान में बैठाय मुझे सूर्य्यलोक को लेगये वहां मैंने एक कल्प पर्यंत बहुत सुख भोगा औ फिर उत्तम कुलमें जन्म पाय तुम्हारा भ्राता भया यह कार्त्तिकमास में सूर्य्यनारायण के मंदिर में दीपक जलानेका फलहै मैंनेदुष्ट बुद्धि करके भूषण हरने के लिये दीपक जलाया उससेयहउत्तम फल पाया कि कुष्टी शूद्र होकर भी इस उत्तम ब्राह्मणकुलमेंमेरा जन्म भया वेद शास्त्र पढ़े औ जातिस्मर भया दुष्टबुद्धिसेभीदीप जलाने का यह फल देख अब मैं नित्य भक्तिसे सूर्य्यनारायणके संमुख दीप जलाता हूं हे भाइयो आपके पूछने से यहमैंनेदीप दानका संक्षेपसे फल कहा इतनी कथा सुनाय ब्रह्माजीबोलेकि हे बिष्णुजी यह दीप का प्रभाव भद्रने अपनेभ्राताओंकोसुनाया जोपुरुष सूर्य्यनारायणके नाम जपताहुआ मंदिरमें दीपदानकरै

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वह आरोग्य धन बुद्धि संतानपावै औ जातिस्मरहोयषष्टी अथवा सप्तमीको जो दीपदान करै वह दिव्यविमान में बैठ सूर्य्यलोक कोजायइसलिये सूर्य्यनारायणकेमंदिरमें भक्तिसेदीपप्रज्वलित करै प्रज्वलित दीपों को अस्तव्यस्त न करै औ उनकातेल भी न हरै दीपक हरनेहारा पुरुष अंधमूषक होता है इसकारणकल्याण की इच्छा वाला पुरुष दीप प्रज्वलित करै हरै नहीं॥

एकसौ पन्द्रहवां अध्याय॥

ब्रह्माजी कहते हैं कि हे बिष्णुजी घोर नरकमें पड़ेहुये भूखे अति दुःखी औ विलाप करते हुये जीवों को एक समय यमदूतने कहा कि रे मूढ़ो अब विलाप करनेसे क्याहोताहैपहिलेही क्योंन समझे कि बुरे कर्मोंका आगे फलभोगना पड़ैगा हजारों जन्म लेकर एकबार मनुष्य जन्म मिलताहै उसमें मनुष्यअपना हित नहीं करते पुत्र स्त्री धन घर क्षेत्र आदिमें आसक्तहोअनेक दुष्कर्मकरते हैं यह नहीं जानते कि सूर्य्य चन्द्र काल आत्माये मनुष्य के सब शुभ अशुभ कर्मको जानते हैं यह मोहकीमहिमा देखो कि पुत्र स्त्री रूप नरकमें आसक्तहो अपना हितभूलजातेहैं सूर्य्यनारायण कानाम लेनेमें कुछ दाम नहीं लगते मंदिरमेंदीप जला देने में कुछ अधिक परिश्रम नहीं पड़ता परन्तु इतनाभी किसीसेनहीं होसक्ता अबरोदन औविलाप करनेसे क्या होता हैजैसे कर्म किया वैसा फलपाया फिर पाप कर्ममें बुद्धिमतकरना जोअज्ञान से पाप कर्म बनभी पड़ैतो सूर्य्यनारायणकेआराधन से उसका फल नष्ट होजाताहै यह यमदूतका बचन सुन नरक के जीव बोलेकि हे यमदूतहमने कौन ऐसा कर्म कियाजिससे हमको इस दारूण नरक में वास करना पड़ा तब यमदूतनेकहा कि तुमने सूर्य्यनारायण के मंदिर से दीपहरण किये उसीसेतुम

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

यह नरक दुःख भोगते हो फिर ऐसा कभी मतकरना ब्रह्माजी कहते हैं कि हे विष्णुजी यह दीपदान औ दीपहरण का फल वर्णन कियाहै दीपदान करनेका तो सर्वत्रही उत्तम फलहै परन्तु सूर्यनारायण के मन्दिर में विषेष फलहै जो जगत्में मूक अन्ध वधिर बिवेकहीनरोगी दरिद्री देखपड़तेहैं उनसबने साधुजनोंके प्रज्वलित कियेहुये दीप सूर्यनारायण के मंदिरसेहरणकियेहैं॥

एकसौ सोलहवां अध्याय॥

विष्णुभगवान् पूछतेहैं कि हे ब्रह्माजी सब मनुष्य विषरोग ग्रह औ भांति २के उपद्रवोंसे पीड़ित होतेहैं इसलिये आपकोई ऐसा उपाय कथन करैं कि जिससे जीवोंको रोगआदिकीबाधा नहोय यहसुन ब्रह्माजी बोले किहे विष्णुजी जो पुरुषव्रतउपवास आदि करके सूर्यनारायणका आराधन करतेहैं उनको रोगआदि नहीं सताते जो सूर्यनारायण से विमुखहैं वेही भांति २ के उपद्रवोंसे पीड़ित होतेहैं सूर्यनारायण के भक्तपर सब ग्रह सौम्य दृष्टिरखतेहैं कोई उसका धर्षण नहीं करसकता रोगसमीप नहीं आते परन्तु सूर्यनारायणका अनुग्रह उसी पुरुष पर होताहै जो सब जीवोंको अपने समानमानै औ भक्तिसे उनका आराधन करै ब्रह्माजीका यह बचनसुन विष्णुजीने पूछा कि महाराज पहिले से तो सूर्यनारायणका आराधन किया न हो औ रोगआदिकरके पीड़ित होजाय वह उस कष्टसे क्योंकर छुटै यह आप वर्णनकरैं हमभी सूर्यनारायणका आराधन भक्तिस किया चाहते हैं यह सुन ब्रह्माजी ने कहा कि हे भगवन् जो आप सूर्यनारायण का आराधन किया चाहते हो तो पहिले वैवस्वत होजाओ वैवस्वत हुवे बिना सूर्यनारायण की उपासना नहीं होती मनुष्योंके पाप जब क्षीणहोते२ थोड़ेशेष रहजांय तब सूर्यनारायण औ ब्राह्मणों

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

में भक्ति होतीहै जिससेपुरुष मुक्ति पाताहै अब आपभी वैवस्वत हो सूर्यनारायण का आराधन करैं॥

भगवान ने पूछा कि हे ब्रह्माजी वैवस्वतों का क्यालक्षण है औ वैवस्वतोंको क्या करना चाहिये यहआप कहैं तब ब्रह्माजी कहने लगे किहे विष्णुजी मन वचन कर्म्म करके सूर्यनारायण का भक्तहो औ जीव हिंसा कभी न करै ब्राह्मण देवता भोजक इनकोनित्य नमस्कारकरै पराया धन न हरै देवता मनुष्य पशु पक्षि पिपीलिकावृक्ष पाषाणकाष्ठ भूमिजल आकाश दिशा इन सबमें सूर्यनारायणको व्याप्तसमझै औ अपनेको भी सूर्यनारायण से भिन्न न समझै वह वैवस्वत होताहै जो जीवोंमें दुष्टभाव रक्खै वहकभी वैबस्वत नहीं होसकता न किसीसे प्रीति औ न किसीसे बैर जो पुरुष रक्खै निष्कामहोभक्तिसे सूर्यनारायणकाआराधन करैवह वैवस्वत कहाताहै जिसउत्तम गतिको वैवस्वत प्राप्तहोता है वह योगीऔ बड़े२तपस्वियों कोभी दुर्लभहै जो सबप्रकारसे सूर्यभगवान्का दृढ़भक्तहै वह धन्यहै वहनीच कुलमें भी उत्पन्न होय तौभी उत्तमही होताहै भक्तिसे आराधनकरने करकेही सूर्य नारायणका अनुग्रह होताहै बाहिरके आडंबर से कुछ प्रयोजन नहीं सूर्यनारायण के दक्षिण किरण से हम उत्पन्न हुये हैं औ उनकेही अनुग्रहसे सृष्टि रचते हैं आपभी उनके बाम किरण से उत्पन्न हो उनकी इच्छासेही सृष्टि का पालन औ दैत्योंका संहार करतेहोइसीभांति रुद्र इन्द्र चन्द्रवरुण पवन अग्नि आदि सब देव सूर्यनारायण से उत्पन्नहो उनकी आज्ञानुसार अपने२ कार्य में प्रवृत्तहो रहेहैं इसलिये हे भगवन् आप भी उपवास पूजन जप आदिसे सूर्यनारायण का आराधन करो॥

सुमंतु मुनि कहतेहैं कि हे राजाशतानीक यह ब्रह्माजी का वचन सुन बिष्णु भगवान् सूर्यनारायणका आराधन करने को

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

शाकद्वीप में गये वहां जाय भांति २ के उपचारोंसे सूर्यनारायण का पूजन किया औ नाना प्रकार के भक्ष्यभोज्यों से भोजकों की संतुष्टकिया इसप्रकार बहुत काल सूर्यनारायण का आराधन कर उनके अनुग्रह से सब देवताओं में श्रेष्ठ भये हे राजन् आपभी सूर्यनारायण का आराधन करो जिससे सब तुम्हारे मनोरथ सिद्ध होयँ इस ब्रह्मा जी औ विष्णु जी के संवाद को जो श्रवणकरै वह भी सब मनोवांछित फल पावै औ अंतसमय सुवर्णके विमान में बैठ गोलोक को जाय औ वहां देवता गंधर्ब औ अप्सराओं के साथ बिहार करै ॥

एकसौ सचहवां अध्याय ॥

राजा शतानीक पूछतेहैं कि हेसुमंतुमुनि आपनेसूर्यभगवान् के तेज न्यूनकर उत्तम रूपनिर्माण करनेका संक्षेपसेवर्णनकिया अबआप विस्तारसे वर्णन कीजिये यह राजाका वचनसुन सुमंतु मुनि कहनेलगे कि हेराजन् जब सूर्यनारायणकी भार्यासंज्ञा अपने पिताके घरको चलीगई तब सूर्यभगवान्ने बिचार किया कि हमारे तेजसेव्याकुलहोहमारीपत्नीचलीगई औ हमाराउत्तम रूप होने के अर्थ तप करतीहै इससे उसकामनोरथसिद्ध होनेके लिये हम विश्वकर्मा से अपना रूप उत्तम बनवावैं सूर्यनारायण यह विचार करतेही थे कि वहां ब्रह्माजी आये औ सूर्यनारायण से कहा कि आप सब देवताओं में मुख्य हैं औ सब जगत् आपने व्याप्त कर रक्खाहै अब आप अपने श्वशुर विश्वकर्मासे उत्तम रूप बनवालेवैं यह कहकर विश्वकर्मासे ब्रह्माजीने कहा कि तुम सूर्यनारायण का सुंदर रूप बनाओ यह ब्रह्माजीकी आज्ञा पाय खराद पर चढ़ाय धीरे २ विश्वकर्मा सूर्यनारायणकारूप सुधारने लगे उस समय ब्रह्मा इन्द्र विश्वामित्र आदि ऋषिस्तुति

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पढ़ने लगे (स्वस्तितेस्तुजगन्नाथदेववर्यदिवाकर। शांतिस्त्वंसर्व लोकानां देवदेवदिवाकर १त्वन्नाथमोक्षिणांमोक्षोध्येयश्चध्यायि-नामपि। त्वंगतिः सर्वभूतानां त्वयिसर्वंप्रतिष्ठितम् २ शंप्रजाभ्यो स्तुदेवेश शंनोस्तुजगतःपते। त्वत्तोभवतिवैनित्यं जगत्संलीयते त्वयि ३ त्वमेकस्त्वंद्विधाचैव त्रिधाचैवनसंशयः। त्वयाविनाजग न्मूढं त्वयैकेनप्रबोधितम् ४ इस स्तुतिसे ऋषि स्तुतिकरतेभये औ विद्याधर यक्ष राक्षस नाग सबहाथजोड़बारंबारप्रणामकर स्तुति करतेथे हाहा हूहू नारद तुंबरु आदिगंधर्बषड्जमध्यमगां-धारआदिस्वरतीनिग्राममूर्च्छनाओतानसहितरागगानेलगेवि-श्वाची घृताची उर्वशी तिलोत्तमा मेनकासहजन्याआदिअप्सरा हाव भाव सहित नृत्य करनेलगीं वेणुवीणामृदंग पणव दुंदुभि पटह आदि बाजे बजनेकाआरंभहुआगंधर्बोंकेगानसेअप्सराओं के नृत्यसे औ अनेक प्रकार के बाजोंके शब्दसे बहुत कोलाहल भया सब देवता मस्तक पर अंजलिबांध प्रणामकरने लगे इस प्रकार सब देवता गंधर्ब आदिके कोलाहल में विश्वकर्माधीरे२ सूर्य नारायण का तेज छीलने लगे हे राजा इस कथाको जो भक्ति से श्रवण करै वह सूर्यलोक में प्राप्त होता है॥

एकसौअठारहवांअध्याय॥

राजा शतानीककहते हैं कि हेसुमंतुमुनि इससूर्यनारायण की कथा सुनते २ मुझे तृप्ति नहीं होती इसलिये फिरभी सूर्य नारायण के ही गुण आप वर्णन करैं यह राजा का बचन सुन सुमंतुमुनि बोले कि हे राजा ब्रह्माजीने जो ऋषियोंकेप्रति सूर्य नारायण की कथा कही उसकाहम वर्णन करतेहैं जिसकेसुन-तेही सब पाप कटजायँ एकसमय सूर्य भगवान्के प्रचंड तेजसे संतप्त हो ऋषियोंने ब्रह्माजीसे पूछा कि महाराज यह अग्निके

Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

तुल्य दाह करनेवालातेज पुंज आकाशमें कौनहै यहहमजानना चाहते हैं आप कृपाकरबर्णनकरैं ऋषियोंका प्रश्न सुनब्रह्माजी कहनेलगे कि हे मुनीश्वरोप्रलयके समयजब सब स्थावरजंगम नष्टहोगये औ सर्बत्र अंधकार व्याप्तहोरहाथा उससमयपहिले बुद्धि उत्पन्न भई बुद्धिसे अहंकारअहंकार से महाभूत महाभूतोंसे अंड उत्पन्न हुआजिसमेंसातलोक औ सात समुद्रों सहितपृथिवी स्थितहै उसीअंडमें हमबिष्णुजी औ शिवजी स्थित थे परन्तुसब अंधकारसे व्याकुलथे तबपरमेश्वरका ध्यान करनेलगेध्यानकरने से अंधकारको हरनेहारा एक तेज उत्पन्न भया उसको देख हम स्तुति करनेलगे कि (ओंआदिदेवोसिदेवानामैश्वर्य्याच्चत्वमीश्वरः १ आदिकर्तासिभूतानां देवदेवःसनातनः जीवनंसर्वसत्वानां देवगन्धर्वरक्षसाम्। मुनिकिन्नरसिद्धाना मुरगाप्सरसांतथा २ त्वंब्रह्मात्वंमहादेव स्त्वंविष्णुस्त्वंप्रजापतिः। वायुरिंद्रश्चसोमश्च विवस्वान्वरुणस्तथा३त्वंकालःसृष्टिकर्त्ताच भर्त्ताहर्त्ता बिभुस्तथा भूतादिर्भूर्भुवःस्वश्चमहर्ज्जनस्तपस्तथा४प्रदीप्तदीपनंनित्यंसर्व्व लोकप्रकाशकम्। दुर्न्निरीक्ष्यंसुरेन्द्राणांयद्रूपंतस्यतेनमः५सुरसिद्धगणैर्ज्जुष्टंभृग्वत्रिपुलहादिभिः।शुभ्रं परममृत्युघ्नंयद्रूपंतस्यतेनमः ६ वेद्यंवेदविदान्नित्यं सर्व्वज्ञानसमन्वितम्। सर्वदेवाधिदेवंच यद्रूपंतस्यतेनमः७पंचतीर्थेस्थितंयच्चदशैकादशएवच अर्द्धमासमतिक्रम्यस्थितंयत्सूर्य्यमंडलम्८ तस्मैरूपायतेदेवप्रणेमुःसर्वदेवता। बिश्वकृद्विश्वरूपंच बैखानससुरार्च्चितम् ९ विश्वस्थितमचित्यंच यद्रूपंतस्यतेनमः। परंयज्ञात्परंदेवात्सत्यलोकात्परंदिवः१०त्वर क्रमतियःख्यातस्तस्मादपिपरंपरात्। परमात्मेतिविख्यातंतद्रूपं तस्यतेनमः११ अविज्ञेयमचित्यंचअध्यात्मगतमव्ययम्। अनादि निधनंचैव यद्रूपंतस्यतेनमः१२नमोनमःकारणकारणायनलोनमःपापविमोचनाय। नमोनमोवन्दितवन्दितायनमोनमोरोगवि-

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मोचनाय १३ नमोनमःसर्व्ववरप्रदाय नमोनमःसर्व्वसुखप्रदाय।
नमोनमोज्ञाननिधेसदैव नमोनमःपंचदशात्मकाय १४ ॥ इति ॥
इसप्रकार हमारी स्तुति रूप वाणी सुन वह तैजस रूप बड़ेमधुर
बचन से बोला कि हे देवताओ वर मांगों तब हमसब बोलेकि
हे प्रभो आपके इसप्रचण्ड रूपको कोई देख नहीं सक्ता इस-
लिये आप सौम्य रूप धारण करैंयह देवताओं की प्रार्थनासुन
सब लोकों को सुख देनेहारा उत्तम रूप धारा सुमंतुमुनि कहते
हैं कि हे राजा शतानीक सांख्ययोग आदि शास्त्र सूर्यनारायण
सेही उत्पन्न भये हैं मोक्ष की इच्छा वाले पुरुष इनकाही ध्यान
करते हैं सूर्यनारायण के ध्यानसे बड़े २ पाप निवृत्त होजातेहैं
अग्निहोत्र वेदपाठ औ बहुत दक्षिणा करके युक्त यज्ञ सूर्यभक्ति
की सोलहवीं कलाके भी समान नहीं फल देते हैं तीर्थोंके भी
तीर्थ मंगलों के भी मंगल औ पवित्रों के भी पवित्र करनेहारे
श्री सूर्यनारायण हैं इनका जो आराधन करैं वे सब पापोंसेछुट
सूर्यलोकको जातेहैं जिस प्रकार पतिव्रता स्त्री को पतिकी सेवा
अवश्य करनी चाहिये इसी भांति सब लोकों को सूर्यनारायण
की उपासना अवश्य कर्तव्य है राजा शतानीक पूछते हैं कि हे
सुमंतुमुनि सूर्यनारायण का रूप सुन्दर करने के लिये प्रथम
किसने कहा यह आप बर्णन करैं तब सुमंतुमुनि कहने लगेकि
हे राजा एक समय ब्रह्मलोकमें जाय ऋषियोंने ब्रह्माजीसे प्रा-
र्थना करी कि महाराज अदिति के पुत्र सूर्यनारायण आकाशमें
अति प्रचण्ड तेजसे तप रहे हैं इससे सब लोक नाशको प्राप्त
होने लगे हम भी अति पीड़ित होरहे हैं औ आपके आसन का
कमल भी सूखा जाता है कोई सुखी नहीं इसलिये आप ऐसा
उपाय करैं कि यह तेज शान्त होय यह ऋषियों की प्रार्थना
सुन ब्रह्मा जी बोले कि हे मुनीश्वरो आप सब देवताओं

Digitized by S3 Foundation USA

सहित सूर्यनारायण केही शरण में जांय जिससे कल्याण होय यह ब्रह्माजी की आज्ञा पाय सब देवता औ ऋषि सूर्यभगवान् के शरण में प्राप्तहो स्तुति करनेलगे ॥

नमदांधमूकान्वधिरान्सकुष्टान् दद्रुव्रणाद्यैर्विविधैर्गदैर्वृतान्। करोषितानेवपुनर्नवानहो अतोमहाकारुणिकायतेनमः१यदौदरं ज्योतिरनिन्धनंमहद्यदप्सुतेजोयदपीहचक्षुषि। तवैवतद्रूपमनेक धास्थितं मुरद्विषःसागरतोयवासिनः २ प्रचण्डपाशासिपरश्वधा युधाःसमुत्थितास्तेतुसुपापचेतसःविप्रैस्तुसंध्यांजलिनासमाहता प्रयांतिनाशंतबदेवदर्शनात् ३ वेदोभवांस्तीर्थफलंसमस्तंयज्ञेषुनित्यंभगवानवस्थितः। दमोभवान्नात्रविचारमस्ति तथासमःशांतिकरोनराणाम् ४ नमोनमस्त्रिभुवनभूतलावन क्रतुक्रियाश्चतफलसंप्रदायिने शुभाशुभप्रतिहतकर्मसाक्षिणे सहस्रसद्दीधतयेनमो नमः५ प्रसक्तसप्ताश्वयुजेक्षमामयेधुरैकरश्मिग्रथितेनमोनमः। सवालखिल्याप्सरकिन्नरोरगैः ससिद्धगंधर्वपिशाचपन्नगैः ६ सयक्षरक्षोगणगुह्यकोत्तमैःस्तुतःसदादेवनमोनमोस्तुते। यच्चापिलोकेतपउच्यतेनरैःतत्तेमहातेजउशंतिपण्डिताः ७ यतोरसान्संक्षिपसेशरीरिणांगभस्तिभिर्हिमकुलकालसन्निभैः। जगच्चसंशोषयसेसदैव यतोसिलोकेजगतांविभुस्त्वम्८यह देवताओं के मुखसे स्तुति सुन प्रसन्न हो सूर्यनारायण ने कहा कि हे देवताओ वर मांगोतबदेवताओं ने यहीवरमांगा कि आपके तेजकोविश्वकर्मा न्यूनकरैंयह आपआज्ञादेवैं सूर्यनारायणने देवताओंकी प्रार्थना स्वीकार करी औ बिश्वकर्मा ने उनके तेज को छीललिया उसी तेज से विष्णुभगवान् का चक्र औ देवताओं शूल शक्ति गदा बज्र बाण परशु आदि आयुधबनायेइस देवताओंके किये स्तोत्र को जो तीनकाल पढ़ै वह रोगों करके पीडित नहीं होता औपुत्र धन बल ऐश्वर्य कीर्ति आयुष औ विजय पाता है सूर्यनारायण

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

का तेज सौम्यहोजाने से औ उत्तम २ आयुध मिलनेसे देवता अति मुदित हो फिरभी सूर्यनारायण की स्तुतिमें प्रवृत्तभये ॥

ओंनमस्तेऋचरूपायसामरूपायतेनमः। नमोयजुःस्वरूपाय अथर्वांगिरसेनमः१ ज्ञानैकधामभूतायनिर्द्धूततमसेनमः। शुद्धज्यो तिस्वरूपाय निस्तत्वायामलात्मने २ नमोखिलजगद्व्याप्ति स्वरूपायात्ममूर्तये। सर्वकारणभूताय निष्ठायैज्ञानचेतसाम् ३ नमस्तेसूर्यरूपायप्रकाशालक्षरूपिणे। भास्करायमहेशायसर्वा-तर्यामिनेनमः ४ त्वंसर्वमेतद्भगवन् जगद्वैभ्रमतात्वया। भ्रमत्या विद्ध्वमखिलं ब्रह्माण्डंसचराचरम् ५ त्वदंशुभिरिदंसर्वं संसृष्टं जायतेशुचि क्रियतेत्वत्करस्पर्शात् जलादीनांपवित्रता ६ होम दानादिकोधर्मोनोपकारायजायते। तावद्यावन्नसंयोगि जगदेत त्वदंशुभिः ७ प्रातर्होमंप्रशस्तंहि उदितेत्वयिजायते। अस्तंगते तथासायं त्वयिहोमःप्रशस्यते ८ ऋचस्सकल्पान्येतानि यजूंष्ये तानिचान्यतः। सकलानिचसामानितपत्वेदंजगत्सदा ९ ऋङ्मयस्त्वंजगन्नाथ त्वमेवचयजुर्म्मयः। यतस्साममयश्चैव ततोनाथत्र यीमयः१ ०त्वमेवब्रह्मणोरूपंपरंचापरमेवच। मूर्त्तामूर्तंतथास्थूल सूक्ष्मरूपतयास्थितम् ११ निमेषकाष्ठादिमयं कालरूपंक्षयात्मकम् प्रसीदस्वेच्छयारूपं स्वतेजोमयमादिश १२ ॥

इस प्रकार देवताओंकी स्तुतिसुनबहुत प्रसन्नहो सूर्यनारायण अभीष्ट वर देतेभये देवताओंने परस्पर बिचार किया कि दैत्यवरोंसे दर्पित होरहे हैं वे अवश्य सूर्यनारायण को हरनेका यत्न करेंगे इसलिये हमको इनके चारोंओर रहना चाहिये यह बिचारकर दंडनायक का रूपधार स्वामिकार्त्तिकेयसूर्यनारायण के बाईं ओर स्थितभये दंडनायक को सूर्य्यनारायण ने आज्ञादी कि तुम जीवोंके शुभाशुभ कर्म लिखो पिंगल रूप से दहिनीओर अग्नि औ दोनों पार्श्वोंमेंअश्विनीकुमारस्थितभये।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

राज्ञ औ श्रोष दो द्वारपाल हैं राज्ञ कार्त्तिकेय का अवतार औ श्रोष रुद्र का अवतार है येदोनों द्वारपालधर्मऔ अर्थकरके युक्त प्रथम द्वारपर रहतेहैं दूसरे द्वारपर कल्माष औ पक्षीयेदो द्वारपालहैं कल्माष यमराजहैं औ पक्षी गरुड़हैं ये दोनों दक्षिण दिशा में हैं कुवेर और विनायक उत्तर में दिंडी औ रेवंत पूर्वमें हैं दिंडी रुद्र का रूपहै औ रेवंत सूर्य्यनारायणकापुत्रहै ये सब देवता दैत्योंको मारनेके लिये सूर्य्यनारायणके चारोंओरस्थितहैं ये सब सुरूप कुरूप अल्प रूप औ स्वेच्छ रूपहैं औ अनेक प्रकारके आयुध धारेहैं औ चारों वेद उत्तम रूपधार चारोंओर सूर्य्यनारायण के स्थितहैं ॥

एकसौ उनीसवां अध्याय ॥

सुमन्तुमुनि कहतेहैं किहे राजा शतानीक अब हमसूर्य्यनारायणकेमुख्य आयुध व्योमका लक्षण कहतेहैं वह व्योम सर्व देवमय है चार शृंगों करके युक्तहै औ सुवर्ण का बनाहै जिस प्रकार वरुण का पाश ब्रह्माका हुंकार विष्णु का चक्र रुद्र का त्रिशूल औ इन्द्रका वज्र आयुध है इसी भांति सुर्य्यनारायणका आयुध व्योम है उसव्योम में ग्यारह रुद्र बारह आदित्य तेरह विश्वदेव आठ वसु दो अश्वनीकुमार ये सब अपनी २ कला करके स्थितहैं हर शर्व त्र्यंबक वृषाकपि शंभु कपर्दी रैवत अपराजित अजैकपाद अहिर्बुध्न्य औ भर्ग ये ग्यारह रुद्रहैं ध्रुव धर सोम नल अनल आप प्रत्यूष औ प्रभास ये आठ वसुहैंनासत्य औ दस्र ये दो अश्विनीकुमार हैं क्रतु दक्षस्रुव सह्यकाल काम धृति कुरु शक्र मात्र अवमान ऋभु औ असह्यये विश्वेदेव हैं इसी प्रकार साध्य तुषित मरुत आदि देवताहैं इनमेंआदित्य औ मरुत कश्यपकेपुत्रहैं विश्वेदेव वसु औ साध्ययेधर्मके पुत्रहैं

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

धर्मका पुत्र तीसरावसु सोम है औ ब्रह्मा का पुत्र धर्महै स्वयम्भुव स्वारोचिष उत्तम तामस रैवत चाक्षुष ये छः मनुतो व्यतीत होगयेहैं औ सातवां वैवस्वतमनु वर्त्तमान है औ अर्क सावर्णि ब्रह्मसावर्णि रुद्रसावर्णि धर्मसावर्णि दक्षसावर्णि रौच्यऔभौत्य ये सात मनु आगे होंगे। अब हम चौदह इंद्रों के नामकहते हैं विस्वभुक विपति विभु प्रभु शिखी मनोजव ये व्यतीतहोगये ओजस्वी नाम इंद्रवर्त्तमान है औ बलि अद्भुत त्रिदिव सुशांति सुकीर्त्ति ऋतधामा औ दिवस्पति ये सातइन्द्रआगे होंगे कश्यप अत्रि वशिष्ठ भरद्वाज गौतम विस्वामित्र औ जमदग्नि ये सप्तर्षि हैं प्रवह अवह उद्वह संवह बिवह परिवह औ परावह ये सात मरुत हैं और्व अग्नि का नाम शुचि वैद्युत अग्निकानामपावक औ अरणि से उत्पन्न हुये अग्नि का पवमान नामहै ये तीन अग्निहैं अग्नियोंके पुत्रपौत्र उनंचासहैं औ मरुत भीउनंचासही हैं संवत्सर परिवत्सर इद्वत्सर अर्थवत्सर औवत्सर ये पांच संवत्सर हैं। औ ब्रह्माजी के पुत्रहैं। सूर्य्य सोम भौम बुध गुरु शुक्र शनि राहु औ केतु ये नवग्रह हैं जगत् का भाव अभाव सदा सूचन करते हैं। इनमें सूर्य्य औ चन्द्र मण्डल ग्रहभौमादि पांच तारा ग्रह औ राहु केतु छाया ग्रह कहातेहैं। सूर्य्यकश्यपके पुत्रहैं सोम धर्म्मके भौम महादेवजो के बुध चन्द्रके गुरुऔशुक्र प्रजापतिके शनि सूर्य्य के राहु सिंहिका के औ केतु ब्रह्माजी के पुत्रहैंसब ग्रहोंके नीचे सूर्य्यनारायण भ्रमण करतेहैं उनसेऊपर चन्द्र चन्द्रसे ऊपर नक्षत्र मण्डल नक्षत्र मण्डलके ऊपरबुधबुध के ऊपर शुक्र शुक्रके ऊपर भौम भौमके ऊपर गुरु गुरुकेऊपर शनि औ शनिके ऊपर सप्तऋषि भ्रमण करतेहैं राहु सूर्य्यमंडल में रहता है औ कभी चन्द्र मण्डल में चला जाताहै औकेतु सदा चन्द्र मण्डलमेंही रहता है नौहजार योजन सूर्य्य मण्डल

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

का व्यासहै औ इससे त्रिगुण परिधि है इससे दूना अर्थात् अठारह हजार योजन चन्द्रमा का व्यास है चन्द्र मण्डल से द्विगुण विस्तार नक्षत्रों का है नक्षत्रों के विस्तार में चतुर्थांश न्यून करैं तो वृहस्पति का व्यास होताहै उसमें चौथाई घटाने से शुक्र औ भौम का प्रमाण सिद्ध होता है इनके व्यासमें भी चौथा भाग घटानेसे बुधका व्यास होजाताहै बुधकेसमानछोटे नक्षत्र हैंसूर्य्य मण्डलकेप्रमाण राहुहै औ केतु का प्रमाणनियत नहीं औ उसकी गतिका भी निश्चय नहीं। पृथ्वी को भूलोक कहतेहैं अंतरिक्षको भुवर्लोक त्रिदिवको स्वर्लोक कहतेहैं भूलोक कास्वामि अग्निहै भुवर्लोकका वायुऔ स्वर्लोकका प्रभुसूर्य्यहै गन्धर्व अप्सरा गुह्यक औ राक्षसभूलोकमेंरहतेहैं मरुतभुवर्लोक मेंरहतेहैं औ रुद्र अश्विनीकुमार आदित्यवसुऔदेवगणस्वर्लोक में निवास करते हैं चौथा महर्लोकहै जिसमें प्रजापतियोंसहित कल्पवासी रहतेहैं पांचवें जनलोकमें ऋभु सनत्कुमार आदिक ऋषि औ भूमिदान करनेहारे मनुष्य बसतेहैं छठ तपोलोक में ऋषिरहतेहैं औसातवें सत्यलोकमेंवे पुरुषरहतेहैं जोजन्म मरण से छुटजातेहैं औ पुराण बांचनेवाले तथा श्रवण करनेवाले भी उसीलोककोजातेहैंभूमिसेलाखयोजनऊंचासूर्य्यमंडलहैऔसात कोटियोजनदूरध्रुवहै तेईस लाखयोजन तीनोंलोकोंकी उचाईहै औध्रुवसे ऊपर दूनी२ उचाई करके बाकी चारलोकहैं देवदानव गन्धर्ब यक्ष राक्षस नाग भूतऔ विद्याधर येआठदेव योनिहैंइस प्रकार इसव्योममेंसातलोक स्थितहैं मरुतपितर मेघअग्निग्रह औ आठों देव योनि तथा मूर्त औ अमूर्तसब देवता इसी व्योममें स्थितहैं इसलिये जो भक्तिऔ श्रद्धासेव्योम का पूजनकरै उसको सब देवताओंके पूजनकाफल प्राप्तहोताहैऔ सूर्य्यलोककोजाता है इसलिये अपने कल्याण के अर्थ सदा व्योम का पूजनकरै॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

एकसौ बीसवां अध्याय॥

सुमंतुमुनिकहते हैंकिहेराजाशतानीकआकाशखवियत्व्योम अंतरीक्ष नभ अंबर पुष्कर गगन मेरु बिपुल आप छिद्रशून्यतम इत्यादि सब नामव्यामकेहैं। लवण क्षीर दही घृत इक्षुरसमद्य औ मीठाजल इनके सात समुद्रहैं हिमवान् हेमकूट निषधनील श्वेत औशृंङ्गवान् ये क्षवर्षपर्वतहैं औइनकेमध्यमेंसुमेरुस्थित है मेरुके ऊपर आठों दिक्पालों की अपनी २ दिशामें पुरीहैंपृथिवी में लोकालोक पर्वत है सबलोक ब्रह्मांड के भीतर हैं ब्रह्मांडके बाहिर चारोंओर जलहै अग्नि करके वेष्टितहै अग्निवायु करके वायु आकाश करके आकाश भूतादि करके औ भूतादि महत्तत्व करके महत्तत्व प्रकृति करके प्रकृति पुरुष करके औ पुरुष ईश्वर करके आवृतहै वह सम्पूर्ण जगत् को आवरण करनेवालाईश्वर सूर्य्यनारायणही है भू भुवः स्वः महः जनः तपः औ सत्ययेसात ऊपरके लोकहैंऔ तल सुतल पाताल तलातल अतल वितलऔ रसातलये सातलोक भूमिके नीचेहैं येसब पहिली भांतिईश्वर करके आवृतहैं पृथिवीके मध्यमें सिद्ध गन्धर्ब देवताआदि करके सेवित चतुरस्र सुवर्ण का बनाहुआ चारशृंगों करके युक्तसुमेरु पर्बतहै उसकी उचाई चौरासी हजार योजनहै औ सोलहहजार योजन भूमिमें गड़ाहै इस प्रकार मिलकर एकलाख योजनमेरु पर्बत गिनाजाताहै अट्ठाईसहजार योजन चौड़ा औ छप्पनहजार योजनलम्बामेरुपर्बतहै उसका सौमनसनाम पहिलाशृंगसुवर्ण काहै ज्योतिष्कनाम दूसरा शृंग पद्मरागमणिसे बनाहै तीसरा चित्रनामशृङ्ग सर्बधातु मयहै औ चौथा चंद्रौजश नामशृङ्ग चांदी काहैसौमनसनाम पहिले शृङ्गमें सूर्यनारायण का उदय होता है तबसब लोक देखतेहैं उसी का नाम उदयाचल है उत्तरायण में

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सौमनसशृङ्गमें दक्षिणायनमें ज्योतिष्कशृङ्गमें औमेष तुलासंक्रांतियोंमेंमध्यकेदोशृङ्गोंमेंसूर्य्यनारायणका उदयहोताहै उसपर्वतके ईशानकोणमें इन्द्र औ विष्णु अग्नि कोणमें अग्निनैर्ऋत्यकोणमें पितर वायव्यमें मरुत औ मध्यमें साक्षात् ब्रह्मानिवास करतेहैं इसीको व्योमकहतेहैं जहां सूर्य्यनारायणआप निवासकरतेहैं इस प्रकार सर्बदेवमय औ सर्ब लोकमय व्योम है एक शृङ्गपर सूर्य्य दूसरेपर हेलि तीसरे पर धननाथ औ चौथे शृङ्गपर सोमस्थितहैं मध्यमेंब्रह्मा विष्णुऔशिव निवासकरतेहैं औ उनहींशृङ्गोंमें विधुक्षयगोपतिशांडिलीसुत यम विरूपाक्ष बरुण इंद्र दशबल आदि देवतानिवासकहतेहैं मध्यमेंब्रह्मा औअधोभागमें अनंतकीस्थिति है यहव्योम अथवा मेरु सर्बधर्ममय औ सर्बदेवमयहै इसके चारों शृङ्गधर्मआदि चार पुरुषार्थ अथवा ऋग्वेद आदि चारोंवेद हैं ॥

एकसौ इक्कीसवां अध्याय ॥

राजा शतानीक पूछतेहैंकि सांबने किसप्रकार सूर्य्यनारायण काआराधनकिया औ उस दारुण रोगसे क्योंकर छुटा यहआप कृपाकर बर्णन कीजिये ॥

यह राजा का बचनसुन सुमंतुमुनि बोलेकि हे राजन् आपने बहुत उत्तम कथा पूछी इसको हम विस्तार से वर्णन करते हैं जिसके सुनतेही सब पाप दूरहोजांय ॥

नारदजी के मुख से सूर्य्यनारायण का माहात्म्य सुनअपने पिताश्रीकृष्णचन्द्रके समीपजाय सांबने प्रार्थना करी कि महाराज रोग ने मुझे दबालिया है औ औषधों से कुछ शांति नहीं होती अब आप आज्ञा देवेंकि मैं बन में जाय सूर्य्यनारायण का आराधन कर इस दुःख से छूटूं यह पुत्रका बचन सुन प्रसन्न हो श्रीकृष्णभगवान् ने आज्ञा दी सांब भी पिता की आज्ञा पातेही

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

चन्द्रभागानदी के तटपर जगत्प्रसिद्ध मित्रबन नाम सूर्य्यक्षेत्र में जाय तपकरने लगा औ उपबासकर सूर्य्यनारायण के आराधन में प्रवृत्त होगया ऐसातपकिया कि शरीर में अस्थिमात्र रहगई नित्य मंत्रका जपकरता औ इस स्तोत्र करके सूर्य्यनारायण की स्तुति करता ॥

यदेतन्मंडलंशुक्लं दिव्यंचाजरमव्ययम्। युक्तंमनोजवैरश्वैर्हरितैर्ब्रह्मवादिभिः १ आदिरेषहिभूताना मादित्यइतिसंज्ञितः। त्रैलोक्यचक्षुरेषोत्र परमात्माप्रजापतिः २ यएषमंडलेह्यस्मिन् पुरुषोदीप्यतेमहान्। एषविष्णुरचिन्त्यात्माब्रह्मचैवपितामहः३ रुद्रोमहेंद्रोवरुणआकाशपृथिवीजलम्। वायुःशशांकःपर्जन्योधनाध्यक्षोविभावसुः ४ यएषमंडलेह्यस्मिन् पुरुषोवैप्रकाशते। सहस्र रश्मिःसूर्योयं द्वादशात्मादिवाकरः ५ यएषमंडलेह्यस्मिन् पुरुषो दीप्यतेमहान्। एषसाक्षान्महादेवो वृत्तकुंभनिभःशुभः ६ कालो ह्येषमहायोगी निरोधोत्पत्तिलक्षणः। यएषमंडलेह्यस्मिन् तेजोभिःपूरयन्महीन् ७ भासतेह्यव्यवच्छिन्नो धाताह्यमृतलक्षणः। नातःपरतरंकिंचि त्तेजसाविद्यतेक्वचित् ८ पुष्णातिसर्वभूतानि एषएवसुधामृतैः। अंत्यजान्म्लेच्छजातीयान् तिर्यग्योनिगतानपि ९ कारुण्यात्सर्वभूतानि पासिदेवविभावसो। श्वित्रिकुष्ठ्यंधबधिरान्जडांपंगुलकांस्तथा १० प्रपन्नवत्सलोदेवो नीरुजःकुरुषे भवान्। दद्रुमंडलमग्नांश्च निर्धनान्पुरुषांस्तथा ११ प्रत्यक्षदर्शीत्वंदेव समुद्धरसिलीलया। कामेशक्तिस्तवस्तोतु मार्तोहंरोगपीड़ितः १२ स्तूयतेत्वंसदादेव ब्रह्मविष्णुशिवादिभिः। महेंद्रसिद्ध गंधर्वैरप्सरोभिःसगुह्यकैः १३ स्तुतिभिःकिंपवित्राभिरन्याभिर्वामहेश्वरायस्यतेऋग्यजुःसाम्नांत्रितयंमंडलेस्थितम् १४ ध्यानिनांत्वंपरंध्यानंमोक्षद्वारंचमोक्षिणाम्। अनंततैजसाक्षोभ्यअचिंत्याव्यक्तनिष्कल १५ यन्मयाव्याहृतंकिंचित्स्तोत्रेस्मिन्जगत्पते।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

आर्तिं भक्तिं वविज्ञायतत्सर्वंक्षंतुमर्हसि १६ इस प्रकार सांब से स्तुति सुन अति प्रसन्न हो सूर्यनारायण ने प्रत्यक्ष दर्शन देकर कहा कि हे सांब वर मांग हम तेरे तप से बहुत प्रसन्न भये हैं तब सांबने कहा कि महाराज आपके चरणों में दृढ़ भक्ति होय यहीवर चाहताहूंसूर्यनारायण ने कहाकि यहतो होहीगीपरन्तु और भी वरमांगो तब फिर सांबने कहाकि महाराजजोआपकी यही इच्छा है तो यह मेरे शरीर का कलंक निवृत्त होजाय तब सूर्यनारायण ने कहाकि ऐसाही होय यह करते ही सांब का दिव्यरूप औ उत्तम स्वर होगया फिर भी सूर्यनारायण ने कहा कि हे सांब हम प्रसन्न होके और भी वरदेते हैं कि यह नगर तुम्हारे नामसे प्रसिद्ध होगा औ लोकमें तुम्हारी अक्षय कीर्त्ति होगी औ हम तुम को नित्य स्वप्न में दर्शन देंगे अब तुम इस चंद्रभागा नदीके तटपर हमारी प्रतिमास्थापन करो इतनाकह सूर्यनारायण अन्तर्द्धान भये ॥

हे राजा इस सांबके किये स्तोत्र को जो पढ़े वह राज्यधन आरोग्य पावै औ सांबकी भांति सूर्यनारायण का प्रीतिपात्रहो सूर्यलोक को जाय ॥

एकसौ बाईसवां अध्याय ॥

सुमंतुमुनि कहतेहैं किहे राजा शतानीक तप करने के समय सांब सहस्रनाम से स्तुति किया करताथा तब स्वप्न में सूर्यनारायण ने कहाकि हे सांब सहस्रनाम से हमारी स्तुति करनेकी कुछ अपेक्षा नहीं हम अत्यंत गुह्य पवित्र और शुभ अपने नाम तुमको बताते हैं जिनके पाठ करनेसे सहस्रनाम के पाठकाफल होय।ओंविकर्तनोविवस्वांश्चमार्तंडोभास्करोरविः।लोकप्रकाशकः श्रीमान्लोकचक्षुर्ग्रहेश्वरः१लोकसाक्षीत्रिलोकेशःकर्ताहर्तातमि-

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

स्त्रहा। तपनस्तापनश्चैवशुचिःसप्ताश्ववाहनः२गभस्तिहस्तोब्र-
ह्माचसर्वदेवनमस्कृतः॥ यहइक्कीस नामकाहमारा स्तोत्र त्रैलो-
क्य में प्रसिद्ध है जो दोनों संध्याओं में इस स्तोत्र को पढ़े वह
सब पापों से छुटै और धन संतानआरोग्यआदि जो पदार्थ चाहे
वही मिलैइतना सांबको उपदेश कर सूर्यनारायण अंतर्द्धानभये
सांब भी इस स्तवराज के पाठसेअभीष्ट फलकोप्राप्त भया और
भी जो पुरुष भक्तिसेइस स्तोत्रका पाठकरैवहसब रोगोंसेछुटै॥

एकसौ तेईसवां अध्याय॥

सुमंतु मुनि कहते हैं कि हे राजा शतानीक इसप्रकार सूर्य-
नारायण से वरपाय सांब अति हर्षित हुवा॥

एकदिन तपस्वियों के साथ पहिली भांति चन्द्रभागा नदी
पर स्नान करनेगया वहां स्नानकर मंडल बनाय सूर्यनारायण
का भक्तिसे पूजन किया औ मनमें बिचारकरनेलगा कि सूर्यना-
रायण की कैसी प्रतिमा स्थापन करूं यहबिचारकरतेही नदीमें
देखाकि अति प्रकाशवती एकप्रतिमा बहीचली आतीहै प्रतिमा
देखतेही सांबको निश्चय हुआ कि यह अवश्य सूर्यनारायणकी
प्रतिमा है और उनकी इच्छा से मेरे दृष्टिगोचर हुई यह मन में
बिचार नदीसे उसप्रतिमा को बाहिर निकाल लाया वहीप्रतिमा
सांबने मित्रवन में विधिपूर्वक स्थापन करी एकदिन सांब ने
प्रतिमा से ही पूछा कि महाराज यह आपकी प्रतिमा किसने
बनाई है आप कृपाकर मुझे कहैं यह सुन प्रतिमा बोली कि हे
सांब पूर्वकाल में हमारा रूप प्रचण्ड तेज करके युक्त था उससे
व्याकुल हो सब देवताओं ने हम से प्रार्थना करी कि आपइस
रूपको सौम्यकीजिये नहींतो सबलोक दग्ध होजांयगे देवताओं
कीप्रार्थना हमनेस्वीकारकरी औ शाकद्वीपमें जाय विश्वकर्मासे

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अपना तेज छिलवा डाला उसी विश्वकर्मा ने कल्पवृक्ष के काष्ट से यह हमारी सुलक्षण प्रतिमा बनाई औ अब तुम्हारी इच्छा पूरीकरने के लिये हमारी आज्ञानुसार विश्वकर्म्मानेही नदी में बहाई है सांब यह हमारा क्षेत्र तुम्हारे नाम से प्रसिद्ध होगा मध्याह्नके पूर्वमुंडारक्षेत्र में मध्याह्नके समय कालप्रिय में औ मध्याह्नके अनन्तर इसस्थानमें हमारा सान्निध्यहोगा इनतीनों कालोंमें क्रमसे ब्रह्मा विष्णु औ शिव सदा हमारा पूजनकरतेहैं यहसूर्यनारायणकी प्रतिमाके मुखसे सुन सांब अतिहर्षितहुआ॥

एकसौ चौबीसवां अध्याय॥

राजा शतानीक पूछतेहैं कि हे सुमंतुमुनि सांबनेसूर्य्यनारायण की प्रतिष्ठा किसबिधि करी औ प्रसाद कैसा बनाया यह आप वर्णन करें यह राजाका वचन सुन सुमंतुमुनि बोले किहे राजा प्रतिमा मिलनेके अनन्तरसांबने नारदजीका स्मरण किया स्मरणकरतेही नारदजी वहांआये उनका पूजन सत्कार आदि कर आसन पर बैठाय सांबने पूछाकि महाराज सूर्य्यनारायणकी प्रतिष्ठा किस बिधान से करनी चाहिये औ प्रतिष्ठा से क्याफल होता है यह आप कृपाकरकहैं। तब नारदजी बोले कि हे सांब पहिलेतो उत्तम प्रसाद बनाना चाहिये पीछेउसमेंमूर्ति अस्थापन होताहै सांबने फिर पूछाकि महाराज प्रसादका क्यालक्षण है औ कैसी भूमि में बनाना चाहिये यह भी आप कथन करैं यह सांब का प्रष्णसुन नारदजी कहने लगे कि हे सांब पहिले तो उत्तम जलाशय बनावै उसके तटपर सुंदरबाग लगाय बाग के मध्यमें प्रसाद बनाय उसमें देवताका स्थापनकरै अथवा उत्तम जनों करके युक्त नगर में प्रसादबनावै इष्ट अर्थात् यज्ञादि औ पूर्त अर्थात् कूप तटाक आदि इनदोनों कर्मों के फलकी इच्छा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

होय तो देवता स्थापन करै जल औ सुन्दर सघन वृक्षों करके युक्तरमणीयस्थानोंमें अवश्यदेवतानिवास करतेहैं कमलों करके आच्छादित हंस कारंडव क्रौंच चक्रवाक आदि पक्षियों करकेशोभित तटमें पक्षियोंके विहार योग्य शीतल औसघन छायायुक्त वृक्षोंकरके भूषित सरोबरोंमेंउत्तम २ नदियोंके तटोंमें पर्वतों के निर्झरोंके समीप सदादेवताविहारकरतेहैं ब्राह्मणआदिवर्णोंके लिये जैसी भूमि घर बनानेकेलिये कहीहै वैसीही भूमिमें देवप्रासादभी बनावै घरकीभांति देवालयमें चतुष्षष्टिपदकावास्तुरचै मध्यमें द्वाररक्खै विस्तारसेद्विगुण प्रासाद की उचाई होती है औ उचाईकी तिहाई प्रासादकी कटि अर्थात्मध्यभागहोताहैविस्तारकेआधेमें गर्भमंदिर औ आधेमें भित्तिबनतीहै गर्भकीचौथाई केतुल्यचौड़ा औ उससेदूनाऊंचाद्वार होताहै विस्तारकी चौथाई केतुल्य द्वार शाखाबनावै औ द्वार शाखाओंके नीचले चतुर्थांश में प्रतीहार की मूर्ति बनाय बाकी द्वार शाखामेंभांति २ के बेल बूंटे पक्षी आदि बनादेवै द्वार शाखाके अष्टमांशके तुल्य पिंडिका अर्थात् नीचे की चौकी सहित प्रतिमा बनावै उस में एक भाग पिंडिका औ दो भाग प्रतिमा बनतीहैं मेरु मंदर कैलास विमान नन्दन समुद्र पद्म गरुड़ नंदिवर्द्धन कुंजर गृहराज वृष हंस सर्वतोभद्र घट सिंह वृत्त चतुष्कोण षडस्र अष्टास्र ये बीस भांति के प्रसाद होतेहैं हे सांव अब तुम इनके लक्षण सुनो नौ आठ छः अथवातीन अश्रियों करके युक्तबारह भूमिका अर्थात् खंडका चार द्वारों करके शोभित तीसहाथ बिस्तार करके युक्त मेरु प्रासाद होता है तीस हाथ विस्तार में दश भूमिका का मंदर प्रासाद होताहै अठाईसहाथ विस्तार में औ आठ खंडका प्रासाद कैलास कहाता है सुंदरजाली झरोखों से शोभित सात खंडका औ इक्कीस हाथके विस्तार में विमान प्रासाद होता है

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

छः भूमिका करके युक्त बत्तीस हाथ विस्तार में नन्दनप्रासाद बनता है समुद्र प्रासाद वर्तुल होता है पद्मप्रसाद पद्मके आकार आठहाथ विस्तार में होता है उसमें एक शृङ्ग औ एकही भूमिका होतीहै गरुड़प्रासाद गरुड़के आकार होताहै नन्दिवर्द्धनप्रासाद साठहाथ के विस्तार में सात भूमिका करके युक्त औ बीस अश्रियों करके युक्त होता है सोलह हाथ ऊँचा औ हाथी की पीठ के आकार कुंजरप्रासाद होताहै सोलहहाथ के विस्तारमें तीन चन्द्रशालाओंकरके युक्त गृहराज नाम प्रासाद बनता है बारह हाथके विस्तारमें चारोंओर वर्तुल एक भूमिका औ एक शृङ्ग करके युक्त वृषप्रासाद होताहै हंसप्रासाद हंसके आकार आठहाथ विस्तार में होताहै चार द्वार बहुतसे शिखर औ अनेक चंद्रशालाओं करके युक्त छब्बीसहाथ विस्तारमेंपांच खण्डका प्रासाद सर्वतोभद्र कहाताहै बारह हाथके विस्तार में सिंहाक्रांतनाम प्रासाद सिंहके आकार होता है बाकी प्रसाद नामके सदृश रूपवाले होते हैं मयासुर के मतमें एक२ भूमिका एकसौ आठ अंगुलकी होतीहै विश्वकर्माके मतमें साढ़ेतीनहाथकीभूमिका औ स्थपित अर्थात् कारीगरोंके मतमें प्रत्येकभूमिका सौ२ अंगुलकी होतीहै भूमिका कुछ न्यून रहजाय तो उस के ऊपर कपातपालिका बनादेनेसे पूरीहोजातीहै सांब पूछते हैं कि हे नारदजी ये बीसप्रासाद आपनेकहे इनमें सूर्यनारायण के लिये कौनसा प्रासाद बनवाना योग्यहै औ नगर में प्रासाद बनावै तो कौनसी दिशामें बनावै यह आप कृपाकर वर्णनकरैं यहसुन नारदजीकहनेलगे कि हेसांब नगरकेमध्यमें अथवा पूर्व द्वारकेसमीप भूमि की परीक्षाकर उसमें प्रासाद बनावै सुंदरवर्ण रस औ गंधकरके युक्त स्निग्धभूमि अच्छीहोतीहै कंकर तुष केश अस्थि अंगार आदि जिसभूमिसे निकलै वह प्रासाद योग्य नहीं

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

जिसभूमि को ताड़नकरने से मेघ अथवा दुंदुभीके शब्दके समान शब्द होय औ जिसभूमिमें सबप्रकार के बीज ऊग आवैं वह भूमि उत्तम होतीहै शुक्ल रक्त पीत औ कृष्णवर्णकीभूमि क्रमसे ब्राह्मण आदि वर्णोंके लिये श्रेष्ठहै इसप्रकार भूमिकी परीक्षा कर उत्तम भूमि जान उसमें चार हाथ लम्बा चौड़ा चतुरस्र चौका लगाय एक हाथ लम्बा चौड़ा औ दश अंगुल गहरा एक गढ़ाखोदै औ उस गढ़ेको फिर उसीमृत्तिका से भरे जो गढ़े से निकलीहो जो गढ़ा भरजाय औ कुछ मृत्तिकी शेषरहे तो वह भूमि उत्तम होती है मृत्तिका न बढ़ै औ घटै भी नहीं तो मध्यम औ मृत्तिका न्यून होजाय गढ़ा न भरै वहभूमि अच्छी नहीं होती सूर्य्यनारायण का मन्दिर पूर्व्वाभिमुख बनाना चाहिये औ पूर्व्व की ओर द्वार रखने का स्थान नहोय तो पश्चिमाभिमुख बनावै परन्तु मुख्य तो पूर्व्वाभिमुखही है उसमें अस्थानोंकी कल्पना इसप्रकार करै कि मुख्य मन्दिर से दक्षिण ओर सूर्यनारायण का स्नान गृह औ उत्तर की ओर अग्निहोत्र शाला बनावै शिवजी औ मातृका इनका मन्दिर उत्तराभिमुख बनावै पश्चिमकी ओर ब्रह्मा उत्तर को विष्णु दाहिनी ओर निक्षुभा औ बायें ओर राज्ञीका स्थापन करै दक्षिणभाग में पिंगल बाम भाग में दण्डनायक औ सूर्य्य-नारायणके संमुख श्री औ महाश्वेताका अस्थापनहोताहैदेवगृह के बाहिर अश्वनीकुमारों का स्थान बनावै दूसरी कक्षामें राज्ञ औ श्रोष तीसरी में कल्माष औ पक्षी दक्षिण में माठर उत्तर में कुवेर औ कुवेर से उत्तर रेवंत औ विनायक अस्थापनकरै अथवा जिस दिशामें उत्तम स्थानहो वहांही अस्थापनकरै बाम दक्षिण में दो मण्डल अर्घ्यदेने के लिये बनावै उदय के समय दक्षिण मण्डल में औ अस्तके समय बाम मण्डल में सूर्य्यनारायण को अर्घ्यदेवै औ चक्राकार पीठके ऊपर स्नानगृह में चार कलशों

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

करके सूर्यनारायण की प्रतिमाको स्नान करावै स्नानके समय शंख आदि वाद्य बजैं तीसरे मण्डलमें सूर्यनारायणका पूजनकरै सूर्यनारायणके संमुख खड़ा हुआदिंडी स्थापनकरै सूर्यनारायण के संमुख समीपही व्योम का स्थान बनावे जिसका हमनेप्रथम वर्णन कियाहै मध्याह्नके समय वहां सूर्यनारायण को अर्घ्यदेवै अथवा मध्याह्न के अर्घ्यकेलिये चक्रनामक तीसरा मण्डलबना लेवै पहिले स्नान करायपीछे अर्घ्य देवै औ सूर्यनारायणके समीपही पुराण बांचने का स्थान बनावै यह क्रमसे देवताओं के स्थापनका विधान है गृहराज औ सर्वतोभद्र ये दो प्रासाद सूर्यनारायणको अति प्रिय हैं इसलिये येही बनाने चहियें॥

एकसौपचीसवांअध्याय॥

नारदजी कहतेहैं कि हेसांब अब हमविस्तार से प्रतिमाका विधान कहते हैं सब देवताओंकीप्रतिमाओं विशेषकरके सूर्यनारायणकीसातप्रकार कीहोतीहैसुवर्णकीचांदीकीताम्रकीपाषाण की मृत्तिका की काष्ठ की औचित्रमें लिखीहुई इनसातप्रकारकी प्रतिमाओं मेंकाष्ठकी प्रतिमाका विधानहमकहतेहैं ज्योतिषियों से उत्तममुहूर्त्त पूछ उसमुहूर्तमें बहुतउत्सवकर अच्छे शकुनदेख बनमें जाय वहां प्रतिमा क लिये वृक्षदेखै दुग्धयुक्त वृक्ष दुर्बल वृक्षचतुष्पथ देवस्थान वल्मीकश्मशान चैत्यआश्रम आदिमेंलगे हुवे वृक्ष पुत्रक वृक्ष अर्थात् जो वृक्षकिसीअपुत्र मनुष्यने अपना पुत्रकरके लगायाहोय जिनमेंकोटरबहुतहोंय औ बहुत पक्षीरहते होवें वृक्ष शस्त्र वायु अग्नि विजुली हाथी आदिकरके दूषितवृक्ष एक दो शाखा वाले वृक्ष औ जिनका अग्र सूखगयाहो ऐसेवृक्षप्रतिमा बनानेके योग्यनहींहोतेमहुवादेवदारु राजवृक्ष चंदनबिल्व अंबाड़ा खदिर अंजननिंब श्रीपर्ण पनस सरलअर्जुनऔरक्तचंदन

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ये वृक्ष प्रतिमाके लिये उत्तम हैंमहुवा आदि दो२वृक्षक्रमसेचारों वर्णोंके लिये श्रेष्ठहैं औनिंब आदि छःवृक्ष सर्व साधारणहैं देवदारु चंदन शमी औ महुवा ब्राह्मणोंके लिये निंब पीपलखदिर औ विल्व क्षत्रियोंके अर्थ अर्जुन खदिर रक्तचंदनऔरस्यंदनवैश्यों के लिये औ तेंदू नागकेसर सर्ज अंजन आम्र औ शाल ये वृक्ष शूद्रोंके लिये प्रतिमा बनाने के अर्थ उत्तमहैं इन वृक्षोंके काष्ठसे प्रतिमा अथवा लिंग बनाय स्थापन करै शुचि एकांतसम केश अंगार कंटक आदिसे रहित औ पूर्व तथा उत्तरको झुकीहुईभूमि में जो वृक्ष उत्पन्न हुवाहो जो वृक्ष सुंदर शाखा पत्र पुष्प फलों करके युक्तहोसीधाही औ जिसमें व्रणनहोय ऐसा वृक्षउत्तमहोताहै जो आपही टूटपड़ै खड़ा२सूखजायऔजिसमें मधुमक्षिका शहतका छत्ता लगावै वह वृक्ष शुभ नहींहोता कार्तिक आदि आठ महीनोंमें उत्तम मुहूर्तदेख वृक्षग्रहणकरै वृक्षकेनीचे चारों ओर चौका लगाय स्नानकर सुंदर श्वेत नये वस्त्र धारण कर गंध पुष्पमाला धूप वलि आदिसे वृक्षकापूजनकर हवन करै ओं भूः भुवः स्वः इस मंत्रसे वृक्षका पूजनकरै पूजनकरइनश्लोकोंसे वृक्षको सान्त्वनकरै। वृक्षलोकस्यशांत्यर्थंगच्छदेवालयंशुभम्। देवत्वंयास्यसेतत्रछेददाहविवर्जितः१कालेधूपप्रदानेनसपुष्पैर्वलिकर्मभिःलोकास्त्वांपूजयिष्यंतितोयास्यसिनिर्वृतिम्२ इन श्लोकोंको पढ़ धूप माल्य आदिसे कुठारका पूजनकर वृक्षके समीप रक्खै औ कुठार का शिर पूर्वकी ओर करै फिरमोदक खीर भात दही मांस भांति२ के पुष्प धूप दीप आदिसेदेवता पितर राक्षसपिशाच नाग असुर गणबिनायक आदिकोरात्रिके समय वलिदेकरवृक्षका पूजनकरै औवृक्षको स्पर्शकर ये श्लोक पढ़ै।अर्चार्थममुकस्यत्वंदेवस्यपरिकीर्तितःनमस्तेवृक्षपूजेयंविधिवत्प्रतिगृह्यताम्१ यानीहभूतानिवसंतितानिबलिंगृहीत्वाविधि

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वत्प्रयुक्तम्। अन्यत्रवासंपरिकल्पयंतुकल्याणदाःसंतुनमोस्तुते
भ्यःइसप्रकार प्रार्थना कर शयनकरै प्रभातउठस्नानकरवृक्षका
पूजनकरैऔब्राह्मण तथा भोजकोंको दक्षिणादेकरस्वस्तिवाचन
कराय उस वृक्षको कटवावै पूर्वईशान औ उत्तरकी ओर कटकर
वृक्षगिरै तो अच्छा होता है बाक़ी पांचदिशा अशुभहैं इनमेंभी
वायव्य औ पश्चिम मध्यमहैं पहिले वृक्षकी शाखा कटवायपीछे
वृक्षको ऐसी रीति से काटै कि पूर्वादि दिशाओं में गिरै जो वृक्ष
गिरतेही दो टूक होजाय अथवा उससे शहत घी तेल रुधिर
आदि स्रवै वह वृक्षग्रहण न करना चहियेकुठार का प्रहारकर-
तेही जो वृक्षमें पीतवर्णका मण्डलपड़जाय तो उसवृक्षमें गोधा
होतीहै काला मण्डलहोय तो सर्प धूसड़वर्णहोय तो पाषाण
कपिण वर्ण होय तो पत्वी शुक्ल वर्ण होय तो जल औ मंजीठके
समान रक्तवर्ण मण्डल पड़जाय तो उसवृक्षमें कृमि होते हैं
ये दोष जिस वृक्षमें न होंय उसको ग्रहणकरै काटने के अन-
न्तरथोड़ेकालतक पत्तोंसे वृक्षको ढकदेवै पीछेप्रतिमाबनवावै॥

एकसौ छब्बीसवां अध्याय॥

नारदजी कहतेहैं कि हेसांब एक हाथकी तीनहाथकी साढ़े-
तीन हाथ अथवा प्रासाद औ द्वारकेअनुसार जितनाप्रमाणआवै
उतनी लम्बी प्रतिमा बनावै एक हाथकी प्रतिमा सौम्यहोती है
दोहाथकी धन धान्य देती है तीनहाथकी प्रतिमासे सब काम
सिद्धि होतेहैं और साढ़े तीनहाथ लम्बी प्रतिमा स्थापनकरीजाय
तो सुभिक्ष क्षेम औ आरोग्यहोता है जो प्रतिमा अग्रमें मध्यमेंऔ
मूलमें समहो उसको गांधर्वी कहतेहैं वह प्रतिमा धन औ धान्य
देने हारीहै देवालय के द्वारका जितना विस्तार हो उसकेअष्टांश
के समान प्रतिमा बनावै उसमेंभी एकभागपिण्डिकाछोड़दो भाग

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

में प्रतिमा बनतीहैं अपने चौरासीअंगुलकी प्रतिमाउत्तमहोतीहै उसमेंबारहअंगुललंबा औ चौड़ा प्रतिमा का मुखबनताहै मुखकी तिहाई ठोडीऔ बाक़ी ललाट औनासिका होतीहै नासिकाके तुल्य कान बनतेहैं दोदो अंगुल के नेत्र औ इसकीतिहाई में नेत्र की तारा औ ताराकी तिहाई में दृष्टि बनतीहै ललाट औ मस्तक की उँचाई समानही होतीहै मस्तक का विस्तार बत्तीस अंगुल होताहै नासिका के तुल्यग्रीवा होतीहै औ मुखके समान हृदय का अंतर बनता है मुखके तुल्य नाभि औ उसके अनन्तर शिश्न बनाया जाता है ऊरूके ऊपर कटि बनतीहै बाहु औ प्रबाहुतथा ऊरु औ जंघा समान बनाई जातीहैं गुल्फ अर्थात् टंकनेकेनीचे चार अंगुल ऊंचे पाद बनते हैं पादोंकी चौड़ाई छाअंगुलहोतीहै औ पैरों के अंगूठे तीन तीनअंगुललम्बे होतेहैं औ अंगूठोंकेसमानही तर्जनीहोतीहैं बाक़ीतीनअंगुलीक्रमसेछोटीबनतीहैं औनख भी क्रमसेछोटेहोतेजातेहैं पैरकी लंबाई चौदहअंगुलहोतीहै इन लक्षणों करके युक्त प्रतिमा पूजनके योग्य होतीहै कंधे छातीऊरु भ्रूललाट नासिका औ कपोल ये अवश्य ऊंचेहोनेचाहियेविशाल नेत्र कमलकेसमान मुखरक्तवर्ण ओष्ठ रत्न जटितमुकुटसें भूषित मस्तक मणिकुण्डल कटक अंगदहार आदि भूषणोंसे शोभित अव्यंग धारेहुये हाथोंमें कमल और सुवर्ण मालालिये अतिमनोहर सूर्यनारायण की प्रतिमा बनावै ऐसी मूर्त्ति प्रजामें कल्याण करनेहारी होतीहै प्रतिमाका कोई अंगअधिकहोय तो राजभयहोताहै न्यून होयतो रोग भीति पेट बड़ाहोय तो क्षुधा का भय औ कृशप्रतिमा होयतो दारिद्र्यहोताहै प्रतिमामें क्षत होय तो शस्त्रभयहोय फूटी प्रतिमा होय तो मृत्यु दहिनी ओर झुकी होयतो आयुषका क्षय बाईं ओर झुकीहोय तो पत्नी से वियोगहोता है इसलियेसुंदर और सीधी सूर्यनारायण की [illegible]

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA.

मा बनावै प्रतिमा की दृष्टि ऊपर को होय तो स्थापनकरनेवाला अंधा होजाय नीचे दृष्टि होय तो चिंता होय यह सब प्रतिमाओं का शुभाशुभ फलहमने कहा है कमंडलु धारे कमलासन पर बैठे चार मुखों करकेयुक्त ब्रह्माजीकी प्रतिमा बनावै स्वामिकार्त्तिकेय की मूर्त्ति कुमार स्वरूप हाथ में बर्छी लियेबहुत सुन्दर बनानी चाहिये औ उनके ध्वजा में मयूरका चिह्नहोता है चार दंतों करके युक्त शुक्लवर्ण के ऐरावतनाम हाथीपर आरूढ़ वज्र हाथमें लिये ऐसी प्रतिमा इन्द्रकी बनवावै प्रतिमा जिसप्रकार सुन्दर औ सुलक्षण होय वैसे बनवानी चहिये ॥

एकसौ सत्ताइसवां अध्याय ॥

नारदजी कहतेहैं कि हे सांब इसप्रकार प्रतिमा बनाय ईशान कोणमें चार तोरण पल्लव पुष्पमाला पताकाआदिसेअलंकृत अधिवासनमंडप बनावैकाष्ठकी प्रतिमाआयुष् औ धनदेती है मृत्तिकाकी प्रतिमासर्वलोकोंकाहितकरतीहै मणिमयीप्रतिमा क्षेम औ सुभिक्षकरनेहारीहै सुवर्णकी पुष्टिचांदीकी कीर्त्ति ताम्र की संतान औ पाषाणकी प्रतिमा भूमिदेतीहै शकुनकरकेउपहत प्रतिमा प्रधान पुरुषको मारतीहै इसलिये सर्वदेव मय श्रीसूर्यनारायणकी प्रतिमा उत्तम शकुन से बनावै ॥

सांब पूछते हैं कि हे नारदजी सूर्य्यनारायण सर्व देवमय क्योंकर हैं यह आप कृपाकर बर्णनकीजिये तब नारदजीकहने लगे कि हे सांब इसभांति सूर्य्यनारायण सर्वदेवमयहैं कि बुध औ भौम उनके नेत्रोंमें स्थितहैं ललाटमें रुद्र ब्रह्मा शिरमें कंठ में विष्णु नक्षत्र औ ग्रह दांतोंमें धर्म औ अधर्म ओष्ठों में सरस्वती जिह्वामें दिशा बिदिशा कर्णोंमें ब्रह्मा औ इन्द्र तालु में वारह आदित्यभ्रू मध्यमें सब ऋषि रोम कूपोंमें समुद्र पेटमें

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

यक्ष किन्नर गंधर्व पिशाच दानव राक्षस ये सब हृदय में नदी बाहुओं में नाग कक्षाओं में मेरुपर्वत पीठ में धर्मराज नाभि में पृथिवी कटिमें सृष्टि लिंगमें अश्विनीकुमार जानुओं में पर्वत ऊरुओं में सात पाताल अलकों में बन औ समुद्रों करके युक्त भूमंडल चरणों में औ कालाग्नि रुद्र सूर्यनारायण के दंतों में स्थित हैं इस प्रकार सूर्यनारायण सर्व देवमय हैं सूर्यनारायण से सब जगत् व्याप्त है जिस प्रकार वायुसे क्योंकि वायु भी सूर्यनारायण के अंगमेंही रहताहै हे सांब यह परम ज्ञान हमने तुमको कहा है अब जिस प्रकार ब्रह्माजीने पूर्वकाल में प्रतिमा स्थापन कहाहै वह हम कहते हैं॥

एकसौ अठाईसवां अध्याय॥

नारदजी कहतेहैं कि हेसांब प्रतिपदा द्वितीया चतुर्थीपंचमी दशमी त्रयोदशी पूर्णिमा ये तिथि सोम बुध गुरु औ शुक्रयेबार औ तीनों उत्तरा रेवती अश्विनी रोहिणी हस्त पुनर्वसु पुष्य श्रवण औ भरणी ये नक्षत्र सूर्य प्रतिष्ठाके लिये उत्तम हैं तुष केश पाषाण अस्थिअंगारआदि शोधनकर दशहाथ लंबाचौड़ाअति मनोहर मंडपबनाय उसमें चारहाथकी वेदीरचै नदी संगम से रेतालाय उसमें बिछावै औ मंडप को भलीभांति गोबरसेलीपकर पूर्वदिशामें चतुरस्र दक्षिण में अर्द्धचन्द्र पश्चिममें वर्तुल औ उत्तर में पद्माकार कुंड बनावै बड़ पीपल गूलर विल्व पलास शमी अथवा चंदन के पांच२ हाथके तोरण वनावै शुक्ल वस्त्रपुष्पमाला कुशा आदिसे प्रत्येक तोरणको भूषित कर अग्नि मीले इत्यादिमंत्रसे पूर्वदिशामेंतोरणखड़ाकरै। अग्निआयाहिइत्यादि मंत्रसे दक्षिण में इषे त्वोर्जेत्वा इत्यादिमंत्रसे पश्चिममें औ शन्नो देवी इत्यादि मंत्रसे मंडप के उत्तर की ओर तोरण स्थापन

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

करै स्वच्छजल से परिपूर्ण चंदन वस्त्र औ पुष्प मालाओं से भूषित औ सुवर्ण युक्त कलश आजिघ्र इत्यादि मंत्र से स्थापन करै सुंदर चित्रवर्ण के दुपट्टों से मंडप के स्तंभ वेष्टितकरै कलशों के ऊपर यव अथवा धानों से भरे मृत्तिका के शराव रक्खै ध्वजा दर्पण पताका चामर वितान आदिसे मंडपको अलंकृत कर शंख भेरी घंटा आदिके शब्द वेदध्वनि औ जय शब्दोंकरके बड़ा उत्सवकरै मंडपके मध्य भूषित वेदीके ऊपर कुशाबिछाय पुष्पों से ढकरकर प्रतिमा को रक्खै औ मंडप के आठों दिशाओं में क्रमसे पीत रक्त नील कृष्ण श्वेतकृष्ण हरी औ चित्रवर्ण की आठ पताका दिक्पालों की प्रीति के अर्थ लगावै पंचरंगों से वेदी को अलंकृत कर उसपर पूर्वाग्र औ उत्तराग्र कुशा बिछावै वहां उत्तम बिछौने औ दो तकियों करके युक्त एक शय्या भी स्थापनकरै औ भांति भांतिके भक्ष्य भोज्य मंडप में रक्खै एक उत्तम छत्र वहां स्थापनकरै औ विचित्र दीपमाला से मंडप को अलंकृत करै॥

एकसौ उनतीसवां अध्याय॥

नारद जी कहैं कि हे सांब अब हम सूर्यनारायण के स्नानका विधानकहैं वेदपाठी शौच आचार में निष्ठ शास्त्र जाननेहारा औद्विजी नारायण का परम भक्त ब्राह्मण अथवा भोजक स्नानकर वेदीसिानगृह में एक हाथ लंबाचौड़ा औ ऊंचा पीठ बिछाय हो वस्त्र पी अथवा रथ इनपर प्रतिमा को रख प्रासाद से स्नानेनश्रियं लाय उस पीठपर रक्खै रस्ते में वेदध्वनि औ भांधियुष्टा के बाजोंके शब्द होतेआवैं फिरसमुद्र गंगा यमुना सरअंजन लद्धभागा सिंधु पुष्कर आदि जो तीर्थ नदी सरोवर औ भोजकक्षरनेहैं उनका जल लाकर सूर्यनारा-

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

यण को स्नान करावै आठ ब्राह्मण औ आठ भोजक सुवर्ण के कलशों से स्नानकरावैं स्नानके जलमें रत्न सुवर्ण गंध सर्वबीज सर्वौषध ब्राह्मी सुवर्चला मोथा विष्णुक्रांता शतावरि दूर्बाशंखपुष्पी हलदी प्रियंगु इत्यादि सब ओषधी डालै औ कलशों के मुखपर बड़ पीपल आम्र औ शिरीषके कोमल पल्लव रक्खै इस भांति गायत्री मंत्रसे अभिमंत्रित सोलह कलशों से सूर्यनारायण को स्नान करावै सुवर्णके कलश न होंय तो चांदी तांबे अथवा मृत्तिकाके कलशों सेही स्नान करावै फिर पक्की ईंटों से बनीहुई बेदी के ऊपर कुशाबिछाय उसपर मूर्त्तिस्थापन कर अभिषेक करै औ अभिषेक के समय ये मंत्रपढ़ै(देवास्त्वामभिषिंचन्तु ब्रह्मविष्णुशिवादयः। व्योमगंगाम्बुपूर्णेनकलशेनसुरोत्तम १ मरुतश्चाभिषिंचन्तु भक्तिमन्तोदिवस्पते। मेघतोयाभिपूर्णेनद्वितीयकलशेनतु २ सारस्वतेनपूर्णेनकलशेनसुरोत्तम। विद्याधराभिषिंचन्तु तृतीयकलशेनतु ३ शक्राद्याश्चाभिषिंचन्तु लोकपालाःसुरोत्तम। सागरोदकपूर्णेनचतुर्थकलशेनतु४वारिणा परिपूर्णेन पद्मरेणुसुगंधिना। पंचमे[illegible]षिंचन्तु नागास्त्वां कलशेनतु ५ हिमवद्धेमकूटाद्या अभि[illegible]शहाएचलाः नैर्ऋतोदकपूर्णेन षष्ठेनकलशेनतु ६ सर्वतीर्थाम्बुपूर्णेदीरचेन्नरेणु सुगंधिना। सप्तमेनाभिषिंचन्तु ऋषयःसप्तखेचराः श्रीभांतिश्चाभिषिंचन्तु कलशेनाष्टमेनवै। अष्टमंगलयुक्तेन देवेंद्र पश्चिक्तुते[illegible] ८ यमंत्र पढ़वैदिकमंत्रभी पढ़ैसमुद्रं गच्छ। इममेग गूलर विश्वतिःइत्यादि मंत्र पढ़ सिनीवाली इस मंत्रसे वल्मीक्ण वनावै शुका औ शमी उदुंवर पीपल पलाश बड़ इन पांच वृक्षोंषित कर[illegible]ाय यज्ञायज्ञेति मंत्र करके मूर्त्ति पर चढ़ाय पंचगव्य ब। अग्नि[illegible]ायत्री से गोमूत्र गंध द्वारा इस मंत्रसे गोबर आप्यायस्व मंत्रसे प[illegible]मंत्र से दूध दधि क्राण्ण इस मंत्रसे दही तेजोसि इस [illegible]की ओर[illegible]त औ देवस्यत्वा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

इस मंत्रसे कुशोदक लेकर ताम्र के नये पात्र में पंचगव्यबनाय सूर्यनारायण को स्नान करावै या ओषधी इस मंत्रसे ओषधी स्नान कराय द्विपदा मंत्र से उबटना लगावैमानस्तोके इसमंत्र से शिरः स्नानकराय विष्णोरराट इस मंत्रसेगंध युक्तजलकरके औ जातवेदसे इस मंत्र से शुद्ध औ छने हुवे नदी के जलसे स्नान करावै औ (एह्येहिभगवन्भानोलोकानुग्रहकारकायज्ञ भागंप्रगृह्यत्वमर्कदेवनमोस्तुते)इस मंत्रसे सूर्यनारायण काआवाहनकर सुवर्णके पात्रसे इदंविष्णुर्विचक्रमे इस मंत्रकरसूर्यनारायणकोअर्घ्य देवै पहिले मृत्तिकाकेकलशसे पीछेताम्रकलशसे औ फिर सुवर्ण के कलशसे अभिषेक करै फिर संपूर्ण तीर्थोदक औ सर्वौषध करकेयुक्त शंख सूर्यनारायण के मस्तक परघुमाय उसके जलसे स्नान करावै पीछे पुष्प औ धूपदेकर क्रमसे जल दूध घृत शहत औ इक्षुरस करके स्नान करावै इसरीति से जो पुरुष स्नान करावै वह अग्निष्टोम गोमेध ज्योतिष्टोम वाजपेय राजसूय औ अश्वमेध यज्ञके फलको प्राप्तहोता है जोपुरुषकेवल स्नानके समय सूर्यनारायणकादर्शनही करै वहभी इनकाआधा फलपावै परंतु ऐसे स्थान में स्नानकरावै कि स्नान के जल को कोई लंघन न करै औ स्नान के दही दूधको कुत्ता काक आदि निंदित जीव भक्षण न करैं इसविधि स्नान कराय आचमस्वयह पद कहकर वर्द्धिनी नामक पात्र से प्रतिमा के आगे तीन जल धारादेवै फिर वेदोसि इस मंत्रकरके प्रतिमाको पोंछ बृहस्पते इस मंत्रसे दो वस्त्र पहिनावै युंजान इसमंत्र से गोरोचनऔरक्त चंदन च[illegible]येनश्रियं इसमंत्रस पुष्पमाला पहिनावै धूरसिइस मंत्रसे [illegible]वैदीर्घायुष्ट्वाय इसमंत्र करके आरतीकरै समिद्धां-जनं [illegible]त्रसे अंजन लगावै इस स्नानके विधान करनेके लिये जैसे [illegible]ंग औ भोजकचाहिये उनके हम लक्षण कहतेहैं जिसके

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सब अंग पूरेहोंय कोईन्यून अधिक न हो शास्त्र जानताहो सुंदर कुलीन श्रद्धावान् औ आर्यावर्त देशमें उत्पन्न हुवा हो गुरुभक्त जितेन्द्रियतत्त्ववेत्ता औसौर शास्त्रकाजानने वालाहो इनलक्षणों करके युक्त ब्राह्मण सूर्यनारायण का स्नान औ प्रतिष्ठा करावै औ हीनांग अधिकांग वामन अतिकृष्णअतिगौर चार्वाकदुर्मुख वाचाल शूद्रकाशिष्यशूद्रान्नभोजी अशुचि रोगी बालक वृद्धकुष्टी योगी काणा दुर्बुद्धि संकीर्ण जातिअंध खल्वाट विकलेंद्रियअविनीत दुरात्मा पंगु नासिका कर्ण आदिसे रहित नक्षत्रसूचीजोविका के अर्थ विद्या पढ़ाने वाला जो ब्राह्मण होय उससे कभी प्रतिष्ठा न करावै पहिलेपरीक्षा करके आचार्य बनानाचाहियेा॥

एकसौतीसवां अध्याय॥

नारदजीकहतेहैं कि हेसांब अब हम अधिवासनकहतेहैंापवित्र भूमिमें लेपन देकर पांचरंगों से बहुत सुंदर मंडलरचै औ पताका ध्वज तोरण छत्र पुष्पमाला आदिसे उसको भूषितकर मंडल में कुशा बिछाय सूर्यनारायणकी मूर्ति वहां स्थापनकर अर्घ्य पाद्य आचमन मधुपर्क धूप दीप आदिसे पूजनकर अव्यंग पहिनावै जिसभांति और देवताओं को पवित्रार्पण होताहैइसी प्रकार प्रतिवर्षश्रावणमास में नया अव्यंगवस्त्राय सूर्यनारायण को अर्पण करै उनका यही पवित्रकहै नया अव्यंग समर्पण करनेके समयब्राह्मण भोजनभी करावैप्रतिमाको सुगन्धद्रव्यों से लेपनकर पुष्पमाला चढ़ाय शंभवाय इसमंत्र से शय्या के ऊपर शयन कराय विश्वतश्चक्षुः इसमंत्र करके सकलीकरण करै जो न्यास अपने देहमें करै वही प्रतिमा में भी करैइसको सकलीकरण कहतेहैं। ओं हंखंखखोल्काय स्वाहा यह मूल मंत्र है इसमें अक्षर मंत्र मिलाने से साक्षात्सूर्यस्वरूप द्वादशाक्षर

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मंत्रहोताहै इसके वर्णों को क्रमसे मस्तक नासिका ललाट उदर कंठ हृदय दक्षिणभुज वामभुज औ कुक्षि इन नौ अंगों में न्यासकरै। ह्रांह्रींसःयह त्र्यक्षर मंत्रहै इसके मिलने से द्वादशाक्षर मंत्र होताहै क्रमसे इनबारह वर्णों के ये रंग हैं अग्निवर्ण शुभ्रवर्ण अंजनवर्ण तरुणादित्यवर्ण सुवर्णवर्ण श्वेतपद्मकेसमान वर्ण चमेली के पुष्पके तुल्य वर्णहिम अथवा कुंद पुष्पकेसदृश वर्ण अमृतवर्ण विद्युत्वर्ण पीतवर्ण औ क्षीरवर्ण इन वर्णोंकाइस प्रकार ध्यानकर सूर्यनारायण की प्रतिमा को शय्या के ऊपर शयन कराय हवन करै सूर्यकांतिमणिसे अथवा अरणी से अग्नि उत्पन्न कर कुंडों में स्थापन करै फिर पूर्व के कुंड में वह वृक्ष दक्षिण केमें माध्यंदिन उत्तर के में आश्वलायन पश्चिम में कठशाखाध्यायी औ मध्य के कुंड में भोजक हवनकरै शमी पलाश उदुम्बर औ अपामार्ग की समिधाओं से हवन करैं अग्निर्मूर्द्धा इसमंत्र से कुंडकाप्रोक्षण आदिकरै अग्निरुत इत्यादिमंत्र से अग्निका गर्भाधान संस्कारकर मूलमंत्र से एकसहस्र आहुति दे सीमंत औ पुंसवन करै प्राणायस्वाहा इसमंत्रसे जातकर्मनमःस्वाहा इसमंत्रसे नामकर्म ब्रह्मयज्ञं इसमंत्रसेनिष्क्रमण अन्नप्राशन मंत्र से अन्नप्राशनज्येष्ठमग्ने इसमंत्रसे चौड़व्रतमंत्र करके व्रतबंध आकृष्णेनइस मंत्रसेसमावर्तन औ पत्नीपंचइस मंत्रसे अग्निकाबिवाह नामकसंस्कारकरै औ प्रत्येक संस्कारमें महाव्याहृतियोंसेआहुतिदेवै औ हवनकेअंतमेंसब देवताओं को बलि देवै इस भांति पांच दिन तीन दिन अथवा एकही रात्रि प्रतिमा का अधिवासन करै देवागार के ईशानकोण में उत्तम स्थानकेबीच कुशा बिछायवहां शय्या रक्खैदहिने भाग मेंनिक्षुभा वाम भागमें राज्ञी औ पादों के समीप दंडनायक औ पिंगल को सम्भवेता मंत्र से स्थापन करै उस रात्रि में सूर्यनारायण

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

के समीप जागरण करै वंदी चारण आदि स्तुति पढ़ें गीत नृत्य आदि उत्सव होता रहै प्रभात होतेही प्रतिमा को बोधनकरै औ ब्राह्मण तथाभोजकों को हविष्यअन्न भोजन कराय दक्षिणादे प्रसन्न करै फिर मंदिर के गर्भ गृह में पिंडिका के ऊपर सात अश्वों करके युक्त सुवर्ण का रथ स्थापन कर सूर्यनारायण को अर्घ्यदे उत्तम मुहूर्त्त औ स्थिर लग्न में प्रतिमा स्थापन करै प्रतिमा का मुख नीचे अथवा ऊपर को न होजाय सीधा रहै सूर्यनारायण की प्रतिमा के दहिने औ बायें राज्ञो औ निक्षुभा की प्रतिमा स्थापन करै फिरमोदक पायस उलूपिका शष्कुली आदि से दश दिक्पालों को क्रम से इन मंत्रों करके वलि देवै इंद्रायदेवपतये वलिनेबज्रधारिणे। शतयज्ञाधिपेतस्मै पूर्वेइंद्राय वैनमः१ अग्नयेरक्तनेत्रायज्वालामालार्चितायचाशक्तिहस्तायतीव्रायनमोवैकृष्णवर्त्मने२ दंडहस्तायकृष्णाय महिषध्वजवाहिने। सूर्यपुत्रायदेवाय धर्मराजायवैनमः३ नैऋत्योखड्गहस्ताय नील लोहितकायच। सर्वरक्षोधिपायेहबिरूपायनमोनमः ४ वारुण्यां पाशहस्ताय झषारूढसितायच। निम्नगापतयेबीरवरुणायच वैनमः५ प्राणात्मकायधूम्राय शशगायानिलायच। ध्वजहस्ताय भीमाय नमो गंधवहायच६ गदाहस्तायसोमायशुष्मिणेनृगतायचागरुत्मतप्रभायाथ सोमराजायवैनमः७गणाधिपतयेदेवनीलकंठायशूलिनेविरूपाक्षायरुद्रायत्रैलोक्यपतयेनमः ८ सर्वनागाधिराजाय श्वेतवर्णायभोगिने । सहस्रशिरसेनित्यमनंताय नमोनमः९ चतुर्मुखायदेवायपद्मासनगतायच। कृष्णाजिननिषंगाय नमोलंबोदरायच १० इनमंत्रों से दशदिक्पालोंको वलि देकर सूर्यनारायण का पूजन करै पीछे ब्राह्मण औ भोजकोंको भोजन कराय दक्षिणा देवै दक्षिणादिये बिना यह सूर्यनारायण का यज्ञ सफल नहीं होता इस विधिसे जो प्रतिमा स्थापन

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

करी जाय वह देश की वृद्धि करनेवाली होती है औ उसमें सदा सूर्यनारायण का सांनिध्य रहता है चारों वर्णों में जो सूर्यनारायण का स्थापन करै वह संसार से मुक्ति पाता है जे पुरुष भक्ति से सूर्यनारायण का अधिवासन देखैं वे सात जन्म तक आरोग्य होते हैं जो तीनदिन उत्सव में रहैं औ गंध पुष्प आदि से सूर्यनारायण का पूजन करैं वे सूर्यलोक को जाते हैं प्रतिष्ठा को जो भक्ति से देखे वह गोलोक में निवास करै सूर्यनारायणकी प्रतिमा स्थापनकरने से दशअश्वमेध औ सौ वाजपेयका फल प्राप्तहोताहै। ध्रुवाद्यौश्चध्रुवाभूमिर्ध्रुवंवि-श्वमिदंजगत्। श्रेयसेयजमानस्य तथात्वंध्रुवतांव्रज। इसमंत्र से प्रतिमा स्थापन करै सूर्यनारायण के पूजनसे जो फलमिल-ता है वह सौ यज्ञ करने करके भी नहीं प्राप्त होता जो पुरुष जन्म भर पाप करता रहै औ अन्तमें सूर्यनारायणके आराधन में तत्पर होजाय वह सब पापोंसे छूट सूर्यलोकमें निवासकरता है मन्दिर की ईंट जब तक चूर्ण होंय तब तक मन्दिर बनाने वाला पुरुष स्वर्गसुख भोगता है औ प्राचीन मन्दिर का उद्धार करने से इससे भी अधिक फल प्राप्त होता है जो पुरुषउत्तम मन्दिर बनाय बिधिसे प्रतिमा स्थापनकरै वह संसारके सब सुख भोग सौ कल्प पर्य्यंत गोलोकमें निवास करै॥

एकसौइकतीसवां अध्याय॥

नारदजी कहते हैं कि हे सांब जो पुरुषदेवताओं के प्रासाद बनाते हैं उनको परलोक में तो उत्तम फल मिलताही है परन्तु इस लोक में भी उनकी कीर्त्ति सर्बत्र व्याप्त होजातीहै यहहमने सूर्यनारायण की प्रतिष्ठा का विधान कहा है अब हम सर्ब देव प्रतिष्ठा की साधारण विधि कहते हैं। प्रतिमाको पहिले स्नान

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कराय उत्तम वस्त्र पहिनाय गंध पुष्प आदि से पूजनकर उत्तम शय्या के ऊपर सुलादेवै औ उसरात्रि में नृत्य गीत आदि उ. त्सव से जागरणकरे दूसरे दिन पूजनकर मन्दिरकीप्रदक्षिणा कराय शुभ लग्नमें पिण्डिका के ऊपर प्रतिमा को स्थापन करै फिर देवताओंको वलिदेकर ब्राह्मण भोजनकरावै पीछेस्थापन करनेवाले आचार्य ज्योतिषी औ स्थपति अर्थात्कारीगर इनको भूषण वस्त्र देकर सन्तुष्टकरै इस विधिसे देवप्रतिष्ठा करनेवाला पुरुष दोनोंलोकोंमें सुखीहोताहै विष्णु के भागवत सूर्य के मग अर्थात् भोजक शिवजीके भस्म रुद्राक्ष धारनेवाले ब्राह्मण मा. तृकाओंके मातृ शासन जाननेहारे ब्रह्माके वैदिकब्राह्मण जिनके श्वेताम्बर वुद्धके रक्ताम्बर इत्यादि और भी जो जिस देवता के भक्त हों वे उसकी प्रतिष्ठा करावें। यह सामान्य प्रतिष्ठाविधान हमने कहाहै इसको जो विधिसे करै अथवा देखै वह सब मनो. वांछित फलपाय ब्रह्मलोकको जावै॥

सूर्यनारायण का भक्तिसे स्थापनकर उनके आगे पुराणकी कथाकहवावै औ भलीभांतिसे स्थापक अर्थात्आचार्य्यऔ पौ. राणिक का वस्त्र भूषण आदिसे पूजनकरै और देवताओंके मं. दिरों में भी पुराण बांचनेका बहुत फलहै पुराण कथा सुन सब देवता प्रसन्न होते हैं॥

एकसौवत्तीसवां अध्याय॥

नारदजी कहते हैं कि हे सांब हम अब ध्वजारोपणका वि. धान कहतेहैं जो ब्रह्माजीने कहाहै। पूर्वकालमें देवता औ असु. रों का घोर संग्राम हुआ उसमें देवताओं ने अपने २ रथों के ऊपर चिह्न कल्पनाकिये वेही ध्वज हैं लक्ष्म चिह्न ध्वज केतु इत्यादि ध्वजके नामहैं अब ध्वजका लक्षण कहतेहैं प्रासादका

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

जितना व्यासहोय उतना लंबा सीधा औ व्रणरहित ध्वजाका बांस चहिये अथवा चार आठ दश सोलह यद्वा बीस हाथ लंबा ध्वज दंड होय बीसहाथसे अधिक न होय पांच सात आदिविषम हस्तका न होय चार अंगुल उसकी मोटाईहोय बहुतमोटा अथवा बहुत पतला न होय औ दृढ़भीहोय टेढ़ाहोयतो पुत्रनाश व्रणयुक्त होय तो धननाश विषम हस्तहोय तो रोग प्राप्ति औ प्रमाण से अधिक लंबा ध्वजाका बांस होय तो सब प्रकार की हानि करै दो हाथके बांसकी संज्ञा जयहै चार हाथका बांसजयंत कहाताहै छःहाथका जैत्र आठ हाथका शत्रुहंता दशहाथका जयावह बारह हाथका नंद चौदह हाथका उपनंद सोलहहाथका इन्द्र अठारह हाथका उपेंद्र औ बीस हाथका बांसआनंदकहाता है ये दशभेद बांसके हैं ध्वज दंड में लटकती हुई पताका बनावै वह पताका दश प्रकार की होती है अंगुर पल्लव स्कन्ध शाखा पताका कदली केतु लक्ष्मी जय औ ध्वज ये उनकेनामहैं अब इनके लक्षण कहते हैं दो अंगुल की पताका अंगुरचार अंगुल की पल्लव छःअंगुल की स्कंध आठ अंगुलकी शाखा ग्यारह अंगुल की पताका चौदह अंगुल की कदली सोलह अंगुल की केतु अठारह अंगुल की लक्ष्मी बीस अंगुलकी जय औ चौबीस अंगुलकी पताका ध्वज कहातीहै देवागारके पहिले कलश तक मार्जन करै वह पताका अंगुरा कहातीहै दूसरे कलश तक पहुंचे वह पल्लव औ मन्दिरके तृतीयभाग पर्यंत मार्जनकरै वह स्कंध नामक पताका होतीहै गज मेष महिष कबंध वृषहरिण वृक औ नग ये आठ भूमिमें छोड़ेहुये ध्वजके स्थानहैं पूर्वआदि दिशाओं में ध्वजकी कल्पना करै शुक्ल वस्त्रकी चित्रवर्ण औमनोहर पताका बनावै औ ध्वजकेऊपर देवताके सूचनकरनेहारा चिहन सुवर्ण अथवा चांदीका बनावै विष्णुके ध्वजपर गरुड़शिव

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

जीके ध्वजपर वृष ब्रह्माजीके पद्म सूर्यके व्योम इंद्रकेहस्तीदुर्गाके सिंह महादेवीके गोधा रेवंतके अश्व वरुणके कच्छप वायुके हरिण अग्निके मेष औ गणपतिके ध्वजकेऊपर कक्षा का चिह्न बनावै जिस देव का जो बाहन होय वही ध्वजपर बनावै विष्णुके ध्वजका दंड सुवर्णका औ पताका पीतवर्णकीहोनीचाहिये शिवका ध्वज दंड चांदीका औ वृषके समीप श्वेतवर्ण की पताका ब्रह्माका ध्वजदंड तांबेका औ कमलके समीप पद्मवर्णा पताका सूर्यनारायण के सुवर्ण का ध्वजदंड औ व्योम के नीचे पंचरंगी पताका जिसमें किंकिणी लगीहोंय इंद्रकेसुवर्णकाध्वज दंड औ हस्तीकेसमीप अनेकवर्णकी पताका यमकेलोहकाध्वज दंड औ महिष के समीप कृष्णवर्ण की पताका नभोधिपतिके चांदीका ध्वजदंड औ हंस के समीप शुक्लवर्ण की पताका कुबेर के मणिमय ध्वज दंड औ मनुष्य पाद के समीप रक्त वर्ण की पताका बलदेवके चांदीका ध्वज दंड औ ताल वृक्षके नीचे श्वेत वर्ण पताका कामदेव के ध्वजमें त्रिलोह का दंड औ मकर के समीप रक्त वर्ण की पताका कार्तिकेय के त्रिलोहका ध्वज दंड औ मयूर के समीप चित्रवर्ण पताका गणपतिके ताम्रका ध्वज दंड औ हस्तिदंत तथा कक्षके समीप शुक्लवर्णकी पताका मातृकाओं के पीतल का ध्वज दंड औ अनेक वर्ण की बहुतसी पताका रेवंत के पीतलका ध्वज दंड औ अश्वके समीप रक्तवर्ण की पताका चामुंडाके लोहकाध्वजदंड औ मुंडमालाकेसमीप नीलवर्ण का ध्वज गौरी के ताम्रका ध्वजदंड औ इंद्रगोपकेसमान अति रक्तवर्ण पताका अग्निकेसुवर्णकादंड औ मेषकेसमीप अनेक वर्ण की पताका वायुके लोहका दंड औ हरिण के समीप कृष्णवर्णकी पताका औ भगवती के ध्वजका दंड सर्व धातुमय बनाय उसके ऊपर सिंहके समीप तीनरंग की पताका चढावै

...ity Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

इस रीतिसे पहिले ध्वज बनाकर उसका अधिवासनकरै लक्षण युक्त वेदीबनाय कलश स्थापनकर सर्वौषधि जलसे ध्वज को स्नानकराय वेदीके मध्यमें खड़ाकरसबउपचारोंसे उसकापूजन कर पुष्प मालापहिनाय दिक्पालोंको बलिदेकर एकरात्रि अधिवासन करै दूसरे दिन ब्राह्मण भोजन कराय शुभ मुहूर्त्त में स्वस्तिवाचन आदिमंगल कर्मकर ध्वजको मंदिरके ऊपरचढ़ावै उस समय अनेक प्रकारके बाजे बजैं औ ब्राह्मण वेदध्वनिकरैं इस प्रकार से जो ध्वज चढ़ावै उसकी संपत्ति नित्य बढ़ती है जिस मंदिरपर ध्वज न होय उस मंदिरमें असुर निवास करते हैं इसलिये ध्वजहीन मंदिर न रक्खै ध्वजके चढ़ाने के समय यह मंत्रपढ़ै। ओंएह्येहिभगवन्देव देवेशखगबाहन श्रीकरश्री निवासेशजैत्रजैत्रोपशोभित१ व्योमरूपमहारूप धर्मात्मंस्त्वंचतुर्गतेसान्निध्यंकुरुदंडेस्मिन्साक्षीवध्रुवतांव्रज २ कुरुवृद्धिंसदा कर्तुः प्रासादस्यार्कवल्लभ। ओंएह्येहिभगवन्ईश्वरविनिर्मित उपरिचर वायुमार्गानुसारिन् श्रीनिवास रिपुध्वंसक पक्षिनिलय सर्वदेवप्रियसर्वदाशांतिस्वस्त्ययनंकुरु सर्वविघ्नान्यपहर सान्निध्यंकुरुनमः। इसमंत्रसे ध्वजदंडको छिद्रमेंप्रवेशकरै औ पूर्व्वाभिमुखहोकर दंडके ऊपर पताका चढ़ावै चढ़ातेही वह पताकाजिस दिशाको लटकै उसी दिशाके स्वामिके लोकमेंध्वजारोपणकरने वाला पुरुष आनंदपूर्वक चिरकालपर्यंतनिवासकरै ध्वजारोपण करने से सब मनोरथ सिद्ध होते हैं औ अंतमें सूर्य्यलोककीप्राप्ति होती है॥

एकसौ तेंतीसवां अध्याय॥

सांबकहते हैं कि हे नारदजी आपके अनुग्रहसे सूर्यनारायण का मुझै प्रत्यक्ष दर्शन हुआ औ उत्तम रूप भी पाया परंतु एक

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

चिंता मुझै बहुत है कि इस मूर्त्तिका पूजन औ रक्षाकौनकरैगा यह आप मुझै बतावैं जिससे मेरी चिंतानिवृत होय यहसुनना. रदजीने कहा कि हे सांब ब्राह्मण तो कोई इसकामको स्वीकार न करैगा क्योंकि जोब्राह्मण देवधनसे अपना निर्बाह करतेहैं वे देवल कहातेहैं औ शूद्रकी भांति पंक्ति बाह्यहोतेहैं औ देवधन से कोई ब्राह्मीक्रिया नहीं होसकतीजो पुरुष देवधनऔ ब्राह्मण धनको लोभसे ग्रहण करतेहैं वे नरकमें पड़तेहैं औ वहां उनको गृध्रोंका उच्छिष्ट भोजन मिलताहै इसलिये कोई ब्राह्मणदेवता का पूजक नहीं बनना चाहता अबतुम सूर्य्यनारायणसेही पूछो कि जो उनका पूजन विधिसे कियाकरै अथवा उग्रसेनराजाके पुरोहितसे कहो जो कदाचित् इस कामको स्वीकार करें यह नारदजी का वाक्य सुन सांब उग्रसेनके पुरोहित गौर मुख के घरगये गौर मुखभी स्नान संध्याकर अपने घरमें स्वस्थ बैठेथे सांब ने प्रणामकर अपना अभिप्राय उनसे प्रकटकिया कि महाराज मैंने एक सूर्यनारायण का प्रासाद बनायाहै उसमेंपत्नी सहित सूर्यनारायण की प्रतिमा स्थापन करीहै औ अपने नाम से नगर बसायाहै अब मेरी यह प्रार्थनाहै कि आप इससबको ग्रहण करैं यह सांबका बचनसुन गौर मुखबोले कि हेसांबहम ब्राह्मण हैं औ आप राजा हो जो यह प्रतिग्रह हमआपसेग्रहण करैं तो हमारात्राह्मणत्व नष्टहोजायऔशूद्रके तुल्य देवलक बन जांय जन्मान्तर में राक्षस बनैं औ तुम को भी केवल पापही प्राप्तहोय देवलक जिस पंक्ति में बैठ भोजन करै वह पंक्ति अपवित्र होजातीहै औ कृछ्र चांद्रायण कियेबिना शुद्ध नहीं होती देवलक जिसके यज्ञोपवीत आदि संस्कार करै उस के पितर अधोगति को प्राप्त होते हैं और सब प्रतिग्रह तो ब्राह्मणग्रहण करते हैं परंतु देवप्रतिग्रह ब्राह्मणको कभी न लेनाचहिये सांब

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ने कहा कि महाराज कोई ब्राह्मण इसको स्वीकार न करैगा तो फिरमैं किसको यहदान देकर अपनी चिंता निवृतकरूं औ सूर्यनारायणका पूजन कौनकरै यह सुन गौर मुखनेकहा कि हे सांब यह दान तुम मगको दो वहीदेवपूजाका अधिकारी है तब सांबने पूछा कि महाराज मग कौन है कहां रहता है किसका पुत्रहै औ इसका क्या आचार है यह आप कृपाकर कथनकरैं तब गौरमुख कहनेलगे कि हे सांब मग सूर्यनारायणका पुत्रहै एक समय निक्षुभा को शापभया तब ऋजिह्व नामऋषि की कन्याहो निक्षुभाने जन्मलिया वहअपने घरमेंपिताकीआज्ञा से अग्नि कीसेवा किया करती एकदिन उसको सूर्यनारायणने देखा उसका उतमरूप औ यौवन देख सूर्यनारायण कामवश होगये औ बिचारकर अग्निमें प्रवेशकिया वह कन्या अग्निकी प्रदक्षिणा करतीथी उससमय अग्निसे प्रकटहो सूर्यनारायणने उस कन्या का हाथपकड़लिया औ क्रोधकर कहाकितैंनेहमको उल्लंघनकिया यह वेदकीविधिनहींहै अबहमतेरेमें पुत्र उत्पन्न करैंगे इतनाकह उसमें जलगंडनामक पुत्र उत्पन्नकियामगअग्निजातिके द्विजातिसोमजातिके औ भोजक आदित्यजातिकेहैं मगोंका मिहिर गोत्र औ ब्रह्मव्रतहै उसमेंपुत्र उत्पन्नकर सूर्यनारायण अंतर्द्धान भये यहबातऋजिह्व मुनिनेजानी तबअपनी कन्याको शापदिया कि तैंने अपनी चंचलतासे पुत्र उत्पन्नकिया इसलिये यह अपूज्यहोगा यह पिताका शापसुन बहुतव्याकुल भई औ अग्निरूप सूर्यनारायणका स्मरणकिया स्मरणकरतेही सूर्यनारायण प्रत्यक्षभये तबउनसे कहाकि महाराज इसआपके पुत्रको मेरेपिताने शापदेदियाहै कि यह अपूज्यहोगा अबआप ऐसा अनुग्रहकरैं कि यह पूज्यहोय तब गंभीरवाणीसेसूर्यभगवान् बोले कि हेप्रिये तुम्हारापिताबडातपस्वीहै इसलिये उनका

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. Digitized by S3 Foundation USA

शाप अन्यथा नहीं होसकता परंतु तुम्हारेपुत्रके बंशमेंवेदपढ़ैंगे औ हमारे परम भक्तहोंगे सदा हमारा औ तुम्हारा पूजनकरैंगे मग इनकी संज्ञाहोगी येसब महात्मा ब्रह्मवादी वेदकेतत्वको जाननेवाले औहमारे ध्यानमेंपरायणहोंगेदाढ़ीऔ अव्यंगसदा धारणकरैंगे जो मगबिधिसे हीनमंत्रवर्जित औ श्रद्धाविनाभीहमारा पूजनकरैंगे वेभी हमारेलोकमेंनिवासकरैंगे ये हमारेवंशके मग महात्मा औ वेदवेदांगोंके पारगामी होंगे इसप्रकार अपनी प्रियाकोआश्वासनकर सूर्यभगवान्अन्तर्द्धानभये औनिक्षुभाभी परम हर्षको प्राप्तभई हेसांब इसप्रकार येमगसूर्यनारायण से निक्षुभामें उत्पन्नभयेहैंवेहीइसप्रतिग्रहकोग्रहणकरसूर्यनारायण का पुजनकरैंगे यहगौरमुखका वाक्य सुनसांबनेपूछाकि महाराज वे कहांरहतेहैं आपमुझे बतावें तोमैं अभीउनकोलेंआऊंतब गौरमुखनेकहाकि यहतो हमकोभी ज्ञाननहीं कि वे किसद्वीपमें बसतेहैं यहबात सूर्यनारायणही जानतेहैं इसलिये तुम उनके शरणमें प्राप्तहो यहगौरमुखका वचनसुन सूर्यनारायणकीप्रतिमासे सांबने प्रार्थनाकरी कि महाराज आपका पुजनकौनकरेगा यह आपकृपाकरकहैं तबप्रतिमाबोली किहेसांब जंबूद्वीपमें तो कोई हमारे पूजनका अधिकारीहैनहीं शाकद्वीपसे हमारे पूजन करनेकेअर्थ मगों कोलाओ जंबूद्वीपकेअनंतर शाकद्वीपहै उसमें भी चारवर्णबसतेहैं मगमगसमानस औमंदगइनमें मगब्राह्मणों के तुल्य मगसक्षत्रियोंके सदृश मानस वैश्योंके समान औमंदग शूद्र सरीखेहैं इनमें किसी प्रकारका संकरनहींहै सबसुखपूर्वक अलग २ बसतेहैं वे विश्वकर्माने हमारे तेजसे रचेहैं उनको सरहस्यवेद हमने पढ़ायेहैं औ वेदोक्तविधानसे वे हमाराहीआराधन करतेहैं सदा अव्यंग धारेरहते औ सिद्ध गंधर्व आदिकभी उस द्वीपमें आयउनके साथकीड़ाकरतेहैं जंबूद्वीपमेंहम विष्णुरूप से

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar. Collection. Digitized by eGangotri Foundation USA

पूजेजाते हैं शाल्मलिद्वीपमें शक्ररूपसे क्रौंचद्वीपमें भगरूपसेप्लक्षद्वीपमेंभानुरूपसे शाकद्वीपमेंदिवाकर रूपसेपुष्करद्वीपमेंब्रह्मा के रूपसे औ कुशद्वीपमें महेश्वर रूपसे हमारा पूजन होताहै हे सांब अबतुम गरुड़ परचढ़ शाकद्वीपमें जाओ औ हमारेपूजन के लिये शीघ्रमगोंकोलेआओयहसूर्यनारायणकी आज्ञापायद्वारका में जाय सांबने संपूर्ण वृत्तान्त अपने पिता श्रीकृष्णचंद्रसेकहा औ उनकी आज्ञासे गरुड़केऊपरचढ़ शीघ्रही शाकद्वीप में जाय पहुंचा वहांदेखाकि बड़ेतेजस्वी महात्मा मग सूर्यनारायण के आराधनमें तत्परहैं सांबने उनको प्रणामकर प्रदक्षिणाकरीऔ कुशल प्रश्नकेअनंतर उनसेकहा किआप सबधन्यहैं जो निरंतर सूर्यनारायण की सेवामेंआसक्त हैंश्रीकृष्णभगवान् कामैंपुत्रहूं सांब मेरानाम है औ मैंनेचंद्रभागा नदीके तटपर सूर्यनारायण कीप्रतिमास्थापन करी है औ सूर्यनारायण की आज्ञासेहीउनके पूजन के अर्थ आपको जंबूद्वीप में लेजाने के लिये यहांआयाहूं मेरी यह प्रार्थना है कि आप कृपाकर जंबूद्वीप में चलैं यह सांब का बचन सुन मगोंने कहाकि हे सांब यह बातहमको सूर्यनारायणने पहिलेहीकहदीहै यहांमगोंके अठारह कुलहैं वे तुम्हारे साथ जांयगे यह सुन सांब बहुतप्रसन्नभया औ उन अठारह कुलोंके कुमारों को गरुड़ पर बैठाय वहां से चला औ मित्रबन में पहुंचा सूर्यनारायण भी मगोंको देख बहुत प्रसन्न भये औ सांब से कहा कि अब ये हमारा पूजन किया करैंगे तुम कुछ चिंता मत करना॥

एकसौचौतीसवां अध्याय॥

सुमंतुमुनि कहते हैं कि हे राजाइसप्रकार शाकद्वीपसे भोजकों को लाय धन धान्य से पूर्णवह सांबपुर उन अठारहकुलों

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

को देदिया औ वे सबभी सूर्यनारायण की शुश्रूषा में प्रवृत्तभये सांब भी सूर्यनारायण को औ मगों को प्रणामकर अति हर्षित हो द्वारकामें आया औ भोज वंशियों से मगों के लिये कन्याओं की याचना करी भोज वंशियों ने अपनी २ कन्या अलंकृत कर सांबको दीं सांबने वे सबकन्या सूर्यनारायणकेमंदिर में भेजदीं औ आपभी वहांजायसूर्यनारायणसे पूछाकि मगोंकाक्याज्ञान है यह आप मुझे बतावैं तब सूर्यनारायण ने कहा कि हेसांब नारदमुनि से पूछो वे कहैंगे सूर्यनारायण की आज्ञा पायनारदजीके पास जाय सांबने सबवृत्तान्त कहा नारद जी बोले कि हे सांब हमतो मगों का ज्ञान नहीं जानते परन्तु व्यासजीसे तुम पूछो वे तुमसे सब ज्ञान कह देंगे यह सुन सांब वेदव्यास जी के आश्रम में गया औ प्रणाम कर उनसे प्रार्थना करी कि महाराज शाकद्वीप से अठारह मगों के कुमार मैं लाया हूं औ वे सब सूर्यनारायण का अर्चन करते हैं परंतु मुझै बहुत संशय है कि ये सूर्य भगवान् के पूजक क्यों भयेमग और भोजक में क्या भेदहै इनका ज्ञान क्या है मौनव्रत इनके लिये क्यों है ये वरचार्च क्यों कहातेहैं अव्यंग क्या वस्तु है जिसको मगधारते हैं वेदकैसे पढ़ते हैं यज्ञ किसविधि करते हैं पंचबेला इनकी कौनहैं यहसब आप वर्णनकरैंजिस से मेरासंदेह निवृत्त होय यह सांब का बचन सुन वेदव्यास जी कहनेलगे कि हे सांब यहबातहै तो दुर्ज्ञेयपरंतु सूर्यनारायण के अनुग्रहसेहमारे स्मरण में आगई इसलिये हम वर्णन करतेहैं ये सब ज्ञानीहोके कर्म योगमें प्रवृत्त हो रहेहैं विपर्यस्तवेदसे सूर्यनारायणकोगाते हैं इसलिये इनकी संज्ञा मगहै ब्रह्माजी पवन औ बड़े २तपस्वी ऋषि कूर्च अर्थात् दाढ़ी रखते हैं इसलिये मगभी सदाकूर्च धारण करतेहैं सब मुनि मौनसे भोजन करते हैं औ ये मग भी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शाकद्वीप के मुनिहैं इसलिये मौनसे येभी भोजन करते हैं वर्च नाम सूर्यकाहै उनका अर्चनकरनेसे ये वर्चार्चकहाये भोजकन्याओं में उत्पन्न होनेसे भोजक कहावैंगे ब्राह्मणों के लिये ऋग्वेद यजुर्वेद सामवेद औ अथर्वणवेदब्रह्माजीनेकहेयेहीचारोंवेद विपरीत कर वद विश्ववद वीवद औ आंगिरस इननामों से मगों के लिये कहे हैं इनके पढ़ने से मगवेद वेत्ता कहाये शेष नामक महानाग सबलोकोंके सुखके अर्थ सूर्य रथमेंबैठ किरणोंके साथ वर्षता है उसका निर्मोक अर्थात् कंचुक सूर्यनारायण धारते हैं उसकी संज्ञा अमाहक औ अव्यंगहैं यज्ञोपवीतके समयब्राह्मण यज्ञोपवीत धारते हैं उससमय मगोंको अमाहक धारना चहिये ब्राह्मणों के लिये जिस प्रकार गायत्री है उसी विधि मगों के लिये महा व्याहृति पूर्वक आदित्य मंत्र है अमाहक के विना कभी मग भोजन न करैं औ मृतक शरीर तथा रजस्वलास्त्रीको स्पर्श भी न करैं जिसप्रकार वेदोक्तविधिसे सौत्रामणीआदियज्ञों में ब्राह्मणसुरापान करते हैं इसीभांति मगभी मंत्रोंसे संस्कार कियेहुये मद्यको हविमानकर पानकरते हैं औ ब्राह्मणोंकेतुल्य यज्ञ अग्निहोत्र आदिकर्म करतेहैं औ इनकोभी सबविधिनिषेध ब्राह्मणोंके तुल्यहीहैं दो बेर दंडनायकको औ तीनोंसंध्याओं में सूर्यनारायण को धूपदेना चहिये ये पांच धूपके कालहैं ॥

एकसौपैंतीसवां अध्याय ॥

सांबकहते हैं कि हे वेदव्यासजी मैंने अपने समीप बैठाय उन भोजक कुमारोंको कहा कि तुम अपना वृत्तकहो तब उनमें से एक बुद्धिमान् कुमार कहनेलगा कि हे सांब ये अठारहकुमार तुम लायेहो इनमें दश तो मग हैं बाकी आठ मंदग अर्थात् शूद्रहैं यहसुन मैंने मगोंके दशकुमारोंको तो दशभोजकन्यादीं

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

औ मन्दगोंको आठकन्या शकोंकी व्याहीं औ उनको उसनमरु में सुखपूर्वक बसाया उनमें मगोंकेपुत्र जो भोजकन्याओंमेंउत्पन्नभयेवे भोजककहाये औ ब्राह्मणों के समानभये औ मंदगों के पुत्र जो शक कन्याओं में जन्मे मंदगहीरहे परंतु सूर्यनारायणके परिचारक येभीभये वे सबमग अव्यंगधारतेहैं इतनाकहसांबने पूछा कि हे व्यासजी यह अव्यंग क्या पदार्थहै क्योंकरबनताहै औ इसके धारणसे क्याफलहै यह आप कृपाकरवर्णनकरैं सुमंतु मुनिकहतेहैं कि हे राजा यहसांबका वचनसुन व्यासजीबोले कि हेसांब हम अव्यंगकालक्षण कहतेहैं तुम प्रीतिसे सुनो॥

एकसौछत्तीसवां अध्याय॥

व्यासजी कहते हैं कि हेसांब देवता ऋषि नागगंधर्वअप्सरा यक्ष औ राक्षस ऋतु क्रमसे सूर्यनारायणके रथकेसाथ रहते हैं वासुकिनाम नागसे वहरथबँधाहै एकसमय वासुकिकाकंचुक उतरकर गिरा उसको अरुणने उठाकर सूर्यनारायण को निवेदन किया सूर्यनारायणने भी अतिसुंदर वासुकिका कंचुक देख सुवर्ण औ रत्नोंसे शोभित कर अपने मध्यभाग में धारण किया औअपने भक्तोंको भी धारण करनेकी आज्ञादी उसदिनसे सूर्य पूजक उसका अनुकरण अव्यंग बनाय धारनेलगे उसकेधारण से भोजक पवित्र होजाताहै औ उसपर सूर्यनारायणकाअनुग्रह भी होताहै जो भोजक इसको न धारे वह अशुचिहोताहैऔ सूर्यनारायणके पूजनका अधिकारीभी नहींहोता जो अव्यंगधारे बिना सूर्यनारायणका पूजनकरै वह नरकको जाताहैऔ संतति तथा आरोग्यसेभी हीनरहताहै इसलिये अव्यंगधारेबिनाकभी सूर्यनारायणका पूजन न करै वह अव्यंगसर्पके निर्मोककी भांति बीचसे पोलारक्खै औ कर्पास के सूत्र का बनावै एकसोबत्तीस

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अंगुल का उत्तम एकसौबीसका मध्यम औ एकसौआठअंगुलका निकृष्टहोताहै इससेछोटानहीं बनानाचाहियेयज्ञोपवीतकीभांति अष्टम वर्षमें अभ्यंग धारण होताहै भोजकों के लिये यह मुख्य संस्कार है इसके धारणसे सब क्रियाओं का अधिकारी होजाता है अभ्यंग अमाहक पठितांगओ सार येसब नाम अभ्यंगकेहैंयह अभ्यंगसर्व देवमय सर्ववेदमय औ सर्वलोकमय है इसके मूल में ब्रह्मा मध्य में विष्णु औ अग्रमें शिव निवास करतेहैं इसी भांति ऋग्वेद यजुर्वेद सामवेद तो मूलमध्यअग्रमें रहते हैं औ अथर्वण ग्रंथि में निवास करता है पृथिवी जल तेज वायु आकाश औभूलोक आदि सप्तलोक अभ्यंगमें निवास करते हैं सूर्यभक्तभोजक सर्वकाल में अभ्यंगको धारै केवल मैथुन के समय औ सूतक में अभ्यंग धारण का निषेध है॥

एकसौ सैंतीसवांअध्याय॥

सुमंतुमुनि कहते हैं कि हे राजा इस प्रकार व्यासजी से भोजकज्ञान सुन उनको प्रणामकर नारदजी के पास सांब आया उनको सब वृत्तांत सुनाय यह पूछता भया कि हेनारद जी सूर्य्यनारायणको स्नान अर्घ्य आचमनऔ धूप भोजकक्यों-कर समर्पण करैं यह आप कृपाकर वर्णन कीजिये यह सांब का वचन सुन नारदजी बोले कि हे सांब जो तुमने पूछाइसको हम कहतेहैं तुम प्रीतिसे सुनो प्रथम शरीरमें तीनबार मृत्तिका लगाय नदीआदिमें स्नानकर शुद्धवस्त्र गायत्री मंत्रकरके पहिन पूर्वाभि मुख अथवा उत्तराभि मुख बैठकर आचमनकरै निर्मल जलसे तीन आचमनकर तीनबेर मार्जनऔ अभ्युक्षण करै आचमन किये विना जो क्रिया करै वह निष्फल होती है औ बिना आचमन पुरुष शुचिनहीं होता वेदमें कहाहैकिदेवता

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

औपितरशुचिकोही चाहते हैं आचमनकर देवालयमें जायआसन परबैठ प्राणायाम कर अनेक प्रकारके पुष्पोंसे सूर्यनारायणका पूजनकरैऔगूगलका धूपदेकर। ओं व्रतेन नित्यंव्रतिनोवर्द्धयन्तु देवामनुष्याःपितरश्चसर्वेतस्यादित्यस्यशरणमहंप्रपद्येयस्तेजसाप्रथममाविभाति।इसमंत्रसे प्रतिमाके मस्तकपर पुष्पांजलि देवै धूपकीपांच बेला हैं प्रभात जिस समय तारे देख पड़तेहोंय उससमय दंडनायककोधूपदेवैं प्रदोष के समयराज्ञीको औ तीनोंसंध्याओंमेंसूर्यनारायणकोधूपदेनाचाहिये अर्द्धोदितआकाश के मध्यमें स्थित औ अर्द्धास्त जिस समय सूर्यमंडल होय वेही समय पूजाके हैं पूर्वाह्ण में मिहिरको मध्याह्नमें ज्वलनको औ मध्याह्नके अनंतर वरुणको अर्घ्य देवै रक्तचंदन पद्म करवीर कुंकुम आदि जलमें मिलाय ताम्रके पात्र से सूर्यनारायण को अर्घ्य देवै अर्घ्य पात्र हाथ में उठाय दोनों जानुपर बैठ पहिले यह मँत्रपढ़ै (एहिसूर्यसहस्त्रांशो तेजोराशेजगत्पते। अनुकंपांहिमेकृत्वा अर्घ्यंगृहणदिवाकर) पीछे अर्घ्यदेवै अर्घ्यदेकर आदित्यहृदय का पाठकर यहमंत्र जपै। ओंनमोभगवते आदित्याय वरिष्ठाय वरेण्याय ब्रह्मणे लोककर्त्रेईशानाय पुराणायपुराण पुरुषाय सामाय ऋग्यजुरथर्वाय ओं भूः ओंभुवः ओस्वः ओंमहः ओंजनः ओंतपः ओंसत्यं ब्राह्मणे आदित्यायनमः। इस प्रकार अर्घ्यदान कर तीनों कालोंमें इन मंत्रों से धूपदेवै। ओं त्वमेकोरुद्राणां बसूनांचपुरातनो देवानांगीर्भिरभिष्टुतःशाश्वतो दिबि। इसमंत्रसे पूर्व्वाह्नमें।ओंनमोभगवतेज्वालामालाकुलायतद्विष्णोःपरमंपदं सदापश्यन्तिसूरयः। दिवीवचक्षुराततम्। इस मंत्रसे मध्याह्नमें। ओंनमोवरुणायआकृष्णेनरजसावर्तमानोनिबेशयन्नमृतंमर्त्यंच। हिरण्मयेनसवितारथेनदेवो यातिभुवनानिपश्यन्। इस मंत्रसे सायंकाल के समय धूपदेवै। हिरण्यगर्भ

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

गृहमें जाय प्रतिमाको ओंमिहिरायनमः इसमंत्रकरके धूपदेकर निक्षुभायैनमः राज्ञैनमः दंडनायकायनमः पिंगलायनमःराज्ञाय नमः श्रौषायनमः कल्माषायनमः गरुत्मतेनमः दिंडिनेनमः रेवंतायनमः ईश्वरायनमः व्योमायनमः विश्वेभ्योदेवेभ्योनमः रुद्रेभ्योनमः पितृभ्योनमः ऋषिभ्योनमः साध्येभ्योनमः ओंब्रह्मणेडपतयेआदित्याय पुरुषस्वरूपायनमोनमः ओंअनेकांताय अंतेरूपायनमः। वासुकितक्षककर्कोटकशंखकुलिकपद्मेभ्योनागराजेभ्योनमः। तल सुतल पाताल रसातल विशालादिभ्योनमःदैत्यदानव पिशाचेभ्योनमः मातृभ्योनमः ग्रहेभ्योनमः मुंडकायनमः माठरायनमः विनायकायनमः इन मंत्रों से सब देवताओं को धूपदेकर सूर्यनारायणकी प्रार्थनाकरै कि (अर्चितस्त्वंयथाशक्त्या मयाभक्त्याविभावसो। एहिकामुष्मिकींनाथ कार्यसिद्धिंददस्वमे। तीनकालस्नानकर जो इस विधि से पूजन करै औ धूपदेवै वह अश्वमेधके फलको प्राप्तहोय औ धन पुत्र आरोग्यपाय अंतमें सूर्यलोक को जाय विधिपूर्वक करनेसेही सर्वकार्य सिद्धिहोतेहैं इसलिये बिधिका उल्लंघन न करै उत्तम पुष्प न मिलैं तो पत्रोंसेही पूजनकरै धूपही देवै भक्तिसे जल मात्रही सूर्यनारायण के अर्पणकरै यह भी न होसके तो प्रणामही करै प्रणाम करनेमें भी असमर्थ होय तो मानसी पूजाकरै यहबिधि द्रव्यके अभावमें कहीहै द्रव्य होय तो सब उपचारों से पूजन करना चाहिये पीछे जो मंत्र कहेहैं उनके उच्चारण मात्र सेही धूपदानका फलहोताहैमुखकोवस्त्रसे बांध सूर्यनारायणका अर्चन करै जो पूजनके समय प्रतिमाको श्वास बायुलगजाय तो अनिष्ट होताहै इसलिये भलीभांत्ति मुखबांध पूजनकरै जो सूर्यनारायण कापूजन भक्तिसेदेखैं वेभी अश्वमेधकाफलपाय सूर्यलोकको जाते हैं औ जो धूपदानके समय दर्शनकरैं वे उत्तमगति पातेहैं॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

एकसौ अड़तीसवां अध्याय॥

सुमंतुमुनि कहते हैं कि हे राजाशतानीक एकदिनव्यासजी श्रीकृष्ण भगवान्के दर्शनके लिये द्वारकामें आये श्रीकृष्णचन्द्र नेभी अपने हाथसे उनको पाद्य अर्घ्य आचमन आदिदे आसन परबैठाय प्रणाम किया औ कुशल प्रश्नके अनन्तर कहाकि हे व्यासजी शाकद्वीप में से सांब जिन भोजकोंकोलायाहै वे बहुत उत्तम हैं सदा सूर्यनारायण के आराधन में प्रवृत्त रहते हैं औ सदाचार हैं उनको देख हमको भी परम हर्ष हुआहै॥

सूर्यनारायणके अनुग्रह बिना मोक्ष नहीं मिलताऔ भोजकों के आराधन बिना सूर्यनारायणका अनुग्रह नहींहोता यहहमारे मनका निश्चयहै यह श्रीकृष्णभगवान्का वचनसुन वेदव्यास जी कहने लगे कि हे भगवन् आप जैसा कहतेहैं वैसाही है ये भोजक धन्यहैं जो अनन्य भक्त सूर्यनारायण के हैं ये सबकर्म निष्ठ औ ज्ञानीहैं सदा पुष्पफल अन्न ओषधिआदिसूर्यनारायण के अर्पण करते हैं औ उनकी प्रीतिकेलियेघृतका हवनकरते हैं ये सब सूर्यनारायण की तैजसीकलामें लीनहींगे सूर्यनारायण की प्रथमकला अग्नि में स्थितहै जिससे सर्व कर्मों का साधन होताहै दूसरी प्रकाशिका कलाआकाशमें स्थित है औ तीसरी कला सूर्यमण्डल में है यह मण्डल वेदत्रय स्वरूप है इसमंडल के मध्यमेंसद सदात्मक वहपरमात्मा स्थितहै वह क्षरऔअक्षर तथा सूक्ष्म औ स्थूल है निष्कल औ सकल ये दो उसके भेदहैं तत्वों करके सहित औ सब भूतोंमें स्थित वह परमात्मासकल कहाता है औ तत्वहीन होय तो निष्कलतृण गुल्मलता वृक्ष सिंह वृक हाथी पक्षी देवता सिद्ध मनुष्य जलजंतु आदिसबमें वह व्याप्त होरहाहै। जबवह दूसरीकला में स्थित होताहै तो

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वृष्टि आदि करता है औ कालात्मा कहाताहैतीसरीतैजसकला में स्थितहोकर अपने भक्तोंको मोक्षदेताहै जिस मोक्षपदमेंप्राप्त होनेबाले कभी नहीं शोचते ॥

ओंकारमें वह परमात्मा स्थितहै ओंकारकीसाढ़े तीनमात्राहैं उनमें अर्द्धमात्रा रूपमकार का जो ध्यानकरते हैं उनको सदसदात्मक ज्ञान होताहै पचीस तत्त्वोंमें स्थित सूर्यनारायण का रूप मकार है मकार के ध्यानकरनेसे ये मग कहाते हैं औ धूप माल्यआदिसे सूर्यनारायणका पूजनकर भांतिभांति के पदार्थ उनको भोजन कराते हैं इससे इनकी भोजक संज्ञाहै ॥

एकसौ उनतालीसवां अध्याय ॥

श्रीकृष्ण भगवान कहतेहैं कि हे व्यासजी भोजकों की सब ज्ञानोपलब्धि आप वर्णन करैं हमको श्रवणकरनेमें बड़ाकौतुक है यह भगवान्का वचनसुन व्यासजी कहनेलगे किहे श्रीकृष्ण जी यह शरीररूप एक मंदिरहै जिसमें अस्थियोंकी थूणीलगीहैं चर्म औ स्नायुओंसे यह बंधाहै रुधिरऔ मांस से लिपा है मूत्र विष्ठाआदि दुर्गंध पदार्थोंसे परिपूर्णहै जरा शोक औ रोग इस में निवास करतेहैं इस मंदिरमें बुद्धिमान् पुरुष कभी आसक्त नहीं होते विरक्त पुरुषों के ये चिह्न हैं कि वृक्षोंके मूलमें एकाकी रहना उत्तम वस्त्र नहीं पहिना पत्र कपाल आदिमें भोजन करना औ सब जीवों को समदृष्टि से देखना तिलोंमें तैल गौओं में घृत औ काष्ठमें अग्नि जिस प्रकार स्थित है इसी भांति परमेश्वर भी गुप्तरूपसे सब पदार्थों में स्थित है पहिले चंचल चित्त को बशमें करके बुद्धि औ ईंद्रियोंको ऐसा रोकै जिसभांति पिंजरेमें पक्षियों को रोकते हैं इंद्रिय निरोध से इस शरीर की ऐसी तृप्ति होतीहै जैसी अमृतधारा से होय प्राणायामसे दोष

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

धारणासे पाप प्रत्याहार से संसर्ग औ ध्यान करके अनीश्वर गुण निवृत्त होतेहैं अग्निमें धौंकनेसे जिस प्रकार धातुओं के दोष दग्ध होजाते हैं इसीप्रकार शरीरकेदोष प्राणायामसेदग्ध होतेहैं पहिले चित्त शुद्धिकेलिये यत्न करना चाहिये चित्तशुद्धि होनेसे शुभाशुभ कर्मका ज्ञान होता है तव शुभाशुभ कर्मो से छुट निर्द्वंद्व निर्ममनिष्परि ग्रह औ निरहंकारहोमुक्तिकोप्राप्त होता है पूर्वाह्ण में रक्त वर्ण ऋग्वेद स्वरूप सूर्यनारायण का राजस रूप होताहै मध्याह्न में यजुर्वेदस्वरूप शुक्लवर्ण सात्वि करूप औ सायंकाल में कृष्णवर्ण तामस सामवेद स्वरूप सूर्यनारायणका रूप होताहै इन तीनों से भिन्न ज्योतिःस्वरूप सूक्ष्म औ निरंजन चौथा रूप है जिसको वेद वेत्ता प्रति पादन करते हैं पद्मासनसे वैठ सुषुम्णा में चित्तको स्थिरकर प्रणव से पूरक कुंभकऔरेचक ये तीन प्राणायामकर पादांगुष्ठकेअग्र से लेकर मस्तक पर्यंत ध्यानकरै नाभि में अग्नि का हृदय में चंद्रका औ मस्तकमें अग्निशिखाका ध्यान कर इनसबसे ऊपर सूर्यमण्डलका ध्यान करै यह स्थान चतुर्थ है औ मोक्षार्थीपुरुषों को अवश्य ज़ानना चाहिये ऋषिलोक सूर्यनारायण के इसी तुरीयस्थानमें मन को लीनकर मुक्त भये हैं औ मग भी इसी स्थानका ध्यानकर मुक्ति भागी होते हैं इतनाकह व्यासजी बोले कि हे श्रीकृष्णचन्द्र ज्ञान करके युक्त यह मगों का चरित हमने आपको श्रवण कराया इस को जो जाने वह उत्तम गति पाता है यहज्ञान श्रद्धावान् पुरुषको देना चाहिये नास्तिकइस का अधिकारी नहीं है॥

सुमंतु मुनि कहतेहैं कि हेराजा श्रीकृष्णचन्द्र को यहभोजक ज्ञान सुनाय श्रीवेदव्यास जी अपने आश्रमकोगये जो बदरीके समीप गंगाकेतटपर है औ त्रैलोक्यमें प्रसिद्ध है॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

एकसौ चालीसवां अध्याय ॥

राजा शतानीक पूछते हैं कि हे सुमंतुमुनि उदय होते हुये सूर्यनारायण का क्यों कर उपस्थान करै यह आप कृपा कर वर्णन करैं यहराजा का प्रश्न सुन सुमंतुमुनि बोले कि हे राजा यही बात भारत युद्धमें कुरुक्षेत्र के बीच अर्जुन ने श्रीकृष्ण चंद्र से पुछीथी वह हम वर्णन करते हैं बड़े विनय से अर्जुन ने श्री कृष्णचंद्र से कहा कि धर्मशास्त्रोंका रहस्य अति गुप्त ज्ञानआप के मुख से श्रवण किया अब आप सूर्यनारायण का स्तुति रूप न्यास कहैं मैं आपको भक्ति से पूछता हूं यह अर्जुन का बचन सुन श्रीकृष्णभगवान् बोले कि हे पार्थ तुमने बहुत उत्तम औ गुप्त बातपूछी है यहहमने इन्द्र आदिदेवताओं के पूछनेपरभीन कही परंतु तुम हमारे परम भक्त हो इसलिये कहते हैं प्रीति से सुनो सब प्रकार के मंगल देनेहारा सर्व पापों का निवर्तक रोग औ शत्रुओं का संहार करनेहारा धन पुत्र औ विजयदेने हारा आदित्यहृदय स्तोत्र हम कहते हैं जिसके श्रवणमात्र से सबपाप कटजाते हैं औ जो आदित्यहृदयतीनों लोकोंमें विख्यात तथा भुक्ति मुक्ति प्रदहै प्रभात उठ सूर्यनारायणका स्मरण कर उनको नमस्कार करै तो अनेकप्रकार के बिघ्न दूर होजांय औ जो पुरुषसूर्यनारायणका आवाहनकर आदित्यहृदयकापाठकरै वह दारिद्र्य औ कुष्ट आदि महारोगों सेछुट उत्तम सिद्धिपावै हे अर्जुन वह आदित्यहृदय स्तोत्र हमकहते हैं जो अति गुप्तहै तुम भक्ति से श्रवण करो ॥

ओंअस्यश्रीआदित्यहृदयस्तोत्रमंत्रस्य श्रीकृष्णऋषिरनुष्टुप छन्दः सूर्योदेवताहरितहयरथंदिवाकरं घृणिरितिवीजम् । ओं-नमोभगवतेजितवैश्वानरजातवेदइतिशक्तिःओंनमोभगवतेआदि

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

त्याय इतिकीलकम्। श्रीसूर्यनारायणप्रीत्यर्थेजपेविनियोगः ओं ह्रांअंगुष्ठाभ्यांनमःओंह्रींतर्जनीभ्यांनमः। ओंह्रूं मध्यमाभ्यांनमः ओंह्रैं अनामिकाभ्यांनमः। ओंह्रौंकनिष्ठिकाभ्यांनमः। ओंह्रः करतलकरपृष्ठाभ्यांनमः। इतिकरन्यासः। एवंहृदयादिन्यासः। अथध्यानम् भास्वद्रत्नाढ्यमौलिःस्फुरदधररुचारंजितश्चारुकेशो भास्वान्योदिव्यतेजाःकरकमलयुतःस्वर्णवर्णःप्रभाभिः। विश्वाकाशावकाशोग्रहगणसहितोभातियश्चोदयाद्रौ सर्वानन्दप्रदाताहरिहरनमितःपातुमांविश्वचक्षुः।पूर्वमष्टदलंपद्मंप्रणवादिप्रतिष्ठितम्। मायावीजंदलाष्टाग्रेयन्त्रमुद्धारयेदिति २ आदित्यंभास्करंभानुंरविंसूर्यंदिवाकरम्। मार्तंडंतपनंचेतिदलेष्वष्टसुयोजयेत्३ दीप्तासूक्ष्माजयाभद्राविभूतिर्विमलातथा। अमोघाविद्युताचेति मध्येश्रीःसर्वतोमुखी ४ सर्वज्ञःसर्वगश्चैवसर्वकारणदेवता। सर्वेशःसर्वहृदयस्तंनमामिविभावसुम् ५ सर्वात्मासर्वकर्ताचसृष्टिजीवनपालकः। हितःस्वर्गापवर्गश्चभास्करेशनमोस्तुते६ नमोनमस्तेस्तुसदाविभावसो सर्वात्मनेसप्तहयायभानवे।अनन्तशक्तेमणिभूषणाययददस्वभुक्तिंममुक्तिमव्ययाम ७ अर्कंतुमूर्द्धिनिन्यस्यललाटेतुरविन्यसेत्। विन्यसेन्नेत्रयोःसूर्यंकर्णयोश्चदिवाकरम्८ नासिकायान्यसेद्भानुंमुखेवैभास्करंन्यसेत्पर्जन्यमोष्ठयोश्चैव तीक्ष्णं जिह्वान्तरेन्यसेत् ९ सुवर्णरेतसंकण्ठेस्कन्धयोस्तिग्मतेजसम् बाह्वोस्तुपूषणंचैवमित्रंवैपृष्ठतोन्यसेत् १० वरुणंदक्षिणेहस्तेत्वष्टारंवामतःकरेहस्तावुष्णकरःपातुहृदयंपातुभानुमान् ११ उदरेतुयमंविद्यादादित्यंनाभिमण्डले। कट्यांतुविन्यसेद्धंसंरुद्रमूर्वोस्तुविन्यसेत १२ जान्वोस्तुगोपतिंन्यस्यसवितारंतुजंघयोः। पादयोश्चविवस्वन्तंगुल्फयोश्चदिवाकरम् १३ वाह्यतस्तुतमोध्वंसंभगमभ्यन्तरेन्यसेत्। सर्वांगेषुसहस्रांशुंदिग्विदिक्षुभगंन्यसेत् १४ एषआदित्यविन्यासोदेवानामपिदुर्लभः। इमंभक्त्यान्यसेत्पार्थस-

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

यातिपरमांगत्तिम् १५ कामक्रोधकृतात्पापान्मुच्यतेनात्रसंशयः।
सर्पादपिभयंनैवसंग्रामेषुपथिष्वपि १६ रिपुसंघट्टकालेषुतथाचोर
समागमें। त्रिसंध्यंजपतोन्यासंमहापातकनाशनम् १७ विस्फो-
टकसमुत्पन्नंतीव्रज्वरसमुद्भवम्। शिरोरोगंनेत्ररोगंसर्वव्याधिवि-
नाशनम् १८ कुष्ठव्याधिस्तथादद्रुरोगाश्चविविधाश्चये। जपमा-
नस्यनश्यन्तिशृणुभक्त्यातदर्जुन १९ आदित्योमंत्रसंयुक्तआदित्यो
भुवनेश्वरः। आदित्यान्नापरोदेवोह्यादित्यःपरमेश्वरः २० आदित्य
मर्चयेद्ब्रह्माशिवआदित्यमर्चयेत्। यदादित्यमयंतेजोममतेजस्त-
दर्जुन २१ आदित्यंमंत्रसंयुक्तमादित्यंभुवनेश्वरम्। आदित्यंयेप्र-
पश्यंतिमांपश्यंतिनसंशयः २२ त्रिसंध्यमर्चयेत्सूर्यंस्मरेद्भक्त्यातु
योनरः। नसपश्यतिदारिद्र्यं जन्मजन्मनिचार्जुन २३ एतत्तेकथितं
पार्थआदित्यहृदयंमया। शृण्वंमुक्तःसपापेभ्यःसूर्यलोकेमहीयते २४
नभोभगवतेतुभ्यमादित्यायनमोनमां। आदित्यःसवितासूर्यःखगः
पूषागभस्तिमान् २५ सुवर्णःस्फटिकोभानुःस्फुरितोविश्वतापनः।
रविर्विश्वोमहातेजासुवर्णःसुप्रबोधकः २६ हिरण्यगर्भस्त्रिशिरास्त
पनोभास्करोरविः। मार्तण्डोगोपतिःश्रीमान्कृतज्ञश्चप्रतापवान्
२७ तमिस्रहाभगोहंसोनासत्यश्चतमोनदः। शुद्धोविरोचनःकेशी
सहस्रांशुर्महाप्रभुः २८ विवस्वान्पूषणोमृत्युर्मिहिरोजामदग्नजि
त्। धर्मरश्मिःपतंगश्चशरण्योमित्रहातपः २९ दुर्विज्ञेयगतिःशूर
स्तेजोराशिर्महायशाः। शंभुश्चित्रांगदस्सौम्योहव्यकव्यप्रदायकः
३० अंशुमानुत्तमोदेवऋग्यजुःसामएवच। हरिदश्वस्तमोदारःस
प्तसप्तिर्मरीचिमान् ३१ अग्निगर्भोदितेःपुत्रःशम्भुस्तिमिरनाश-
नः। पूषाविश्वम्भरोमित्रःसुवर्णःसुप्रतापवान् ३२ आतपीमण्ड
लीभास्वान्तपनःसर्वतापनः। कृतविश्वोमहातेजाःसर्वरत्नमयो
द्भवः ३३ अक्षरश्चक्षरश्चैवप्रभाकरविभाकरौ। चन्द्रश्चन्द्राङ्गदः
सौम्योहव्यकव्यप्रदायकः ३४ अङ्गारकोङ्गदोगस्त्योरक्ताङ्गश्चाङ्ग

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वर्द्धनः। वुधोवुद्धासनोवुद्धिर्वुद्धात्मावुद्धिवर्द्धनः ३१ वृहद्भानुर्वृहद्भासोवृहद्भामावृहस्पतिः। शुक्रस्त्वंशुक्रेतास्त्वंशुक्राङ्गःशुक्रभूषणः ३२ शनिमानूशनिरूपस्त्वंशनैर्गच्छसिसर्वदा।अनादिरादिरादित्यस्तेजोराशिर्महातपः३७अनादिरादिरूपस्त्वमादित्यो दिक्पतिर्यमः।भानुमानूभानुरूपस्त्वंस्वर्भानुर्भानुदीप्तिमान्३८ धूमकेतुर्महाकेतुःसर्वकेतुरनुत्तमः।तिमिरावरणःशम्भुःस्त्रष्टामार्तंड एवच ३९ नमःपूर्वायगिरयेपश्चिमायनमोनमः।नमोत्तरायगिरये दक्षिणायनमोनमः ४० नमोनमःसहस्त्रांशोह्यादित्यायनमोनमः। नमःपद्मप्रवोधाय नमस्तेद्वादशात्मने४१नमोविश्वप्रवोधायनमो ऽाजिष्णुजिष्णुवे। ज्योतिषेचनमस्तुभ्यंज्ञानार्कायनमोनमः ४२ प्रदीप्तायप्रगल्भायय्युगान्तायनमोनमः।नमस्तेहोतृपतयेपृथिवी पतयेनमः९३नमोङ्कारवषट्कारसर्वयज्ञनमोस्तुते। ऋग्वेदायय-जुर्वेदसामवेदनमोस्तुते ४४ नमोहाटकवर्णाय भास्करायनमोन मः। जयायजयभद्रायहरिदस्वायतेनमः४५ दिव्यायदिव्यरूपा-य ग्रहाणांपतयेनमः। नमस्तेशुचयेनित्यं नमःकुरुकुलात्मने ४६ नमस्त्रैलोक्यनाथाय भूतानांपतयेनमः।नमःकैवल्यनाथायनम-स्तेदिव्यचक्षुषे४७ त्वंज्योतिस्त्वंद्युतिर्ब्रह्मा त्वंविष्णु स्त्वंप्रजापतिः। त्वमेवरुद्रोरुद्रात्मावायुरग्निस्त्वमेवच४८योजनानांसहस्रे द्वे द्वेशतेद्वेचयोजने। एकेननिमिषार्द्धेनक्रममाणनमोस्तुते ४९ न वयोजनलक्षाणि सहस्त्रद्विशतानिच । यावद्घटीप्रमाणेन क्रम माणनमोस्तुते५० अग्रतश्चनमस्तुभ्यंपृष्टतश्चसदानमः। पार्श्वत श्चनमस्तुभ्यंनमस्तेचास्तुसर्वदा५१नमःसुरारिहन्त्रेचसोमसूर्या ग्निचक्षुषे। नमोदिव्यायव्योमायसर्वतंत्रमयायच५२नमोवेदांत वेद्यायसर्वकर्मादिसाक्षिणे। नमोहरितवर्णायसुवर्णायनमोनमः ५३ अरुणोमाघमासेतुसूर्योवैफाल्गुणेतथा। चैत्रेमासेतुगोविंदो भानुर्वैशाखतापनः५४ज्येष्ठमासेतपेदिन्द्र आषाढेतपतेरविः।गभ

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

स्तिःश्रावणेमासेयमोभाद्रपदेतथा ५५ इषेसुवर्णरेताश्चकार्त्तिकेच
दिवाकरः। मार्गशीर्षेतपेन्मित्रःपौषेविष्णुःसनातनः५६ पुरुषस्त्व
धिकेमासे नित्यमेवप्रतापयेत्। इत्येतेद्वादशादित्याः काश्यपेयाः
प्रकीर्तिताः ५७ उग्ररूपामहात्मानस्तपन्तेविश्वरूपिणः। धर्मा
र्थकाममोक्षाणांप्रस्फुटाहेतवोनृप५८सर्वपापहरंचैवमादित्यंसंप्र
पूजयेत्। एकधादशधाचैव शतधाचसहस्रधा ५९ तपन्तेविश्वरू
पेणसृजन्तिसंहरंतिच। एषविष्णुःशिवश्चैव ब्रह्माचैवप्रजापतिः
६०महेन्द्रश्चैवकालश्चयमोवरुणएवच। नक्षत्रग्रहताराणामधि
पोविश्वतापनः ६१ वायुरग्निर्धनाध्यक्षो भूतकर्तास्वयंप्रभुः। एष
देवोहिदेवानांसर्वमाप्यायतेजगत् ६२ एषकर्त्ताहिभूतानांसंहर्त्ता
रक्षकस्तथा। एषलोकानुलोकाश्चसप्तद्वीपाश्चसागराः६३एषपा
ताललोकस्थोदैत्यदानवराक्षसाः। एषधाताविधाताचवीजंक्षेत्रंप्र
जापतिः ६४ एषएवप्रजानित्यंसवर्द्धयतिरश्मिभिः। एषयज्ञःस्व
धास्वाहाह्रीःश्रीश्चपुरुषोत्तमः६५ एषभूतात्मकोःदेवःसूक्ष्मोव्यक्तः
सनातनः। ईश्वरःसर्वभूतानांपरमेष्ठीप्रजापतिः ६६ कालात्मास
र्वभूतात्मावेदात्माविश्वतोमुखः। जन्ममृत्युजराव्याधिसंसारभय
नाशनः ६७ दारिद्र्यव्यसनध्वंसीश्रीमान्देवोदिवाकरः। विकर्तनो
विवस्वांश्चमार्तंडोभास्करोरविः ६८ लोकप्रकाशकःश्रीमांल्लोक
चक्षुर्ग्रहेश्वरः। लोकसाक्षीत्रिलोकेशः कर्ताहर्तातमिस्रहा ६९ त
पनस्तापनश्चैवशुचिःसप्ताश्ववाहनः।गभस्तिहस्तो ब्रह्मण्यःसर्व
देवनमस्कृतः ७० इत्येतैर्नामभिःपार्थ आदित्यंस्तौतिनित्यशः।
प्रातरुत्थायकौन्तेय तस्यरोगभयंनहि ७१ पातकान्मुच्यतेपार्थ
व्याधिभ्यश्चनसंशयः। एकसन्ध्यंद्विसन्ध्यंवा सर्वपापैःप्रमुच्यते
७२ त्रिसंध्यंजपमानस्तु पश्येच्चपरमंपदम्। यदह्नाकुरुतेपापं
तदह्नाप्रतिमुच्यते ७३ यद्रात्र्याकुरुतेपापंतद्रात्र्याप्रतिमुच्यते।द
द्रुस्फोटककुष्ठानि मंडलानिविचर्चिका ७४सर्व्वव्याधिमहारोगभू

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

तबाधास्तथैवच। शाकिनीडाकिनीचैवमहारोगभयंकुतः७५येच्चान्येदुष्टरोगाश्च ज्वरातीसारकादयः। जपमानस्यनश्यन्तिजीवेच्च शरदांशतम् ७६ संवत्सरेणमरणं यदातस्यध्रुवंभवेत्। अशीर्षां पश्यतिच्छायामहोरात्रंधनंजय७७यस्त्विदंपठतेभक्त्या वारेभानोर्महात्मनः। प्रातःस्नानेकृतेपार्थएकाग्रकृतमानसः ७८ सुवर्णचक्षुर्भवति नचान्धस्तुप्रजायते। पुत्रवान्धनसंपन्नो जायतेचारुजः सुखी ७९ सर्वसिद्धिमवाप्नोतिसर्वत्रविजयीभवेत्। आदित्यहृदयं पुण्यं सूर्यनामविभूषितं८०श्रुत्वाचनिखिलंपार्थसर्वपापैःप्रमुच्यते। अतःपरतरंनास्ति सिद्धिकामस्यपाण्डव८१एतज्जपस्वकौन्तेय येनश्रेयोह्यवाप्स्यसि। आदित्यहृदयंपुण्यं यःपठेत्सुसमाहितः ८२ भ्रूणहामुच्यतेपापात् कृतघ्नोब्रह्मघातकः। गोघ्नःसुरापीदुर्भोजी दुष्प्रतिग्रहकारकः ८३ पातकानिचसर्वाणिदहत्येवनसंशयः यइदंशृणुयान्नित्यं जपेद्वापिसमाहितः ८४ सर्वपापविशुद्धात्मा सूर्यलोकेमहीयते। अपुत्रोलभतेपुत्रा न्निर्धनोधनमाप्नुयात् ८५ रोगीचमुच्यतेरोगा द्भक्त्यायःपठतेसदा। यस्त्वादित्यदिनेपार्थ नाभिमात्रजलेस्थितः ८६ उदयाचलमारूढं भास्करंप्रणतःस्थितः। जपतेमानवोभक्त्याशृणुयाद्वापिभक्तितः ८७ सयाति परमंस्थानं यत्रदेवोदिवाकरः। अमित्रदमनंपार्थयदाकर्तुंसमारभेत् ८८ तदाप्रतिकृतिंकृत्वा शत्रोश्चरणपांसुभिः। आक्रम्यवाम पादेन आदित्यहृदयंजपेत्८९एतन्मन्त्रंसमाहूय सर्वसिद्धिकरंपरम्। ओंह्रींहिमालीढंस्वाहा। ओंह्रींनिलीढंस्वाहा।ओंह्रींमालीढं स्वाहा इतिमन्त्रः त्रिभिश्चरोगीभवति ज्वरीभवतिपंचभिः। जपैस्तुसप्तभिःपार्थ राक्षसीतनुमाविशेत् ९० राक्षसेनाभिभूतस्य विकारान्शृणुपांडव।गीयतेनृत्यतेनग्नआस्फोटयतिधावति९१ शिवारुतंचकुरुतेहसतेक्रन्दतेपुनः। एवंसंपीड्यतेपार्थ यद्यपिस्यान्महेश्वरः ९२ किंपुनर्मानुषःकश्चिच्छौचाचारविवर्जितः। पीडि-

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

स्यनसंदेहोज्वरोभवतिदारुणः ९३ यदाचानुग्रहंतस्यकर्तुमिच्छेच्छुभंकरम्। तदासलिलमादाय जपेन्मन्त्रमिमंवुधः ९४ नमोभगवतेतुभ्यमादित्यायनमोनमः। जयायजयभद्रायहरिदश्वायतेनमः ९५ स्नापयेत्तेनमन्त्रेण शुभंभवतिनान्यथा। अन्यथाच भवेद्दोषो नश्यतेनात्रसंशयः ९६ स्तवस्तेनिखिलःप्रोक्तःपूजांचैव निबोधमे। उपलिप्तेशुचौदेशे नियतोवाग्यतःशुचिः ९७ वृत्तंवा चतुरस्रंवालिखभूमौलिखेदबुधः। त्रिधातत्रलिखेत्पद्ममष्टपत्रंसकर्णिकम् ९८ पूर्वपत्रेलिखेत्सूर्यमाग्नेय्यान्तुरविन्यसेत्। याम्यांचैव विवस्वन्तंनैर्ऋत्यांतुभगंन्यसेत् ९९ प्रतीच्यांवरुणंविद्याद्वायव्यांमित्रमेवच। आदित्यमुत्तरेपत्रेईशान्यांसूर्यमेवच १०० मध्येतुभास्करंविद्यात्क्रमेणैवंसमर्चयेत्। अतःपरतरंनास्तिसिद्धिकामस्य पांडव १०१ महातेजःसमुद्यन्तंप्रणमेत्सुकृतांजलिः। सकेसराणि पद्मानिकरवीराणिचार्जुन १०२ तिलतन्दुलयुक्तानिकुशगंधोदकानिच। रक्तचन्दनमिश्राणिकृत्वावैताम्रभाजने १०३ धृत्वाशिरसितत्पात्रंजानुभ्यांधरणींस्पृशन्। मन्त्रपूतंगुडाकेश चार्घ्यंदद्याद्गभस्तये १०४ ओंह्रांह्रींह्रूंह्रैंह्रौंह्रःसूर्यमूर्तयेस्वाहा। नमोस्तुसूर्यायसहस्रभानवेनमोस्तुवैश्वानरजातवेदसेत्वमेवचार्घ्यंप्रतिगृह्णदेववदैवाधिदेवायनमोनमस्ते १०५ नमोभगवतेतुभ्यंनमस्तेजातवेदसे। दत्तमर्घ्यंमयाभानोत्वंगृहाणनमोस्तुते १०६ एहिसूर्यसहस्रांशोतेजोराशेजगत्पते अनुकंपयमांभक्त्यागृहाणार्घ्यंदिवाकर १०७ सर्वदेवाधिदेवायआधिव्याधिविनाशिने। ममेप्सितंफलंदेहिप्रसीदपरमेश्वर १०८ सर्वसंकटदारिद्र्यशत्रून्नाशयनाशय सर्वलोकेषु विश्वात्मन्सर्वात्मन्सर्वदर्शक ११९ नमोभगवतेसूर्यकुष्ठरोगान्विखंडय। आयुरारोग्यमैश्वर्यंदेहिदेवनमोस्तुते ११० आदित्यंचशिवं विंद्याच्छिवमादित्यरूपिणम्। उभयोरन्तरंनास्तिआदित्यस्यशिवस्यच १११ उदयेब्रह्मणोरूपोमध्याह्नेतुमहेश्वरः। अस्तमानेस्व

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

यंविष्णुस्त्रयीमूर्तिंदिवाकरः ११२ जयोजयश्चविजयोजितप्राणो जितश्रमः। मनोजवोजितक्रोधोवाजिनःसप्तकीर्त्तिताः १२३ हरित हयरथंदिवाकरंकनकमयाम्बुजरेणुपिंजरम्। प्रतिदिनमुदयेनवं नवंशरणमुपैमिहिरण्मयरेतसम्११४ नतंव्यालाःप्रबाधन्तेनव्या धिभ्योभयंभवेत्। ननागेभ्योभयंचैवनचभूतभयंक्वचित् ११६ अग्निशस्त्रभयंनास्तिपार्थिवेभ्यस्तथैवच। दुर्गतिंतरतेघोरांप्रजां चलभतेपशून् ११५ सिद्धिकामोलभेत्सिद्धिंकन्याकामस्तुकन्य-काम्। एतत्पठस्वकौन्तेयभक्तियुक्तेनचेतसा ११६ अश्वमेधसह-स्रस्यवाजपेयशतस्यच। कन्याकोटिसहस्रस्यदत्तस्यफलमाप्नुया-त् ११७इदमादित्यहृदयंयोधीतेसततंनरः। सर्वपापविशुद्धात्मा सूर्यलोकेमहीयते ११८ नास्त्यादित्यसमोदेवोनास्त्यादित्यसमा गतिः। प्रत्यक्षोभगवान्विष्णुर्येनविश्वंप्रतिष्ठितम् ११६ गवां शतसहस्रस्यसम्यन्द्रत्तस्ययत्फलम्। तत्फलंलभतेविद्वान्शान्ता त्मास्तौतियोरविम् १२० योधीतेसूर्यहृदयंसकलंसफलंलभेत्। अष्टानांब्रह्मणानांचलेखयित्वासमर्पयेत् १२१ ब्रह्मलोकेऋषी णांचजायतेमानुषोपिवा।जातिस्मरत्वमाप्नोतिशुद्धात्मानात्रसंश-यः १२० अजायलोकत्रयपावनायभूतात्मनेगोपतयेवृषाय। सू-र्यायसर्वप्रलयान्तकायनमोमहाकारुणिकोत्तमाय१२३विवस्वते ज्ञानभूतान्तरात्मनेजगत्प्रदीपायजगद्धितैषिणे। स्वयंभुवेदीप्तस-हस्रचक्षुषेसुरोत्तमायामिततेजसेनमः १२४सुरैरनेकैःपरिसेविता यहिरण्यगर्भायहिरण्मयाय।महात्मनेमोक्षपदायनित्यंनमोस्तुते वासरकारणाय१२५आदित्यश्चार्चितोदेवआदित्यःपरमंपदम्। आदित्योमातृकारूपआदित्योवाङ्मयंजगत् १२६आदित्यंपश्य तेभक्त्यामांपश्यतिध्रुवंनरः। नादित्यंपश्यतेयस्तुनसपश्यतिमांन-रः १२७नमःसवित्रेजगदेकचक्षुषेजगत्प्रसूतिस्थितिनाशहेतवे। त्रयीमयायत्रिगुणात्मधारिणेविरंचिनारायणशंकरात्मने१२८य-

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

स्योदयेनेहजगत्प्रवुध्यतेप्रवर्त्ततेचाखिलकर्मसिद्धये।ब्रह्मेंद्रनारा-
यणरुद्रबंदितःसनःसदायच्छतुमङ्गलंरविः १२९ नमोस्तुसूर्याय
सहस्ररश्मयेसहस्रशाखान्वितसम्भवात्मने। सहस्रयोगोद्भवभा
वभागिनेसहस्रसंख्यायुगधारिणेनमः १३० यन्मण्डलंदीप्तिक
रंविशालंरत्नप्रभंतीव्रमनादिरूपम्।दारिद्र्यदुःखक्षयकारणंचपुना
तुमांतत्सवितुर्वरेण्यम् १३१ यन्मंडलंदेवगणैःसुपूजितंविप्रैस्तुतं
भावनमुक्तिकोविदम्। तंदेवदेवंप्रणमामिसूर्यंपुनातुमांतत्सवितुर्व
रेण्यम् १३२यन्मंडलंज्ञानघनंत्वगम्यंत्रैलोक्यपूज्यंत्रिगुणात्मरू
पम्। समस्ततेजोमयदिव्यरूपंपुनातु० १३३ यन्मण्डलंगूढ़मति
प्रवोधंधर्मस्यवृद्धिंकुरुतेजनानाम्।यत्सर्वपापक्षयकारणंचपुनातुः
१३४यन्मण्डलंव्याधिबिनाशदक्षंयदृग्यजुःसामसुसम्प्रगीतम्।
प्रकाशितंयेनचभूर्भुवःस्वःपुनातु० १३५यन्मण्डलंवेदविदोवदंति
गायन्तियच्चारणसिद्धिसङ्घाः। यद्योगिनोयोगजुषांचसङ्घाःपु
नातु० १३६ यन्मंडलंसर्वजनेषुपूजितंज्योतिश्चकुर्यादिहमर्त्यलो
के।यत्कालकालाद्यमनादिरूपंपुनातु० १३७यन्मंडलंविष्णुचतुर्मु
खाख्यंयदक्षरंपापहरंजनानाम्। यत्कालकल्पक्षयकारणंचपुना
तु० १३८ यन्मण्डलंविश्वसृजंप्रसिद्धमुत्पत्तिरक्षाप्रलयप्रगल्भम्
यस्मिन्जगत्संहरतेखिलंचपुनातु० १३९ यन्मण्डलंसर्वगतस्य
विष्णो रात्मापरंधामविशुद्धतत्वम्। सूक्ष्मान्तरैर्योगपथानुगम्यं
पुनातु० १४० यन्मण्डलंवेदविदोपगीतंयद्योगिनांयोगपथानुग
म्यम्।तंसर्वदेवंप्रणमामिसूर्यंपुनातुमांतत्सबितुर्वरेण्यम् १४१ध्ये
यःसदासवितृमण्डलमध्यवर्तीनारायणः सरसिजासनसन्निविष्टः
केयूरवान्मकर कुंडलवान्किरीटीहारीहिरण्मयवपुर्धृतशङ्खचक्रः
१४२सशङ्खचक्रंरविमंडलस्थितंकुशेशयाकान्तमनन्तमच्युतम्।
भजामिबुद्ध्यातपनीयमूर्तिंसुरोत्तमंचित्रविभूषणोज्वलम् १३३
एवंब्रह्मादयोदेवाऋषयश्चतपोधनाः कीर्तयन्तिसुरश्रेष्ठं देवेना-

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

रायणंविभुम् १४४ वेदवेदाङ्गशारीरं दिव्यदीप्तिकरंपरं। रक्षोघ्नंरक्तवर्णंचसृष्टिसंहारकारकम् १४५ एकचक्रोरथोयस्यदिव्यः कनकभूषितः।समेभवतुसुप्रीतःपद्महस्तोदिवाकरः१४६ आदित्यः प्रथमंनामद्वितीयंतुदिवाकरः। तृतीयंभास्करंप्रोक्तंचतुर्थंतुप्रभाकरः १४७ पंचमंतुसहस्रांशुःषष्ठंचैवत्रिलोचनः। सप्तमंहरिदश्वश्च अष्टमन्तुविभावसुः १४८ नवमंदिनकृत्प्रोक्तंदशमंद्वादशात्मकः। एकादशंत्रयीमूर्त्तिर्द्वादशंसूर्यएवच १४९ द्वादशादित्यनामानि प्रातःकालेपठेन्नरः।दुःस्वप्ननाशनंचैवसर्वदुःखंचनश्यति१५० दद्रुकुष्टहरंचैव दारिद्र्यं हरतेध्रुवम्। सर्वसम्पत्प्रदंचैवसर्वकामप्रवर्द्धनम्१५१ यःपठेत्प्रातरुत्थायभक्त्यानित्यमिदंनरः। सौख्यमायुस्तथारोग्यंलभतेमोक्षमेवच १५२ अग्निमीलेनमस्तुभ्य मिषेत्वर्जेस्वरूपिणे। अग्नआयाहिवीतस्त्वंनमस्तेज्योतिषांपते १५३ शन्नोदेवीनमस्तुभ्यं जगच्चक्षुर्नमोस्तुते। पंचमायोपवेदाय नमस्तुभ्यंनमोनमः १५४ पद्मासनःपद्मकरःपद्मगर्भसमद्युतिः।सप्ताश्वरथसंयुक्तोद्विभुजःस्यात्सदारविः १५५ आदित्यस्यनमस्कारं येकुर्वन्तिदिनेदिने। जन्मान्तरसहस्रेषु दारिद्र्यं नोपजायते१५६ उदयगिरिमुपेतंभास्करंपद्महस्तंनिखिलभुवननेत्रंदिव्यरत्नोपमेयं तिमिरकरिमृगेंद्रंबोधकंपद्मिनीनां सुरवरमभिबन्दे सुन्दरंविश्ववंद्यम १५७॥ इतिश्रीआदित्य हृदय स्तोत्र समाप्तम्॥

एकसौ इकतालीसवां अध्याय॥

राजा शतानीक कहतेहैं कि हे सुमन्तु मुनि आपके मुखारविन्दसे सूर्यभगवान् के गुणानुवाद औ परमपवित्र आदित्य हृदयस्तोत्र श्रवणकिया जिससे चित्तको अत्यन्त आनन्द भया अब आप कृपाकर यह वर्णन करैं कि कलियुग में कौन२ राजा होंगे औ कितने २ वर्ष राज्यकरैंगे आपश्रीवेदव्यासजीकेशिष्य

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

औ त्रिकालज्ञहैं यह राजाका प्रश्न सुन सूतजीबोले कि हेराजा शतानीक आपने बहुत उत्तम प्रश्न किया अब हम कलियुग के राजाओं का वर्णन करते हैं आप प्रीति से श्रवण करैं कलियुग की सन्ध्या से लेकर परीक्षित आदि तुम्हारे बंशके राजा इक्ष्वाकु बंशके राजा औ मागध बंशके राजा एक सहस्र बर्ष तक राज्य करैंगे इन तीनो बंशों के राजाओं के अनंतर प्रद्योत नामक पांच राजा एकसौअड़तीस बर्ष राज्य करैंगे पीछे शिशुनाग आदि दश राजा तीनसौ साठ बर्ष पर्यंत राज्य भोगैंगे यहां तक तो धर्मात्मा राजा होंगे इनके अनन्तर शूद्री के गर्भ से उत्पन्न नन्दनाम राजा होगा औ उसके आठ पुत्र सौ बर्ष पर्यंत राज्य करैंगे नन्द के पुत्रों को राज्य के अयोग्यजानकोई ब्राह्मण उनको राज्यसिंहासन से उतार मौर्यबंश के चन्द्र गुप्त को राज्य देगा तब एकसौ सैंतीसबर्ष पर्यंत मौर्योंके दश राजा राज्य करैंगे इनके अनंतर शुंगनामक दश राजा एकसौदशबर्ष तक राज्य करैंगे अंतमें कण्व औ जिसका दूसरा नाम बसुदेव है वह राज्य के लोभसे अपने स्वामी शुंगको मार आप राजा बनैगा तीनसौ पैंतालीसबर्ष पर्यंत इसीके घराने में राज्यरहेगा अंतमें इनको भी इनका सेवक एक शूद्र मारकर कुछ काल आप राज्य करेगा पीछे उसी आन्ध्र शूद्र के बंश के तीस राजाचार सौ छप्पन बर्ष पर्यंत कलियुग में राजा होंगे इनके अनंतरआभीर नाम सात राजा सौबर्षतक भूमिका भोगकरैंगे इनकेबाद गर्दभ नामक दश राजा अठानवे बर्ष राज्यके स्वामी होंगेफिर कंकनाम सोलह राजा दोसौ बर्ष राज्य करैंगे फिर विक्रमादित्य नाम उज्जयिनी में राजा होगा जो करोड़ों म्लेच्छों को मार धर्म स्थापनकर एकसौ पैंतीस बर्ष राज्यकरैगा इसके अनंतर सौबर्षपर्यंत बड़ाप्रतापीशालिबाहन नामराजा राज्य करैगाइस

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

के अनंतर आठ यवन औ सोलह तुरुष्क साढ़े तीनसौ बर्षराज्य करैंगे पीछे गुरुंडनाम दशराजा एकसौ सोलह वर्षपर्यंतराज्य भोग करैंगे पीछे मौननामक ग्यारहराजा तीनसौवर्ष भूमिको भोगैंगे इनके अनंतर किलकिला में भूतनंद आदि राजा एकसौ पांच वर्ष राज्य करैंगे इतने तो कलियुग में चक्रबर्ती राजाहोंगे पीछे खंड राज्य होजायगा अर्थात् एक २ देशके जुदे २ राजा होजायंगे उन भूतनंद नामक राजाओं के तेरह पुत्र वाहलिक राजा होंगे सातराजा कोशल देशमें होंगे इनके अनंतर वैदूर-पति नैषध राजा होंगे पीछे विश्वस्फुजित राजा अति क्रोधी औ दुष्ट होगा वह सब बर्णों को म्लेच्छ प्राय कर देगा सिंधुकेतीर में कश्मीर में औ कांची आदि देशोंमें म्लेच्छों का राज्य होजा-यगा ये सब राजा बड़े क्रोधी अल्पायुष् औ अल्पसत्व होंगे औ अपनी प्रजा को भक्षण करैंगेइस भांतिका राज्य चारसौबारह बर्ष रहैगा इसप्रकार जबधर्मका नाशहोने लगेगा तब पश्चिम देशमें बड़ा ब्रह्मज्ञानी एक राजर्षि उत्पन्न होगा उसकी आज्ञा-नुसार सबराजा राज्य करैंगे कलियुग में भी धर्म की वृद्धि औ म्लेच्छों का नाश वह करैंगा उसके अनंतर बड़े प्रतापीऔ प्रजा का रक्षण करने हारे गौरमुख नाम राजा होंगे जिनके राज्यकी बहुत शीघ्र वृद्धि होजायगी सब राजा उनको कर देंगे वे एकसौ अस्सी बर्ष नीतिशास्त्र के अनुसार राज्यकर पश्चिम देशके मनुष्यों के हाथ अभाव को प्राप्त होंगे जब वेद में औ ब्राह्मणों में शुद्धता होगी तब धर्म के विरोधीम्लेच्छोंको राजा जीतेंगे औ प्रजा के पालन करनेहारे हजारों राजा होंगे वे सब साढ़े तीनसौ बर्ष राज्य करैंगे कुछ कालके अनंतर उन के बंशमें बड़ाधर्मात्मा औ प्रतापी विजयनाम राजाहोगाजिस के बंशमें साढ़ेपांचसौ बर्ष राज्य रहैगा इनके अनंतर रोहितक

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नाम नगरमें नागार्जुन राजा बड़ा प्रतापी उत्पन्न होगा उसके बंशमें उत्पन्न राजा एक हज़ार बर्ष पर्यंत राज्य करेंगे फिर राजा बलिनामक होगा जिसके घराने में ग्यारहसौ बर्ष राज्य रहैगा इसके अनन्तर शूद्र म्लेच्छ आदि राजा होंगे सब जगत् म्लेच्छहोजायगा धर्म कहीं नहींरहेगा तबविष्णु भगवान्का कल्किनाम अवतारहोगा वह अपने अश्वपरचढ़ सबम्लेच्छोंका संहार कर धर्मका स्थापन करैगा तबफिर सत्ययुग की प्रवृत्ति होगी इतनाकह सुमंतुमुनि बोले कि हे राजन् यह हमने कलयुगमें होनेवाले राजाओं का संक्षेप से वर्णन किया अब तुम और क्या श्रवण किया चाहतेहो वह कथन कीजिये॥

श्रीभविष्यपुराणकापूर्व्वार्द्धसमाप्तभया॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

श्रीगणेशायनमः ॥

भविष्य पुराण ॥

के

उत्तरार्द्ध ॥

का

भाषाअनुवाद ॥

—*—

पहिला अध्याय ॥

श्लोक ॥

नमोस्तुवासुदेवाय सशङ्खायसकेतवे । सगदायसचक्रायस श्रीकायनमोनमः १ नमःशिवायसौम्यायसगणायससूनवे।सदृष व्यालशूलाय सकपालायसेन्दवे २ शिवंध्यात्वाहरिंस्तुत्वाप्रणम्यपरमेष्ठिनम् । चित्रभानुंसुभानुंच नत्वाग्रन्थमुदीरयेत् ३ ॥

राजाशतानीक कहते हैं कि हे सुमंतुमुनि आपके अमृत से भी मधुर बचन सुनते सुनते मुझे तृप्ति नहीं होती अब आप और भी कोई उत्तम विषय वर्णन कीजिये जिससे चित्तको हर्ष होय औ पुण्यकी प्राप्तिभी होय यह राजाका वचन सुन सुमंतु मुनि बोले कि हे राजन् तुम श्रवणकराने के पात्रहो औ श्रद्धासे सुनतेहो इसलिये फिरभी हमप्राचीन वृत्तांतका वर्णन करतेहैं। तुम्हारे बड़े प्रपितामह राजा युधिष्ठिर को जब राज्याभिषेक भया उस समय राजा को देखने के लिये श्रीवेदव्यास आदि महर्षि वहांआये मार्कंडेय माण्डव्य शाण्डिल्य शाकटायन गौतम गालव गार्ग्य ऋष्यशृङ्ग पराशर परशुराम भरद्वाज भृ भागुरि उत्तङ्क शङ्ख लिखित शौनक पुलस्त्य पुल

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

दश्च लोमश नारद पर्वत रैभ्य जह्नु वसु परावसु आदि बड़े२ तपस्वी औ वेद वेदांग के पारगामी ऋषीश्वरोंकोदेख श्रीकृष्ण धौम्य औ भीमसेनआदि अपने भाइयों सहित राजा युधिष्ठिर सिंहासन से उठे औ सब मुनीश्वरों को प्रणामकर आसनों पर बैठाय अर्घ्य पाद्य आचमन आदिसे उनका पूजनकरतेभये इस प्रकार सबका सत्कार कर विनयसे नम्रहो राजायुधिष्ठिर श्री वेदव्यासजी के प्रति कहनेलगे कि महाराज आप केअनुग्रहसे हमने निष्कण्टक राज्यपाया औ अपने शत्रु दुर्योधन को मारा परन्तु अपने इष्ट मित्र बंधु आदिविना यहराज्यहमकोसुखनहीं देता जिसप्रकार रोगी पुरुष को भोगबनमें रहने के समय कंद मूलसे निर्वाह कर जैसा सुख हमको प्राप्त होताथा वैसा अब सब बंधुओं को मार राज्य मिलनेसे नहीं होता जो हमारे गुरु बंधु विपत्ति में रक्षाकरनेहारे भीष्म पितामह थे उनको हमने राज्यके लोभ से मारदिया इस से अधिक कौन दुष्कर्म होगा अविवेकमदसे अंध हम होरहेहैं औ हमारामन पाप रूप कर्दम से लिप्त होरहा है उसको आप अपनी बाणी रूप निर्मल नदी प्रबाह से क्षालन कीजिये। आपने पुराणों का संस्कार किया वेद विभक्ति करे अब आप बुद्धिरूप दीपक से धर्म का सर्वस्वह-मको दिखावें ये सब धर्म के रक्षण करनेहारे मुनि आये हैं औ अपने नेत्र भ्रमरों करके आपके मुख कमल को पान कर रहे हैं अर्थशास्त्र धर्मशास्त्र औ मोक्षशास्त्र भीष्मपितामह से श्रवण किये अब उनके स्वर्ग गमन के अनन्तर श्रीकृष्ण औ आप हमको उत्तम उपदेश करने वाले हैं औ इन सब मुनीश्वरों को भी यह निश्चय है कि युधिष्ठिर को व्यासजी अवश्य विशेष धर्मों का उपदेश करैंगे इसलिये आप सबका मनोरथ सफल कीजिये यह राजा का वचन सुन व्यासजी बोले कि हे राजन्

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

जो कुछ धर्मका उपदेश आपको करनाथा सो सब हमने भीष्म जीने मार्कंडेयने धौम्यने औ लोमसने किया औ तुमभी धर्मज्ञ गुणवान् औ बुद्धिमान् पुरुषोंके सम्मतहो धर्म अधर्मके निश्चय में कोईबस्तु आपको अज्ञातनहीं अब जगत् का सृष्टिस्थिति संहार करनेहारे श्रीकृष्ण भगवान् के सन्मुख धर्म का उपदेश करनेको किसकी जिह्वा प्रवृत्त होसकती है इसलिये येही तुम को धर्म उपदेशकरेंगे इतनाकह पांडवोंसे पूजनग्रहणकरव्यास जी तो अपने तपोवनको गये औ शान्तचित्त सबमुनीश्वर श्रीकृष्ण भगवान् के मुखकी ओर देखनेलगे कि ये क्याकहतेहैं ॥

दूसरा अध्याय ॥

राजा युधिष्ठिर श्रीकृष्णभगवान् से पूछते हैं कि यह जगत् किसमें स्थित है कहां से उत्पन्न होताहै किसमें लय को प्राप्त होताहै औ इसका हेतु क्याहै पृथिवी पर कितने द्वीप कितने समुद्र औ कितने कुलाचलहैं पृथिवी का प्रमाण कितना है औ भुवन कितने हैं यह आप वर्णन करैं। यह प्रश्न सुन श्रीकृष्ण कहने लगे कि हे महाराज आपने जो पूछा सो पुराण का विषय है परन्तु हमने भी संसार में विचरते हुये सुना है औ अनुभव किया है अब निर्गुण अज विश्वरूप परमेश्वर को प्रणाम कर हम उस विषयका वर्णन करते हैं यह बात याज्ञवल्क्यमुनि ने सूर्यनारायण से पूछी थी उनको सूर्यनारायण ने जो उत्तर दिया वह हमने भी श्रवण किया वही आपको सुनाते हैं वह एक परमेश्वर सब प्राणियों में स्थित है औ जलमें चन्द्र के प्रतिविम्बों की भांति अनेक रूप से देखपड़ता है ब्रह्मा विष्णु औ शिव ये तीनों सनातन देव एक परमात्मा के स्वरूप हैं केवल इनमें नामका औ क्रिया का भेदहै वास्तव में कुछभेदनहीं

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

प्रक्रियाअनुषङ्गउपोद्घात औ उपसंहार ये चार पाद वर्णनीय विषय के होते हैं यह जोविषय आप ने पूछा बहुतबडा है परंतु हम संक्षेप से वरर्णकरतेहैंपुरुष करके अधिष्ठित प्रकृति से महत्तत्व उत्पन्न होताहै महात्तत्व से त्रिगुण अहंकार अहंकार से पांच तन्मात्रा तन्मात्राओं से पांच महा भूत औ भूतों सेचराचर जगत् उत्पन्न होता है प्रलय के समय स्थावरजंगमसब नष्ट होगये केवल जलहीसर्वत्र व्याप्त था उसमें भूतात्मक अण्ड उत्पन्न हुआ कुछ कालके अनंतर उसके दो खण्डहुये उनमें एक खण्ड भूमि औ दूसरा खण्ड आकाश भया अण्ड के बीच जो उल्व अर्थात् जरायुथा उससे मेरु आदि पर्वत बनेऔ धमनी अर्थात्नाड़ी नदी रूपभईं मेरुपर्वतसोलह हजार योजन तो भूमिके भीतर है औ चौरासी हजार योजन भूमिके ऊपर है औ मेरुके मस्तक का विस्तार बत्तीस हजार योजन है भूमितो कमलरूप है औ मेरु पर्वत कर्णिका है उस अंड से आदिदेव आदित्यउत्पन्नभया जो प्रातःकालब्रह्मा मध्याह्न में विष्णुऔ सायंकाल में रुद्र रूपसे स्थितहोताहै वहत्रयीमय एकआदित्य देवही तीनरूप धारता है ब्रह्मासेमरीचि अत्रि अंगिरापुलस्त्य पुलह क्रतु भृगु वशिष्ठ औ नारद ये नौ मानस पुत्र उत्पन्नभये पुराणों में इनको भी ब्रह्माही कहते हैं दक्षप्रजापति के पुत्रजब क्षीण होगये तब उननेकन्या उत्पन्नकरी जिनमें से दश कन्या धर्म को तेरह कश्यप को सत्ताईस चंद्रमा को दो बहुयुत्र को दो कृशाश्व को चार अरिष्टनेमि को एकभृगुको औ एक शिवजीको दी जिनसे चराचर जगत् उत्पन्नभया मेरु पर्वत के तीनों शृंगों पर ब्रह्मा विष्णु शिवकी पुरीहैं औ पूर्व आदि आठो दिशाओंमें इन्द्रादि दिक्पालों की नगरी हैं हिमवान् हेमकूट निषध मेरु नील श्वेत औ शृंगवान् ये सातजंबूद्वीप में कुलपर्वत हैं जंबूद्वीप

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

का प्रमाणलक्षयोजन है औ उसमें नौवर्षहैं जंबू शाक कुशक्रौंच शाल्मलि प्लक्ष पुष्कर ये सातद्वीप हैं औ सातों समुद्रों करके वेष्ठित हैं क्षारजल दुग्ध इक्षुरस सुरादही घृत औ स्वादु जल इनके सातसमुद्र हैं सातोसमुद्र औ सातो द्वीपएकसे एक द्विगुण हैं भूर्लोक भुवर्लोक स्वर्लोक महर्लोक जनलोक तपोलोक औ सत्यलोक ये देवताओं के निवास स्थान सातलोक हैं महातल भूमितल सुतल निस्तल तल रसातल औ तलातल ये सात पाताल हैं इनमें हिरण्याक्ष आदि दानव औ वासुकि आदि नाग निवास करते हैं स्वायंभुव स्वारोचिष उत्तम तामस रैवत औ चाक्षुष ये छ मनु व्यतीत होगये औ वैवस्वतमनु अब वर्त्तमान है जिस के पुत्र पौत्रों ने यह पृथिवी व्याप्त कर रक्खी है बारह आदित्य आठ वसु ग्यारह रुद्र औ दो अश्विनीकुमार ये तेतीस देवता वैवस्वत मन्वंतर में कहे हैं विप्रचित्ति से दैत्य औ हिरण्याक्ष से सब दानव उत्पन्न भये हैं द्वीप औ समुद्रों करके युक्त भूमिका प्रमाण पचास कोटि योजन है औ नावकी भांति यह भूमिजलपर तरती है परंतु गलती नहीं इसके चारों ओर लोकालोक पर्वत है वहांतक सूर्य का प्रकाश पहुंचता है उससे आगे अंधकार है जिसको सूर्यआदि भी नहीं निवृत्तकर सकते नैमित्तिक प्राकृत आत्यंतिक औ नित्य यह चार भेद प्रलय के हैं यह संसार जिससे उत्पन्न होता है प्रलय के समय उसी में लीन होजाता है ऋतु के ऊपर जिसभांति वृक्षों के पुष्प फल आदि आपही उत्पन्न होते हैं उसीभांति संसार भी अपने समय पर उत्पन्न होता है हिंस्र अहिंस्र मृदु क्रूर धर्म अधर्म सत्य असत्य आदि कर्मों करके भावित जीव अनेक योनियों में प्राप्त होते हैं भूमि जलकरके जल तेज करके तेजवायु करके औ वायु आकाश करके वेष्ठित है आकाश अहंकार

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

करके अहंकार महत्तत्व करके महत्तत्व प्रकृतिकरके औ प्रकृति उस अविनाशी पुरुषकरके परिवृत्त है इसभांति केहजारों अण्ड उत्पन्न होते हैं औ नाशको प्राप्त होते हैं यह सुरनर किन्नर नाग आदि करके युक्त जगत् नारायणके उदरमें स्थितहैं शुद्ध बुद्धि पुरुष इसको भीतर बाहिरसे देखतेहैं परन्तु परमात्माकी मायाको कोईनहीं जानता ॥

तीसरा अध्याय ॥

राजा युधिष्ठिर पूछते हैं कि हे श्रीकृष्ण वह विष्णुभगवान् की माया कैसीहै जो सबजगत्कोव्यामोह करतीहै उसकाआप वर्णन कीजिये यह सुन श्रीकृष्ण भगवान् कहने लगे कि हे महाराज एकसमय नारदमुनि श्वेतद्वीप में नारायण के दर्शन को गये वहां नारायण के दर्शनकर उनको प्रसन्न देख नारद मुनि ने प्रार्थना करी कि महाराज आपकी मायाकैसीहै औ कहां रहती है आप उसकारूप मुझे दिखावैं यहनारद का वचनसुन विष्णु भगवान् ने हँसकेकहा कि हेनारद मायाकोदेखकरक्या करोगे और जोकुछ तुम्हारी इच्छाहोय सो मांगो तबफिरनारद जीने यही कहा कि महाराज आप कृपाकर अपनी मायाहीहम को दिखावैं और किसी बरकी हमको इच्छा नहीं इस प्रकार नारदका आग्रहदेख बिष्णु भगवान् ने कहा बहुत अच्छा आप हमारी माया देखिये यहकह नारदकी अंगुली पकड़ श्वेतद्वीपसे चले मार्ग में आय भगवान्ने वृद्ध ब्राह्मणका रूप धारा कि शिखा यज्ञोपवीत कमंडलु मृगचर्म धारे कुशा के पवित्रहाथोंमें पहिने वेदका पाठ करनेलगे औ अपनानाम यज्ञशर्मा रक्खा यहरूप धार नारदसहित जंबूद्वीप में पहुंच वेत्रवती नदी के तटपर शोभित विदिशानाम नगरी में गये उस नगर में धन

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

धान्य करके समृद्ध बड़ा उद्यमी पशुपालन में तत्पर बहुतखेती करने वाला शीरभद्र नामक एक वैश्यथा पहिले दोनो उसी के घरगये उसने भी देखा कि कोई दो ब्राह्मण हैं इनका आदर करना चाहिये यह बिचारकर उनका आसन आदि से सत्कार किया औ बोला कि हमारा अन्न जो आप को रुचै तो भोजन कीजिये तब हँसकर वृद्ध ब्राह्मणरूप भगवान् बोले कि तुम्हारे बहुत पुत्र पौत्र होंय सब खेती औ व्यापार में तत्पर रहैं औ नित्य तुम्हारे पशु औ खेतीकी वृद्धिहोयय्ह हमारा आशीर्वाद है इतना कह वहां से दोनो चले मार्ग में गंगाके तटपर ढिक्का नाम गांवमें गोस्वामीनाम ब्राह्मण रहताथा उसके समीपपहुंचे वहभी अपने खेतकी चिंता में लगरहा था उसको भगवान् ने कहा कि हम बहुत दूरसे आये हैं औ तुम्हारे अतिथिहैं हमको भोजन करावो यह उनका वचन सुन दोनोको संगले ब्राह्मण अपने घरआया वहां अपनी पत्नीसे कहा कि ये दो अतिथि हैं इनकी भलीभांति भोजनआदिसे शुश्रूषा करो उसने भी पति की आज्ञानुसार दोनो को स्नानकराय भोजन कराया भोजन कर रात्रि को सुखपूर्वक उत्तमशय्यापर सोये ब्राह्मणभीउनकी सेवामें रहा प्रभात उठ भगवान्नेब्राह्मणसे कहाकि हमतुम्हारे घरमें बहुतसुखसे रहेअब जाते हैं परमेश्वरकरे कितुम्हारीखेती निष्फल होय औ संतान भी न बढ़ै इतनाकह वहां से चलदिये मार्गमें नारदने पूछा कि महाराज वैश्यने कुछ शुश्रूषा न करी जिसको तो आपने उत्तम वरदिया औ इस ब्राह्मण ने इतनी सेवाकर यहशापरूपआशीर्वाद पाया इसमें क्याहेतुहै यहसुन भगवान् बोले कि हे नारदबर्षभर मत्स्यपकड़नेवालेकोजितना पापहोताहै उतना एकदिन हलजोतनेसे होता है इसीसे खेती करनेवाला नरकको जाताहै वह शीरभद्र वैश्य अपनेपुत्र पौत्रों

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by eGangotri Foundation USA

सहित इसी कार्य में तत्पर है औ घोर नरक में जायगा इसी से हमने उसके घरमें विश्राम न किया औ भोजनभी न किया औ इस ब्राह्मण के घरमें भोजन किया औ ऐसा आशीर्बाद दिया कि जिससे संसार जालमें न फँसै औ मुक्तिपावै इसप्रकारबात चीत करते हुये दोनो कान्यकुब्ज के समीप पहुँचे वहां एकअति रमणीय सरोवर देखा उस सरोवर की शोभा देख प्रसन्न हो भगवान्ने नारदसे कहा कि हे नारद यह उत्तम तीर्थहैऔ आज पुण्य तिथिहै इसलिये तुम स्नानकरो पीछे वशिष्ठजीके नामसे प्रसिद्ध श्री महोदयनाम इसनगरमें प्रवेशकरैंगे इतनाकहभगवान् उससरोवरमें झटपट एकगोतालगाय बाहिरनिकलआये औ नारदजी भी स्नानकरनेको सरोवरमें प्रविष्टभये स्नानकर जब बाहिरआये तो एक अतिरूपवती स्त्री बनगये जिसकेबड़े२ नेत्र चन्द्रसामुख कामदेवके पाशोंके समान कर्ण दर्पणसेकपोल तिल पुष्पके समान नासिका कामधनुषसे भ्रू हीरेसे दांत मूंगा के तुल्य अति रक्तवर्ण अधर मयूर के कलापके समान केशपाश शंखकी भांति तीनरेखाओं करके शोभित कंठ माधवी लता की भांतिकोमल औ सरल जिसके भुज रक्तवर्णके नख औ पतली२ अँगुलियोंसे शोभित कमलसे भी कोमल औ अरुण जिसकेहस्त पीन ऊंचे कठोर गोल अविरलश्लक्षण कलशके समानजिसके स्तन मानो चक्रवाकों का जोड़ा होय मुष्टिग्राह्य जिसका मध्य अति गम्भीर औ वर्तुल जिसकीनाभि तीनवलियोंकरकेभूषित जिसका उदर अतिसुन्दर जिसकी रोमावली कामदेव का निवासस्थान अतिविस्तीर्ण जिसकानितम्ब नितम्बके मध्यमें अति शोभितजिसकेकुकुन्दर अर्थात्नितम्वकूपकदली स्तंम्बके समान जिसके ऊरु सीधी रोम रहित औ कोमल जिसकी जांघ दोनो गुल्फ अर्थात् टंकने जिसके अतिगूढ़ रक्तवर्ण की अंगुली औ नु-

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

न्दर नखोंसे भूषित रक्तकमलके समान जिसके चरण जैसी भांति भूमिपरटिकजाय इस प्रकार सबउत्तमलक्षणोंकरके युक्त जगत् को व्यामोह करनेवाली अति रूपवती स्त्री सरोवर से निकली जिसप्रकार समुद्र से लक्ष्मी उसको देख भगवान् तो अन्तर्द्धानभये औ वहस्त्रीभी यूथच्युतहरिणीकीभांति इधरउधर भयभीतहो देखनेलगी इसी अवसर में अपनी सेना साथलिये राजा तालध्वज वहां आया औ उस नारीको देख कामातुर हो चिंतन करनेलगा कि यहस्त्रीकौनहै कोई देवांगनाहै किअप्सरा है इसका रूपही देख मूर्च्छा होतीहै इतनाबिचार कर राजा ने उससे पूछा कि हे बाले तू कौनहै औ इसस्थान में कहांसे आई है यह राजाकावचनसुन उसने कहाकि महाराज मैं मातापिता से हीन औ निराश्रयहूं बिवाहभी मेरा नहींभयाहै अब आपके शरणहूं यहसुनतेही प्रसन्नहो राजाने उसको अपने पीछे घोड़े पर चढ़ालिया औ अपनी राजधानी में लाकरविधिपूर्वक उससे बिवाहकिया बिवाहके अनन्तर महलोंमें उपवनोंमें सरोवरों के तीरोंपर पर्वतके शृङ्गोंपर नदी समुद्र आदि के तटों पर ऊंचे २ प्रासादों पर उस उत्तम स्त्री के साथ राजा बिहार करने लगा इसप्रकार बिहार करते २ एकदिन की भांति बारहबर्ष बीतगये तेरहवें वर्षमें उसको गर्भरहा औ समय पूराहोनेपर एकअलावु अर्थात् तूंवा उत्पन्नभया जिसमें सैकड़ों छोटे २ बालक थे वेसब घृत कुण्डोंमें छोड़ेगये औ थोड़े दिनोंमेंहीं बड़ेपराक्रमी हृष्टपुष्ट होगये उन सबके बिवाह भये औ पुत्र पौत्रों की बहुत वृद्धि भई वे सब अहंकारी परस्पर बिरोधी औ राज्य की कामना वाले थे कुछ कालके अनन्तर राज्यके लोभसे कौरव पांडवोंकी भांति उनका परस्पर युद्धहुआ औ यादवों के तुल्य सबके सब नष्ट होगये इस प्रकार अपने कुलका संहार देख वह स्त्री शिव

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

औ छाती पीट २ बिलाप करनेलगी औ मूर्च्छितहो भूमि पर गिरी औ राजा भी शोकसे अति पीड़ित हो रोदन करता था इस अवसर में ब्राह्मण का वेश धार देवताओं सहित विष्णुभगवान् आये औ राजा रानीको उपदेश करनेलगे कि तुमदोनो शोक कर बहुत रोदन मतकरोयह विष्णुमाया ऐसेहीहैं सैकड़ों चक्रवर्ती औ हजारों इंद्र दीपक की भांति कालरूप प्रचंडपवन ने नष्ट करदिये जो पुरुष समुद्र सुखाने को भूमि पीसकर चूर्ण कर डालने को पर्वत पीठपर उठाने को समर्थ भये वेभी समय पाय कालके कराल मुखमेंगये त्रिकूटपर्वत जिसका दुर्गअर्थात् किला समुद्र उसकी खाई लंकाराजधानी राक्षस जिसके योधा वह सब शास्त्र औ वेद जाननेहारा रावण भी न रहा युद्धमें घरमें पर्वतपरसमुद्र में चाहे जहांजाय जो भावी है वहीहोताहै पाताल में जाय इंद्रलोक में प्रवेश करै मेरु पर्वतपर चढ़ जाय मंत्र औषध शस्त्र आदि करके चाहे जितनीअपनी रक्षाकरैपरंतु जो होनाहोता है वहहोताही है इसमें कुछ संदेह नहीं मनुष्यों कोभाग्यानुसार जोकुछ शुभअशुभ प्राप्तहोना होताहै वहअवश्यही होता है हजारों उपायकरो परंतु भावी किसीप्रकारनहीं टल सक्ती कोई आंसू टपकाय रोता है कोई बड़ी प्रसन्नता से नाचता है कोई हृदय को हरनेहारा गीत गाता है कोई धनके लिये अनेक प्रकारके जाल रचता है इस भांति यहसंसार एक प्रकारका नाटकहै औ सबजीवअनेकरूप धारनेवालेनटहैं इतना उपदेश कर उस रानीका हाथ पकड़ भगवान् ने कहाकिविष्णु माया देखली उठो अब स्नान कर अपने पुत्र पौत्रों का और्ध्व दैहिककरो इतनाकह उसीपुण्यतीर्थ में उसकोस्नानकराया स्नान करतेही स्त्री रूप छोड़ नारद मुनि अपने रूप को धारण करते भये राजा ने भीअपनेमंत्री औ पुरोहितों सहित देखाकि

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

जटाधारे यज्ञोपवीत पहिने दंड कमंडलु हाथों में लिये खड़ाऊंओं पर चढ़े बड़े तेजस्वी एक मुनिहैं मेरी रानी नहीं उसी समय भगवान् नारद का हाथ पकड़ वहां से आकाशमार्गकरके चले औ क्षणमात्र में श्वेतद्वीप पहुंचे औ नारद से कहा कि हे देवर्षि हमारी माया देखी नारद जी ने भी हंसकर उनको प्रणाम किया औ भगवान् की आज्ञापायतीनों लोकों में बिचरने लगे इतनी कथा सुनायश्रीकृष्ण बोले कि महाराज यह विष्णु माया का हमने संक्षेप से वर्णन किया है इस माया के प्रभाव से संसारके जीव पुत्र कलत्र धन आदिमें आसक्त होकर कोई रोते हैं कोई हंसते हैं कोई गाते हैं औ अनेक प्रकार की चेष्टा करते हैं ॥

चौथा अध्याय ॥

राजा युधिष्ठिर पूछते हैं कि हे श्री कृष्णचंद्र यह जीवकौन से कर्म से देवता मनुष्य औ पशु आदि योनि में जन्मलेता है औ अति दारुण गर्भवास का क्लेश कैसे सहता है गर्भ में क्या खाता है स्वरूप औ धनवान् किस कर्म से होता है औ पंडित पुत्रवान् त्यागीहोकर भी अल्पायुष् क्यों होजाता है सुखपूर्वक क्यों कर मरण होता है औ शुभाशुभ कर्म का भोग किस प्रकार जीव करता है यह आप विस्तार से वर्णन करैं यह राजा का प्रश्न सुन श्रीकृष्ण भगवान् कहने लगे कि महाराजउत्तम कर्म से देवयोनि मिश्रकर्म से मनुष्ययोनि औ केवल अशुभ कर्म से तिर्यक्योनि में जीव जन्म लेता है इस धर्म अधर्म के निश्चय के लिये श्रुतिहीप्रमाण है पाप से पापयोनि औ पुण्य से पुण्ययोनि प्राप्त होती है ऋतु काल में निर्दोष शुक्र वायु करके प्रेरित शोणित के साथ एकताको प्राप्तहोता है शुक्र के

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

साथही कर्मोंकरके प्रेरित जीव भी योनि में प्रविष्टहोताहै एक दिन में वह शुक्र शोणित मिलकर कलल बनता है पांच रात्रि में कलल वुद्बुद रूप होजाता है सात रात्रिमें वुद्बुद की मांस-पेशी बनतीहै चौदह दिनमें वह मांसपेशी मांस औ रुधिर से व्याप्तहोकर दृढ़ होजाती है पचीस दिन में उस पेशी में अंकुर निकलते हैं महीने में उस अंकुरोंके पांच २ भाग होजातेहैं औ चार मासमें वेही अंकुरोंके भागअंगुली बनजाते हैं पांचमहीनों में मुख नासिका औ कर्ण बनते हैं छमहीने में दंतपंक्ति नखऔ कर्णोंके छिद्र बनते हैं सात महीने में गुदालिंग अथवा योनि औ नाभि बनते हैं औ अंगोंमें संकोचभी होताहै आठ महीने में अंग प्रत्यंगसब संपूर्णहोजाते हैं औ शिरमें केशभी आजातेहैं माताके भोजन का रस नाभि के द्वारा बालक के शरीरमें पहुंचता है उसीसे उसका पोषण होता है गर्भ में स्थित जीव सब सुखदुःख समझता है औ यह बिचार करता है कि मैं अनेक योनियोंमें जन्मा औ बारंबार मृत्यु वश भया अब जन्महोतेही फिर संसार बंधनमें प्राप्तहूंगा इस प्रकार अनेक बिचारकरता हुआ औ मोक्ष का उपाय सोचताहुआ जीव अति दुःखी गर्भमें रहता है पहाड़के नीचे दबजानेसे जितनाक्लेश जीव को होय उतना जरायुसे वेष्ठित होने करके होता है समुद्र में डूबने से जो दुःखहोय वही दुःख गर्भके जलमें भीगनेसे होता है तप्त लोह स्तंभसे बांधने में जीव जो क्लेश पाताहै वही गर्भमें जठराग्नि के ताप से होताहै तपाईहुई सूचियोंसे वेधने करके जो व्यथा होतीहै उस से आठगुणी अधिक गर्भमें जीवको होती है गर्भवास से अधिक कोई दुःख जीवोंके लिये नहीं है गर्भवाससे कोटिगुण अधिक क्लेश जन्मते समय योनि यंत्र के पीड़न से होताहै उस दुःखसे मूर्च्छा होजातीहै सूति मारुत की प्रेरणा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

से गर्भ के बाहिर निकलताहै जिस प्रकार कोल्हूमें पीड़न करनेसे तिल निस्सार होजाते हैं इसी प्रकार शरीरभी योनियंत्र के पीड़न से निःसत्व होजाताहै मुखरूप जिसका द्वारहै दोनों ओष्ठ कपाट हैं सब इंद्रिय गवाक्ष अर्थात् जाली झरोखे हैं दंत जिह्वा गलबात पित्त कफ जरा शोक काम क्रोध तृष्णा राग द्वेष आदि जिस में उपकरण हैं ऐसा यह देह रूप अनित्य गेह नित्य आत्मा का निवास स्थानहै शुक्र शोणितके संयोग से शरीर उत्पन्न होताहै औ नित्यही मूत्र विष्ठा आदिसेभरा रहताहै इस लिये अत्यंत अपवित्र है जिस प्रकार विष्ठा से भरा हुआ घट बाहिर के धोनेसे शुद्ध नहीं होता इसीभांति यह देह भीस्नान आदि से शुचिनहीं होसक्ता पंचगव्यआदि शुचि पदार्थ जिसके संगसे अशुचिहोजाते हैं उससे अधिक और कौन पदार्थ अशुचिहोगा उत्तम भोजन पान आदि देहके संसर्गसे मलरूपहोजाते हैंफिर देहकी अपवित्रता क्यावर्णनकरैं बाहिरसे चाहेजितना देहको शुद्धकरो परंतु भीतरतो कफ मूत्र विष्ठाआदि भरेहीरहैंगे चाहेजितने सुगन्ध देहमें लगावोपरंतु कभी इस देहका मालिन्य दूरनहीं होता यह आश्चर्य है कि सब मनुष्य अपने देहका दुर्गंध सूंघकर नित्यअपना मलमूत्र देखकर औ नासिका का मल निकालकरभी इस देहसे बिरक्त नहीं होते औ उनको देहमें घृणा नहीं उत्पन्नहोती मोहकाबड़ा प्रभाव है कि शरीर के दोष देखकर औ इसका दुर्गंध सूंघकरभी इससे ग्लानिनहीं होती जन्म होतेही बाहरका पवन लगने से सब पूर्व जन्मका स्मरण जातारहता है औ जीव संसारके व्यवहार में आसक्तहो अनेक दुष्कर्म करतेहैं औ अपनेको तथा परमेश्वरको भूलजाते हैं आंखों के होते नहीं देखते बुद्धिकेहोते भला बुरा नहीं समझते सूधे मार्गमें भी उनके पैर खिसलतेहैं

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by eGangotri Foundation USA

यह सब मोहमहिमाहै दिव्यदर्शी महर्षियों ने यह गर्भका वृत्तांत प्रकट कियाहै इसको सुनकर भी मनुष्यों को वैराग्यनहीं उत्पन्न होता औ अपना कल्याण नहींकरते यह बड़ाही आश्चर्यहै बाल्यावस्थामेंभी केवलदुःखहीहै कि बालक अपनाअभिप्रायनहीं कहसक्ता औ जो चाहै वहकामनहींकरनेपाता इससेनित्यव्याकुल रहताहै दांत ऊगने के समय बालक बहुत क्लेशभोगतेहैं औ भांति २ के रोग औ बालग्रह उनको सताते हैं क्षुधा तृषा से पीड़ितहो रोदनकरते हैं मोहसे बालक बिष्टा आदि भी भक्षण करलेते हैं फिर कर्णवेध के समय दुःख होता है अक्षरारम्भ के अवसरमें गुरुसे बड़ाही त्रासहोताहै माता पिता ताड़नकरतेहैं युवावस्थामें भी सुखनहीं अनेकप्रकार की ईर्षा मनमें उपजती है कामदेव सताताहै रात्रिको निद्रा नहींआती औ धनकी चिंता से दिनमें भी चैननहीं पड़ता स्त्रीसे संग करके वीर्य पात करने में कुछ विशेष सुख नहीं इतनाही सुख है जितना पकेहुये गंड अर्थात् गूमड़ेके फूटजानेसे होताहै अथवा मूत्र विष्टाआदित्याग करनेसे होताहै इससे अधिक नहीं विचारकरो तो सबदोषों के निवासस्थान अतिअशुचिनारी के देहमें कोई वस्तुसुखदेनेहारी नहीं है अपमान ने सन्मान वियोग ने प्रियसंगम औ बुढ़ापे ने यौवन नष्ट किया अब सुख काहेसेहोय जो पुरुष युवावस्था में नारियोंको अतिप्रिय होताहै वही जब बूढ़ा होजाय शरीरकांपने लगे सबअंग जर्जरहोजायँ तब किसीकोभलानहींलगता इतनी दुर्दशादेखकरभी पुरुषोंको वैराग्यनहींउपजताबुढ़ापेमेंदुराचार पुत्रपौत्रआदि अवज्ञाकरते हैं तब अत्यन्त दुःख होता है बुढ़ापे में कोई कर्म नहीं सिद्ध होसक्ता इसलिये युवावस्थामेंही अपना हित साधनकरै वात पित्त आदिके वैषम्य अर्थात् न्यून अधिक होनेसे अनेकरोग होतेहैं औ यहशरीर रोगोंका घरहै फिरसुख

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कैसेहोय एकसौएक मृत्यु इसदेहके हैं उनमें एक तो कालमृत्यु है बाकी सौमृत्यु आगंतुक अर्थात् अकालमृत्युहैं आगंतुकमृत्यु जप होम औषध आदि से टल भी जाते हैं परन्तु कालमृत्यु का कोई उपायनहीं अनेक प्रकारके रोग सर्प शस्त्र बिष क्रोधआदि आगंतुकमृत्यु के द्वारहैं जब कालमृत्यु आयपहुंचे तब धन्वंतरि भी कुछनहीं करसक्के औ औषध तंत्र मंत्र तपदान रसायन योग आदि भी रक्षानहीं करसक्के मृत्युके समान कोईदुःख जीवोंको नहींहै पुत्र स्त्री मित्र राज्य ऐश्वर्य धनआदि सबसेमृत्युवियोग करादेताहै औ बड़े २ बैरभी मृत्युसे निवृत्त होते हैं सौवर्ष का आयुष पुरुषकाहै परंतु कोई अस्सी कोई सत्तर और प्रायःसाठ बर्ष मनुष्य जीतेहैं औ बहुतसे साठसे पहिलेही मृत्युवश होतेहैं जितनामनुष्यका आयुष्होय उसकेआधेको तो रात्रि हरलेतीहै बीसबर्ष बाल्य औ बुढ़ापे में वृथा बीतते हैं यौवन अवस्थामें अनेक प्रकार की चिन्ता औ कामकी व्यथा रहतीहै इसलिये वह समय भी निरर्थकही जाता है इसभांति यह आयुष् समाप्त होजाताहै औ मृत्युआयपहुंचताहै मरणके समय जोदुःखहोताहै उसकी कोई उपमा नहीं देसक्के हे माता हे पिता अरेभाई इसभांति पुकारतेहुये को मृत्युग्रसलेताहै जैसे मेंडकको कालासर्प व्याधिसे पीड़ित खाटपरपड़ा इधर उधर हाथ पैर पटकता है लंबे सांस लेताहैखाटसेभूमिपर औकभी भूमिसे खाटपर जाता है परन्तु कहीं चैननहीं पड़ता कंठमें घुर २ शब्द होनेलगताहै मुख सूखता जाता है शरीर मूत्र बिष्टा आदिसे लिप्तहोजाता है वाणी बंध होजातीहै पड़ा २चिंता करता है कि मेरेधनको कौन भोगैगा औ मेरे कुटुंब की रक्षा कौन करैगा इसप्रकार अनेक यातना भोग कर मनुष्य मरता है औ इस देहसे निकलतेही जवी दूसरे देह में प्रविष्ट होजाता है मरण से अधिक दुःख

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

विवेकी पुरुषों को याचन अर्थात् मांगनेसे होता है देखो विष्णु भगवान् भी बलिको याचना करने से वामन होगये फिरऔर तो ऐसाकौन है जो याचना करनेसे लाघवको न प्राप्त होय आदि अंत औ मध्य में दुःखही है बहुत खाओ तो दुःख थोड़ा खाओ तो दुःख किसी समय भी सुखनहीं है क्षुधा सब रोगों में प्रबल है औ इसका औषध अन्नहै इसलिये अन्न भी सुख का साधन नहीं प्रभात उठतेही मूत्र विष्टा आदिकी वाधा मध्याह्न में क्षुधा तृषाकीपीड़ा औ पेट भरनेपर काम की व्यथा होती है रात्रिको निद्रा दुःखदेती है धनके संपादन में दुःख संपादित धनकी रक्षा करने में दुःख फिर उसके व्यय करनेमें अतिदुःख होताहै इससे धन भी सुखदायक नहीं चोर जल अग्नि राजा औ यज्ञ इनसे सदा धनवानों को भय रहता है जिस प्रकार मांसको आकाशमें फेंको तो पक्षी भूमि पर श्वानआदि जीव औ जलमें फेंको तो मत्स्य खाजाते हैं इसीप्रकार धनवान् को भी सर्वत्र भक्षण करते हैं संपादन के समय दुःख संपत्ति के समय मोह औ नाश होजानेपर संताप धनसे होताहै इसलिये किसी कालमेंभी धन सुखका साधन नहीं हेमंतऋतु में शीत का दुःख ग्रीष्म में दारुण संताप का औ वर्षाऋतु में वर्षा का दुःख होता है इसलिये कालभी सुखदायक नहीं विवाहमेंदुःख स्त्री गर्भवती होय तब दुःख प्रसव के समय दुःख औ पति के विदेश गमन में दुःख संतान के दांत नेत्र आदि के दुखने से दुःख इसभांति स्त्री भी सदा व्याकुल रहती है कुटुंबियों को ये चिंता रहती हैं कि गौ नष्ट होगई खेतीसूखगई भृत्य चलागया घरमें पाहुन आया स्त्री के अभी संतान भईहै इसके लिये र-सोई कौन बनावैगा इत्यादि हजारों चिंता कुटुंबियों के लगी हैं जिनसेउनके शील श्रुत बुद्धि औ संपूर्ण गुण नष्ट होते जाते हैं

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

जिस भांति कच्चे घड़े में जल घड़े सहित नष्ट होता है इसी भांति गुणोंसहित देह कुटुंबी मनुष्य का नाशको प्राप्त होताहै राज्य भी सुखका हेतु नहीं जहां नित्य संधि विग्रह की चिंता लगीरहै औ पुत्रसे भी भय बना रहै वहां सुखका लेशभी नहीं अपनी जातिसे सबको भय होता है जिस प्रकार एकमांसखण्ड के अभिलाषी श्वानोंको परस्पर भय रहता है इसभांति संसार में कोई सुखी नहीं ऐसा कोई राजा नहीं जो सबको जीत सुख से राज्य करै एक को दूसरे से भय रहताही है इतना कह श्रीकृष्ण भगवान् बोले कि हे महाराज यह कर्ममय शरीर जन्म से लेकर दुःखी है जो पुरुष जितेंद्रिय औ व्रत उपवास आदिमें तत्पर रहते हैं वे जन्मांतरमें सुखी होते हैं॥

पांचवां अध्याय॥

श्रीकृष्णभगवान् कहते हैं कि हे महाराज अधम कर्मकरने से जीव घोर नरक में गिरते हैं औ अनेक प्रकारकी यातनाभोगते हैं उस अधम कर्मकोही पाप औ अधर्म कहते हैं चित्तवृत्ति के भेद से अधर्म के भेद जानने चहिये स्थूल सूक्ष्म अति सूक्ष्म आदि भेदों करके करोड़ों प्रकारके पापहैं परंतु हमबड़े २ पापों का संक्षेपसे वर्णन करते हैं। पर स्त्री का चिन्तन परधनहरण की इच्छा दूसरे का अनिष्टचिन्तनऔअकार्य में अभिनिवेश ये चार मानस पाप हैं असत्य अप्रिय परनिंदा औ पैशुन्य अर्थात् चुगली ये चार वाचिक पाप हैं अभक्ष्य भक्षण हिंसा मिथ्या कामसेवन औ परधन हरण ये चार पाप कायिक हैं इन कर्मों के करनेसे नरक प्राप्ति होती है औ जो पुरुष विष्णु भगवान् से द्वेष रखते हैं वे भी घोर नरकमें पड़ते हैं ब्रह्महत्यासुरापान सुवर्ण की चोरी औ गुरु स्त्री गमन ये चार महापातक हैं इन

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पातक करनेवालों का संसर्गी मनुष्य पांचवां महापातकीगिना जाता है ये सब नरक को जाते हैं जो पुरुष ब्राह्मण को आशा देकर पीछे क्रोधसे लोभसेद्वेषसे अथवा भयसे निराश करदेतेहैं उनको ब्रह्महत्या का पाप होताहै जो विद्याके बलसे ब्राह्मणों का तिरस्कारकरै वह भी ब्रह्महाहैजोअपनी मिथ्या स्तुतिकरके अपने गुणोंका उत्कर्ष दिखावै औ गुरुओं के प्रतिकूल हो वह ब्रह्महा है क्षुधातृषा से व्याकुलब्राह्मण भोजन करनेलगे उस समय जो बिघ्न करै वह ब्रह्महा है पिशुन सब लोकों के छिद्र ढूंढ़नेहारा औ क्रूरपुरुष भी ब्रह्मघ्न के समानहै तृषाकरकेपीड़ित गौ जल पीने लगे उस समय जो बिघ्न करै वह ब्रह्महत्या का भागी होताहै दूसरे पर जो मिथ्यादोष आरोपण करै औ क्रोधी होय वह ब्राह्महा है देवता ब्राह्मण औ गौओं की जो वृत्ति हरै वह ब्रह्महा है ब्राह्मणका न्यायोपार्जित धन हरै तो ब्रह्महत्या के समान पाप होय अग्निहोत्र का त्याग मातापिता का त्याग झूठी साक्षी मित्र द्रोह गौओं के मार्गमें बनमें औ ग्राम आदि में अग्नि लगादेना ये सब घोर पाप सुरापानके समानहैंस्त्रीहाथी घोड़ा गौ भूमि चांदी रत्न ओषधी चंदन अगुरु कपूर कस्तूरीरेशमी कपड़ा इन सबका चोरना सुवर्ण स्तेयके तुल्यहै वरयोग्य कन्या का विवाह न करना पुत्र मित्र आदिस्त्रीभगिनी कुमारी नीच स्त्री औ दूसरे वर्णकी स्त्री इनके साथ संग करना गुरु स्त्री गमन के समान है महापातकों के तुल्य ये सब पातक कहाते हैं। अब उपपातकों का वर्णन करते हैं। ब्राह्मणको कोईपदार्थ देना कहकर फिर नहीं देना ब्राह्मणका धन हरना अत्यंत अहंकार अति क्रोध दांभिकत्व कृतघ्नताकृपणता विषयोंमें अतिआसक्ति सत्पुरुषों से द्वेषपर स्त्री हरण कुमारीगमनआश्रमआदिको पीड़ा देनास्त्री पुत्र आदिका बेचना तीर्थयात्रा व्रत उपवास यज्ञ

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

आदि का फल विक्रयकरना स्त्रीधनसे निर्वाह करनास्त्रीकीरक्षा न करना मद्यपान करनेहारी स्त्रीसेसंग करना ऋण लेकर न देना निंदितधनका ग्रहण करना बिष देना मारण उच्चाटनविद्वेषणआदि अभिचार कर्मकरना मूल्यलेकर पढ़ाना औ पढ़ना सब वस्तु भक्षण करना देवता अग्नि साधु गौ ब्राह्मणराजाऔपतिव्रताकी निंदा करनादुःशीलतानास्तिकतारजश्वला पशुस्त्री औ नीच स्त्रीसे मैथुनकरना सबकालमेंमैथुनकरना स्त्री पुत्र मित्रआदिकी प्रीतिमें विघ्न करदेना प्रतिज्ञाभंगकरना तलावबंधरास्ता पुल आदिको तोड़देना एक पंक्ति में भोजनका भेद करनाये सब उपपातक हैं इनपापोंके करनेहारे पुरुषों का जो संसर्ग करैं वेभी पातकी होतेहैं परस्त्री को दूषित करनेहारे पर द्रव्य हरनेहारे ब्राह्मणों कोअनेक प्रकारों से दुःख देनेवालेसुरापान करनेवाले द्विजहोकर शूद्रकी सेवामें तत्पर गोष्ट जलअग्नि रत्थ्या अर्थात् गली औ वृक्षकीछाया इनको नाश करनेहारेझूठा पत्र लिखनेवालेझूठे साक्षी धनुष शस्त्रऔ शय्याबेचने वाले पशु दमन करनेहारे अर्थात् बैलबधिया करनेहारे स्वामी भृत्य औ गुरुसे द्रोह करनेहारे मायावी शठ भार्या पुत्रमित्र बालक वृद्ध दुर्बल रोगी भृत्य अतिथि बंधु आदिकोभूखा मारनेवाले एकाकी मीठा भोजन करनेवाले बैलोंके साथ गौ को भी जोतने वाले बकरी भेड़ भैंसआदिसे जीविकाकरनेवाले औ शस्त्रसेवृत्तिकरके निर्वाह करनेहारे नरक को जातेहैं जो अपने आश्रम में आये भूखे प्यासे औ थके हुये अतिथिका सत्कारनहींकरते औ बालक वृद्ध अनाथ विकल दीन रोगी दुर्बल आदि पर दयानहींकरते वे नरकगामी होते हैं शिल्पी सुनार वैद्यआदिभी नरकके अधिकारी हैं जो ब्राह्मण राजासे दानलेतेहैं वे नरकको जातेहैं परदारगामी औ चोरकोजोपापहोताहै वहीरक्षा न करनेवालेराजा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

को होताहै औ उससे भी अधिक उस ब्राह्मणको पातकलगता है जोराज प्रतिग्रह ग्रहणकरैघी तेल अन्न पान मधुमांससुरागुड़ क्षार इक्षु शाक दही मूल फल तृण काष्ठ पुष्प पत्र औषधकांस्य पात्र जूता छतरी शकट आसन शय्या तांबा सीसा रांग कांसी कर्पास वाद्य घरके उपकरण और भी छोटी मोटी बस्तु जो पुरुष किसीकीहरैं वे सब नरककोजातेहैं सरसोंके समानभी पराई बस्तु चोरे तो नरकमें अवश्यही पड़ै इसभांतिके पापकरनेहारे मनुष्यों को मरण के अनंतर यमदूत नरक में लेजातेहैं औ यमराज उनको दंडदेताहै औ जो पुरुष भूलसे पाप करतेहैं उनको गुरु शासन करके प्रायश्चित्त करादेता है इसलिये वे नरक नहीं देखत औ परदारगामी तथा चोर आदिको राजादंडदेताहै औ जो गुप्त पापी होय तो यमही शासन करताहै प्रथमतोइन पापों से बचै औ जो कभी भूलसे बनभी पड़ै तो प्रायश्चित्त कर देवै जो पुरुष मन वचन कर्मसे पापकरैं दूसरे से करावैं अथवा पाप करतेहुये पुरुषों का अनुमोदन करैं व सब नरक को जाते हैं ये पापकेभेद संक्षेपसे वर्णन कियेहैं इसभांति हज़ारों प्रकार के पाप और भीहैं मन वचन और शरीर से अनेकप्रकारकेपाप करनेहारे नरक में पड़ते हैं औ यम यातना भोगते हैं औ जो पुरुष उत्तम कर्म करते हैं वे स्वर्ग में सुखसे आनंद भोगते हैं॥

छठा अध्याय॥

श्रीकृष्ण कहतेहैं कि महाराज इनपापोंके करनेसे जीवघोर नरकोंको जातेहैं यमराजको सभामें सबके शुभ अशुभकर्मोंका विचारचित्रगुप्त आदिकरतेहैं औ कर्मानुसार फलभोगनापड़ता है इसलिये सदा शुभ कर्महो करने चाहिये किये कर्म का बिना भोग किसी प्रकार क्षय नहीं होता अब पुण्य कर्मोंकेफल

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

का वर्णन करते हैं जो ब्राह्मणों को जूता अथवा काठकी खड़ाऊं पहिनावे वह उत्तम विमानमें बैठकर यमलोक को जाताहै बाग लगानेहारे कुआं बावड़ी तलाव आदि बनवाने वाले उत्तमविमानों पर बैठ ठंडी २ छाया में जाते हैं देवता गुरु अग्नि ब्राह्मण माता पिता आदिकी सुश्रूषा करनेहारे बड़े सत्कारपूर्वक उत्तम विमान में आरूढ़ हो गमन करतेहैं दीपदान करनेहारे प्रकाश में जातेहैं अन्न औषधी आदि देनेहारे सुखपूर्वकजाते हैं बाहन दान करनेहारों को पैरोंसे नहीं चलनापड़ता भूमिदान करने वाले सब भांति सुखसे जाते हैं अन्नदानसे खातेपीते सुखसे विमान में बैठे जातेहैं सब दानों में अन्नदान उत्तम है जिससे शीघ्रही प्रसन्नता होजाय तीनों लोकों का जीवन अन्न है इसलिये अन्नदानके समान कोई दाननहीं अन्न बाहन गौ वस्त्र भूमि शय्या छत्र औ आसन इन आठोंका दान परलोकमें हितप्रदहै परन्तु इन सबमें अन्न दान प्रधान है धर्म करनेहारे सुख पूर्वक यमलोकमें जाते हैं औ पापी अनेक प्रकारके दुःखभोगते वहां पहुँचते हैं इसलिये सदा धर्महीं करनाचाहिये छियासीहज़ार योजन जाकर यमराज के नगर में पहुँचते हैं पुण्यात्माओं को यही मार्ग थोड़ासा जानपड़ताहै औ पापियोंके लिये बहुत लम्बा होजाताहै पापी जिस मार्गमें चलते हैं उसमें तीषे कांटे कंकर रेता कीचढ़ गढ़े औ तरवारकी धारके समान तीक्ष्ण पत्थर पड़ेहैं औ लोहेकी सुई बिखरी हैं कहीं उस मार्ग में अग्नि लगाहै कहीं सिंह वृक व्याघ्र मक्षिका सर्प वृश्चिक आदि दुष्ट जंतु उसमें फिरते हैं किसी ओर मस्तहाथी तीषेसींगोंवालेमतवाले बैल औ पर्वताकार बन महिष घूमते हैं जिनको देखतेही प्राण मुक्त होजायँ कहीं डाकिनी शाकिनी रोग औ बड़ेक्रूर राक्षस क्रीड़ा कर रहेहैं उसमार्ग में कहीं छाया औ जल नहीं है

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

इसप्रकार के भयंकर मार्ग में यमदूत पापियोंको लोहकीशृंखलासे पैरोंको बांध घसीटते हुये लेजाते हैं उन पापियोंकी उस समय यहदशा रहतीहै कि एकाएकी पराधीन मित्रबंधुआदि से रहित अपने कर्मोंको शोचतेहुये औ रोते हुये वस्त्र हीन भूख प्यासके मारे कंठ तालु ओष्ठ सूख जाते हैं भयभीत औ यमदूत उनको बार बार तर्जन करते हैं औ पैरोंमें अथवा चोटीमें सांकल से बांध खैंचते लेजाते हैं उनमें कईयों को अधोमुख औ कईयों को ऊर्द्ध्वमुख करकेखींचतेहैं कईयोंकोपिछलीओर दोनों भुजा बांधकर लेजाते हैं कोई रोतेहुये अति दुःखी चोरकी भांति बँधेहुये जातेहैं यमदूत अपने शस्त्रोंसे किसीकी नाक काटते हैं किसीके कान किसीकी आंख फोड़ते हैं औ उनके अंगोंको तीखे शस्त्रों से छीलते हैं औ रुधिरकी धार उनकी देहसेबहतीहै इस प्रकार दुःख भोगते २ यमलोक में पहुंचते हैं पुण्य करने वाले उत्तम मार्गसे सुखपूर्वक यमलोक में पहुंच सौम्य स्वरूप यमराजका दर्शन करते हैं औ यमराज भी उनका बहुत आदरकर कहतेहैं कि हेमहात्माओ आपने दिव्य सुखकी प्राप्तिके लिये बहुत पुण्य कियाहै इसलिये इस उत्तम विमानपर चढ़ स्वर्ग को जायँ औ दिव्य अप्सराओं से विहारकरैं बहुत कालस्वर्गमें उत्तम भोग भोगकर पुण्यके क्षयहोनेपर यहांआय जो कुछतुमने थोड़ा पाप कियाहै उसका फल भोग लेना वही यमराज पापी पुरुषों को अति भयंकर देखपड़ताहै कि ऊपर को खड़े जिसके केशलंबी दाढ़ी नीलांजन के पर्वत समान जिसका अति क्रूररूप अठारहों भुजों में भांति २ के शस्त्रलिये क्रोध से जिसका ओष्ठ फरकरहाहै मस्तक में भृकुटी चढ़रहीहै रक्तवर्ण की पुष्पमाला औ वस्त्र धारण कियेहै मानो अभी सबसृष्टिको ग्रास करलेता है यमराज के समीपही कालाग्निके समान क्रूर कृष्णवर्णमृत्यु

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

विराजमान हैं औ काल कृतांत औ मारी महामारी नामककाल की दो शक्ति तथा अनेक प्रकारके रूप धारणकिये संपूर्णरोग वहां बैठे हैं औ सबोंने शक्ति शूल अंकुश पाश चक्र खड्ग वज्र दंड आदि शस्त्र हाथोंमें धाररक्खे हैं औ कृष्णवर्ण भयंकर बड़े बलवान् औ नानाविधि शस्त्रास्त्र हाथोंमें लिये हज़ारोंयमदूत चारों ओर खड़े हैं पापी जीव इस रूप में स्थित यमराज को देखते हैं औ यमराजके समीप बैठेहुये चित्रगुप्त उनको भर्त्सन करके कहते हैं कि अरे तुमने ऐसेबुरे कर्म क्यों किये तुमने पराया धनहरा रूप के गर्वसे परस्त्रियों का धर्षण किया औरभी अनेक प्रकारके पातक उपपातक तुमने किये अब अपने कर्मका फल भोग करो कोई तुम्हारी रक्षा नहीं करसक्ता इसी प्रकार राजाओं को चित्रगुप्त कहते हैं कि अरे राजाओ तुमने थोड़ेदिन राज्य पाकर इतना दुष्कर्म क्यों किया राज्यलोभसे दीन प्रजा का पीड़न किया औ अन्यायमें प्रवृत्तरहे अनेकप्रकार के विषयों में आसक्त होकर बहुत पापकिये अब वह राज्य औ रानी राजकुमारआदि कामनआवेंगे जिनकेलिये इतनीभारी पापकीगठरी बांधी वे सब वहांहीं रहे औ तुम एकाकी यहांआये अबतुम्हारा वह बल औ पराक्रम कहांहै जिससे अनाथ प्रजा को सताते थे अब यमदूत तुमको दंड देंगे इस भांति राजाओं को तर्जन कर चित्रगुप्त यमदूतोंको आज्ञा देतेहैं कि इनको लेजाकर नरकोंकी अग्नि में डालो इतनी आज्ञा पातेही राजाके दोनोंपैर पकड़ घुमाकर अति बेगसे यमदूत तप्त शिलापर फेंकते हैं औ कोई दूत दौड़कर उसके मस्तक में ताड़न करते हैं तब वह मूर्च्छित होजाता है कुछकालके अनन्तर जब उसकी मूर्च्छा खुलतीहै तब नरक को लेजाते हैं सातवें पातालमें घोर अंधकारके बीचअति दारुण अट्ठाईस करोड़ नरकहैं जिनमें पापी जीव यातना भो-

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

गते हैं वहां यमदूत उनको ऊंचे २ वृक्षों की शाखाओं में टांग देते हैं औ सैकड़ों मन लोह उनके पैरों में बांधते हैं उस बोझ से उनका शरीर टूटनेलगता है औ अपने अशुभ कर्मों को याद कर कर रोते औ चिल्लाते हैं औ तपाये हुये कांटों करके युक्त लोह दण्ड से औ कशा अर्थात् चाबुकों से यमदूत उनको ताड़न करते हैं जब उनके देहों में घाव पड़जायँ तब उनमें क्षार लगातेहैं कभी उनको उतार खौलते हुये तेल के कड़ाहमेंडालतेहैं वहांसेनिकाल विष्टाके कूप में उनको डुबोतेहैं जिनमेंकीड़े काटकाट खातेहैं फिर मेदरुधिर पूय आदिके कुंडोंमें उनकोपटकतेहैं जहांलोहेकी चोंचवाले काक औ श्वान आदि जीव उनका मांस नोच२ खातेहैं कभी उनकोतीक्ष्ण शूलोंमें पिरोतेहैं अभक्ष्य भक्षण औ मिथ्या भाषण करनेवालीजिह्वाकोबहुत दंडमिलता है उस जिह्वाको खैंच २ यमदूत आधकोश लंबी बढ़ालेते हैं औ उसके ऊपर अतितीक्ष्ण हल जोततेहैं जो पुरुष माता पिता औ गुरुको कठोरवचनबोलतेहैं उनकेमुख में वज्रकीजोंकें लगाई जातीहैं औ जोकोंके व्रणोंमें खार भरतेहैं औ फिर उनकेमुख में औटता हुवा तेल डालतेहैं औ उनके मुखमें विष्टा भरते हैं सुवर्ण चोराने वाले औ परद्रव्यापहारी कंटकों से व्याप्त तपेहुवेलोहके शाल्मलिवृक्ष से बांधे जातेहैं औ पीठकेऊपर लोहके मुद्गरों से ताड़नकरते हैं औ कभी बड़े कठोर औ तीखेकरोतसेशिरसेलेकर पैर तक उनको चीरतेहैं औ उनका मांस उनकोही खिलातेहैं जो अतिथि को अन्न जल बिना दिये उसके सम्मुखही आप भोजन करतेहैं वे इक्षुकीभांति कोल्हूमें पेलेजाते हैं असिताल नामक बनमें लेजाकर उनको खण्ड खण्ड करतेहैं इसभांति अनेक क्लेश भोगनेपरभी उनके प्राण नहीं निकलते रौरव औ महारौरवनाम नरकमें अत्यंत पीड़ादेतेहैं तपेहुयेलोहेके कील पापियोंकेपैरहाथ

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

छाती पार्श्व मुख मस्तक नेत्र नाक कानआदिमेंठोकते हैं गरम बालूमें डालकर चनेकी भांति भूनते हैं जिस २ परनारीकेसाथ संगकियाहो उसआकारकी तप्तलोहेकोनारीसे आलिंगनकराते हैं औ परपुरुषगामिनी स्त्रीको तप्त लोहपुरुषसे लिपटाते हैं औ कहतेहैं कि हेदुष्टे जिसप्रकार तैंनेनिजपतिकोत्याग परपुरुषको आलिंगन किया उसीविधि इस लोहपुरुषकोभी आलिंगन कर यहांसे जल्दीनछुटैगी कभी पापियोंकोलोहेके कुंभमें डालऊपर से ढक चूल्हेपरचढ़ायमंदी२ आंचसेपकातेहैं किसीसमय ऊखल में डाल मूसलसे कूटतेहैं कभी अंधकूपमें ऊपरसे पटकतेहैं क्षार के कूपोंमें डालतेहैं भ्रमर आदि कीटों से कटाते हैं जिससे सब शरीरजर्जर होजाताहै दोनों टांग ग्रीवापर चढ़ादेते हैं औ दोनों भुजापिछलीओरलौटाकर दृढ़बांधदेते हैं औ लोहकेतीक्ष्णकंटक भ्रमरोंसेकटातेहैं मानी औ क्रोधीपुरुषोंके शरीरको तप्तशिलाके ऊपर चंदनकीभांति घिसते हैं करीष औतुषकीअग्निमेंदग्धकरते हैं संपूर्ण देहको कीड़ोंसेखिलातेहैं जो पुरुषशिवालय बाग़वापी कूप मठ आदिको नष्टकरतेहैं उनको तप्तकुंडमें कंठतक डुबोकर नीचे अग्निदेतेहैं जोमैथुनआदिअनेकप्रकारकेपापकरते हैं उन-को अनेकप्रकारके यंत्रोंसे पीड़न करतेहैं औ जबतकचंद्रसूर्य रहैं तबतक नरककीअग्निमेंपड़े जलते हैं जो गुरुनिंदाश्रवणकरते हैं उनके कर्णोंको दंड मिलता है इसीप्रकार जिस २ इंद्रिय से पाप करै वह २ इंद्रिय कष्ट पाता है जो पुरुष परस्त्रीको हाथसे स्पर्श करते हैं उनका हाथ सूचियों से बेधाजाता है औ संपूर्ण शरीरमें घावकरकेक्षारसे लेपन करते हैं जोस्निग्ध दृष्टिसेपरस्त्री कोदेखतेहैंउनकेनेत्र सूचियोंसेपूरितकियेजातेहैं जो देवताअग्नि गुरु ब्राह्मण आदिका पूजन बिनाकिये भोजन करते हैं उनके मुखमें तपेहुवेलोहकेकीलभरते हैं जो देवतापर बिनाचढ़ायेपुष्प

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

को सूंघते हैं औ अपने मस्तकपर धारते हैं उनके नासिका औ शिरमें लोहके शंकु गाड़ेजाते हैं जो मूढ़ शिवभक्त औ शाश्वत शिवधर्म की निंदाकरतेहैं उनकी छाती कंठजिह्वा दंतसंधिआदि में लोहशंकुगाड़ेजातेहैं औ क्षार तप्ततैल गलायाहुआताम्रउनके ऊपरडालते हैं इसभांति संपूर्ण नरकों में यातना भोगते हैं जो पुरुष पर द्रव्यहरैं शिवकेऊपकरणचोरैंऔचोरीकरनेकेअभिप्राय से जायँ उनकेहाथ पैर लोहेकेघनोंसे चूर्ण कियेजातेहैं औ क्षार ताम्र तैल आदिसे उनको दग्ध करते हैं जो शिवालय आदि के समीप मूत्रअथवाविष्टाकरतेहैंउनके वृषणऔलिंगसूचियोंसेबेध कर लोहके मुद्गरोंसे चूर्ण करतेहैं औ कंटक युक्त तपाया हुआ लोह दंड उनकी गुदामें देकर शिरमें निकालतेहैं औ गुदा आदि को क्षारआदिसे पूरित करते हैं सबइंद्रियोंका प्रवर्तकमनहैइस-लिये इंद्रियोंको दुःखहोनेसे मनको दंडमिलजाताहै जो पुरुष धनवान् होकरभीदाननहीं देतेऔ घरमें प्राप्तअतिथिकासत्कार नहींकरते उनके हाथ पांव बांध लोहेके तोरण में लटकादेतेहैं औ हाथपांवों के तलोंमें लोहके कील ठोंकतेहैं औ उनके वृषणों में लोहका भार लटका देतेहैं लोहकी चोंचवालेपक्षी औ तीक्ष्ण मुख कीटोंसे उनको कटाते हैं औ उनके शरीरसेतिलप्रमाणमांस काटकर उनको नित्य खानेके लियेदेतेहैं इसप्रकारकी अनेकघोर यातना पापीपुरुष संपूर्णनरकोंमें भोगते हैं जिनकासौवर्षमेंभी वर्णन नहीं होसक्ता अनेक भांतिकीदारुणव्यथा भोगतेहैं परंतु प्राणनहीं जाते और भी इनसे अधिक दारुण यातनाहैं जिनका यहां वर्णन नहीं किया मृदुचित्त पुरुष उनको सुनकरही मररहैं इसकारण उनको नहीं कहा पापी आपही वहांजाय,उनकाअनु-भव करतेहैं पुत्र मित्र स्त्री आदिके लिये अनेक प्रकार के पाप करते हैं परन्तु उससमय कोई सहायनहीं करता केवलएकाकी

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

दुःख भोगताहै औ प्रलय पर्यंत नरकमेंपड़ासड़ताहैमहापातकी पुरुष आचंद्रतारकनरकमें पीड़ाभोगते हैं इससे आधेकालपर्यंत चोदह नरकोंमें पातकी निवास करते हैं औ इससेभीअर्द्धसमय उपपातकी नरकमें रहते हैं बुद्धिमान् मनुष्य जीवन को चंचल जानकर भी पाप न करै पापसे अवश्यही नरकभोगनापड़ताहै पापका फल दुःखहै औ नरक से अधिक कहीं दुःख नहीं बड़ा आश्चर्यहै कि मनुष्यपापकर्म्ममें तत्पर होते हैं औयहकभीनहीं शोचते कि मरणके अनंतर हमारी क्यागतिहोगी पापी मनुष्य नरकवास के अनंतर फिर भूमिपर जन्म लेते हैं औ वृक्षआदि अनेकप्रकारके स्थावर बनते हैं पीछे कीटपतंग पक्षी पशुआदि अनेक योनियोंमें जन्म लेतेहुवे अतिदुर्लभ मनुष्यजन्म पाते हैं मनुष्यजन्मपाकर ऐसाकर्म करनाचाहिये जिससेनरकनदेखना पड़ै धर्म से मनुष्य जन्म मिलता है मनुष्य जन्म पाकर उस धर्मकीवृद्धिकरनीचाहिये वृद्धि न होसकेतोउतनाहीबनायरक्खै मूलमेंभी घाटा न होनेदे जिससे नरक भोगनापड़ै मनुष्य जन्म पाकर भी ब्राह्मणहोना बहुतदुर्लभहै औ सबदेशों में यह देश उत्तम है बहुतपुण्यसे भारतवर्ष में जन्महोताहै इस देशमें जन्म पाकर जो अपने कल्याणके अर्थ पुण्य करै वहीबुद्धिमान्हैस्वर्ग भोग भूमि है औ यह कर्म भूमिहै यहां जो कर्म करोगे वहीस्वर्ग में भोगोगे जबतक यह शरीर स्वस्थरहै तबतक जोकुछ पुण्य बनपड़ै सो ठीक है फिर कुछभी नहीं होसक्ता दिन रात्रि के बहानेसे नित्यएक२टुकड़ा आयुष्कारखण्डित होताजाताहैतौभी मनुष्योंके बोधनहीं होता कि एक दिन मृत्युभी आय पहुंचैगा यह तो किसी को निश्चय हैही नहीं कि किसका मृत्यु किस समय में होगा फिर मनुष्यको क्योंकर धैर्यहोय औ सुख मिलै यह जानते हैं कि एकदिन इस सब सामग्री को छोड़ अकेले

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

चलेजायँगे फिर अपने हाथ सेही सत्पात्रों को क्यों नहींबांटदेते इस पुरुष के लिये दानही पाथेय अर्थात् रस्ते के लियेभोजनहै जो दान करते हैं वे सुखपूर्वक जाते हैं औ दान हीन मार्ग में अनेक दुःख पाते भूखे मरतेजाते हैं इन सबबातों को विचार पुण्यही करना चाहिये औ पाप से सदा बचना चाहिये जोपुरुष अनेक प्रकार के पाप करके भी शिवजीके शरणमें प्राप्त होजातेहैं वेभी नरक नहीं देखते परंतु किये हुये पातकों का फल भोगनेके लिये शिवजीकी आज्ञासे कुछकाल प्रेतोंके राजा बनते हैं पीछे सद्गति को प्राप्त होतेहैं जो सत्पुरुष सर्वप्रकारसे श्री सदाशिवके शरण में प्राप्त हैं वे कभी पाप करके लिप्त नहीं होते जैसे पद्मपत्र जल करके इसलिये द्वंद्व से छुट भक्तिसे श्री शंकर का आराधन करै पंच महापातक करने से चिरकाल नरक वास होता है इसलिये इनसे सदाबचै औ किसी भांतिका भी पाप न करै॥

सातवां अध्याय॥

श्रीकृष्ण कहते हैं कि हे महाराज यह जो हमने अति गंभीर नरक समुद्र वर्णनकिया यहव्रतउपवासरूप नौकासेतरा जाता है अतिदुर्लभ मनुष्य जन्म पाकर ऐसा कर्मकरै जिससे पश्चात्ताप न करना पड़ै जिसकी यहां व्रत उपवास आदि की कीर्ति बनी है वह परलोक में सुख भोगता है व्रत करनेवाले पुरुष सदासुखी होतेहैं इसलिये व्रत अवश्य करनेचाहिये इसमें एक प्राचीन इतिहास हम वर्णन करते हैं योग सिद्धकरके संसिद्ध कोई एक सिद्ध अति भयंकर विकृत रूपधार भूमिपर विचरताथा कि जिसके लंबे ओष्ठ टूटे दांत पिंगल नेत्र चपटेकान फटा मख लंबापेट टेढ़े पैर और भी संपूर्ण अंग कुरूप थे उसको

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मूलजालिकनाम ब्राह्मण ने देखा औ पूछा कि आप स्वर्ग से कब आये औ किस प्रयोजन से यहां आगमन भया आपने देवताओं के चित्तको मोहन करनेहारी और स्वर्ग के भूषण रंभाको देखा कि नहीं अब आप स्वर्ग में जायँ तो रंभा से कहना कि अवंतिपुरी का निवासी ब्राह्मण तुमको कुशल पूछताथा यह ब्राह्मणका बचन सुनसिद्धनेचकित हो पूछा कि हे ब्राह्मण तुमने हमको क्योंकर पहिचाना तब ब्राह्मण ने कहा कि महाराज कुरूपपुरुषों का एक दो अंग विकृत होता है औ आपके सबअंग टढ़े औ विकृतहैंइसीसे मैंने अनुमान किया कि ये अपनारूपगुप्त किये कोई स्वर्गके निवासी सिद्ध हैं यह ब्राह्मण का बचन सुनतेही सिद्ध वहां से अंतर्धान भया औ कई दिनोंके अनंतर फिर ब्राह्मण के समीप आया औ उससेकहा कि हे ब्राह्मणहमस्वर्गमें गये औ इंद्रकी सभामें जब नृत्य होचुका उसके अनंतर एकांतमें रंभासेतुम्हारा संदेश कहा परंतु रंभाने यह कहा कि मैं उस ब्राह्मणको नहीं जानती यहां तो उसी का नाम जानते हैं जो निर्मल विद्या पौरुष दान तप यश अथवा ब्रतआदि करके युक्त होय औ उसका नाम स्वर्ग भरमें चिरकाल स्थिर रहताहै यह सिद्धके मुखसे रंभाका वचन सुन ब्राह्मण ने कहा कि हम शकट ब्रत नियम से करते हैं आप रंभासे कहदीजिये यह सुनतेही फिर सिद्ध अंतर्धान भया औ स्वर्ग में जाकर रंभासे ब्राह्मणका संदेश कहा औ उसके गुण वर्णन किये तब रंभा प्रसन्नहोकर कहने लगी किहे सिद्ध महाकाल बनके निवासी उस शकट ब्रह्मचारी को मैं जानतीहूं दर्शन से संभाषणसे एकत्र निवाससे औ उपकार करने से मनुष्यों का परस्पर स्नेह होता है परंतु मुझे उस ब्राह्मण का दर्शन संभाषण आदि एक भी नहीं हुआ केवल नाम श्रवण सेही इतना स्नेह होगया है इतना सिद्धसे

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कह इंद्र के समीप जाय रंभाने ब्राह्मण के व्रत आदिका करना औ अपने ऊपर अनुरक्त होना वर्णन किया इन्द्रनेभी प्रसन्नहो रम्भा से पूछ उत्तम विमान में बैठाय दिव्यवस्त्र भूषण आदि से अलंकृत कर उस ब्राह्मण को स्वर्ग में बुलाया औ बड़ा सत्कार ब्राह्मण का करके रम्भाको उसके अधीन करदिया वह ब्राह्मण भी अपनीप्रिया रंभाकोपाय चिरकाल दिव्यभोग भोगताभया यह शकट व्रतका माहात्म्य हमने संक्षेपसे वर्णन कियाहैराज्य लक्ष्मी उत्तमलोक मनोबांछित फल आदिकोई पदार्थ जगत में दृढ़ व्रत पुरुषके लिये दुर्लभ नहींहैं इसलिये सदा व्रतमेंतत्पर रहना चाहिये ॥

आठवांअध्याय ॥

राजा युधिष्ठिरपूछतेहैं कि हे श्रीकृष्णचन्द्रब्रह्मा विष्णुशिव गौरीगणपति दुर्गासोम अग्नि सूर्यआदि देवताओंके व्रतशास्त्रों में वर्णन कियेहैं जिनके करने से भोग औ मोक्ष मिलते हैं उन व्रतों को आप प्रतिपदादि क्रमसे वर्णन करैं औ जिस देवता की जो तिथिहै औ उस तिथिको जो करना चाहिये वहभीआप कथन करैं यह राजा का प्रश्न सुन श्रीकृष्ण भगवान् कहने लगे कि हे महाराज बसंत ऋतुके आरम्भ में जो शुक्लप्रतिपदा होतीहै उसदिन नदी अथवा तलाव में स्त्री अथवा पुरुष स्नान करदेवता औ पितरों का तर्पणकरैं पीछे घरमेंआय पिष्टअर्थात् आटे से पुरुषाकार संवत्सर की मूर्त्ति लिखकर चन्दनपुष्प धूप दीप नैवेद्य आदि उपचारों से पूजनकरै औ ऋतु तथा मासोंके नमोंतनाममन्त्रों से पूजनऔ प्रणामकर यह मंत्र पढ़ै । ओंसंवत्सरोसि परिवत्सरोसि तद्वदयनोसीद्वत्सरोसिउषस्तेकल्पताम-होरात्रस्तेकल्पतामर्द्धमासास्तेकल्पन्ता मृतवस्ते कल्पंतां वत्सर

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

स्तेकल्पताम् । यह मन्त्र पढ़बस्त्रसे उसको वेष्टित करैपीछे फल पुष्प मोदक आदि नैवेद्य चढ़ाय हाथ जोड़ प्रार्थना करैं कि हे भगवन् आपके अनुग्रह से सुखपूर्वक वर्ष व्यतीत होय यह कह कर यथाशक्ति ब्राह्मण को दक्षिणा देवै औ उसी दिनसे ललाटको नित्य चन्दन के तिलकसे अलंकृत करै इसप्रकारस्त्री अथवा पुरुष इस व्रतको करै तो उत्तम भोगपावै औ भूत प्रेत पिशाचग्रह डाकिनीऔ शत्रुउसके मस्तकमेंतिलकदेखतेहीपराङ्मुख होजाते हैं अब हम एक इतिहास बर्णन करतेहैं पूर्वकाल में शत्रुंजयनाम एक राजाथा औ चित्रलेखा नाम उसकी रानी थी उनके बहुत अवस्था बीतने पर एक पुत्रहुआ जिसके जन्म से उनको बहुत आनन्दप्राप्त हुआ वह रानी सदा संवत्सरव्रत किया करती औ नित्यही मस्तक में तिलक देती कुछ कालके अनन्तर राजा को प्रबल ज्वर होगया औ वह बालकभीरोगाक्रान्त हुआ तब रानी अति शोकाकुल भई औ दिन रातउनके समीप बैठी रहती परन्तु उन दोनों को वह बातज्वर औ शिरोव्यथा इतनीबढ़ी कि मरणासन्न होगये औ यमदूत उनके लेजाने को आपहुंचे परन्तु देखाकि उनके समीप तिलक लगाये चित्र लेखा रानी बैठी है उसको देखतेही उलटे लौटे भीतर तिलकके प्रभावसे नहीं प्रवेश करसके यमदूतों के लौटतेही राजा औ राजकुमारआरोग्य होनेलगे औ थोड़ेही कालमेंप्रसन्न होगये औ चिरकाल तक राज्य किया हे महाराज यह परम उत्तम व्रत पूर्वकाल में श्रीशिवजी महाराज ने हमको उपदेश किया औ हमने आपको सुनाया यह तिलक व्रत सकल अरिष्ट को हरने हारा है इस व्रत को जो भक्तिसे करै वह चिरकाल पर्यंत संसार के सुख भोग अन्त में स्वर्ग को जाता है ॥

———※———

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नवां अध्याय॥

श्रीकृष्ण कहते हैं कि महाराज आश्विन शुक्ल प्रतिपदा को गंध पुष्प धूप दीप सप्तधान्यफल नालिकेल दाड़िम पूरी लड्डू आदि अनेक प्रकार के नैवेद्य से अशोकवृक्ष का पूजनकरै तो कभी शोक को प्राप्त न होय औ (पितृभ्रातृपतिश्वश्रू श्वशुराणां तथैवच अशोकशोकशमनोभवसर्वत्रनःकुले) इस मंत्रसे श्रद्धाकर के अर्घ्य देवै औ वस्त्रसे अशोकवृक्ष को वेष्टित कर पताकाओं से अलंकृत करै इस व्रतको स्त्री भक्ति से करै वह दमयंती स्वाहा वेदवती औ सती की भांति अपने पतिकी अतिप्रिया होय बन गमन के समय सीताने मार्ग में अशोकवृक्ष देखा औ भक्ति से गंध पुष्प धूप दीप नैवेद्य तिल अक्षत आदि से उसका पूजन कर यह प्रार्थना करी कि हे रक्ताशोक मेरा वृद्ध श्वशुर राजा दशरथ चिरकाल जीवै मेरापति लक्ष्मण आदि देवर औ कौशल्या चिरंजीव होयँ इतनी प्रार्थना कर अशोक की प्रदक्षिणा दे सीता बनको गई जो स्त्री तिल अक्षत जौ गेहूं घृत आदि से अशोक का पूजन कर यह मंत्रपढ़ै (महावृक्षंमहाशाखंमकरध्वजमंदिरम्। प्रार्थयेत्वांमहाभागंवनोपवनभूषणम्) पीछे प्रणाम औ प्रदक्षिणा कर ब्राह्मण को दक्षिणादे अपनी सखियों सहित घरकोजाय वह स्त्री चिरकाल तक अपने पतिके सहित संसार के सुख भोग अन्तमे गौरी लोकमें निवास करै यह अशोकव्रत सब प्रकार के शोक औ रोग हरने हारा है॥

दशवां अध्याय॥

श्रीकृष्ण कहते हैं कि हे महाराज ज्येष्ठ मास की शुक्ल प्रतिपदा को सूर्योदय के समय बाग में जाय करवीर वृक्ष का

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पूजन करै लाल सूत्र से वृक्षको वेष्टित कर गंध पुष्प धूप दीप नैवेद्य सप्तधान्य नालिकेर नारंगी और भी भांति २ के फलों से पूजन कर इस मंत्र से प्रार्थना करै। करवीराम्बिकावास नमस्तेभानुवल्लभ। मौलिमण्डलसद्वृन नमस्तेकेशवाश्रय। इस भांति प्रार्थना कर ब्राह्मण को दक्षिणादे वृक्षकी प्रदक्षिणाकर घर को जाय इस व्रत को सूर्यनारायण की प्रसन्नता के लिये अरुन्धती सावित्री सरस्वती गायत्री गंगा दमयंती औ सत्यभामा आदि और भी स्त्रियोंने किया है इस व्रत को जो भक्ति से करै वह अनेक प्रकार के सुख भोगकर अन्त में सूर्य लोक को जाता है॥

ग्यारहवां अध्याय॥

राजा युधिष्ठिर पूछते हैं कि हे श्री कृष्णचन्द्र पतिव्रता स्त्रियों का पति के साथ जिस व्रत के करने से अत्यंत स्नेह रहै वह व्रत आप कथनकीजिये यहसुन श्रीकृष्ण बोले कि हे महाराज यमुनाके तटपर मथुरानाम नगरहै उसमें पूर्व समय रामचन्द्रका भ्राता शत्रुघ्न नाम राजा था उसकी रानी कीर्तिमाला नाम बड़ी पतिव्रता थी उसने एक दिन अपने कुल गुरु बशिष्ठ मुनि से प्रार्थना करी कि महाराज कोई ऐसा व्रत बतावैं जिस से सौभाग्य की वृद्धि होय तब वशिष्ठजी कहने लगे कि हे कीर्तिमाले आषाढ़ की पूर्णिमासी को सायंकाल के समय यह संकल्प करै कि श्रावण मास भर नित्य स्नान रात्रि के समय भोजन औ भूमिमें शयन करूंगी औ ब्रह्मचर्य्य से रहूंगी इस भांति स्त्री अथवापुरुष संकल्पकर प्रभातउठ सबसामग्रीलेनदी तलाव आदि पर जाय दंतधावनकर सुगंध युक्त तिल औ आमला का उबटना लगाय विधि से स्नान करै इस प्रकार आठ

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

दिन स्नान करै पीछेसर्वौषधियों का उबटना लगाय आठ दिन स्नान करै शेष दिनों में बचा औ मुलहठीका उबटनामलकर नहावै स्नान कर सूर्य भगवान् का ध्यान कर संध्या औ तर्पण करै पीछे तिल पिष्ट करके कोकिला पक्षी लिखे औ रक्तचन्दन चंपा के पुष्प पत्र धूप दीप नैवेद्य तिल चावल दूर्बा आदि से पूजन कर इस मन्त्रसे प्रार्थनाकरै। तिलाःस्नेहंतिलाःसौख्यंत्रिवर्णतिलकप्रिये सौभाग्यद्रव्यपुत्रांश्चदेहिमेकोकिलेनमः। इस प्रकार पूजन कर घर में आय भोजन करै इस विधि से एक मास व्रत करअन्त में तिल पिष्ट की कोकिला बनाय उसकेसुवर्ण के नेत्र लगाय ताम्रपात्र में स्थापन कर वस्त्र धान्य गुड़ औ दक्षिणा सहितश्वश्रू श्वशुर दैवज्ञपुरोहित अथवा और किसी ब्राह्मण को देवै इस विधि से जो कोकिला व्रत करै वह सात जन्म तक सौभाग्यवती होय औ अन्त में उत्तम विमान परचढ़ गौरी लोकको जाय इस विधिवशिष्ठ जी से सुन कीर्त्तिमाला नेव्रतकिया औ मनोबांछित फलपाया और भी जो स्त्री इसव्रत को भक्ति से करै वह सौभाग्यपावै औ जो पुरुष तिल पिष्ट से कोकिलाबनायताम्रपात्र में स्थापन कर ब्राह्मण को देवैंवेबहुत काल तक नन्दन बन में विहार कर मनुष्य लोक में जन्मलेतेहैं तब अत्यंत मधुरस्वरवाले होते हैं॥

बारहवां अध्याय॥

श्रीकृष्ण कहते हैं कि हे महाराज अब हम सब पाप हरने हारा एकव्रत कहते हैं जो सुर असुर औ मुनियों को भी दुर्लभ है आश्विन मास की समाप्ति के दिन उपवास कर रात्रि के समय घृत औ पायसभोजन करै दूसरे दिन प्रभात उठ पवित्र हो आचमनकर विल्व के काष्ठका दन्तधावन करै पीछे इसमन्त्र

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

से महादेव जी की प्रार्थना करै। अहंदेवव्रतमिदंकर्तुमिच्छामि शाश्वतम्। तवाज्ञयामहादेव यथानिर्वहतेकुरु। फिर नियम कर सोलह बर्ष पर्यंत प्रतिपदा को व्रत करै मार्गशीर्ष की प्रतिपदा को महादेव का स्मरण करता हुआ उपवास करै औ स्नानकर भक्ति से शिवपूजन करै औ रात्रिकेसमय दीपकजलायशिवजी को निवेदन करै शिवभक्त सपत्नीक सोलह ब्राह्मणों का बस्त्र भूषण आदि से पूजन कर भोजन करावै अथवा आठ दंपतीका पूजन करै जो सामर्थ्य न होय तो एकही जोड़े का पूजन करै व्रत कर रात्रि को निराहारही भूमि में शयन करै सूर्योदय होतेही स्नान करसब सामग्रीले शिवालय में जाय वहांशिवजी को अभ्यंग कराय पंचगव्य से स्नान करावै फिर क्रम से दूध घृत दही शहत इक्षुरस तिलोदक औ गरम जलसे स्नान करावै पीछे कर्पूर चन्दन आदि का लेपकर कमल आदि उत्तम पुष्प चढ़ावै औ दो बस्त्र पताकाधूप दीप घंटा भांति २ केनैवेद्य महादेवजी के अर्पण कर विधि से हवन करै पीछे घरमें आय पंचगव्य का प्राशन कर अपने सब बंधुओं के साथ भोजन करै इस विधान को धनवान् हो चाहै निर्धन सामर्थ्य के अनुसार करै औ श्रद्धारक्खै कार्तिक की प्रतिपदा से लेकर प्रतिमास इसी विधि से व्रतकरै औ आरम्भ के विधानसे ही पारणकरै दूसरे बर्ष में पूर्णिमा को नक्तव्रत करिके प्रतिपदा औ द्वितीया को उपवास करै औ प्रतिमास दो दो उपवास करताजाय औ पहिली भांतिशिव जीका पूजनकर सुवर्ण शृंगीरौप्य खुरीघंटा औ कांस्य के दोहनपात्र सहित उत्तम गौ महादेवजीके निमित्त शिवभक्त ब्राह्मण को देवै पीछे सोलह ब्राह्मणों का विधिसे पूजन कर बस्त्र भूषण छत्र जूता दंड आदि उनको देकर उनकी पत्नियों का भी बस्त्र भूषण आदि से पूजन कर उत्तम भोजन

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

करावै और भी यथाशक्ति ब्राह्मण भोजन कराय दक्षिणा दे दीन अंध अनाथ आदि को भोजन देवै यह व्रत सब प्रकार के पाप हरने हाराहै औ भूःभुवःस्वः आदि लोकों में अनेकप्रकार के उत्तम भोग देताहै चारोंवर्णोंके लिये यह व्रत स्वर्गकीसीढ़ी है जो धन पाकर इसव्रतको न करै वह मूढ़ बुद्धि है धन आयुष रूप सौभाग्य आदि इसव्रतके करनेसे मिलतेहैं प्रतिमास उपवासकर यथाशक्ति ब्राह्मणभोजनकरावै औ अंतमें आरंभकेविधानसे समाप्त करै वर्षभरसे न्यून भी व्रत श्रद्धा से करै तौ भी संपूर्णफल को प्राप्त होताहै जो इसविधान को पढ़ै अथवा सुनै वह उत्तम फल पावै औ जो पुरुष सोलह वर्ष इसव्रतको भक्ति से करते हैं वे सूर्यमण्डल को भेदन कर शिवजी के चरणों में प्राप्त होते हैं॥

तेरहवां अध्याय॥

राजायुष्ठिरपूछते हैं कि हेश्रीकृष्ण जातिस्मरहोना अत्यन्त दुर्लभहै आप यह कथनकरैं कि ऋषियोंके वरदानसे देवताओं के सेवनसे अथवा तीर्थ स्नान होम जप तप व्रतआदि के करने से जातिस्मरता प्राप्त होसक्तीहै किनहीं औ कोईव्रत ऐसाहोय जिसकेकरनेहारा जातिस्मरहोय वहआप वर्णनकरैं। यहराजा काप्रश्नसुन श्रीकृष्ण भगवान्बोले कि हे महाराज चारभद्रोंका उपवास करने से मनुष्य जातिस्मर होताहै॥

पूर्वकाल में यमुना के तटपर शुभोदय नाम वैश्यनेयह व्रत कियाथा वह इसके प्रभावसे स्वर्णष्ठीवी नामक स्टंजयराजाका पुत्र हुआ औ जातिस्मर भया उसको चोरोंने मारडाला फिर नारदजी के प्रभावसे जिया औ व्रतके प्रभाव से अपने सम्पूर्ण पूर्व वृत्तान्त को जानता भया राजा पूछतेहैं कि स्वर्णष्ठीवी क्यों

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कहाया औ चोरोंने उसको क्यों मारा औ फिर क्योंकर सजीव भया यह आप वर्णनकीजिये यहप्रश्न सुन श्रीकृष्णचन्द्र बोले कि महाराज कुशावती नगरी में स्टंजयनामराजा था एकदिन नारद औ पर्वत दोनों मुनि राजाके पास गये उसी समय गूढ़-गुल्फा उन्नत कुचों करके युक्त कमललोचना लंबे औ कृष्ण केशोंवाली अतिरूपवती युवती राजकन्या वहांआई उसकोदेख पर्वतने कहा कि इस तरुणीका क्या उत्तम रूपहै औ लावण्य की कैसी झलक है कि जिसमें अंग भी स्फुट नहीं देख पड़ते इस भांति उसपर मोहितहो राजा से पर्वतमुनिने पूछा कि यह हमारे मनको हरनेहारी कौनहै राजाने कहा कि हे पर्वतमुनि यह मेरी कन्याहै इसी अवसर में नारदबोले कि हे राजन् यह अपनी कन्या हमको देदीजिये औ जो दुर्लभ बर आपकोचाहिये हमसे लीजिये राजाने प्रसन्नहो कहा कि हे नारदजी ऐसापुत्र चाहताहूं कि वह जहां मूत्र पुरीष आदित्यागेऔ जिसस्थान में निष्ठीवनकरै वहां उत्तम सुवर्ण बनजाय नारदनेकहाकि ऐसाही पुत्र तुम्हारे उत्पन्नहोगा तब राजाने अभीष्ट वर पाय अपनी कन्या को वस्त्र भूषण आदि पहिनाय नारदजीसे विवाह दिया नारदजी भी ऐसी रूपवती युवती से विवाह कर बहुत प्रसन्न भये परन्तु पर्वतमुनि क्रोधसे लालनेत्र कर नारदजी को कहने लगे कि हे नारद पहिले इस कन्या से बिवाह करने की हमने इच्छाकरी औ तुमनेबीचमें बलात्कार से अपना बिवाहकरलिया इसलिये तुम्हारा स्वर्गमें गमन न होगा औ इसराजाके जो पुत्र होगा वहभी चोरोंके हाथ माराजायगा यहसुन नारदजी बोले कि हे पर्वत तू मूर्ख है तैने वृद्धों का सेवन नहीं किया जिससे हमको शाप देताहै यह तो कन्याथी इसपर किसीका स्वत्वनहीं माता पिता जिसको देदेवैं वही इसका स्वामी है हे पर्वत तैने

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मूढ़तासे हमको शापदिया इसलिये तेराभी गमनस्वर्गमेंनहोगा औजो राजपुत्र को चोर मारडालैंगे तो हम यमलोकसेभीउसको ले आवेंगे इसभांति परस्पर शापदेकर दोनों मुनि अपनेआश्रम को गये औ सातवें महीनेमें राजाके पुत्रहुआ वह अतिरूपवान् औ जातिस्मरहुआ जहां वह मूत्र पुरीष श्लेषम आदि त्यागता वहीं सुवर्ण होजाता इसलिये राजा ने उसकानाम स्वर्णष्ठोवी रक्खा वह राजपुत्र सब जीवोंकी बोली समझताथा राजानेभी पुत्रके प्रभावसे अनंत धनपाय राजसूय आदियज्ञकियेदानदिये कूप तड़ाग देवालय आदि बनवाये औ बहुतसी सेना रक्खी इसी अवसरसे राजपुत्रकी ख्याति सुन लोभवश होकर चोर उसको उठालेगये जब उसके देहमें कहीं स्वर्ण न देखा तब मारकरजंगलमें फेंकगये राजाभी पुत्रकोमरादेख अतिदुःखीहो विलाप करनेलगा तबनारदजी वहां आये औ प्राचीन राजाओं के अनेक इतिहास सुनाकर राजाका शोकदूरकिया औ यमलोक में जाय राजपुत्रको लेआये राजाभी पुत्र को पाय अति प्रसन्न भया औ नारदजीसे पूछनेलगा कि महाराज यह बालकस्वर्ण-ष्ठोवी किस कर्मकेप्रभावसेभया औ जातिस्मर काहेसेहै तबना-रदजीने कहा कि हे राजाचतुर्भद्रव्रतइसने किया है यहसब उसी का फलहै इतनाकहनारदजी अपनेआश्रमकोगयेश्रीकृष्णचन्द्र कहतेहैं किहे महाराज इस व्रतकेकरनेसे उत्तमकुलमेंजन्मलेकर दाताधनवान्रूपवान् जातिस्मर औदीर्घायुष्होताहैचारभद्रइस व्रतके चारपादहैं मार्गशीर्षमें पहिलाफाल्गुन में दूसरा ज्येष्ठमें तीसरा औ भाद्र में चतुर्थभद्रहोताहै फाल्गुन शुक्ल आदि तीन मास त्रिपुष्करनामभद्ररूप औलक्ष्मीदेनेहाराहै ज्येष्ठशुक्लआदि तीन महीने विराम नामक भद्र सत्य औ शौर्य दायकहैभाद्रशुक्ल आदि तीन मास निरंग नाम भद्र बहुतविद्या देनेहारा है औ

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मार्गशुक्लआदि तीन मास समान नामक भद्र सब कामना देने-हारा है यह भद्रव्रत सब स्त्री पुरुषों को करना चाहिये राजा युधिष्ठिर कहते हैं कि हे श्रीकृष्णचन्द्र भद्रों का विधान आप विस्तारसे कथन करैं यह राजाका प्रश्नसुन श्रीकृष्ण कहने लगे कि महाराज यह अति गुप्त विधान हमने किसीसे नहीं कहा है अब आपको श्रवण कराते हैं सावधान होकर सुनिये। मार्गशीर्ष के शुक्लपक्षमें द्वितीया तृतीया चतुर्थी औ पंचमीइन चार तिथियों को एक भक्त करै पहिले द्वितीयाको मध्याह्न के समय गोबर मृत्तिका आदि लेकर स्नानकरै अब हम सब मंत्र कहते हैं इनमंत्रों के अधिकारी ब्राह्मणआदि चारों वर्णहैं केवल संकीर्ण अर्थात् वर्ण संकरोंको इनका अधिकार नहीं है औ जो विधवा स्त्री अपने आचार में स्थितहो वहभी इन मन मंत्रों की अधिकारिणी है नदी तलाव वापी कूप औ घरमें स्नान करने से दशांश २ फल स्नानसे होताहै अर्थात् नदीस्नानके फल का दशांश फल तलावमें स्नान करनेसे होताहै इसी भांति और भी जानोप्रथमही(त्वंमृदेवंदितादेवैःसबलैर्दैवघातिभिः। ममापि वंदिताभक्त्याममांगंविमलंकुरु) इसमंत्रसेमृत्तिका लेकर शरीर में लगाय जलके समीपजाय श्वेत शर्षप तिल वच औ सर्वौषधि का उबटना लगाय जलमें मंडल लिख ये मंत्र पठन करै(वोंत्व मादिःसर्वदेवानां जगतांचजगन्मय। भूतानांवीरुधानांच रसा नांपतयेनमः१गंगासागरगंतोयं पुष्करंनर्मदातथा। यमुनासन्नि हत्याचसान्निध्यंकुरुतांसदा २) येमंत्रपढ़ स्नानकर शुद्धवस्त्र पहिन संध्या औ तर्पणकर घरमें आय नियम पूर्वक रहै औ चंद्रोदय पर्यंत किसीसे संभाषण न करै इसीभांति तृतीयाआदि तिथियोंमें भी स्नानकर नियमसे रहै औक्रम से चार तिथियोंमें कृष्ण अच्युत अनंत औ हृषीकेश इन नामों से भगवान्का पूजन

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

भक्तिसे करै पहिले दिन भगवान्के चरणारविन्दका पूजनकरै दूसरे दिन नाभिका तीसरे दिन वक्षःस्थलका औ चतुर्थ दिन में नारायणके मस्तक का पूजन विधिसे करै उत्तम पुष्प धूप दीप नैवेद्य आदिसे भक्तिकरके पूजनकरै औ रात्रिको जब चंद्रोदय होय उससमय शशी चंद्र शशांक औ इन्दु इननामोंसे क्रम करके चन्द्रमा को अर्घ्यदेवै चन्दन अगरु औ कर्पूर अर्घ्यमें डालै चंद्रमाने ब्रह्म हत्या करीथी उसहत्याको छःभागकरके वृक्षजल नदी भूमि अग्नि औ ब्राह्मणों में बांटदिया औ उसी हत्या की निवृत्ति के लिये अर्घ्य देते हैं यह भद्रव्रतका विधानहै द्वितीया के दिन प्रेत अर्थात् पितरोंका संचार भयाहै इसलिये द्वितीया को प्रेत संचरा कहते हैं अग्निष्वात्त वर्हिषद आज्यप सोमप ये सब पितर हैं जो इनका श्रद्धा से पूजनकरै उसकी ये भी सब प्रकार से रक्षा करते हैं कार्त्तिक शुक्ल द्वितीया के दिन यमुनाने यमराज को भोजन कराया है औ उसी दिन नरक के जीव बंधन से छुटेहैं औ यमराज के नगर में बड़ा उत्सव हुआ है इसलिये इसका नाम यमद्वितीया है उस दिन अपने घर में भोजन न करे वहिन के घरजाय प्रीतिसे भोजनकरै दान देवै औ वस्त्रभूषण आदि देकर भगनियों को प्रसन्नकरै अपनी सगी बहिन न होय तो पिताके भाई की कन्या मातुलकी पुत्रीमौसी अथवा बुवा की बेटी येभी बहिन हैं इनके हाथसे भोजन करै उसदिन यमुना ने यमराज को प्रीति से भोजन कराया है इस कारण जो पुरुष यमद्वितीया को बहिन के हाथ भोजन करै वह धन यश आयुष् धर्म औ अपरिमितसुखपाताहै इतनाकह श्रीकृष्णभगवान् ने कहा कि महाराज यह भद्रोंकाविधान औ यमद्वितीया का विधान अति रहस्य हमने आपकोश्रवणकराया अब आप क्या सुनना चाहते हैं ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

चौदहवां अध्याय॥

राजायुधिष्ठिर पूछते हैं कि हे श्रीकृष्णचन्द्र आपनेकहाकि सबधर्मों का साधन गृहस्थाश्रम है वह गृहस्थाश्रम स्त्री औ पुरुषसे होताहै पत्नी हीन पुरुष औ पुरुषहीन नारी धर्म्म आदि साधन करने को समर्थ नहीं होते इसलिये आप ऐसा कोईव्रत कथन करैं जिसके करने से स्त्री विधवा नहोय औ पुरुष पत्नी हीन न होय यह राजा का वचन सुन श्रीकृष्ण भगवान्कहने लगे कि हे महाराज अशून्य शयन नामक व्रत द्वितीयातिथिको होताहै उसक करनेसे स्त्री विधवा नहींहोय औ पुरुष पत्नी हीन नहीं होता उस तिथि को विष्णुभगवान् लक्ष्मी सहित शयन करतेहैंउसदिन उपवास नक्त अथवाअयाचितव्रत करनाचाहिये श्रावण कृष्ण द्वितीया को नदी अथवा तड़ागमें स्नानकरदेवता औ पितरों का तर्पण करै पीछे मृत्तिका का चतुरस्र एकस्थंडिल बनाय उसके ऊपर लक्ष्मी सहित भगवान् का आवाहन कर गंध पुष्प धूप दीप नैवेद्य औ अनेक प्रकार के ऋतु फलों से पूजन कर हाथ जोड़ भक्तिसे इस भांति प्रार्थनाकरै (श्रीवत्स धारिन्श्रीकांत श्रीधरश्रीपतेऽच्युत। गार्हेस्थ्यंमा प्रणाशंमेयातु धर्मार्थकामदम्। अन्वयोमाप्रणश्येतमाप्रणश्यन्तुदेवताः। पितरो माप्रणश्यन्तु मत्तोदाम्पत्यसम्भवाः। लक्ष्म्यानशून्यंशयनं कदा चित्तवकेशव। शय्याममाप्यशून्यास्तु तथाजन्मनिजन्मनि) इन मंत्रों से प्रार्थनाकर चन्द्रोदय के समय पंचगव्य प्रासनकरै औ ब्राह्मण को यथाशक्ति दक्षिणा देवै इसविधिसे चारमासपर्यन्त कृष्णपक्षकी द्वितीयाको व्रत औ नारायण का पूजनकरै कार्त्तिक मासकी द्वितीया को लक्ष्मीनारायण की स्वर्ण की मूर्त्ति बनाय उत्तम शय्यापर स्थापनकर भक्तिसे पूजन कर सब सामग्री औ

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

जल पूर्ण कलश सहित सत्पात्र ब्राह्मणको देकर ब्राह्मणभोजन करावे व्रतकेदिन दधि अक्षत मूल फल पुष्प जल आदि सुवर्ण के पात्रमेंरखइसमन्त्रकरकेचन्द्रमाको अर्घ्य देवै(गगनाङ्गनसंभू-तदुग्धाब्धिमथनोद्भव।भाभासितदिगन्तस्त्वनिशाकरनमोस्तुते) इस विधिसे जो पुरुष चारमास व्रतकरै उसको स्त्री वियोगक-भी नहीं होता औ सब प्रकारका ऐश्वर्य प्राप्त होताहै औजोस्त्री भक्तिसे इसव्रत को करै वह तीनजन्म तक विधवा औ दुर्भगा नहीं होती यह अशून्य शयन द्वितीया का व्रत सब कामना औ उत्तम भोग देनेहारा है इसलिये अवश्यही करना चाहिये॥

पन्द्रहवां अध्याय॥

श्रीकृष्णकहते हैं कि हे महाराज भाद्रशुक्ल तृतीयाकोप्रति वर्ष गोपदनाम व्रत श्रद्धासे करै स्त्री अथवा पुरुष पहिलेस्नान कर दधि अक्षत औ पुष्पमाला आदि से गो का पूजनकरउसके शृंग आदि सब अंगोंको भूषितकरै औ दिनभर की तृप्तिके यो-ग्य भोजन गो को देवै औ आपभी तैल औ लवण आदिक्षारसे रहित अग्निपर विनासिद्ध किया भोजन करै औ वनको जाती हुई तथा वनसेआतीहुई गोका पूजनकरै इसभांतितीनदिनव्रत रक्खै औ नित्य गो पूजन करै इस व्रत के करनेहारा सौभाग्य रूप लावण्य धन धान्य यश संतान आदि सब पदार्थ पाताहै औ उसका घरनित्य गो औ बछड़ों से पूर्णरहता है औ मरण के अनन्तरदिव्यरूप धारदिव्यभूषण वस्त्र माला आदिसेअलं-कृतहो विमान में बैठ स्वर्गकोजाताहै वहां दिव्य सौयुगनिवास कर विष्णुलोकमें प्राप्तहो भगवान्का पार्षदहोता है जोइसगो त्रिरात्र व्रतकोकरैगौओंकोपूजैगोबिन्दकोप्रणामकरै गोरसआदि भोजनकरै औ नियमसेरहै वह अपने मनोबांछितफल पाताहै॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सोलहवां अध्याय॥

श्रीकृष्ण कहते हैं कि हे महाराज भाद्रशुक्ल तृतीया को सब प्रकार के धान्य एकत्रकर उनपर हरकाली भगवतीकीमूर्त्ति स्थापनकर गंध पुष्प धूप दीप मोदक आदि नैवेद्य औ भांतिर के उपचारों से पूजनकर रात्रिके समय गीतनृत्य आदि उत्सव कर जागरणकरै प्रभात होतेही सुवासिनी स्त्री उसमूर्त्तिकोबड़े उत्सव से लेजाकर जलमें विसर्जनकरै इतना सुन राजा युधिष्ठिर पूछते हैं कि हे श्रीकृष्ण हरकाली नाम भगवतीका क्योंकर भया औ हरकाली का पूजन करने से स्त्रियों को क्या फल प्राप्त होताहै यह आपवर्णन करैं श्रीकृष्णचन्द्र कहनेलगेकिमहाराज दक्ष प्रजापति की कन्या कालीनामथी औ उसका वर्ण भी नीलकमलकेसमान था वह शिवजीको विवाही। शिवजीभी विवाह के अनन्तर कालीभगवती के साथ विहार करनेलगेएक समय विष्णुजी सहित श्रीसदाशिव अपनी सभा के मण्डप में विराजमान थे उसी अवसर में हास्य करके शिवजीने कालीभगवतीको बुलाया कि हे प्रिये हे गौरि यहां आओ यह शिवजी का वक्रवाक्यसुन भगवती को बहुतक्रोधहुआ औ रोदन करने लगीं कि शिवजी ने हमारा कृष्णवर्ण देख हास्य करके हमको गौरी कहाहै इसलिये इस देहको हम प्रज्वलित अग्निमें हवन करदेंगीयह मनमें बिचारअपनेदेहकी हरितवर्णकांतिकोशाद्वल अर्थात् हरीदूर्वा युक्त स्थल में त्याग अपना देह अग्निमेंहवन किया औ हिमालय की पुत्री गौरी नामहोकर शिवजीकेवामांग में निवासकियाउसीदिनसे जगत्पूज्य श्रीभगवती का नामहरकालीभया पूजनइसमन्त्रसेकरना चाहिये (हरकर्मसमुत्पन्नेहरकालिहरप्रिये। मंत्रदैवतमूर्त्तिस्थेप्रणमामिनमोनमः)विसर्जनइस

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मंत्रसेकरै (अर्चितासिमयाभक्त्या गच्छदेविसुरालयम् । हरकालिमहागौरिपुनरागमनंत्वया) इस विधि से प्रति वर्ष जो स्त्री अथवा पुरुष व्रतकरै वह आरोग्य दीर्घआयुष् सौभाग्यपुत्रपौत्र धन बल ऐश्वर्यआदि पाताहै औ सौ वर्षतक संसार का सुख भोगकर शिवलोकमें प्राप्तहोताहै वहां वीरभद्र महाकालनदीश्वर विनायक आदि शिवजीके गण उसकी आज्ञामें रहते हैं जो स्त्री भक्तिसे इस हरकाली व्रतको करतीहैं औरात्रिकेसमय गीत वाद्य नृत्यसे जागरणकर बड़ा उत्सव करतीहैं वे पति की अति प्रियाहोती हैं ॥

सत्रहवां अध्याय ॥

राजा युधिष्ठिर पूछते हैंकि हे श्रीकृष्णचंद्र अब आपद्वादश मासिकव्रतकहैं जिसके करनेसेसब उत्तमफलप्राप्तहोंय औ प्रत्येक मासका विधान कहैं । यह राजाका प्रश्नसुन श्रीकृष्णभगवान् बोले कि महाराज हम प्राचीनवृत्तांतकहते हैं आप श्रवण कीजिये । एक समय अनेकप्रकारके पुष्पफलयुक्त वृक्षोंसे शोभित आम्र चंपक अशोक कदंब वकुलआदिके पुष्पोंपर विहार करते भ्रमरोंसे शब्दायमान मयूर राजहंस मृग हाथी सिंह वानर आदि जीवों करके युक्त गंधर्व यक्ष किन्नर सिद्ध तपस्वी नाग आदिकों करके सेवित कैलाशपर्वत में सबदेवता औ गणोंकरके पूजित श्रीसदाशिव विराजमानथे उस समय अति विनय से पार्वतीजीने प्रार्थनाकरी कि महाराज ऐसाव्रत आप कथन करैं जिसके करनेसे सौभाग्य धन सुख पुत्र रूप लक्ष्मी औ स्वर्ग की प्राप्तिहोय औ दीर्घ आयुष्तथाआरोग्यभीमिलै यहपार्वतीजीका वचन सुन हँसकर शिवजी बोले कि हे प्रिये ऐसा कौन पदार्थहै जो आपको दुर्लभहै किजिसकीप्राप्तिके लिये व्रतपूछती

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हौ तब पार्वतीजी ने कहा कि महाराज मुझेतो आपके अनुग्रह से तीनलोकके सब उत्तम पदार्थ प्राप्तहीहैं परंतुसंसारमें अनेक स्त्री मेरा आराधन करतीहैंकोई पुत्रकेलिये कोईपतिके लियेकोई सौभाग्य के अर्थ कोई सासु करके पीड़ित अपनादुःखदूर होने के लिये औ कोई रूपलावण्य की प्राप्ति के हेतु मेरा भक्ति से सेवन करतीहैंओमेरे शरणमें प्राप्तहोती हैं जिसप्रकारवेअपना२ अभीष्ट अनायास से पावें वह उपाय आप कथनकीजियेउनके अर्थही मेराप्रश्न है यह पार्वतीजीका वचन सुन शिवजी कहने लगे कि माघशुक्ल तृतीयाको प्रभातउठ शौचकर हाथपांव औ मुख धोकर दंतधावनकर व्रतके नियम ग्रहणकरै औ मध्याह्न के समय तिल औ आमलक लगाय स्नानकर शुद्धवस्त्र पहिन गंध पुष्प धूप दीप कर्पूर कुंकुम औ भांति २ के नैवेद्योंसे भक्तवत्सला श्रीभगवतीका पूजनकरै पीछेताम्र पात्र में जल अक्षत औ सुवर्ण डालकर पात्रको हाथमेंउठाय अपने अभीष्टकोमनमें ध्यान करताहुआ येमंत्रपढ़ै॥ ब्रह्मावर्त्तसमाख्याता ब्रह्मयोनिवि निर्मिता। भद्रेश्वरीततोदेवीललिताशंकरप्रिया१ गंगाद्वारेहरंप्राप्तागंगाजलपवित्रिता। सौभाग्यारोग्यपुत्रार्थमर्थार्थिजनवल्लभे। अजातघटिकांभद्रेप्रतीच्छस्यनमोनमः। ये पढ़भगवतीको अर्घ्य देवै औ आचमनकर रात्रिके समय भूमि में कुशा की शय्या पर सोवै दूसरे दिन प्रभात उठ स्नान कर विधि से भगवती का पूजन कर यथा शक्ति ब्राह्मण भोजन कराय आप भी मौन से भोजन करै इस भांति प्रथम मास में कालिका भगवतीका पूजन करै द्वितीयमास में पार्वतीका तृतीय में शंकर प्रियाका चतुर्थ में भवानीका पांचवें में गौरीका छटेमें दक्षपुत्री का सातवें में मेनाकी का आठवें में ललिताका नवममें साध्वीका दशवेंमें सौभाग्य दायिनी का ग्यारहवें में उमाका औ बारहवें

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

महीने में गौरीका पूजनकरै औ बारहोंमहीनोमेंक्रमसे कुशोदक दुग्ध घृत गोमूत्र गोबरफल निंब बचामुलहटी विल्वपत्र पंचगव्य औ शाक इनको प्राशन करैइस प्रकार बारहमास काव्रतकर श्रद्धासे भगवतीका पूजन करै औ इनमंत्रोंसेप्रार्थना भी करै (ओंकारपूर्वकेदेवि नमस्कारांतदीपिते। एभिस्तुपूजितामंत्रैस्तुष्यसि ब्राह्मणप्रिये। तुष्टात्वमीप्सितान्कामान्ददासिप्रीतिपूर्वकम्)व्रत समाप्त होनेपर वेदपाठी ब्राह्मण को भार्या सहित बुलाय दोनों का शिव पार्वती बुद्धि से पूजन कर प्रीति से भोजन कराय दक्षिणा वस्त्र भूषणआदिदेकर उनको सन्तुष्ट करै ब्राह्मणकोशुक्ल वस्त्र औ ब्राह्मणी को रक्त वस्त्र देवै इस व्रतको जो स्त्री भक्ति से करै वह अपने पतिसहित दिव्यलोक में प्राप्त हो दश हजार वर्ष उत्तम भोग भोगते हैं औ मनुष्यलोक में जन्म ले फिर भी दोनों दंपतीही होते हैं औ आरोग्य धन विद्या संतान आदिसब उत्तम पदार्थ उनको प्राप्त होते हैं औ उस स्त्रीके सदा भर्ता अधीन रहता है औ वह स्त्री पतिको प्राणोंसेभी अधिक प्रियहोती है औ उत्तम रूप लावण्य औ सौभाग्य पाती है औ जन्मांतर में राजा की रानी हो भूमिका भोग करतीहै इस ललितात्रत के विधान को जो सुने वहभी सब उत्तम फल पावै॥

आठवां अध्याय॥

युधिष्ठिर पूछते हैं कि हे श्रीकृष्णचन्द्र जिस व्रत के करनेसे स्त्री पति करके वियुक्त न होय अन्त में शिवलोक में वासपावैऔ जन्मान्तर में भी विधवा न होय ऐसा व्रत आप वर्णन करैंयह राजाकावचन सुन श्रीकृष्ण भगवान्कहनेलगे कि हे महाराज यही बात पार्वती जी ने शिवजीसे औ अरुंधती ने वशिष्ठजी से पूछीथी उन्ने जो कहा वही हमआपको श्रवण कराते हैं। मार्ग-

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

शीर्ष मासकीशुक्लद्वितीया को आचमन कर शिव औ पार्वतीको दण्डप्रमाणकरै पीढ़े गूलर के काष्ठ से दंत धावन करस्नानकरै औ शालिपिष्ट से शिव पार्वती की प्रतिमा बनाय उत्तम पात्रमें स्थापनकर विधिपूर्वकउनका पूजन करै औ रात्रिके समय खीर का भोजन करै शिव पार्वती का स्मरण करता हुआभूमिपरशयन करै प्रभात उठ दक्षिणा सहित वह प्रतिमा आचार्यकोदे उत्तमभोजन से शिवभक्त ब्राह्मणों को संतुष्ट करै औ यथाशक्ति दंपति पूजन भी करै इस भांति प्रतिमास व्रत कर पूजन करै अब हम बारह महीनों के नाम पूजनकेअर्थ कहते हैं पौष मास में गिरिश औ पार्वती का पूजनकर पंचगव्य का प्राशनकरैमाघ में भव औ भवानीका पूजन करै फाल्गुन में महादेव औउमाका अर्चनकरैचैत्रमें शङ्कर औ ललिताकायजनकरैबैशाख में स्थाणु औ लोलनेत्राका पूजन करै ज्येष्ठमेंरुद्र औ रुद्राणीका पूजनकरै आषाढ़ में पशुपति औ सती का पूजनकरै श्रावण में श्रीकंठ औ सुतारा का पूजनकरै भाद्र में भीम औ कालरात्रिका यजनकरै आश्विन में शिव औ दुर्गाका पूजन करै औ कार्तिकमास में ईशान औ शिवादेवी का भक्ति से अर्चन करै इन नामोंसे बिना पूजनकिये व्रत सिद्धि नहीं होती औ बारह मास में क्रम करके इन पुष्पोंसे अर्चन करै नीलोत्पल करवीर किंशुक चमेलीकदम्ब द्रोण मालती वक अगस्त्य कमलकुमुद औ विल्वपत्र प्रतिमास में नित्य इन पुष्पों करके पूजन करै बर्ष समाप्ति में शिवपूजा करै सुवर्ण का कमल दो वस्त्र ध्वजा दीपक औ भांति २ कैनैवेद्य शिव जी के अर्प्पण कर आरती करै औ यथाशक्ति ब्राह्मण मिथुनों का पूजन कर सुवर्ण की शिव पार्वती की मूर्ति बनाय ताम्र पात्र में स्थापन करउसी पात्रमें चौसठ मोती चौसठमूंग औ चौसठ पुखराज धर पात्रको वस्त्र से ढक आचार्य के अर्पण करै

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

करै व्रती ब्राह्मण औ दंपती इन सबको सुवर्ण औ वस्त्र देवै अड़तालीस जल पूर्ण कलश छत्र जूता औ सुवर्ण ब्राह्मणों को बांटै औ दीन अंध कृपणों को अन्न देवै किसी को उस दिन विमुख न जाने देवै इतना करनेका सामर्थ न होय तो कुछ न्यून करै परन्तु वित्तशाठ्य न करै इस व्रतके करनेसे रूप सौभाग्य धन आयुष पुत्र औ शिवलोक की प्राप्ति होती है इष्ट वियोग कभी नहीं होता जो पतिव्रता इस व्रत को करै वह कभी पति पुत्र सौभाग्य औ धन से वियुक्त नहींहोती औ शिवलोकमें निवास करती है ॥

उन्नीसवां अध्याय ॥

राजा युधिष्ठिर पूछते हैं कि हे कृष्णचन्द्र किस व्रत के करने से नारियों को बहुतसे पुत्र पौत्र सुवर्ण वस्त्र औ सौभाग्य मिलता है यह आप वर्णन करैं यह राजा का प्रश्न सुन श्रीकृष्ण बोले कि हे महाराज सब व्रतों में उत्तम व्रत हमवर्णन करतेहैं जिसके करने से स्त्रियों को बहुत सन्तान दास दासी भूषण वस्त्र औ सौभाग्य प्राप्त होय यह उमामाहेश्वर व्रत अप्सरा विद्याधरी किन्नरी ऋषिकन्या रम्भा सीता अहल्या रोहिणी दमयंती तारा अनसूया आदि सब स्त्रियोंने किया है औ सबउत्तम स्त्री करती हैं मनुष्यलोक में दुर्भगा औ कुरूपा स्त्रियों के हित के लिये पार्वतीजी ने इस व्रत का प्रचार किया है मार्गशीर्ष शुक्ल तृतीया को नियम पूर्वक स्त्री उपवास करै औ स्नान कर शिवजीके बामांग में निवास करनेवाली श्री ललिता भगवती का पूजन करै प्रभात उठ नदीमें स्नानकर शिव पार्वती का ध्यान करती हुई यह मंत्र पढ़ै (नमोनमस्तेदेवेश उमादेहार्द्ध धारक। नमोदेविनमस्तेस्तु हरकायार्द्धवासिनि) फिरघरमेंआय

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

दक्षिण भागे में शिवजीकी मूर्ति औ बामभागमें पार्वतीकीमूर्ति स्थापनकर गंध पुष्प गुग्गुल धूप दीप औ घृत पक्व नैवेद्य से भक्तिपूर्वक पूजन कर तिल औ घृत से हवन कराय अपने देह की शुद्धि के लिये पंचगव्य प्राशन करै इसभांति बारह महीने पूजनकर प्रसन्न चित्त हो व्रतका उद्यापन करै चांदी की शिव मूर्ति औ सुवर्णकी पार्वती की मूर्ति बनवाय दोनों को चांदी के वृषके ऊपर स्थापन कर सब वस्त्र औ भूषणों से अलंकृत करै चन्दन श्वेत पुष्प श्वेत वस्त्र आदिसे शिवजीका औ कुंकुम रक्त-पुष्प आदिसे पार्वतीजीका पूजन करै पीछे शिव भक्त वेदपाठी औ शांत चित्त ब्राह्मणोंको भोजनकराय सबको दक्षिणादे प्रदक्षिणाकर यहमंत्र पढ़ै (उमामहेश्वरौदेवौसर्वसत्वपितामहौ।व्रतेनानेनसंप्रीतौभवेतांममसर्वदा) इसभांति प्रार्थना कर जितक्रोध हो व्रत समाप्त करै इसव्रत को जो स्त्री भक्ति से करै वह शिवजीके समीप एक कल्प निवासकरै औ किन्नरी अप्सरा विद्याधरी आदि उसकी सेवामें रहैं फिर मनुष्यलोक में उत्तम कुलके बीच जन्म लेकर रूप यौबन पुत्र आदि सब पदार्थ पाय बहुत काल अपने पतिके साथ संसारके सुखभोग अंतमें शिवसायुज्य पातीहै चांदी औ सुवर्णकी शिव पार्वतीकी प्रतिमा बनायचांदी के वृषपर स्थापनकर उत्तम वस्त्र भूषणों से अलंकृत कर भक्ति से पूजाकरै पीछे ब्राह्मण को देवे वह नारी कभी बिधवा नहीं होती औ पुत्र धन आदि सब पदार्थ पाती है ॥

बीसवां अध्याय ॥

श्रीकृष्ण कहतेहैं कि हे महाराज अब हम सौभाग्य शयनाम व्रत कहते हैं जो पुराणोंमें प्रसिद्ध है प्रलय के समय सब लोक दग्ध होगये तब सबका सौभाग्य इकट्ठा होकर वैकुण्ठमें

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

विष्णु भगवान् के वक्षस्थलमें स्थित हुआ फिर जब सृष्टि भई तब आधा सौभाग्य तो ब्रह्माके पुत्र दक्ष प्रजापति ने पानकर लिया जिससे उनका रूप औ लावण्य अधिकभया औ आधेसे इक्षुताल निष्पाव क्षीर कुसुंभ कुंकुम चंदन औ लवण ये आठ पदार्थ उत्पन्न भये इनका नाम सौभाग्याष्टक है दक्ष प्रजापतिने जो सौभाग्य पान किया उससे सतीनाम कन्या उत्पन्न भईसब लोकमें उसका सौंदर्य अधिक भया इसीसे उसकानामललिता भया वह त्रैलोक्य सुंदरीकन्या शिवजीको बिवाही उस जगन्माता के आराधनसे भुक्ति मुक्ति औ स्वर्गका राज्यभी मिलता है इतनासुन राजा युधिष्ठिर पूछते भये कि भगवतीकेआराधन का क्या विधान है आप जगत् के कल्याण के अर्थ वर्णन करैं तब श्रीकृष्ण भगवान् कहनेलगे कि महाराज चैत्रमास को शुक्ल तृतीया को ललिता भगवती का शिव जीके साथबिवाह हुआ है उस दिन पूर्वाह्न में तिलों से स्नानकर गंध पुष्प धूप दीप नैवेद्य भांति भांति के फल गोघृत औ गन्धोदक करके भक्ति से शिव पार्वती का पूजन करै फिर पाटला औ शंभु का चरणोंमें पूजनकरै त्रियुगा औ शिवका गुल्फों में औ भद्रा सहित ईश्वर का मस्तक पर गंधमाल्य आदि से पूजन करै ये सब प्रणवादि नमोंतनाम मंत्र है इस भांति पूजनकर सौभाग्याष्टक का निवेदन करै औ रात्रिको भूमिपर सोवै प्रभातउठ स्नानकर ब्राह्मणदंपतीकापूजनकर दोधरण अर्थात्छमासेसुवर्ण औ सौभाग्याष्टक ब्राह्मणको देवै औ यह कहै कि ललितादेवी प्रसन्नहोय इसभांति एक वर्ष पर्यंत प्रतिमास की तृतीया को पूजन करै औ चैत्रआदि बारह महीनों में गोशृंगजल गोबर मंदार पुष्प विल्वपत्र दही कुशोदक दूध घृत गोमूत्रघी कृष्णतिल औ पंचगव्य का प्राशनकरै औ ललिता विजया रुद्रा भवानीकु-

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

दक्षिण भागे में शिवजीकी मूर्ति औ बामभागमें पार्वतीकीमूर्ति स्थापनकर गंध पुष्प गुग्गुल धूप दीप औ घृत पक्व नैवेद्य से भक्तिपूर्वक पूजन कर तिल औ घृत से हवन कराय अपने देह की शुद्धि के लिये पंचगव्य प्राशन करै इसभांति बारह महीने पूजनकर प्रसन्न चित्त हो व्रतका उद्यापन करै चांदी की शिव मूर्ति औ सुवर्णकी पार्वती की मूर्ति बनवाय दोनों को चांदी के वृषके ऊपर स्थापन कर सब वस्त्र औ भूषणों से अलंकृत करै चन्दन श्वेत पुष्प श्वेत वस्त्र आदिसे शिवजीका औ कुंकुम रक्त-पुष्प आदिसे पार्वतीजीका पूजन करै पीछे शिव भक्त वेदपाठी औ शांत चित्त ब्राह्मणोंको भोजनकराय सबको दक्षिणादे प्रदक्षिणाकर यहमंत्र पढ़ै (उमामहेश्वरौदेवौसर्वसत्वपितामहौ।व्रते नानेनसंप्रीतौभवेतांममसर्वदा) इसभांति प्रार्थना कर जितक्रोध हो व्रत समाप्त करै इसव्रत को जो स्त्री भक्ति से करै वह शिवजीके समीप एक कल्प निवासकरै औ किन्नरी अप्सरा विद्याधरी आदि उसकी सेवामें रहैं फिर मनुष्यलोक में उत्तम कुलके बीच जन्म लेकर रूप यौवन पुत्र आदि सब पदार्थ पाय बहुत काल अपने पतिके साथ संसारके सुखभोग अंतमें शिवसायुज्य पातीहै चांदी औ सुवर्णकी शिव पार्वतीकी प्रतिमा बनायचांदी के वृषपर स्थापनकर उत्तम वस्त्र भूषणों से अलंकृत कर भक्ति से पूजाकरै पीछे ब्राह्मण को देवे वह नारी कभी बिधवा नहीं होती औ पुत्र धन आदि सब पदार्थ पाती है ॥

बीसवां अध्याय ॥

श्रीकृष्ण कहतेहैं कि हे महाराज अब हम सौभाग्य शयनाम व्रत कहते हैं जो पुराणोंमें प्रसिद्ध है प्रलय के समय सब लोक दग्ध होगये तब सबका सौभाग्य इकट्ठा होकर वैकुण्ठमें

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

विष्णु भगवान् के वक्षस्थलमें स्थित हुआ फिर जब सृष्टि भई तब आधा सौभाग्य तो ब्रह्माके पुत्र दक्ष प्रजापति ने पान कर लिया जिससे उनका रूप औ लावण्य अधिकभया औ आधेसे इक्षुताल निष्पाव क्षीर कुसुंभ कुंकुम चंदन औ लवण ये आठ पदार्थ उत्पन्न भये इनका नाम सौभाग्याष्टक है दक्ष प्रजापतिने जो सौभाग्य पान किया उससे सतीनाम कन्या उत्पन्न भईंसब लोकमें उसका सौंदर्य अधिक भया इसीसे उसकानामललिता भया वह त्रैलोक्य सुंदरीकन्या शिवजीको बिवाही उस जगन्माता के आराधनसे भुक्ति मुक्ति औ स्वर्गका राज्यभी मिलता है इतनासुन राजा युधिष्ठिर पूछते भये कि भगवतीकेआराधन का क्या विधान है आप जगत् के कल्याण के अर्थ वर्णन करैं तब श्रीकृष्ण भगवान् कहनेलगे कि महाराज चैत्रमास की शुक्ल तृतीया को ललिता भगवती का शिव जीके साथबिवाह हुआ है उस दिन पूर्वाह्न में तिलोंसे स्नानकर गंध पुष्प धूप दीप नैवेद्य भांति भांति के फल गोघृत औ गन्धोदक करके भक्ति से शिव पार्वती का पूजन करै फिर पाटला औ शंभु का चरणोंमें पूजनकरै त्रियुगा औ शिवका गुल्फोंमें औ भद्रा सहित ईश्वर का मस्तक पर गंधमाल्य आदि से पूजन करै ये सब प्रणवादि नमोंतनाम मंत्र है इस भांति पूजनकर सौभाग्याष्टक का निवेदन करै औ रात्रिको भूमिपर सोवै प्रातउठ स्नानकर ब्राह्मणदंपतीका पूजनकर दोधरण अर्थात् छमासेसुवर्ण औ सौभाग्याष्टक ब्राह्मणको देवै औ यह कहै कि ललितादेवी प्रसन्नहोय इसभांति एक वर्ष पर्यंत प्रतिमास की तृतीया को पूजन करै औ चैत्रआदि बारह महीनों में गोशृंगजल गोबर मंदार पुष्प विल्वपत्र दही कुशोदक दूध घृत गोमूत्रघी कृष्णतिल औ पंचगव्य का प्राशनकरै औ ललिता विजया रुद्रा भवानीकु-

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मुदा शिवा सुदेवी गौरीमंगला कमला सती औ उमा इननामों को दान काल में क्रमसेबारहमहीनों में उच्चारणकरै मल्लिका अशोक कमल उत्पल मालती कुटज करवीर वाण अम्लान कुंकुम सिंदुवार औ जपा ये बारह महीनोंमें पूजाके लियेक्रमसे पुष्प कहे हैं इनमें जो प्राप्तहोय उसीसे भगवतीका पूजन करै परन्तु करवीर पुष्प सदा भगवती को प्रिय है इसभांतिएकवर्ष व्रत करके उत्तम शय्या बनवाय उसके ऊपर तीनपलसुवर्णकी उमा महेश्वरकी प्रतिमा स्थापन कर ब्राह्मणको देवै औउसके साथ एक उत्तम गौभी देवै और भी वस्त्र भूषण गौ दक्षिणा आदिसेयथाशक्तिदंपतिपूजनकरैवित्तशाठ्य न करैइसव्रतकेकरने से सब कामना सिद्ध होतीहैं औ परलोकमें भी सुखकी प्राप्ति होतीहै सौभाग्यआरोग्यरूपआयुष् वस्त्र भूषणआदिकातीनसौ जन्म तक बियोग नहीं होता जो इसव्रतको बारहवर्ष करै वह तीन अयुत कल्पपर्यंत स्वर्ग्गमें रहैजो स्त्री पुरुष कुमारी इससौ-भाग्यशयन नामव्रत को भक्तिसे करै अथवा इसकेमहात्म्यको सुनै वह दिव्यदेहधार स्वर्ग्गकोजाय यहव्रत कामदेवने शशवि-न्दुने औरभी कई देवताओंनेकियाहै औ सबको करना चहिये॥

इक्कीसवां अध्याय॥

राजा युधिष्ठिरपूछते हैं कि सौभाग्यआरोग्य आदिफलदेने-हारा औ शत्रुओं का क्षयकारक भुक्ति मुक्ति प्रद कोई व्रत आप औरभी वर्णनकरैं यह राजाका प्रश्नसुन श्रीकृष्ण कहनेलगेकि हे महाराज जो व्रत विष्णु भगवान् ने लक्ष्मीजी को कहाहै वह हम आपको कथनकरते हैं आप सावधान हो श्रवणकीजियेवै-शाख भाद्र अथवामार्गशीर्ष की शुक्ल तृतीया को श्वेत सरसोंका उबटन लगाय स्नानकर गोरोचन मोथा गो मूत्र दही गोबरऔ

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

चंदन इन सबको मिलाय मस्तक में तिलककरै यह तिलक सौभाग्य औ आरोग्य करनेहारा है औ ललिता भगवती को अतिप्रियहै प्रतिमासकी तृतीया को सौभाग्यवती स्त्री रक्तवस्त्र पहिनकर विधवा पीतवस्त्र औ कुमारी शुक्लवस्त्र पहिन पूजनकरै पहिले पंचगव्य करकेऔ केवल दुग्धकरके भगवती को अर्घ्य देकरमधु औ गंधोदक से स्नान कराय श्वेत पुष्प औ अनेक प्रकारके फल चढ़ावै घनियां मुलहटीलवण गुड़ दुग्ध घृत अक्षत औ तिलोंकरके अर्घ्यदेवै पीछे वरदायैनमः शिवप्रियायैनमः अशोकायैनमः भवान्यैनमः गौर्यैनमः त्रिनेत्रायैनमः तुष्ट्यैनमः पुष्ट्यैनमः सृष्ट्यैनमः कात्यायन्यैनमःश्रियेनमःरम्भायैनमःललितायैनमःवासुदेव्यैनमः इन मंत्रोंसे क्रमपूर्वक भगवती के चरण गुल्फ जंघा जानु हृदय लोचन ललाट औ शिरका पूजन कर अपने अग्रभाग में द्वादश दल कमल लिखै पीछे वाम भागमें गौरी दक्षिण में भवानी औ मध्यमें रुद्राणी पश्चिमसे सौम्या मदनवासिनी पाटला उग्रा उमास्वाहा स्वधा तुष्टि मंगला कुमुदा सती औ रुद्राणी इनका द्वादश दलोंमें पूजनकर कर्णिकाके ऊपर ललिता का पूजनकरै अनेक प्रकार के उपचारों से पूजनकर नमस्कार करै पीछे सुवासिनी को स्नान आदि कराय उसके शिरमें सिंदूर पातनकररक्त चंदन पुष्प रक्तवस्त्र भूषण आदिसे उसका पूजनकरै भाद्र आदि बारह महीनों में उत्पल बंधूक कमल कुंद कुंकुम सिंदुवार चमेलीमल्लिका अशोक पाटला चंपक कदंब इन पुष्पोंसे क्रमपूर्वक पूजनकरै गोमूत्र गोबर दुग्ध दही घृत कुशोदक गोशृंगोदकजल पुष्प तिलपिष्ट पंचगव्य औ बिल्व इनका बारहमहीनोंमें प्राशन करै प्रत्येक तृतीयाको इसीविधिसे पूजनकरै ब्राह्मणऔ ब्राह्मणी को शिव पार्वती मान भोजन कराय वस्त्रभूषण आदि से उनका पूजन करै पुरुषको पीतवस्त्र औ स्त्री को रक्त वस्त्र पहिनावै

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

और भी चौबीस अथवा बारह मिथुन अर्थात् स्त्री पुरुष के जोड़ों का पूजनकर गुरुका पूजन करै जो गुरुपूजन न करैं उनकी सब क्रिया निष्फल होती हैं इस भगवती के पूजन में वितण्डाठ्यनहीं करना चहिये गर्भिणी सूतिका औ रोगिणी स्त्री दूसरे से पूजन करावैं औ आप भक्तिसे देखैं इस अनन्त फलदा तृतीया का व्रत जो भक्तिसे करै वह सौकोटि कल्प पर्यंत शिवजीके समीप निवास करै धनहीनभी तीनवर्ष इसव्रतको करै औ पत्र पुष्प जो मिलैं उनसेही भक्ति करके पूजनकरै वहभी संपूर्ण फलपाताहै जोस्त्री इस व्रतके विधान को श्रवणकरै वहभी किन्नरी विद्याधरी आदि करके सेवित पार्वती के समीप निवास करै॥

बाईसवां अध्याय॥

श्रीकृष्ण कहते हैं कि हे महाराज अब हम रस कल्याणिनी नाम तृतीयाकाविधानकहते हैं माघशुक्ल तृतीया को प्रभातही गोदुग्ध औ तिलों करके स्नानकर शहत औ इक्षुरस करकेभगवती को स्नानकरायचमेली अथवाकुंकुम करके पूजनकरेपहिले दक्षिणओरके अंगोंकी पूछाकर वामभागके अंगपूजैललितायै नमः इसमन्त्र करकेपाद गुल्फजंघा जानुका पूजनकरै श्रियेनमः इसकरके अंगुलियोंका मदतालसायैनमः इसमन्त्र करकेकटिका कुमुदायैनमःइसमन्त्र करकेग्रीवा का माधव्यैनमः इसकरकेभुज औ भुजाग्र का कमलायैनमः इसकरके मुखकारुद्राण्यैनमःइस करके भ्रू औ ललाट का विश्ववासिन्यैनमः इस करकेमुकुटका कांत्यैनमः इससे अलकों का मदनायैनमः इससेललाटका मोहिन्यैनमः इसकरके भ्रूका चक्रधारिण्यैनमः इस करके नेत्रोंका पुष्पै नमः इसकरके मुखका उत्कंठिन्यैनमः इसकरके कंठकाअतायैनमः इसकरके कंधरा का रंभायैनमःइस करके वामभुजाक

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

विशोकायनमः इस करके हृदय का पाटलायै नमः इस करके उदर का सुरतवासिन्यैनमः इस करके कटिकाचम्पकश्रियैनमः इसकरके ऊरु का गौर्यैनमः इसकरके गुल्फका गायत्र्यैनमः इस करके शिरका पूजन कर ओंनमोभवान्यैकामिन्यैवासुदेव्यैजगच्छ्रियेआनन्दायैनंदनायैरुद्रायैचनमोनःइस मन्त्रसे प्रार्थनाकर ब्राह्मण दम्पती का पूजन करावै इसी विधिसे प्रतिमास पूजनकरै औ माघआदि महीनों में क्रमसे लवण गुड़ नवान्नमधुपानक जीरा क्षीर दही घृतशाक धनिया औ शर्करा इनकोत्यागै अर्थात्भक्षणनकरै औ प्रतिमास एक पात्र इनपदार्थों का भर ब्राह्मण को दक्षिणासहितदेवै औ माघमें पूजन के अन्तमें कुमुदाप्रीयताम् यह कहै इसीभांतिफाल्गुन आदि महीनों में माधवी गौरी रंभा भद्राजया शिवाउमा शची सती मंगलारतिलालसा का नामग्रहण करै पंचगव्यका सर्वत्र प्राशनकरै औ उपवास करै जो सामर्थ्य न होय तो नक्त व्रतही करै फिर माघ मास आवै तब शर्करा पूर्णपात्र के ऊपर सुवर्ण की पार्वती की मूर्ति स्थापन कर वस्त्र भूषण रत्न आदिसे अलंकृतकर गोमिथुन अर्थात् एकबैल औ एक गो सहितब्राह्मण को देवै इसविधिसे जो व्रत करै वह तत्क्षण सबपापोंसे मुक्त होजाताहै औ हजार जन्मतक दुःखो नहींहोताहजार अग्निष्टोम यज्ञका फल पाताहै जो स्त्री कुमारी बिधवा आदिभी इसव्रतको करै तो सबप्रकार के उत्तम फल पावै जो इसविधान को सुनै अथवा व्रत करनेकलिये औरोंको उपदेश करै वहभी सब पापों से मुक्त हो पार्वती लोकमें निवास करता है ॥

तेईसवां अध्याय ॥

श्रीकृष्णचन्द्रकहते हैं किहे महाराजअबहम आर्द्रानंदकरी

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

तृतीयाका विधान वर्णनकरते हैं जब कभी आषाढ शुक्ल तृतीया को रोहिणी अथवा मृगशिरा नक्षत्रहोय उसदिनसे इसव्रत का आरम्भ करै कुशा औ गंधोदककरके स्नानकर श्वेतचन्दनश्वेत माला औ श्वेत वस्त्र पहिन उत्तम सिंहासन पर शिवपार्वती की प्रतिमा स्थापन कर रक्तचन्दन रक्तपुष्प आदिसे पूजन करै पीछे वासुदेव्यैनमः शोकविनाशिन्यै० रंभायै० आदित्यै० माधव्यै आनंदकारिण्यै० उत्कंठिन्यै० उत्पलधारिण्यै० परिरंभिण्यै० विभासिन्यै० श्रुतिस्मृतिरूपायै० मदनवासिन्यै० रतिप्रियायै० इंद्राण्यै० स्वाहायैनमःइनमन्त्रोंसेभगवतीकेऔशंकरायनमः० आनंदायनमः० शिवाय० शूलपाणिने० शंभवाय० इन्दुधारिणे० नीलकंठाय० रुद्राय० नृत्यशीलाय० विषमाक्षाय० विश्ववक्त्राय० विश्वधाम्ने० तांडवेशाय० हव्यवाहाय० पंचशिरायनमः-इनमंत्रोंसेशिवके पादजंघा ऊरुकटि नाभिस्तन कंठ हाथ भुजा मुखनेत्रभ्रूललाट औमुकुट इन अंगोंका क्रमसेपूजन कर यह मंत्र पढ़ै(विश्वकायौ बिश्वमुखौ बिश्वपादकरौशिवौ प्रसन्नवदनौबंदेपार्वतीपरमेश्वरौ) इसविधिसे पूजनकरमूर्त्तियोंके आगे अनेकप्रकारके कमल शंख स्वस्तिक चक्र वर्द्धमान आदिके चित्र पंचरंग से लिखै गोमूत्र गोबर क्षीर दही घृतकुशोदक गोशृंगोदक बिल्वपत्रकूटयुक्तजल उशीर अर्थात् खसका जल यवचूर्ण का जल औ तिलोदकका क्रम से मार्गशीर्ष आदि महीनों में प्राशनकरै परन्तु यह प्राशन प्रति पक्ष की द्वितीया को कर शयन करै सर्वत्रपूजा के लिये शुक्ल पुष्पश्रेष्ठ हैं औ दानकाल में यह मंत्र पढ़ै (गौरीमेप्रीयतां नित्यमघनाशंचमंगलम्। सौभाग्यमस्तुललिता शर्वाणीसर्वसिद्धये)वर्षके अन्तमें लवणगुड़ चन्दनदो श्वेतवस्त्र इक्षु औ भांतिर के फलों सहित सुवर्ण की शिव पार्वती की प्रतिमा सपत्नीक ब्राह्मणको देवै औ गौरीमेप्रीयताम् यहकहै इस आर्द्रानंदकरी

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

तृतीया को व्रत करनेहारा पुरुष शिवलोक में निवास करता है औ इसलोक में भी धन आयुष् आरोग्य ऐस्वर्य औ सुख पाता है औ कभी उसको शोक नहीं होता प्रतिपक्ष में इसव्रतकोकरै औ विधि से पूजनकरै तो रुद्राणी लोकमें प्राप्त होय जो इस विधान को सुनै अथवा सुनावै वहभी गन्धर्बों करके पूजित इंद्र-लोक में निवास करै जो स्त्री इस व्रत को करैं वे संसार के सब सुख भोग अन्त में अपने पति सहित गौरीलोक में निवास करती हैं ॥

चौबीसवां अध्याय ॥

राजा युधिष्ठिर कहते हैं कि हे श्रीकृष्णचन्द्र चैत्र भाद्र औ माघकी तृतीया रूप सौभाग्य औ पुत्र देनेहारी हैं उनका आप ने वर्णन क्यों न किया क्या हम भक्ति रहित हैं अथवा वेद-मार्ग का उल्लंघन करने हारे हैं कि सब जगत् में प्रसिद्ध व्रत आपने हमसे गुप्त रक्खे यह सुनश्रीकृष्ण भगवान् बोले कि हे महाराज आप धर्मार्थ में कुशल हैं औ सर्वज्ञ हैं जो आपकी गुप्त व्रतों के ही श्रवण करने की इच्छा होय तो सुनिये आपसे उत्तम श्रोता कौन मिलैगा जया बिजया नाम पार्वती जी की सखी हैं उनको एक समय मुनि कन्याओं ने पूछा कि दोनों तुम भगवती की परिचारिका हो यह बताओ कि किस दिन किन उपचारों औ मंत्रों से पूजन करने करके पार्वती भगवती संतुष्ट होती हैं यह सुन जया बोली कि हे मुनि कन्याओं सुनो सब कामनासिद्धकरनेहारा व्रत मैं वर्णनकरतीहूं चैत्रशुक्ल तृतीया को प्रभातउठ दंतधावनकर व्रतके नियम ग्रहणकरै कुंकुमासिंदूर रक्तवस्त्र तांबूल आदि सौभाग्यवती के चिन्हधार भक्तिसे पूजन करै पहिले अतिसुंदर मंडपबनाय उसकेमध्यमें एक मनोहरवेदी

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

रच एकहाथ प्रमाणकाकुण्डबनावेपीछे स्नानकरउत्तमवस्त्रपहिन मंडप में जाय ब्राह्मण द्वारा सब कर्म करावै देवता औ पितरों का अर्चनकर आठनामों करके भगवती का पूजन करै कुंकुम कर्पूर अगरु चन्दन आदि लेपन लगाय अनेकप्रकारके सुगन्ध युक्त पुष्प चढ़ाय धूप दीप आदि उपचार समर्पण करै पार्वती ललितागौरीगान्धारी शांकरी शिवा उमा औ सतीयेआठनामहैं लड्डू अपूप आदि बहुत भांतिके घृत पक्व नैवेद्य औ दाड़िम नालिकेर आमलक कूष्मांड कर्कटी वीजपूर आदिफल निवेदनकरै औ संख तूर्य मृदंग आदिके शब्द औ उत्तम गीतसे उत्सव करै इसभांति भक्तिसे पार्वतीजीका पूजनकर प्रदोष के समय नये मृत्तिका के घटों में जललाकर उससे स्नानकर पूर्वोक्त विधिसे फिर भगवती का अर्चनकर गीला वस्त्र पहिने भगवती के संमुख पद्मासनसे बैटी रात्रि को व्यतीत करै प्रति प्रहर में पूजन औ घृत युक्त तिलोंसे हवन करै उससमय कोई स्त्री गावैं कोई हर्ष से नृत्यकरैं कोई भक्तिसे भगवती के गुण वर्णनकरैं नृत्य करके शिवजी गीतकरके पार्वती जी औ भक्तिसे सबदेवता बशहोतेहैं तांबूल कुंकुम औ उत्तम २ पुष्प सुवासिनी स्त्री भगवतीकों अर्पण करैं उसरात्रि को जागरण का उत्सव होय औ नट वेश्या आदिके तमाशा भी होंय इसभांति प्रसन्नता से रात्रि बिताय प्रभातहीं स्नानकर पार्वती का पूजनकर तुलाके ऊपर चढ़ै गुड़ लवण कुंकुम कर्पूर अगुरु चन्दन आदि द्रव्यों से यथाशक्तितुलै विशेष करके लवण की तुलाकरै इसविधि से जो नारी व्रत औ तुलादान करै वह अपने पति सहित इन्द्रलोक में निवास कर ब्रह्मलोक में औ वहांसे शिवलोक में प्राप्त होंय औ इसलोक में भी रूप सौभाग्य सन्तान धन आदि पावै उसके वंश में दुर्भगा कन्या औ दुर्विनीत पुत्र कभी उत्पन्न न होय औ उसके घरमें

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

दारिद्र्य रोग शोक आदिनहीं होते जो कन्या इस व्रत को करै औ वस्त्र भूषण आदिसेवाचक ब्राह्मणका पूजन करै वोअभीष्ट वरपाय संसारका सुखभोगै माघमासमें उत्तम मणियों करके चैत्रमें विचित्र पुष्पोंकरके औ भाद्रमें भांति२ के सस्यों करके इसी विधानसे पतिव्रता नारी भगवतीका पूजन करतीहैं॥

पच्चीसवां अध्याय॥

राजा युधिष्ठिर पूछतेहैं कि हे श्री कृष्णचन्द्र शुक्लपक्ष की तृतीयातो बहुतहैं परन्तु अनंतादि तृतीयाव्रतकाआप वर्णनकरैं औ प्रति मासके नाम औ प्राशन भी कहैं यहसुन श्रीकृष्णभगवान् कहनेलगे कि हे महाराज यह आनंतर्य व्रत ब्रह्माविष्णु शिवआदि देवताओं ने भी नहीं कहा गुप्त रक्खा उसको हम वर्णन करते हैं इस व्रतका आरंभ मार्ग शीर्ष से करै द्वितीया के दिन नक्त व्रतकर तृतीयाको उपवास करै गंधपुष्प आदिसे उमा देवीका पूजनकर शर्कराऔ पूरीका नैवेद्य लगाय आपभी दही प्राशनकर रात्रिको शयन करै औ प्रभात उठब्राह्मणदंपती को भोजनकरावै इस विधिसेजो नारी व्रतकरै वहसंपूर्णअश्वमेधके फलको पातीहै मार्गकृष्ण तृतीयाको का त्यायनीकापूजन कर नारिकेल नैवेद्यलगाय क्षीर प्राशन कर काम क्रोध त्यागरात्रिको शयन करै प्रभातउठ दंपति पूजनकरै तो गोमेध यज्ञ के फलको पावै पौष कृष्ण तृतीया को गौरीका पूजनकरलड्डू नैवेद्यलगाय घृत प्राशन कर शयनकरै औ प्रभातउठ मिथुन पूजन करै तो नरमेध यज्ञ का फल पावै माघशुक्ल तृतीया को सुरनायका का पूजन कर खंडके पक्कान्न नैवेद्य लगाय कुशोदक का प्राशन कर सोवै औ मिथुन को मिष्ठान्न भोजन करावै तो तीर्थ यात्राका फलपावै माघकृष्ण तृतीया को स्कंद माता का

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पूजन कर अपूप नैवेद्य लगावै औ पंचगव्य प्राशनकर देवीके आगे शयनकर दूसरेदिन भक्तिसेदंपति पूजाकरै तो कन्यादान का फलपावै आषाढ़मासमें सतीका पूजनकर दही औसत्तूनैवेद्य लगावै औ गोशृंग जल प्राशन कर सोवै औ मिथुन पूजाकरै तो भूमिदानका फलपावै आषाढ़ कृष्णतृतीया को कूष्मांडी का पूजनकर गुड़ औ घृत सहित सत्तू नैवेद्य लगायकुशोदकप्राशन कर सोवै औ मिथुन पूजाकरै तो गोसहस्त्रदानकाफलप्राप्तहोय श्रावणमें चंद्रघंटा का पूजन कर कुल्माष अर्थात् घुंघुनी नैवेद्य लगायपुष्पोदक प्राशनकर सोवै औ दंपती का पूजन करै तो अभयदानका फलहोय श्रावण कृष्ण तृतीया को रुद्राणी का पूजनकर सक्तुपिंड नैवेद्यलगाय पिण्याक अर्थात्खलकाप्राशन करसोवै औ ब्राह्मण मिथुन पूजै तो इष्टापूर्त्त का फलपावै भाद्र शुक्लमें कमलालया का पूजन कर कांस्यपात्रमें मांस को रख नैवेद्य लगावै औ गंधोदक का प्राशनकर सोवै प्रभात मिथुन पूजा करै तो उत्तम लोक पावै भाद्रकृष्ण तृतीया को दुर्गाका पूजनकर गुड़युक्त पिष्ट औ फल नैवेद्य लगाय गोमूत्र प्राशन कर सोवै औ मिथुन पूजा करै तो अन्नदानका फल प्राप्त होय आश्विनमें नारायणी का पूजन करखंडके पक्वान्न नैवेद्यलगावै चंदन प्राशनकर सोवै औ मिथुन पूजनकरै तो अग्निहोत्र का फलपावै कार्त्तिक तृतीयाको स्वाहाका पूजन करै औ घीखंड युक्त खीर नैवेद्यलगाय कुसुम्भबीजप्राशनकर सोवै औ मिथुन पूजाकरै तो गवाह्निक का फलपावै कार्त्तिक कृष्णतृतीया को चंडीका पूजन कर गुड़युक्त उत्तमभात नैवेद्य लगावै औ कुंकुम प्राशनकर रात्रिको सोवै औ मिथुन पूजन करै तो एक भक्तका फलपावै फिर मार्ग कृष्णतृतीया को गुरुकी आज्ञा पाय शास्त्र की रीतिसे नवनाभ मंडल लिखकर सुवर्णकी शिव पार्वतीकी

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

प्रतिमा बनावै उन प्रतिमाओं के नेत्रों में मोती ... लम जड़ै
ओष्ठों में प्रवाल अर्थात् मूंगा औ कानों में रत्न कुंडल पहिनावै
शिवजीको सुवर्णके यज्ञोपवीत औ पार्वतीजी को मोतियोंकेहार
से अलंकृत कर श्वेत औ रक्त वस्त्र पहिनावे पीछे गंध पुष्पधूप
आदि उपचारोंसे पूजनकर मंडलमें पूजाकरहोमकरै औ अपरा
जिता भगवती का भीअर्चनकरै औ मुस्तक अर्थात् नागरमोथा
प्राशन कर रात्रिको जागरण औ गीत नृत्य आदि उत्सव करै
प्रभात होतेहीउत्तम शय्या औ तकियों करकेयुक्त पलंग बिछाय
उसपर मंडल बनाय मंडलमें शिव पार्वती की प्रतिमा स्थापन
करै औ वितान ध्वज माला किंकिणी दर्पण आदि से मंडपको
शोभित करै पीछे शिव पार्वती का पूजन कर यथाशक्तिब्राह्मण
दम्पतियोंको भोजन कराय तांबूल औ दक्षिणादेवै औ लालरङ्ग
की सुशील सुन्दर सुवर्ण शृंगी रौप्यखुरी कांस्यके दोहन पात्र
सहित घण्टासे अलंकृतवस्त्रसेढकीहुई बहुतदुधदेनेहारीसवत्सा
गो जूता खड़ाऊं छतरी अनेकप्रकारके भक्ष्य पदार्थ औदक्षिणा
गुरुके अर्पणकरै औ शिव पार्वती के आगे प्रणाम कर गुरु के
चरणों में भी नमस्कार करै इसभांति इसव्रत को समाप्त करै
जो स्त्री अथवा पुरुष इसव्रतकोकरै वह दिव्य बिमान में बैठ
गन्धर्वलोक यक्षलोक औ देवलोक में जाताहै वहां बहुत काल
उत्तम भोग भोगकर भूमिपर जन्मलेवै औ बड़ा प्रतापी राजा
होय वह स्त्री उसकी पटरानी होय जिसभांति शिवजी के साथ
पार्वती इन्द्रके साथ शची वशिष्ठके साथ अरुंधती विष्णुके साथ
लक्ष्मी औ ब्रह्मा के साथ सदासावित्री रहतीहैं इसीभांति वह
नारी भी जन्म २ में अपने पति के साथ सुख भोगै इस व्रत को
करनेहारी नारी कभी पति से बियुक्त नहीं होती औ पुत्र पौत्र
आदि सबबस्तु पातीहै यह आनंतर्य व्रत हमने अति गोप्य अपा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

को कहा विधान ना भक्ति और विनति की यह व्रतकहना इस नंअतादि तृतीया को जो स्त्री भक्ति से करती हैं वे किसीकाल में भी पति पुत्र बंधु धन औ सौभाग्य से वियुक्त नहीं रहतीहैं ॥

छब्बीसवां अध्याय ॥

श्रीकृष्ण कहते हैं कि हे महाराज बहुतकहने से क्याफल है केवल वैशाखशुक्ल तृतीयाकाही आप माहात्म्य श्रवण करें उसदिन स्नान दान तपहोम स्वाध्याय तर्पण आदि जो कर्मकरो सब अक्षय होता है सत्ययुगका आरम्भ इसीदिन हुआ है इस से युगादि तृतीयाभी इसको कहते हैं शाकल नगर में प्रिय औ सत्य बोलनेहारा देव ब्राह्मणपूजक औ धर्मात्मा धर्मनामक एक वणिक था उसने एक दिनकथा में श्रवण किया कि रोहिणी नक्षत्र औ बुधवारकरकेयुक्तवैशाखशुक्लतृतीयाकोजे दानदेवै वह अक्षय होताहै यहसुन उसने अक्षयतृतीया के दिन गंगा में पितरोंका तर्पण किया औ जलके भरे घट अन्नसत्तूदही चणेगेहूं गुड़ खांड़ आदि इक्षु विकार औ सुवर्णब्राह्मणोंको दिया उसकी भार्या निषेधभी कर्ती परन्तु वह अक्षयतृतीयाको अवश्यहीदान करता कुछकालके अनन्तर उसकादेहांतभया तब वहकुशावती नाम नगरीमें जन्मले वहांका राजाबना उसकेऐश्वर्यऔधनका अंत नहींथा बड़ी २ दक्षिणा वाले यज्ञ किये ब्राह्मणों को गौ भूमि सुवर्ण आदि दिनराति देतारहता परन्तु उसकेधनकाक्षय न भया यह अक्षयतृतीया को जो उसने प्रथम जन्म में दान दिया था उसका फलहै हे महाराज इसतृतीयाका फल अक्षय है अब हम इसका विधान वर्णन करतेहैं सब रस अन्न शहत करके युक्त जल कुंभ पितरोंकी तृप्ति के लिये ब्राह्मणों को देवै औ भांति२ केफल छत्र जूताआदि ग्रीष्मऋतुमेंउपयुक्त सामग्री

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अन्न गो भूमि सुवर्ण वस्त्र आदि जो जो पदार्थ [illegible] को प्रिय औ उत्तम होंय सब ब्राह्मणों को देने चाहियें यह अति रहस्य हमने आपसे कथन कियाहै इसतिथि को किये हुये कर्मका क्षय नहींहोता इसलियेइसका नाम मुनियोंनेअक्षयतृतीयारक्खाहै॥

सत्ताईसवां अध्याय॥

श्रीकृष्णकहतेहैं कि हेमहाराज परम गुह्य आप श्रवण कीजिये जो हमने वनमेंभी आपको पूर्वसमयमें नहींकहा वह अब कहतेहैं शिव पार्वती के रतिके समय एक रुधिर विंदु भूमि पर गिरा उसको बड़े यत्नसे भूमिने धारणकिया उसीसे भौमनामक कुमार उत्पन्नभया शिवजीके अंगसे उत्पन्नभया इससे अंगारक कहाया सौभाग्य सुख आदि देनेसे उसका नाम मंगल रक्खा चतुर्थी के दिन जो स्त्री अथवा पुरुष इसका पूजनकरैं वे रूपधन औ सौभाग्य पातेहैं अब हम स्नान होम आदि सहित इस व्रत का बिधान कहते हैं पहिले संकल्पकर(त्वंमृदेविहितापूर्वंकृष्णेनोद्धरताकिल । तेनमेदहपापौघं यन्मयापूर्वसंचितम्) इसमंत्रसे जलमें स्थित मृत्तिका ग्रहण करैं औ यह मंत्र पढ़ता हुआ सूर्यनारायण को दिखावै (आदित्यरश्मिसंतप्तांगंगाजलविलोलिताम् तामिमांशिरसिप्रोक्ष्ये पूर्वंसर्वांगसंधिषु) पीछे मृत्तिका को सर्वांगमें लगाकर (त्वमापोयोनिःसर्वेषांदैत्यदानवरक्षसाम्स्वेदजोद्भिज्जयोनीनां रसानांपतयेनमः। स्नातोहंसर्वतीर्थेषु सर्वप्रस्रवणेषुच नदीषुतेवखादेषुसुस्नातंतेषुमेभवेत्) इन मंत्रों को पढ़स्नानकरैं (त्वंदूर्बेऽमृतजन्मासि सर्वदेवैश्चबंदिता बंदितादह तत्सर्वं यन्मयादुष्कृतंकृतम्) इसमंत्र से दूर्बाको स्पर्शकरै(अश्वित्थ स्पंदंभुजस्पंदंदुःस्वप्नंदुर्विनीतकम् । शत्रूणांचसमुत्थानमश्वत्थं शमयस्वमे) इसमंत्रसे अश्वत्थको स्पर्शकरै (सर्वदेवमयेदेविदेव-

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

तैस्त्वंसुपू...ता तस्मात्स्पृशामिवंदामि बंदितापापहाभव) इस मंत्रको पढ़ गौको स्पर्शकर प्रदक्षिणाकरै तो सम्पूर्ण पृथिवीकी प्रदक्षिणा का फलपावै पीछे घरमेंआय हाथपांव धोय आचमन कर भौमका पूजनकर (शर्वायशर्वपुत्राय पार्व्वत्यागोसुतायच कुजायलोहितांगाय ग्रहेशांगारकायच) इस मंत्र करके खदिरकी समिधा घृत दुग्ध तिल यव और भी अनेकप्रकारकेभक्ष्यभोज्यों से हवनकरै इसभांतिसे हवनकर रत्न सुवर्ण कृष्ण अगुरु चन्दन अथवा और किसी उत्तम काष्ठकी भौम प्रतिमा बनाय सुवर्णके चांदीके अथवा गुड़ सहित ताम्रके पात्र में स्थापनकर रक्तचंदन रक्तपुष्प धूप दीप नैवेद्य फल औ रक्त वस्त्र करके भक्ति से भौम का पूजनकरै कईमनुष्य मृत्तिकाकेपात्रमें स्थापनकरकेभी पूजन करते हैं इसविधि पूजाकर आठपुष्पांजलिदेवै ॥ ओंअंगारकाय नमःशिरसि ओंकुजायनमःवदने ओंभौमायनमःस्कंधयोःओंमंगलायनमःउरसि ओंक्रूरायनमःकट्याम् ओंआरायनमःजंघयोःओं लोहितांगायनमःगुल्फयोःओंमहीनंदनायनमःपादयोः इनआठ मंत्रोंसे आठोंअंगोंमें पुष्पांजलि देकर घृत गुग्गुल सहित अगुरु का धूप देकर पूर्वोक्त रीति से हवन करै पीछे भोजन वस्त्र औ दक्षिणा सहित वहमूर्त्ति ब्राह्मण को देवै इस कर्म में वित्तशाठ्य नकरै फिर (सर्वौषधिरसोपेतेसर्वदासर्वदायिनि। अचलेभोक्तुकामोहं तद्भुक्तममृतंभवेत्) यह मंत्र पढ़ भूमि पर अन्न रख आप भी भोजन करै इतना सुन राजा युधिष्ठिर बोले कि हे श्रीकृष्ण चन्द्र भौमवार युक्त चतुर्थी को नक्तव्रत करने से क्या फल होता है यह भी आपवर्णनकरैं श्रीकृष्णभगवान् कहतेहैं कि हेमहाराज धनहीन पुरुष इसअंगारक चतुर्थी का व्रतकर भक्ति से भौमका पूजन करै तो अवश्यही धन पावै औ धनवान् इस विधान से पूजनकरै कि उत्तम मंडप बनाय उसके मध्यमें वेदीके ऊपरबीस

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पल सुवर्णके पात्रमें दश पल अथवा पांचपल सुवर्ण की भौम की मूर्ति स्थापनकर गंध पुष्प आदि उपचारों करके भक्ति से पूजन करै इस प्रकार जो पूजन करै वह देहके अंत में दिव्य विमान परचढ़ दिव्य नारियों करके सेवित देवलोक को जाता है वहां छत्तीस चतुर्युग पर्यंत निवासकर पृथ्वी पर जन्म ले बड़ा प्रतापी औ दानी राजा होताहै औ जो स्त्री इस पूजन को करै वह रूप सौभाग्य पुत्र पौत्र आदि युक्त होकर चिरकाल अपने पतिके साथ भोगकरै औ अंतमें स्वर्गबास पावै हेमहाराज यह देवताओं को भी दुर्लभ अंगारक चतुर्थी का रहस्य आपको कहा है इस चतुर्थी को जो देवपूजन पितरों को पिंडदान औ भक्ति से भौमका पूजन करैं वे सब उत्तम फल पाते हैं॥

अट्ठाईसवां अध्याय॥

राजा युधिष्ठिर पूछतेहैं कि हे श्रीकृष्णचंद्र मनुष्य कार्योंका आरंभ करतेहैं परंतु वेकार्य प्रायः सिद्ध नहींहोते बीचमेंहींविघ्न होजाता है इसमें क्या कारणहै आप कथन करैं यह राजा का प्रश्न सुन श्रीकृष्णभगवान् कहनेलगे कि हेमहाराज शिवजी ने औ ब्रह्माजीने लोकों के कार्य सिद्धके अर्थ विनायक को नियुक्तकियाहै औ गणों का स्वामी बनाया विनायक करके उपद्रुत अर्थात् जिसपर विनायक का कोप होय उस पुरुषका हमलक्षण वर्णन करतेहैं आप सुनैं विनायक करके उपसृष्ट पुरुष स्वप्नमेंतैलके बीच डूबताहै मुंडेमूंड़के औ कषायवस्त्रधारी पुरुषों को देखता है ऊंट गर्दभ श्वान आदि जीवोंपर चढ़ताहै चांडालों के साथ गमन करता है चलता हुआ अपने पीछे किसी दूसरे को आते देखताहै उदास रहताहै बिना कारण दुःखी होता है राक्षसोंकरकेवेष्टित अपनेकोदेखताहै करवीरकीमालापहिनताहै

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

गणपति करके उपद्रुत राजाराज्यनहीं पाता कुमारीको पतिनहीं मिलता गर्भिणी के संतान नहींहोती श्रोत्रिय आचार्यत्व को नहीं प्राप्त होता शिष्य अध्ययन नहीं करता व्यापारीको लाभ नहीं होता औ खेती करनेहारे की खेती निष्फल होतीहै इस दोष के निवृत्त करने के अर्थ श्वेत सरसों का उपटना लगाय पूर्वाह्न में सर्वौषधि औ सर्ब गंधसे शिरको धोय स्नान करै इस प्रकार गुरुबार युक्त शुक्ल चतुर्थी को स्नान कर उत्तम आसन पर बैठ चारोंवेद जाननेहारे ब्राह्मणों से स्वस्तिवाचन कराय शिव पार्वती स्कंद भौम राहु औ गणेश का पूजन करै अश्वस्थान गजस्थान बल्मीक नदीसंगम औ ह्रदसेमृत्तिकालाकर कुंभ में डालै औ गोरोचन तथा गुग्गुलभी उस जलमेंडालै पीछे लाल बैलको चर्म बिछाय उसपर सिंहासन रख उस पर गणपति स्थापनकर इनमंत्रोंसे अभिषेक करै(ओंसहस्त्राक्षंशताधार मृषभिःपापहस्ततः। तेनत्वामभिषिंचामि पावमानाः पुनंतु ते १ भगंतेवरुणोराजाभगमिंद्रोवृहस्पतिः। भगंसूर्यश्चवायुश्च भगंसप्तर्षयोविदुः२ यत्तेकेशेषुदौर्भाग्यंसीमंतेयच्चमूर्द्धनि। ललाटेकर्णयोरक्ष्णोरापस्तद्घ्नन्तुसर्वदा ३) इस प्रकार अभिषेक कर चतुष्पथ में कुशाबिछाय उसकेऊपर चावल भात मांस पुष्पगंध तीन प्रकारकी सुरा मूली पूरी अपूप खीर दही फल पत्र मोदक आदिरख मितसमितशालकंटकट औ सपुत्र कूष्मांडको स्वाहांत नाममंत्रसे बलिदेवै पीछेनमस्कारकर इनका विसर्जन करै फिर विनायककी माता श्रीजगदम्बाकोदूर्बा औ सर्षपयुक्त अर्घर्यदेकर पुष्पांजलि देवै यह सब कर्म शुक्ल बस्त्र शुक्ल गंध औ शुक्ल पुष्पमालासेअलंकृतहोकरकरै इसभांतिपूजन आदिकानर ब्राह्मण भोजन कराय दो वस्त्र औ दक्षिणा गुरुको देवै इसपर विधि से विनायक औ ग्रहों का पूजन करै तो सब कार्य [illegible] होय

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

विघ्न निवृत्त होंय लक्ष्मी प्राप्तहोय इसीभांति सूर्यनारायणका पूजन करने से भी सब फल प्राप्त होतेहैं यह विनायकके अभिषेक का विधानहमने कहाहै जो पुरुष इसको भक्तिसे करैंउनके सब अभीष्टकार्य सिद्धहोतेहैं औ संपूर्ण विघ्नभी निवृत्त होतेहैं ॥

उनतीसवां अध्याय ॥

श्रीकृष्ण कहते हैं कि हे महाराज अबहम ऐसा व्रत कहते हैं जिसके करनेसे सब विघ्न निवृत्तहोंय फाल्गुन मासकी चतुर्थीको यह व्रत ग्रहणकरै नक्तव्रत रखकर तिलोंसे पारण करै तिलोंका हवनकरै औ तिलही ब्राह्मणको देवै शूरायस्वाहा वीरायस्वाहा गजाननायस्वाहा लंबोदरायस्वाहा एकदंष्ट्रायस्वाहा इन मंत्रोंसे पूजन औ हवनकरै इस प्रकार चारमहीने व्रतकर सोनेकी गणपतिकी मूर्त्ति बनाय पूजाकर ब्राह्मण को देवै औ खीरके भरे चार ताम्रपात्र औ एक तिलपूर्ण पात्रभीगणपतिके साथ देवै धनहीन होय तो मृत्तिकाकेही पात्र देवै औ चांदी की प्रतिमा बनावै इस प्रकार जो व्रतकरै वह सब विघ्नोंसेमुक्तहोता है औ अंतमें रुद्रपुरको जाताहै यह वराह भगवान्‌कावचन है जो चतुर्थी के दिन केवल कृष्णतिलोंसे भी गणनाथ का अर्चन करै उसके सब विघ्न दूर होते हैं ॥

तीसवां अध्याय ॥

श्रीकृष्ण कहतेहैं अब हम शांतिव्रत कहते हैं जिसके करने से गृहस्थों को सब प्रकारकी शांतिहोय कार्त्तिक शुक्ल पंचमी से लेकर एकवर्ष पर्यंत अम्ल अर्थात् खटाई न खाय औ नक्तव्रत कर शेषनाग के ऊपर स्थित भगवान् का पूजन करै पीछे अनंताय नमः (पादौ) धृतराष्ट्रायनमः (कटिम्) तक्षकायनमः

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

(उदरम्) कर्कोटकायनमः (उरः) पद्मायनमः (कर्णौ) महा-पद्मायनमः (भुजौ) शंखपालायनमः (वक्षः) कुलिकायनमः (शिरः) इन मंत्रोंसे इन २ अंगोंमें भगवान् के पूजन करै पीछे मौनसे भगवान्को दुग्धकरके स्नान कराय दुग्ध औ तिलोंका हवन करै वर्ष पूरा होनेपर सुवर्णकी नारायण प्रतिमाओ शेष-नाग बनवाय उनका पूजनकर ब्राह्मणको देवै औ सवत्सागौ पायस से पूर्णकांस्यपात्र दो वस्त्र औ सुवर्ण भी ब्राह्मण को देवै पीछे ब्राह्मण भोजन कराय व्रत समाप्तकरै इसव्रतकोजोकरै उसके सबप्रकारकी शांतिहोय औ नागोंकाभयभी कभीनहोय॥

इकतीसवां अध्याय॥

राजा युधिष्ठिर पूछते हैं किमधुरवाणीविद्यामें अति कुशलता सौभाग्य दीर्घ आयुष् औ स्त्री पुरुषका अवियोग कौन से व्रत के करनेसे होताहै यहआप कथन करैं॥

यह राजाका प्रश्नसुन श्रीकृष्ण भगवान् बोले कि हे महा-राज बहुत उत्तम बात आपने पूछी अब हम सारस्वत व्रत का बधान कहतेहैं जिसके कीर्त्तन मात्रसेभी सरस्वती प्रसन्नहोती हैं पंचमी आदित्य वार के दिनसे व्रतका आरंभ करै उसदिन भक्तिसे स्वस्तिवाचन कराय गायत्रीका पूजन करै शुक्लगंध शुक्लमाला औ श्वेत वस्त्रआदिसे पूजाकर हाथजोड़ (यस्थानदेवि भगवान्ब्रह्मालोकपितामहः। त्वांपरित्यज्यसंतिष्ठेत्तथा भक्तवरप्र दा॥ वेदशास्त्राणिसर्वाणिनृत्यगीतादिकंचयत्। नहीनंच्छत्वया देवितथामेसंतुसिद्धयः॥ लक्ष्मीमेधावरातुष्टिर्गौरीपुष्टिःप्रभावती एताभिःपाहितनुभिरष्टभिर्मांसरस्वति)इनमंत्रोंसे प्रार्थना करैऔ गायत्रीका ऐसा ध्यानकरै किश्वेतवस्त्रपहिने वीणा अक्षमाला क मंडलु औ पुस्तक चारों भुजाओंमें धारे सबभूषणोंसे भूषित [illegible] तहैइस

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

विधि पूजनकर मौनसे रात्रिका भोजनकर आ... पंचमी को सुवासिनीका पूजनकर सेरभर चावल घृतपात्रदुग्धऔसुवर्ण उसकोदेवै औ यह कहै कि(गायत्रीप्रीयताम्)सायंकालकेसमय मौनसे रहै इसभांति तेरह महीने व्रत करै पीछे श्वेतभात औ दही आदिसे ब्राह्मणभोजन कराय दो श्वेतवस्त्र सबत्सागौचंदन तंदुल आदि ब्राह्मणको देवै औ गुरुका पूजन करै वित्तशाठ्य न करै इस विधिसे जो पुरुष सारस्वतव्रतकरै वह विद्वान् धनवान् कवि औ मधुरकंठ होताहै औ तीन अयुत कल्प पर्यंत ब्रह्मलोक में निवास करताहै जो इस व्रतके माहात्म्य को पढ़ै अथवा सुनै वह इतनाकालविद्याधर लोकमें रहताहै औ स्त्री भी इसव्रतको करने से सब फल पातीहैं॥

बत्तीसवां अध्याय॥

श्रीकृष्णचंद्र कहते हैं कि हे महाराज पंचमीतिथि नागों को प्रियहै उसदिन नागलोकमें बड़ा उत्सव होता है जो उस दिन नागोंका पूजन करै उसको वासुकि तक्षक कालिय मणिभद्र धृतराष्ट्र ऐरावत कर्कोटक धनंजय आदि नाग अभय देतेहैं औ पंचमी के दिन जो दुग्ध से नागोंकोस्नान करावै उसके कुलमें सर्पभय नहींहोता माता के शापसे नागदग्ध होनेलगे तबदुग्ध से उनकी दाह शांतिभई इसीसे उनकोदुग्धस्नान प्रिय है इतना सुन राजा युधिष्ठिरपूछतेहैं कि हेश्रीकृष्णचन्द्र माताने नागोंको क्यों शापदिया औ शापमोक्ष क्योंकर हुआ राजाका प्रश्नसुन श्रीकृष्णचन्द्र कहनेलगे कि हे महाराज समुद्र मथन के समय अतिशुक्लवर्ण उच्चैःश्रवानामअश्व निकला उसको देख गरुड़ की माता विनता ने अपनी सपत्नीनागों की माताकद्रूसे कहाकि देखो यह अश्व कैसा श्वेत है तब कद्रू बोली कि श्वेततो नहीं

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मुझे कृ[illegible]पड़ताहै विनताने कहा कि जो तू इस अश्व में एक बाल भी कृष्ण दिखला देवै तो मैं तेरी दासीहोजाऊं औ मैं तुझे श्वेत दिखादूं तो तू मेरी दासी होजा इस प्रकार प्रण करके दोनों अपने २ स्थान को गईं कद्रूने अपने पुत्र नागों को बुलाकर कहा कि तुम कृष्णवर्ण के बाल होकर अश्व के शरीर में स्थित होजाओ जिस से मैं विनता को दासी बनाऊं यह माताका वचन सुन नाग बोले कि हे माता यह अधर्म्म हम नहीं करते यह पुत्रों का वचन सुन क्रोधकर कद्रू ने शाप दिया कि जनमेजय राजा सर्पयज्ञ करैगा उस में तुम दग्ध होजाओगे यह माताका शापसुन दुःखसे वासुकि नाग मूर्च्छित होगया तब उसको सांत्वन कर ब्रह्माजी ने कहा कि हेवासुकि शोक मत कर हमारा वचन सुन यह जरत्कारु नाम तेरी बहिन है इसको बड़े तपस्वी जरत्कारु मुनिको विवाह देना इन से आस्तीक नामक पुत्र उत्पन्न होगा वह राजा जनमेजय को अपने वचनोंसे प्रसन्न कर सर्पों को भय देने हारे यज्ञ को निवारण करैगा इसलिये अतिरूपवती यह अपनी भगिनी जरत्कारु मुनिको दो और भी जो कुछ मुनि कहैं उस को बिना विचारे अंगीकारकरो इसीमें तुम्हारा कल्याणहै यह [illegible] ब्रह्मा जी का वचन सुन नाग बड़े हर्षका प्राप्त भये यह ब्रह्माजी का वरदान पंचमी तिथि को भया औ आस्तीक ने भी सर्प शत्रपंचमी को निवारण किया इसकारण पंचमी नागों को [illegible] अति प्रिय भई पंचमी के दिन नागों का पूजन करै पीछे ब्राह्मण भोजन कराय आपभी अपने मित्र बंधु भृत्य आदि सहित भोजन करै प्रथम मधुर भोजन करै इस व्रतको करने हारा पुरुष [illegible] मरनेके अनन्तरविमान में बैठ नागलोक को जाता है वहां [illegible] बहुत काल सुख भोग कर पांच जन्म तक बड़ा प्रतापी आधिपत्य [illegible] रहित

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सब संपत्तियों करकेयुक्तराजा होता है इसलिये घृतदुग्धआदि करके अवश्य नागों का पूजन करना चहिये इतनासुन राजा युधिष्ठिर पूछतेभये कि हे श्रीकृष्णचंद्र जिसको सर्प काटै औ वह मृत्युवश होजाय फिर किस गतिको प्राप्त होता है यह आप कथनकरैं। तबश्रीकृष्ण भगवान् कहने लगे कि महाराज वह पुरुष नीचे जाय निर्विष सर्प होताहै फिर राजा युधिष्ठिर पूछते हैं कि जिसके माता पिता भ्राता बहिन पुत्र कन्या आदि कोई सर्पके काटनेसे मृत हुये हों वह उनके उद्धारके लिये कौन उपाय करै यह आप कहैं। यह राजाका प्रश्नसुन श्रीकृष्णचन्द्र कहनेलगे कि हेमहाराज भाद्रशुक्ल पंचमीसेव्रतका आरम्भकरै चतुर्थी के दिन एकभक्तकर पंचमी को नक्तव्रत करै औ नागों का पूजन करै सुवर्ण अथवा चांदी का पंच फणयुक्त नागबनाय करवीर कमल चमेलीआदि पुष्प धूप भांति २ के नैवेद्यों से उसको पूजै पीछे घृत पायस औ मोदक ब्राह्मण को भोजन करावै इसविधि प्रतिमास की शुक्लपंचमी को व्रत करै औ अनंत वासुकि शंख पद्म कंवल करकोटक अश्वतर धृतराष्ट्र शंखपाल कालिय तक्षक औ पिङ्गल इनका बारह महीनों में क्रमसे पूजन करै बर्षभर व्रत करके ब्राह्मण भोजन करावै औ इतिहासवेत्ता को सुवर्ण का नाग वस्त्र औ सवत्सा गौ देकर व्रत समाप्तकरै। इस व्रतको जो करै उसके वंशमें जो सर्प दष्ट होकर मृत हुआ हो वह सद्गतिको प्राप्तहोता है जो इस बिधान को केवलश्रवणही करै उसके भी कुटुंबमें सर्प भीति नहीं होती औ जोपुरुष भाद्रशुक्ल पंचमी को रंग से कृष्णवर्ण के नाग लिखकर गंध पुष्प घृत गुग्गुल के धूप औ पायस आदि नैवेद्यसे उनकापूजन करते हैं उनके ऊपर तक्षकआदि नाग प्रसन्न होते हैं औ उनके कुल में सर्प का भय नहीं होता आश्विनिकी पंचमी को कुशाके

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नाग बनाय इन्द्राणी सहितउनका पूजन करै घृतजल औदुग्ध करके उनको स्नानकराय दुग्ध औ गोधूम से बने पकान्न का नैवेद्य लगावै औ नक्तव्रतकरै उसके ऊपर शेष आदि महानाग प्रसन्न होकर सब प्रकार की शांति करते हैं औ उत्तम लोक को प्राप्त होता है यह पंचमीकल्प हमने वर्णन किया जहां यह पढ़ाजाय वहां सर्पभय नहीं होता॥

तेंतीसवां अध्याय॥

राजा युधिष्ठिर पूछते हैं कि हे श्रीकृष्णचन्द्र व्रत होम तप जप नमस्कार आदि जिस कर्म के करने से स्थिरलक्ष्मी प्राप्त होय उसका आपवर्णन करैं। यह राजाका वचन सुन श्रीकृष्ण भगवान् कहने लगे कि हे महाराज प्रथम भृगुमुनि की कन्या लक्ष्मी भई औ विष्णुभगवान् ने उस कमल लोचना गजगामिनी भामिनी को अति रूपवती देख अपने साथ उसका बिवाह किया वह भी भगवान् को वर पाय अपने को कृतार्थ मानती भई औ सम्पूर्ण जगत् लक्ष्मी के कटाक्ष पात से आनंदित होता भया प्रजा में क्षेम औ सुभिक्ष रहने लगा सबउपद्रव शान्त होगये ब्राह्मण हवनकरने लगे देवता हवि भोजन करते थे राजा चारों वर्णों का पालन प्रसन्नता पूर्वक करते थे देवता बड़े बड़े आनन्द मेंथे यहदेख विरोचन आदि दैत्यलक्ष्मी प्राप्ति के लिये तप करनेलगे औ अति उत्तम आचरण औ धर्म में प्रवृत्त भये कुछ काल के अनन्तर देवताओं को लक्ष्मीकामद होगयी औ शौच आचार सब त्याग दिया तब देवताओं को सत्य शील आदि सेहीन देख लक्ष्मी दैत्यों के समीप चलीगईओ देवता श्रीहीन भये परंतु लक्ष्मी के प्राप्त होतेही दैत्यों को भी बड़ा गर्व हुआ कहने लगे कि हमहीं देवता हैं हम यज्ञ हैं हम

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ब्राह्मण हैं सम्पूर्ण जगत् हमारा रूपहै ब्रह्मा विष्णु इन्द्र चन्द्र आदि हमहैं इसप्रकार अति अहंकार युक्त हो नाना प्रकार के अनर्थ करनेलगे। तब लक्ष्मी व्याकुल होकर दैत्योंको भी त्याग क्षीर सागरमें प्रवेश करती भई क्षीर सागर में लक्ष्मीके प्रवेश करजाने से सारा जगत् श्रीहीन अतिमलीन होगया उससमय इन्द्रने बृहस्पतिको पूछा कि महाराज कोई ऐसाव्रतबतावैं जिसके करने से लक्ष्मी प्राप्तहोय औ फिर त्याग न करै अपने इष्ट मित्रों के उपभोग में आवै लक्ष्मी पाय कर भी कन्या की भांति उसका पालन न करना पड़ै क्योंकि जिस लक्ष्मीको अपने मित्र बन्धु भृत्य आदि न भोगैं वहवृथाहै यह इन्द्रका वचन सुन बृहस्पति कहनेलगे कि हे इन्द्र यहअतिगुप्त श्रीपंचमीका व्रत आपको हम उपदेश करते हैं जो हमने आजतक किसीको नहीं बनाया इसव्रत को तुमकरो तो तुम्हारा अभीष्ट सिद्धहोय इतनाकह बृहस्पतिने सरहस्य श्री पंचमीव्रत का विधानइंद्रको उपदेश किया इन्द्र उसव्रतको करनेलगा औ सबदेवता दैत्यदानव गन्धर्व यक्ष राक्षस सिद्ध विद्याधर नाग ब्राह्मण औऋषिभी इन्द्रको व्रत करतेदेख व्रतकरनेलगे कोई सात्विकभाव से कोई राजस से औ कोई तामस भावसे व्रत करतेथे कुछकालके अनन्तर व्रत समाप्तकर उत्तमबल औ तेजपाकरसबनेविचारकिया कि समुद्रको मथनकर लक्ष्मी औ अमृतको ग्रहण करैं यह विचार परस्पर कर मंदरपर्वत को मंथान औ वासुकिनागकोनेता बनाय समुद्र मथन करनेलगे मथन करते२पहिलेअतिउज्ज्वल चन्द्रमानिकला पीछेथोड़ेकालकेअनंतरलक्ष्मीका प्रादुर्भावभया लक्ष्मीके कटाक्ष परतेही सब देवता औ दैत्य अपने २ स्वरूप को प्राप्तहोपरमआनन्दको प्राप्तभये। इन्द्रने राजसभावसेव्रत कियाथा इसलिये त्रिभुवनका राज्य पाया औ दैत्यों ने तामस

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

भावसे किया इसलिये ऐश्वर्यपाकर भी ऐश्वर्य हीन होगये हे महाराज इसभांति इस व्रतके प्रभावसे श्री हीन जगत्फिरश्री युक्तहुआ इतना सुनराजा युधिष्ठिर बोले कि हेश्रीकृष्णचंद्र यह व्रत किसविधिसेकियाजाताहै औ कबसे इसका प्रारम्भ होताहै यह आप वर्णनकरैं यह राजा का वचन सुन श्री कृष्णभगवान् कहनेलगे कि हेमहाराज मार्गशीर्ष की शुक्ल पंचमीको यह व्रत करनाचहिये पहिले प्रभातउठ शौच दंतधावन आदिकर व्रतके नियम धारण करै पीछे नदीपरजाय अथवा अपनेघरमेंहीस्नान कर दो वस्त्रधार देवता औ पितरोंका पूजन तर्पणकर घरमेंआ लक्ष्मी का पूजनकरै पहिले सुवर्ण चांदी ताम्र काष्ठ अथवाचित्र पटमेंही लक्ष्मीकी मूर्त्ति बनावै कमलके ऊपर बिराजमानहाथों में कमल पुष्प धारणकिये सबभूषणोंसे अलंकृत कमललोचना औ दिग्गज जिसको सुवर्णके कलशों से स्नान करा रहे हैं इस ध्यानकी मूर्त्ति बनाय सब उपचारों से पूजन कर। चपलायैनमः इस मंत्रकरके पादों का चंचलायैनमः इस करके जानुओं का कमलवासिन्यै० इसकरके कटिका देव्यैनमः इस करके नाभि का मन्मथवासिन्यै० इसकरके स्तनोंका ललितायै० इसकरकेदोनों भुजाओंका उत्कंठिरायै० इसकरकेकंठका मध्यायै० इसकरकेमुख का औ श्रियेनमः इसमंत्रकरके शिरका पूजनकर भक्तिसे नैवेद्य औ भांति २ के फल निवेदन करै पीछे पुष्प औ कुंकुम आदि से सुवासिनीका पूजनकर मधुर भोजन उसको कराय प्रणाम करकर विसर्जन करै। सेरभर चावल औ घृतका पात्र ब्राह्मणको देकर (श्रीशःप्रीयताम्) यहकहै इस भांति पूजनकर मौन से भोजन करै प्रतिमास यह व्रत करै औ श्री लक्ष्मी कमला सम्पत उमा नारायणी पद्मा धृति स्थिति पुष्टि ऋद्धि सिद्धि इनका बारह महीनों में क्रम से पूजन औ कीर्त्तन करै बारहवें महीने

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

चमीको वस्त्रसे उत्तम मंडपबनाय गंध पुष्प आदि से अलंकृत कर उसके मध्यमें सब उपकरणों सहित लक्ष्मीकी मूर्त्ति स्थापनकरै आठ मोती रेशमीवस्त्र सप्तधातु सप्तधान्य खड़ाऊं जूता छतरी अनेकप्रकारके पात्र औ भांति २ के भोजन वहांस्थापन कर विधिसे लक्ष्मीका पूजनकरै पीछे वेदवेताकुटुंबी औ सदाचार ब्राह्मणको सवत्सा गौ सहित यहसब सामग्री देवै औ यथाशक्ति ब्राह्मण भोजनकराय सबको दक्षिणा देवै। इसविधिसे जो श्रीपंचमीका व्रतकरै वह अपने इक्कीस कुल सहित लक्ष्मीलोक में निवासकरै जो सभर्तृका स्त्री इस व्रत को करै वह रूप संतान औ धन पावै तथा पतिकी अति प्रिया बनीरहै जो भक्तिसे पंचमीका व्रतकर भृगुकी पुत्री औ विष्णु भगवान् की प्रिया श्रीलक्ष्मीजीका भक्तिसे पूजनकरते हैं वे संसार में चिरकाल तक राज्य आदि सुख भोगकर अंत में विष्णुलोक के बीच निवास करते हैं ॥

चौतीसवां अध्याय ॥

राजा युधिष्ठिर कहते हैं कि हेश्रीकृष्णचन्द्र आपके मुखसे पंचमीका विधान सुन चित्त बहुत प्रसन्नहुआ अब आप षष्ठी का बिधान वर्णन कीजिये जिसके करने स सब कामना प्राप्त होयँ यह राजाका वचनसुन श्रीकृष्णचन्द्र कहने लगे कि हे महाराज हम विशोक षष्ठीका विधान कहतेहैं जिसके उपवास करनेसे मनुष्यको शोक नहीं होता मार्ग शुक्ल पंचमीको प्रभात उठ दंत धावनकर स्नानआदिकरै औ ब्रह्मचर्य से रहै दूसरे दिन स्नान आदिकर सुवर्णकाकमलबनवाय उसको सूर्यनारायणकास्वरूप मान रक्त चन्दन रक्त करवीर पुष्प औ रक्तवर्णके दो वस्त्र धूपदीपनैवेद्य आदिसे पूजनकरहाथजोड़ (यथाविशोक

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

भवनेत्वमेवादित्यसर्वदा। विशोकंकुरुमांदेवभक्तंजन्मनिजन्मनि)
इस मंत्रसे प्रार्थना करै इस विधिपूजन कर ब्राह्मण भोजन क-
राय गो मूत्र प्राशन करै औ गुड़ अन्न उत्तम दो वस्त्र औ सुवर्ण
ब्राह्मण को देकर सप्तमी को तैल औ लवण रहित भोजनभोन
से करै औ पुराण श्रवणभी करै इसभांति एक बर्ष पर्यंतदोनों
पक्षों की षष्ठी का व्रत कर अंतमेंशुक्ल षष्ठी को सुवर्ण कमलयुक्त
कलश उत्तम शय्या औ कपिला गौ ब्राह्मण को देवै इसमेंबित्त
शाठ्यनकरै इस विधिसे जो व्रत करै वह करोड़ों जन्मतक स्वर्ग
में निवासकरता है किसी कामनासे इसव्रतको करै तो वहकाम-
ना सिद्ध होती है औ निष्काम होकर करै तो मोक्ष प्राप्तिहोय
जो इसरोगविनाशिनी षष्ठी का एकबार भी उपवास करै वह
कभी दुःखी नहींहोता औ चन्द्रलोक में निवास करता है॥

पैंतीसवां अध्याय॥

श्रीकृष्ण कहते हैं कि हे महाराज और भी हम कमलषष्ठी
नामव्रत का विधानकहते हैं जिसका उपवास करनेसेपुत्रप्राप्ति
औ ऐश्वर्यवृद्धि होय मार्ग शुक्ल पंचमी कोनियत व्रत होकरषष्ठी
को उपवासकरै औ सुवर्णकाकमल दोवस्त्र खीरऔखंड ब्राह्मण
को देवै इसी भांतिएक वर्ष पर्यंत प्रति षष्ठी को उपोषणकरै औ
भानु अर्क रवि ब्रह्मा सूर्य मुक्त हरि शिव श्रीमान् विभावसु त्वष्टा
वरुण इन बारह नामों से क्रमकरके बारह महीनों में पूजनकरै
औ भानुर्मेप्रीयताम् इत्यादि वाक्य प्रतिमास दान औ पूजन के
अंत में उच्चारण करै व्रत के अंत में ब्राह्मण मिथुनकी पूजा कर
वस्त्र भूषण शर्करा पूर्ण कलश औ सुवर्ण का कमल ब्राह्मण को
देकर(यथानविफलाकामास्त्वद्भक्तानांसदारवो।तथानंतफलावाप्ति
रस्तुजन्मनिजन्मनि) यह मंत्र पढ़ व्रत समाप्त करै जो इसपद्म-

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

षष्ठी के व्रत को करै वह सब पापों से मुक्त होकर सूर्य लोक में निवास करताहै औ उसके इक्कीस कुल सद्गति को प्राप्त होते हैं सुरापान आदि महापातक औ बड़े २ रोग इसव्रतके करनेसे निवृत्त होते हैं॥

छत्तीसवां अध्याय॥

श्रीकृष्णभगवान् कहतेहैं कि हेमहाराज अब हम सबपाप हरनेहारी औ सर्व कामप्रद मंदारषष्ठी का विधान कहते हैं माघ शुक्ल पंचमीको स्वल्प भोजन कर नियम से रहै औ षष्ठी को उपवासकरै ब्राह्मणोंका पूजन कर मंदार अर्थात् आक का पुष्प प्राशन कर रात्रि को शयन करै प्रभात उठ स्नान आदि कर ताम्र पात्र में काले तिलों करके अष्टदल कमल बनाय उसमें सुवर्ण की पद्महस्त सूर्यनारायणकी मूर्त्ति स्थापनकर अर्कपुष्पों से औ गंधआदि उपचारोंसे पूजनकर पूर्वआदिदलोंमेंभास्कराय नमः सूर्याय० अर्काय० यज्ञाय० स्वधाम्ने० चन्द्रभानवे० कृष्णाय० आनंदायनमः इनमंत्रोंकरके अर्कपुष्पोंसेपूजनकरमध्यमें (सर्वात्मनेपुरुषायनमः) इसमंत्रसे पूजनकरै इस प्रकार सब उपचार वस्त्र भूषण आदिसे पूजनकरै बर्षकेअन्तमें यहीमूर्त्ति पात्रकलश के ऊपर स्थापनकर वस्त्र सुवर्ण औ गौ सहित ब्राह्मणको देवै औ यहमंत्र पढ़ै (नमोमंदारनाथाय मंदारभवनायच। त्वंरवेतारयस्वास्मानस्मात्संसारसागरात्) इस बिधि से जो मंदार षष्ठी का व्रत करै वह सब पापों से मुक्त होकर सुखपूर्वक एक कल्प स्वर्गमें निवास करताहै औ अर्कपुष्पोंसे सूयनारायणका पूजन करै तो सूर्यलोक में निवास करै जो इस विधान को पढ़ै अथवा सुनै वह सबपापों से मुक्त होय मंदार षष्ठी के दिन तिल रचित कमलकी कर्णिका में मंदार पुष्पों से सूर्यनारायण का पूजन

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

भवनेत्वमेवादित्यसर्वदा। विशोकंकुरुमांदेवभक्तंजन्मनिजन्मनि)
इस मंत्रसे प्रार्थना करै इस विधिपूजन कर ब्राह्मण भोजन क-
राय गो मूत्र प्राशन करै औ गुड़ अन्न उत्तम दो वस्त्र औ सुवर्ण
ब्राह्मण को देकर सप्तमी को तैल औ लवण रहित भोजनमौन
से करै औ पुराण श्रवणभी करै इसभांति एक बर्ष पर्यंतदोनों
पक्षों की षष्ठी का व्रत कर अंतमेंशुक्ल षष्ठी को सुवर्ण कमलयुक्त
कलश उत्तम शय्या औ कपिला गौ ब्राह्मण को देवै इसमेंवित्त
शाठ्यनकरै इस विधिसे जो व्रत करै वह करोड़ों जन्मतक स्वर्ग
में निवासकरता है किसी कामनासे इसव्रतको करै तो वहकाम-
ना सिद्ध होती है औ निष्काम होकर करै तो मोक्ष प्राप्तिहोय
जो इसरोगविनाशिनी षष्ठी का एकबार भी उपवास करै वह
कभी दुःखी नहींहोता औ चन्द्रलोक में निवास करता है॥

पैंतीसवां अध्याय॥

श्रीकृष्ण कहते हैं कि हे महाराज और भी हम कमलषष्ठी
नामव्रत का विधानकहते हैं जिसका उपवास करनेसेपुत्रप्राप्ति
औ ऐश्वर्यवृद्धि होय मार्ग शुक्ल पंचमी कोनियत व्रत होकरषष्ठी
को उपवासकरै औ सुवर्णकाकमल दोवस्त्र खीरऔरखंड ब्राह्मण
को देवै इसी भांतिएक वर्ष पर्यंत प्रति षष्ठी को उपोषणकरै औ
भानु अर्क रवि ब्रह्मा सूर्य मुक्त हरि शिव श्रीमान् विभावसु त्वष्टा
वरुण इन बारह नामों से क्रमकरके बारह महीनों में पूजनकरै
औ भानुर्मेप्रीयताम् इत्यादि वाक्य प्रतिमास दान औ पूजन के
अंत में उच्चारण करै व्रत के अंत में ब्राह्मण मिथुनकी पूजा कर
वस्त्र भूषण शर्करा पूर्ण कलश औ सुवर्ण का कमल ब्राह्मण को
देकर(यथानविफलाकामास्त्वद्भक्तानांसदारवेतथानंतफलावाप्ति
रस्तुजन्मनिजन्मनि) यह मंत्र पढ़ व्रत समाप्त करै जो इसपद्म-

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

षष्ठी के व्रत को करै वह सब पापों से मुक्त होकर सूर्य लोक में निवास करताहै औ उसके इक्कीस कुल सद्गति को प्राप्त होते हैं सुरापान आदि महापातक औ बड़े २ रोग इसव्रतके करनेसे निवृत्त होते हैं॥

छत्तीसवां अध्याय॥

श्रीकृष्णभगवान् कहतेहैं कि हेमहाराज अब हम सबपाप हरनेहारी औ सर्व कामप्रद मंदारषष्ठी का विधान कहते हैं माघ शुक्ल पंचमीको स्वल्प भोजन कर नियम से रहै औ षष्ठी को उपवासकरै ब्राह्मणोंका पूजन कर मंदार अर्थात् आक का पुष्प प्राशन कर रात्रि को शयन करै प्रभात उठ स्नान आदि कर ताम्र पात्र में काले तिलों करके अष्टदल कमल बनाय उसमें सुवर्ण की पद्महस्त सूर्यनारायणकी मूर्त्ति स्थापनकर अर्कपुष्पों से औ गंधआदि उपचारोंसे पूजनकर पूर्वआदिदलोंमेंभास्कराय नमः सूर्याय० अर्काय० यज्ञाय० स्वधाम्ने० चन्द्रभानवे० कृष्णाय० आनंदायनमः इनमंत्रोंकरके अर्कपुष्पोंसेपूजनकरमध्यमें (सर्वात्मनेपुरुषायनमः) इसमंत्रसे पूजनकरै इस प्रकार सब उपचार वस्त्र भूषण आदिसे पूजनकरै बर्षकेअन्तमें यहीमूर्त्ति पात्रकलश के ऊपर स्थापनकर वस्त्र सुवर्ण औ गौ सहित ब्राह्मणको देवै औ यहमंत्र पढ़ै (नमोमंदारनाथाय मंदारभवनायच। त्वंरवेतारयस्वास्मानस्मात्संसारसागरात्) इस विधि से जो मंदार षष्ठी का व्रत करै वह सब पापों से मुक्त होकर सुखपूर्वक एक कल्प स्वर्गमें निवास करताहै औ अर्कपुष्पोंसे सूयनारायणका पूजन करै तो सूर्यलोक में निवास करै जो इस विधान को पढ़ै अथवा सुनै वह सबपापों से मुक्त होय मंदार षष्ठी के दिन तिल रचित कमलकी कर्णिका में मंदार पुष्पों से सूर्यनारायण का पूजन

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

करने करके जोफल प्राप्तहोताहै वह गौ भूमि सुवर्णतिलपर्वत आदिके दानकरने से भी नहींमिलता ॥

सैंतीसवां अध्याय॥

श्रीकृष्णभगवान् कहतेहैं कि हे महाराज भाद्र महीने की शुक्ल षष्ठीको रूप सौभाग्य औ सन्तान कामना वालीस्त्री नदी पर जाय स्नान कर वहांसे बांसके पात्र में बालू रेत लेकर घर में आय भगवती का पूजन करै उसी पात्र में तपोबनानिवासिनी ललिता गौरी का ध्यानकर सब उपचारों से पूजन करै पीछे चंपक करवीर तमालमालती नीलोत्पलकेतकी औ तगरपुष्प इनमें प्रत्येक की आठ २ पुष्पांजलि (ललितालालितादेवी सौभाग्यारोग्यदायिनी।यासौभाग्यसमुत्पन्नातस्यैदेव्यैनमोनमः) इसमंत्रसेदेवै इसभांति पूजनकर भांति२के पक्वान्न कूष्माण्डककड़ी ककोड़े वृंताक बिल्व करंज आदि फल भगवती के आगे रक्खै औ धूप दीप वस्त्रभूषण आदिभी समर्पण करै इस विधि से पूजनकर रात्रिको जागरण कर गीत नृत्य आदि उत्सव करावै चारपहर सावधान होकर जागै जो स्त्री इस रात्रि को नेत्र निमीलन करै वह दुर्भगा औ बंध्या होय इसप्रकार जागरण कर सप्तमी को गीत वाद्य सहित मूर्त्तिको नदीको लेजाय वहां पूजन कर पूजासामग्री ब्राह्मण को देवै औ बालुकामयी मूर्त्तिको नदी में विसर्जन करै पीछे घरमें आय हवनकर देवता पितर औ मनुष्यों का पूजन कर कुमारिका औ पन्द्रह ब्राह्मणों को अनेक प्रकार के भक्ष्य भोज्यों से संतुष्टकर दक्षिणा देवै औ (ललिताप्रीतियुक्तास्तु) यह वाक्य कहकर उनका विसर्जन करै इसललिता षष्ठी के व्रत को जो पुरुष अथवा स्त्री करै उसको

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

संसार मेंकोई पदार्थ दुर्लभ नहोइ इस व्रत के ... रे बहुत काल पर्यंत गौरीलोक में निवास करते हैं ॥

अठतीसवां अध्याय ॥

श्रीकृष्ण कहते हैं कि हे महाराज मार्गशीर्ष मासकी षष्ठीपापहरा औ अति कल्याण करने हारी है उसदिन कार्तिकेयने तारकासुर का बध किया है इसलिये वह षष्ठी स्वामि कार्तिकेय को बहुत प्रियहै उस दिन किया हुआ स्नान दान आदि कर्म अक्षय होताहै दक्षिण देशमें स्थित कार्तिकेय का जो उस तिथिको दर्शन करै वह ब्रह्महत्या आदि पापों से छुटताहै उसदिन उपवासकर कुमार स्वामी के दक्षिण मस्तक पर(चंद्रमंडलसंभूता तवरूपंच विभ्रती । कुमारगंगाधारेयं पतितातवमस्तके) इसमंत्र से धारा पातन करै इस भांति स्नान कराय सूर्य नारायण का पहिलेपूजन करपीछे(देवसेनापतेस्कंद कार्तिकेयभवोद्भव । कुमारगुहगांगेय शक्तिहस्तनमोस्तुते) इस मंत्रसे पुष्प धूप नैवेद्य आदिउपचारों से कार्तिकेय का पूजनकरै दक्षिण देश के फल औ मलय का चन्दन भी चढ़ावे पीछे स्वामिकार्तिकेय के परम प्रिय छाग कुक्कुट औ मयूरइनका प्रत्यक्ष पूजन करै अथवासुवर्णके बनाकर पूजै औ कार्तिकेय के समीपही कृत्तिका शकट कीपूजा करै पीछे पूर्वोक्त नामों करके तिलोंसे हवन कर एकफलभक्षण कर भूमि में कुशा की शय्या के ऊपर शयन करै नालिकेर मातुलुंग नारंगी पनस जंबीर दाड़िमदाक्षा आम्र विल्व आमलक ककड़ी औ केला ये फलक्रम से बारहमहीनोंमें भक्षण करै ये न मिलैं तो जो उसकाल में प्राप्त होय वही एक फल खा लेवै प्रभातहीप्रत्यक्षछाग औ कुक्कुटअथवा सुवर्ण के बनवाकरब्राह्मण कोदेवैऔ(सेनानीप्रीयताम्) यहवाक्यकहै । सेनानीशरसंभूत

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

क्रौंचारि षण्मुख गुह गांगेय कार्तिकेय स्वामी बालग्रह छाग-प्रिय शक्तिधर औ कुमार इनका बारह महीनों में क्रम से पूजन करै और इन नामों के अंत में (प्रीयताम्) यह पद लगाय पूजा के अंतमेंउच्चारण करै पीछे ब्राह्मण को भोजन करायआप भी मौन से भोजन करै वर्ष समाप्त होनेपर वस्त्र भूषण आदि से कार्तिकेय का पूजनकरै होम करै औ सबसामग्री ब्राह्मणको देवै इसबिधि से जो पुरुष अथवा स्त्री व्रतकरें वे सब उत्तमफल पाय इन्द्रलोक में निवास करते हैं कार्तिकेयका सदा पूजनक-रना चहियेराजाओं के लिये तो कार्तिकेयसे अधिककोईदेवता पूज्य नहीं है जो राजा कार्तिकेयका पूजनकर युद्ध में जायवह अवश्यही जय पावै जो षष्ठी को नक्तव्रत करै वह कार्तिकेयके लोक में निवास करता है दक्षिण दिशा में जाय जो भक्ति से कार्तिकेय का दर्शन औ पूजन करै वहशिवलोक को जाताहै जो सदा कार्तिकेय का आराधनकरै वह बहुत काल स्वर्ग सुखभोग भूमि पर जन्म ले चक्रवर्ती राजा का सेनापति होताहै॥

उनतालीसवां अध्याय॥

राजायुधिष्ठिर पूछते हैं कि हे श्रीकृष्णचन्द्र सप्तमी का क्या बिधान है उसका आप वर्णन करैं आपके मधुरबचन सुनते २ हमको तृप्ति नहीं होती यह राजा का वचनसुन श्रीकृष्णभग-वान् कहनेलगे कि हेमहाराजशुक्लपक्ष की सप्तमी जो आदित्य वार युक्त होय उसको विजयासप्तमी कहते हैं उसदिन किया हुआ स्नान दान जप होम उपवास आदि कर्म अनंतफल-दायक होता है उसदिन जो फल पुष्प आदि करके सूर्यनारा-यण की प्रदक्षिणा करै वह सर्वगुणयुक्त पुत्र पाता है पहिली प्रदक्षिणा नालिकेरों करके दूसरी वीज पूरों करके तीसरी

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नारंगों करके चौथी कदलीफलों करके पांचवीं कूष्मांडों करके छठी पकेहुये तिंदुक फलों करके औ सातवींवृंताकों करके करै अथवा अष्टोत्तरशत प्रदक्षिणा करै मोती लाल नीलम पन्ना हीरा गोमेद औ वैदूर्यकरके प्रदक्षिणाकरै और भी जो उस कालमें फल मिलैं उन करके प्रदक्षिणा देवै फलसे प्रदक्षिणा करने करके फलप्राप्त होता है प्रदक्षिणा के बीच बैठे नहीं न किसीको स्पर्श करै औ नकिसी से संभाषण करै एकाग्र चित्तहो प्रदक्षिणा करने से सूर्यभगवान् प्रसन्न होते हैं गौ के घृत से वसुधारा देवै औ किंकिणी युक्त ध्वज तथा श्वेत छत्र चढ़ावै पीछे गंध पुष्प धूप नैवेद्य आदि उपचारों से पूजन करा (भानोभास्करमार्तंडचंडरश्मेदिवाकर आरोग्यमायुर्विजयं पुत्रं-देहिनमोस्तुते) यह मंत्र पढ़ क्षमापनकरावै उपवास नक्त अथवा अयाचित व्रत करै इस भांति आदित्यवार युक्त सात सप्तमी व्रतकरके सूर्य भगवान्का पूजन कर षड़क्षर मंत्र करके अष्टोत्तर शत हवनकरै सुवर्णकी सूर्य प्रतिमा सुवर्ण पात्रमें स्थापन कररक्तवस्त्रगौऔदक्षिणासहित(ओंभास्करयशस्करसमीहितार्थ प्रदोभवनमोनमः) इस मंत्रसे ब्राह्मण को देवै। और भी दान श्राद्ध पितृतर्पण आदि कर्म करै जो राजा जयकी इच्छा कर इस तिथिको यात्रा करै वह अवश्यही जय पावै इसीसे इसका नाम विजयसप्तमी है इस व्रत को करने हारा पुरुष संसार के सब सुख भोग सूर्यलोकमें निवास करता है औ फिर भूमि पर जन्म लेकर दानी भोगी विद्वान् दीर्घायुष् नीरोगसुखीऔ बड़ा प्रतापी राजा होताहै औ स्त्री भी इस व्रतको करै तो सब उत्तम फल पातीहै यह विजयसप्तमी स्वर्ग में बास अभीष्ट कामना की सिद्धि औ विजय देतीहै औ मुनि लोग भी इसको ढूंढ़ते हैं सूर्यभक्तों को तो इसका व्रत अवश्य करना चहिये॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

चालीसवां अध्याय॥

श्रीकृष्ण कहते हैं कि हे महाराज अब हम आदित्य मंडक नाम दान का विधान कहते हैं जिसके करने से सब अशुभदूर होता है यवचूर्ण अथवा गोधूम चूर्ण में गुड़ औ गौ को घृत मिलाकर सूर्यमंडल कै समान अति सुन्दर अपूप बनावै फिर सूर्यभगवान् का पूजनकर उनके आगे रक्तचन्दन का मण्डल लिख उसकेऊपर वह मण्डकधर पीछे ब्राह्मणकोबुलाय उसका पूजन कर (आदित्यतेजसोत्पन्नं राज्ञीकरविनिर्मितम्। श्रेय समसविप्रत्वं प्रतीच्छांकुरुसुव्रत) यह मंत्र पढ़ रक्तबस्त्र औ दक्षिणा सहित वह अपूप ब्राह्मण को देवै ब्राह्मण भी उसका ग्रहणकर (कामदंधनदंधर्म्यं पुत्रदंसुखदंतव आदित्यप्रीतयेदत्तं प्रतिगृह्णामिमंडकम्) यह मंत्र पढ़ै इसप्रकार विजयसप्तमी को मंडक दानकरै औ सामर्थ्य होय तो नित्यही सूर्यनारायण की प्रीतिकेलिये मंडक देवै इस बिधि जो मंडक दान करै वह सूर्यनारायण के अनुग्रह से राजा होताहै॥

इकतालीसवां अध्याय॥

राजायुधिष्ठिर कहते हैं कि और भी सप्तमीव्रत आप कहैं जिसके करने से सब मनोरथ सिद्ध होयँ यह राजा का वचन सुन श्रीकृष्णभगवान् कहनेलगे कि हे महाराज उत्तरायण व्यतीत होने के अनन्तर शुक्लपक्ष में आदित्यवारकोसप्तमीव्रत ग्रहणकरै औ ब्रीह अर्थात् धान तिल जौ उड़द मूंग गेहूं मांस मद्य मैथुन कांस्य पात्र तैलाभ्यंग अंजन औ शिलापरपिसीहुई बस्तु इन सबका षष्ठीको त्यागकरै औ देवता मुनि पितर इन सबका तर्पण कर सूर्यनारायण का पूजन करै औ घृतयुक्तिल

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

औ जौका हवनकर सूर्यनारायण का ध्यान करता हुआ भूमि पर सोवै ये तेरह द्रव्योंको षष्ठीके दिन त्याग केवलचणेदूसरे दिन प्राशन करै इस विधिजो एक बर्ष व्रतकरै तो सब मनो-बांछित फलपावै॥

बयालीसवां अध्याय॥

श्रीकृष्णचंद्र कहते हैं कि हे महाराज एकसमयलोमशऋषि मथुरा में आये वहां हमारे माता पिताने उनका भक्तिसे पूजन किया मुनिभी प्रसन्नहो अनेक प्रकारकी कथा कहनेलगे उसी प्रसंगमें हमारी मातासे कहा कि हेदेवकि कंसनेतेरे बहुतबालक मारदिये इसलिये तू मृतवत्सा होकरअति दुःखभागिनीहोगई चंद्रमुखीभी प्रथम तेरीभांतिमृतबत्साथी परंतु पीछेव्रतकेप्रभाव सेजीवत्पुत्राभई यहमुनिकावचनसुन देवकीनेपूछा कि महाराज चंद्रमुखी कौनथी औ क्या व्रत उसने कियाथा जिससेउसके संतानजीनेलगे आप कृपाकरमुझेभी वह व्रतबतावैं तबलोमशमुनिकहनेलगे कि हेदेवकिअयोध्याकाराजा नहुषथा उसकीरानी चंद्रमुखीथी औ राजाकेपुरोहितकी भार्य्यासेरानीकी बहुतप्रीति थी एकदिन वे दोनों सरयूपर स्नानकरनेगईं उससमयऔरभी बहुत सी नगरकी नारी वहां नहाने आईंथीं उन सब नारियों ने स्नानकर मंडलबनाय उसमें शिव पार्वतीकी प्रतिमा लिख गंधपुष्प अक्षत आदिसे उनका भक्ति पूर्वक पूजन किया पीछे यथाविधि प्रणामकर अपने २ घरको सब नगरकी नारीजाने लगीं तब उनको रानी औ पुरोहितानी ने पूछा कि हे नारियो तुमने यहकिसका पूजन कियातब वे स्त्री बोलीं कि शिवपार्वती का हमने पूजन कियाहै औ शिवजीको आत्मा निवेदनकर यह सुवर्णसूत्र हाथमें धारण कियाहै जब तक प्राण रहेंगे तब तक

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

इसको धारे रहैंगी औ शिव पार्वतीका पूजन किया करैंगी यह सुन वे दोनोंभी उस व्रतको धारण करती भईं परंतु उनमें चंद्रप्रभा व्रतको भूलगई औ सूत्र भी न बांधा इसलिये वह मरने के अनंतर बानरी भई औ पुरोहितानी ने व्रतका उद्यापन नहीं किया इसलिये वह मरकर कुक्कुटी बनी वहांभी उनदोनों की मैत्री रही फिर कुछकालके अनंतर दोनों मृत्युवशभईंउन में चद्रप्रभा पृथ्वीशनाम राजाकी मुख्यरानी औ पुरोहितानी उसी राजाके पुरोहित की भार्याहुई रानीका नाम ईश्वरी औ पुरोहित स्त्री का नाम भूषणा था भूषणा जातिस्मरा औ उत्तम पुत्रों करके युक्त भई ईश्वरीके बहुतकालमें एकपुत्र उत्पन्नभया वहभी रोगीथा इसीसे थोड़ेकालके अनन्तर मरगया तबभूषणा उसको अश्वासन करने आई उसके बहुतसे पुत्र देखईश्वरीके मनमें बड़ी ईर्षा भई औ कुछ कालकेअनंतर ईश्वरीनेभूषणाके पुत्र मरवाडाले परंतु शिवजीके अनुग्रहसे वे मरकर भी फिर जीउठे तब ईश्वरी ने भूषणासे कहा कि हेसखि तैंनेऐसाकौन पुण्य किया है जिससे मरेहुये भी तेरेपुत्र फिर जी उठतेहैं औ बहुतसे चिरंजीव पुत्र तेरे उत्पन्न भये सदा तू भूषण पहिने अति शोभित रहती है यह सुन भूषणा कहनेलगी कि हेसखि भाद्रमासकी सप्तमीको स्नानकर मंडल बनाय उसमें शिव पार्वती का पूजनकरै औ शिवको आत्म निवेदनका सूत्र हाथ में धारणकर अथवा चांदीसोनेकी अँगूठीबनायअँगुलीमेंपहिने उसदिन उपवास करै पीछे व्रतका उद्यापन करै तबशिव पार्वती का मंडल में पूजनकर वह अँगूठी ताम्र के पात्र में धर ब्राह्मणको देवै औ यथा शक्ति ब्राह्मण भोजन करावै इस व्रतके करनेसे सब पदार्थ प्राप्त होते हैं हे सखि यहव्रततुमने औ मैंने साथहीकियाथा परंतु प्रमादकरतुमनेछोड़दियाइसीसे

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

तुम्हारे संतान नष्ट होते हैं औ राज्य पाकर भी दुःखीरहतीहो मैंने वह व्रत भक्ति से पालन किया इससे मैं सबप्रकार सुखीहूं केवल व्रतोद्यापन मैंने नहीं किया इसलिये एक जन्म मुझे कुक्कुटी बनना पड़ा हेसखि अब मैं तुमको अपने व्रतका आधा फलदेतीहूं तुम ग्रहण करो जिससे सब दुःख दूरहोयँ इतनाकह भूषणा ने आधा व्रतका फल ईश्वरी को दिया तब उसके दीर्घायुष् बहुत पुत्र उत्पन्न भये औ सब प्रकार का सुख प्राप्त हुआ इतना कह लोमशमुनि बोले कि हे देवकि तूभी इस व्रतको करै तो संतान स्थिर रहै औ त्रिलोक का स्वामी तेरा पुत्रहोय इतनाकह लोमश मुनि अपने आश्रमको जातेभयेइतनी कथा सुनाय श्रीकृष्णभगवान् बोले कि हे महाराज यह प्रसंग से हमने व्रतका माहात्म्य कहा है जो स्त्री इस कुक्कुटीव्रतको करें उनको कभी संतान का वियोग न होय औ अंतमें शिवलोक में प्राप्त होयँ ॥

तेतालीसवां अध्याय॥

श्रीकृष्णभगवान् कहते हैं कि हे महाराज अब हम सप्तमी कल्पका वर्णन करतेहैं आप प्रीतिसे श्रवण कीजिये माघमहीने की शुक्लसप्तमी को अहोरात्रव्रत का संकल्प कर वरुण का पूजन करै औ अष्टमीके दिन तिल पिष्टगुड़ औ भात ब्राह्मणोंकोभोजन करावै तो अग्निष्ठोमयज्ञ का फलपावै फाल्गुनशुक्ल सप्तमी को सूर्यका पूजन करै तो वाजपेययज्ञका फलप्राप्तहोय चैत्रमें देवासु का पूजनकरै तो महादान का फलपावै वैशाखमें भानुका पूजन करै तो अभयदान का फल प्राप्तहोयज्येष्ठमें इंद्रका पूजनकरने से अति दुर्लभ वाजपेययज्ञ का फल मिलताहै आषाढ़ सप्तमी को दिवाकर का पूजन कर बहु सुवर्णयज्ञका फल प्राप्तहोताहै श्रावण मेंलोलार्कका पूजन कर तो सौत्रामणी यज्ञ काफलपावै

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

भाद्रमें शुचिकी पूजन कर तो तुलादानका फलपावै आश्विन में सविताका पूजनकरनेसे सहस्रगोदानकाफलमिलताहै कार्त्तिक में सप्ताश्वको पूजै तो पौंडरीकयज्ञका फल पावै मार्ग में रविका पूजन करने से दश राजसूययज्ञका फल प्राप्त होताहै पौष में भास्करका पूजन करै तो नरमेधयज्ञ का फल पावै इसभांतिएक वर्ष व्रत औ पूजन कर उद्यापन करै सुन्दर भूमि पर एक हाथ दोहाथअथवा चारहाथ रक्तचन्दनका मण्डलबनायउसमेंसिंदूर औ गेरूकासूर्यमंडल रक्तचंदन करवीर कमल आदि रक्तपुष्प औ अनेक प्रकार के नैवेद्यों से पूजन कर जलपूर्ण दश कलश स्थापनकरै फिर अग्निसंस्कार कर तिल घृत गुड़ औ आककी समिधावों से आकृष्णेन इत्यादि वैदिक मंत्र करके एक हजार आहुतिदेवै पीछे द्वादश ब्राह्मणों को रक्तवस्त्र एक २सवत्सागौ छतरी जूता दक्षिणा औ भोजनदेकर क्षमापन करावैपीछेआप भी मौनसे भोजनकरै इसविधिसे जो सप्तमीव्रतकरै वहनीरोग रूपवान् औ दीर्घायुष् होताहै सप्तमीके दिन उपवासकरसूर्य-नारायण का जो पुरुष दर्शनकरै वह सब पापोंसे मुक्तहो सूर्य-लोक में निवास करताहै यह सप्तमी व्रत अशुभ का नाशकर शरीरारोग्य औ सूर्यलोकमें वास देनेहाराहै जो भक्तिसे इसव्रत को कर सूर्यनारायण का पूजन करैं वे पुरुष सदा आरोग्य औ सुखी रहत हैं औ अंत में सूर्यलोक में जाय सूर्यनारायण के गण बनते हैं ॥

चवालीसवां अध्याय ॥

राजा युधिष्ठिर पूछतेहैं कि हे श्रीकृष्णचंद्र और भी कोईव्रत स्वर्ग आरोग्य औ सबप्रकार के सुख देनेहारा कथनकरैं यहराजा का प्रश्न सुन श्रीकृष्णभगवान् कहनेलगे कि हे महाराज जिस

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

शुक्ल सप्तमीको आदित्यवार होय उसको विजयासप्तमी कहतेहैं उस दिन प्रभातही गोदुग्ध से स्नानकर शुक्लबस्त्र धार अक्षतों करके अतिसुंदर कर्णिका युक्त अष्टदल कमल लिखै पीछे पूर्वादि आठों दलों में क्रम से तपनायनमः। मार्तंडाय नमः। विवस्वतेनमः। भगायनमः। वरुणायनमः। भास्करायनमः। अरुणायनमः। रवयेनमः। इन मंत्रों करके पूजन कर कर्णिका में परमात्मनेनमः। इसमंत्र से सब उपचारों करकेपूजनकर शुक्लबस्त्र फल भक्ष्य पुष्पमाला अनुलेपन गुड़ औ लवण करके नमस्कारांतनाम मंत्रों से स्थंडिल के ऊपर पूजाकरै पीछे व्याहृति होम कर यथाशक्ति ब्राह्मण भोजन कराय सुवर्णसहित तिलपात्र गुरु की भेंटकरै पीछे आप भी पायस भोजन करै इस भांति एक वर्ष यह व्रतकर सूर्यनारायण का पूजन करै औ जल का कुंभ घृत पात्र सुवर्ण वस्त्र भूषण औ सवत्सागौ दरिद्री ब्राह्मण को देवै जो इस कल्याणसप्तमी व्रत को करै अथवा इसके माहात्म्य को पढ़ै औ सुनै वह सब पापों से मुक्त हो सूर्यलोक में निवास करता है॥

पैंतालीसवां अध्याय॥

श्रीकृष्णचन्द्रकहते हैं कि हे महाराजअबहम शर्करासप्तमी का विधानकहते हैं जिसके करने से आयुष्आरोग्य औऐश्वर्य की प्राप्ति होती है वैशाखशुक्ल सप्तमीको प्रभातही तिलोंसेस्नान कर शुक्ल वस्त्र पहिन स्थंडिल के ऊपर कुंकुम करके कर्णिकासहित अष्ट दल कमललिखकर पवित्रेनमःइसमन्त्र करके शर्करा पात्र सहित जलपूर्ण कलश स्थापन करै उस कलशकोरक्तवस्त्र माला आदिसे अलंकृत कर। विश्ववेदमयोयस्मा द्वेदकर्तेतिचोच्यते। त्वमेवामृतसर्वस्वंगतःपाहिसनातन) इसमन्त्रसे उसका

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पूजनकरै फिर सूर्यसूक्त का जप करता हुआ दिन रात्रिव्यतीत करै अष्टमीके दिन प्रभातउठ स्नान आदि नित्य क्रियाकरसूर्यनारायणका पूजनकरै पीछेवह सब सामग्री वेदवेत्ता ब्राह्मणको देकरशर्करा घृत औ पायस करके यथाशक्तिब्राह्मणभोजनकराय आप भी तैललवण रहित भोजन मौन पूर्वक करै इसभांतिप्रति मासव्रत करके वर्ष पूराहोने पर उत्तम शय्या दुग्धदेनेहारी गौ शर्करा पूर्णघट सब गृहस्थ के उपकरणों युक्तघर औ हजार निष्कसेएक निष्क पर्यंत सुवर्ण का बनाहुआ अश्व सामर्थ्यानुसार ब्राह्मणको देवै इसमें कभी वित्तशाठ्य न करै सूर्यभगवान्केमुख से अमृतपान करनेके समयजो अमृतविंदु गिरे उनसेशालीदुग्ध औ इक्षु उत्पन्न भये हैं औ शर्करा इक्षु का सार है इसलिये हव्य कव्य में प्रशस्त औ सूर्यनारायणको अति प्रियअमृतरूप शकरा है यह शर्करा सप्तमीव्रत अश्वमेध के फलको देनेहाराहै औ संतान की वृद्धिइस व्रत से होती हैइसव्रत का करनेहारा एक कल्प स्वर्ग में निवास कर मोक्ष को प्राप्तहोता है॥

छियालीसवां अध्याय॥

राजा युधिष्ठिर पूछते हैं कि हे श्रीकृष्णचन्द्र आपने सब उत्तम फल देनेहारा माघस्नान का विधान कहाथा परंतु जो प्रातः स्नान करने को समर्थ न हो वह क्याकरै नारी अति सुकुमारी होती हैं वे किस भांति माघस्नान का कष्ट सह सकैं इसलिये आप कोई ऐसा उपाय बतावैं कि थोड़े से परिश्रम से नारियों को रूप सौभाग्य संतान औ अनंत पुण्य प्राप्त होय। यह राजा का प्रश्नसुन श्रीकृष्णचन्द्र बोले कि हे महाराज हम अचलासप्तमी का अति गोप्य विधान कहते हैं जिसके करने से सब उत्तमफल प्राप्त होते हैं राजा सगर के अति रूपवती

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

चंद्रमती नाम वेश्याथीजिसका मनोहररूप देखकामदेवभीकामातुरहोजाय एकदिन वह वेश्या प्रभातही बैठी २ संसार की अनवस्थिति का चिंतनकरनेलगी कि देखो यह संसार सागर कैसा भयंकर है जिसमें डूबतेहुये जीवजन्म मृत्युजराआदिजल जंतुओं करके पीड़ित किसीभांति पार नहींपाते कालरूपअग्नि सबको पकाताहै धर्मकामअर्थसे रहित जो दिन बीतजाते हैं वे वृथाहैं औ फिर आतेभी नहीं पुत्र घर क्षेत्र धन आदिकी चिंता में आयुष पूराहोजाताहैऔ मृत्युआदबाता है। इसभांतिअनेक प्रकार के संकल्प बिकल्प करती चंद्रमती वेश्यावशिष्ठजीके आश्रममें गई वहां वशिष्ठजीको प्रणामकर हाथजोड़प्रार्थनाकरने लगी कि महाराज मैंने न तो दानदिया न तपजपव्रत उपवास आदिकिये औ न शिव विष्णुआदि किसी देवता का आराधन किया अब मैं संसारसे भीतहो आपके शरणमें आईहूंकोई व्रत आप मुझे उपदेश करैं जिससे मेरा उद्धार हो यह उसका दीन बचनसुन परम दयालु वशिष्ठमुनि कहनेलगे कि हेबरानने माघशुक्ल सप्तमीको स्नानकरो जिससेरूप सौभाग्य सद्गतिआदि सबफल प्राप्तहोयँ षष्ठीके दिन एकभक्तकर सप्तमी को प्रभातही जलके तटपर जाय वहां दीपदानकर स्नानकरो पीछेयथाशक्ति ब्राह्मणको दान दो इससे तुम्हारा कल्याण होगा यह वशिष्ठजीका वचनसुन अपने स्थानमेंआय सब स्नानदानआदि विधिपूर्वक करतीभई उस स्नानके प्रभावसे बहुतदिन संसार सुखभोगदेह त्यागनेकेअनन्तर इंद्रकी मुख्यरानी शची बनी यहअचला सप्तमीको स्नानका फलहै इतनासुन राजायुधिष्ठिर पूछतेहैं कि हे श्रीकृष्णचन्द्र अचलासप्तमीका माहात्म्यतोसुना अब स्नान बिधान सुनना चाहतेहैं तब श्रीकृष्णभगवान् कहने लगे कि हे महाराज षष्ठीके दिन एक भक्तकर सूर्यनारायण का

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पूजनकरै सप्तमीको प्रभातहीउठ नदी सरोवरतलाव आदिपर जाकर स्नानकरै जबतक कोई पशुपक्षी जलको न हिलावैतब तकही स्नानकरनेका फलहै सुवर्णचांदी कांस्य अथवा ताम्र के पात्रमें कुसुंभकी रंगीहुई बत्ती औ तिलों का तेल डाल दीपक प्रज्ज्वलितकर शिरपरधर हृदयमें सूर्यनारायणकाध्यान करता हुआ(नमस्तेरुद्ररूपायरसानांपतयेनमःवरुणायनमस्तेस्तु हरि वासनमोस्तुते) यहमंत्रपढ़ै पीछेस्नानकरदेवता औ पितरों का तर्पणकरै औ चंदनसे कर्णिका सहित अष्टदल कमल लिखकर उसके मध्यमें शिवपार्वतीका औ पूर्वआदि आठों दलोंमेंक्रमसे रविवैश्वानर विवस्वान् भास्कर सविताअर्क सहस्र किरणऔ सर्वात्माका पूजनकरै इन नामोंके आदिमें प्रणव औ अंतमेंनमः पदलगाकर पूजै इस भांति पुष्प धूप दीप नैवेद्य वस्त्र आदिसे भास्कर का पूजनकर (स्वस्थानंगम्यताम्)इसवाक्यकोउच्चारणकर विसर्जनकरै पीछे ताम्रके अथवा मृत्तिकाके पात्रमेंगुड़ औ घृतसहित तिलचूर्ण औ सुवर्णका बना ताम्रक रखकर रक्त वस्त्रसेढक(आदित्यस्यप्रसादेन प्रातःस्नानफलेनच।दुष्टदौर्भाग्य दुःखेभ्योमयादत्तंतुताम्रकम्) यहमंत्रपढ़ विधिपूर्वकवहपात्र ब्राह्मण को देवै औ (खखोल्कःप्रीयताम्) यहवाक्यकहै पीछे गुरु को वस्त्र तिल गौ औ दक्षिणादेकर यथाशक्ति ब्राह्मण भोजन कराय व्रत समाप्तकरै यह अचला सप्तमी का व्रतरूपसौभाग्य औ सब प्रकारके उत्तमफल देनेहारा है जो पुरुष इसविधि से अचलासप्तमी को स्नानकरै वह संपूर्ण माघस्नानका फलपाता है जो इस माहात्म्य को भक्ति से पढ़ै सुनै औ लोगोंको इसका उपदेश करै वह उत्तम लोकको जाय ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सैंतालीसवां अध्याय॥

श्रीकृष्णभगवान् कहतेहैं कि हे महाराज अबहम बुधाष्टमी का विधान कहतेहैं जिसके करनेहारा कभी नरक नहीं देखता सत्ययुग के आदि में इलनामक एक राजा भया वह एक दिन मृगयामें हरिणकेपीछे लगाहुआ हिमालय पर्वतके समीप एक वनमें पहुँचा उसबनमें प्रवेशकरतेही स्त्री बनगया वह बन शिवजीने पार्वतीजी के साथ विहार करनेकेलिये बनायाथा औ यही शिवजीकी आज्ञाथी कि जो पुरुष इसबनमें प्रवेशकरै वहतत्क्षण स्त्री बनजाय इसकारणसे राजा इल नारी होगया औ वन में बिचरनेलगा उसीसमय उस बुधाष्टमीके पुत्र बुधने देखा औ उसके उत्तमरूप पर मोहितहो कर नारी बनाय उसमें पुत्र उत्पन्न किया जिसकानाम पुरूरवाभया उसीसेचन्द्रबंशकाआरम्भभया जिसदिन बुधने विवाहकिया उसदिन बुधाष्टमी थी इसीसे यह जगत्में पूज्य भई उर्मिलानाम मिथिलादेश में एक स्त्री थी वह बिपत्ति करके बहुत पीड़ितभई तब अपने बालक औ कन्या को साथलेकर अवन्तिदेशकोगई वहांजाय एकब्राह्मणके घरमें सेवा कर अपना निर्वाह करनेलगी पीसने के समय थोड़े से गेहूं चोर कर क्षुधासे पीड़ित अपने दोनों बालकोंकोदेती कुछकालके अनन्तर उसकी कन्या तरुण अवस्थाको प्राप्तभई जिसका नाम श्यामलाथा उसको रूपवतीदेख धर्मराजने अपनी भार्याबनाया औ उसकोमाता उर्मिला मृत्युवशभई यमराजने अपनी प्रियासे कहा कि और सबकाम तुम करना परंतु ये सातस्थान जिनके तालेबंदहैं इनमें कभी मतजाना उसनेभी कहा कि बहुत अच्छा परंतु मनमेंसंदेह उत्पन्न होगया एकदिन धर्मराज तो किसी कार्यमें व्यग्रथे श्यामलाने एकमकान का ताला खोलकर देखा तो

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

उसकीमाता उर्मिलाको अति भयंकर यमदूत बांध २ कर तप्त तैलकेकड़ाहमें बार२डालतेहैं लज्जितहोकर वहताला बंदकिया दूसराखोल देखा तो वहांभी उसकीमाताकोशिलाकेऊपर लोढ़ी से चटनीकीभांति यमदूत पीसरहे हैं औ वह चिल्लातीहै इसी भांति तीसरें में उसको माताके मस्तकमें लोहकेकील ठोकते हैं चौथेमें अतिभयंकर श्वान उसको भक्षणकररहेहैं पांचवेंमें लोहे के संदंशसे उसको पीड़ित करते हैं छठेमें कोल्हू के बीच इक्षुकी भांति पेलीजातीहै औसातवेंस्थानका तालाखोलदेखातोवहांभी उसकी माताको हजारोंक्रिमि भक्षणकररहेहैं औ वहराधरुधिर आदि से व्याप्त होरही है कर देख श्यामला ने बिचार किया कि मेरीमाताने ऐसा कौनसोंके आग जिससे इसदारुण गतिको प्राप्तभई यहशोचकर सबवृत्तान्त अपने पतिधर्मराजसे कहाधर्मराजबोले कि हे प्रिये इसीलिये हमनेकहाथा कि ये सातताले मतखोलना नहीं तो तुमको पश्चात्तापहोगा तुम्हारीमाताने संतानके स्नेहसे ब्राह्मणके गेहूंचोरे तुम क्या नहीं जानतीहो यह सब उसीकर्मका फलहै ब्राह्मणका धन प्रणय से भक्षण करै तो भी सातकुल अधोगतिको प्राप्तहोतेहैं औ चोरकर खाय तब तो जबतक चंद्र सूर्य रहैं तबतक नरक से उद्धारनहींहोता जो गोधूम इसने चुराये थे वेही क्रिमि बनकर इसको भक्षण करते हैं यह यमराजका वचनसुन श्यामला बोली कि महाराज यहसब मैं जानतीहूं परन्तु अब आप ऐसाकोई उपाय बतावैं जिससेमाता का नरक से उद्धारहोय यह उसका कथन सुन कृपता बिचार कर यमराजने कहा कि हे प्रिये सात जन्म पूर्व तका धाष्टमी का व्रत किया था जो उसका फल तू अपनी मा देवै तो यह इस संकट से छुटै यह सुनतेही श्यामला ने कर अपने व्रतका फल माताको दिया वह उसकीमाता

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

क्षण दिव्य देह धार बिमान में बैठ अपने पति सहित स्वर्ग को गई औ आज तक स्वर्ग सुख भोगती है इतनी कथासुन राजा युधिष्ठिर ने पूछा कि हे श्रीकृष्णबुधाष्टमी व्रतका क्याविधान है तब श्रीकृष्णभगवान् कहने लगे कि महाराज जब शुक्लपक्ष की अष्टमीको बुधबार होय उसदिन एक भक्त व्रत करनाचहिये पूर्वाह्णमेंनदी आदि में स्नानकर नयापात्र जल से भर भोजन औ दक्षिणा सहित ब्राह्मणको देवै आठ बुधाष्टमी का व्रत करै औ आठों में क्रम से ये आठ पक्कान्न भक्षण करै मोदक गुणक घेवर बटक कसार सोमलक अपूप औ आठवीं अष्टमी को पूरी मिठाई आदि अनेक पदार्थ भोजन करै अपने इष्टमित्रोंके साथ बैठ कर भोजन करै औ बुधाष्टमीकी कथा भी सुनै बुधकीमूर्ति बनाय पूजन करै वह मूर्ति एक माशे सुबर्णकी बनावै औ गन्ध पुष्प नैवेद्य वस्त्र दक्षिणा आदिसे उसका अर्चनकर (ओंबुधोयं प्रतिगृह्णातु दिव्यस्थोत्रबुधःस्वयम्। दीयतेबुधराजेन्द्र तुष्यतांमे बुधोत्तमः) यह मंत्र पढ़ ब्राह्मणको सब सामग्री सहित बुधकी मूर्ति देवै ब्राह्मण भी मूर्तिलेकर यह मंत्रपढ़ै (दुर्बुद्धिबोधंदुरितं नाशयित्वाचवोबुधः। सौख्यसौमनस्योनित्यंकरोतुशशिनंदनः) इस विधिसे जो बुधाष्टमी का व्रतकरै वह सातजन्म पर्यंत जातिस्मरहोय औधन धान्य पुत्रपौत्रदीर्घायुष् ऐश्वर्यआदि संसार के सब पदार्थ पाय अंत समय नारायण कास्मरण करताहुआ श्यामपर प्राण त्यागताहै औ प्रलय पर्यंत स्वर्गमें निवासकरता औ उस इस बिधानको श्रवण करै वह भी ब्रह्महत्यादि पापों से कहा गिहै यह अति गुप्त बुधाष्टमी विधान हमने कहा है जो यह तालेबंदकरै औ पक्कान्न पात्र सहित बुध की मूर्ति ब्राह्मण को देवै परंतु मभीयमलोक नहीं देखता ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अठतालीसवां अध्याय॥

राजा युधिष्ठिर कहतेहैं कि हे श्रीकृष्णचन्द्र आप जन्माष्टमी व्रतका विधान कथन करैं यह सुन श्रीकृष्णभगवान् कहने लगे कि हे महाराज मथुरा में जब कंस मारा गया उस समय औ उसी रंग बाटस्थान में जहां मल्लयुद्ध हुआ था औ कुकुर अंधक वृष्णिआदि सब बैठे थे देवकी हमकोआलिंगनकर स्नेह से रोदन करने लगी औवसुदेवजी भी गद्गद वाणीहो हमको औ बलदेवजी को आलिंगन कर कहने लगे कि आज हमारा जन्म सफल भया जो दोनों पुत्रों को कुशल युक्त देखते हैं इस भांति हमारे माता पिता को अति हर्षित देख सब मनुष्यवहां एकत्र भये औ कहनेलगे कि हे श्रीकृष्ण आपने बड़ाकाम किया जो इस दुष्ट कंसको मारा हम सब इससे बहुत पीड़ित थे अब आप यह कृपाकर कहैं कि किसदिन आपदेवकीके गर्भसेउत्पन्न भयेहो हम सब उस दिन बड़ा उत्सव किया करैंगे उस समय हमारे पिता ने भी कहा कि अपना जन्मदिन इनकोबतादोतब हमने मथुरा निवासी जनों को जन्माष्टमीका व्रत कथन किया सिंहराशिपर सूर्य औ वृष राशिपर चन्द्रमाथा उसभाद्र कृष्ण अष्टमीअर्द्धरात्रके समय रोहिणी नक्षत्रमेंहमाराजन्मभया। यह व्रत सब वर्णों को करना चहिये प्रथम यहव्रत मथुरामें प्रसिद्ध भया पीछे और लोकों में इसकी ख्याति भई उसीदिन भगवती का भी बड़ा उत्सव करनाचहियेइतनासुन राजायुधिष्ठिरनेपूछा कि हे श्रीकृष्णचन्द्र अबइसव्रतका आप विधान वर्णनकीजिये जिसके करनेसे जगत्के प्रभुआप प्रसन्न होतेहैं तब श्रीकृष्णभगवान् कहनेलगे किहेमहाराज इस एकव्रतके ही करने से सात जन्म के पाप निवृत्त होजाते हैं पहिलेदिन दन्तधावन आदि

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कर व्रतके नियम ग्रहणकरै पीछे व्रतकेदिन मध्यह्न में स्नान कर देवकीका सूतिका गृह बनावै गोकुल की भांति गोप गोपी गौ आदिसे अलंकृतकर खड्ग छाग मुसलआदि रक्षा के लिये द्वारपर रक्खै षष्ठीदेवी का स्थापनकरै इसभांति यथाशक्ति उस सूतिका गृहको भूषितकर बीचमें पर्यंकके ऊपर सोतीहुई हमारे सहित देवकी की प्रतिमा स्थापिन करै/प्रतिमा आठ प्रकार की होतीहैं सुवर्णकी चांदीकी ताम्रकी पित्तल की मृत्तिका की मणिकी रंगसे लिखी हुई औ मनोमयी इनमें से सर्व लक्षणयुक्त कोई प्रतिमा बनाय स्थापन करै औ स्तनपान करते हुये बाल स्वरूप नील कमलके समान वर्ण हमारी प्रतिमा देवकी के समीप पलँग के ऊपर स्थापनकरै बाहिर खड्ग चर्म धारण किये वसुदेवकी मूर्त्तिबनावै औ कन्या जन्मतीहुई यशोदा भी वहां बनावै औ ऊपर को देवता ग्रह नाग विद्याधर आदि की मूर्त्ति रचै वसुदेव कश्यप का अवतारहैं देवकी अदिति का बलदेवजी शेषनाग का नन्दगोप दक्षप्रजापतिका यशोदा दितिका औगर्ग मुनि ब्रह्माजीका अवतारहैं वहां नाचती गाती हुई अप्सराओं गन्धर्ब बनावै औ एकओर कालियनाग को यमुनाके ह्रदमेंस्थापनकरै इसभांति अति रमणीय नवसूतिका देवी का स्थापन कर भक्तसे गंध पुष्प धूप वीजपूर सुपारी नारंगी पनस आदि जो फल उसदेश में प्राप्तहोंय उन सब से पूजन कर (गायद्भिः किन्नराद्यैःसततपरिवृता वेणुवीणानिनादैर्भृङ्गारादर्शकुम्भप्रवरकरतलैःकिन्नरैर्गीयमाना । पर्यंकेसाभिसुप्तामुदिततरमनाः पुत्रिणी सम्यगास्ते सादेवीदेवमाताजयतिसुवदनादेधकीकान्तपा) यहश्लोकपढ़ै। औ यह ध्यान करै कि कमलवासिनी लक्ष्मी देवकी के चरण दबारहीहै औं श्रियेनमः देवक्यैनमः वसुदेवायनमःबलदेवायनमः नंदायनमःयशोदायैनमः इत्यादिनाम

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मंत्रोंसें सबका अलग २ पूजनकरै पीछे (अनर्घ्यंवामनंसौरिं वै-
कुण्ठंपुरुषोत्तमम्। वासुदेवंहृषीकेशंमाधवंमधुसूदनम्१वाराहपुं-
डरीकाक्षं नृसिंहंदैत्यसूदनम्। दामोदरंपद्मनाभं केशवंगरुड़ध्व-
जम् २ गोविंदमच्युतंकृष्णमनंतमपराजितम्। अधोक्षजंजगद्बी-
जं सर्गस्थित्यंतकारणम् ३ अनादिनिधनंविष्णुं त्रैलोक्येशंत्रि
विक्रमम्। नारायणंचतुर्बाहुंशंखचक्रगदाधरम्४पीतांबरंधरंनित्यं
वनमालाविभूषणम्। श्रीवत्सांकंजगत्सेतुंश्रीधरंश्रीपतिंहरिम्।
योगेश्वरंचयोगीशं गोविन्दम्प्रणतोस्म्यहम्५) इसमंत्रसे हमारी
मूर्त्तिको स्नान करावै (यज्ञेश्वराययज्ञाय यज्ञपतयेगोविन्दाय
नमः) इसमंत्र से अर्घ्य चन्दन धूप दीप अर्पण करै (विश्वेश्वराय
विश्वसंभवाय विश्वपतयेगोविन्दायनमः) इस मंत्र से नैवेद्य च-
ढ़ावै (धर्मेश्वराय धर्मसंभवाय धर्मपतये गोबिन्दायनमः)यहमंत्र
पढ़ क्षमापन करावै। इस भांति पूजन कर स्थंडिलके ऊपर रो-
हिणी सहित चन्द्रमा वसुदेव देवकी नंद यशोदा औ बलदेवजी
का पूजन करै तो सबपापों से मुक्त होजाय क्षौन्द्रोदय के समय
(क्षीरोदार्णवसंभूत अत्रिनेत्रसमुद्भव। ग्रहाणार्घ्यंशशांकेशरोहि-
ण्यासहितोमम) इस मंत्रसे चन्द्रमाको अर्घ्यदेकर घृतकी वसु
धारा करै औ षष्ठी देवीका पूजनकर उसीक्षण हमारानामक-
रण आदि करै नवमीके दिन हमारे उत्सव के समान भगवती
का उत्सवकरै पीछे यथाशक्ति ब्राह्मणों को भोजनकराय उन
को सुवर्ण वस्त्र गौ आदि देकर संतुष्ट करै औ यह वाक्य कहै
कि (श्रीकृष्णोमेप्रीयताम्। औ ये मंत्रभी पढ़ै (यंदेवंदेवकीदेवी
वसुदेवोप्यजीजनत्। भौमस्यब्रह्मणोगुप्त्यै तस्मैब्रह्मात्मनेनमः
सुजन्मवासुदेवाय गोब्राह्मणहितायच। जगद्धितायकृष्णाय गो-
विन्दायनमोनमः। शांतिरस्तुशिवंचास्तु) यह पढ़ ब्राह्मणों को
विसर्जनकरै इसप्रकार हमारे भक्त पुरुष अथवा स्त्री जो इस

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

उत्सवको प्रतिवर्ष करैं वे संतान आरोग्य धनधान्यदीर्घआयुष् औ राज्य पातेहैं जिस देशमें यह उत्सव कियाजाय वहां पर चक्रव्याधि औ अवृष्टि आदिका कभी भय नहीं होता जिसघर में पुत्रयुक्त देवकी लिखकर पूजीजाय वहां बालकका मृत्यु गर्भ पात बैधव्य दौर्भाग्य औ कलह नहीं होता जो एक बारभी इस व्रतको करै वह भी विष्णुलोकको प्राप्तहोता है इस व्रतके करनेहारे संसारकेसब सुख भोगविष्णुलोकमें निवासकरते हैं॥

उनचासवां अध्याय॥

श्रीकृष्णचन्द्र कहते हैं हे महाराज भाद्र शुक्ल अष्टमी को दूर्वाष्टमी का व्रत जो पुरुष करै उसकावंशकभी क्षयनहीं होता दूर्वा के अंकुरों की भांति दिन २ बढ़ता जाताहै राजा युधिष्ठिर पूछते हैं कि हे श्रीकृष्णचन्द्र यह दूर्वा कहां से उत्पन्न हुई चिरायुष् क्यों कर भई औ लोक में वंद्य औ पूज्य क्यों है यह आप वर्णन करैं यहराजाकाप्रश्नसुन श्रीकृष्ण भगवान् कहने लगे कि हे महाराज देवताओं ने जब क्षीरसागर मथन किया उससमय विष्णुभगवान् ने अपनी पीठपर मंदराचल को धारणकिया उसकी रगड़से भगवान् के जो रोम उखड़कर जलमें गिरे उनसे दूर्वा उत्पन्न भई उस दूर्वापर देवताओं ने अमृतके कुम्भ रक्खे उनसे जो अमृत बिंदु गिरे उनके स्पर्श से यह अजर औ अमर भई औ देवताओं ने गन्ध पुष्प धूप दीप नैवेद्य खर्जूर नालिकेर द्राक्षा कपित्थलकुच नारंग बीजपूरदाड़िमदही अक्षत मालाआदिसे (त्वंदूर्वेऽमृतजन्मासिवंदितासिसुरासुरैः। सौभाग्यसंततिंदत्त्वासर्वकार्यकरीभव १ यथाशाखाप्रशाखाभिर्विस्तृतासिमहीतलेतथाममापिदेहित्त्वत्वामजरामरतांसदा)इन मन्त्रोंकरके दूर्वाका पूजन किया है सब देवपत्नी स्वाहा गौरी

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

संज्ञा श्रीवेदवती दमयन्ती सीता सुकेशी घृताची रम्भा मिश्र-केशी देवयोंनि कामकन्दला मेनका उर्बशी आदि सब स्त्रियोंने दूर्वाका पूजनकर अपना २ अभीष्ट फल पायाहै और भी जो नारी स्नानकर शुद्ध वस्त्र पहिन दूर्वाका पूजन कर तिल पिष्ट गोधूम सप्तधान्य आदिका दानकर ब्राह्मण भोजन करावैं औ श्रद्धासे इस व्रतको करैं वे पुत्र पौत्र सौ भाग्य धनआदि सब पदार्थपायबहुतकालसंसार सुखभोग अन्तमेंअपने पति सहित स्वर्गको जाती हैं औ प्रलय पर्यंत वहांही निवास करती हैं॥

पचासवां अध्याय॥

श्रीकृष्णचंद्र कहते हैं कि हे महाराज अबहमकृष्णाष्टमीका बिधान वर्णन करतेहैं मार्गशीर्ष मासकीकृष्णाष्टमीको उपवास के नियम धारण कर ब्रह्मचारी औ जित क्रोध हो गुरुकीआ-ज्ञानुसार उपवास करै मध्याह्नके अनंतर नदीआदि में स्नान कर गन्ध उत्तम पुष्प गुग्गुलधूप दीप अनेक प्रकारके नैवेद्य तांबूल आदि उपचारोंसे शिवलिंग का पूजनकर कृष्णातिलों का हवनकरै मार्गमासमं शंकरका पूजनकरै औ गौमूत्र प्रा-शनकर भूमिपर सोवै तोअति रात्रियज्ञका फलपावै पौषकृष्णा। ष्टमीको शंभुका पूजनकर घृत प्राशन करै तो बाजपेय यज्ञका फलपावै माघ कृष्णाष्टमी को महेश्वरका पूजनकर गोदुग्धप्रा-शनकरै तो आठ गोमेध यज्ञ का फल प्राप्तहो या फाल्गुन में महादेव का पूजनकर तिल प्राशन करै तो आठराजसूयका फल पावै चैत्र में स्थाणुका पूजन करै औ यवप्राशनकरै तो अश्वमेध का फल मिलै बैशाखमें शिवका पूजनकर रात्रिके समयकुशो-दक प्राशनकरै तो दशनरमेध यज्ञोंका फलपावै ज्येष्ठ में पशु-पतिका पूजन कर गो शृंगजल प्राशन करै तो लक्ष गोदान का

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

फल प्राप्त होय आषाढ़ में उग्रका पूजन कर गोमय प्राशन करै तो अयुत वर्ष से भी अधिक रुद्रलोक में निवास करै श्रावण कृष्णाष्टमीको शर्वका पूजनकर रात्रिके समय दूर्बा प्राशनकरै तो बहु सुवर्ण यज्ञका फल पाताहै भाद्रमें त्र्यम्बकका पूजनकर बिल्वपत्र का प्राशन करै तो तीनवर्ष दीक्षित होनेका फल पावै आश्विन में भव का यजन कर तंदुलोदक प्राशन करै तो दश पौण्डरीक यज्ञों का फल मिलै कार्तिक कृष्णाष्टमी को रुद्र का भक्तिसे अर्चन कर दही प्राशन करै तो अग्निष्ठोम यज्ञका फल प्राप्तहोयइसप्रकार बारह महीने शिवपूजन कर अंतमें शिवभक्त ब्राह्मणोंको घृत शर्करा युक्त पायस भोजन करावै औ सुवर्णवस्त्र आदि उनको देकर प्रसन्नकरै औ कृष्ण तिल पूर्ण बारहकलश छत्र जूता वस्त्र आदि बारह ब्राह्मणों को देकर दुग्ध देनेहारी सवत्साएक कृष्णवर्ण गौ महादेवजीकी भेटकरै इस कृष्णाष्टमी व्रतको जो एक बर्ष निरन्तरकरै वह सब पापोंसे मुक्तहो उत्तम ऐश्वर्य पाय सौवर्षपर्यंत संसारके सुख आनन्द से भोगताहै इस व्रतके करनेसे इंद्र चंद्र ब्रह्मा विष्णु आदि देवता उत्तम २ पदों को प्राप्त भये हैं जो पुरुष अथवा स्त्री इस व्रतको भक्ति से करै वह अप्सराओं सहितउत्तम विमान में बैठ देवताओंकरकेस्तूयमान शिवलोक को जाताहै वहांहीं तीनअयुत कल्प पर्यंत निवास करता है औ जो इस व्रत के माहात्म्य को सुनै वह सबपापों से मुक्तहोताहै भक्ति से कृष्णाष्टमी व्रत कर पूर्वोक्त रीतिसेशिव पूजन औ प्राशन कर तिल औ अन्न सहित कृष्ण वर्णकेकलश ब्राह्मणों को देवै तो अवश्यही शिवलोक को जाय ॥

इकावनवां अध्याय ॥

श्री कृष्णचंद्र कहते हैं कि हे महाराज ब्रह्माजी के पुत्रअत्रि

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ऋषि भये जिनकी पत्नी अनसूया थी उनके पुत्र बड़े तपस्वी विष्णु का अवतारदत्तात्रेय नाम हुये जिनको अनघभी कहतेहैं उनकी पत्नी लक्ष्मीका अवतार थी उसका नाम अनघाथा उन के आठपुत्रबड़े तपस्वी औ ब्रह्मवेत्ता भये दत्तात्रेय योगीबिंध्याचल के बीच अपने आश्रम में योगसाधन करते थेइसी समय जंभ नामक दैत्य ने ब्रह्मा जी से वर पाय बड़ी सेना साथलेइंद्र की पुरी अमरावतीकोजाय घेरा औ दिव्य सौ वर्षतकयुद्धहुआ अंतमें देवता व्याकुलहो नगरछोड़ भागे तब गदा मुद्गरपट्टिश शतघ्नी बाण खड्गआदि अनेकप्रकारके शस्त्रधारे वृष महिष शरभ सिंह व्याघ्र वानर गैंड़े हाथी आदि बाहनोंपर चढ़हुये बड़े पराक्रमी जंभआदि दैत्यभी देवताओं के पीछेलगे देवता भयभीत हुये २ दत्तात्रेय के आश्रममें पहुंचे दत्त मुनिने उनको अभयदिया औ अपने शरणमें रक्खा इतनेमें गर्ज्जते औ शस्त्रों की वृष्टि करते दैत्यभी वहां पहुंचे औ घोर शब्द से परस्पर कहनेलगे कि इस ब्राह्मणको बांधलो औ इसकेआश्रमवृक्षोंको उखाड़कर फेंकदो यहसुन दत्तात्रेय ने क्रोधकर दैत्यों को देखा देखतेही सब दैत्य निस्तेज औ पराक्रम हीन होगये तबदेवताओंने उनको जीता औ स्वर्गका राज्यपाया तबसेदत्तात्रेयका प्रभाव लोकमें प्रसिद्धभया दिव्यतीन हजार वर्ष पर्यंत दत्तात्रेय योगीने अपनी पत्नी सहित तप किया इतने काल में सब लोकोंपर अनेक उपकार किये यहसब वृत्तांत मार्गकृष्णाष्टमी को हुआथा दत्तात्रेय जब योगाभ्यास करते थे उससमयमाहिष्मती नगरीकाराजा कार्तवीर्यार्जुन एकाकी रहकर दिनरात दत्तात्रेयकी सेवा करता था जब दत्तात्रेयका नियम संपूर्णहुआ तब प्रसन्नहो कार्तवीर्यसे कहा कि बरमांग तैंने बहुतकालसेवा करी इससे हम संतुष्टहैं तबकार्तवीर्य ने प्रथम यहबरमांगाकि

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

महाराज मेरे हजार भुजा होंय दूसरा यह कि संपूर्ण पृथ्वी का राज्य मिले तीसरे यह कि धर्मसेराज्य मिलै औ धर्मसेही मैंपालन करूं चौथा यह वर कि युद्धमें सदा जय होय दत्तात्रेय ने ये सब वर उसको दिये वहभी वरके प्रभाव से सब राजाओं को जीत चक्रवर्तीबना सातोंद्वीपोंमें उसने दशहजार यज्ञकियेसब यज्ञोंमें सुवर्ण की वेदी औ यूप बनेथे प्रत्येक यज्ञमें अपरिमित धन ब्राह्मणों को दिया देवता गन्धर्ब अप्सराआदि सदाउसके यज्ञोंमें वर्त्तमान रहते थे और नारदमुनि तो उसकी महिमा योंगातेथे कि कार्तवीर्य के तुल्य यज्ञदान तप पराक्रम औ शास्त्र में न तो कोईराजा पहिले हुआ औ न आगे होगा खड्गचर्म धनुषबाण धारे सब प्रजाकी रक्षाके लिये कार्तवीर्य आप घूमता रहताथा उसके राज्यमें अधर्म दुराचार शोकनहींथे औ किसी का धन भी नष्ट नहीं होताथा दुष्टोंकोबहआपदंडदेता पचासी हजार वर्ष कार्तवीर्य ने धर्मराज्यकिया औ प्रजाको परिपूर्णसुख दिया वह हजार भुजाओं करके ऐसा शोभितहोता जिस भांति अपने सहस्त्रकिरणोंकरके सूर्यशोभितहोंय नर्मदा नदी में वर्षा ऋतुके समय जब कार्तवीर्य क्रीड़ाकरता तब नर्मदाका प्रबाह उलटा चलने लगता मत्त होकर समुद्र में जब बिहार करने के लिये प्रवेशकरता उससमय समुद्र का जल बेलाके बाहिर हो जाता औ पातालमें नाग औ असुरत्रास को प्राप्तहोते हजार २ भुजाओं से जब धनुषकी ज्याका शब्दकरता तब ऐसा प्रतीत होता मानो प्रलयकाल के मेघ गर्जतेहैं अथवा हजारों बज्रपात एकबार होतेहैं एकसमय कार्तवीर्य लंकासेरावण को पकड़लात औ अपने कारागार में कैदकरदिया तब पुलस्त्यमुनि ने आय बड़ी दीनता दिखाय रावण को छुटाया किसी समय अग्नि ने कार्तवीर्य से भिक्षा मांगी तब कार्तवीर्यने सप्तद्वीपवती पृथिवी

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ऋषि भये जिनकी पत्नी अनसूया थी उनके पुत्र बड़े तपस्वी विष्णु का अवतारदत्तात्रेय नाम हुये जिनको अनघभी कहतेहैं उनकी पत्नी लक्ष्मीका अवतार थी उसका नाम अनघाथा उन के आठपुत्रबड़े तपस्वी औ ब्रह्मवेत्ता भये दत्तात्रेय योगीविंध्याचल के बीच अपने आश्रम में योगसाधन करते थेइसी समय जंभ नामक दैत्य ने ब्रह्मा जी से वर पाय बड़ी सेना साथलेइंद्र की पुरी अमरावतीकोजाय घेरा औ दिव्य सौ वर्षतकयुद्धहुआ अंतमें देवता व्याकुलहो नगरछोड़ भागे तब गदा मुद्गरपट्टिश शतघ्नी बाण खड्गआदि अनेकप्रकारके शस्त्रधारे वृष महिष शरभ सिंह व्याघ्र वानर गैंड़े हाथी आदि बाहनोंपर चढ़हुये बड़े पराक्रमी जंभआदि दैत्यभी देवताओं के पीछेलगे देवता भयभीत हुये २ दत्तात्रेय के आश्रममें पहुंचे दत्त मुनिने उनको अभयदिया औ अपने शरणमें रक्खा इतनेमें गर्ज्जते औ शस्त्रों की वृष्टि करते दैत्यभी वहां पहुंचे औ घोर शब्द से परस्पर कहनेलगे कि इस ब्राह्मणको बांधलो औ इसकेआश्रमवृक्षोंको उखाड़कर फैंकदो यहसुन दत्तात्रेय ने क्रोधकर दैत्यों को देखा देखतेही सब दैत्य निस्तेज औ पराक्रम हीन होगये तबदेवताओंने उनको जीता औ स्वर्गका राज्यपाया तबसेदत्तात्रेयका प्रभाव लोकमें प्रसिद्धभया दिव्यतीन हजार वर्ष पर्यंत दत्तात्रेय योगीने अपनी पत्नी सहित तप किया इतने काल में सब लोकोंपर अनेक उपकार किये यहसब वृत्तांत मार्गकृष्णाष्टमी को हुआथा दत्तात्रेय जब योगाभ्यास करते थे उससमयमाहिष्मती नगरीकाराजा कार्तवीर्यार्जुन एकाकी रहकर दिनरात दत्तात्रेयकी सेवा करता था जब दत्तात्रेयका नियम संपूर्णहुआ तब प्रसन्नहो कार्तवीर्यसे कहा कि बरमांग तैंने बहुतकालसेवा करी इससे हम संतुष्टहैं तबकार्तवीर्य ने प्रथम यहबरमांगाकि

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation

महाराज मेरे हजार भुजा होंय दूसरा यह कि संपूर्ण पृथवी का राज्य मिले तीसरे यह कि धर्मसेराज्य मिलै औ धर्मसेही मैंपालन करूं चौथा यह वर कि युद्धमें सदा जय होय दत्तात्रेय ने ये सब वर उसको दिये वहभी वरके प्रभाव से सब राजाओं को जीत चक्रवर्तीबना सातोंद्वीपोंमें उसने दशहजार यज्ञकियेसब यज्ञोंमें सुवर्ण की वेदी औ यूप बनेथे प्रत्येक यज्ञमें अपरिमित धन ब्राह्मणों को दिया देवता गन्धर्ब अप्सराआदि सदाउसके यज्ञोंमें वर्त्तमान रहते थे और नारदमुनि तो उसकी महिमा योंगातेथे कि कार्तवीर्य के तुल्य यज्ञदान तप पराक्रम औ शास्त्र में न तो कोईराजा पहिले हुआ औ न आगे होगा खड्गचर्म धनुषबाण धारे सब प्रजाकी रक्षाके लिये कार्तवीर्य आप घूमता रहताथा उसके राज्यमें अधर्म दुराचार शोकनहींथे औ किसी का धन भी नष्ट नहीं होताथा दुष्टोंकोबहआपदंडदेता पचासी हजार वर्ष कार्तवीर्य ने धर्मराज्यकिया औ प्रजाको परिपूर्णसुख दिया वह हजार भुजाओं करके ऐसा शोभितहोता जिस भांति अपने सहस्त्रकिरणोंकरके सूर्यशोभितहोंय नर्मदा नदी में वर्षा ऋतुके समय जब कार्तवीर्य क्रीड़ाकरता तब नर्मदाका प्रबाह उलटा चलने लगता मत्त होकर समुद्र में जब बिहार करने के लिये प्रवेशकरता उससमय समुद्र का जल बेलाके बाहिर हो जाता औ पातालमें नाग औ असुरत्रास को प्राप्तहोते हजार २ भुजाओं से जब धनुषकी ज्याका शब्दकरता तब ऐसा प्रतीत होता मानो प्रलयकाल के मेघ गर्जतेहैं अथवा हजारों बज्रपात एकबार होतेहैं एकसमय कार्तवीर्य लंकासेरावण को पकड़लात औ अपने कारागार में कैदकरदिया तब पुलस्त्यमुनि ने आय बड़ी दीनता दिखाय रावण को छुटाया किसी समय अग्नि ने कार्तवीर्य से भिक्षा मांगी तब कार्तवीर्यने सप्तद्वीपवती पृथिवी

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

भिक्षाम ददौ इससे अग्नि प्रसन्नहो अद्यापि उसके कुंडमें निवास करताहै अनघमुनिके प्रसादसे यह सब प्रभाव कार्तवीर्य का भया कार्तवीर्यने अनघाष्टमी व्रत लोक में प्रवृत्तकिया अघ नाम पापकाहै पापहरने से इसकानाम अनघा भया दत्तात्रेय मुनिको भी योगके प्रभावसे अणिमा लघिमा प्राप्ति प्राकाम्य महिमा ईशित्व वशित्व औ कामावसायिता ये आठऐश्वर्य प्राप्त भये इतनी कथा सुन राजा युधिष्ठिर पूछनेभये कि किस तिथि का व्रतकार्तवीर्यने कियाथा औ किस विधानसे किया यहआप कथनकरैं तब श्रीकृष्णचन्द्र कहनेलगे कि हेमहाराज कार्तवीर्य ने अनघाष्टमी व्रतकरके सब अभीष्ट पाया अनघाष्टमी का यह बिधानहै कि मार्गशीर्षकृष्णाष्टमीको कुशाकाअनघमुनिऔबहुत पुत्रों सहित उनकी पत्नी अनघा बनाय स्थंडिलकेऊपर स्थापन कर स्नानकराय गंधआदि उपचारों से (इदंविष्णुर्विचक्रमे) इत्यादिवैदिकमंत्रोंकरके उनकापूजनकरै अनघकोविष्णुरूपअनघा को लक्ष्मीरूप औ उनकेपुत्रोंकोप्रद्युम्नादिरूपसेभावनाकर पूजनकरै उसकाल में जो फलमिलैं वे सबचढ़ावै औ धूप दीप अनेकप्रकार के नैवेद्य निवेदनकरै पीछे यथाशक्ति ब्राह्मण भोजन कराय आपभी अपनेमित्र बंधुओं सहित भोजनकरै रात्रिके समय जागरणकर बड़ा उत्सव करै नवमी के दिन प्रभातही नदी में उनका विसर्जनकरै इसव्रतको ग्रहण कर त्याग न करै प्रतिवर्ष श्रद्धासे यह दत्तात्रेयमुनि का उत्सव करै तो सब पाप दूरहोंय कुटुम्बकी वृद्धिहोय विष्णुभगवान् प्रसन्नहोंय औ सात जन्मतक आरोग्यरहै जो पुरुष भक्तिसे इसव्रतको करैं वे कार्तवीर्यकी भांति ऐश्वर्य पाते हैं औ अन्तमें विष्णुलोक कोजातेहैं ॥

—※—

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by eGangotri Foundation

बावनवां अध्याय॥

श्रीकृष्णचन्द्र कहतेहैं कि हे महाराजहम औरभी व्रतकहते हैं जिसके करने से सब प्रकार के कल्याण औ शिवलोककीप्राप्तिहोय सोमवारयुक्त अष्टमी जिस दिनहोय उसदिनहरिहरका पूजन करै ऐसी प्रतिमा स्थापनकरै जिसका दक्षिण भाग शिव रूप औ वामभाग विष्णुरूप होय पीछे पंचामृत आदि से विधिपूर्वक स्नान कराय कर्पूरयुक्त चन्दन का दक्षिणभागमें औतुरुष्क नाम सुगंधि द्रव्ययुक्त कुंकुमका वामभाग में लेपन करै शिवके ऊपर नीलम औ विष्णुकेऊपर मोती चढ़ावै श्वेतरक्तपुष्प चढ़ाय घृत पक्व नैवेद्य लगावै औ पचीस दीपकों करके आरतीकरै औ निराहार रहै दूसरे दिन पूजनकर घृतयुक्त तिलोंका हवन कर व्रती औ ब्राह्मणों को भोजन करावै औ यथाशक्ति मिथुन पूजा करै एक बर्ष इसभांतिव्रतकर अंतमेंपूर्वोक्तरीति से पूजनकरश्वेत पीतवस्त्र वितान पताका घंटा धूपदानी दीप वृक्ष औरभी पूजन केउपकरणब्राह्मणोंकोदेवै औ यथा शक्ति ब्राह्मणभोजनकरावै चतुरस्र मंडल में शिवका औ त्रिकोण मंडल में पार्वतीका पूजन कर वस्त्र भूषण भोजन आदिसे ब्राह्मणदंपतीका पूजनकर पचीस दीपकों से धीरे २ नीराजन करै इस विधि से पांचबर्ष अथवा भक्तिसे एकही बर्ष व्रतकरै वह विष्णुलोक औ शिवलोकमें निवासकर मोक्षको प्राप्त होताहै औ जो पुरुष जन्मभर इसव्रतको करै वह तो साक्षात् विष्णु स्वरूपही होजाता है आपदा दुःख शोक ज्वर ग्रह आदि कभी उसकेसमीप नहींआते इतनाविधान कह श्रीकृष्णभगवान् ने कहा कि महाराज इसी भांति आदित्यवार युक्त अष्टमी को भी व्रतहोताहै उस दिनदक्षिणभाग में शिव औ वामभागमें पार्वतीका अर्चनकरै शिवजीपर मोती औ पार्वती

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

जी पर पद्मराग चढ़ावै औ रत्न न मिलै तो सुवर्णहीनिवेदनकरै चंदन औ कुंकुम का लेपन शुक्ल औ रक्तपुष्प औ वस्त्र घृतपक्क नैवेद्य आदिसे पूजन करै बाक़ी सब विधान पूर्वव्रतकी भांतिहै परंतु इसव्रतका पारण गोघृतसे करना चहिये व्रतके अंतमें पूर्व रीतिसे उद्यापन करै इस व्रतका करने हारा सूर्यादिलोकों में उत्तम भोग भोगकर शिवलोकमें प्राप्तहो जन्म मरणसे रहितहोता है इस व्रत को जो करै वह प्रतापी अदीन जनप्रिय नीरोग धनवान् पुत्रवान् औ सुखी होता है ॥

तरेपनवां अध्याय ॥

श्रीकृष्णभगवान् कहते हैं कि हे महाराज देवता औ दैत्योंने जब समुद्र मथनकिया उससमय समुद्र से लक्ष्मी निकली लक्ष्मीको देख सबकी इच्छाभई कि हमहीं इसको लें इस लिये देवता औ दैत्यों का युद्धहोनेलगा लक्ष्मीभी श्रांतहो बिल्ववृक्ष के नीचे बैठगई विष्णु भगवान्ने सबको जीत आपलक्ष्मी को ग्रहण किया बिल्ववृक्ष के नीचे लक्ष्मी बैठी इसलियेबिल्ववृक्ष को श्रीवृक्ष कहतेहैं भाद्रशुक्लनवमीको सूर्योदयकेसमय अनेक प्रकारके पुष्पगंधवस्त्रफल तिलपिष्टमाला आदिसे(श्रीनिवासनमस्तेस्तुश्रीवृक्षशिववल्लभाममाभिलषितंकुरुवासर्वविघ्नहरोभव) इस मंत्र करके बिल्ववृक्ष का पूजन करै पीछे ब्राह्मण भोजन कराय आपभी तैल लवणरहित बिना अग्निके सिद्धकिया भोजन दही पुष्प फल आदि भूमिपर रख भोजन करै इस भांति जोभक्तिसेश्रीवृक्षकापूजनकरै वह अवश्यहोसबसंपत्तिपाताहै ॥

चौवनवां अध्याय ॥

श्रीकृष्ण कहते हैं कि हे महाराज महिषासुर को भगवती

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by eGangotri Foundation

ने मार दिया इसबैर से दैत्योंने देवताओं के साथ बहुत संग्राम किये औ भगवती ने भी धर्म की रक्षा के लिये नाना रूप धार दैत्यों को मारा तब महिषासुर के पुत्र रक्तासुरने साठहज़ारवर्ष पर्यन्त घोर तपकर ब्रह्माजीको प्रसन्नकिया औ उनसे वरपाय दैत्योंको इकट्ठेकर इन्द्र के साथ युद्ध करने अमरावती में गया देवताओंने भी देखा कि दैत्योंकी सेना युद्धके लिये आईहै तब सब एकत्रहो इन्द्रकोआगेकर युद्धके लिये निकले औ युद्ध होने लगा रुधिरकी नदी बहनेलगीं औ देवता दैत्य कट२ करगिरने लगे तब रक्तासुर कोपकरके देवताओं से युद्ध करने लगा औ ऐसायुद्ध किया कि देवता रण को छोड़भगे औ रक्तासुरने अमरावती में अपना राज्यजमाया देवता भी कटच्छत्रापुरीमें गये जहां चामुंडा औ नवदुर्गासहित भगवती निवासकरतीहै महालक्ष्मी नंदा क्षेमकरी शिवदूती महारुण्डा भ्रामरी चंद्रमंगला रेवती औ हरसिद्धि ये नवदुर्गाओं के नामहैं वहांजाय हाथजोड़ सबदेवता इनकी भक्ति से स्तुति करनेलगे (अमरपतिमुकुटचुम्बितचरणाम्बुजसकलभुवनसुखजननी ।जयतिजगदीशवन्दित सकलामलनिःकलादुर्गा १ विकृतनखदशनभूषणरुधिरवसाच्छुरितखड्गकृतहस्ता।जयतिनरमुण्डमण्डितपिशितसुरासवरताच ण्डी२ प्रज्वलितशिखिगणोज्ज्वलविकटजटावद्धचन्द्रमणिशोभा। जयतिदिगम्बरभूषा सिद्धवटेशामहालक्ष्मी ३ करकमलजनित शोभा पद्मासनबद्धपद्मवदनाच । जयतिकमण्डलुहस्तानन्दादेवी नतार्त्तिहरा ४ दिग्वसनाविकृतमुखाफेत्कारोद्दामपूरितदिशौघा। जयतिविकरालदेहा क्षेमकरीरौद्रभावस्था ५ क्षोभितब्रह्माण्डोदरस्वमुखस्वरहुंकृतनिनादा । जयतिमहीमहितासाशिवदूत्याख्याप्रथमशक्तिः ६ मुक्ताट्टहासभैरवदुस्सहरवचकितसकलदिक्चक्रा।जयतिभुजगेंद्रबंधनशोभितकर्णामहारुण्डा७ पटुपटहमुरजम

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

र्दल झल्लरिकारावनर्तितावयवा। जयतिमधुव्रतरूपा दैत्यहरी भ्रामरीदेवी८शान्ताप्रशान्तवदना सिंहरथाध्यानयोगसन्निष्ठा। जयतिचतुर्भुजदेहा चन्द्रकलाचंद्रमंगलादेवी९पक्षपुटचंचुघातःसंचूर्णितबिबुधशत्रुसङ्घाता।जयतिशितशूलहस्ताबहुरूपारवतोरौद्रा१०पर्यटतिशक्तिहस्ता पित्तचननिलयेषुयोगिनीसहिता। जयतिहरसिद्धिनाम्नी हरिसिद्धिर्वन्दितासिद्धैः ११) इसप्रकारनव दुर्गा स्तुतिकर बारम्बारप्रणामकर सबदेवता प्रार्थनाकरतेभये कि हे भगवती इससंकट में आपही हमारी रक्षाकरो और कोई हमको अवलंब नहीं है यह देवताओं का वचन सुन सिंह पर आरूढ़ बीसभुजाओंमेंनानाप्रकारके आयुधधारे नवदुर्गासहित कुमारी स्वरूप भगवतीप्रगटभई औ बड़े पराक्रमी प्रचण्डब्रह्मा जीके वरदान से गर्वित बड़े अधर्मी औ अ ब्रह्मण्य वे दैत्य भी वहांहीं आये उनमें इन्द्रमारी गुरुकेशी प्रलंब नरकरिष्ट पुलोमा शरभशंबर दुन्दुभि इल्वल नमुचि भौम वातापि धेनुक कलिमायावृत बलबंधु कैटभ कालजित् राहु पौंड्र आदि दैत्य मुख्यथेयेसब प्रज्वलित अग्नि के समान तेजस्वी अनेक प्रकार के शस्त्र अस्त्र औ ध्वजा धारणकिये अनेक भांतिके वाहनों पर चढ़े थे उनके आगे पणव भेरी गोमुख शंख डमरु डिंडिम आदि बाजे बजते थे वे सब दैत्य आयकर युद्धके बीच शर शूल परिघ पट्टिश शक्ति तोमर कुंत शतघ्नी गदा मुद्गर आदि नाना प्रकारके आयुधों की वृष्टि भगवती के ऊपर करनेलगे तब भगवती क्रोध से प्रज्वलित हो दैत्यों का संहार करनेलगी औ उनके ध्वज आदि चिह्न बलात्कार से हरकर देवताओं को दिये क्षणमात्र में हीं अनंत दैत्योंका क्षयकिया औ रक्तासुर को कंठ से पकड़ भूमि पर गिराय त्रिशूल से उसका हृदय विदारणकरदिया शेषदैत्य भयसे पलायन करगये इसभांति देवताओं ने जय पाया पी-

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by eGangotri Foundation

छै छत्रपुरमें आय भगवतीका बड़ा उत्सव किया औ तोरण को बड़े २ ध्वजों से अलंकृत किया देवताओंने नवमी के दिन जय पाया औ उत्सवकिया इसलिये और भी जो राजा नवमीकाउपवासकर भगवतीका उत्सवकरैं औ ध्वजचढ़ावैं वे अवश्य ही जय पावैं इतनासुन राजा युधिष्ठिरने पूछा कि हे श्रीकृष्णचंद्र नवमीव्रतका क्या विधानहै उसका आप वर्णनकरैं तव श्रीकृष्णभगवान्कहनेलगे कि हेमहाराज पौषशुक्लनवमी को स्नान कर पूजनके लिये अपने हाथसे पुष्पलावै औ सिंहवाहिनी कुमारी भगवतीका पूजनकरै औ अनेकप्रकारके ध्वज भगवती के आगे स्थापन कर मालती पुष्प धूप दीप नैवेद्य पशुबलि सुरा मांसमालावस्त्रदधिचन्दन औरभीबिनाअग्निसिद्ध अनेकप्रकार के भक्ष्य भोज्य भगवतीकोनिवेदनकर (रुद्रांभगवतींकृष्णांग्रह नक्षत्रमालिनीम्।प्रपन्नोहंशिवांरात्रिंसर्वशत्रुक्षयंकरीम्) यहमंत्र पढ़ै पीछे कुमारी औ भगवतीके भक्त ब्राह्मणों को भोजनकराय क्षमापनकरावै उपवासकरै अथवा भक्तिसे एक भक्तहीकरै इस भांति जो पुरुष नवमीकाउपवासकर ध्वजोंसेभगवतीका पूजन करैं उनको चौर अग्नि जल राजा शत्रुआदिका भय नहींहोता इस नवमी को भगवती का विजय भयाहै इसलिये यह नवमी भगवतीको अतिप्रियहै जो भक्तिसे नवमीको भगवतीकापूजन कर ध्वजारोपणकरैवहसवसुखभोगअंतमेंवीरलोककोजाताहै॥

पचपनवां अध्याय॥

श्रीकृष्णभगवान् कहतेहैं कि हे महाराजआश्विनशुक्लनवमी को स्नानकर देवता औ पितरोंका तर्पणकर गंधपुष्प धूपनैवेद्य मांस मत्स्य सुरा आसव आदिसे भैरवप्रिया चामुंडा का पूजन करहाथजोड़नम्रहो(महिषघ्निमहामायेचामुंडेमुंडमालिनिदेव्य-

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मारोग्यविजयंदेहिदेविनमोस्तुते) पीछे सात पांच अथवा एक कुमारी को भोजनकराय नील कंचुक भूषण वस्त्र दक्षिणा देकर संतुष्टकरै श्रद्धा से भगवती प्रसन्न होती है यह वीरानुशासन है पीछे अभ्युक्षणकर गोबरकाचौकालगाय उसपरआसनबिछाय आसनपर आप बैठे औ संमुख पात्रधरकर जो कुछभोजनसिद्ध होय सब परोस लेवै पीछे एक मुट्ठी तृण औ आठ सूखे पत्र लेकर अग्नि से प्रज्वलित कर भोजन करनेलगे जबतक वह अग्नि प्रज्वलितरहै तावत्कालमें भोजन करै अग्नि शांतहोतेही आचमन कर चामुंडाका हृदय में ध्यान करता हुआ प्रसन्नता-पूर्वक गृह कृत्य करै इसप्रकार प्रतिमास व्रत कर वर्ष समाप्त होनेपर कुमारी पूजनकर उनको वस्त्र भूषण भोजनआदिदेकर क्षमापन करावै औ ब्राह्मणको सुवर्ण औगौदेवै इसविधिसे जो पुरुष नवमीव्रतकरैं उनको शत्रु अग्निराजाचोर भूतप्रेत पिशाच आदिका भय नहीं होता युद्धके बीच शस्त्र नहीं लगते औ सब संकटोंमें चामुंडा उनकी रक्षा करतीहै इस उल्कानवमी व्रतके करनेहारे पुरुष औ स्त्री उल्काकी भांति तेजस्वी होजातेहैं॥

छप्पनवां अध्याय॥

श्रीकृष्णकहते हैं किहे महाराज सत्ययुग के आदि में भृगु ऋषिभये उनकी भार्य्या बड़ी पतिव्रताथी जिसका नामदिव्या था भृगु भी उससे अत्यन्त प्रसन्नरहतेथे एकसमय अपनेअग्नि होत्र आदि अपनी भार्य्याको सौंप आप संजीवनी विद्याके लिये हिमालय के उत्तरभाग में जाय तप करनेलगे औ शिवजी का आराधनकर उनसे संजीवनी विद्यापाय दैत्यराज को सदा विजयी किया चाहते थे इसी अवसर में गरुड़ पर चढ़ विष्णु भगवान् वहां आय दैत्योंका बध करनेलगे औ क्षणमात्रमेंदैत्यों

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by eGangotri Foundation

का संहार किया तब भृगुकी भार्य्या भगवान्का शापदेनेकेलिये उद्यतहुई उसके मुखसे शाप निकलनाहीचाहता था कि विष्णु भगवान्ने चक्रसे उसकाभी शिर भुट्टा सा उड़ा दिया इतने में भृगु मुनिभी संजीवनी विद्या पाय वहां आये तो देखा कि सब दैत्य औ ब्राह्मणी भी मारीगई तब क्रोधकर विष्णु भगवान्को शाप दिया कि तुम दशबार भूमिपर जन्मलो इतनाकहश्रीकृष्ण भगवान् बोले कि हे महाराज भृगुमुनिके शापसे औ जगत् की रक्षाके लिये हमबार २ अवतार लेतेहैं जोमनुष्य भक्तिसेहमारा अर्चन करते हैं वे अवश्यस्वर्गगामीहोते हैं राजायुधिष्ठिरकहते हैं कि हे श्रीकृष्णचन्द्र आप अब दशावतारव्रतका विधानवर्णन कीजिये तब श्रीकृष्ण भगवान् कहनेलगे कि हेमहाराज भाद्रपदकी शुक्लदशमी को नदी आदिमें स्नानऔ तर्पणकरघरआय दो मूठीधान्य चूर्णलेकर घृतमें पकावे इस भांति दश बर्ष तक प्रतिबर्ष करै औ दशोंवर्षों में क्रम से पूरी घेवर कसार गणक सोमलक खंडवेष्टित कसार अर्कपुष्पकर्णवेष्टऔ मंडकयेपक्वान्न उस चूर्णके बनाय भगवान् को नैवेद्य लगावै औरभी बहुतसा पक्वान्नबनाय आधा भगवान् को नैवेद्यलगायचौथाई ब्राह्मण को दे औ चौथाई में से आपभोजनकरै प्रथमगंध पुष्प धूपदीप आदि उपचारों करके (मत्स्यंकूर्मंवराहंच नरसिंहंत्रिविक्रमम्। रामंरामंचरामंचबुद्धंचैवसकल्किनम्। गतोस्मिशरणंदेवंहरिंनारायणंप्रभुम्। प्रणतोस्मिजगन्नाथं समेविष्णुःप्रसीदतु। छिनत्तुवैष्णवींमायांभक्त्याप्रीतोजनार्दनः। श्वेतद्वीपंनयत्वस्मान्मयात्मा विनिवेदितः) इनमंत्रोंसे दशावतार का पूजनकरै इसप्रकार जो इस व्रतको करै वह भगवान् के अनुग्रह से जन्ममरणसे छुटै औ सर्वदा विष्णुलोक में निवास करै॥

—*—

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सत्तावनवां अध्याय ॥

राजायुधिष्ठिर बोले कि हे श्रीकृष्णचन्द्र मैं बड़ापातकी हूं भीष्म द्रोण आदि महात्माओं का मैंने वध किया अब कृपा कर आप ऐसा कोई उपाय बतावैं जिस से इस पाप से छुट जाऊं राजाका यह वचनसुन श्रीकृष्ण भगवान् कहने लगे कि हे महाराज विदर्भ देश में एक बड़ाप्रतापी यशोध्वज नाम राजाथा एक दिन उसने मृगया में मृगके धोखे एक तपस्वी ब्राह्मण को बाणसे मार दिया उस पाप से वह मरने के अनंतर रौरव नरकमें पड़ा वहां बहुत कालतक यातना भोगकर भयंकर सर्प बना सर्पयोनिमें भी उसने क्रोधवश हो एक ब्राह्मणको डसा डसतेही वह ब्राह्मण मरगया औ मरते २ एक लाठी सांपको भी मारी जिससे उसके भी प्राणगये फिर वह सिंह बना औ जीवोंका संहार करनेलगा वह सिंह एक राजा के हाथसे मारा गया फिर वह व्याघ्र हुआ औ एक वैश्य को उसने बनमें मारा फिर वह मार्जार हुआ औ चंडाल बालकों के हाथ मारागया पांचवें जन्म में समुद्रके बीच अति भयंकर मकर बना औएकस्त्री वहांस्नान करनेआईथीउसकोखैंचलेगया औ धोवरों ने उसको मारा छठे जन्ममें पिशाच हुआ औ अनेक मनुष्यों के प्राण हरे तब एकसिद्धने अपनी शक्तिसेउसकासंहार कियासातवें जन्ममें अतिक्रूरब्रह्मराक्षसहुआ औगुर्जरदेशकोशून्य करनेलगा तब भी सदासराजाने ब्रह्मास्त्रसेउसका संहारकिया फिर आठवें जन्ममें व्याघ्र बना औएकबराहनेउसको मारा नवें जन्ममें जम्बुकहुआ औ श्मशानमें मांसकेलियेगयाथा वहांचिता ऊपर गिरनेसे दग्ध होगया दशवें जन्म में गृध्र हुआ उसको भी एक चंडाल ने बाणसे मारा ग्यारहवेंजन्ममें बड़ा क्रूरकर्मा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection.

औ भयंकर स्वरूप चंडाल हुआ औ कई मनुष्य उसने मारेइस-
लिये राजा ने उसकोशूलीपर चढ़ाया बारहवें जन्ममें विलबासी
जोव बना औ एक व्याध के हाथ मरा उसने पूर्वकाल में
तारक द्वादशी का व्रत कियाथा इसलिये इन पापयोनियों से
जल्दी २ छुटता गया फिर वह विदर्भ देशका धर्मात्मा राजाहुआ
औ भक्तिसे तारक द्वादशी का व्रत किया करता उसके प्रभावसे
बहुतकाल निष्कंटकराज्यकर स्वर्गकोगया इतनासुनराजायुधि-
ष्ठिर पूछते भये कि हे श्रीकृष्णचन्द्र इसव्रतको क्योंकर करना
चाहिये औ पतिकी आज्ञापाय नारी इसव्रतको किसविधान से
करै यह आप कहैंतब श्रीकृष्णभगवान् कहने लगे कि हे महा-
राजन् एकसमय द्वारकामें हमारे पास बड़ेतपस्वी मुद्गलमुनि
आये हमने उनको पूजनकर आसन पर बैठाया औ यमादर्शन
नाम व्रतका विधान उनसे पूछा तब मुद्गलमुनि कहने लगे किहे
श्रीकृष्णचन्द्र एकसमययमदूत आये औ उननेदंडसेहमारेमस्त-
कमें ताड़नकिया तब हमको मूर्छा होगई यमदूतभी अंगुष्टमात्र
पुरुष हमारेदेहसे निकाल दृढ़ बांधकर यमलोक को लेगयेवहां
देखाकिअति भयंकर कृष्ण वर्णयमराज तो मध्य में सिंहासनके
ऊपरबैठे हैं औ उनके चारोंओरवात पित्तश्लेष्म श्वास कासज्वर
स्फोटक लूता भगंदर यक्ष्मा कुष्ठ मूत्र कृच्छ्रप्रमेह विशूचिका आदि
बड़े २रोग देहधारे हाथ जोड़े खड़े हैं अनेक प्रकार के शस्त्र अस्त्र
लियेदूत औ हजारों राक्षस बिद्यमान हैं चित्रगुप्त आदि लेखक
संमुख बैठे सबके पाप पुण्य का हिसाब कररहे हैं यह अद्भुत
रचना यमराज की सभा की देख हमको अति त्रास हुआ यम-
राजने हमको देख दूतोंसे कहा कि रे मूर्खो इस मुनिको क्यों
ले आये कौंडिन्यनगर में भीष्मक का पुत्र मुद्गलनामक्षत्रिय है
उसको लाओ औ इसब्राह्मणको छोड़दो तब हमको उनने छोड़

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by eGangotri Foundation 2014

दिया हमने भी यमराज को प्रणामकिया औ यमादर्शन व्रतका विधान उनसे पूछा उनने भी प्रसन्न हो जो हमको कहावहविधान हम आपकोकहते हैं इतना कह मुद्गलमुनिने व्रतविधान हमको कहा वही हम आपके आगे वर्णन करते हैं मार्गशुक्लपक्ष की द्वादशी को नदी आदि में स्नानकर तर्पण पूजन आदि कर हवनकरै सूर्यास्त पर्यंत हवनकरता रहै सूर्यास्त होतेहीगोबर का मंडल भूमिपरबनाय उसमें चन्दनका ध्रुव लिखचांदीअथवा ताम्रके अर्घ्यपात्र में मोती पुष्प फल अक्षत गंध सुवर्णजलरखकर मस्तक तक उस पात्रको उठाय दोनों जानु भूमिपर टेक पूर्वाभिमुख होकर सहस्त्रशीर्षा मंत्रकरके अर्घ देवै पीछे ब्राह्मण भोजन करावै बारह महीनों में क्रमसे खंडखाद्य सोमलक तिल तंडुल गुड़के अपूप मोदक खंडवेष्टक सत्तू अपूप मधुशीर्ष पायस घृतपूर औ कसार ब्राह्मणों को भोजन करावै पीछे क्षमापनकर मौनसे आपभी भोजनकरैइसविधिसे जोपुरुषअथवास्त्री व्रतकरैं वे अप्सरा गंधर्व यक्ष विद्याधरआदि करके सेवित सूर्यकेसमान भासमान विमानमें बैठ नक्षत्रलोकको जातेहैं वहां अयुतकल्प पर्यंत निवास कर विष्णुलोक में प्राप्त होतेहैं यह व्रत सतीश्री उमा,सीता,राज्ञी,दमयंती,रुक्मिणी,सत्यभामा,मेनका,रंभा,उर्वशी आदि नारियों ने किया है इस व्रतके करने से अनेक जन्मों में किये पातक कटजाते हैं॥

अट्ठावनवां अध्याय॥

राजायुधिष्ठिरकहते हैं कि हे श्रीकृष्णचन्द्र अब आप अरण्य द्वादशी का विधान वर्णनकरैं तब श्रीकृष्णभगवान् कथन करने लगे कि हे महाराज यह व्रत रामचन्द्रजी की आज्ञा से बन में सीताने कियाथा औ अनेक प्रकार के भक्ष्य भोज्य आदिसमेत

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation

पत्नियों को संतुष्टकिया उ[illegible] व्रतका हम विधान कहते हैं आप प्रीति से श्रवणकरैं मार्गशुक्ल एकादशी को प्रभातही स्नानकर भगवान् का भक्ति से पूजन करै उपवास रक्खै औ रात्रि को जागरण करै दूसरे दिन स्नानआदि कर वेद वेदांग जाननेहारे ब्राह्मणों को उपवनमें लेजाय भोजनकराय पंचगव्यप्राशनकर आपभी भोजनकरै इसविधिसे एकवर्षव्रतकरै औ माघ, श्रावण, औ कार्त्तिक में मंडक घृतपूर खंडवेष्टक अनेक प्रकार के शाक औ व्यंजन अपूप मोदक सोमलक आदि भांति२केपक्वान्न और नानाविधि शीतलभोजनसे ब्राह्मणोंको तृप्तकरै औकर्पूर, इलायची, चतुर्जात, कस्तूरीआदिसे सुगन्धित पानक उनकोपिलावै सुन्दरफलेफूले वृक्षयुक्तवनमें जलाशयकेतटपर ब्राह्मण भोजन करावै बन में रहनेहारे मुनि उनकी पत्नी औ गृहस्थ और भी ब्राह्मणको भोजनकरावै वासुदेव, जनार्दन, दामोदर, मधुसूदन पद्मनाभ, विष्णु, गोवर्द्धन, त्रिविक्रम, श्रीधर, हृषीकेश, पुण्डरीकाक्ष औ वराह इननमस्कारांत नामोंसे एक२ ब्राह्मणका पूजनकर भोजन कराय वस्त्र औ दक्षिणा देकर (विष्णुर्मेप्रीयताम्) यह वाक्यकहै पीछे अपने सुहृत् सम्बन्धी औ बांधवोंसहितआपभी वहां भोजनकरै इसप्रकार जो अरण्यद्वादशी व्रतकरै वह अपने सब परिवार सहित दिव्य विमानमें बैठ श्वेतद्वीप को जाता है जहांके सब निवासी चतुर्भुज श्यामदेह पीतवस्त्र शंख चक्र गदा पद्म धारे कौस्तुभमणि औ मुकुट कुण्डलआदि भूषणोंसेशोभित औलक्ष्मीकरकेआलिंगित साक्षात् विष्णुस्वरूपहोहैं वहांप्रलय पर्यंत निवास कर मुक्ति पाताहै औ जो नारी इस व्रतको करैं वे भी संसारके सब सुखभोग भगवान् के अनुग्रहसे मोक्षपाती हैं

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

उनसठवां अध्याय॥

राजा युधिष्ठिर पूछते हैं कि हे श्रीकृष्णचंद्र बर्षाकाल में जब आकाश नील मेघोंसे आच्छादित होजाता मयूर चारों ओर मीठी २ बोली बोलने लगते हैं दर्दुर कोलाहल मचाते हैं उस समय कुल स्त्री किसको अर्घ्य देती हैं क्या व्रतकरती हैं औ किस तिथिको करतीहैं यह आप वर्णन करैं यह राजा का प्रश्न सुन श्रीकृष्णभगवान् कहनेलगे कि हे महाराज श्रावण मासके कृष्णपक्ष की एकादशी को शुचि होकर सर्वौषधि जल से स्नान करै पीछे उड़द के आटेकी एकसौ डिडिरिका औ पांच मोदक बनाय सब सामग्री लेकर उत्तम जलाशयपर जावै वहां गोबरका मंडलबनाय उसमें रोहिणी सहित चंद्रका गन्ध पुष्प धूप दीप अक्षत नैवेद्य आदिसे पूजनकर कटिप्रमाण जल में प्रवेशकर मनमेंरोहिणी औ चन्द्रका ध्यानकरताहुआ वे डिडिरिका जलके मत्स्य आदि जीवोंको खिलावै पीछे जलके बाहिर आकर चन्द्रमाको अर्घ्य देकर ब्राह्मणको भोजन कराय दक्षिणा देवै दशवर्ष पर्यंत इस विधि से जो स्त्री अथवा पुरुष व्रत करै वह धन धान्य पुत्र पौत्र आदि सब पदार्थ पाय बहुतकाल संसार सुख भोगकर ब्रह्मलोक को जाता है वहांसे विष्णुपुर में औ वहांसे भी शिवलोकमें प्राप्त होताहै॥

साठवां अध्याय॥

राजायुधिष्ठिर पूछते हैं कि हे श्रीकृष्णचन्द्र अब आप यह वर्णनकरें कि अवियोग व्रत किसविधि से किया जाताहै तब श्रीकृष्णभगवान् कहने लगे कि महाराज अवियोग व्रत सब व्रतोंमें उत्तमहै अब हम उसका विधान कहते हैं आप श्रवण

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by eGangotri Foundation

कीजिये। भाद्रशुक्ल द्वादशी को प्रभातउठ जलाशय पर जाकर स्नानकरै औ उसके तटपर हरेगोबर से मंडल लिखकर उसमें लक्ष्मी सहित विष्णु गौरीसहित शिव सावित्री सहित ब्रह्मा औ संज्ञासहित सूर्यनारायण का सब उपचारों से इन मंत्रों करके पूजनकरै। सहस्रमूर्द्धापुरुषःपद्मनाभोजनार्दन। व्यासर्षिः कपिलाचार्यो भगवान्पुरुषोत्तमः १ नारायणोमधुरिपु विष्णु र्दामोदरोहरिः। महावराहोगोविंदःकेशवोगरुडध्वजः २ कृष्णः सपुंडरीकाक्षो विश्वरूपस्त्रिविक्रमः। उपेंद्रोवामनोरामोबैकुंठो माधवोध्रुवः३ वासुदेवोहृषीकेशःकृष्णःसंकर्षणोच्युतः। अनिरुद्धो महायोगी प्रद्युम्नोनंतएवच४ नित्यंसमेस्तुसुप्रीतःसश्रीकःके शि सूदनः ५) उमापतिर्नीलकंठःस्थाणुःशंभुर्भगाक्षिहृत्। ईशानोभैर वःशूलीस्त्र्यंबकस्त्रिपुरांतकृत् १ कपर्दीशोमहालिंगी महाकालो वृषध्वजः। शिवःशंभुर्महादेवोरुद्रोभूतमहेश्वरः २ ममास्त्विहहि पार्वत्याशंकरःशंकरश्चिरम् ३) ब्रह्माशंभुःप्रभुःस्रष्टा पुष्करी प्र-पितामहः हिरण्यगर्भोवेदज्ञः परमेष्टीप्रजापतिः१ वेधाश्चतुर्मुखः कर्तास्वयंभूकमलासनः। बिरंचिःपद्मयोनिश्चममास्तु वरदः प्रभुः २) आदित्योभास्करोभानुः सूर्योर्कःसवितःरविः। मार्तंडो मण्डलीज्योतिरग्निरश्मिर्महेश्वरः १ प्रभाकरः सप्तसप्तिः पार-गस्तरणिःखगः। दिवाकरोदिनकरःसहस्रांशुर्मरीचिमान्२ पद्म प्रबोधनःपूषाकिरणीमेरुभूषणः। निक्षुभावलभोदेवःसुप्रीतोस्तु सदामम ३) लक्ष्मीःश्रीःसम्पदापद्मामेविभूतिर्हरिप्रिया। पार्वती ललितागौरी उमाशंकरबल्लभा।गायत्रीबिकृतिःसृष्टिःसावित्री मेवरप्रदा।राज्ञीभानुमतीसंज्ञानिक्षुभाभास्करप्रिया) इन मंत्रों से चारों मिथुनों का पूजनकर ब्राह्मण भोजन कराय अनेक प्रकार के दानकर आप भी भोजन करै जो इस व्रतको करैउस को कभी इष्टवियोग नहीं होता औ बहुतकाल संसारसुखभोग

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कर क्रमसे ब्रह्मा विष्णु शिव औ सूर्यलोक में निवासकर मोक्ष पाता है औ जो नारीइसव्रतको करै वहभी सबअभीष्टफलपावै

इकसठवां अध्याय॥

राजायुधिष्ठिरकहते हैं किहेश्रीकृष्णचन्द्रअठारहअक्षौहिणी सेना मेरेनिमित्त मारी गई उस पापसेमेरे चित्तमें बड़ीग्लानि रहती है उनके बीच ब्राह्मण क्षत्रिय आदि सबथे भीष्म द्रोण कर्ण शल्य दुर्योधन आदि सब मारदिये उनकेवधका पाप दिन रात मेरेमर्मोंको छेदन करताहै अब आप कोई ऐसा उपाय कहैं कि इसपापका क्षालन होय तब श्रीकृष्ण भगवान्नेकहा किहे महाराज आप गोवत्सद्वादशीकाव्रतकरैंउससेसब पातक कट जातेहैं। राजाने पूछा कि उसव्रतका क्याबिधान है औकब कियाजाताहै तब श्रीकृष्णभगवान् फिर कहनेलगे किपारियात्र पर्वतपर लडुलिकाश्रमके बीच जिसकानाम ठंढागिरि है वहां एक बड़ा बनहै जिसमेंअनेकमुनियोंकेआश्रमहैं चारोंओर सिंह हाथी,हरिण,बानर,शश,वराह आदिजीवबिहार करतेहैं औवृक्षों करके वहबन अतिहीरमणीयहैवहां सत्ययुग में बहुतसेमुनिलडु-लिकाश्रमके बीचतप करनेलगे बहुतकाल उनको तपकरतेहुआ तब शिवजी वृद्ध ब्राह्मणका रूपधार लाठी हाथमें लिये कांपते हुये वहां आये औ पार्वती जीनेभी जैसा रूप बनाया वहसुनो समुद्र मथनके समय पांचगौउत्पन्न भईहैं नंदा,सुभद्रा,सुरभी, सुशीला,औ नंदिनी, ये पांचों शुक्लवर्णहैं औ देवताओंकीतृप्ति तथा लोकोपकारके लिये उत्पन्न भईहैं इन पांचों धेनुओंकोजम-दग्नि भरद्वाज वशिष्ठ गौतम औ शिवजीने ग्रहणकिया गोमय गोमूत्रगोरोचनदुग्ध दही औ घृत ये छः पवित्र पदार्थ गौओंके शरीर से उत्पन्न होते हैं गोबर से बिल्व वृक्षउत्पन्न भयाजोशिव

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by eGangotri Foundation

जो को अति प्रियहै पद्महस्तालक्ष्मी विल्व वृक्षमें निवासकरती है इससे उसको श्रीवृक्ष कहते हैं उत्पल औ कमलों के वीजभी गोवरसेहीउत्पन्नभयेहैं गोरोचनमंगल्य पवित्र औ सर्वकार्यसाधक होताहै गोमूत्र से अति सुगन्ध गुग्गुल उत्पन्नहुआ जिसका धूप सब देवताओं को औ विशेषकरके शिवजीको प्रियहै दुग्धसे अनेक उत्तम पदार्थों की उत्पत्ति है दही मंगलप्रदहै औ घृत से सबदेवताओं को तृप्त करनेहारा अमृत उत्पन्नहुआ एक कुलकेही ब्राह्मणरूप औ गोरूपदो भाग होगयेहैं ब्राह्मणों मेंमंत्ररहते हैं औ गौओंमें हविगौओंसेयज्ञ प्रवृत्तहोतेहैं सब देवतागौओंमें निवास करते हैंषडंगसहित वेद गौओंसे उत्पन्नभये हैं गौओं के शृंग मूलमेंब्रह्मा औ बिष्णु स्थितहैं शृंगाग्र में स्थावर जंगमसब तीर्थोंका निवासहै शिरमें महादेव ललाटमें पार्वती नासावंस में कार्तिकेय नासिका के दोनों पुटोंमें कंवल अश्वतर नागकानों में अश्विनीकुमार नेत्रोंमें सूर्य चन्द्र दन्तोंमें सबवायु जिह्वामेंबरुण हुंकारमें सरस्वती दोनों पार्श्वमें यम औ कुवेर दोनों सन्ध्यागलकंवल में ग्रीवामें इन्द्र आठवसु पार्ष्णिमें जंघाओंमें चतुष्पादधर्म खुरोंके मध्यमें गन्धर्व खुराग्रों में नाग खुरोंके पृष्टभाग में सम्पूर्ण राक्षस पुच्छ में आदित्य गोमूत्रमें साक्षात्गंगा गोबरमें यमुना रोम कूपों में तेतीसकोटि देवताउदरमें पर्वतसमुद्र आदि सहित भूमिचारोंस्तनो में चारसागर दुग्धधारामें विद्युतसहित मेघ श्वेत रक्त पीत कृष्ण गौओं के इन चार वर्णों में ऋग् वेद यजुर्वेद सामवेद औ अथर्ववेद स्थित हैं इस भांति सर्व देवमयी औ सर्व तीर्थमयी धेनुहैं। यह मन में विचार पार्वती जीनेनंदिनी धेनु का रूपधारा जिस के सब अंग अति सुन्दर शुक्लवर्ण औ चारोंस्तनों से दुग्धटपकरहा है कार्तिकेय बछड़ा बने महादेवजी भी वृद्ध ब्राह्मण का रूपधारे उन दोनों गौ औ बछड़ा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by eGangotri

को लेकर जहां मुनि तप करते थे वहां पहुंचे औ कुलपति भृगु मुनि के पास जाय कहा कि दो दिन आप इस हमारी गौ को अपने पास रहने देवैं इतने में हम समीपवर्ती तीर्थ की यात्रा करआवैं भृगुजी ने कहा बहुतअच्छा औ वह धेनु मुनियों के हवाले करदी महादेवजी ने वहां से अन्तर्द्धान होकर सिंह का रूपधारण किया कि जिस के वक्र कठोर औ अति तीक्ष्ण नख जलते हुये पिंगलवर्ण नेत्र बड़ी २ औ तीखी दाढ़ लंबी पूंछ औ लटकती हुई लालजिह्वा इस प्रकार अतिकराल रूपधार आश्रम के समीप आय गर्जने लगे वह घोर शब्द सुन गौ औ बछड़ा त्रास को प्राप्त भये सब मुनियों में हाहाकार मचगया गौ बछड़ा भय सेभगे औ सिंह भी पीछेलगा उन सबकेचरणों के चिह्न आज तक भी शिला के ऊपर देख पड़तेहैं जिनको सब देवता पूजते हैं औ तीर्थसहित शिवलिंग भी वहां है जिस लिंग के स्पर्श से गोहत्यानिवृत्त होती है औ जंबू मार्ग में स्थित उस शिवतीर्थ में स्नान करने से ब्रह्महत्या आदि महा पातक कटजाते हैं वे मुनि भी यह वृत्तांत देख प्राणत्याग करने को उद्यतभये तब देखा कि नतो कहीं सिंह है औ न बछड़े समेतगौ है सब मुनि यह आश्चर्यदेख बिचार ही कररहे थे किपार्वती सहित वृषपर आरूढ़त्रिशूल हाथ में लिये कार्तिकेय, गणपति, नंदी, महाकाल, भृङ्गी, वीरभद्र, घंटाकर्ण, चामुंडा, मातृका, भूतयक्ष राक्षस गुह्यक देव, दानवगंधर्व आदि सहित श्रीमहादेवजीवहां प्रकटभये मुनि उनका दर्शन पाय कृतार्थभये औ भक्ति से उनका पूजन किया औ गोरूपिणी श्रीपार्वतीका सपत्नीक मुनियोंने प्रीतिसे अर्चनकिया उसी दिन से कार्तिककृष्णपक्ष में गोवत्सद्वादशी व्रतका प्रचार हुआ है उत्तानपाद इसव्रत को सदा किया करताथा उसका हम वृत्तांत कहतेहैं उत्तानपाद एक राज

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by eGangotri Foundation

था उसके रुची औ श्रुधनी नाम दो रानी थीं श्रुधनीके ध्रुव नामक पुत्र उत्पन्न भया कुछदिनके अनंतर श्रुधनीने रुचीसे कहा कि हे सखि तू इसबालकका पालन कर औ मैं पतिकी शुश्रूषा में रहूंगी रुचीने यहबात अंगीकार करली औ श्रुधनी पति की सेवा में तत्पर भई एकदिन ईर्षासे रुची ने उसबालक को मार खंड २ कर रांधलिया औ भोजन के समय राजा के आगे वही मांस परोसा राजाभोजन कियाही चाहता था कि वह बालक जीकर उठ खड़ाहुआ तब सबको आश्चर्य भया कि यह क्या माया है रुची ने श्रुधनी से पूछा कि यह तेरे किस पुण्य का प्रभाव है कि सात बार इस बालक को ईर्षा से मैं बधकर चुकी परन्तु यह फिर जी उठता है क्या तू मृतसंजीविनी बिद्या जानती है कि कोई मणिमंत्र ओषधी आदि तेरे पास है जिस से यह बालक नहीं मरनेपाता मुझ को सत्य बता दे तब श्रुधनी ने कहा कि हे रुचि मैंने गोवत्स द्वादशी व्रत किया है उसी का यह सब प्रभाव है इस व्रतके करने से कभी पुत्र से वियोग नहीं होता तूभी इस व्रत को करै तो बड़े प्रतापी औ दीर्घजीवी पुत्रपावै यह सपत्नीका वचन सुन रुची भी व्रतकरने लगी औ पुत्र धन सुख आरोग्य आदि सबपाये औ अन्तमेंपति सहितध्रुवस्थान में प्राप्त भई ब्रह्माजीनेभी उनका बहुत्तसत्कार किया अद्यापि ध्रुव उत्तानपाद औ रुचिका आकाशमें दर्शनहोता है जो उनके दर्शन करै वह सब पापों से मुक्त होय इतनी कथा सुन राजा युधिष्ठिर ने गोवत्स द्वादशी व्रत का विधान पूछातब श्रीकृष्णचन्द्र कहने लगे कि हे महाराज कार्त्तिककृष्ण द्वादशी को स्त्री अथवा पुरुष संकल्पकर नदी में स्नानकरै औ एकभक्त व्रत रखकर मध्याह्न के समय सुशीला औ सवत्सा कपिला गौ का गंध पुष्प जल अक्षत दीप अनेकप्रकार के नैवेद्य उड़द के

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

बड़े और भी जो पदार्थ गौ को प्रिय हों उनसे गौ औ बछड़ेका (ओंमातारुद्राणांदुहितावसूनांस्वसादित्यानामृतस्यनाभिःप्रणवोचंचिकितुषेजनायमागामदितिंवधिष्टयानमोगोभ्योनमःस्वाहा) इसमंत्र करके पूजन करै पीछे हाथजोड़(ओंसर्वदेवमयेदेवि सुभद्रेभद्रवत्सले । मातर्ममाभिलषितं सफलंकुरुनन्दिनि) यहमन्त्र पढ़ क्षमापन कराय गौ को तृप्तिपूर्वकभोजनकरावै औ आपभी तबै औ स्थालीमें सिद्धहुआ भोजन न खाय औ ब्रह्मचर्यसेभूमि पर शयनकरै इसव्रतका करनेहारा गौ के शरीरमें जितनेरोमहैं उतने दिव्यवर्ष गोलोकमें निवास करताहै। मेरु पृष्टकेऊपरअष्ट दिक्पालोंकी पुरी हैं औ इन सबके ऊपर गोलोक है जो कार्त्तिक कृष्ण द्वादशी को गंध पुष्प वटक आदि से सवत्सा गौकाभक्ति से पूजन करते हैं वे कभी संतान का कष्ट नहींपाते औ संसार का सबसुख भोग गोलोक को जाते हैं॥

बासटवां अध्याय॥

श्रीकृष्णचन्द्र कहते हैं कि हे महाराज अब हम गोबिन्द शयन व्रतका बिधान औ चातुर्मास्य के नियम कहते हैं मिथुनके सूर्यमेंविष्णुभगवान्को शयनकरावै औतुलाके सूर्यमेंफिर उठावै आषाढ़ शुक्लपक्ष की एकादशी को उपवासकर शंख चक्र गदा पद्मधारे पीतांबर पहिने ऐसीअति सुलक्षण भगवान्की प्रतिमा को पलंग के ऊपर शय्या बिछाय तकिये लगाय उसपर सुलावै प्रथम मृत्तिका पूजनकर इतिहास औ पुराण जाननेहाराप्रतिमा को पंचामृत औ शुद्धजलसे स्नान कराय उत्तम गंधसे लेपनकर भूषणवस्त्र पहिनाय पुष्प धूप औ अनेकप्रकार के नैवेद्य निवेदन कर (सुप्तेत्वयिजगन्नाथ जगत्सुप्तं भवेदद्भुतम्। विबुद्धेत्वयिबुद्ध्येजगत्सर्वंचराचरम्) इस मन्त्र से प्रतिमा को शयन करावै

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection.

प्रतिमा शयनसे उत्थापन पर्यंत चार महीने स्त्री अथवा पुरुष भक्तिसे नियम ग्रहणकरै उन नियमोंको फल सहित हमकथन करते हैं गुड़को त्यागै तो मधुरस्वर होय तैलाभ्यंगनकरै तो सुन्दर शरीरहोय कटु तैल छोड़ै तो शत्रु नाशहोय महुआ का तेल त्यागदे तो अतुल सौभाग्यपावैपुष्प आदि उपभोगत्यागने से स्वर्गमें जाय विद्याधर बनै जो योगाभ्यास करै वह ब्रह्म-पदपावै कटु तिक्त मधुर क्षार आदि रसका त्यागकरै वहकभी वैरूप्य औ दौर्गंध्य को प्राप्त न होय तांबूल त्यागने से भोगी औ मधुरस्वर होय घृत के त्यागसे स्निग्ध औ लावण्ययुक्तश-रीरहोय फल त्यागसे पुत्र औ बुद्धिकी प्राप्तिहोय शाक नखाय तोभोगी होय अपक्व भोजनकरै तो अमल होय पादाभ्यंग औ शिरोभ्यंग त्यागै तो धन का स्वामी यक्षहोय दही दूध छोड़ै तो गो लोक में प्राप्त होय स्थालीपाक त्यागने से स्वर्ग्ग को जाय कड़ाही तवेका पदार्थ त्यागे तो बहुत सन्तति होय भूमिपर सोवै तो चतुरहोय मधु मांस त्यागै तो सदामुनि औ सदा योगी होय सुराका त्यागकरने से आरोग्य प्राप्त होय इत्यादि और भी वस्तुओंके परित्यागसे धर्महोता है एकान्तर उपवास करने से ब्रह्मलोक की प्राप्ति होतीहै नख औ केशों के धारणकरनेसे नित्य गंगास्नानका फल प्राप्त होताहै जो मौन रक्खै उसकी आज्ञा कभी भंग न होय भूमिपर रखकर भोजन करै तो भूमिपति होय (ओं नमोनारायणाय) इसमंत्रको जपै तो अनशन व्रत का फल पावै विष्णुभगवान् के चरणों में प्र-णामकरै तो गोदान का फलहोय चरणों के स्पर्शकरनेसे कृत-कृत्य होजाय जो नित्य विष्णुभगवान् के संमुख लोगों को पु-राण सुनावै औ धर्मोपदेश करै वह साक्षात् वेदव्यासहीहै औ अन्तमें विष्णुलोक को जाय पुष्प मालासे भगवान् का पूजन

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

करै तो विष्णुलोक में प्राप्त होय विष्णुभगवान्के आगेप्रेक्षणक अर्थात् नाच तमाशा करावै तो अप्सरालोक में निवास करै तीर्थमें स्नानकरै तो निर्मल देह पावै पंचगव्य प्राशन करने से चांद्रायण का फल होय एकभक्त करनेसे अग्निहोत्रका फल मिलै नित्य गंगास्नानकरै तो नरक न देखै पात्रका त्यागकरै तो पुष्कर स्नानका फलहोय पत्रोंमें जो भोजनकरै तो कुरुक्षेत्र का फल पावै शिलापर भोजन करै तो प्रयागस्नान का फल होय इत्यादि व्रतोंसे भगवान् प्रसन्न होते हैं चारोंवर्णों में बिवाह यज्ञोपवीत चूड़ाकरणआदि शुभक्रिया विष्णुशयनमेंनकरै और भी ग्रहप्रवेश देवप्रतिष्ठा आदि न करै इसीप्रकार दक्षिणायन में औ मलमास में भी शुभकृत्य न करै भाद्रशुक्ल एकादशी को भगवान् करवट लेते हैं उसदिन भी महापूजा औ बड़ा उत्सव करै अब हम इस शयन का कारण कहते हैं पूर्व काल में योगनिद्राने बड़ा तपकर हमको प्रसन्नकिया औ यह वर मांगा कि आपकेशरीरमें मेरानिवासहोय तब हमने बिचार किया कि हमारे वक्षस्स्थल में लक्ष्मी का निवास है चारों भुजाओं में शंख चक्र आदि रहते हैं नाभिकेनीचे गरुड़ने रोक रक्खाहै शिरपर मुकुट औ कानोंमें कुण्डल रहते हैं केवल नेत्र खालीहैं यह विचार हमने योगनिद्रा को कहा कि चारमहीने हमारे नेत्रों में निवासकियाकर उसदिनसे चार महीने हमारे लोचनोंमें प्रसन्न होकर योग निद्रा निवास करतो है औ हम शेषशय्या पर सोतेहैं चातुर्मास्य में जो पुरुष अथवा स्त्रीव्रतऔ नियमसे रहै वह अवश्यही विष्णुलोक में निवास करै फिर कार्तिकशुक्ल एकादशी को (इदंविष्णुर्विचक्रमे) इस मंत्र करके विष्णुभगवान् को शयन से उठावै उस दिन से सब शुभ कृत्यों की प्रवृति होतोहै शयनसे भगवान् को उठाय पहिलो

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

भांति महापूजन कर रथपर बैठाय नगर में घुमावै औ दीप मालाआदि बड़ा उत्सव करै जहां २ भगवान् का रथजाय वह भूमि स्वर्ग समान होजातीहै रात्रिको देवालय में जागरण करै द्वादशी के दिन प्रभातही स्नानकर भगवान्का अर्चनकरै औ घृतयुक्त तिलोंका हवन कर घृत क्षीर दही मोदकआदिपदार्थ ब्राह्मणोंको भोजनकरावै ग्यारह आठ पांच दो अथवाएक ही ब्राह्मण का गंध पुष्प आदिसे पूजन कर श्राद्धोक्त विधि से नित्य भोजन करावै और भी ब्राह्मणोंको भोजनदक्षिणादेकर संतुष्ट करै औ चातुर्मास्यमें जिस वस्तुका त्याग कियाहोय वह भी ब्राह्मणको देवै पीछे आपभी भोजनकरै इस विधिसे जोव्रत करै वह विष्णुलोकमें प्राप्त होताहै जिसकायह चातुर्मास्यव्रत निर्विघ्न पूराहोजाय वह कृतकृत्य होजाता है औ अंतमेंविष्णुलोक को जाताहै जो भगवान्का यह उत्सव करै औ इसका अनुमोदनकरै वह विष्णुलोकमें प्राप्तहोय जो सुनै ध्यान करै स्तुति करै हवन करै परंतु हृदय में भगवान्की भक्तिहोय वह अवश्यही विष्णुलोक में निवास करै जिसदिन भगवान् सोवैं औ जिसदिन उठैं उसदिन जो उपवास औ भगवान्का अर्चन करै वह सद्गति पावै इसमें कुछ संदेह नहीं ॥

तरेसठवां अध्याय ॥

श्रीकृष्णचन्द्र कहतेहैं कि हे महाराज पूर्वकालमें प्रजापाल नाम एक राजाथा उसने अपनी प्रजाके सब उपद्रवशांतहोनेके लिये शांतिकरी जिससे उसकी प्रजा अत्यंत सुखको प्राप्त भई इसीसे राजाका नाम प्रजापाल पड़ा औ ज्वरआदि सब बड़े२ रोग राजाके आधीन रहतेथे उसीसमयबड़ा प्रतापीरावणनाम लंकाका राजाथा सबदेवता जिसकी आज्ञा मानतेथे अखंडचन्द्र

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मंडल छत्ररूप बनताथाइन्द्र जिसका सेनापतिथावायुझाड़ूदेता वरुण जल छिड़कता कुवेर धनकी रक्षाकरता यम शत्रुओं का संहार करता मनु मंत्रके समय सेवामें आता मेघ लेपन करते औ वृक्ष पुष्पवृष्टि करते ब्रह्मा सहित सप्तऋषि शांति आदिमें तत्पर रहते नाग पहरादेते गंधर्व गातेओ अप्सरानाचतींगंगा आदि नदी स्नान करातीं अग्नि रसोई बनाता विश्वकर्माअन्न का संस्कार करता मयासुरसब शिल्पके काम बनाता सबराजा नगरकी रक्षा करते सूर्यभगवान् प्रकाश करते एकदिन रावण ने पूछा कि हमारी सेवामें जो नहीं आया हो उसको शीघ्रलाओ तब एक राक्षस हाथ जोड़कर बोला कि महाराजाधिराज काकुत्स्थ मांधाता धुंधुमार नल अर्जुन ययातिनहुष भीमविदूरथ आदि सब राजा आपकी सेवामें स्थित हैं केवलएक प्रजापालनाम राजा यहांनहीं आता यह सुनतेही रावण ने अति कोप किया औ दूतसे कहा कि जल्दी जाकर प्रजापालसेकहो किशीघ्रहमारीसेवामेंआवे नहीं तो चन्द्रहासनामकखड्गसेउस का मुंड रुण्डसे अलग करदेंगे यह आज्ञापातेही धूम्राक्षनाम दूत राजा प्रजापालके पासगया राजाको देखा कि दिनरात प्रजाकी रक्षामें तत्परहै दूतने रावणकासंदेश सुनाया राजानेसुनकर दूतको तो विसर्जन किया औ ज्वरको बुलाकरकहा कितुम रावणके पासजाओ यहआज्ञापातेही लंकामें रावणकेपासज्वर पहुंचा औ रावणके शरीरको आक्रांतकिया रावण अतिव्याकुल भया औजानाकि यहसब काम प्रजापालका है तबज्वरसेकहा कि प्रजापाल अपनेस्थानमेंही रहैहमको उसकी सेवासेकुछप्रयोजननहीं इतना कहतेही ज्वरने उसको छोड़दिया उसप्रजापालने सब रोग औ उपद्रव शांतकरनेहारी शांतिबनाई है उसका हमविधानकहतेहैंहरिप्रबोधहकेअनंतर कार्तिकशुक्लद्वादशी

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

को प्रदोषके समय अरणी से अग्नि उत्पन्नकर वर्धमान वृक्षकी समिधाओं से प्रज्वलित कर शांतिमंत्रोंसे हवन करै औ विष्णु भगवान् की प्रतिमाबनाय गंध पुष्प धूपदीप नैवेद्य वस्त्रभूषण रत्न लाजा इक्षुआदि से पूजनकर लक्ष्मी ब्रह्माचंडिका आदित्य शंकर गौरी कार्त्तिकेय गणपति ग्रह पितर नागआदि देवताओं का पूजन कर सबका नीराजनअर्थात् आरतीकरै गौ भैंसआदि कोभी भूषितकर उनका नीराजनकरै पीछे घंटादि वाद्योंकेशब्द से उनको त्रासदेवै जिससे वे दौ ड़ैंउनके पीछे२ बछड़े औउनके पीछेरक्तपीतश्वेतवस्त्र पहिनेगोपाल दौड़तेफिरैं इसभांति कोलाहल कर घोड़े हाथी आदिका पूजन औ नीराजनकरै फिरराजा सिंहासन पर बैठे औ पुरोहित मन्त्री भृत्य आदि चारों ओरबैठैं औ राज्य के चिह्न छत्र चामर आदि का पूजन औ नीराजन करके राजाके ऊपर धारै पीछे सर्व शुभलक्षणयुक्त वेश्याअथवा और कोई सौभाग्यवती स्त्री राजाका नीराजन करै ब्राह्मणवेदघोष करैं अनेक प्रकार के बाजे बजैं पीछे चतुरंगिणी सेना का नीराजन करै यहशांति जिस देशमें करीजाय वहां रोग औ दुर्भिक्षका भय नहीं होता प्रजाका आयुषबढ़ताहै यह शांति प्रजाके कल्याणकेअर्थ प्रतिवर्ष करनी चहिये जोराजा भगवान्काानीराजन कर गौ ब्राह्मण हाथी घोड़े सेना औ राजचिह्नों का नीराजन करैं वे संसार में सुखभोग उत्तमलोक पाते हैं यह राजा प्रजा पाल का वाक्य है॥

चौसठवां अध्याय॥

श्रीकृष्णचन्द्र कहते हैं कि हे महाराजअब हम भीष्मपंचक का विधान कहतेहैं भीष्मपंचक का व्रतबशिष्ठभृगु गर्गआदिमुनि ब्रह्मचर्य जप होम आदि में तत्पर ब्राह्मण सत्यशौच में परायण

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

क्षत्रियशीरभद्र आदि स्वधर्मनिष्ठवैश्य औ अनेक उत्तम शूद्रभी करतेहैं जिसने यह व्रत किया उसने सब उत्तम कर्म किये इस भीष्मपंचक में मद्य मांस मैथुन असत्य भाषण शिकार खेलना आदिका त्यागकरै पांचदिन विष्णुभगवान् का पूजनकरशाकाहारकरै भर्ताकी आज्ञासेसुख प्राप्तिके लिये स्त्री इस व्रतकोकरैं विधवानारी पुत्र पौत्रों की वृद्धिके लिये अथवा मोक्षके अर्थ इस व्रतको करै नित्यस्नान दानवैश्वदेव औ विष्णुभगवान्कापूजन करै कार्त्तिकशुक्लएकादशी से व्रतकरकेपूर्णमासीको अतिभयंकर जिसकामुख खड्ग हाथमेंलिये विकृतस्वरूप ऐसी पापपुरुषकी लोहकी मूर्त्ति बनाय काले तिलोंके ढेरपर स्थापन कर सुवर्णके कुण्डल औ कृष्णवस्त्रउसको पहिनाय करवीर पुष्पआदिसेधर्मराजकेनामोंकरके भक्तिपूर्वक उसकापूजनकर हाथोंमेंपुष्पांजलि लेकर (यदन्यजन्मनिकृतमिहजन्मनिवापुनः। पापप्रशममायातु तत्पापंतवपूजनात्) यहमंत्रपढ़पुष्पांजलि देकर ब्राह्मण को वह प्रतिमादेवै औ(कृष्णोमेप्रीयताम्)यहवाक्यकहै पीछे नीलोत्पल के समान श्याम वर्ण चतुर्भुज चतुर्दंष्ट्र अष्टपाद त्रिनेत्र शंक कर्ण व्याघ्रचर्म ओढ़े जटाधारे सर्पों के भूषण पहिने ऐसेरुद्र का ध्यानकरै शरशय्या पर सोयेहुए भीष्मने यह व्रत कहाहैजो इस व्रत को करै वह ब्रह्महत्या गो हत्या आदि बड़े २ पापों से छुट जाताहै औ सद्गति पाताहै॥

पैंसठवां अध्याय॥

राजायुधिष्ठिर पूछतेहैं कि हे श्रीकृष्णचन्द्र मल्लद्वादशीका क्या बिधान है आप उसका बर्णन करैं यह सुन श्रीकृष्णचन्द्र कहने लगे कि हेमहाराज हमारी अवस्था जब आठ वर्षकी थी उस समय यमुना के तटपरभांडीर बटकेनीचे हमको सिंहासन

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पर बैठाय सुभद्र भद्र सुभद्रांग इंद्रभट आदि बड़े २ मल्लगोप
औ गोपाली पालिकाधन्या धनिष्ठाराधाअनुराधा सोमातारका
आदि गोपी इन सबने दही दुग्ध सुरामांस आदिसे कंसकेबध
के अर्थ हमारा पूजन किया औ तीनसौ मल्लोंने भक्ति से पूजन
कर मल्लयुद्ध किया औ हमारी प्रसन्नता के लिये बड़ा उत्सव
किया परस्पर बड़ेप्रेमसे मिले उसदिनसे यहमल्लद्वादशीप्रसिद्ध
हुई इसव्रतको कार्तिकशुक्ल द्वादशीसे आरम्भकरै औ प्रतिमास
क्रमसे केशव,नारायण,माधव,गोविंद,विष्णु,मधुसूदन,त्रिविक्र-
म,वामन,श्रीधर,हृषीकेश,पद्मनाभ,दामोदर,इननामोंसे गंधपु-
ष्प धूप दीप गीत बाद्य मल्लयुद्ध घृत दुग्ध दान आदिसे हमारा
पूजनकरै औ (कृष्णोमेप्रीयताम्) यह वाक्य कहै यह विधि
इसव्रतकी है बाल्यावस्थामें यहउत्सव हमने किया हैइसलिये
यह द्वादशी हमको बहुतप्रिय है मल्लोंने इसव्रतको प्रवृत्ति करी
इसलिये इसका नाम मल्लद्वादशीहै औ अरण्यमेंकरी इसलिये
अरण्यद्वादशी कहाई जिन गोपोंने हमारा पूजन किया उनके
भैंस गौ आदिकी बहुत वृद्धि भई और भी जो पुरुष इस व्रत
को करैं वे आरोग्य बल ऐश्वर्य औ सद्गति पावैं॥

छियासठवां अध्याय॥

श्रीकृष्ण कहते हैं कि हे महाराज पूर्वकाल में विदर्भ देश
का स्वामी दमयन्ती का पिता बड़ा पराक्रमी औ प्रजापालक
राजा भीम भया है एक दिन तीर्थयात्रा करते हुये ब्रह्माजी के
पुत्र पुलस्त्यमुनि वहां आये राजाने उनका बड़ा सत्कारकिया
अपने हाथसे आसन बिछाय बैठाया पाद्य अर्घ्य आदि से उन
का पूजन किया पुलस्त्यमुनि ने भी प्रसन्न हो राजा से कुशल
पूछा तब राजाने अतिविनय से कहा कि महाराज जहां आप

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

का आगमन होय वहां सबप्रकारका कुशलहीहोताहै इसभांति अनेकप्रकार की स्नेह की बातें राजा औ मुनि परस्पर करते रहे कुछकालके अनन्तर राजा ने पूछा कि महाराज संसार के जीव दिन रात अनेक प्रकार के दुःखों से पीड़ित रहते हैं गर्भ बास बड़ादुःखहै पीछे अनेकप्रकारके रोग सताते हैं यह दशा जीवोंकी देख मुझे अत्यंत त्रास होताहै ऐसा कौन उपाय है जिससे थोड़ा परिश्रम करके ही जीव संसार के दुःखों से छूटैं ऐसा उपवास दान आदि जो कर्म होय उसका आप वर्णन करैं यह राजा का वचन सुन पुलस्त्यमुनि कहनेलगे कि हे राजन् माघशुक्ल द्वादशी का उपवास करै तो मनुष्य कभी दुःख भागी न होय राजाने व्रत का विधान पूछा तब पुलस्त्य मुनि बोले कि हे राजन् यह व्रत अतिगुप्तहै तुम्हारे स्नेह से हम कहतेहैं अदीक्षितको यहव्रत कभी मत कहना जितेन्द्रिय धर्म निष्ठ औ बिष्णुभक्त पुरुष इसव्रतके अधिकारीहैं ब्रह्महा गुरुघाती गोघ्न स्त्रीघातक कृतघ्न मित्र द्रोही आदि बड़े२पातकीभी इसव्रत के करनेसे निष्पाप होजातेहैं पहिले अच्छे मुहूर्त्तमें दशहाथ लंबा चौड़ा मंडपबनाय उसकेमध्यमें पांचहाथ विस्तारकी वेदीबनावै वेदीके ऊपर पांच रंगका मंडलबनावै औआठ अथवा चारकुण्ड बनावै मंडलके मध्य में कर्णिका के बीच पश्चिमाभि मुख भगवान्की मूर्ति स्थापनकर गंध पुष्प धूप दीप भांति२के नैवेद्योंसे शास्त्रोक्त बिधिकरके वेदवेत्ता ब्राह्मणोंसे पूजनकरावै औ नारायण के संमुख दोस्तंभ गाड़कर उनकेऊपर एक आड़ाकाष्ठरख उसमें एक दृढ़ छांका बांधै उस पर सुवर्ण चांदी ताम्र अथवा मृत्तिका का शतच्छिद्र कलश उत्तमजलसे पूर्णकर रक्खैपलाश की समिधा तिल घृत क्षीर औ शमीपत्रोंसे हवनकरैऔ ईशान कोण में ग्रहोंका पीठस्थापनकर ग्रहपूजाकरै औ अपनी२दिशा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

में इन्द्र यम वरुणओकुवेर का पूजनकरैं पीछे शुक्लवस्त्रशुक्लचंदन से भूषित दर्भपाणि यजमानको पीठके ऊपर पूर्वोक्तकलश के नीचे ब्राह्मण बैठावैं यजमानभी एकाग्रचित्त होकर (नमस्ते देवदेवेश नमस्ते भुवनेश्वर । व्रतेनानेनमांत्राहि परमात्मन्नमोस्तुते) यह मंत्रपढ़ै औ कलशसे गिरती जलधारा को मस्तक पर धारै उससमय चारों दिशाओं में ब्राह्मण हवन करैं शांति का ध्याय विष्णु सूक्त पुण्याहवाचन आदिपढ़ै अनेक प्रकार के बाजे बजैं इस भांति बड़ा उत्सव करावै हरिवंश सौवर्णिकउपाख्यान औ महाभारत आदिका यजमान श्रवणकरै इस भांति संपूर्ण रात्रि व्यतीत करै औ ब्राह्मण हवनकरतेरहैं इतना कह श्रीकृष्णभगवान् बोले कि हे महाराज विष्णुभगवान् वामन रूप धार बलिके पास गये औ कहा कि हे दैत्येन्द्र तीन पद भूमि आप हमको देवैं तो हम रहने को कुटी बनालेवैं बलिने कहा कि तुमको जहां चाहिये तीनि पद भूमिग्रहणकरो तब वामन वृद्धिको प्राप्त भये दोनों पैर भूमि पर रख इन्द्रादिकों के लोक नाभि से आवृत्तकर ब्रह्मलोक में शिर लगाया एक पाद क्रममें इतना दबाया औ दूसरा चरण उसपररक्खा औ तीसरे पादन्यास को स्थाननहीं मिला तब देवदुन्दुभि बजानेलगे सबदेवता औ सिद्ध प्रशंसा करनेलगे इसभांतित्रिभुवनको वशमें कर बलिको भगवान्ने कहा कि तुम पातालमें निवास करो औयथेच्छभोग भोगो औ बर्त्तमानइन्द्रके अनन्तर तुम इन्द्र बनोगे वलिभी भगवान्की आज्ञापाय प्रणाम कर पातालको गया भगवान्ने दिक्पालों को कहा कि अपने २ स्थानको जाओ इस भांति जगत्कार्य्य करके भगवान् अन्तर्द्धान भये यहसब कृत्य भगवान्ने एकादशी को किया था इसलिये यह तिथि भगवान्को अति प्रिय है फाल्गुण शुक्लमें

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पुष्प युक्त एकादशी होय तो विजया एकादशी कहाती है उस दिन उपवासकर रात्रिके समय सुवर्णके काष्ठ के अथवा बाँस के पात्रमें कमण्डलु छत्र खडाऊं मालाआदि स्थापनकर श्वेत वस्त्रसे ढकै पीछे गन्ध पुष्प धूपदीप अनेकप्रकारके नैवेद्य तिल जौ गोधूम आदिसे भगवान्का पूजनकर मृगचर्म्म औ सुवर्ण सहित वह पात्र भगवान् को निवेदन करै मंत्रसे पूजा करै तो शतगुण भक्तिसे करै तो लक्षगुण औ मंत्र सहित भक्तिसे पूजन करै तो कोटिगुण फलहोताहै रात्रिको जागरणकर बड़ाउत्सव करै प्रभात होतेही स्नानकर भगवान्का पूजनकर सब सामग्री ब्राह्मणकोदेकर(वामनोदानकर्त्ताचद्रव्यस्थोवामनस्वयम् वामनोस्यप्रतिग्राहीतेनवैबामनेनमः) यह मंत्रपढ़ै ब्राह्मण भी दानलेकर(वामनःप्रतिगृह्णातिवामनोनोददातिच। वामनस्तारकोनित्यंतेनवैवामनेनमः) यहमंत्रपढ़ै(मत्स्यंकूर्मंवराहंचनरसिंहंतुवामनम्।रामंरामंचकृष्णंचतेनवैवामनेनमः) इसमंत्रसेपूजन करैओंमत्स्यायनमः जानुनोः। वराहायनमःगुह्ये।नरसिंहायनमःनाभ्याम्। वामनायनमः उरसि। रामायनमः भुजयोःरामायनमःमुखे। कृष्णायनमः शिरसि। इसप्रकारन्यासकरै इस प्रकार एकादशीको उपवास औ पूजनकर द्वादशी को ब्राह्मण भोजनकराय आपभी भोजनकरै इसव्रत को करने हारा एक मन्वन्तर पर्यंत विष्णुलोक में निवास करताहै फिर भूमि पर जन्मलेकर धन धान्य हाथी घोड़े पुत्र पौत्र रूप सौभाग्यआरोग्य दीर्घायुष् आदिपाकर चक्रवर्त्ती राजाहोताहै यह एकादशी का विधान है इसी प्रकार श्रवण युक्त द्वादशीको भीव्रत पूजनआदि करै तो सब फल पावै उसदिन ब्राह्मणों को दही भात भोजन करावै यह वामन द्वादशीका व्रत सगरकाकुत्स्थ धुंधुमार गाधि आदि बड़े २ राजा औ बशिष्टआदि मुनियों ने

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कियाहै इस व्रतके करनेसे अणिमादि सिद्धि औ सद्गतिप्राप्त होतीहै ॥

सतसठवां अध्याय ॥

श्रीकृष्णचन्द्रकहतेहैं किहे महाराजअबहमपौषकृष्णद्वादशी व्रतका विधानकहतेहैं जिसके करनेसे सब मनोरथसिद्धहोते हैं उस दिन उपवास कर विष्णुभगवान्का पूजनकरै औ पाखंडोंके साथ संभाषण आदि न करैप्रतिमास भगवान्का पूजनकरैपौष से लेकरज्येष्ठपर्यंतक्रमसे पुंडरीकाक्षमाधव विश्वरूप पुरुषोत्तम अच्युत औ जयका पूजन करै इसछः महीने के प्रथम पारण में तिलोंसेस्नान औ तिलप्राशनकरै आषाढ़आदि छ महीनोंमेंभी इनहीं नामों से भगवान् का पूजन करै परन्तुपंचगव्यका प्राशन औ स्नानकरै एकादशी को उपवास कर द्वादशी को इस विधान से पूजन कर ब्राह्मणभोजन करावै इस भांति एक वर्ष व्रतकर सवत्सा गौ सुवर्ण वस्त्रपात्रआसन आदि बस्तु ब्राह्मण को देवै औ (केशवःप्रीयताम्)यहवाक्य कहै। भक्ति से जो इस संप्राप्ति द्वादशी का व्रतकरै वह पापोंसे मुक्त होय सब कामना पावै इस माहात्म्य को जो श्रवण करै उसके भी सब मनोरथ सिद्ध होते हैं जो विष्णुभक्त इस प्राप्तिद्वादशी व्रत को श्रद्धा सेकरैं वे संसारसुख भोग अन्त में स्वर्ग में बास करते हैं ॥

अड़सठवां अध्याय ॥

श्रीकृष्णचन्द्र कहते हैं कि हे महाराज अबहम गोविंद द्वादशी का विधान कहते हैं जिसके करनेसे अभीष्ट फलमिलता है पौष शुक्लद्वादशी को उपवास कर पुष्प धूप दीप नैवेद्यआदि से गोविन्द का पूजन कर इसी नाम का उच्चारण करतार है

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पाखंडोंसे संभाषण न करै फिर ब्राह्मणोंको यथाशक्ति दक्षिणा देकर आपभी गोमूत्र गोमय दधि अथवा गोदुग्ध प्राशन करै दूसरे दिन स्नान कर उसी विधिसे गोविंद का पूजन कर ब्राह्मणभोजन कराय आप भी गोदुग्ध आदि भोजन करै औ गौ को तृप्ति पूर्वक भोजन करावै इसी प्रकार प्रतिमास व्रत करै वर्ष समाप्त होने पर सुवर्ण की गोबिन्दप्रतिमा बनाय पुष्प धूप दीप माला वस्त्र भूषण नैवेद्य आदि से पूजन कर(गोबिंदोगोपतिर्गोप्ताश्रीकांतःश्रीधरोहरिःसर्वकामफलावाप्तिंकरोतुममकेशवः)यहमंत्र पढ़ सवत्सागौ सहित ब्राह्मणोंको देवै औ (गोविंदः प्रीयताम्)यह वाक्य कहै उसदिन भी गौओं को भोजन देवै सुवर्ण शृंग रौप्य खुर उत्तम वृष प्रतिमास ब्राह्मण को देनेसे जो फल प्राप्त होता है वही इस व्रतके करने से भी होता है औ इस गोविंद द्वादशी व्रत का करनेहारा सब सुख भोग गोलोक को जाता है ॥

उनहत्तरवां अध्याय ॥

राजा युधिष्ठिर पूछते हैं कि हे श्रीकृष्ण उपवास आदि में जो कुछ वैकल्प अर्थात् किसी बात की न्यूनता रह जाय तो क्या फल होता है यह आप कथनकरैं यह सुन श्रीकृष्णचंद्र कहने लगे कि हे महाराज उपवास आदिके प्रभाव से राज्य उत्तम रूप आदि पाकर वैकल्प दोष से काणे अंधे कुबड़े हो जाते हैं वैकल्प दोष सेही स्त्री पुरुषों में वियोग होता है उत्तम कुल में जन्म पाकर भी दुःशील होते हैं धनाढ्य होकर भी धन का भोग और दान नहीं करसक्ते उत्तमरूप युक्तहोकर वस्त्र भूषणों से हीन रहते हैं इसलिये यज्ञ में व्रत में और भी धर्म कृत्योंमें बिकलता न होनेदेवै राजायुधिष्ठिर पूछतेहैं कि हे श्री

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कृष्णचन्द्र जो कदाचित् उपवास आदिमें वैकल्य होभीजाय तो कौन कर्मकरना चाहिये जिससे वहअच्छिद्रहोय तब श्रीकृष्णचन्द्र बोले कि हे महाराज अखंड द्वादशी का व्रतकरने से सब प्रकार का वैकल्पदोष दूरहोताहै उसका आप विधान सुनैं मार्गशीर्ष शुक्ल द्वादशी को स्नानकर भगवान् का भक्तिसे पूजन करै उपवास रक्खै औ नारायण का स्मरण करता रहै पूजाके अन्तमें (सप्तजन्मनियत्किंचिन्मयाखंडंव्रतंकृतम् । भगवंस्त्वत्प्रसादेनतदखंडमिहास्तुमे। यथाऽखंडं जगत्सर्वंत्वयैवपुरुषोत्तम। तथाखिलान्यखंडानिव्रतमानिममसंतुवै) यहमंत्रपढ़ैऔ चारमहीनेमें प्रथम पारणकर ब्राह्मणों को तिलपात्र देवै औ भगवान्का पूजनकरै चैत्रादि चारमासके अनंतर दूसरापारण करै औ शर्करापात्र ब्राह्मणोंकोदेवै श्रावणादि चारमासके अनंतर तीसरा पारणकर नारायण का पूजनकरै औ घृत पूर्ण पात्र ब्राह्मणोंको देवै सुवर्ण चांदी ताम्र मृत्तिका अथवा पलाशपत्रके पात्र अपनेवित्तानुसार बनाकरदेवै पीछेजितेंद्रिय बारहब्राह्मणों को क्षीर भोजनकराय वस्त्र भूषण औ दक्षिणा देकर क्षमापन करावे औ आचार्य्य का भी विधिपूर्वक पूजनकरै इसविधिसे जो अखंडद्वादशीका व्रतकरै उसके सातजन्म तक किये हुये व्रत संपूर्ण फलदायक होजाते हैं इसलिये स्त्री पुरुषोंको व्रतों का वैकल्पदोष निवृत्त करनेके लिये अवश्य यहव्रतकरनाचाहिये॥

सत्तरवां अध्याय॥

श्रीकृष्णचन्द्र कहते हैं कि हे महाराज स्त्री अथवा पुरुष फाल्गुणशुक्ल एकादशी को उपवासकर भगवान्का पूजन करै औ उठते बैठते हरिका स्मरण करतारहै द्वादशीके दिनप्रभात ही स्नान कर भगवान्का अर्चनकरै औ घृतसे हवनकर ब्रा-

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ह्मणको दक्षिणादेकर (पातालसंस्थावसुधायमासाद्यमनोरथम् अवापबासुदेवोसौप्रददातुमनोरथान्। भ्रष्टराज्यश्चदेवेंद्रोयमभ्यर्च्यजगत्पतिम्। मनोरथमवाप्तोमेसददातुमनोरथान्) यह मंत्रपढ़ैपीछे मौनसे हविष्य भोजन करै चारमासमें प्रथम पारण करै रक्तपुष्प तुलसी गुग्गुल धूप औ हविष्यान्न नैवेद्यसे भगवान् का अर्चनकर गोशृंगजल प्राशनकरै फिर आषाढ़आदि चारमासके अनंतरचमेली केपुष्पराल धूप औशाल्यन्नकानैवेद्य इनसे भगवान् कायजनकर कुशोदक प्राशनकरै कार्तिकादिचार मासके अनंतर तीसरा पारण करै जपापुष्प उत्तमधूप औ कषाय रसयुक्तनैवेद्यसेनारायणकापूजनकर गोमूत्रप्राशनकरैप्रतिमास ब्राह्मणोंको दक्षिणादेवै वित्तशाठ्य नकरै वर्षकेअन्तमें एककर्षसुवर्ण कीनारायण प्रतिमाबनायपूजनकर दोवस्त्रऔदक्षिणासहित ब्राह्मण को देवै औ बारहब्राह्मणों को भोजन कराय प्रत्येक को जल का घट छतरी जूता वस्त्र औ दक्षिणा देवै इस द्वादशी व्रत केकरने से सब मनोरथसिद्ध होते हैं इसीसे इसका नाममनोरथ द्वादशी है इंद्रने त्रैलोक्य का राज्य इसी व्रत से पाया है औरभी कोई जिस अभिलाष से इस व्रतको करै वह उसको अवश्य पावै पुत्र धन आरोग्य आदि सब पदार्थ इस व्रत से मिलते हैं कभी इष्ट वियोग नहीं होता स्त्री औ शूद्रभी इसव्रतको कर स्वर्ग्गको जाते हैं औ लाषोंवर्ष वहांउत्तम भोग भोगकर अच्छेकुलमेंजन्म पातेहैं जो पुरुषभगवान्का पूजननहींकरते गो ब्राह्मणकीसेवा नहींकरते औ मनोरथ द्वादशीका व्रत नहींकरते वे किसप्रकार अपना अभीष्ठ फल पासक्ते हैं॥

इकहत्तरवां अध्याय॥

राजा युधिष्ठिर कहतेहैं कि हे श्रीकृष्णचन्द्र थोड़ेसेपरिश्रम

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

से अथवा स्वल्प दान से सब पाप कटजांय ऐसा कोई उपाय आपकहैं यहसुन श्रीकृष्णभगवान् कहने लगे कि हे महाराज माघकृष्ण द्वादशी को जब मूल अथवा पूर्वाषाढ़ नक्षत्रहोय तब एकादशी के दिन उपवासकर द्वादशीको श्रीकृष्णभगवान् का पूजनकरै ब्राह्मण को कृष्णतिल देवै औ आपभी स्नान प्राशन आदि कृष्णतिलोंसेकरै औ (कृष्णोमेप्रीयताम्) यह वाक्य कहै इसप्रकार एक वर्ष व्रत कर अन्तमें तिलोंसेपूर्ण कृष्णवर्णके कुंभ पक्वान्न छत्र जूता वस्त्र औ दक्षिणा बारह ब्राह्मणोंको देवै जितने उनतिलोंके बोनेसे तिल उत्पन्नहोंय उतने हज़ार वर्ष इस व्रत का करनेहारा स्वर्गमें निवास करताहै औ किसी जन्म में अंध बधिर कुष्टी आदि नहींहोता सदा आरोग्य रहताहै इसतिल-दानसे बड़े २ पाप कटजाते हैं न इसव्रत में बहुत परिश्रम औ न बहुत धनका व्यय इसलिये अवश्य यह व्रत करना चाहिये तिलों से स्नान करै तिल दान करै औ तिलही भोजन करै तो अवश्यही सद्गति पावै॥

बहत्तरवां अध्याय॥

राजायुधिष्ठिर पूछते हैं कि हे श्रीकृष्णचन्द्र ऐसा कौनकर्महै कि जिसके करनेसे संतापहोय औ ऐसा कौनहै जिसको करके सन्ताप न होय यह आप वर्णनकरैं आपके बचनसुनते२ हमको तृप्ति नहींहोती यहसुन श्रीकृष्णचन्द्र कहनेलगे कि हेमहाराज आपने जो पूछा उसका हम वर्णन करतेहैं पूर्वकालमें विदिशा नगरी के बीच शीरभद्र नाम एक वैश्यथा वह पुत्र पौत्र कन्या स्त्री आदिमें ऐसा आसक्तथा कि दिनरात उनके भरण पोषण में लगा रहता कभी स्वप्नमें भी परलोक की चिन्तानहींकरता न्यायसे अन्यायसे सबप्रकार धनका उपार्जन करता कभी दान

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हवन देवपूजन आदि कर्मका नामभी नहींलेता कुछकालकेअ-
नन्तर वह वैश्य मृत्युवशभया औ वेत्रवतीनदीके तटपरबड़ाप्रेत
बना एकदिन ग्रीष्मऋतु में बिपीत नामक वेदवेत्ता ब्राह्मण ने
उसप्रेत को देखा कि सूर्य किरणोंसे अत्यन्त संतप्त नदीके बालू
में लोटता है सबअंगमें छाले पड़गये हैं तृषासे कंठ सूखता है
औ जिह्वा लटकपड़ी है औ अति दुःखी हो चिल्लारहा है यह
उसकी दशा देख ब्राह्मणको बड़ीदया आई औ उसका वृत्तान्त
पूछा तब वह प्रेत कहनेलागा कि हे ब्राह्मणपूर्वजन्ममें परलो-
क के लिये कोई कर्म नहींकिया उससे अब दग्ध हो रहाहूं धन
घर खेत पुत्र स्त्री आदिकीचिन्तामें सदा आसक्तरहाकभीअपने
हितका चिन्तन न किया इससे यह कष्ट भोगरहाहूं यह काम
किया औ यह करनाहै इसी चिन्तामें सब जन्म खोया उसका
फल भोगता हूं लोभवश होकर शीत उष्ण सब सहे परंतु धर्म
के लिये किंचित् भी कष्ट न सहा उससे अब जलाजाताहूंदेवता
पितर औअतिथि का कभीमैंने पूजनआदि न किया उसीसेअब
मुझे अन्न जल नहींमिलता अन्यायसे मैंने बहुतधनएकत्रकिया
उसका उपभोग अब औरही करते होंगे यह शोच २ मुझे कल
नहीं पड़ती घरमें आये ब्राह्मण का कभी मैंने पूजन न किया
न देवार्चन कभी बनपड़ा केवल कुटुंब का पोषण किया उस से
अब एकाकी दग्धहोताहूं जिनके लिये मैंने अनेक पाप किये वे
सब तो इससमय सुखभोगते हैं औ मैं एकाकी इस गरमरेत में
पड़ा जलताहूं पापका संचय मैंने किया औ चैनऔरोंने उड़ाया
यह विचार २ दिनरात मनहींमनमें जलाजाताहूं औ बाहिर से
सूर्यकिरणोंकरके दग्ध होरहाहूं परन्तु न तो भीतर शोक दग्ध
करताहै न बाहर सूर्य यह केवल मेरा पाप ही दो भागहोकर
भीतर बाहरसे मुझे जलाताहै हेमुनीश्वर ऐसा भी कोई उपाय है

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

किजिससे इस दुर्गति से मेरा उद्धार होय इसभांति शीरभद्रके अति दीनवचन सुन विपीतमुनि बोले कि हे शीरभद्र दशजन्म पहिले तैंने द्वादशी का उपवास किया है उसके प्रभाव से यह बड़ाभारी तेरे पापका पहाड़ क्षय होगया है अब तू स्वल्पकाल मेंहीं उत्तम गति को प्राप्त होगा वह द्वादशी व्रत पाप का क्षय औ पुण्य का जय करने हारा है इसी से उस का नाम सुकृत-द्वादशी है इस भांति शीरभद्रको आश्वासन कर विपीतमुनि अपने आश्रम को गये औ शीरभद्र भी द्वादशीव्रत के प्रभाव से थोड़े काल के अनंतर मोक्षको प्राप्त भया इतनाकह श्रीकृष्णभगवान् बोले कि हे महाराज यह उपवासका प्रभाव है किइतना पाप थोड़े ही काल में क्षय हुआ इसलिये सदा मनुष्य को पुण्य के लिये यत्न करना चाहिये औ अपने कल्याण के अर्थ उपवास आदि करते रहना चाहिये राजा युधिष्ठिर ने पूछा कि हे श्रीकृष्णचन्द्र पापों से अति दारुण नरक यातना भोगनी पड़ती है ऐसा कौन व्रत है जिससे सब पाप निवृत होयँ औ मोक्षप्राप्त होय उसका आप वर्णन करैं तब श्रीकृष्णचन्द्र कहनेलगे कि हेमहाराज फाल्गुन शुक्लएकादशी को उपवास करै औ काम क्रोध लोभ दंभ मोह आदि का त्यागकर संसार की असारताका भावन करताहुआ(ओं नमोनारायणाय)इस मन्त्र का दिनभर स्मरण करतारहै इसीभांति द्वादशी को भी करै प्रथम चारमास के पारणमें सुवर्ण चांदी ताम्र अथवा मृत्तिकाके पात्रोंमें यवभर करब्राह्मणोंको देवै आषाढ़ादि दूसरे पारण में घृतपात्र देवैऔर कार्त्तिकादि चारमास के पारण में तिलपात्र ब्राह्मणों के अर्पण करै औ(नारायणनमस्तेस्तु जहिपापमशेषतः। अनेकजन्मजनितंबाल्ययौवनवार्द्धके १ पुण्यानिवैविवर्द्धन्तुपापंयातुचसंक्षयम्। आकाशादिषुशब्दादौमहदादिषुपार्थिवे। प्रकृतौपुरुषेचैवब्रह्मण्य

CC-0. Gurukul Kangri University, Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पिचयःप्रभुः। यथासर्वत्रधर्मात्मावासुदेवोव्यवस्थितःतेनसत्येन मेपापं नरकार्त्तिप्रदंसदा। प्रयातुक्षीणतांपुण्यंवृद्धिमभ्येत्वनुत्तम म्) ये मन्त्र पढ़ै पीछे मौन से भोजनकरै वर्ष पूरा होनेपर सुवर्ण की विष्णु मूर्ति बनाय पूजनकर वस्त्र सुवर्ण सवत्सा धेनु औ दक्षिणा सहित ब्राह्मणको देवै औ यथाशक्ति ब्राह्मणभोजन करावै इस विधिसे जो पुरुष अथवा स्त्री इस सुकृतद्वादशी का व्रत करै वह कभी नरकनहीं देखता जो नारायण का भक्त होय उसको कभी नरकबाधा नहींहोती विष्णुका नाम उच्चारण करतेही सबपाप नष्ट होजाते हैं फिर नरक का क्या भयहै वासुदेव नारायण आदि नामों को जो उच्चारण करता रहै वह कभी यम का मुख नहीं देखता पाखंडी पुरुषों को कभी इस व्रत का उपदेश न करै ॥

तिहत्तरवां अध्याय॥

राजा युधिष्ठिर पूछते हैं कि हे श्रीकृष्णचंद्र यह सब वेदोंमें प्रसिद्ध है कि विधि पूर्वक यज्ञ करनेसे बड़े २ दान देनेसे औ बड़े परिश्रमसे परमेश्वर की प्राप्ति होती है परंतु कलियुग के मनुष्य न तो दान दे सकैं न यज्ञ उनसे होसक्ता फिर उनका मोक्ष किस प्रकार होय यह आप वर्णन करैं जिससे चारों वर्ण अल्प आयास करके मुक्तिभागी होंय यह राजा का वचन सुन श्रीकृष्णभगवान् कहनेलगे कि हे महाराज हम परमरहस्य आप को कहते हैं प्रीति से श्रवण कीजिये जब प्रलय के समय भूमिजलमें डूब कर रसातल को चलीगई उस समय अपने उद्धार के लिये भूमिने व्रत किया उस व्रत से भगवान् प्रसन्न भये औ भूमि को उस संकट से उद्धार कर अपने स्थानमें स्थापन किया जो व्रत भूमि ने किया उसका हम विधान कहते हैं

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मार्गशुक्ल दशमीको शौचआदिकर अष्टांगुलप्रमाण क्षीरवृक्ष के काष्ठका दंतधावनकरै स्नानकर भगवान्का पूजन औ अग्निहोत्र करै पीछे हविष्य अन्न का भोजन करे एकादशी के दिन स्नानकर शंख चक्र गदा पद्म धारे पीतवस्त्र पहिने प्रसन्न मुख श्रीनारायण का ध्यानकर सूर्यनारायणको अर्घ्य देवै औ यहमंत्र पढ़ै (एकादश्यांनिराहारःस्थित्वाचाहंपरेऽहनि । भोक्ष्यामिपुंडरीकाक्ष शरणंमेभवाच्युत) पीछे भगवान् का पूजनकर उपवास रक्खे औ रात्रिको (ओंनमोनारायण) यह मंत्र जपता हुआ भगवान् के आगे शयन करै प्रभात उठ नदी के तट पर जाय (धारणंपोषणंत्वत्तोभूतानांदेविसर्वदातेनसत्येनमांभद्रे पापान्मोचयसुव्रतम्) इस मंत्र से मृत्तिकाग्रहणकरै(ब्रह्मांडोदरतीर्थानिकरैस्स्पृष्टानितेरवेभवंतिपूतानिसदामृत्तिकांकिरणैः स्पृश)इसमंत्रसे मृत्तिकाकोसूर्यदर्शनकरावै(त्वयिसर्वेरसानित्यंस्थितावरुणसर्वदा । तेनेमांमृत्तिकांह्लाव्यमांपूतंकुरुमाचिरम्) इस मंत्रसे मृत्तिकामें जल डालै उस मृत्तिका को शरीर में लगाय स्नानकर संध्या तर्पण आदि करै पीछे देव गृह में आय(केशवायनमः पादयोः । दामोदरायनमःकट्याम् । नृसिंहायनमःऊर्वोः । श्रीवत्सधारिणेनमः उरसि । कौस्तुभधारिणेनमः कंठे ।श्रीपतयेनमः वक्षसि । त्रैलोक्यविजयायनमःमुखे । सर्वात्मनेनमः शिरसि । रथांगधारिणेनमः चक्रे । शंखपाणयेनमःशंखे । गंभीरायनमःगदायां । शांतमूर्त्तयेनमः पद्मे । इन मंत्रोंसे भगवान्के इन २ अंगों विषे पूजनकरै फिरचार कलश जलपूर्णस्थापनकरै उनके बीच चंदन सुवर्ण रत्न आदि डाल तिलपात्रों से उन को अच्छादनकरै वे चारोंकलश चार समुद्र हैं उनके मध्य में वस्त्र युक्त एक पीठ स्थापन करै उसपर सुवर्णचांदी ताम्रअथवाकाष्ठ का जल पूर्ण पात्र रख उसमें मत्स्य रूपी भगवान् की सुवर्ण

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

की प्रतिमा स्थापनकरै पीछे गन्ध पुष्प धूप दीप अनेक प्रकार के नैवेद्य औ फलों से भगवान् का पूजनकर (रसातलगतावेदा यथादेवत्वयाहृताः। मत्स्यरूपेणतद्वन्मांभवादुद्धरकेशव)यहमंत्र पढ़ै औ रात्रिके समय जागरणकर बड़ा उत्सवकरै प्रभात उठ स्नानकर भगवान्का पूजनकरै औ वे चारोंघटचारवेद जानने वाले ब्राह्मणोंको एक २ देकर मत्स्यावतारकी मूर्त्तिसहित वह पात्रभी कुटुंबी ब्राह्मणको देवै पीछे यथाशक्ति ब्राह्मण भोजन कराय आपभी अपने परिवार सहित मौनसे भोजन करै इस विधिसे जो द्वादशी व्रत करै उस का पुण्य फल ब्रह्मा के तुल्य आयुष् होय तोभी नहीं वर्णन करसक्के इस व्रतका करनेहारा अवश्यही ब्रह्मलोकको जाताहै औ जन्म २ में किये ब्रह्म हत्यादि पाप इससे कटजाते हैं यह मत्स्यद्वादशी का बिधान है इसीभांति पौष शुक्ल द्वादशी को कूर्म भगवान् का पूजन करै स्नानआदिपूर्ववत्करके॥(कूर्मायनमःपादयो। नारायणायनमः कट्याम्। संकर्षणायनमः उदरे। विशोकायनमः उरसि।मत्स्य रूपायनमः भुजयोः। हरयेनमः कण्ठे। सर्वात्मनेनमः शिरसि) इन मन्त्रों से इन अंगों का पूजन कर गन्ध पुष्प आदि उपचारोंसे विधिपूर्वक भगवान् का अर्चन कर एक कलश स्थापन करै औ ताम्रपात्रमें जल भरकर उसमें सुवर्णकी कूर्म भगवान्की प्रतिमा स्थापन कर घृत पूर्ण कलश के ऊपर उस पात्र को रक्खै औ भक्तिसे पूजनकर रात्रि को जागरण औ गीत नृत्य आदि उत्सव कर दूसरे दिन वह मूर्त्ति सहित पात्रब्राह्मणको देवै औ ब्राह्मणों को खीर खण्ड औ घृत भोजन कराय आपभी भोजन करै इस विधिसे व्रत करने हारा संसार चक्र से मुक्त हो विष्णुलोक को जाता है अनेक जन्मों के किये पाप तत्क्षण नाशको प्राप्तहोते हैं औ पूर्वोक्तसबफल इस व्रतकेकरने

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

से प्राप्त होता है इसी भांति माघशुक्ल में बाराह द्वादशी का व्रत करै इसव्रत मेंभी स्नान पूजनकलश स्थापन आदिपहिलीभांति कर अमृततोद्भवायनमः।दिव्याग्रायनमः। गदिनेनमः प्रद्युम्नाय नमः इन मंत्रों से क्रम करके शंख चक्र गदा औ पद्म का पूजन कर कुम्भ के ऊपर सुवर्ण अथवा ताम्र का पात्र सबजीवोंसेपूर्ण कर स्थापनकरै उसके बीच सुवर्ण की वराहभगवान्कीप्रतिमा स्थापन करै कि जिनके दंष्ट्राग्र पर सप्तद्वीपवती पृथिवीस्थितहै फिर गंध पुष्प धूप दीप नैवेद्य औ दो श्वेत वस्त्रों से भगवान् का पूजन करै रात्रि को जागरण करै औ प्रभात उठ स्नान आदि कर कलश सहित वराह नारायण की मूर्त्ति वैष्णव ब्राह्मणके अर्पण करै केवल इसी व्रत को करै तो सौभाग्य लक्ष्मी कीर्ति पुष्टि औ सद्गति पाता है जो वर्ष भर करै उसके फल औ पुण्य का तो क्या अंत है इसीप्रकार फाल्गुन शुक्ल द्वादशी को व्रत कर(नरसिंहायनमःपादयोः। गोंविदायनमःउदरे।विश्वजितेनमःकट्याम् । अनिरुद्धायनमःउरसि। शितिकंठाय नमःकंठे। वैनतेयायनमःशिरसि । असुरध्वंसनायनमः चक्रे। तोयात्मनेनमःशंखे। बैकुंठायनमःगदायाम्। सर्वात्मनेनमःपद्मे) इनमंत्रों से इन अंगोंका पूजन कर सब उपचारोंसे नृसिंहभगवान्का पूजनकरै पीछे कलश स्थापन कर उस पर मूर्त्ति स्थापन करै औ भक्ति से पूजन कर वेदवेत्ता ब्राह्मण को देवै इस व्रत के करने से सब पाप दूर होते हैं औ उत्तम फलकी प्राप्ति होती है इसीप्रकार चैत्रशुक्ल द्वादशी को स्नान आदि कर (वामनायनमःपादयोः।विष्णवेनमःकट्याम् ।वासुदेवायनमःउदरे।श्रीवत्सधारिणेनमःउरसि। विश्वभृतेनमःकंठे । यमरूपिणेनमः शिरसि।विश्वजितेनमः भुजयोः। शंखायनमः शंखे। चक्रायनमः चक्रे)इनमंत्रोंसे इनका पूजनकर वामनभगवान् का स्थापनकरै

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

उन के समीप कमंडलु छतुरी खड़ाऊं औ दंडभी रक्खै पीछे सब उपचारों से पूजनकर ब्राह्मण को देवै औ (ह्रस्वरूपी विष्णुः प्रीयताम्)यह वाक्य कहै इस व्रत के करने से अपुत्र को पुत्रनिर्द्धन को धन औ भ्रष्टराज्य को राज्य प्राप्त होता है इस व्रतका करनेहारा बहुत काल विष्णुलोक में निवासकर भूमि पर आय चक्रवर्ती राजा बनता है वैशाख शुक्लद्वादशी को भी पूर्ववत् स्नान आदि कर(जामदग्न्यायनमः पादयोः।सर्वधारिणे नमःउदरेक्षत्रान्तकायनमःभुजे। मणिकंठायनमःकंठे। सुरूपायनमःमुखेब्रह्मांडधारिणेनमःशिरसि । शंखायनमःशंखेचक्रायनमः चक्रे) इन मंत्रों से पूजन कर कलश स्थापन कर उस पर नये बांस के पात्र में सुवर्ण की परशुराम प्रतिमा स्थापन करै जिसके दक्षिण हस्त में कुठार धारण करावै फिर उसकाविधि पूर्वक पूजन कर ब्राह्मण को देवै इस व्रतका करनेहारा एक कल्प ब्रह्मलोक में निवास कर चक्रवर्ती राजा बनता है ज्येष्ट शुक्लद्वादशी को पूर्ववत् स्नान आदि कर(दामोदरायनमःपादयोः। त्रिविक्रमायनमःकट्याम्। धृतविश्वायनमःउदरे। संवर्तकायनमःमुखे। संवत्सरायनमःकंठे। सर्वास्त्रधारिणेनमःवाहवोः सहस्त्रशिरसेनमः शिरसि। शंखायनमः शंखे। चक्रायनमः चक्रे इनमंत्रों से पूजन कर कलश स्थापन करै उस पर पात्रमें सुवर्ण की रामलक्ष्मण मूर्ति स्थापनकर पूजनकरै पीछेब्राह्मणको देवै इस व्रत के करनेसेउत्तमसन्तान की प्राप्ति होतीहै बशिष्ठजी की आज्ञा से इस व्रत को सन्तान के अर्थ राजा दशरथ ने कियाथा इसलिये साक्षात् रामचन्द्रही उनके पुत्रबने विष्णु भगवान् ने चाररूप धार राजा दशरथ के घरमें जन्म लिया इसलिये यह व्रत बहुत फल देनेहाराहै इसी विधि से स्नान आदि कर वासुदेवायनमः पादयोः। संकर्षणायनमःकट्याम्। प्रद्युम्ना

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नमः उदरे । अनिरुद्धायनमः उरसि । चक्रहस्तायनमः कंठे । पुरुषायनमः शिरसि । शंखायनमः शंखे । चक्रायनमः चक्रे । इन मंत्रों से पूजन कर पहिली भांति घटके ऊपर सुवर्ण की संकर्षण की मूर्त्ति स्थापन कर विधि से उसका पूजन कर ब्राह्मण को देवै इस व्रत के करने से विद्या धन राज्य पुत्र प्राप्त होते हैं औ मरणके अनन्तर विष्णुलोक में छ मन्वन्तरपर्यंतयहव्रत करनेहारा निवासकर सात जन्म तक राजा होताहै पीछे मोक्ष को प्राप्त होजाताहै इसीप्रकार श्रावण शुक्ल द्वादशीको । बुधायनमः पादयोः । श्रीधरायनमःकट्याम् । पद्मोद्भवायनमःउदरे । संवत्सरायनमःउरसि।सुग्रीवायनमःकंठे।विश्वबाहवेनमःभुजयोः। शंखायनमःशंखे । चक्रायनमः चक्रे । इन मंत्रोंसे पूजनकर कलश के ऊपर सुवर्णकी बुद्ध भगवान्‌की प्रतिमास्थापनकर पूजनकरै औ ब्राह्मण को देवै यह व्रत शुद्धोदन ने किया जिससे बुद्धभगवान् उसके पुत्रबने औ शुद्धोदनभी बहुत काल राज्य सुख भोग परमगतिको प्राप्तभया इसीरीतिसे भाद्रशुक्ल द्वादशी को स्नान आदिकर । कल्किनेनमःपादयोः । हृषीकेशायनमःकट्याम्॥ म्लेच्छप्रध्वंसनायनमः उदरे । जगन्मूर्तयेनमः उरसि । शितिकंठाय नमःकंठेखड्गहस्तायनमःभुजयोः।विश्वमूर्तयेनमःशिरसि।शंखायनमःशंखे । चक्रायनमःचक्रे । इनमंत्रोंसे पूजनकरकलशकेऊपर सुवर्णकी कल्किनारायणकी मूर्तिस्थापनकर दो वस्त्रउढ़ायभक्ति से पूजन कर दूसरे दिन ब्राह्मण के अर्पणकरै इस व्रतके करने से सब उत्तम फल प्राप्त होते हैं यह दशावतार दान का औ पूजन का हमने विधान कहा अब इसका फल कथन करतेहैं । सर्वज्ञता की प्राप्ति के लिये मत्स्यरूप भगवान् का पूजनकरै वंशके उद्धारके लिये कूर्मका।संसारकेउद्धारहोनेकेअर्थबाराहका। पाप निवृत्तिकेलिये नृसिंहका । मोहनाशकेलियेवामनका।धन

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

प्राप्तिकेलियेपरशुरामका।शत्रुनाशकेअर्थ रामचन्द्रका। संतान के लिये बलदेव का । रूपकी प्राप्तिकेअर्थ बुधभगवान्का।औ शत्रु संहारके लिये कल्किनारायणका भक्ति से पूजन करै इन सबका पूजन औ दान करने से अभीष्ट कामना सिद्ध होती हैं इसप्रकार आश्विनशुक्लद्वादशीको स्नान आदिकर (पद्मनाभाय नमः पादयोः । पद्मयोनयेनमःकट्याम्। सर्वदेवायनमःउदरे। पुष्कराक्षायनमः उरसि । अव्ययायनमः शिरसि। शंखायनमः शंखे। चक्रायनमःचक्रे। इनमंत्रोंसे इन अंगोंका पूजनकरकलश स्थापनकरै औ उसको वस्त्र माला आदिसे अलंकृत कर उसके ऊपर सुवर्णकी पद्मनाभकीमूर्तिस्थापनकरभक्तिसेपूजनकरैपीछे दक्षिणा सहित दरिद्र ब्राह्मणके अर्पणकरै इस व्रतके करने से जितना पुण्यहोताहै उसका कौन वर्णन करसक्ता है ब्रह्महत्या आदि पाप तो भगवान्का नाम स्मरण करतेही नष्टहोजाते हैं फिर व्रत औ पूजनभी करै तो क्याकहनाहै इसीप्रकारकार्तिक शुक्ल द्वादशी को स्नान आदि कर (नमोदामोदराय) इस मंत्र करके भगवान्के सर्वाङ्गका पूजनकर चार कलश स्थापन करै ये चारों समुद्रहैं इनके मध्यमें अतिसुन्दर पांचवांकलशस्थापन करै उसके बीच सुवर्ण रत्नआदि डाल श्वेतवस्त्र से उसको आच्छादित करै उसके ऊपर ताम्रपात्र में सुवर्णकी भगवान् की प्रतिमा स्थापनकर भक्ति से सबउपचारों करके पूजनकरैदूसरे दिन पांच ब्राह्मणों को भोजन कराय चारोंको चार कलश औ पांचवेंको मूर्ति सहित कलशदेवै वेदवेत्ता ब्राह्मणको देवै तोसौ गुणा फल होताहै वेदवेदांग जाननेहारेको देने से सहस्रगुणा सरहस्य वेदज्ञाताको देनेसे लक्षगुण औ पौराणिकको देने से अनन्तगुणफल प्राप्तहोताहै इसप्रकार कलश देकर यथा शक्ति ब्राह्मण भोजनकरावै औ दीन अनाथ अंधआदिको भी भोजन

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

देकर संतुष्ट करै यह व्रत धरणी ने किया तब भगवान्नेप्रसन्न हो बराह रूप धार भूमिका उद्धार किया। प्रजापतिनेइसीव्रत के प्रभावसे प्रजा औ मुक्तिपाई। कृतवीर्यराजाने इस व्रत के करनेसे सहस्त्रबाहु नामक चक्रवर्त्ती पुत्र पाया। शकुंतलाने यह व्रत किया तो उसके भरतनाम चक्रवर्त्ती पुत्र उत्पन्न भया और भी अनेक राजाओंके अभीष्ट इस व्रतसे सिद्ध भये हैं जो इस व्रतको करै अथवा इसके माहात्म्यको सुनै वह विष्णुलोक को प्राप्तहोय औ उसके सात पुरुष सद्गति को प्राप्तहोयँ संपूर्ण माहात्म्य तो इस धरणीद्वादशी का कौन वर्णन करसक्ता है यह हमने थोड़ासा कहाहै॥

चौहत्तरवां अध्याय॥

राजा युधिष्ठिरपूछते हैं कि ऐसा कौन व्रत है जिसके करनेसे इष्ट बियोग न होय ऐश्वर्य प्राप्तिहोय औ शोक मोह आदि का नाशहोकर संसारसे मुक्ति मिलै यह राजा का प्रश्न सुन श्रीकृष्णभगवान् कहने लगे कि हे महाराज यह देवता दैत्यआदि सबमें गुप्त है जो आपने पूछा परंतु हम आपके स्नेह से कथन करते हैं आश्विन मासमें विशोकद्वादशीका व्रत करनेसेये फल प्राप्तहोतेहैं उसकायहविधानहै कि दशमीके दिन शौचआदिकर पूर्वमुख अथवा उत्तराभि मुख बैठ दंतधावनकर स्नान करै पीछे संध्या तर्पण आदिकर घरआय नारायणका पूजनकरै औ लघु भोजनकरै एकादशी के दिन निराहार रहै औ भक्ति से लक्ष्मी सहित नारायणका पूजनकरै रात्रिको जागरणकर प्रभात उठ सर्वौषधि जल औ पंचगव्यसे स्नानकरश्वेतवस्त्र औ पुष्पमाला पहिन विशोकायनमः।वरदायनमः। श्रीशायनमः। जलशायिनेनमः। कंदर्पायनमः।माधवायनमः। दामोदरायनमः।विपुलाय

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मः। पद्मनाभायनमः। मन्मथायनमः। श्रीधरायनमः। मधुलिह्ने-
नमः। चक्रिणेनमः। गदिनेनमः। बैकुंठायनमः।यज्ञमुखायनमः।
वामनायनमः। विश्वरूपिणेनमः।सर्वात्मनेनमः। इनमंत्रोंसेक्रम
करकेपादजंघाजानूऊरूगुह्यकटि उदर पार्श्वनाभि हृदय वक्ष-
स्थल दोनों हाथ वामभुजा दक्षिणभुजा कंठ मुखललाट किरीट
औ सर्वांगका पूजनकरै पीछे नदीकेबालूसेसुन्दरचतुरस्रस्थंडिल
बनाय उसपर लक्ष्मीकी औ सूर्यकीप्रतिमा स्थापनकर।ओंदेव्यै
नमः। शांत्यैनमः। बिशोकायैनमः। इनमंत्रों से पूजन करै सुवर्ण
काकमल वस्त्र औ अनेकप्रकारके नैवेद्यचढ़ावै रात्रिको नृत्यगीत
आदिक उत्सव करै दूसरेदिन उत्तम शय्यापर बैठायवस्त्रभूषण
भोजन आदि करके ब्राह्मण मिथुनका पूजन करै औ गुड़ धेनु
सहित वह शय्या भी उनकोदेवै औ (यथालक्ष्मीर्नदेवेशत्वांपरि
त्यज्यगच्छति।तथाविशोकतामेस्तुभक्तिरव्यायचकेशवे। यहमंत्रपढ़
क्षमापन करावै औ सूर्यकी तथा लक्ष्मीकी प्रतिमा ब्राह्मण को
देवै उत्पलकरवीर वाणकुंकुम नागकेसर सिंदुवारमल्लिकाअशो
क पाटला कदंब औचमेलीये पुष्प पूजनके लिये प्रशस्तहैंइतना
सुन राजायुधिष्ठिरने पूछा कि हे श्रीकृष्णचन्द्र आपने गुड़धेनु
देनीकही उसका आप विधानभी कहैं किक्योंकरगुड़धेनुबनतीहै
है औ क्यामंत्र हैतब श्रीकृष्णभगवानुकहनेलगे कि हे महाराज
अब हम गुड़धेनु का विधान कहते हैं आप प्रीतिसे श्रवणकी-
जिये पहिले भूमिको गोबरसे लीप उसके ऊपर दर्भ बिछायद-
र्भों के ऊपर कृष्ण मृगचर्म बिछावै उसके ऊपर पूर्वाभि मुख
अथवा उत्तराभि मुख गुड़धेनु बनावैएकभार प्रमाण गुड़कीधेनु
औ इसके चतुर्थांश गुड़करके बछड़ा बनावै इक्षु के पाद सीपों
के कर्ण मोतियों के नेत्र श्वेत सूत्र की शिरा मूंगाकीभ्रू ताम्रकी
पीठ नवनीतके रतन औ श्वेत चामरके उनके रोमबनाय श्वेत

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कंबल से दोनोंको आच्छादनकरै औ गंध पुष्प धूप दीप नैवेद्य अनेक प्रकार के फल औ सुगंध द्रव्यों से उनका पूजन करैऔ हाथ जोड़(यालक्ष्मीसर्वभूतानांयाचदेहेष्यवस्थिता। धेनुरूपेण सादेवीममपापंव्यपोहतु।विष्णोर्वक्षसियालक्ष्मीःस्वाहायाचविभावसोःचंद्रार्कशक्रशक्तिर्या धेनुरूपासुरप्रिया । चतुर्मुखस्यया लक्ष्मीर्यालक्ष्मीर्धनदस्यच। यालक्ष्मीर्लोकपालानां साधेनुर्वरदास्तुमे।स्वधात्वंपितृमुख्यानांस्वाहायज्ञभुजांयतः।सर्वपापहरा धेनु स्तस्माद्भूतिंप्रयच्छमे)ये मंत्र पढ़ै पीछे वह धेनुसत्पात्रब्राह्मणको देवै सब धेनुओंका यहीविधानहै पापकेनाशकरनेहारी दश धेनु कही हैं उनके हम नाम औ स्वरूपकहतेहैं गुड़धेनुघृत धेनुतिलधेनु जलधेनुक्षीरधेनु मधुधेनु शर्कराधेनु दधिधेनुरसधेनु औ प्रत्यक्षधेनु ये दशधेनु हैं कोई मुनि सुवर्णधेनु औ नवनीत धेनु भी कहते हैं गुडधेनु के तुल्य सबके दानका विधान औ मंत्र हैं जिसपर श्रद्धा होय उसका दान करै व्रतों में विशोकद्वादशी व्रत उत्तम है उसका अंग गुडधेनुहै इसलिये वह सब धेनुओं में उत्तम है अयन संक्रांति विषुव व्यतीपात औ चन्द्रग्रहणादि पर्वों में गुडधेनु आदि दश धेनुओं का दान करै यह विशोकद्वादशी व्रत सब पाप हरनेहाराहै जिस व्रतके करने से मनुष्य सौभाग्य आयुष् आरोग्य पाता है औ अंत में विष्णुलोक को जाता है औ हज़ारों जन्मतक दुःख शोक आदि से पीड़ित नहीं होता जो स्त्री इस व्रतको कर नृत्य गीत आदि उत्सव करै वह भी सम्पूर्ण फल पातीहै जो इस माहात्म्य को सुनै पूजन देखै अथवा व्रत करने के लिये औरोंको उपदेशकरै वह भी इंद्रलोक में निवास करताहै ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पचहत्तरवां अध्याय

श्रीकृष्णचंद्र कहतेहैं कि हे महाराज अब हम विभूति द्वादशी व्रतकाविधान कहते हैं आप श्रवणकीजिये कार्त्तिकवैशाख मार्गशीर्ष आषाढ़ अथवा फाल्गुन शुक्लदशमी को मनुष्य लघु भोजन करै रात्रि के समय यह नियम ग्रहणकरै कि एकादशी को निराहार रह भगवान्का अर्चनकर द्वादशीको ब्राह्मणोंके साथ भोजन करूंगा हे मधुसूदन यह मेरा व्रत निर्विघ्नसमाप्त होय प्रभातउठ स्नान आदि करभूतिदायनमः। विशोकायनमः शिवायनमः। विश्वमूर्तयेनमः। कंदर्पायनमः। आदित्यायनमः दामोदरायनमः। वासुदेवायनमः।माधवायनमः। मुक्तिकृतेनमः श्रीधरायनमः। केशवायनमः। शार्ङ्गधरायनमः। वरदायनमः शंखपाणयेनमः। चक्रपाणयेनमः। खड्गपाणयेनमः। गदापाणयेनमः। परशुपाणयेनमः। सर्वात्मनेनमः। इनमंत्रोंसे शुक्ल माल्य अनुलेपन आदि करके पाद जानु ऊरु कटि मेढ्र हस्त उदर स्तन हृदय कंठ मुख केश पृष्ट कर्ण इन अंगोंका औ शंख चक्र खड्ग गदा परशु इन आयुधोंका औ सर्वांगका पूजनकरै सुवर्ण का मत्स्य उत्पल सहित वित्तानुसारबनाकर जलकेकुंभकेबीचभगवान् के आगे स्थापनकरै औ शुक्लवस्त्र से ढका गुड़ तिल युक्त पात्र भी स्थापन करै रात्रिको जागरण कर इतिहास आदि श्रवण करै प्रभात उठ भगवान् का पूजन कर तीन कर्ष सुवर्ण का उत्पल औ वह सब सामग्री कुटुंबी ब्राह्मणको देवै औ इसी विधान से मासक्रमकरके दशावतार दान करै औ उत्पल सहित व्यास औ दत्तात्रेयकी प्रतिमा का भी दान करै इसप्रकार एकबर्ष व्रत करके लवण पर्वत गुड़ शय्या ग्रामक्षेत्रघर औ वस्त्रभूषणआदि देकर गुरु को संतुष्ट करै और भी ब्राह्मणों को भोजन करावे

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

दक्षिणा गौ औ वस्त्र देवै सामर्थ्य न होय तो भक्ति पूर्वकथोड़ी२ ही सब बस्तु देवै भगवान् भक्तिसे प्रसन्नहोते हैं इस विधि से जो पुरुष तीन वर्ष इस व्रतको करै उसके सौ कुलों का उद्धार होताहै औ हजारोंयुगवहस्वर्गमेंनिवासकरचक्रवर्त्ती राजा होता है पूर्वकाल में रथंतर कल्पके बीच बड़ाप्रतापी पुष्प बाहन नाम एक राजा भया उसने बड़ा तप किया तब ब्रह्माजीने प्रसन्नहो उसको एक सुवर्णका कमल दिया जिसपर अपने अंतःपुर औ भृत्यों सहित बैठ सप्तद्वीपों में वह बिचरताथाउसको प्रसन्नहो जहां ब्रह्माजी ने कमल दिया वह द्वीप पुष्करद्वीप कहाया पुष्प रूप बाहन ब्रह्माजीने उसको दिया इसलिये राजा का नाम पुष्पबाहन भया तीनलोक में कोई स्थान राजा को उसकमलके प्रभाव से अगम्य नहीं था उस राजा की रानी अति रूपवती पतिव्रता औ हजारों उत्तम नारियोंकरके सेवित लावण्यवती नामथी उसका पुत्रभी बड़ा पराक्रमीबिनीतऔ धर्म्मात्माथायह सब अत्युत्तम सामग्री अपनी देख राजाको बड़ा बिस्मय भया तब प्रचेता मुनिके पास जाय राजाने बड़े विनय से प्रणाम कर पूछा कि महाराजऐसा मैंने कौनपुण्य कियाहै जिससेइतना ऐश्वर्य ऐसी उत्तम भार्या औ पुत्र पाये औ इतनाबड़ाविमान मिला कि जिसमें लाखोंहाथी घोड़े औ सेना चढ़जाय तौ भी खालीहीरहताहै आप यहमेरा संदेह निवृत्त कीजिये यह राजा का वचन सुन क्षणमात्र ध्यानकर प्रचेतामुनिबोले कि हेराजा पूर्वकाल में अति क्रूरस्वभावकृष्णवर्ण रक्तनेत्र औ सबजीवोंको भय देनेहारा एकव्याधथा वह नित्य बनके जीव मारउनकेमांस से अपने कुटुम्बका पोषण किया करता एकसमयवृष्टिनहोनेसे उस देशमें बड़ादुर्भिक्षपड़ा एक दिन उस दुर्भिक्ष में वह व्याध सारे वनमें भटका परन्तु कोई जीव हाथ न आया इससे व्या

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कुलहो घरको लौटा रस्ते में उसने एक सरोवर में कमल फूले देखे वहांसे बहुत से कमल तोड़लिये औ घर आय वहां से अपनी पत्नीको संगलेकमल बेचने के लिये बिदिशा नगरीमें गया सारे नगर में फिरा परंतु कमल किसीने न पूछे तब सायंकाल के समय क्षुधा तृषा से व्याकुल अपनी भार्यासहितएकस्थान में बैठगया वहां उसने रात्रि के समय गीत वाद्य का बड़ाशब्द सुना औ जाना कि अनंगवती नाम वेश्या विभूति द्वादशी का व्रत करके अपने गुरुको लवणाचल औ सब उपस्करोंकेसहित उत्तम शय्या देती है यह शब्दसुन वह व्याधभी अपनी भार्या सहित वहां गया औ जायकर देखा कि मण्डप के बीचसुवर्ण की भगवान्की प्रतिमा स्थापनकर रक्खीहै औसबउसका पूजन कर रहे हैं उसने सोचा कि ये कमल हमारे किसी कामकेनहीं इसमूर्त्तिपरही चढ़ादेवैं यह बिचार दोनोंस्त्री पुरुषों ने दूरसेकमल के पुष्प भगवान् की प्रतिमा पर फेंकदिये अनंगवतीभी कमल के उत्तम पुष्प देख प्रसन्नभई औ तीन सौ मोहर उनको पारितोषक दिया उस प्रसन्नता में उन दोनोंको रात्रि भर निद्रा न आई वेश्याने भी अपने गुरु को वस्त्र भूषण ग्राम घर शय्या औलवणपर्वतदेकर संतुष्टकिया औ ब्राह्मणभोजनकराय भार्या सहित उस व्याध को भी भोजनदे बिसर्जन किया कुछ दिनके अनन्तर वह पापी व्याध औ उसकी स्त्री मृत्युवशभये हेराजन् वह व्याध तुमहो औ व्याध की भार्या तुम्हारी रानीहै तुम से बिनाइच्छाही विभूतिद्वादशी को उपवास औ रात्रिको जागरण बनपड़ा इससे तुम जन्मान्तरमें राजा रानीभये औ भगवान्पर तुमने कमल चढ़ाये इससे तुमको कमलाकार यह विमानमिला ब्रह्माके रूप से विष्णु भगवान् ही तुमपर प्रसन्न भये हैं वह अनंगवती वेश्याभी कामदेवकी भार्या औ रतिकी सपत्नी प्रीति

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नाम भईहै हेराजन् इसशरीरके अनन्तर तुममोक्षको प्राप्तहोगे इतनी कथा सुन प्रसन्न हो मुनिको प्रणाम कर राजा अपनी राजधानीको आया औ विभूतिद्वादशीका व्रत श्रद्धासेकरनेलगे इतनी कथा सुनाय श्रीकृष्णभगवान् ने कहा कि हे महाराज भक्ति से विभूतिद्वादशी का व्रत करै औ वित्तशाठ्यन करै तो अवश्यही अभीष्ट फल पावै जो इस माहात्म्य को सुनै अथवा सुनावै वह सद्गति पावै ॥

छिहत्तरवां अध्याय ॥

राजा युधिष्ठिर कहतेहैं कि हे श्रीकृष्णचन्द्र अब हममदन-द्वादशीका विधान सुनना चाहते हैं जिसव्रतके करनेसे दिति ने उनचास पुत्र पाये यह राजाका वचन सुन श्रीकृष्णभगवान् कहनेलगे हे महाराज वशिष्ठ आदि मुनियों ने जो विधानदिति को बताया था वही हम आपको कहते हैं चैत्रशुक्ल द्वादशी को उत्तमकलश चावलों से पूर्ण श्वेत वस्त्रोंसे आच्छादित फल औ इक्षुरससहितस्थापनकरै उसकेऊपर गुड़औसुवर्णसहित ताम्र-पात्र रक्खै उसकेऊपर केलाका पत्र बिछाय उसपर रतिसहित कामदेवकोमूर्त्ति स्थापनकरै फिर गंध पुष्पादिउपचारोंसे पूजन कर। कामायनमः सौभाग्यदायनमः स्मरायनमः मन्मथायनमः शातोदरायनमःअनंगायनमःपद्मसुखायनमःपंचशरायनमःसर्वा-त्मनेनमः। इनमंत्रोंसे पाद जंघा उरू कटि उदर वक्षस्थल मुख बाहू औ मस्तकका पूजनकरै दूसरे दिन मूर्त्ति सहित वह कुंभ ब्राह्मणको देवै औ यथाशक्ति ब्राह्मण भोजनकरावै परन्तु ल-वण रहित भोजन ब्राह्मणको देवै फिर ब्राह्मणको दक्षिणादे-कर(प्रीयतामत्रभगवान्कामरूपीजनार्दनःहृदयेसर्वभूतानांयेना नंदोविधीयते)यहमंत्रपढ़ै व्रतकेदिन आपभी एकफल भक्षणकर

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

रात्रिके समय भूमिपर सोवै। इसप्रकार बारह महीने व्रत कर तेरहवें मासमें उत्तमशय्या सुवर्णकीकामदेव औ रतिकीप्रतिमा शुक्लवर्णकी सवत्सा गौ औ वस्त्र ब्राह्मण दंपती का पूजन कर उनको देवै औ गौ का दुग्ध शुक्लतिल औ पायस करके काम-देव के नामोंसे हवनकरै औ ब्राह्मणों को भोजन कराय उनको दक्षिणा पुष्पमाला इक्षु दंड औ वस्त्र आदि देकरसंतुष्टकरैइसमें वित्तशाठ्य न करै इसविधि से जो इस व्रतको करै वहसौभाग्य रूप धन पुत्रपावै औ बहुत दिन संसार का सुख भोग विष्णु-लोक को जावै दिति ने उत्तम वर औ संतानके लिये यह व्रत किया तब कश्यपजीने आप आकर उसको वरा कुछ काल के अनन्तर दितिने कश्यपजी से शत्रुओंके संहार करने हारा पुत्र मांगा कश्यपजीने उसको बर दिया थोड़ेही समय में दिति के गर्भ रहा तब कश्यपजीने दितिसे कहा कि हे प्रिये इस गर्भको तुम सौवर्ष पर्यंत धारणकरो औ संध्याके समय भोजन न करो वृक्ष के नीचे शून्यघरमें औ जलके बीच कभी मतजाओ ऊखल आदि के ऊपर मतबैठो उद्विग्नचित्त मतरहो भस्मसे नखसे औ अंगारसेभूमिपररेखानकरो व्यायाम गात्रभंग कलहअतिहास्य आदिका त्यागकरो केश खोलकर औ नग्नहोकर कभीमतबैठो उत्तर औ पश्चिमको शिर करके मत शयन करो पैर गीले मत रक्खो अमंगल वचन न बोलो नित्यगुरुशुश्रूषाऔमंगलमेंतत्पर रहो सर्वौषधियुक्त गरम जलसे स्नान करो खोटीस्त्री औ मृत-वत्सा स्त्रीका स्पर्श न करो वस्त्रके वायुको त्यागो जल्दीमतचलो परायेघर न जाओ नदीको उल्लंघन मतकरो दुष्टवचनमत सुनो ग्लानिकरनेहारी वस्तुको न देखो अजीर्णसे बचतीरहो गर्भको रक्षा करनेहारी ओषधीधारणकरो इसविधिसे जो गर्भिणीस्त्री रहे वहउत्तम पुत्रपातीहै नहीं तो गर्भगिरजाताहै अथवास्तंभन

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

होजाता है तुम इसीरीति से चलो तो अति सुन्दर औ पराक्रमी पुत्र तुम्हारे होगा इतना उपदेश दिति को कर कश्यपमुनि अंतर्द्धानभये दितिभी पतिकीकहीरीतिपरचली औउनचास पुत्र उसके जन्मे और भी जो नारी इसव्रतकोकरै वह अवश्यही पुत्र पावै औ पतिसहित संसारका सुख भोगकरै ॥

सतहत्तरवां अध्याय ॥

जारायुधिष्ठिर पूछतेहैं कि हेश्रीकृष्णचंद्र बड़ेघोरबनमेंसमुद्र तरणमें संग्राममें चौरआदिके भयमें व्याकुलहुआ मनुष्यकिस देवता का स्मरणकरै जो उस संकट के समय उसकी रक्षा करै यह आप कथनकरैं तब श्रीकृष्णचन्द्र कहनेलगे कि हेमहाराज सर्वमंगल मंगला श्रीदुर्गाभगवतीका स्मरणकरने हारा पुरुष कभी दुःख औ भयको प्राप्त नहीं होता जब हम औ बलदेवजी अपने गुरुसे सवविद्यापढ़चुके उससमय हमने गुरु दक्षिणा के लिये कहा तब गुरुने हमारा दिव्यप्रभावजान यहीकहा कि हे पुत्र हमारा पुत्र प्रभासक्षेत्रमें गयाथा वहांउसको किसीनेमारदिया हमउसीपुत्रकोचाहतेहैं जहांहोयवहांसे तुमलाकर हमको देदो तब हम यमलोक में गये वहांसे गुरु पुत्र को लेकर गुरुके समीप आये औ उनको उनका पुत्रदिया औ गुरुको प्रणामकर चलनेलगे तब गुरुनेकहा कि हेपुत्रो इसस्थानमें तुम अपने पाद का चिह्नकरजाओ हमनेभीगुरुकीआज्ञानुसार किया उसदिन से दक्षिणपाद बलदेवजीका मध्यमें सर्व मंगलाका औवामपाद हमारा सबवहां पूजतेहैं प्रतिमासकी शुक्लत्रयोदशीकोएकभक्त नक्त अथवा उपवासरहकर मृत्तिका अथवा सुवर्णकी प्रतिकृति बनाय गंध पुष्प धूप दीप नैवेद्य मधु शीधुसुरा आसवमांस औ वलिकरकेजो स्त्री अथवा पुरुष पूजनकरै वहसबपापोंसेमुक्तहो

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

स्वर्गमें निवास करता है जहां शुक्लत्रयोदशीको पुष्पमांस सुरा बलि आदि करके पादके अंकका पूजनकियाजाय वहांमारी दुर्भिक्ष आदि उपद्रव नहीं होते ॥

अठहत्तरवां अध्याय ॥

राजा युधिष्ठिर पूछते हैंकि हे श्रीकृष्णचन्द्र ऐसाकौनव्रतहै जिसके करने से शरीर का दुर्गंध नष्ट होजाय औ दौर्भाग्य भी दूरहोय तबश्रीकृष्णभगवान्कहनेलगे कि हे महाराजयहीबात विष्णुमतीरानीने जातूकर्यमुनिको पूछीथी तबमुनिने यहकहा कि हे पतिव्रते ज्येष्ठशुक्ल त्रयोदशीको नदीमें स्नानकर गंध पुष्प धूप दीप नैवेद्य श्वेतार्क पुष्प करवीरपुष्प औ निंवकरके सूर्य नारायणका पूजनकरै निंब सूर्यभगवान् को बहुत प्रियहै इस भांति पूजनकर व्रत रक्खै इसप्रकार चार त्रयोदशी को व्रत औ पूजन करै तो शरीरका दुर्गंध औ दौर्भाग्य नष्टहोय जोस्त्री इस व्रतको भक्ति से करैं औ अर्क करवीर औ निंबकापूजनकरैं वे दौर्भाग्य दौर्गंध्य औ वंध्यापन से छूट पति के साथ अनेक प्रकारके सुखभोगती हैं ॥

उनासीवां अध्याय ॥

राजा युधिष्ठिर पूछते हैं कि हेश्रीकृष्णचन्द्र ऐसाकौन व्रत है जिसके करनेसे यमको न देखना पड़ै तब श्रीकृष्णभगवान् ने कहा कि हे महाराज मुद्गलमुनिने यह बात हमसेकहीकि हे यदुपुंगव जब यमने मुद्गलक्षत्रियकोलानेकी आज्ञादीउसी समय यमदूतगये औ उसको लेआये वह बड़ाधर्मात्माथा इस लिये यमराजने भी उसका सत्कारकिया औ समीपबैठाया तब मुद्गलक्षत्रियने पूछा कि हे धर्म्मराज कोईऐसाउपाय जीवोंके

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

लिये कहैं जिससे आपके लोक का दारुण मार्ग न देखना पड़ै तब यमराज कहनेलगे कि हे मुद्गल जो पुरुषको नरकका भय होय तो मार्ग शीर्ष आदि प्रतिमासकी शुक्ल त्रयोदशी को तेरह आठ अथवा पांच ब्राह्मणोंको हमारे नाम से बुलावै वे ब्राह्मण वेद वेत्ता शांतचित्त आचार निष्ठ सौम्यदर्शन औ सूर्यभक्त होंय पीछे उनको दिनके पहिले प्रहरमें तैलाभ्यंग कराय गरम जल से नहवाय अच्छीधोती पहिनाय पूर्वाभि मुख सब को आसन पर बैठावै पीछेअपने हाथसेगुड़के अपूप पक्वान्नओ अनेकप्रकार के सात्विक ब्यंजन उनके आगे परोसै जब वे प्रसन्नता से भोजन कर आचमन आदि करचुकैं तब प्रत्येकको तिल चावलोंसे पूर्ण ताम्रपात्र छतुरी जूतावस्त्र जलपूर्णकलशओदक्षिणादेवैपंक्ति भेदनकरै औ (ओंनमःशनैश्चरोमृत्युर्दण्डहस्तोविनाशकः । अभवःप्रलयःशांतिर्दुःस्वप्नःशमनोंतकःलोकपालोधनीक्रूरोरौद्रोघोरो नमःशिवः । नमःप्रसन्नमानस्कोददातुममवांछितम्) यह मंत्रपढ़ैपीछेप्रसन्नतापूर्वकब्राह्मणोंको विसर्जन करै औ उन के साथ पहुंचानेके लिये जाय इस व्रतको जो एक बार भी करै वह यमलोकको नहीं देखता यह यमराजने मुद्गल क्षत्रियसे कहाओ हे श्रीकृष्ण हमको उनने छोड़दिया तब हम अपने शरीर में प्रविष्ट भये औ आज आपके मिलने को आये श्रीकृष्णचन्द्रकहते हैं कि हे महाराज इतनी कथा सुनाय मुद्गलमुनि अपनेआश्रम को गये इस व्रतको जो स्त्रीअथवा पुरुषकरते हैं वे यम को जीत इंद्रलोक में निवास करते हैं जो एक वर्ष प्रति त्रयोदशीको यहयमादर्शननाम व्रतकरै वे गन्धर्व औअप्सराओं करकेसेवित दिव्य विमान में बैठ इंद्रलोक में प्राप्तहोते हैं औ आधि व्याधि औ बड़े भयंकर यमदूतों करके कभी पीड़ितनहीं होते औ चिरकाल पर्यंत स्वर्ग में निवास करते हैं ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अस्सीवां अध्याय॥

श्रीकृष्णभगवान् कहतेहैं कि हेमहाराज शरीरको क्लेशदेनेहारे बहुत व्रत करने से क्या प्रयोजन है एक अनंग त्रयोदशी काही व्रतकरै तो सब कुछ पावै यह त्रयोदशी सब प्रकारकेसुख देनेहारी नरकका भय हरने हारी औ मंगलवृद्धि करनेहारी है शिवजीने कामदेवको दग्ध करदिया फिर अनंगहोकर सब के मनमें कामदेवका निवास भया तब कामदेव ने इस व्रत को किया इसीसे इसकानाम अनंग त्रयोदशी पड़ा अब हमइसव्रत का विधान कहते हैं मार्गशुक्ल त्रयोदशीको नदी तड़ाग आदि में स्नानकर जितेंद्रियहो पुष्प धूप दीप नैवेद्य औ कालोद्भव फलों करके शशिशेषरका पूजन करै औ तिल सहित अक्षतों करके हवनकरै रात्रिको मधु प्राशनकर शयनकरै वह कामदेव के तुल्य उत्तम रूप पाताहै। पौषमें योगेश्वरका पूजनकर चंदन प्राशन करै तो शरीरमें चंदन के समान गंध होजाय औ राजसूय यज्ञका फलपावै। माघमें नाट्येश्वरका पूजनकर मौक्तिक चूर्ण प्राशन करै तो सौभाग्यऔ बहुसुवर्णयज्ञकाफलपावै। फाल्गुण में वीरेश्वरका पूजनकर कमल प्राशन करै तो तप्त सुवर्ण के समान शरीरकी कांति होजाय औ गोमेध यज्ञ का फल पावै चैत्रमें सुरूप का पूजन करै औ कर्पूर प्राशनकरे तो चन्द्रकेतुल्य मनोहरहोजाय औ नरमेधयज्ञका फलपावै। वैशाख में महारूपका पूजनकर जातीफल प्राशनकरै तो उत्तम जाति पावै उस के सब काम सफलहोंय औ सहस्र गोदानका फलपाय विष्णु लोकमें निवासकरै। ज्येष्ठमें प्रद्युम्न का पूजनकरै औ लवंगप्राशनकरै तो लावण्य सब प्रकारके सुख औ बाजपेययज्ञकाफल पावै। आषाढमें उमापतिका पूजनकर तिलोदक प्राशनकरै तो

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

तिलोत्तमाके समान रूपपाय सौवर्ष सुखभोगै औ पौंडरीकयज्ञ का फलपाय स्वर्गको जावै। श्रावण में ईशानका पूजनकरविल्वपत्रका प्राशनकरै तो अनन्तपुण्यपावै। भाद्रमेंसद्योजातका पूजनकर अगुरु प्राशनकरै तोभूमिपर सर्वका गुरु बनै औ पुत्र पौत्र धन आदि पाय बहुतदिन संसारसुखभोग अंतमेंपौंडरीक यज्ञके फलको प्राप्तहो विष्णुलोक में निवासकरै। आश्विन में त्रिदशाधिपतिका पूजनकर स्वर्णोदक प्राशनकरै तो उत्तमरूप विद्या औ सुवर्ण कोटि दानका फलपावै। कार्त्तिकमें विश्वेश्वर का पूजनकर मदनफल प्राशनकरै तो मदनके समान रूपवान् होय औ अंतमें शिवलोकमें निवासकरै जो इसव्रतमें किसीदिन विघ्न होजाय तो दूसरे दिन उसीविधानसेव्रतकरलेवैएकवर्ष इस प्रकार व्रतकरके कलश स्थापनकर उसकेऊपरताम्रपात्रमें सुवर्णकी शिव प्रतिमा स्थापनकर श्वेतवस्त्र से आच्छादनकरै औ गंध पुष्प धूप दीप नैवेद्य आदिसेपूजनकर शिवभक्तब्राह्मणको देवै औ उसके साथ सवत्सा गौ छत्र जूता औ यथा शक्ति दक्षिणा देवै औ शिवभक्त ब्राह्मणोंको भोजन कराय दक्षिणा वस्त्र औ जलपूर्णकलश उनकोदेवै औ शिवलिंगको पंचामृतसे स्नानकरावै इसप्रकार जो व्रत करै औ व्रतपारणके समयबड़ा उत्सव करै वह निष्कंटक राज्य आयुष् बल यश औ सौभाग्य सौजन्मतक पाताहै औ अंतमें शिवलोक में निवास करताहै इस अनंग त्रयोदशी व्रतको जो पूर्वोक्त रीतिसे भक्तिपूर्वक करै वह अवश्यही शिवलोक को प्राप्त होताहै॥

इकासीवां अध्याय॥

राजायुधिष्ठिर पूछते हैं कि हे श्रीकृष्णचन्द्र जलपूर्ण तड़ाग औ सरोवरों में कुल स्त्री किसको अर्घ्यदेतीहैं यहआपकथनकरैं

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

तब श्रीकृष्णचन्द्र कहनेलगे कि हे महाराज भाद्रशुक्लचतुर्दशी को ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र औ स्त्री तड़ाग के तट पर जाकर फल पुष्प वस्त्र दीप चंदन महावर सप्तधान्य अग्निपाक बिना सिद्ध किये अन्न तिल चावल खजूर नालिकेर वीजपूर नारंगी द्राक्षा दाड़िम सुपारी आदि करके वरुणका पूजन करै पहिले मंडल लिख उसमें गया पुष्कर प्रभास औवरुणासहित वरुण को लिख कर पूजन करै औ (वरुणायनमस्तुभ्यं नमस्तेयादसांपते। अपांपतेनमस्तेस्तुरसानांपतयेनमः। माक्लेदंमाचदौर्गंध्यंमावैरस्यंमुखेस्तुमे। वरुणोवारुणीभर्तावरदोस्तुसदामम)इस मंत्र से मध्याह्नके समय वरुणको अर्घ्य देवै औ अग्नि बिना सिद्ध किया भोजनकरै औ सब नैवेद्य ब्राह्मणको देवै इसविधि से जो इस पालीव्रतको करै तत्क्षण सब पापों से मुक्त होजाता है औ आयुष् यश सौभाग्य पाताहै औ समुद्र के जलकी भांति उसके धन का किसी को अन्त नहीं आता॥

बयासीवां अध्याय॥

श्रीकृष्णचन्द्र कहते हैं कि ब्रह्म सभा में देवल मुनिके उपदेश से अप्सरा गंधर्व औ देवताओंने कदली को अर्घ्य दान कियाहै उसका हम विधान कहते हैं इसी भाद्र शुक्ल चतुर्दशी को नानाप्रकारके फल सप्तधान्य दीप चंदन दही दूर्वा अक्षत वस्त्र पक्वान्न जायफल लवंग लवलीफल आदि करके (विचित्र कदलीकंदकदल्येकामदायिनी। शरीरारोग्यलावण्यदेहिदेविनमोस्तुते) इस मंत्रसे केला के वृक्ष का पूजन कर अर्घ्य देवै पीछे अग्नि बिना सिद्धकिया भोजन करै जो पुरुष अथवास्त्री भक्तिसे इस व्रतको करै उसके वंशमें दुर्भगा दरिद्रा बन्ध्या पापिनी व्यभिचारिणी कुलटा वेश्या पुनर्भू दुष्टा औ पतिविरो-

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

धिनी कोई कन्या नहीं उत्पन्न होती इस व्रत को करने हार नारी सौभाग्य पुत्र पौत्र धन आयुष् कीर्त्ति आदिपाकर सौवर्ष पर्यंत अपने पतिके साथ संसारके सुख भोगती है। यहरंभा-व्रत गायत्री ने स्वर्गमें किया गौरीने कैलासमें इन्द्राणीने नंदन बन में लक्ष्मी ने श्वेत द्वीप में राज्ञी ने भारतमंडल में अरुंधतीने दारुबन में स्वाहा ने मेरुपर्वत पर सीतादेवी ने अयोध्यामें देवकी ने रैवताचल पर औ भानुमती ने यह व्रत नागपुरमें कियाहै जो स्त्री भाद्र मास में पुष्प अक्षत धूप दीप नैवेद्य आदि करके कदली का पूजन करैं वे कभी दुःखों करके पीड़ित न होयँ औ उनके बंश में बिधवा कुरूपा कुलटा आदि कन्या उत्पन्न न होयँ॥

तिरासीवां अध्याय॥

राजा युधिष्ठिर पूछते हैं कि हे श्रीकृष्णचन्द्र पूर्वकालमें जब अग्नि नष्ट होगया औ देवताओंकोअग्निका काम पड़ा उससमय अग्निका काम किसने दिया यह आप बर्णनकरैं आप सब कुछ जानते हैं इसलिये पूछा है यह राजा का वचन सुन श्री कृष्णभगवान् बोले कि हे महाराज जब तारकासुर ने देवताओं को पराजित कर स्वर्गसे निकाल दिया उस समय सब देवता ब्रह्माजी के समीप गये औ उनसे प्रार्थनाकरी किमहाराज तारकासुर ने हमको बहुत सताया है उसकेनाशका कोई उपाय कल्पना कीजिये तब ब्रह्माजीनेकहा कि हेदेवताओपार्वती औ शिवजीके वीर्यसे उत्पन्न औ गंगा अग्नि कृत्तिकाआदि करके वर्द्धित बालक इसदैत्यको मारैगा यह ब्रह्माजी का वचन सुन देवता शिवजी के समीप गये औ प्रणाम कर सब वृत्तांत सुनाया शिवजीने भी बालक उत्पन्न करना अंगीकार कर

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

देवताओं को विसर्जन किया औ आप मैथुन में प्रवृत्तभये इस
में एक दिव्यहज़ार वर्ष से भी अधिककाल बीतगया औ मैथुन
समाप्त न भया तब देवताओं को बड़ा भय हुआ औ परस्पर
विचार करनेलगे कि शिव पार्वती से जो बालक उत्पन्न होगा
वह तारकासुर का बध करैगा परंतु अभी तो सुरतही समाप्त
नहीं होता बालक क्या जाने कब उत्पन्न होगा इसलिये इनके
सुरत निवृत्ति का उपाय करना चाहिये यह सब देवताओं ने
बिचारकर अग्नि औ वायु को वहां भेजा अग्निको पार्वतीजीने
देखा औ लज्जित हो शिवजी को सूचन किया तब शिवजीने
कहा कि हे प्रिये अब हमारे वीर्य को अग्निधारण करेगा यह
शिवजी का वचन सुनतेही अग्नि वहां से अन्तर्द्धान भया तब
देवता अग्नि को ढूंढ़ने लगे परंतु स्वर्ग भूमि आकाश आदिमें
कहीं पता न लगा तब देवताओंने कृमि कीट पतंग औ मंडूकों
को पूछा उनने अग्नि का मार्ग बताया इसलिये उनको अग्नि
ने शापदिया कि तुम्हारी मनुष्यवाणी जातोरहै फिर देवताओं
ने हाथियों को पूछा हाथियों ने कहा कि अग्नि हमारे शरण
में आया है यह सुनतेही हाथियों को अग्निने शाप दिया कि
तुम्हारी जिह्वा उलटी होजाय यह शाप दे अग्नि हाथियों के
मुख से निकल चलागया तब देवताओं ने हाथियोंको वरदिया
कि अग्निके शापसे तुम्हारी जिह्वा उलटी तो होजायगी परंतु
संज्ञा औ चेष्टा करके सब कुछ कहसकोगे औ समझोगे इतना
कह देवता आगे गये वहां जीवंजीव नामक पक्षी देखा उसको
देवताओं ने अग्नि का पता पूछा परन्तु वह कुछ न बोला औ
बारम्बार पूछनेपर भी चुपरहा तब अग्निनेप्रसन्नहो उसकोवर
दिया कि हे जीवंजीव मैं प्रसन्न होकर तुझ को वर देता हूं
कि जब तेरु तेरी इच्छा हो तब तक जीता रह औ मनुष्य के

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

समान तेरी वाणी होय औ जो तेरा मांस भक्षण करै वह भी अजर औ अमर होजाय एक सौ बारहबर्षके अनन्तर क्षणमात्र तू म्लान हुआ करैगा परन्तु मृत नहींहोगायह वर जीवंजीवको देकर अग्नि वहां से चला औ बांस के बीचजाय छिपा देवता भी वहां पहुंचे औ बांससे कहाकि उष्मा करके तेरावर्ण कलुष होरहाहै इसलिये तेरेगर्भमें अग्निहै हेबंश तूहमकोअग्निबतादे हम तुझको वरदेतेहैं कि जो गृहस्थी अथवा ब्रह्मचारीतेरीयष्टि धारण करेगा उसको पंचाग्नि तपने का फल प्राप्तहोगा यह देवताओं से वरपाय बंशने अग्निको प्रकट करदिया तब प्रसन्न हो देवताओंने अग्निसेकहा कि तुम शिवजीका वीर्यधारणकरो अग्निने देवताओंके कहेसे शिवजीका वीर्यधारा परंतुउसकेतेज से दग्ध होनेलगा तब जाकर वह वीर्य अग्नि ने गंगामें डाला गंगाभी दग्ध होनेलगी तब अपने तटपर शर वन के बीच फेंक दिया वहां कुमार उत्पन्नभया जिसने तारकासुरको मारा इतनी कथा सुन राजायुधिष्ठिर ने पूछा कि हे श्रीकृष्णचन्द्र जितने काल अग्नि गुप्तरहा उतनेसमयमें अग्निकाकाम किसनेकिया यह आप कथनकरैं तब श्री कृष्णभगवान्कहनेलगेकि हेमहाराज उतथ्यमुनि औ अंगिरामुनिका विद्यामें औ तपमें परस्पर बड़ा विवाद हुआ उतथ्य कहैं कि हम अधिकहैं औ अंगिराकहैं कि हम इसका निश्चय करनेके लिये दोनों ब्रह्म लोक में गये औ ब्रह्माजीसे सबवृत्तान्त कहा तब ब्रह्माजीनेउनसेकहाकितुम जाकर सबदेवता औ लोकपालोंको लेआओ तबसबके सम्मुख तुम्हारा विवाददेखकर निश्चयकहैंगे यह ब्रह्माजीकावचनसुन दोनों मुनिगये औ देवता ऋषि गन्धर्व किन्नर यक्षराक्षस दैत्य दानव आदि सबको बुलालाये केवल सूर्यभगवान् नहीं आये तब ब्रह्माजीने कहा कि सूर्यकोभी किसी प्रकारसे लाओ यह

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सुन उतथ्यमुनि सूर्यनारायण के समीपगये औ उनसे कहा कि आप शीघ्र हमारे साथ ब्रह्मलोक को चलैं तब सूर्य भगवान् ने कहा कि हे उतथ्यमुनि हमारा चलना किसप्रकार होसके जो हम तुम्हारे साथ जायँ तो जगत् में अंधकार छाजाय इसलिये हम नहीं चल सक्ते यह सुनि उतथ्यमुनि वहांसे चले आये औ ब्रह्माजी को सब वृत्तान्त सुनाया तब उनने अंगिरामुनि से सूर्यभगवान् के लाने के लिये कहा अंगिरामुनि ब्रह्माजी की आज्ञापाय सूर्यनारायणके समीपगये औ सबबातकही सूर्यनारायणने वहीउत्तर इनको दिया जो उतथ्य को दिया था तब अंगिराने कहा कि आप ब्रह्मलोकको जाइये हम आपके बदले यहां रहकर प्रकाशकरैंगे यह सुन सूर्यनारायण ब्रह्मलोक को गये औ अंगिरा प्रचण्ड तेजसेतपनेलगे सूर्यभगवान्नेब्रह्माजी से पूछा कि किसलिये हमको आपने बुलाया है तब ब्रह्माजीने कहा कि आप तो शीघ्र अपने स्थानपर जायँ नहीं तो अंगिरा मुनि संपूर्ण ब्रह्मांड को दग्ध करडालैगा देखो गो लोक दग्ध होकरकृष्णवर्णहोगयाहै शाकद्वीपजलाजाताहैइसलियेशीघ्रही आप जायँ यह सुनतेही सूर्यभगवान् उलटे अपने स्थान पर आये औ अंगिरा मुनिको प्रशंसाकर विसर्जनकिया तबअंगिरा देवताओं के समीप आये औ देवताओंसे कहा कि हम तुम्हारा कौन कार्य करैं तब देवताओंने अंगिरामुनिकी बड़ी स्तुति करी औ कहाकि जबतक हमअग्निको ढूंढ़ैंतबतकआप अग्निकाकाम दीजिये यह देवताओंका वचनसुन अंगिरामुनि अग्निका काम देने लगे जब अग्निआये तो देखाकि अंगिरामुनि अग्निबनरहे हैं उनसे कहा कि हेमुनि हमारा स्थान छोड़दो हम तुम्हारे ज्येष्ठपुत्र बनैंगे औ औरभी बहुतपुत्र तुम्हारेहोंगे यह वर पाय अंगिराने अग्निका स्थानछोड़दिया अग्निका अवतारबृहस्पति

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by eGangotri Foundation 2021

अंगिरा के ज्येष्ठ पुत्रभये औ सैकड़ों पुत्र पौत्र और भी अंगिरा मुनिके उत्पन्नभये अग्निको अपना स्थान चतुर्दशीतिथिको प्राप्त भया इसलिये यहतिथि अग्निको अतिप्रियहै स्वर्गमें देवता औ भूमिपर मान्धाता मनु नहुष आदि बड़े२ राजाओंने इस तिथि को मानाहै जो पुरुष युद्धमें मारेजायँ सर्प आदि काटने से मरैं नदी पर्वत अग्नि विष आदि निमित्तसे मरेहों औ जिननेआत्म-घातकिया हो उनका इस तिथि में श्राद्ध करना चाहिये जिससे वे सद्गति को प्राप्तहोयँ इस तिथिके व्रतका हमविधानकहतेहैं चतुर्दशीको उपवास करै औ गंध पुष्प धूप दीप नैवेद्य आदिसे त्रिलोचन श्रीसदाशिवका पूजनकरै औ रात्रिको पंचगव्यअथवा लवण तैलरहितभोजनकरै औ अग्नयेस्वाहा हव्यवाहायस्वाहा सोमायस्वाहाअंगिरसेस्वाहा।इनमंत्रोंसेअष्टोत्तरशतकृष्णतिलों का हवनकरै दूसरेदिनप्रभातही स्नानकर पंचामृतसेशिवजीको स्नानकराय भक्तिसे पूजनकरै औ पूर्वोक्त रीतिसे हवनकरहाथ जोड़(नमोस्तुभूतपतयेनमःसूर्याग्निरूपिणे।पुत्रान्यच्छसुखंयच्छ मोक्षंयच्छनमोस्तुते)यहमंत्रपढ़ैपीछेआरतीकर ब्राह्मणकोभोजन कराय उनको दक्षिणादे मौनसे आपभी भोजनकरै इसप्रकार एक वर्ष व्रतकर सुवर्ण की शिवप्रतिमा बनाय चांदी के वृषपर चढ़ाय दो श्वेत वस्त्रोंसे आच्छादितकर ताम्रपात्र में स्थापनकरै पीछे गंधश्वेतपुष्प धूप दीप नैवेद्य आदिसे पूजनकर ब्राह्मण को देवै जो बनपड़ै तो इसव्रतको सदाही करतारहै एकवर्ष जो इस व्रत को करै वह दीर्घ आयुष भोग कर तीर्थ पर प्राण त्यागताहै औ दिव्य विमान में बैठ दिव्य नारियोंकरकेसेवित स्वर्गमें जाय देवताओंके साथ विहार करताहै वहां बहुतकाल सुखभोग भूमिपर राजाहोताहै औ दाता यज्ञ करनेहारा चतुर ब्राह्मण प्रिय पुत्र पौत्र औ उत्तम पत्नी करके युक्तहोता है शुक्ल

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

चतुर्दशी को जो मनुष्य भक्तिसे शिवपूजनकरैं उनको सब दुर्लभ पदार्थ भी प्राप्त होतेहैं ॥

चौरासीवां अध्याय ॥

राजा युधिष्ठिर पूछते हैं कि हे श्रीकृष्णचंद्र श्रवणिका व्रत किसप्रकार करनाचाहिये औ कब करना चाहिये यह आप वर्णन करैं यह सुन श्रीकृष्णचन्द्र कहने लगे कि हे महाराज मार्गशीर्ष आदि बारहों महीनों में जब द्रव्य प्राप्ति होय औ भक्तिहोय तबहीं यह व्रत करना चाहिये औ विधान इसका यह है कि शुक्लपक्ष की चतुर्दशीको अथवा अष्टमी को पूर्वाह्न में स्नान आदिकर पतिव्रता सुरूपा औ सौभाग्यवती ग्यारह नारियों को निमंत्रण देकर बुलावै औ वेद वेदांग जानने हारे एक ब्राह्मण को निमंत्रित करै फिर पाद्य अर्घ्य चन्दन पुष्प धूप दीप आदिसे उनसबका पूजनकर कंठ सूत्र कटि सूत्र वस्त्रआदि उनको देकर अनेकप्रकार के पक्वान्न उनकेआगेपरोसे औ एक २ जल पूर्ण वर्द्धनीपात्र भी सबकेआगेरक्खै वे वर्द्धनी-पात्र पुष्पमाला चंदनवस्त्र आदिसेभूषित औ सुवर्णयुक्तहोयँफिर हाथ जोड़कर यजमान यह मंत्रपढ़ै (यद्बाल्येयच्चकौमारेवार्द्धके वापियत्कृतम्। तत्सर्वंनाशमायातुऋणंदेवर्षिपितृजम् । इमंमां-समयेपूर्णं तारयस्वभवार्णवात् अनृणोगंतुमिच्छामिविष्णोःपद-मनुत्तमम्)वेसब ब्राह्मणी भी एवमस्तु यह वाक्य उच्चारण करैं पीछे वहब्राह्मणवर्द्धनीपात्रउठाकर(अमुख्याःशिरसोदेव्याः समुत्तीर्यरुहक्रमम् । कटुकंनिंबवृक्षंच ततोवृक्षमधोरुहम् । ततो गच्छ महादेवं श्रवणि श्रवणिकोत्तमे) इसमंत्र से यजमान के शिर पर घुमावै पीछे यजमान उन सबको भोजनवस्त्र दक्षिणा आदि देकर संतुष्ट करे जो स्त्री अथवा पुरुष इस व्रत को करै

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वह सुख पूर्वक प्राण त्यागता है औ इसव्रतकाकरनेहारापुरुष आरोग्य पुत्र पौत्र धन आदि पाय सौ वर्ष संसार का सुख भोग अंत में इंद्रलोक को जाता है औ स्त्री इसव्रतको करै तो गौरीलोक में निवास करै स्त्री को मंत्र बिना भी व्रतआदि करने से उस का फल हो सक्ता है जो इस व्रत के माहात्म्य को भक्ति से सुनै वे भी सब पापों से छूट परमगति को प्राप्त होते हैं जो पुरुष भक्ति से श्रवणिका व्रत करैं औ गुड़ घृत युक्त पक्कान्न स्त्रियोंको भोजन कराय दक्षिणा सहित जल पूर्ण-पात्र उन को देवैं वे बहुत दिन सुख भोग उत्तम गति पातेहैं॥

पचासीवां अध्याय॥

श्री कृष्णचन्द्र कहते हैं कि हे महाराज अब आप नक्तव्रत का बिधान श्रवण कीजिये जिस के जाननेसेही मनुष्य मोक्ष को प्राप्तहोय चाहे जिस मास की कृष्णचतुर्दशी को ब्राह्मण भोजन कराय नक्तव्रतका आरंभ करै प्रति मास में दो अष्टमी औ दो चतुर्दशी होती हैं उस दिन भक्ति से शिवपूजन करै औ शिवध्यानमें तत्पर रहै रात्रि के समय भूमि को पात्र बनाय उसपर रख भोजन करै उपवास से उत्तम भिक्षा भिक्षा से अयाचित औ अयाचित से भी उत्तम नक्तहै इस लिये नक्त व्रत करना चाहिये पूर्वाह्न में देवता भोजन करते हैं मध्याह्न में मुनि अपराह्न में पितर औ सायंकाल में गुह्यक आदिभोजन करते हैं इस लिये सब के पीछे नक्तभोजन करना चाहिये नक्त व्रत करनेहारा पुरुष नित्य स्नान हविष्य औ लघु अन्न का भोजन नित्य हवन औ भूमि शयन करै इस भांति एकवर्ष व्रत करके अंत में सुवर्ण का चांदी का अथवा ताम्रका पात्र घृत से भर पूर्ण कलश के ऊपर स्थापन करै कपिला गौ के पंचगव्यसे

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मृत्तिका के शिवलिंगको स्नान कराय फल पुष्प यवक्षीर दधि दूर्वा तिल चावल ये आठ वस्तु जलमें डाल अर्घ्य देवै दोनों जानु भूमि पर रख पात्रको शिरतक उठायमहादेवजी को अर्घ्य देवै पीछे अनेक प्रकारके भक्ष्य भोज्य औ भात करके बलिदेवै औ एक उत्तम सवत्सा गौ औ एक धुरंधर वृष दरिद्री औ वेद वेत्ता ब्राह्मणको दक्षिणा सहित देवै इस व्रतकाकरनेहारादिव्य देह धार अप्सराओं करके सेवित उत्तम विमान में बैठ रुद्रलोक को जाता है वहां तीनसौ कोटि वर्ष पर्यंत सुख भोगकरराजा बनता है एक बार भी जो इस विधान से नक्तव्रतकर श्रीसदा शिवका पूजन करै वह बिमान में बैठ स्वर्ग को जाता है॥

छियासीवां अध्याय॥

राजा युधिष्ठिर कहते हैं कि हेश्रीकृष्णचन्द्र औरभीजोकोई भुक्ति मुक्तिदेनेहारा व्रत होय तो आप वर्णन कीजिये तब श्रीकृष्णचन्द्र कहने लगे कि हे महाराज अब हम तीनों लोकोंमें प्रसिद्ध शिवचतुर्दशीका विधान कहते हैं मार्गशीर्ष मासकीशुक्ल त्रयोदशी को एक बार भोजनकरै औ चतुर्दशी को निराहार रह कर पार्वती सहित शिवजीका पूजन करै गंध पुष्प धूप दीप आदिकरके। नमःशिवायनमःसर्वात्मनेनमस्त्रिनेत्रायनमोहरय नमइंदुमुखाय नमःश्रीकंठाय नमःसद्योजाताय नमोबामदेवाय नमोऽघोराय नमस्तत्पुरुषाय नमईशानाय नमोऽनन्तधर्मायनमोज्ञानरूपायनमोऽनंतवैराग्यायनमोऽनंतैश्वर्यायप्रधानायनमव्योमात्मनेनमः व्योमव्योमात्मरूपायनमः॥ इनमंत्रोंसेपादलाट नेत्र मुखकंठकर्णभुजहृदयस्तनउदर पार्श्वकटिऊरु जानुजंघागुल्फऔपृष्ठइनअंगोंका पूजनकरै। सृष्ट्यैनमः तुष्ट्यैनमः। इमंत्रोंसेपार्वतीकाअर्चनकरैफिर सवर्णकावृषशुक्लवस्त्रपंचरत्न

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by eGangotri Foundation USA

अनेक प्रकार के भक्ष्यभोज्य ब्राह्मणको देवै (प्रीयतांदेवदेवोत्र सद्योजातःपिनाकधृक्)यह मंत्र पढ़ उत्तराभिमुख हो घृतप्राशन कर भूमि पर शयन करै प्रतिमास को शुक्ल चतुर्दशी को यही विधान करै औ मार्गशीर्ष आदि महीनों में शयन के समय(शंकरायनमस्तुभ्यंनमस्तेपरवीरहन् । त्र्यंबकायनमस्तेस्तु महेश्वर ततःपरम् १ मनःपशुपतेनाथ नमस्तेशंभवेपुनः । नमस्तेपरमानन्दनमःसोमार्द्धधारिणेनमोभीमायचोग्रायत्वामहंशरणंगतः२) ये मंत्रहाथजोड़कर पढ़ै औ इन बारहमहीनों में क्रमसे गोमूत्र गोमय दुग्ध दधि घृत कुशोदक पंचगव्य घृत दुग्ध कमल गोशृङ्ग जल कृष्णतिल ये प्राशन करै औ मंदार मालती केतकी सिंदुवार अशोक मल्लिका कुब्जक पाटला अर्क पुष्प कदंब कमल औ उत्पल इन करके क्रमसे बारहों चतुर्दशियों को पूजन करै इसप्रकार एक वर्ष करके कार्तिक मासमें भक्तिसे शिवपूजन कर अनेकप्रकार के भोजन वस्त्र भूषण दक्षिणा आदि देकरब्राह्मणोंको संतुष्ट कर नीलेरंग का वृष छोड़ै औ एक गौ तथाएक वृष सुवर्ण का बनवाय आठ मोतियों सहित उत्तम शय्या पर रक्खै जल का कुंभ चावल घृत दक्षिणा आदि सहित वहसब सामग्री वेदवेत्ता शांतचित्त सपत्नीक ब्राह्मण को देवै इसमेंकभी वित्तशाठ्य न करै इस व्रतको जोपुरुष भक्तिसेकरै उसकेसबपाप नष्ट होजाते हैं हजार अश्वमेध का फल पाता है औ दीर्घायुष् ऐश्वर्यसंतान विद्या आदिपाय बहुतदिन संसारसुखभोगविष्णु लोकादिकों में विहार करताहुआ शिवलोक में प्राप्तहोताहैइस व्रत के संपूर्ण फलको बृहस्पति ब्रह्मा अनंत सिद्ध आदिभीनहीं वर्णन करसक्ते जोइसमाहात्म्य को पढ़ै सुनै वहभीशिवलोकको जाता है जो नारी पति की औ गुरुकी आज्ञा लेकर इसव्रतको करै तो वहभी परमेश्वर के अनुग्रह से शिवलोकको प्राप्तहोय॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सतत्तालीसवां अध्याय॥

श्रीकृष्णचन्द्र कहते हैं कि हे महाराज अब हम सर्वफल त्याग का माहात्म्य वर्णन करतेहैं आप प्रीति से श्रवण करें मार्ग शुक्ल चतुर्दशीको अथवा और मासकी अष्टमी को ब्राह्मणों को पायस भोजन कराय दक्षिणादे इस व्रत का आरंभकरैवर्ष भर कोई फल मूल भक्षण न करै वर्ष के अंतमें चतुर्दशीकेअथवा अष्टमी के दिन सुवर्ण के रुद्र धर्मराज औ कूष्मांड मातुलुंग वृंताक पनस आम्रातक कपित्थ कलंज श्रीफल जंबीर कदली फल बेर दाड़िम ये फल सुवर्ण के बनावै उदुंबर नारिकेल द्राक्षा दोनों कटेली कक्कोल एला ककड़ी करीर कुटज शमी ये फल चांदी के बनावै औ ताम्रका तालफल बनावै औ पिंडारक खर्जूर सूरण कंद पनस लकुच चिर्भट शाल्मलि फल करेला इंगुदी पटोल ये सब फलभी तांबे के बनवावै दो जलके कुंभ दो बर्द्धनीपात्र दो पात्र भोजन सहित औ धेनु तथा पूर्वोक्तसबफल वेदवेदांग जाननेहारे शांतचित्त औ कुटुंबी ब्राह्मण कोशिवजी औ यमराज की प्रसन्नता के लिये देवै औ(यथाफलेषुसर्वेषुवसंत्यमरकोटयः तथासर्वफलत्यागा च्छिवप्रीतिःसदास्तुमे। यथाशिश्चधर्मश्च सदानन्तफलप्रदौ। तद्युक्तफलदानेन स्यातांमेचवरप्रदौ।यथाफलन्तिकामानि शिवभक्तस्यसर्वदा। तथानन्तफलावाप्ति रस्तुमेजन्मजन्मनि। यथामिन्नान्नपश्यामिशिवविष्णवर्कपद्मजान्। तथाममास्तुविश्वात्मा शंकरःशंकरःसदा) येमन्त्र पढ़ै। सब उपकरणों सहित उत्तम शय्या भूषण दक्षिणा औ जलकुम्भ ब्राह्मण को देकर यथाशक्ति ब्राह्मण भोजन करावै परंतु तैल क्षारवर्जित भोजन देवै जो सब फल न त्याग सकै तो एकही फलका त्याग करै औ सुवर्ण आदि बनवाय इस

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

विधान से ब्राह्मण को देवै यह व्रत शैव वैष्णव भागवती योगी आदि सबको करना चाहिये वेद वेत्ता इस सर्व फल त्याग व्रत को अतिशस्त कहते हैं फलों में जितने परमाणु होयँ उतने हजार युग इस व्रत का करने हारा रुद्रलोक में निवासकरताहै नारियोंको भी यह व्रत अवश्य करना चाहिये इस व्रतकेकरने हारे को किसी जन्म में इष्ट वियोग नहीं होता औ अन्तमेंस्वर्ग बास मिलता है जो भक्ति से इस माहात्म्य को पढ़ै अथवा सुनै वह भी सब पापोंसे छूट स्वर्गको जाताहै ॥

अठासीवां अध्याय ॥

श्रीकृष्णचन्द्र कहतेहैं कि हे महाराज पूर्णिमा तिथि चन्द्रमा की प्रिया है उसदिन मास पूर्णहोता है इसलिये उसको पूर्णमासी कहते हैं पौर्णमासीको युद्ध में चन्द्रमा ने देवताओंसेजय पाया है वृहस्पति की स्त्री तारा में चन्द्रमा आसक्त होगया था इस लिये देवताओंसे युद्ध हुआ राजा युधिष्ठिर पूछते हैं किहे श्रीकृष्णचन्द्र तारा किस की पुत्रीथी चन्द्रमा उसमें क्योंकर आसक्त भया औ देवताओंसे किस विधि युद्धहुआ यह आप कथन करैं यह राजा का प्रश्न सुन श्री कृष्णचन्द्र कहनेलगेकि हे महाराज प्रजापति की अति सुन्दरी तारानाम कन्या थी उस को प्रजापति ने वृहस्पति को बिवाह दिया वह भी यत्न पूर्वक अपने पतिकी सेवा करनेमें प्रवृत्त भई एक दिन उस अति सुन्दरी को चन्द्रमाने देखा देखतेही चन्द्रमा कामवश हुआऔ तारासे कहनेलगा कि हे तारे मेरेसमीप शीघ्र आगमन कर मैं तेरे आधीनहूं ताराने भी चन्द्रमा का अभिप्राय जान कहा कि हे चन्द्र मैं अंगिरामुनि के पुत्र वृहस्पति कीभार्याहूंऔपरदारा का तुमको गमनकरनायोग्य नहीं यह तारा का वचन सुन कर

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

भीचन्द्रमाने न माना औ ताराका दहिनाहाथ पकड़अपनेस्थान
को लेगया यह बात बृहस्पति ने जानी औ बड़ाकोपकर सब
वृत्तान्त इन्द्रसे कहा इंद्रने चन्द्रमा के पास दूत भेजा परन्तु
चन्द्रने कुछ न माना तब इंद्रने सब देवताओं को बुलाकर यह
वृत्तान्त सुनाया यह सुनतेही सब देवता औ गन्धर्व क्रोध से
जल उठे औ रथोंपर चढ़ नाना प्रकारके शस्त्रअस्त्र धार चन्द्र
से युद्ध करने उठ धाये चन्द्रमाने देवताओंकी इसभांति चढ़ाई
देख दैत्य दानव राक्षस आदि अपनी सहाय के लिये बुलाये
औ आपभी रथ पर चढ़ युद्ध के लिये निकला दोनों ओर की
सेना मिलतेही घोरयुद्ध होनेलगा चन्द्रमा ने हिम वृष्टि से दे-
वताओंको भगा दिया औ युद्धमें जयपाय चन्द्रमा गर्जनेलगा
देवताभी पराजितहो विष्णु भगवान् के शरण में गये औ स-
म्पूर्ण वृत्तान्त उनके आगे वर्णन किया यह वृत्तांत सुन विष्णु
भगवान् गरुड़पर चढ़ सुदर्शन चक्रधार सब देवताओंकोसाथ
ले चन्द्रमा से युद्ध करनेके लिये आयेफिर देवता औ दैत्योंका
घोर युद्ध आरम्भहुआ परंतु चन्द्रमाने ऐसा युद्धकिया कि क्षण
मात्र में इन्द्रसहित सब देवता औ गन्धर्वोंको जीत युद्धसेविमुख
किया तब विष्णु भगवान् ने बड़ा कोपकिया औ शंखध्वनि कर
चन्द्रमाको मारनेके लिये सुदर्शन चक्र उठाय उस समय ब्रह्मा
जीने कहा कि आपकेचक्रको त्रैलोक्यमें कोई अवध्य नहीं है औ
चंद्रमा को हमनेब्राह्मणोंका राजा बनायाहैइसलिये आपइसका
बध न करैं जो और उपाय आप कहैं वह कियाजाय तबविष्णु
भगवान् ने कहा कि अमावास्याको चंद्रमा नष्टहोय औफिरजन्म
लेकर पूर्णिमा पर्यंत वृद्धिको प्राप्तहोय औ ब्राह्मणोंकेहव्य कव्य
देवता औ पितरोंको पहुंचावे यह दक्ष का भी शाप चंद्रमाकोहै
यहबा तसबदेवताओंनेस्वीकार करी ब्रह्माजीनेचंद्रमाकोबुलाकर

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

समझाया औ कहा कि हे पुत्र गुरुकी भार्या तुम देदो फिरकभी ऐसा अविनय मतकरना चन्द्रमाने ब्रह्माजीको आज्ञामान उसी समय तारा को बृहस्पतिके अर्पण किया परंतु सबदेवताओं के सम्मुख यहकहा कि इसमें मेरागर्भहै जो संतानहोगी वहमेरी होगी यह चंद्रका वचन सुन बृहस्पतिने कहा कि जिसका क्षेत्र होय वह उसबीजका स्वामी होताहै बीज चाहे जिसका हो यह वेदशास्त्र संपन्न औ धर्मनिष्ठ ऋषियोंने कहाहै इसलिये इसका संतान तुमको नहींमिलसक्तातबचंद्रमानेकहा कि आपकावचन ठीकनहींहै माता तो केवल गर्भ धारणकरनेकेलिये एकथैली है संतान के ऊपर पिताकाही स्वत्वरहताहै यह पौराणिकमुनियों का मतहै इसभांति चन्द्रमा औ बृहस्पतिको बिवादकरते देख ब्रह्माजीने एकान्तमेंतारासे पूछा कि तैंनेकिससेगर्भधारणकिया है यह ब्रह्माजीका वचनसुन लज्जासे ताराने कुछउत्तर न दिया औ उसगर्भ को उसीक्षण वहांहीं त्यागदिया वह बालक ऐसा तेजस्वी उत्पन्नभया कि संपूर्ण स्वर्गमें प्रकाशहोगया ब्रह्माजी ने उस बालकसेहीपूछा कि तू किसका पुत्र है बालकने उत्तर दियाकि चन्द्रमाकापुत्रहूं तब ब्रह्माजीनेप्रसन्नहोऔबालक को बुद्धिमत्तादेख उसकानाम बुधरक्खा औ चंद्रमाकोदिया चन्द्रमा उस बालकको ले प्रसन्नहोताहुआ अपनेघरआया औ बृहस्पति भी अपनी भार्याको ले धीरे२ अपने सदन को गये चंद्रमाने कहाकि पूर्णिमाकोहमारा विजयहुआ औ उत्तम पुत्रपायाइस लिये यहतिथि हमको अत्यन्तप्रियहै इसदिन जो पुरुष औ स्त्री व्रतकर हमारा पूजनकरैंगे उनके सब मनोरथ पूर्णहोंगेइतनी कथा सुनाय श्रीकृष्णभगवान् कहनेलगे कि हे महाराज पूर्णिमा के दिन नदी आदिमें स्नानकर देवता औ पितरोंका तर्पण करै पीछे घरमें आय मंडलबनाय उसके बीच नक्षत्रों सहित

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

चंद्रमालिख श्वेत गंध पुष्प धूप दीप घृतपक्व नैवेद्य औ शुक्लवस्त्र करके चंद्रमाकापूजनकर क्षमापन करावै औ सायंकालके समय (गगनार्णवमाणिक्यं चंद्रदाक्षायणीप्रिय गृहाणार्घ्यमयादत्तम त्रिनेत्रसमुद्भव) इसमंत्र से अर्घ्य देकर रात्रि के समय मौनसे शाकाहारकरै यहव्रत सब मनोरथ पूर्णकरनेहाराहै अमावास्या तिथि पितरोंको प्रियहै उसदिन दानतर्पण आदिकरनेसेपितरों की तृप्तिहोतीहै जो अमावास्याको उपवासकरै उसको अक्षय वटकेनीचे श्राद्धकरनेका फलहोताहै जो अमावास्याकोपिंडदान करै वह इक्कीस कुलका उद्धार करताहै औ आपभी बहुतकाल पितृलोकमें सुख भोगकर पांच जन्मतक धनवान् औ विद्वान् ब्राह्मण होताहै एकवर्षपर्यंत पूर्णिमाव्रतकरके नक्षत्रसहितचंद्रमाकी सुवर्णकी प्रतिमा बनाय वस्त्र भूषण आदिसे उसकापूजन कर ब्राह्मणको देवै इसव्रतकाकरनेहारा पुरुषसबपापोंसेमुक्तहो चन्द्रमा की भांति शोभित होता है औ पुत्र पौत्र धन आरोग्य आदि पाय बहुतकाल संसार सुख भोग अन्त समय प्रयाग में प्राणत्यागकर विष्णुलोकको जाताहै वहां गन्धर्व औ अप्सरा उसकी सेवामें रहतीहैं वहां तीनअयुतकल्प निवासकरताहै जो पुरुष पूर्णिमाको चन्द्रमाका पूजनकरैं और अमावास्याकोपितृतर्पण पिंडदान आदि करैं वे धन धान्य संतान आदिसे कभी खाली नहीं रहते ॥

नवासीवां अध्याय ॥

राजा युधिष्ठिर पूछते हैं कि वर्ष भरमें कौन २ तिथि स्नान दान आदिमें अधिक पुण्यप्रदहैं उनका आपवर्णनकरैं यहसुन श्रीकृष्णभगवान् कहनेलगे कि हेमहाराज वैशाख कार्त्तिक औ माघ इन तीन महीनों की पूर्णिमा स्नान दानकेलिये अतिश्रेष्ठ

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हैं इनको स्नान दान बिना न बितावै तीर्थोंमें स्नानकरै औ वित्तानुसार दान देवै वैशाखी को गंगा में कार्त्तिकी को पुष्कर में औ माघी को काशी में स्नान करै उसदिन जो पितरोंका तर्पण करै वह अनन्त फलपाता है औ पितरों का दुष्कृत से उद्धार करताहै वैशाखीको भोजन सुवर्ण औ वस्त्र सहित जलपूर्ण कुंभ ब्राह्मणों को देवै वह सब उत्तमफलपावै अनेकप्रकारके भोजन गौ भूमि सुवर्ण वस्त्र आदि कार्त्तिकी पूर्णिमाको देवै औ माघी पूर्णिमा को देवता औ पितरों का तर्पणकर सुवर्ण सहित तिल पात्रकंबल रुईकेवस्त्र कपास रत्न आदि दानकरै कार्तिकीपूर्णिमा को वृषोत्सर्गकरै भगवान्का नीराजन करै हाथी घोड़े रथ औ घृत धेनु आदि दश धेनुओं का दान करै औ कदली खजूर नालिकेर दाड़िम मातुलंग ककड़ी वृन्ताक करेला बिम्व कूष्मांड आदिफलदानकरैइनतिथियोंको जो स्नान दान आदिनहींकरते वे जन्मान्तर में रोगी औ दरिद्र होते हैं ब्राह्मणोंको दान देने का तो फल हैही परन्तु बहिन भानजे दौहित्र बूआ आदि को दान देनेका भी इन तिथियोंमें बड़ा पुण्य होताहै मित्र कुलीन बिपत्ति करके पीड़ित दरिद्री औ आशा करके दूरसे आया हो वह अतिथि उत्तमहै उसको दान देनेसे स्वर्गकी प्राप्ति होतीहै सीता औ लक्ष्मण सहित रामचन्द्र जब बन को चलेगये उस समय मातामह के घरसे आय भरतने कौशल्या के आगे बहुत शपथ किये परन्तु कौशल्याको विश्वास न भया तबभरतनेयह शपथकिया कि वैशाखी कार्तिकी औ माघी पूर्णिमाविनास्नान दानके मेरी व्यतीतहोयँ जो मेरीसम्मतिसे रामचन्द्र बनकोगये होयँ तो यह सुनतेही कौशल्या को विश्वास आगया औ भरत को अपने अंकमें बैठाय आश्वासन किया इनतीनों तिथियोंका सम्पूर्ण माहात्म्य कौन वर्णन करसक्ता है यह हमने संक्षेप से

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कहा है इन तीनों तिथियों को जल अन्न वस्त्र पात्र छतरी आदि दान करने हारे पुरुष इन्द्रलोक को जातेहैं ॥

नब्बेका अध्याय॥

राजा युधिष्ठिर कहतेहैं कि हे श्रीकृष्ण चन्द्र और भी जो तिथि ऐसीहोयँ कि जिनको किये स्नान दान जप आदि अक्षय होते हैं उनका आप वर्णन करैं यह राजा का वचन सुन श्रीकृष्णचंद्र कहनेलगे कि हे महाराज यह अत्यंत रहस्य हम आप को कहते हैं जो आजतक किसीको नहीं कहा था वैशाख शुक्ल तृतीया कार्तिकशुक्ल नवमी भाद्र कृष्ण त्रयोदशी औ माघ की पूर्णिमा ये चारों तिथि युगादिहैं अर्थात् इनतिथियोंको क्रम से चारों युगोंका प्रारम्भ हुआहै इनतिथियों को उपवास तप दान जप होम आदि करनेसे कोटि गुण फल होता है वैशाख शुक्ल तृतीयाको गंध पुष्प धूप दीप नैवेद्य वस्त्र भूषण आदिसेलक्ष्मी सहित नारायणका पूजनकर मेषके चर्मपर लवण धेनु स्थापन करै औ उसके चतुर्थांश प्रमाण बछड़ा बनावै पीछे शास्त्र की रीति से दान कर ब्राह्मण को देवै औ (श्रीधरःश्रीपतिःश्रीमान् श्रीशःप्रीयताम्) यह वाक्य कहै तो दशहजार गोदानका फल पावै कार्तिक शुक्ल नवमी को नदी तड़ाग आदि में स्नान कर पुष्प धूप दीप नैवेद्य आदि करके पार्वती सहित श्री सदाशिव का पूजन करे औ तिल धेनु दानकरै (अष्टमूर्तिं नीलकंठः प्रीयताम्)यहवाक्य उच्चारण करै इस प्रकार तिल धेनु दानकरने हारा शिव लोक में निवास करताहै भाद्र कृष्ण त्रयोदशी को पितृ तर्पण कर शहद औ घृतयुक्त अनेक प्रकारके पक्वान्नोंसेब्राह्मण भोजन कराय दुग्ध देनेहारी सुन्दर तरुण सबत्सा गौ ब्राह्मणको देवै औ (पिता पितामहः प्रपितामहश्चप्रीयताम्)यह

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वाक्य कहै इस प्रकार गोदान करनेसे जो फल प्राप्त होता है उसका कोटि वर्षमें भी वर्णननहीं करसके वह पुरुष इसलोकमें पुत्र पौत्र ऐश्वर्य औ परलोकमेंसद्गतिपाताहै माघपूर्णिमाको गायत्रीसहित ब्रह्माजी का पूजन कर सुवर्ण वस्त्र अनेकप्रकार के फलोंसहित नवनीत धेनुका दानकरे औ(पितामहःपद्मयोनिः प्रीयताम्) यह वाक्य कहैइस प्रकार दान करनेवालोंकोतीन लोक में कोई पदार्थ दुर्लभ नहीं इन युगादि तिथियोंमेंजोदान करै वह अक्षय होताहै निर्धनहोय तो थोड़ा २ ही दान करै उसीका अनंत फलहै शय्या आसन छतरी जूता वस्त्र सुवर्ण भोजन आदि ब्राह्मणोंको देना चहिये इन तिथियों को यथा शक्ति ब्राह्मण भोजनकराय मौनसे आपभी भोजनकरै युगादि तिथियोंको दानपूजन आदि करनेसे कायिक वाचिकऔमानस सब प्रकार के पाप नष्ट होजाते हैं औ दान करनेहारा अक्षय स्वर्ग वास पाताहै इनयुगादितिथियों में किये स्नानदानआदि कोटि गुण होजाते हैं यह व्यासादि मुनि कहते हैं॥

डक्यानवेका अध्याय॥

राजा युधिष्ठिर कहते हैं कि हे श्रीकृष्णचन्द्र अब आप सावित्री व्रतका विधान कथन करैं यह राजा का बचन सुन श्री कृष्ण भगवान् कहने लगे कि हे महाराज सावित्री नाम राजकन्याने बनमें जिस प्रकार यह व्रत किया उसका हमनारियों के हितके अर्थ वर्णन करते हैं पूर्वकाल में बड़ा पराक्रमी सत्यवादी क्षमावान् जितेन्द्रिय प्रजाके हित में तत्पर अश्वपतिनाम राजा था उसके कुछ संतान न भई इसलिये वह सावित्रीव्रत किया करता कुछकाल के अनन्तर ब्रह्माजीकी पत्नी सावित्रीने प्रसन्नहो राजा को वर दिया कि हे राजन् एक कन्या तेरे

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कहा है इन तीनों तिथियों को जल अन्न वस्त्र पात्र छतरी आदि दान करने हारे पुरुष इन्द्रलोक को जातेहैं ॥

नब्बेका अध्याय॥

राजा युधिष्ठिर कहतेहैं कि हे श्रीकृष्ण चन्द्र और भी जो तिथि ऐसीहोयँ कि जिनको किये स्नान दान जप आदि अक्षय होते हैं उनका आप वर्णन करैं यह राजा का वचन सुन श्रीकृष्णचंद्र कहनेलगे कि हे महाराज यह अत्यंत रहस्य हम आप को कहते हैं जो आजतक किसीको नहीं कहा था वैशाख शुक्ल तृतीया कार्तिकशुक्ल नवमी भाद्र कृष्ण त्रयोदशी औ माघ की पूर्णिमा ये चारों तिथि युगादिहैं अर्थात् इनतिथियोंको क्रम से चारों युगोंका प्रारम्भ हुआहै इनतिथियों को उपवास तप दान जप होम आदि करनेसे कोटि गुण फल होता है वैशाख शुक्ल तृतीयाको गंध पुष्प धूप दीप नैवेद्य वस्त्र भूषण आदिसेलक्ष्मी सहित नारायणका पूजनकर मेषके चर्मपर लवण धेनु स्थापन करै औ उसके चतुर्थांश प्रमाण बछड़ा बनावै पीछे शास्त्र की रीति से दान कर ब्राह्मण को देवै औ (श्रीधरःश्रीपतिःश्रीमान् श्रीशःप्रीयताम्) यह वाक्य कहै तो दशहजार गोदानका फल पावै कार्तिक शुक्ल नवमी को नदी तड़ाग आदि में स्नान कर पुष्प धूप दीप नैवेद्य आदि करके पार्वती सहित श्री सदाशिव का पूजन करे औ तिल धेनु दानकरै (अष्टमूर्ति नीलकंठः प्रीयताम्)यहवाक्य उच्चारण करै इस प्रकार तिल धेनु दानकरने हारा शिव लोक में निवास करताहै भाद्र कृष्ण त्रयोदशी को पितृ तर्पण कर शहद औ घृतयुक्त अनेक प्रकारके पक्वान्नोंसेब्राह्मण भोजन कराय दुग्ध देनेहारी सुन्दर तरुण सबत्सा गौ ब्राह्मणको देवै औ (पिता पितामहः प्रपितामहश्चप्रीयताम्)यह

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by eGangotri Foundation USA

वाक्य कहै इस प्रकार गोदान करनेसे जो फल प्राप्त होता है उसका कोटि वर्षमें भी वर्णननहीं करसके वह पुरुष इसलोकमें पुत्र पौत्र ऐश्वर्य औ परलोकमेंसद्गतिपाताहै माघपूर्णिमाको गायत्रीसहित ब्रह्माजी का पूजन कर सुवर्ण वस्त्र अनेकप्रकार के फलोंसहित नवनीत धेनुका दानकरे औ(पितामहःपद्मयोनिः प्रीयताम्) यह वाक्य कहैइस प्रकार दान करनेवालोंकोतीन लोक में कोई पदार्थ दुर्लभ नहीं इन युगादि तिथियोंमेंजोदान करै वह अक्षय होताहै निर्धनहोय तो थोड़ा २ ही दान करै उसीका अनंत फलहै शय्या आसन छतरी जूता वस्त्र सुवर्ण भोजन आदि ब्राह्मणोंको देना चहिये इन तिथियों को यथा शक्ति ब्राह्मण भोजनकराय मौनसे आपभी भोजनकरै युगादि तिथियोंको दानपूजन आदि करनेसे कायिक वाचिकऔमानस सब प्रकार के पाप नष्ट होजाते हैं औ दान करनेहारा अक्षय स्वर्ग वास पाताहै इनयुगादितिथियों में किये स्नानदानआदि कोटि गुण होजाते हैं यह व्यासादि मुनि कहते हैं॥

इकानबेका अध्याय॥

राजा युधिष्ठिर कहते हैं कि हे श्रीकृष्णचन्द्र अब आप सावित्री व्रतका विधान कथन करैं यह राजा का बचन सुन श्री कृष्ण भगवान् कहने लगे कि हे महाराज सावित्री नाम राजकन्याने बनमें जिस प्रकार यह व्रत किया उसका हमनारियों के हितके अर्थ वर्णन करते हैं पूर्वकाल में बड़ा पराक्रमी सत्यवादी क्षमावान् जितेन्द्रिय प्रजाके हित में तत्पर अश्वपतिनाम राजा था उसके कुछ संतान न भई इसलिये वह सावित्रीव्रत किया करता कुछकाल के अनन्तर ब्रह्माजीकी पत्नी सावित्रीने प्रसन्नहो राजा को वर दिया कि हे राजन् एक कन्या तेरे

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

उत्पन्नहोगी इतना कह कमण्डलुधरा श्रीसावित्री देवीअंतर्द्धान भई औ थोड़े काल के अनन्तर राजाके अति सुन्दरी एककन्या उत्पन्न भई सावित्री के बरसे प्राप्त भई इसलिये राजा ने उसका नाम सावित्री रक्खा कुछ कालके अनन्तर वह तरुण अवस्था में प्राप्तहुई तबतोउसका इतनातेजबढ़ा कि मानोंतप्त सुवर्ण के उसके अंगहोयँ औ देखनेवालों को यही निश्चयहोय कि यह कोई देवकन्या है वह कन्या भी पिता के उपदेश से सावित्री व्रत किया करती एक दिन व्रतकर शिर स्नान किया औ सावित्री का पूजन औ हवन आदि कर अपनी सखियों सहित पिता के पास गई पिता को प्रणाम कर विनयसे हाथ जोड़ बैठगई राजाने पुत्री का रूप औ तारुण्य देख कहा कि हे पुत्री तू अब वर योग्य हुई औकोई तेरेकोवरता नहीं अबतू मेरे धर्मकी रक्षा कर मैंने धर्म शास्त्रों में यह सुनाहै कि जो कन्या पिताके घर रजस्वला होजाय वह वृषली कहातीहै औ उसका पिता ब्रह्म हत्याको प्राप्त हो नरक को जाताहै इसलिये वृद्ध अमात्योंको साथ लेकर तू स्वयंबर के लिये जा औ जहांअपने योग्य कोई राजकुमार देखै उसीको बरले सावित्री ने भी यह पिता की आज्ञा अंगीकार करी औ सब राज परिकर साथ ले वहां से चली थोड़े कालमेंही राजर्षियोंके आश्रम सब तीर्थ औ तपोवनों में घूमती वृद्ध ऋषियों को अभिवंदन करती मंत्रियों सहित अपने पिता के समीप आपहुंची उस समय नारदमुनि भी वहां बैठे थे सावित्री नारदजीको औ पिताको प्रणामकर अपना वृत्तांत कहनेलगी कि हे महाराज सबआश्रम औ तीर्थ मैंने देखे औ एक राजकुमार को मैंने वर भी लियाहैद्युमत्सेन एक राजा है ईश्वरकी इच्छासे वह राज्य करता २ अंधाहो गया तब उसके शत्रु सबमीने उसका राज्य हरलिया औ उस

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by eGangotri Foundation USA

को निकाल दिया वह अब अपनी रानी समेत तपोवनमें रहतहै उस का एक पुत्र परमधार्मिक पिता का आज्ञाकारी सत्यवान् नाम है उसको मैंने वराहै यह सावित्रीका वचन सुन नारद मुनि बोले कि हे राजा यहबाततेरी कन्याने अच्छीन करीवहबालक रूपवान् पितृभक्त ब्रह्मण्य है औ शिवि राजा के समान सत्य-वादी है इसीसे उस का नाम सत्यवान् पड़ा औ ययाति के सदृश उदार चन्द्र के तुल्य प्रिय दर्शन औ अश्विनीकुमारोंके समान रूपवान् है उसको अश्वबहुत प्रिय है इसलिये मृत्तिका के अश्व बनाया करता है औ चित्रोंमें भी अश्वही लिखता है इसलिये इसका नाम चित्राश्व भी पड़गया है अब वहराजा द्युमत्सेनका पुत्र तरुण अवस्था को प्राप्तभया है बलीहैप्रतापी है इस प्रकार सब गुण उसमें हैं परन्तु यही बड़ा भारी दोष है कि आजसे वर्षवें दिन मृत्यु वश होजायगा यह नारदजी का वचन सुन सावित्री बोली कि हे देवर्षे राजा एक वचनकहतेहैं ब्राह्मण एकबातबोलते हैं कन्याए कबारबरीजातीहै येतीनोंबात बार बार नहीं होतीं अब वह दीर्घायुष् हो चाहे अल्पायुष् निर्गुणहो वा गुणवान् मैंनेउसको बरलिया दूसरेपतिकोकभी न बरूंगी मन में निश्चय करके वचनसे कहाजाताहै औ जो वचन कहा वही करना चहिये इसलिये मैंने जो मनमें निश्चय कर कहा वही करूंगी यह सावित्रीका निश्चययुक्त वचन सुन नारदजीने कहा किहे पुत्रि जो तेरा ऐसादृढ़निश्चय है तो शीघ्र बिवाहकर परमेश्वर सब बात भली करैंगे इतना कह नारद मुनि स्वर्ग को गये औ राजाने भी शुभ मुहूर्त में सावित्री का सत्यवान् से बिवाह करदिया सावित्रीभी मनोवांछितभर्त्ता पाय अति हर्षको प्राप्त भई औ सुख पूर्वक दोनों अपनेआश्रम में रहनेलगे परन्तु नारद मुनि का वाक्यसावित्रीके हृदयमेंखट-

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कताथा जब वर्षपूरा होनेपरआयातब सावित्री ने विचारकिया कि अब मेरे पतिका मृत्यु समीप है यहशोच भाद्र शुक्लद्वादशी के प्रदोष से तीन रात्रिका व्रत ग्रहण कर बैठी औ सावित्री भगवतीका पूजन करती रही औ यहनिश्चय थाही कि आजसे चौथेदिन सत्यवान् का मृत्यु होगा तीनदिन रात सावित्री ने नियमसे व्यतीत किये चौथे दिन देवता पितरों को संतुष्टकर ब्राह्मण भोजनकराय अपने श्वशुर औ सास के चरणों पर प्रणाम किया सत्यवान् बनसे काष्ठलाया करता उस दिन भी काष्ठलेने चला तब सावित्री भी उसके संग चलपड़ी सत्यवान् ने वहां काष्ठ काटकर बोझबांधा औ घरको चला परन्तुउसके मस्तकमें बेदना उत्पन्न हुई जिससे चल न सका काष्ठकाबोझा तो उतार दिया औ सावित्री से कहा कि हे प्रिये मेरे शिर में बहुत व्यथा है इस लिये थोड़ाकाल तेरेउत्संग में शिर रखकर सोना चाहता हूं सावित्रीने कहा कि हे प्राणनाथ आपमेरेअंक में शिर रखकर सुख से शयन कीजिये आपकी शिरकी व्यथा निवृत्त होजायगी तबआश्रमको चलेंगे सत्यवान् सावित्रीकेअंक में शिर धरके बट वृक्षकी छाया में सोया इतनेमें यमराजवहां आयेसावित्रीने उनकोदेखप्रणामकिया और कहाकिदेवतादैत्य गंधर्व आदि तुम कोनहो इस वनमें मेरा धर्षण करनाचाहतेहो तो यह कभीनहीं होसकैगा कोईपुरुषमुझको स्पर्शनहींकरसक्ता मैं पतिव्रताहूं दूसरे पुरुष को मेरा स्पर्श दीप्त अग्निज्वाला की भांतिहै यह सावित्री का वचन सुन धर्मराज ने कहाकि हे सावित्रि सबलोक का क्षय करने हारा मैं यमहूं इस तेरेपतिका आयुष समाप्त होगया है परंतु तू पतिव्रता है इसलिये मेरेदूत इसको न लेजासके तब मैं आपलेनेआयाहूं इतना कह यमराज नेसत्यवान् के शरीरसे अंगुष्ठमात्र पुरुषको खैंचलिया औलेकर

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by eGangotri

अपने लोकको चला सावित्री भी उसकेपीछे होली बहुतदूरजा-
कर यमराजने सावित्रीकोकहा कि हेपतिव्रते अबतूलौटजा इस
मार्गमें इतनीदूर कोईनहींआता तब सावित्रीने कहा कि महा-
राज पतिके साथ आतेहुये मुझे न तो ग्लानि भई औनकुछ श्रम
मैं सुख पूर्वक चली आतीहूं वर्णाश्रमों का आधार वेद शिष्यों
का आधार गुरु औ नारियोंका आधार पतिहै भूमि पर सबको
आश्रय है परन्तु मुझको इसके बिना दूसरा कुछ अवलम्ब
नहीं इसभांति धर्मयुक्त औ मधुर सावित्री के वचनसुन यमराज
प्रसन्न होकर कहनेलगा कि हे पुत्रि मैंतेरेसे प्रसन्नहुआ जोबर
तुझे अपेक्षितहो मांग तब सावित्रीने पांचवरमांगेकि मेरेश्वशुर
के नेत्र अच्छेहोजायँ औ राज्यमिलजाय मेरेपिताके सौपुत्रहोयँ
मेराभर्त्ता दीर्घायुष्पावै सौपुत्र मेरे उत्पन्नहोयँ औहमारीसदा
धर्ममें दृढ़ श्रद्धारहै धर्मराजने ये सब वर सावित्रीकोदे घरको
बिदाकिया सावित्री भी प्रसन्नहोतीहुई अपनेपतिको संग लेकर
आश्रममें आई भाद्र पूर्णिमा को जो उसने व्रतकियाथा यहसब
उसका फलहै इतनीकथा सुन राजायुधिष्ठिरने पूछा कि हेश्री-
कृष्णचंद्र उस व्रतका विधान आप विस्तारसे वर्णनकरैं तबश्री-
कृष्णभगवान् कहनेलगे कि हे महाराज भाद्रशुक्ल त्रयोदशी को
शौच आदिकर तीनदिनके व्रतका नियमग्रहणकरै जोतीनदिन
उपवास रहनेकी शक्ति न होय तो त्रयोदशीको नक्तचतुर्दशीको
अयाचित औ पूर्णिमा को उपवासकरै नित्य नदी तड़ाग आदि
में स्नानकरै औ पूर्णिमाको सरसोंका उबटना लगायस्नानकरै
औ बांसके पात्रमें एकसेर नदीकाबालूलेआवैपीछेसुवर्णकीब्रह्मा
सहित सावित्रीकी प्रतिमाबनाय उसपर स्थापनकर दोरक्तवर्ण
वस्त्रों से उनको आच्छादित करै फिर गंध पुष्प धूप दीप नैवेद्य
से पूजनकर कूष्माण्ड नारिकेल ककड़ी तुरई खजूर कैथा दाड़िम

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by eGangotri Foundation USA

जामन जंभीरी नारंगी अखरोटपनस गुड़ लवणजीरासप्तधान्य आदि सबबस्तुबांसके पात्रमेंरख(ओंकारपूर्विकेदेविवीणापुस्तक धारिणि।वेदमातर्नमस्तुभ्यमवैधव्यंप्रयच्छमे)यहमंत्रपढ़सावित्री को अर्पणकरै रात्रिके समय जागरणकरै गीतवाद्य नृत्य आदि का बड़ा उत्सवहोय नारी मिलकर गीत गावैं ब्राह्मण सावित्री कथाकहैं इस प्रकार सारी रात्रि उत्सवसे बिताय प्रभातहीसब सामग्री सहित सावित्री मूर्त्ति (सावित्रीयंमयादत्ता सहिरण्या सहासना। ब्रह्मणःप्रीणनार्थायब्राह्मणप्रतिगृह्यताम्) यह मंत्र पढ़ वेदवेत्ता अग्निहोत्री दरिद्री औ सावित्री कल्पजाननेहारे ब्राह्मणको देवै औ सबसामग्री ब्राह्मणकेघर पहुंचादेवै आपभी उसकेसाथ दशकदम जाय और यथाशक्ति ब्राह्मणभोजनकराय आपभी हविष्य अन्न भोजनकरै इसीप्रकार ज्येष्ठमासकीपूर्णिमाको बटवृक्षके नीचे काष्ठभारसहित सत्यवान् औ सावित्रीकी प्रतिमा बनाय पूजनकरै रात्रिको जागरण आदिकर प्रभात वह प्रतिमा ब्राह्मण को देवै इस विधानसे जो सावित्रीव्रतकरै वह पुत्र पौत्र धन आदि सब पदार्थ पायचिरकाल तक भूमिपरसब सुख भोग अपने पतिसहित ब्रह्मलोकको जातीहै यहव्रतपुण्यवर्द्धक पापहारकदुःखप्रनाशन औ धनदायकहै जोनारीभक्तिसे इसव्रतको करैं वे सावित्री की भांति दोनों कुलोंका उद्धारकर पति सहित चिरकाल तक सुखभोगती हैं जो इस माहात्म्यको पढ़ै अथवा सुनै वहभी मनो वांछित फलपावै॥

बानवेका अध्याय॥

श्रीकृष्णचंद्र कहते हैं कि हे महाराज पूर्वकाल में मध्यदेश के बीच वृकस्थल नाम ग्राममें कलिंग भद्रानाम अतिरूपवती औ वहुपुत्रा राजादिलीपकी रानीथी वह सदा ब्राह्मणोंको दान

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

देती देवार्चन करतीब्राह्मण भोजनकराती उससमयमें कलिंग-भद्रारानी के समान कोई दूसरा दानदेनेहारा न था एकसमय उसने कार्तिकमासमें छःमहीनेका कृत्तिकाव्रत धारणकिया औ नित्य पूजन दान ब्राह्मण भोजन हवन आदिमें तत्पररहती व्रत में थोड़ाकाल अवशेषथा कि एकदिन उसको रात्रिसमयपतिके साथ सोतीहुईको भयंकर सर्पनेकाटा काटतेही उसकेप्राण जाते रहे औ जन्मान्तर में बकरी बनी परंतु व्रत के प्रभाव से बकरी भी जातिस्मरा थी उसने अपना कृत्तिका व्रत फिर ग्रहणकिया अपने यूथ से अलग हो उपवास करने लगी एक दिन उसको उसके स्वामी ने बांधरक्खा था उस समय किसी जातिस्मर ऋषिने उसको देखा औ जाना कि यह रानी कलिंगभद्रा है तब दयाकर बंधनसे उसको छुटाया वहांसे छुट उसने बेरी के पत्र भक्षण कर शीतलजल पानकर व्रत पारण किया ऋषि अपने आश्रमकोगये औ वह अपनेव्रतमें तत्परभई औ कुछकालकेअनन्तरउसने प्राणत्यागकिया औ गौतमऋषिकोभार्या अहल्या के गर्भसे उत्पन्नभई मातापिताने उसका नाम योगलक्ष्मी रक्खा औ तरुण भई जब गौतम मुनि ने बड़े तपस्वी औ शांत चित्त शांडिल्यमुनिको बिवाहदी वहभी शांडिल्य के घर में सरस्वती स्वाहा अरुंधती गौरी राज्ञी गायत्री अथवा साक्षात्महालक्ष्मी की भांति शोभित होती थी नित्य देवता पितर औ अतिथियोंके सत्कार में लगीरहती ब्राह्मणों को भोजनदेती एक दिन शांडिल्यमुनिने योग बलसे सब वृत्तांत जानकर पूछा कि हे प्रिये कृत्तिका कितनी हैं तब योगलक्ष्मीको भी पूर्ववृत्त स्मरणआया औ कहा कि महाराज छःकृत्तिका हैं तब शांडिल्यमुनिनेउसको मंत्र औ कृत्तिका व्रतका फिर उपदेश किया जिसके करने से दोनों चिरकाल संसार सुख भोग स्वर्गको गये राजायधिष्ठिर

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ने इतनी कथा श्रवणकर पूछाकि हेश्रीकृष्णचन्द्र कृत्तिकाव्रतका क्या विधानहै आप वर्णन करैं तब श्रीकृष्णचंद्र कहनेलगे कि हे महाराज कार्त्तिक की पूर्णिमाको कृत्तिका नक्षत्रमें चंद्रमा औ वृहस्पति होयँ औ उसदिन सोमवार होय वह महा कार्त्तिकी होतीहै महाकार्त्तिकी तो बहुत वर्षोंमें औ बड़ेपुण्यसे प्राप्तहोती है इसलिये साधारण कार्त्तिकी पूर्णिमा को ही उपवास करै कार्त्तिकी पूर्णिमा को प्रभातही दंतधावन आदि कर नक्तव्रत का अथवा उपवासकानियम ग्रहणकरै पुष्कर प्रयाग कुरुक्षेत्र नैमिष कुशावर्त्त बिल्वक गोकर्ण अर्बुद अमर कंटकआदि किसी तीर्थमें अथवा अपने घरमें ही स्नानकरै फिर देवताऋषिपितर औ अतिथिका पूजनकर सायंकालके समय घृत औदुग्धसेपूर्ण पात्रमें सुवर्ण चांदी रत्न नवनीत अन्न औ पिष्टसे छःकृत्तिका की मूर्त्ति क्रमसेबनाय स्थापनकरै फिर उनको रक्त सूत्र से वेष्टित कर सिंदूर कुंकुम चंदन चमेली के पुष्प धूप दीप नैवेद्य आदि से उनका पूजन कर (ओंसप्तर्षिदाराध्यनरत्नस्थवल्लभा। येब्राह्मणाऋषिभावेनयुक्ताः। तुष्टःकुमारस्ययथार्थमातरोममापिसुप्रीततराभवंतुस्वाहा। यह मंत्रपढ़ सब कृत्तिकाओंकोमूर्तिब्राह्मण ो देवै ब्राह्मण भी ग्रहणकरके (शर्मदाःकामदाःसंतुइमानक्षत्र तरः। कृत्तिकादुर्गसंसारा त्तारयन्त्वावयोःकुलम्) यहमंत्रपढ़ ेछे ब्राह्मण सब सामग्रीलेकर घरको जाय औ छः कदम तक यजमान उसकेपीछे चलै पीछे लौटकर ब्राह्मण भोजन करावै इसप्रकार जो पुरुष कृत्तिका व्रत करै वह सूर्य के तुल्य प्रकाशवान् विमानमें बैठ नक्षत्र लोकमें जाताहै वहां प्रलयकालपर्यंत दिव्य देहधार दिव्य नारियोंके साथ विहार करता है जो स्त्री इस व्रत को करै वह भी अपने पति सहित नक्षत्र लोकमें जाय बहुत काल दिव्य भोग भोगतीहै औ जो स्त्रीपुरुषइसमाहात्म्य

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

को भक्ति से सुनै वह सब पापों से मुक्त होता है इस विधि से सुवर्ण आदिकी कृत्तिकावनाय पात्रमेंरखगंध पुष्प अक्षत धूप दीप नैवेद्य आदिसे पूजनेहारा जन्म मरणसे छुट जाताहै॥

तिरानवेंका अध्याय॥

श्रीकृष्णचन्द्र कहते हैं कि हे महाराज फाल्गुनकी पूर्णिमा को स्नान आदिकर लक्ष्मी सहित जनार्दन का पूजन करै औ चलते फिरते बैठते उठते जनार्दन का स्मरण करै औपाखंड पतित नास्तिकचंडाल आदि से संभाषण न करै जितेन्द्रिय रहे रात्रिके समय चंद्रमाको नारायण का रूप औ रात्रिको लक्ष्मी रूप भावनाकर (श्रीर्निशाचंद्ररूपस्त्वं वासुदेवजगत्पते। मनोभिलषितंदेव पूरयस्वनमोनमः) इस मंत्रसे अर्घ्य देवै पीछे तैल लवण रहित भोजन मौनसे करै इसी प्रकार चैत्र वैशाख ज्येष्ठ इन तीनमहीनें में भी पूजनकर प्रथम पारण करै आषाढ़ श्रावण भाद्रपद औ आश्विन इन चारमहीनों की पूर्णिमा को श्री सहित श्रीधर का पूजन कर चंद्रमा को अर्घ्य देवै औ पूर्ववत् दूसरा पारणकरै कार्त्तिकआदि चार महीनोंमें भूतिसहितकेशव का यजनकर चन्द्रमा को अर्घ्य देवै औ तीसरा पारण करै प्रत्येक पारण के अन्तमें ब्राह्मणोंको दक्षिणादेवै प्रथम पारण के चार महीनों में पंचगव्य दूसरे पारणके चार महीनों में कुशोदक औ तीसरे में सूर्य किरणों करके तप्तजल प्राशन करै रात्रि के समय गीत वाद्य भगवान्के गुण कीर्त्तन आदिकरै औ प्रति मास जल कुंभ जूता छतरी सुवर्ण वस्त्र भोजन औ दक्षिणा ब्राह्मणको देवै औ मार्गशीर्ष आदि महीनों में केशव नारायण माधव गोविन्द विष्णु मधुसूदन त्रिविक्रम वामन श्रीधर हृषीकेश राम पद्मनाभ इनकाकीर्तन करै प्रतिमास देने को समर्थ न

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

होय तो वर्षके अंतमें सुवर्णका चन्द्रबिम्बबनाय फलवस्त्रआदि से पूजनकर ब्राह्मणको देवै इसप्रकार व्रत करनेहारे पुरुष को अनेक जन्म पर्यंत इष्टवियोग नहीं होता औ वह पुरुष नारायण स्मरण करताहुआ मृत्युवशहोस्वर्गको जाताहै यमराजका मुख नहींदेखता बहुतकाल स्वर्ग सुख भोगकर धन धान्य युक्त सत्कुलमें जन्म लेताहै जो इस मनोरथपूर्णिमा का व्रत करे औ रात्रि को लक्ष्मी रूप तथा चन्द्रमा को नारायण स्वरूप मान चन्दन तिल अक्षत आदि से अर्घ्यदेवैं उनके सबमनोरथसिद्ध होते हैं॥

चौरानवेका अध्याय॥

श्रीकृष्णभगवान् कहतेहैं कि हे महाराज अब हम अशोक पूर्णिमाका विधानकहते हैं जिसउपवासकोकर मनुष्यकभी शोक को नहीं प्राप्त होता फाल्गुनकी पूर्णिमा को शिर आदि अंगोंमें मृत्तिका लगाय नदी आदिमें स्नानकर मृत्तिकाकास्थंडिलबनाय उसकेऊपर भूधरनारायणओं अशोकाधरणीका पुष्प पत्र नैवेद्य आदिसेपूजनकरहाथजोड़(यथाविशोकांधरणिकृतवांस्त्वांजनार्दनःतथामांसर्वशोकेभ्योमोचयाशेषधारिणि॥यथासमस्तभूताना माधारत्वेव्यवस्थिता तथाविशोकंकुरुमांसकलेच्छाविभूतिभिः॥ ध्यानमात्रेयथाविष्णोःसावधानासिमेदिनि। तथामनःसुस्थितंमे कुरुत्वंभूतधारिणि)येमंत्रपढ़ै पीछे रात्रिकेसमय चन्द्रमाकोअर्घ्य देवै उपवासरक्खै अथवा रात्रि के समय तैलक्षारवर्जित भोजन करै चार २ मासमें एक२पारणकरै प्रत्येक पारणकेअंतमें विशेष पूजा औ जागरण करै प्रथम पारण में धरणी द्वितीयमें मेदिनी औ तृतीयमें वसुंधराका पूजनकरै प्रतिपारणमें दोवस्त्र ब्राह्मण को देव औ धरणी सहित भगवान् को घृतस्नान करावै वस्त्र

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

के अभावमें सूत्र से धरणीका पूजनकरै औ घृताभावमें दुग्ध से स्नान करावै वर्षके अंत में सवत्सागौ भूमि वस्त्र भूषण आदि ब्राह्मणको देवै यहव्रत पातालमेंस्थितभूमिनेकिया तब भगवान् ने वराह रूपधार उसका उद्धार किया औ प्रसन्न होकर कहा कि हे धरणि तेरे इस व्रतसे हम परम संतुष्ट भये और भी जो पुरुष स्त्री इसव्रतको भक्तिसे कर हमारा पूजन करैंगे औ यथा विधि पारण करैंगे वे जन्म २ में सब प्रकार के क्लेशों से छुट तुम्हारी भांति सब कल्याणके भाजनहोंगे जो पुरुष इसअशोक पूर्णिमा व्रत को करै वह सबपापोंसे औ शोकसेछुट सब प्रकार की संपत्ति पावै ॥

पंचानबेका अध्याय ॥

राजायुधिष्ठिर कहतेहैं कि हे श्रीकृष्णचन्द्रभक्तिसेनारायण का आराधन करैं तो सब मनोबांछित फल प्राप्त होतेहैं परन्तु स्त्री पुरुषों को संतान हीन होना इससे अधिक कोई दुःख औ शोक नहीं सब सुखोंका हेतु संतानहै जगत्में वे धन्यहैं जोसर्ब गुण संपन्न आरोग्य बलवान् धर्मज्ञ शास्त्रवेत्ता दीन अनाथोंका आश्रय भाग्यवान् हृदय को आनंद देनेहारा औ दीर्घायुष् पुत्र पातेहैं अब हम ऐसा व्रत सुनना चाहते हैं कि जिसके करने से ऐसे लक्षणों करके युक्त पुत्र उत्पन्नहोयँ यहराजाका वचन सुन श्रीकृष्णभगवान् कहनेलगे कि हे महाराज इसमें एक प्राचीन इतिहास हम वर्णन करतेहैं हैहयवंशमें कृतवीर्यनाम राजाहुआ है उसकी हज़ार रानियोंमें मुख्य सब लक्षणोंकरके युक्त शील-घनानाम रानीथी उसने एकदिन पुत्रप्राप्तिके लियेब्रह्मवादिनी मैत्रेयीको पूछा तब मैत्रेयीने उसको यह व्रत उपदेश किया कि मार्गशीर्षमासमें जिसदिन मृगशिरानक्षत्र होय उसदिन स्नान

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

आदिकर अनंतभगवान् के बामचरण का पूजन गंध पुष्प धूप दीप आदिसे करै औ (अनन्तंसर्वकामाना मनन्तंभगवत्फलम्। नमाम्यनंतंचपुनस्तदेवापुत्रजन्मनि। अनंतपुण्योपचयमनंतंच महाव्रतम् यथाभिलषितावाप्तिं कुरुमेपुरुषोत्तम) ये मंत्र पढ़ प्रार्थनाकर एकाग्रचित्तहो बारंबार प्रणामकर ब्राह्मणकोदक्षिणा देवैऔ(अनंतःप्रीयताम्) यहवाक्य उच्चारण करै औ गोमूत्र प्राशनकरै औरात्रिके समय तैल क्षार वर्जित भोजनकरै इसीविधि से पौषमास पुष्यनक्षत्र में भगवान्की बाम कटिका पूजन कर गोमूत्र प्राशनकरै माघमास मघानक्षत्रमेंभगवान्केभ्रूकापूजन करै फाल्गुनमें फाल्गुनी नक्षत्र में स्कंधका पूजनकरै इन चार महीनोंमें गोमूत्र प्राशनकरै औ सुवर्ण सहित तिल ब्राह्मण को देवै चैत्रमें चित्रानक्षत्रमें भगवान्के दक्षिणस्कंधका पूजन करै वैशाखमें विशाखानक्षत्रमेंदक्षिणभुजाकापूजनकरैज्येष्ठमें ज्येष्ठा नक्षत्रमेंदक्षिणकटिकापूजनकरै आषाढ़मेंआषाढ़ानक्षत्रमेंदक्षिण पादकापूजनकरै इन चार महीनोंमें पंचगव्यप्राशनकरै ब्राह्मण को सुवर्णदेवै औ रात्रिको भोजनकरै श्रावणमासमें श्रवणनक्षत्र में भगवान्के दोनोंचरणोंका पूजनकरै भाद्रमें भाद्रपदा नक्षत्र में गुह्यका पूजनकरै आश्विनमें अश्विनी नक्षत्र में हृदय का पूजनकरै औ कार्त्तिक मासमें कृत्तिका नक्षत्र में अनंत भगवान् के शिर का पूजन करै इन चार महीनों में घृत प्राशन करै औ घृतही ब्राह्मणको देवै प्रथम चार मासमें घृतसे हवन करै द्वितीय चारमास में धान्य से औ तृतीय चार मासमें अनंत भगवान् की प्रीति के लिये दुग्ध से हवन करै इस प्रकार बारह महीनों में तीन पारण कर वर्ष के अंत में सुवर्ण की अनंतभगवान्की मूर्त्ति औ चांदीके हल मूसलबनावै पीछे मूर्त्ति को ताम्र पीठ पर स्थापन कर दोनों ओर हल मसल रख पुष्प धूप दीप

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नैवेद्य आदि से पूजनकर (अनंतायनमः। सर्वात्मनेनमः। शेषायनमः। कामायनमः। वासुदेवायनमः। संकर्षणायनमः। सर्वार्थदायिनेनमः। श्रीकंठनाथायनमः। इंदुमुखायनमः) इन मंत्रों से शिरपाद जानु कटि पार्श्व उदर भुज कंठ औ मुख का पूजनकर (हलायनमः। मुसलायनमः) इनमंत्रों से हलमूसलकापूजनकरै औ नील वस्त्र पुष्प माला आदिसे अनंत भगवान् का पूजनकर बारह घट अन्न औ जल युक्त स्थापन करै उनमें बारह महीनों का पूजन करै नक्षत्र नक्षत्र देवता संवत्सर औ सब नक्षत्रों के राजा चंद्रमा का विधि पूर्वक पूजनकरै फिर पुराण वेत्ता धर्मज्ञ शांत प्रियदर्शन ब्राह्मणका वस्त्र भूषण आदि से पूजन कर यह सब सामग्री उसके अर्पण करै औ (अनंतः प्रीयताम्) यह वाक्य कहै पीछे और ब्राह्मणों कोभी भोजन दक्षिणा आदि देकर संतुष्ट करै इस विधिसे जो इस अनंतव्रत को समाप्त करै वह सब अभीष्ठ फलपावै हे शीलघने जो तू उत्तम पुत्रकीइच्छा रखती है तो विधि पूर्वक श्रद्धा से इस व्रतको करश्रीकृष्णभगवान् कहते हैं कि हे महाराज इसप्रकार मैत्रेयीसे उपदेशपाय शीलघना व्रत करनेलगी व्रतके प्रभावसे अनंत भगवान् संतुष्ट हुये औ रानी शीलघना को पुत्रदिया शीलघनाके पुत्र का जन्म होतेही आकाश निर्मल होगया सुखदेने हारा पवनचलने लगा देवदुन्दुभि बजनेलगे पुष्प वृष्टि भई सारे जगत् में मंगलहुआ गंधर्व औ अप्सरा नाचने गाने लगे सब लोकों का मन धर्ममें आसक्त हुआ राजा कृतवीर्य ने अपने पुत्र का नाम अर्जुन रक्खा जो कृतवीर्य का पुत्र होने से कार्तवीर्य कहाया कार्त्तवीर्यने बड़ा तप करके विष्णु भगवान् के अवतार श्रीदत्तात्रेयजी का आराधन किया औ यंबर पाये कि हे अर्जुन तू चक्रबर्तीहो जो सायंकाल औ प्रभात (नमोस्तुकार्त्तवीर्याय) यह

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वाक्य उच्चारण करैंगे उनको प्रस्थ भर तिल दान का पुण्य होगा औ जो तुम्हारा स्मरण करते रहैं गे उन पुरुषोंका द्रव्य नष्ट नहीं होगा इतना वर भगवान्से पाय राजा कार्तवीर्यधर्म से सप्तद्वीपवतीपृथिवीकापालनकरनेलगा उसनेबड़ी २ दक्षिणा वाले यज्ञ किये सब शत्रुओंको जीता इसभांति रानीशीलघना ने अनंतव्रतके प्रभावसेअति उत्तम पुत्रपाया जोपुरुषअथवास्त्री इस कार्त्तवीर्यकेजन्मको श्रवणकरै वहसातजन्मपर्यंत संतानका दुःख न पावै जो इसअनंत व्रतको भक्तिसे करे वहउत्तमसंतान औऐश्वर्य पावै ॥

छियानवेका अध्याय ॥

राजा युधिष्ठिर कहते हैं कि हे श्रीकृष्णचन्द्र ऐश्वर्य आदि के प्राप्त न होनेसे इतना कष्ट नहीं होता जितना प्राप्तहोकर नष्ट होजानेसे होता है इस लिये आप ऐसाकोई व्रत कहैंजिस के करने से ऐश्वर्यभ्रंस औ इष्टवियोग न होय यह वचन सुन श्रीकृष्ण भगवान् कहनेलगे कि हे महाराज यह बड़ाभारीदुःख है कि प्राप्त हुये सुखका नाश होजाना इसके लिये यहविधान करना चाहिये कि बारह महीनोंके नाम नक्षत्रों में कार्त्तिकादि मासोंमें पुष्प धूप दीप आदिसे भगवान् का पूजन करै कार्त्तिकादि चार महीनों में कृसरान्न नैवेद्य लगावै औ यहीब्राह्मणों को भोजन करावै फाल्गुनादिचारमहीनोंमें संयाव नैवेद्य लगावै औ आषाढ़आदि चार माससें पायस नैवेद्य लगावै पंचगव्य प्राशन करै औ भक्तिसे नारायणका अर्चनकर (नमोनमस्तेच्युतसंक्षयोस्तुपापस्यवृद्धिं समुपैतुपुण्यं । ऐश्वर्यवित्तादिसदाऽक्षयंमेक्षयंतमोयातुतवप्रसादात्। यथाच्युतत्वंपरतः पररस्मात्सुब्रह्मभूतःपरतःपरात्मा।तथामुरारेकुरुवांछितंमेहरापदंपापहराप्रमेय।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अच्युतानंतगोविंद प्रसीदयदभीप्सितम्। तदक्षयंसदादेव कुरु ष्वपुरुषोत्तम)इनमंत्रोंसे प्रार्थनाकरै पीछे रात्रिके समय भगवान्का नैवेद्य आप भक्षणकरै वर्ष पूरा होनेपर घृत पूर्णताम्र पात्र औ दक्षिणा ब्राह्मणको देकर(अच्युतःप्रीयताम्) यहवाक्य कहै इस प्रकार सात वर्ष व्रत कर सुवर्णकी अच्युत मूर्त्तिबनाकर स्थापन करै औ उसके आगे भगवान् की परमभक्ता औ पतिव्रता सांभरायिणी नाम ब्राह्मणी की चांदीकी मूर्त्तिबनाय स्थापन करै पीछे उनका गंध पुष्पादि उपचारों से पूजन कर क्षमापन करावै प्रतिवर्ष जो घृतपात्र न दिया होय तो उसी समय घृतपूर्ण सात ताम्रपात्र सुवर्ण सात सवत्सागौ सातजल पूर्ण घट छतरी जूता उत्तम शय्या सब सामग्री सहित घर औ भूमि वित्तानुसार ब्राह्मण को देवै औ लक्ष्मी सहित विष्णुभगवान् का पूजनकर बारंबार प्रणामकर क्षमापन करावै इसविधि से जो व्रत औ भगवान् का पूजन करै उसके धन ऐश्वर्य आदि का क्षय नहीं होता औ स्वर्गबास पाता है इतना कथनकरश्री कृष्णभगवान्बोले कि हेमहाराज स्वर्गमें बड़ी तपस्विनी सिद्धा औ सबके संदह हरनेहारी सांभरायणी नामक एक नारी रहती है एक समय इंद्रने वृहस्पति से पूछा कि हमारे पहिले जितने इंद्र होगये हैं उनका क्या आचरण औ चरित था आप वर्णन कीजिये वृहस्पति ने कहा कि हे देवराज सब इंद्रोंका वृत्तांत तो हम नहीं जानतेकेवल एक दो इंद्रों का समाचार हमको विदित है तब इंद्र ने कहा कि हे देवगुरो आप के बिना हमयह वृत्तांत किससे पूछें वृहस्पति कुछकाल विचार कर कहने लगे कि हे पुरंदर न तो देवता औ न गंधर्व इतने प्राचीन वृत्तको जानतेहैं केवल तपस्विनी औ धर्मज्ञा सांभरायिणी अतिप्राचीन वृत्तांत जानतीहैं उससे आप पूछें यह सुन वृहस्पतिको संगले इन्द्र

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by eGangotri Foundation USA

सांभरायिणी के स्थानपर गये सांभरायिणी ने बड़े सत्कार से उनको बैठाया औ पूजन आदिकर विनयसे आगमनका प्रयोजन पूछा तब वृहस्पति बोले कि हे सांभरायिणि देवराज को प्राचीन वृत्तांत सुननेका बड़ा कुतूहल है जो तू व्यतीत इन्द्रोंका चरित्र जानतीहोय तो वर्णन कर यहसुन सांभरायिणी बोली कि हे देवगुरो जितने इन्द्र होचुकेहैं सबका वृत्तांत मैं भली भांति जानतीहूं बहुत से मनु औ सप्तर्षि मैंने देखेहैं मनुओं के पुत्रों को जानतीहूं औ सब मन्वंतरों का चरित्र मुझे विदित है जो तुम पूछो वही सुनाऊं यह सांभरायिणीका वचन सुन इंद्र औ वृहस्पति ने स्वायंभुव स्वारोचिष उत्तमतामस रैवत चाक्षुष आदि मनु औ व्यतीत इन्द्रों का वृत्तांत उससे पूछा सब वृत्त ठीक २ सांभरायिणी ने वर्णन किया औ एक इन्द्रकासमाचार यों कहा कि शंकुकर्ण नाम दैत्य पूर्वकालमें बड़ा प्रतापी हुआ वह सब देवताओं को जीत स्वर्ग में इंद्र को जीतने आया उस समय शची औ इन्द्र एक शय्या पर थे शंकुकर्ण को देखतेही भय से इन्द्र शय्याके नीचे छिपे औ शची वृहस्पति केघरभाग गई शंकुकर्ण उस शय्या के ऊपर बैठगया औ सब देवता उस के दर्शन के लिये आनेलगे विष्णुभगवान् भी शंकुकर्ण को मिलने आये उनको देख वह शय्यापर से उठा औ बड़े स्नेही बंधु की भांति विष्णुभगवान् को आलिंगन किया विष्णुभगवान् ने भी उसको आलिंगन कर ऐसा निष्पीड़न किया कि उसके सबअस्थि चूर्ण होगये औ घोर शब्द करताहुआ मृत्यु वश भया दैत्यको मरेजान इन्द्र भी शय्या के नीचे से शिर झुकाये निकले औ विष्णुभगवान्की स्तुति करनेलगे हे देवराज यह वृत्तांत मैंने अपने नेत्रों से देखा था तबइन्द्र ने सांभरायिणीसे पूछा कि तू इतनेप्राचीन वृत्तांतक्योंकर जानतीहै सांभरायिणी

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by eGangotri Foundation, USA

ने कहा कि स्वर्ग का ऐसा कोई वृत्तान्त नहीं है जो मैं न जानतीहूं तब इन्द्रने इसका कारण पूछा कि ऐसा क्या सत्कर्म तैंने किया है जिस के प्रभाव से अक्षय स्वर्गबास तैंने पाया तब सांभरायिणी ने कहा कि मैंनेप्रतिमास मास नक्षत्रोंमेंसात वर्ष पर्यंत भगवान् का पूजन किया औ उपवास किया है यह सब उसी कर्मका फल है जो पुरुष अक्षय स्वर्ग बास इंद्र पद ऐश्वर्य संतति आदि चाहै उस को अवश्य विष्णु भगवान् का आराधन करना चाहिये हे देवंद्र जो तुमने पूछा सो मैंने वर्णन किया अब और जो पूछने की इच्छाहोय सो पूछिये धर्म अर्थ काम औ मोक्ष ये चारों पदार्थ विष्णुभगवान् के आराधन से प्राप्त होते हैं इतना सुन बृहस्पति औ इंद्र सांभरायिणी पर बहुत प्रसन्न भये औ दोनों भक्ति पूर्वक सांभरायिणी का बताया व्रत करनेलगे श्रीकृष्ण भगवान् कहते हैं कि हे महाराज जो इस सांभरायिणी के किये व्रतको सातवर्ष पर्यंत भक्ति से करैं वे अक्षय स्वर्गबास पाते हैं॥

सत्तानबेका अध्याय॥

राजा युधिष्ठिर पूछते हैं कि हेश्रीकृष्णचन्द्र पुरुषऔस्त्रियों को उत्तम रूप किस कर्म के करने से प्राप्त होता है औ उत्तम रूप पाकर भी फिर अंग भंग आदि दोष किस कर्मकेकरने से होते हैं यह आप वर्णन करैं कई अति रूपवान् स्त्री पुरुष काने अंधे लँगड़े आदि होजाते हैं उत्तम गतिलावण्य औ मीठे वचन रूपवान् केही अच्छे लगते हैं कुरूप को केवल विड़ंबना है इस लिये उत्तम रूप प्राप्ति का उपाय वर्णन कीजिये यह राजा का वचन सुन श्रीकृष्ण भगवान् कहने लगे कि हे महाराज यही बात अरुंधतीने वशिष्ठजीसे पूछीथी तब वशिष्ठजी

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ने यह कहा कि हे प्रिये विष्णु भगवान्का आराधन औ पूजन बिन किये क्योंकर उत्तम रूप प्राप्त होसक्ता है जो पुरुषअथवा स्त्री उत्तम रूप ऐश्वर्य औ सन्तान चाहै उसको नक्षत्रपुरुष रूप विष्णु भगवान्का पूजन करना चाहिये अरुंधतीने नक्षत्रपुरुष का विधान पूछा तब वशिष्ठजी कहनेलगे किहे प्रिये चैत्र मास से लेकर भगवान् के पाद आदि अंगोंका पूजन करै उपवास रख स्नानकर नक्षत्र पुरुष के अंगों का पूजन इस विधिसेकरैं कि मूलमें पाद रोहिणी में जंघा अश्विनी में जानु दोनों आषाढ़ाओं में ऊरु दोनों फाल्गुनीमें गुह्य कृत्तिका में कटि दोनों भाद्र पदाओं में पार्श्व रेवती में कुक्षि अनुराधामें वक्षस्स्थल धनिष्ठा में पृष्ठ विशाखा में दोनों भुजा हस्त में दोनों हाथ पुनर्वसु में अंगुलि आश्लेषा में नख ज्येष्ठामें ग्रीवा श्रवण में कर्ण पुष्यमेंमुख स्वातिमें नाभि शतभिषा में मुख मघामेंनासिकामृगशिरामेंनेत्र चित्रा में ललाट औ भरणीमें शिर औ आर्द्रा में केशोंका पूजन करै उपवास के दिन तैलाभ्यंग न करै नक्षत्र नक्षत्र देवता औ चन्द्रमा का भी प्रति नक्षत्र में पूजन करै औ ब्राह्मण भोजन करावै जो अशौच आदि होजाय तो दूसरे नक्षत्र में उपवास कर पूजनकरै व्रत समाप्त होनेपर सुवर्ण का नक्षत्र पुरुष बनाय उत्तम शय्यापर स्थापन करै औ ब्राह्मण मिथुन को शय्या पर बैठाय वस्त्र भूषण आदिसे उन का पूजन कर सप्त धान्य सवत्सागौ छतरी जूता घृत पात्र औ दक्षिणा सहित वह नक्षत्र पुरुष (यथानविष्णुभक्तानां वृजिनंजायतेक्वचित् । तथा सुरूपमारोग्यं सुखंचतदिहास्तुमे १ यथाचलक्ष्म्याशयनंन शून्यंतेजनार्दन । शय्याममाप्यशून्यास्तु तथाजन्मनिजन्मनि २) ये मंत्र पढ़ ब्राह्मण को देवै जो इतना देनेका सामर्थ्य नहोय तो घृतमात्र सहित एकगौ ब्राह्मणको देवै इस व्रत के

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

करनेसेसर्वांग सुंदररूप मनकीप्रसन्नता आरोग्य उत्तम संतान मीठीवाणी औ ऐश्वर्य सात जन्म तक प्राप्त होतेहैं औ सबपाप निवृत्त होजातेहैं इतनी कथा कह श्रीकृष्णभगवान् बोले कि हे महाराज इसप्रकार नक्षत्रपुरुषका विधानवशिष्ठजीनेअरुंधती को कथन किया वही हमने आपको सुनाया जो इस विधि से नक्षत्ररूपभगवान्कापूजनकरतेहैं वे अवश्यहोउत्तमरूपपातेहैं॥

अठानबेका अध्याय॥

राजा युधिष्ठिर पूछते हैं कि हे श्रीकृष्णचन्द्र यह आपने विष्णु नक्षत्र पुरुष का विधान वर्णन किया अब आप शिव-भक्तों के कल्याण के अर्थ शैवनक्षत्र पुरुष का विधान कहैं यह राजा का वचनसुन श्रीकृष्णभगवान् कहनेलगे कि हे महाराज नक्षत्रपुरुषका जिसदिन पूजनकरै उस दिन उपवास अथवा नक्तव्रत करना चाहिये फाल्गुन शुक्लपक्षमें हस्त नक्षत्र होय उस दिन से शैवनक्षत्र व्रतका धारण करै औ प्रदोष के समय शिव पूजनकरै (शिवायनमः शंकरायनमः हरायनमः शंभवेनमः भीमायनमः त्रिनेत्रायनमः अनंगांगहरायनमः सुरज्येष्ठायनमः शूलिनेनमःपार्वतीपतयेनमः कपालिनेनमःसद्योजातायननः वामदेवायनमः खट्वांगधारिणेनमः रुद्रायनमः खंडेंदुधारिणेनमः पृष्ठकायनमः कृत्तिवाससेनमः वाचस्पतयेनमःभैरवायनमः स्थाणवेनमः पूष्णोदन्तविनाशिनेनमः सर्वदर्शिनेनमः त्र्यम्बकायनमः अंधकारयेनमः सोमधारिणेनमः पाशांकुशवज्रशूलकपाल सर्पं दुधरायगजासुरान्तकांधकादिबिनाशमूलकायशिवायनमः) इन मंत्रोंसे हस्त आदि सत्ताईसनक्षत्रोंमें क्रमसे पाद गुल्फ जानु ऊरु मेढ्र कटि नाभि दोनोंपार्श्व उदरवक्षस्स्थल हृदय दोनोंभुजा हाथ नख पृष्ठ कंठ जिह्वा दंत ओष्ठ नासिका नेत्र दोनोंकर्ण

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

शिर औ सर्वांग का पूजनकर गंध पुष्प धूप दीप आदि उपचार निवेदन करै औ रात्रि के समय तैल क्षार रहित भोजन करै प्रतिनक्षत्रमें सेरभर चावल औ घृतपात्र ब्राह्मणको देवै दोनक्षत्र एकदिन होजायँ तो दो अंगोंका एकदिन पूजनकरै सूतकादिमें पूजन न करै फिर वह नक्षत्र आवै तब उस अंगका पूजन करै इस प्रकार व्रत कर अंतमें सुवर्ण की शिव पार्वती की प्रतिमा बनाय उत्तम शय्यापर स्थापन करै पीछे उनका सर्वोपचारोंसे पूजन कर कपिलागौ छत्र चामर दर्पण जूता वस्त्र भूषण अनुलेपन आदि सहित वह मूर्ति ब्राह्मण को देवै औ यह मंत्र पढ़ै (यथा न देवशयनं तवपर्वतजातया । शून्यंकदाचिद्भवति तथामे संतुसिद्धयः । यथानदेवःश्रेयान्वै त्वदन्योविद्यतेक्वचित् । तथामामुद्धराशेष दुःखसंसारसागरात्) पीछे प्रदक्षिणाकर विसर्जन करै औ शय्या गौ आदि सबसामग्री ब्राह्मण के घर पहुंचा देवै इतनाकह श्रीकृष्णभगवान् बोले किहेमहाराजदुश्शील दांभिक कुतार्किक निंदक लोभी आदिको यह व्रत न बतानाचाहियेशांतस्वभाव शिवभक्त इस व्रतके अधिकारी हैं इस व्रतके करने से महापातक भी निवृत्त होजातेहैं जो स्त्री पतिकी आज्ञापाय इस व्रतको करै उसको कभी इष्टबियोग नहीं होता जो इस व्रत के माहात्म्य को पढ़ै अथवा श्रवण करै उसके पितरों का नरक से उद्धार होजाताहै ॥

तिनानबेका अध्याय ॥

राजा युधिष्ठिर पूछतेहैं कि हेश्रीकृष्णचन्द जो नक्षत्र पुरुष व्रत को ग्रहण करके फिर न कर सकै तो कौन कर्म करनेसे वह व्रत संपूर्ण होय यह आप कथन करैं यह राजाका प्रश्न सुन श्रीकृष्णभगवान् बोले किहे महाराज यह अतिरहस्य बात आ

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by eGangotri Foundation USA

ने पूछीहै आपके अनुरोधसे हम वर्णन करतेहैं अनेक प्रकार के उपद्रव मद मोह आदिसे जो व्रत भग्नहोजायँ उनकी पूर्ति के लिये अवश्य यह संपूर्ण व्रत करना चाहिये इसव्रतके करने से खंडित व्रत पूर्ण फल देने हारे होजाते हैं जिस देवता का व्रत भग्न होजाय उसकीपत्नी सहित सुवर्णकी अथवाचांदीकीमूर्त्ति बनाय उस व्रत के दिन स्थापन कर पंचामृत से स्नान करावै पीछे जलपूर्ण कलश के ऊपर विराज कर गंध पुष्प अक्षत धूप दीप वस्त्र भूषण बलि आदि से पूजन कर (व्रतहीनस्यदीनस्य प्रायश्चित्तमजानतः। शरणंभवखिन्नस्यकुरुष्वाद्यदयांप्रभो।तप श्चिद्रंव्रतच्छिद्रं यच्छिद्रंपूजनेमम। तवप्रसादात्तद्देवसर्वमच्छिद्र मस्तुनःस्वाहा। अमुकदेवतायैनमः पूर्वतोदक्षिणतःपश्चिमतउ-त्तरतः उपर्यधस्ताद्दिक्पालेभ्योनमः) इस मंत्र से अर्घ्य देवै पीछे देवता के पाद जानु कटि शिर वक्षस्स्थल कुक्षि हृदय पृष्ठ बाहु शिखा औ केशोंका पूजन कर (पूजितस्त्वंयथाशक्त्या नमस्तेस्तु सुरोत्तम। ऐहिकामुष्मिकींनाथ कार्यसिद्धिंदिशश्वमे)इस मंत्र को पढ़ क्षमापन कराय सत्पात्रब्राह्मण को संमुख बैठाय उस को पूजनकर (इदंव्रतंमयाखंडं कृतमासीत्पुराद्विज। भगवंस्त्व-त्प्रसादेन संपूर्णतदिहास्तुमे) यह मंत्र पढ़ सब सामग्री सहित वह प्रतिमा ब्राह्मण को देवै औ ब्राह्मण भी ग्रहणकर (वाक्यं पूर्णमनःपूर्णंपूर्णःकायोव्रतेनते। संपूर्णस्यप्रसादेन भवपूर्णमनो-रथः। ब्राह्मणायत्प्रभाषंतेह्यनुमोदंतिदेवताः। सर्वदेवमयोविप्रो नतद्वचनमन्यथा। जलधिःक्षारतांनीतःपार्वसर्वमभक्ष्यताम्। स-हस्रनेत्रःशक्रोपिकृतोविप्रेर्महात्मभिः। ब्राह्मणानांतुवचनाद्ब्रह्म हत्याप्रणश्यति अश्वमेधफलंसाग्रं प्राप्यतेनात्रसंशयः व्यासवा-ल्मीकिगर्गगौतम पराशरधौम्यवशिष्ठांगिरसनारदादिमुनिवच-नात्संपूर्णंतेव्रतंभवतु) ये मंत्रपढ़ै यजमान भी ब्राह्मणको विसर्जन

CC-0. Suruki Kangri University Haridwar Collection. Digitized by eGangotri

कर सब सामग्री उसके घर भेजदेवै पीछे पंचयज्ञ कर भोजन आदि करै इस संपूर्ण व्रत को जो एकबार भी भक्तिसे करै वह प्रथम किये हुये खंडित व्रतका संपूर्ण फलपाता है औ व्रतखंडन करने के पापसे छुटता है इस व्रतका करता पुरुष धन रूप आरोग्य कीर्ति आदि पाय सौवर्षपर्यंत भूमिपर सुखभोग स्वर्ग जाय देवताबनता है वहां देवताओं के साथ बहुतकाल विहारकर अंत में मोक्षको प्राप्त होता है श्रीकृष्ण भगवान् कहतेहैं कि हेमहाराज यह व्रत प्रायश्चित्त हमको गोकुल में प्रसन्न हो गर्गजीने उपदेश किया था आपभी इस व्रतको करैं जिससे जन्मांतरोंमें भी किये खंडित व्रत सम्पूर्ण होजायँ॥

सौका अध्याय॥

राजा युधिष्ठिर पूछते हैं कि हे श्रीकृष्णचंद्र वर्णाश्रमों के धर्म औ आचार तो हमने पुराणोंमें बहुत बार श्रवण किये अब यहसुनना चाहते हैं कि स्त्रियोंका कौन देवताहै औ किस व्रतउपवास आदि के करनेसे नारी स्वर्गको जातीहैं यहआप वर्णनकरैं यह राजा का वचन सुन श्रीकृष्ण भगवान् कहने लगे कि हे महाराज हमारे सोलह हजार रानी हैं वे रूपमें औ गुणोंमेंसब एकसे एक बढ़कर हैं एक समय बसंत ऋतुमें कि जब सब बन उपबन फूल रहेथे कोकिला कुहू २ शब्द करतेथे उन सबरानियों ने कामदेवके समान रूपवान् हमारे पुत्र सांबको देखासांब को देखतेही वे सब कामकेबश हो व्याकुल भईं हमने यहचेष्टा उनकी देख शापदिया कि हमारे स्वर्गगमनके अनंतरतुमको चोर लूटेंगेयह हमारा वचन सुन वे सब अतिदीनतासे अश्रुपात करती हुईं बोलीं कि हे प्राणनाथसबजगत्केस्वामी आपहमारेपतिइस दिव्य नगरमें रत्नजटित भवनों में निवास देवताओंकेसदृशपुत्र

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

इन सबको त्याग चोरोंकोदासी बन किसबिधि हमाराकालक्षेप होगा औ क्योंकर हमारा उद्धार होगा यह उनका दीन वचन सुन हमसे कहा कि तुम सब अग्नि की पुत्री अप्सरा हो औ हमारी रानी बनने के लिये तुमने शुक्लपक्षकी द्वादशी का व्रत कर शय्याआदिका दान किया उससे हम तुमको पति मिले एक समय तुम सब मानस सरोवर में जलक्रीड़ा कर रहीं थीं वहां नारद मुनि आये तुमने उनका आदर सत्कारनकियातब उनने तुमको शापदिया कि पतिसे तुम्हारा वियोग होय चोर तुमको हरले जायँ औ वेश्या बन जाओ इसप्रकार तुम को नारदजीका शाप पहिलेही था औ वैसाही शाप हमारे मुख से निकल गया इस लिये तुम अवश्य चोरों की दासी बनोगी परंतु अबभी जो हम कथन करैं सो सुनो पूर्वकालमें जब देवासुर संग्राम हुआ उसमें लाखों दैत्य दनाव राक्षस आदि मारे गये उन सबकी विधवा नारियों को एकत्रकर देवराजने आज्ञा दी कि तुम सब वेश्या बनकर राजाओं के मंदिरों में औ देवालयों में रहो राजा औ बहुश्रुत ब्राह्मण तुम्हारे पति होंगे धन देनेहारे पुरुषको देवताकी भांति शुश्रूषा करना सुरूप कुरूप का बिचार मत करना औ निर्द्धन को कभी समीप मत आनेदेना जो धन बिना किसी पुरुषका संग करोगी तो ब्रह्महत्याकेतुल्य पातक तुमको होगा बहुत मद्य मतपीना सदा कुटिल बुद्धिहोना परन्तु जिसकी दासी बनकर रहो उसके साथ कभी व्यभिचार मतकरना दासी होकर जो स्वामी से व्यभिचारकरै वह अधोगतिको प्राप्त होतीहै औ उत्तम दिनोंमें उपवासकर देवता औ पितरों की प्रीति के लिये गौ भूमि वस्त्र सुवर्णआदि ब्राह्मणोंको देते रहना और भी तुम्हारे उद्धारके लिये हम उपाय कहते हैं जिस दिन आदित्यबार को हस्त पुष्य अथवा पुनर्वसु नक्षत्र

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

होय उस दिन सर्वौषधि जलसे स्नानकर कामदेव रूप विष्णु भगवान् का पूजन करै (कामायनमः मोहकारिणेनमः उत्कंठकायनमः आनंदायनमः पुष्पचापायनमः पुष्पबाणायनमः अनंगायनमः मकरध्वजायनमः) इन मन्त्रोंसे पाद जंघा कंठ मुखबामांग दक्षिणांग शिर औ सर्वांग का पूजन कर (नमःश्रीपतयेतार्क्ष्यध्वजांकुशधरायच । गदिनेपीतबस्त्राय शंखिने चक्रिणेनमः । नमो नारायणायेति कामदेवात्मनेनमः । नमःशांत्यैनमःप्रीत्यै नमो रत्यैनमः श्रिये नमःपुष्ट्यैनमस्तुष्ट्यैनमःसर्वार्थदायच) इनमंत्रों से गंधमाल्यपुष्प धूप दीप नैवद्य आदि करके कामदेवस्वरूप गोबिंदका पूजनकरै पीछे वदेवेत्ता औ धर्मनिष्ठ ब्राह्मणों को बुलाय उसका पूजनकर सेरभर चावल सहित घृतपात्रउसको देवै औ (माधवःप्रीयताम्) यहवाक्य उच्चारणकरै पीछे भोजन आदिकर उस ब्राह्मणकोकामदेवकारूपमानसब प्रकारउस को संतुष्ट करै इस भांति एक वर्ष पर्यंत आदित्यवारव्रतकरकेतेरहवें मास में गुड़ पूर्ण कलश ऊपर ताम्रपात्रमें सुवर्णकोरतिसहित कामदेवकी प्रतिमा स्थापनकर उसका पूजन करै औ ब्राह्मण मिथुन बुलाय बस्त्र भूषण आदि से उनका पूजन कर सब उपस्करों करके सहित उत्तम शय्या छत्रजूता दीवटपादुकाआसन इक्षु दण्ड सवत्सागौ औ दक्षिणा सहित वह मूर्ति (यथांतरंनपश्यामिकामकेशवयोस्सदा तथैवसर्वकामाप्ति रस्तुविष्णोस्सदाम म) यहमंत्र पढ़ ब्राह्मणको देवै ब्राह्मण भी (कोदात्कस्मा अदात्) इत्यादि वैदिक मंत्रपढ़ प्रतिग्रहलेवैपीछे प्रदक्षिणाकर ब्रह्मा को विसर्जनकरै औ सब सामग्री उस के घर भेजै उसदिन यह नियम रक्खै कि आदित्यवारको जो ब्राह्मण रतिकी प्रीतीसे आवै उसका सब प्रकारसे सन्तोष करै औ एक २ पुत्तइस औ शांत चित्त ब्राह्मण का सदा पूजन करै औ उसकी [illegible] पुत्र

CC-0. Gurukul Kangri University, Haridwar Collection. Digitized by eGangotri Foundation USA

दूसरेका भी करै जो किसीप्रकारका विघ्न होय तो प्रणयसे ही ब्राह्मणको संतुष्ट करै श्रीकृष्णभगवान् कहतेहैं कि इतना कथन कर इन्द्रनेकहा कि वेश्याओंके उद्धारकेलिये यहव्रतहमनेकहाहै तुम्हारा उद्धार इसव्रतके करनेसे होगा हे महाराज यही व्रत हमने गोपियोंको उपदेश किया जो वेश्या भक्तिसे इस व्रत को करै वह कई कल्प विष्णुलोक में निवास करती है॥

एकसौएकका अध्याय॥

श्रीकृष्णभगवान् कहतेहैं कि हे महाराज अब हम वृन्ताक त्यागका विधान कहते हैं एक वर्ष छःमहीने अथवा तीन मास वृन्ताक का त्यागकर पीछे भरणी अथवा मघामें उपवास कर स्थंडिलबनाय उसपर अक्षतपुष्पोंसे (यममावाहयामि धर्मराजमावाहयामिकालमावाहयामि चित्रगुप्तमावाहयामिमृत्युमावाहयामि परमेष्ठिनमावाहयामि)इनमंत्रोंसेआवाहनकर गंध पुष्प नैवेद्य आदि करके पूजनकरै पीछे अग्निस्थापनकर तिलऔघृत करके (यमायस्वाहा धर्म्मराजायस्वाहा कालायस्वाहा नीलाय स्वाहा चित्रगुप्तायस्वाहा वैवस्वतायस्वाहा मृत्यवेस्वाहा परमेष्ठिनेस्वाहा) इनमंत्रोंसेआहुतिदेकर अग्निमूर्द्धाइत्यादि वैदिक मंत्र करके अष्टोत्तर शत आहुति देवै औ भूषण वस्त्र छत्र जूता कालाकंबल काला बैल गौ औ दक्षिणासहित सुवर्णका वृन्ताक ब्राह्मणकोदेवै औ यथाशक्ति ब्राह्मणभोजन भी करावै इसविधि [illegible] करनेहारा पौंडरीक यज्ञ का फल पाताहै सात जन्म पर्यंत [illegible] दर्शन नहींकरता औ सातहज़ार कोटिवर्ष पर्यंतस्वर्ग में [illegible]गताहै जो पुरुष एक वर्ष वृंताक त्याग अन्तमें घृत तक्र [illegible]सुवर्णवृन्ताक ब्राह्मणको देवै वह कभी यमलोक न देखै॥

—※—

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

एकसौढोका अध्याय ॥

श्रीकृष्णभगवान् कहतेहैं कि हे महाराज अबहमग्रहनक्षत्र व्रतका विधान कहतेहैं जिसके करनेसे क्रूरग्रहभी सौम्य होजांय औ लक्ष्मी धृति तुष्टि तथा पुष्टिकी प्राप्तिहोतीहै आदित्यबार को हस्त नक्षत्र होय उसदिन सूर्यभगवान् का पूजन कर नक्तनकरै इसीप्रकार सात आदित्यबारोंको नक्तव्रतकर अंतमें सुवर्णकी सूर्यभगवान् की प्रतिमाबनाय ताम्रपात्र में स्थापनकर घृतसे स्नानकराय रक्तचन्दन रक्तपुष्प रक्तवस्त्र धूप दीप आदि से पूजनकर मोदक नैवेद्यलगावै औ छतरी जूता दो रक्त वस्त्र दक्षिणा सहित वहमूर्त्ति (आदिदेवनमस्तुभ्यंसप्तसप्तेदिवाकर त्वरयातारयस्वास्मानस्मात्संसारसागरात्(यहमंत्रपढ़ ब्राह्मण को देवै इसव्रत के करनेसे आरोग्य संपत्ति औ संतानकी प्राप्ति होतीहै चित्रानक्षत्र युक्त सोमबार से आरंभकर सात सोमबार को नक्तव्रतकरै अन्तमें चांदीकीचन्द्रप्रतिमा बनाय चांदीअथवा कांस्यके पात्र में स्थापनकर श्वेतपुष्प श्वेत वस्त्र आदि से पूजन कर दही भात नैवेद्यलगाय छतरी जूता दक्षिणा सहित वह मूर्त्ति ब्राह्मणको दे यथाशक्ति ब्राह्मण भोजन करावै इस व्रत व करने से चन्द्रमा प्रसन्न होता है औ चन्द्रमा प्रसन्न होजाने से सब ग्रह अनुग्रह करतेहैं स्वाति नक्षत्र युक्त भौमबारको व्रतका आरंभकर सात नक्तव्रतकरै अन्तमें सुवर्णकी भौमप्रतिमाबनाय ताम्रपात्र में स्थापनकर रक्तचन्दन रक्तवस्त्र आदि से पूजनकर घृतयुक्तकसार नैवेद्यलगाय (जन्मनःप्रभवेऽपित्वंमंगलःपृच्छ्यसेबुधैः । अमंगलंनिहत्याशुसर्वदायच्छमंगलम्) यह मंत्रपढ़ब्राह्मण को देवै इसीप्रकार विशाखा युक्तबुधबारमें बुधका पूजनकर (बुधत्वंबुद्धिजननोबोधव्यःसर्वदानृणाम् । तत्वाववोधंकुरु

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

राजपुत्र नमोनमः) यहमंत्रपढ़बुधप्रतिमाब्राह्मणको देवैअनुराधा युक्तबृहस्पत्तिवारसे सात नक्तव्रतकर अंतमें सुवर्णकीबृहस्पति मूर्त्ति बनाय सुवर्णपात्रमें स्थापनकर गंध पीत पुष्प पीत वस्त्र यज्ञोपवीतआदिसे पूजनकर खंडके भक्ष्य नैवेद्य लगाय (धर्मशास्त्रार्थतत्त्वज्ञ ज्ञानविज्ञानपारग । अलब्ध बुद्धिगांभीर्यदेवाचार्यनमोस्तुते) यहमंत्रपढ़ ब्राह्मणको देवै इसी प्रकार ज्येष्ठायुक्त शुक्रवारको व्रतका आरंभकरै औसात नक्तव्रतकरअंतमें सुवर्ण कीशुक्रप्रतिमाबनाय चांदीअथवाबांसकेपात्रमें स्थापनकरश्वेत चंदन श्वेतवस्त्र आदिसे पूजनकर घृत पायसका नैवेद्यलगाय (भार्गवोभर्गशुक्रोपिशुक्रक्रमविशारदः। हत्वाग्रहकृतान्दोषान् सर्वकामप्रदोभव)यहमंत्रपढ़ब्राह्मणको देवै मूलायुक्त शनिवार से सातनक्तव्रत सात शनिवारों में करअंतमेंशनिराहु औकेतुका पूजनकरै तिल औ घृत करके ग्रहोंके नामसेहोमकरैअर्कपलाश खदिर अपामार्ग पिप्पल उदुंबर शमी दूर्वा औ कुशाये नवग्रहों की क्रमसे समिधाहैं इनमें प्रत्येक समिधाकरके एकसौआठ २ अथवा अट्ठाईस २ आहुति देवै शनैश्चरआदिकी सुवर्णकीप्रतिमा बनाय कस्तूरी नील वस्त्र आदिसे पूजन कर कृसर नैवेद्य ठगावै औ (शनैश्चरनमस्तेस्तु नमस्तेराहवेतथा। केतवेचनमस्तुभ्यंसर्वसंपत्प्रदोभव) यहमंत्रपढ़ सबसामग्रीसहित ब्राह्मण को देवै इस विधान के करनेसे सब ग्रहोंकी पीड़ा शांतहोजाती है औ क्रूर ग्रहभी सौम्य होजाते हैं शनि राहु औ केतुकीप्रतिमा को लोहपात्रमें स्थापनकर पूजाकरै औ कृष्णा गरुका धूपदेवै जो इस विधानको करै उसके सब उपद्रव शांतहोजातेहैं औजो इस ग्रहकल्पको पढ़ै अथवा श्रद्धासे श्रवणकरै उसके ऊपरसब ग्रह अनुग्रहकर धन संतान आरोग्य सुख ऐश्वर्यआदिदेते हैं ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

एकसौतीनका अध्याय॥

श्रीकृष्णभगवान् कहतेहैं पूर्वकाल में त्रेतायुगके बीच अना-वृष्टिहोने से बड़ा दुर्भिक्ष पड़ा उस घोरकाल में कौशिक मुनि अपने स्त्री पुत्रों को साथ ले घर छोड़ दूसरे देशको चले परंतु रस्ते में सब कुटुंब का पोषण न होसका इसलियेनिर्दयहोहृदय को कठोर कर एक बालक को मार्गमेंही छोड़दिया वहअकेला बालक भूंखा प्यासा वनमें रोता फिरता था अकस्मात् एक पीपलका वृक्ष उसने देखा औ उसके समीप एक बावड़ी भी दृष्टि आई बालकने पीपलकेफलबीन२खाये औ ठंढाजलपिया कुछ स्वस्थहो वहीं रहने का बिचार किया मुनिका बालकही तो था वहांहीआश्रम बनाय तप करनेलगा नित्यपीपलके फल खाय कालक्षेपकरता एकदिननारदमुनिवहां आ निकले बाल-कने उनको प्रणाम किया औआदरसे बैठाया नारदजीउसकी अवस्था औ विनयदेख बहुत प्रसन्नहुये औ उसकी दीनतापर दयालु हो बालकके मौंजीबंधन आदि सब संस्कार कर पद क्रमः रहस्य सहित वेदउसकोपढ़ाय वैष्णव द्वादशाक्षर मंत्रका उपदेश करदिया बालक मंत्र पातेही विष्णु भगवान्का ध्यान औ मंत्र का जप करने लगा नारदजी भी वहांही रहे थोड़ेका-ल मेंही बालक के तप से संतुष्टहो गरुड़ पर चढ़ विष्णु भग-वान् वहां आये बालकने उनको नारदके वचन से जाना औ भगवान्में दृढ़भक्ति मांगी भगवान्भी ज्ञान औ योग का उप-देश औ अपने में दृढ़ भक्ति देकर अंतर्द्धान भये बालक भी महाज्ञानी होगया एक दिन नारदमुनि से बालक ने पूछा कि महाराज यह किस कर्मका फल है कि मैंने इतना कष्ट उठाया माता पिता का कुछ ठिकानाही नहीं संस्कार भी अनुग्रहकर

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

आपने किये यह नारदजी बालक का वचन सुन बोले कि हे बालक शनैश्चर ने तुमको इतनी पीड़ा दी औ सारा देश उसी दुष्टग्रहने पीड़ित किया वह शनैश्चर आकाश में प्रज्वलितदेख पड़ता है यह सुनतेही बालक को बड़ा क्रोध हुआ औ शनैश्चर को आकाश से अपने तपके प्रभाव करके गिराया शनैश्चर भी एक पर्वतपरपहिलेगिरे जिसमें पैर टूटजानेसेपंगु होगये नारद जी शनैश्चर को भूमि पर गिरे देख हर्ष से नाचनेलगे औ सब देवताओं को बुलालाये औ शनैश्चर की दुर्गति सबकोदिखाई तब ब्रह्माजीने बालक से कहा कि हे बालक तैंने पीपलके फल खाकर तप किया इसलिये तेरा नाम पिप्पलाद होगया जो पुरुष स्थावर वार अर्थात् शनिवार को इसआश्रम में तेरापूजन करैंगे अथवा पिप्पलाद इस नाम का स्मरण करैंगे उन को सात जन्म पर्यंत शनिपीड़ा न होगी अब तुम निरपराध शनैश्चर को हमारी आज्ञा से पूर्ववत् आकाशमें स्थापन करदो हे पुत्र ग्रह पीड़ा की निवृत्ति के लिये शांति होम बलि नमस्कार आदि करने चाहिये इस भांति ग्रहों का अनादर नहीं करना शनि पीड़ा निवृत्ति के लिये शनिवार को तैलाभ्यंग करै औब्राह्मण को भी अभ्यंग के लिये तैलदेवै शनिकी लोहकी प्रतिमा बनाय तैल के पात्र में रक्खै औ एक वर्ष पर्यंत प्रति शनिवार को पूजन करै अंतमें कृष्ण पुष्प कृष्ण दो वस्त्र कृसर तिलभात आदि करके पूजन कर कृष्ण गौ काला कंबल तिल तेल औ दक्षिणा सहित शन्नोदेवो इत्यादि वैदिकमंत्र पढ़ ब्राह्मणकोदेवै औ ब्राह्मण बिना औरवर्ण(क्रूरावलोकनवशाद्भुवनं योनाशयति दुष्टोधनकनकसुखानिददात्यसौशनैश्चरःपातु)यह मंत्र पढ़ै यह मंत्र राजानल को शनैश्चर ने स्वप्न में आप उपदेश कियाहै। पीछे(खंडंनीलांजनप्रख्यं नीलवर्णसमप्रभम्। छायामार्त्तंडसंभूतं

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नमस्यामिशनैश्चरम्) यह मंत्र पढ़ ब्राह्मणको विसर्जन करै जो मनुष्य प्रति स्थावरबार को एक वर्ष व्रत करैं औ इस विधि से उद्यापन करैंगे उनको कभी शनैश्चर की पीड़ा न होगी इतना कहसब देवताओंको संगले ब्रह्माजी अपने धाम को गये औ पिप्पलादमुनि ने भी ब्रह्माजीकी आज्ञामान शनैश्चरको अपने स्थान में पहुंचादिया इस शनैश्चरोपाख्यान को जो भक्तिसेसुनै उनको शनि पीड़ा न होगी लोह की शनिप्रतिमा गढ़ाय तेल से पूर्ण लोहकलश पर स्थापन करै दक्षिणा सहितब्राह्मण को देवै तो कभी शनि पीड़ा न होय॥

एकसौचारका अध्याय॥

श्रीकृष्णभगवान् कहते हैं कि हे महाराज संक्रांति के दिन स्थंडिल के ऊपर पद्म बनाय उसमेंरक्तचंदन करवीर पुष्पआदि करके सूर्यनारायण का पूजन कर (नमस्तेविश्वरूपायविश्व धाम्नेस्वयंभुवे। नमोनमस्तेवरद ऋक्सामयजुषांपते) इसमंत्रसे अर्घ्य देवै औ ब्राह्मणको जलकुंभ औ घृतपात्र सहित सुवर्णका कमल देवै औ नक्त व्रतकरै इस प्रकार एक वर्ष पर्यंत प्रतिमास संक्रांति व्रत औ सूर्य नारायण का पूजन कर अंतमें घृतपात्र का हवनकर बारह गौ जो सामर्थ्य न होय तो एकगौ सस्ययुक्त भूमि अथवा सोने चांदी तांबा आटा आदिसे बनी भूमि औ सुवर्णकी सूर्य प्रतिमा ब्राह्मण को देवै इस में वित्तशाठ्य न करै जो पुरुष इस प्रकार संक्रांतिव्रत करै वह प्रलय पर्यंत स्वर्गमेंनिवास करता है औ जन्मान्तरमें चक्रवर्ती राजाहोय पुत्रउत्तमस्त्रीआरोग्य औ दीर्घायुष् पाताहै जो इस संक्रांतिव्रत विधानका पढ़ै सुनै अथवा औरोंका व्रतका उपदेश देवै वह भी स्वर्गबास पाताहै

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

एकसौ पांचवां अध्याय॥

राजायुधिष्ठिर पूछते हैं कि हे श्रीकृष्णचन्द्र लोक में भद्रा औ विष्टिनामसे प्रसिद्धहै वह कौनहै कैसीहै किसकीपुत्रीहै औ उसका पूजन किस विधिसे कियाजाताहै यहआपवर्णनकरैं यह राजाका प्रश्न सुन श्रीकृष्णभगवान् कहनेलगे कि हे महाराज विष्टि सूर्यनारायण की कन्याहै छायामें उत्पन्न भई है औ शनैश्चरकी सोदर भगिनीहै वह कृष्णवर्णा ऊर्ध्वकेशी दीर्घदंष्ट्रा औ बड़ी भयंकर स्वरूपहैं उत्पन्नहोतेही भुवनका ग्रास करने दौड़ी यज्ञोंमें विघ्न औउत्सवोंमें उपद्रव करनेलगी सबजगत्को उसने त्रासदिया तब सूर्यनारायणने विचारकियाकि इसकन्याकाविवाह करनाचहिये क्योंकि तरुण कन्याको पिताके घरमें रहना उचितनहीं यहशोच सूर्यनारायणने उसकाबिवाहठहरायापरंतु उसने क्षणमात्रमें वरकेप्राणलिये औविवाहके मंडपआदिउखाड़ कर फेंकदिये औ सारीप्रजाको पीड़न करनेलगी सूर्यनारायण बिचार करनेलगे कि इसदुष्टा कुरूपा स्वेच्छाविहारिणी अतिक्रूरा कन्या को किसकेसाथ विवाहैंइसीअवसरमें प्रजाकीअति पीड़ा देख ब्रह्माजी सूर्यभगवान्के पासआये औ उनकीकन्या की सब दुष्टताकही तब सूर्यनारायण बोले किहे ब्रह्माजीआप जगत् के कर्त्ता हर्त्ता होकर हमको क्या कहतेहोजोउचितसमझ पड़ै सो कीजिये यह सूर्यनारायण का वचन सुन ब्रह्माजी ने विष्टिको बुलाकर कहा कि हेभद्रे बव बालवकौलवआदिकरणों के अंतमें तू निवासकर औ जो पुरुषखेतीव्यापारआदि कर्मतेरे बीच करैं उनको तू भक्षणकर तीनदिन किसीकोबाधानदे चौथे दिनके अर्धमें तेराभोगहोगा उसदिन सुर असुर सब तेरापूजन करैंगेऔजो तेरेको न मानैं उनका तू कार्य विध्वंसकर इतनावि-

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ष्टिके प्रति उपदेश कर ब्रह्माजी अपने लोक को गये औ विष्टि भी भ्रांत चित्त हो देवता दैत्य मनुष्य आदि को त्रास देती हुई बिचरनेलगी इतना कह श्रीकृष्णभगवान् बोले कि हे महाराज इस प्रकार भद्राकी उत्पत्ति भई है यह अति दुष्टा है इसलिये अवश्य इसका त्याग करना चाहिये विष्टि का स्वरूप यह है कि अति कृष्णवर्ण लंबी नासिका बड़ी२ दंष्ट्रा मोटी पिंडली ऊंची जंघा फटे कपोल मलिन वस्त्र पहिने मुखसे अग्निज्वाला उगलती हुई लोकों का कार्य नाशकरने के लिये त्रिभुवन में बिचरतीहै भद्राके पांच घड़ी मुखमें दो घड़ी कंठमें ग्यारह घड़ी हृदयमें चारघड़ी नाभिमें पांच घड़ी कटिमें औ तीनघड़ीपुच्छमें स्थितहैं (मुखमें कार्यनाश कंठमें धननाश हृदय में प्राण हानि नाभिमें कलह कटिमें अर्थभ्रंश औ पुच्छमें जय होताहै)विष्टि के पुच्छमें जो भलेबुरे कार्यकरै सब सिद्धि होते हैं (धन्यादधिमुखी भद्रा महामारीखराननाः। कालरात्रिर्महारौद्राविष्टिश्चकुलपुच्छिका। भैरवीचमहाकालीअसुराणांक्षयंकरी)येबारह भद्राके नामजो पुरुष प्रभात उठ पढ़ै उसको व्याधिका भयनहीं होता सब ग्रह अनुकूल रहते हैं युद्ध में द्यूतमें औ राजकुल में जय पाता है जो विधि पूर्वक नित्य विष्टि का पूजन करै उस के सर्व कार्य सिद्ध होते हैं भद्रा व्रत करनेहारे पुरुष को प्रेत पिशाच भूत पूतना शाकिनी ग्रह आदि पीड़ानहीं देते इष्टवियोगनहीं होता औ अंत में वह पुरुष सूर्यलोकको जाता है सूर्यकी पुत्री शनिकी भगिनी अतिक्रूरा विष्टिका जो भक्ति से उपवासकरै उसके सब मनोरथ सिद्ध होते हैं अब हम भद्रा के व्रत का विधान कहते हैं रात्रि के समय भद्राहोय तो दोदिननक्तव्रतकरै एक प्रहरके अनंतर तीन प्रहर दिनमें भद्रा होय तो उपवास करै नहीं तो एकभक्तकरना चाहिये स्त्री अथवा पुरुष व्रतकेदिन

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सुगंध आमलक लगाय सर्वौषधि जलसे स्नान करै अथवानदी आदि पर जाय विधि से स्नान करै पीछे देवता पितरोंकातर्पण पूजन आदि कर कुशा की भद्रा की मूर्ति बनाय गंध पुष्प धूप दीप नैवेद्य आदि से पूजन कर भद्रा के नामों से एकसौ आठ आहुति देकर तिल औ पायस ब्राह्मण को भोजन कराय आप भी मौन से तिल सहित कृसर भोजन करै औ पूजन के अंत में (छायासूर्यसुतेदेवि विष्टेइष्टार्थदायिनि । पूजितासियथाभक्त्या भद्रेभद्रप्रदाभव) यह मंत्र पढ़ै इस विधि से सत्रह भद्राव्रतकर अंतमें लोहके पीठपर भद्रा की मूर्ति स्थापन कर कृष्णवस्त्र उढ़ाय गंध पुष्प आदिसे पूजनकर कृसर नैवेद्यलगावै पीछेलोह तैल तिल सवत्सा कृष्णा गौ काला कंवल औ दक्षिणासहित वह मूर्ति ब्राह्मण को देवै इस विधि से जो पुरुष भद्राव्रत औ उद्यापन करै उसके किसी कार्य में विघ्न नहीं होता ॥

एकसौछठा अध्याय ॥

श्रीकृष्ण भगवान् कहतेहैं कि हेमहाराज अब हम सब पाप हरनेहारे अगस्त्यव्रतका विधान कहते हैं राजायुधिष्ठिरनेकहा कि प्रथमआपअगस्त्य मुनिके चरित वर्णनकीजिये तबअर्घ्यदान काविधान औ उदयकाकाल कहना तबश्रीकृष्ण भगवान्कहने लगे कि हेमहाराजमित्रऔवरुणदोनोंमुनिमंदरपर्वतकेसमीपतप करतेथे उनकेतपमें विघ्न करनेके लियेइंद्रने उर्वशी नाम अप्सरा कोभेजा अप्सराको देखतेही दोनोंमुनियोंकावीर्यकुंभमें गिरा उस से अगस्त्यमुनि उत्पन्नभये अगस्त्यमुनिका लोपामुद्रा से विवाह भया अगस्त्यजीने बहुतकाल बड़ा उग्रतप किया उसी समय बड़े दुराचार औ ब्राह्मणों के शत्रु इल्वल औ बातापि नाम दो दैत्यथे उनका यह काम था कि एक भाई मेष बनता दूसरा भर्ष उस

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मेष को मार उसका मांस रींध श्राद्ध के व्याज से ब्राह्मणों को निमंत्रणदे उनको वह मांस खिलादेता औ पीछे भाई का नाम लेकर पुकारता वह भी सबके उदर विदारणकर निकल आता इसप्रकारसैकड़ोंमुनि उननेमारडाले एकदिनइल्वलने अगस्त्य मुनि को भी श्राद्ध में निमंत्रण दिया तव अगस्त्यमुनि ने कहा कि हम अकेलेही श्राद्धमें भोजन करैंगे औ संपूर्ण मांस हमको होदेना इल्वलनेभी यहबातस्वीकारकरी औ सबमांस अगस्त्य के आगे परोस दिया अगस्त्य जब भोजन करचुके तब इल्वल पुकारा कि अरेभाई क्यों विलम्ब करता है बाहर निकलआ अगस्त्यमुनिने कहा कि वह तो अब जीर्णहुआ कहां से निकलेगा यह सुन इल्वलने अगस्त्यमुनि पर बड़ा क्रोध किया परन्तु अगस्त्यमुनि ने उसको भी अपनी क्रूर दृष्टि से भस्म करडाला इन दोनों दैत्योंका संहार होतेही बाकीके दैत्य भय से समुद्र में जाघुसे औ नित्य रात्रिके समयनिकल मुनियोंकोभक्षणकरजाते यज्ञपात्र फोड़डालते औ फिर समुद्र में प्रविष्ट होजाते यहदैत्यों का बड़ा उत्पात देख ब्रह्मा विष्णु शिव कुवेर इंद्र आदि सब देवतासम्मतिकर अगस्त्यमुनि के समीपआयेऔकहाकि हेमुनि तुमसमुद्रकोपानकरो मुनिने भी देवताओंकीआज्ञासे समुद्रपान किया तव सूखेसमुद्रमें सबदैत्योंको देवताओंने मारा इसप्रकार अगस्त्यमुनि ने सब जगत् निष्कंटक करदिया पीछे गंगा के प्रवाहसे समुद्र पूर्णभया तव सब देवता औ दैत्योंने मिलकर मंदराचलको मंथान औ वासुकि को नेत्रबनाय समुद्र को मथन किया उसमें से प्रथम तो अमृत कौस्तुभ ऐरावतआदि उत्तम२ पदार्थ निकले औ पीछे अति दारुण कालकूट विष प्रकट भया जिसके गंधसेही देवता औ दैत्य मूर्च्छितहोनेलगे उसमेंसे करुणा करके शिवजीने भक्षणकिया जिस से वे नीलकंठ भये तब

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ब्रह्माजीने देवताओं से कहा कि अब और किसीकी सामर्थ्यनहीं
है जो इस बाकीके विषका संहारकरै इसलिये तुमसब दक्षिण
दिशामें लंका के समीप अगस्त्य मुनि रहते हैं उनके शरण में
जाओ यह ब्रह्माजीकी आज्ञापाय सब देव दानव अगस्त्य मुनि
के समीप गये उनने भी सबको व्याकुल देख आश्वासनकिया
औ उस विष को अपने तपोबलसे हिमालयमें प्रवृष्ट कियावह
विष कंदरूप से वहां उत्पन्न हुआ और जो कुछ शेष रहा वह
धतूर करवीर अर्क आदि वृक्षों में बांट दिया उस हिमालय
पर्वत के बिष युक्त वायु से मनुष्यों को अनेक प्रकार के रोग
होते हैं वह विष वायु वृष संक्रांति से लेकर सिंहांत तक रहता
है पीछे बिष का वेग शांत होजाता है इसप्रकार बिषके संकट
से अगस्त्य मुनि ने सब को बचाया पूर्वकाल में प्रजाकी बहुत
वृद्धि भई तब ब्रह्मा जी की देहसे मृत्युउत्पन्न हुआ औप्रजाका
संहार करने लगा एक दिन अगस्त्य मुनिके समीप भी आया
अगस्त्य मुनिने अपनी क्रोध की दृष्टि से उसी क्षण मृत्यु को
भस्म कर दिया तब ब्रह्मा जी को दूसरा मृत्यु सिरजना पड़ा
श्वेत नाम राजा स्वर्ग से नित्य आकर दंडकारण्य में अपने
पूर्व शरीर का मांसखाता एक दिन उसने निर्विण्णहो अगस्त्य
मुनि से कहा कि महाराज सब दान मैंने किये परंतु अन्न औ
जल का दान कभी न किया इसलिये स्वर्गवास पाकर भी
नित्य यह शवमांस मुझे खाना पड़ता है अब आप ऐसा अनु-
ग्रह करैं कि इस बिपत्ति से छूटूं यह राजा का दीन वचन सुन
दया कर अगस्त्य मुनि ने अन्न करके उसका श्राद्धकिया जिस
से राजा को स्वर्ग मेंही नित्य भोजन के लिये उत्तम उत्तम प-
दार्थ मिलने लगे बिंध्यपर्वत ने बिचार किया कि सूर्यनारायण
मेरु पर्वत की प्रदक्षिणा करते हैं मेरी प्रदक्षिणा नहींकरते इस

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

लिये इनका मार्ग रोकना चाहिये यह मन में ठान बिंध्यबढ़ने
लगा उस को नित्य बढ़ते देख देवता बहुत व्याकुल हुये औ
अगस्त्य मुनि के समीप जाय कहा कि आप बिंध्याचल को
बढ़ने से रोकें नहीं तो वह सूर्य भगवान् का मार्ग रोध करैगा
यह देवताओं का बचन सुन अगस्त्य जी बिंध्य के पास गये
औ विंध्य से कहा कि हम तीर्थयात्रा को जाते हैं तुम थोड़ासा
नीचे होजाओ तो हम तुम्हारे पार चले जायँ बिंध्य मुनि की
आज्ञा से नम्र होगया अगस्त्य मुनिने पर्बत को लंघन करकहा
कि जब तक हम तीर्थयात्रा से न लौटैं तबतक ऊंचे मत होना
इतना कह अगस्त्य मुनि गये सो अब तक भी नहीं लौटे औ
दक्षिण दिशा में आकाश के बीच देदीप्यमान देख पड़ते हैंएक
समय बसंत ऋतुमें लोपामुद्राने अगस्त्य मुनिसे कहा कि आप
के साथ विषयों को भोगना चाहती हूं परंतु हाथी घोड़े दासी
दास उत्तम शय्या वस्त्र भूषण आदि सब सामग्री सहितएक बन
जटित प्रासाद होय यहपत्नी का वचनसुन अगस्त्यमुनिनेकुबेर
को बुलाकर आज्ञा दी कुबेर ने भी सब सामग्री सहित महल
औ रत्नों के भूषण उसीक्षण मुनि को निवेदनकिये तबअगस्त्य
मुनि ने बहुत काल पर्यंत लोपामुद्रा के संग विहारकिया इस
भांति और भी अनेक चरित अगस्त्य मुनि के हैं अब हम उनके
अर्घ्यका बिधान कहतेहैं कन्याके सूर्य के सातअंशजायँउसदिन
रात्रि के समय शुक्ल तिलों से स्नानकर श्वेतबस्त्र धार माला
बस्त्र आदिसे भूषित पंचरत्न सहित अवण कलश स्थापन करै
उसके ऊपर अनेक प्रकार के भक्ष्य औ सप्त धान्य सहित घृत
पात्र स्थापनकर उसमें जटाधारे कमंडलु हाथमेंलिये शिष्यऔ
मृगों करके वेष्टित ऐसी अगस्त्य मुनिकी सुवर्ण की प्रतिमा
बनाय स्थापन करै पीछे श्वेतचंदन चमेली के पुष्प उत्तम धूप

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

दीप नैवेद्य आदिसे उनका पूजनकर अर्घ्यदेव खजूर नालिकेर कूष्मांड फालसा ककोड़े करेले ककड़ी बीजपूर वृन्ताक दाड़िम नारंगी कदलीफल कुशा काश दूर्वाके अंकुर कमल उत्पल सप्त-धान्य वस्त्र अनेक प्रकारके भक्ष्य येसबपदार्थ बांसके पात्रमेंधर सुवर्ण चांदी अथवा ताम्रका अर्घ्यपात्र मस्तकतक उठायदक्षि-णाभिमुखहो दोनोंजानु भूमिपर रख प्रसन्न चित्तहो (काशपुष्प प्रतीकाशअग्निमारुतसंभव। मित्रावरुणयोःपुत्रकुंभयोनेनमोस्तु-ते । विंध्यवृद्धिक्षयकरमेघतोयविषापह । रत्नवल्लभदेवर्षे लंका वासनमोस्तुते। वातापिर्भक्षितोयेन समुद्रःशोषितःपुरा । लोपा मुद्रापतिश्रीमान् योसौतस्मैनमोनमः। येनोदितेनपापानिप्रलयं यांतिव्याधयः। तस्मैनमोस्त्वगस्त्याय सशिष्यायसुपुत्रिणे) ये मंत्र पढ़ अर्घ्यदेवै औ ब्राह्मण (अगस्त्यमृषिंनमाममित्रैःप्रजाम पत्यंबलमिच्छमानः। उभौवर्णावृष्टिरुग्रःपुपोष सत्यादेवेथशिष्ये जगाम) इस वैदिक मंत्रसे अर्घ्य देवै इस प्रकार अर्घ्य देकर (अर्चितस्त्वंयथाशक्त्या मयागस्त्यमहामुने। ऐहिकामुष्मिकीं दत्वा कार्यसिद्धिंव्रजस्वमे) इसमंत्र से अगस्त्यमुनिका विसर्जन करै पीछे सबसामग्रीसहितमूर्त्ति (अगस्त्योमेमनस्थश्चअगस्त्यो स्मिन्धनेस्थितः । अगस्त्योद्विजरूपेण प्रतिगृहणातुसंस्तुतः) यह मंत्र पढ़ वेदवेत्ता ब्राह्मण को देवै ब्राह्मणभी प्रतिग्रहलेकर (अगस्त्यःसप्तजन्मानि नाशयित्वातवापदम् । अतुलंविमलंसौ-ख्यं प्रयच्छतुमहामुनिः) यह मंत्रपढ़ै इसप्रकार अर्घ्यदान कर कोई फल धान्य अथवा लवण आदि एकरस वर्षभरत्यागे इस विधिसे ब्राह्मण सातवर्ष अर्घ्य देवै तो चारों वेद औ सब शास्त्र का जानने हारा होय क्षत्रिय सब पृथिवी को जीत राजा होय वैश्य धन धान्य औ बहुतसे पशुपावै शूद्रअर्घ्यदेवै तो धनसन्मान औ आरोग्य का भागीहोय स्त्री बहुतसे पुत्र सौभाग्य औ संपत्ति

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पावै कन्याको उत्तम वरमिलै विधवा को अनंत पुण्य की प्राप्ति होय औ रोगी अगस्त्यमुनिको अर्घ्यदेकर रोगसे छूटै जिस देश में इस विधान से अर्घ्य दियाजाय वहां कभी दुर्भिक्ष आदि का भय न होय अर्घ्यदेनेहारा पुरुष हंसयुक्त विमानमेंबैठस्वर्ग को जाताहै जो ऐश्वर्य भोग शरीर सौख्य संतान पशु आदिकी इच्छाहोय तो अवश्यही अगस्त्यमुनि को भक्ति पूर्वक शरत् ऋतुमें अर्घ्यदेवै॥

एकसौसातवां अध्याय॥

श्रीकृष्णचन्द्र कहतेहैं कि हेमहाराज अब हम नवीन चंद्रमा को अर्घ्यदानका विधानकहतेहैं प्रतिमासकी शुक्ल द्वितीया को प्रदोषके समय भूमिपर गोबरका मंडल बनाय उसमें रोहिणी सहित चन्द्रमाकी प्रतिमास्थापनकरश्वेतचंदन श्वेत पुष्प अक्षत धूपदीप अनेकप्रकारकेनैवेद्यफल दही श्वेतवस्त्र दूर्वांकुरआदिसे पूजनकर इनहींपदार्थोंकरके चंद्रमाको अर्घ्यदेवै जो इसविधिसे प्रतिमासचंद्रमाकोअर्घ्यदेवै वह पुत्र पौत्र धन पशु आरोग्यआदि पाय सौ वर्ष संसार का सुख भोग अंतमें चन्द्रलोकको जाताहै वहां प्रलय पर्यंत दिव्य स्त्रियोंके साथ विहारकर मुक्ति पाता है श्रीकृष्णभगवान् कहते हैं कि हे महाराज आपचंद्रवंशमेंउत्पन्न भयेहैं इसलिये धर्म ऐश्वर्य आरोग्य औ उत्तम भोगोंकीप्राप्तिके लिये आपको अवश्य नवीन चन्द्रको अर्घ्य देनाचाहिये॥

एकसौआठवां अध्याय॥

श्रीकृष्णभगवान् कहतेहैं कि हे महाराज प्रति शुक्रकादोष निवृत्त होनेके लिये यात्रा के आरम्भ में यात्राकीसमाप्तिमें औ शुक्रोदय के समय शुक्रपूजा अवश्य करनी चाहिये उसका हम

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

विधान कहते हैं सुवर्ण चांदी अथवा कांस्यके पात्र में चांदीकी शुक्र की मूर्त्ति स्थापन कर सब उपचारों से उसका पूजन करे पीछे (नमस्तेसर्वलोकेश नमस्ते भृगुनन्दन। कवेसर्वार्थसिद्धर्थं गृहाणार्घ्यंनमोस्तुते १) इसमंत्र से अर्घ्यदेकर शुक्र वस्त्र मोती सवत्सा गौ औ दक्षिणा सहित वह मूर्त्ति ब्राह्मण को देवै पुष्प बटक करका जल गेहूं चणे आदि से जब तक शुक्रका पूजन न कर लेवै तब तक नवान्न भक्षण न करै इस विधि शुक्रका पूजन करनेसे सब कामना सिद्धि होती हैं इसी विधि से सुवर्ण आदि के पात्र में सुवर्ण की वृहस्पति मूर्त्ति स्थापन कर पीत वस्त्र उढ़ावे औ सर्षप पलाश की त्वचा के क्वाथ औ पंचगव्य के जल से स्नानकर पीत वस्त्र पहिन सब उपचारोंसे वृहस्पतिका पूजन कर घृतका हवनकरै औ पूर्वोक्त रीति से अर्घ्य देवै पीछे सवत्सा गौ सहित वह प्रतिमा ब्राह्मणको देवै यात्रा के समय वृहस्पति की संक्रांति औ उदय के समय इसविधि से पूजन करै तो सब मनोवांछित फल पावै शुक्र औ वृहस्पति की प्रीतिके लिये उत्तम मोतीही देवै तो भी सब मनोरथ सिद्धहोयँ औ वह पुरुष कभी कुरूप न होय जो शुक्रकी औ गुरुकी इसविधिसे पूजाकरै उनके घरमें कभीप्रतिशुक्र आदिका दोष नहीं होता॥

एकसौनवां अध्याय॥

श्रीकृष्णभगवान् कहते हैं अब हम अत्यन्त गुप्तपंचाशीति वृत्त कहते हैं जो भविष्य पद्म मार्कंडेय औ वराहपुराण में कहे हैं अभीष्ट मित्र पुत्र शिष्य औ बंधुको धर्म कहना चहिये इसलिये श्रुतिस्मृति औ पुराणों से जो हमने धर्मनिश्चय किया है सो आपके प्रति कथन करतेहैं प्रभातसंध्यामें स्नानकरअश्वत्थ वृक्ष का पूजनकर ब्राह्मणोंको तिलपात्र देवै वह कभी कृत अ-

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कृतका शोक नहींकरता यहअत्यन्त गुप्तव्रत सबपापों का हरने
हाराहै पर्वदिनमें एक कर्ष सुवर्ण ब्राह्मण को देवै यहबाचस्पति
व्रत बुद्धिकी वृद्धिकरताहै औ बृहस्पति ने कहा है लवण मिरच
जीरा हींग शुंठी आदि सब मसाले चतुर्थी के दिन एकभक्त कर
कुटुंबी ब्राह्मणको देवै यह शिलाव्रत लक्ष्मीलोकमें वास देता है
औ मुखकी शुद्धता करताहै नक्तव्रतकर गौ वस्त्र औ सुवर्ण का
त्रिशूल कुटुंबी ब्राह्मण को देवै औ प्रणाम कर (श्रीकेशवौप्रीये-
ताम्) यह वाक्य कहै यह महापातक हरनेहारा व्रतहै एकवर्ष
पर्यंत एकभक्त व्रतकर अंतमेंसुवर्णकेवृषऔसबउपस्कारों सहि
तिल धेनु ब्राह्मणकोदेवै यह रुद्रव्रत सब प्रकारके शोक हरता
औ इसका करने हारा शिवलोक को जाता है सर्वौषधि जलसे
स्नानकर पंचमीके दिन सर्वोपस्कर दानकरै ऊखल मूशल सूप
चलनी स्थाली चूल्हा जल कुंभ ये गृहस्थके उपस्कर हैं इनको
गृहस्थी ब्राह्मण के घरमें स्थापन करै यह गृह व्रत सब सुख
देनेहाराहै औ अत्रि मुनिने अनसूयाकोउपदेशकियाहै सुवर्णक
नीलोत्पल शर्करापात्र सहित श्रद्धा से कुटुंबी ब्राह्मणकोदेवै यह
लीलाव्रतहै इसका करनेहारा विष्णुलोक को जाता है आषाढ़
आदि चार महीने तैलाभ्यंग न करै अंत में तिल तैल पूर्ण घृत
घट ब्राह्मणको देवै औ घृत पायस ब्राह्मणको भोजन करावै यह
लोकप्रीतिकर व्रतहै इसको भक्तिसेकरनेहारा पुरुष विष्णुलोक
को जाता है चैत्रमासमें दही दूध घृत औ गुड़ खांड़ आदि इन
विकार त्यागै अंत में ब्राह्मण मिथुनका पूजनकर येसबपदार्थ
दो उत्तमवस्त्र उनको देकर (गौरीमेप्रीयताम्)यह वाक्यकहै यह
गौरीव्रत करनेसे भगवतीलोक की प्राप्ति होती है पौष कृ
त्रयोदशी से नक्तव्रत करै एकवर्ष व्रतकर सप्तधान्य औ
वस्त्रों सहित सुवर्ण का अशोक वृक्ष ब्राह्मणको देकर(प्रद्यु

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

प्रीयताम्) यह वाक्य कहै यह कामव्रत सब शोक का नाश करनेहारा है इसको जो पुरुष भक्ति से करै वह कल्प भर बिष्णुलोक में निवास करता है आषाढ़ आदि चार महीने नख न कटावै औ वृंताक न खाय अन्त में कार्तिक की पूर्णिमा के दिन घृत औ शहद के घट सहित सुवर्ण का वृन्ताक ब्राह्मण को देवै यह शिव व्रत है इसका करनेहारा रुद्र लोक को जाता है पांच पूर्णिमाओं को एकभक्त व्रत कर अन्त में चन्दन से पूर्णिमा की मूर्ति लिख सब उपचारों से पूजन करै पीछे दूध दही घृत शहद औ श्वेत शर्करा इन पाचों का एक२ घट भरके(मनोरथान्पूरयस्व संपूर्णापूर्णिमाह्यसि । पंचकुंभप्रदानेन भूतानांपुष्टिरस्तु मे)यह मंत्र पढ पांच ब्राह्मणों को एक २ कुंभ देवै यह पंचघट व्रत पुष्टि देनेहारा है औ इसके करने से सब मनोरथ सिद्ध होते हैं हेमन्त औ शिशिर ऋतु में पुष्पों का त्यागकरफाल्गुन की पूर्णिमा को सुवर्ण के तीन पुष्प ब्राह्मण को देकर (शिव के शर्वोप्रीयेताम्) यह वाक्य उच्चारण करै यह सौगंध्य व्रत सुगंधि उत्पन्न करता है औ इस व्रत के करने से उत्तम लोक की प्राप्ति होतीहै फाल्गुन कृष्ण आदि तृतीयाओं को लवण न खाय इस प्रकार एक वर्ष व्रत कर अंत में ब्राह्मण मिथुन का पूजन कर सब उपस्करों सहित घर औ उत्तम शय्या उनको देवै औ (गोविंदःप्रीयताम्) यह वाक्य कहै इस सौभाग्यव्रत का करनेहारा गौरी लोक को जाता है सन्ध्या समय एक वर्ष पर्यंत मौन व्रत करै अंत में घृत कुंभ दो वस्त्र औ घंटा ब्राह्मण को देवै यह सारस्वत व्रत विद्या औ रूप देने हारा है इस व्रतके करने से अक्षयवास सरस्वतीलोक में मिलताहै एकवर्ष पंचमीकोउपवास कर अंतमें सुवर्ण का कमल औ उत्तम गौ ब्राह्मण को देवै यह लक्ष्मीव्रत दुःखशोकका हरनेहारा औ कांति सौभाग्यका करने-

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कृतका शोक नहींकरता यहअत्यन्त गुप्तव्रत सबपापों का हरने
हाराहै पर्वदिनमें एक कर्ष सुवर्ण ब्राह्मण को देवै यहबृहस्पति
व्रत बुद्धिकी वृद्धिकरताहै औ बृहस्पति ने कहा है लवण मिरच
जीरा हींग शुंठी आदि सब मसाले चतुर्थी के दिन एकभक्त कर
कुटुंबी ब्राह्मणको देवै यह शिलाव्रत लक्ष्मीलोकमें वास देता है
औ मुखकी शुद्धता करताहै नक्तव्रतकर गौ वस्त्र औ सुवर्ण का
त्रिशूल कुटुंबी ब्राह्मण को देवै औ प्रणाम कर (श्रीकेशवोप्रीये-
ताम्) यह वाक्य कहै यह महापातक हरनेहारा व्रतहै एकभक्त
पर्यंत एकभक्त व्रतकर अंतमेंसुवर्णकेवृषऔसबउपस्कारों सहि
तिल धेनु ब्राह्मणकोदेवै यह रुद्रव्रत सब प्रकारके शोक हरता है
औ इसका करने हारा शिवलोक को जाता है सर्वौषधि जलसे
स्नानकर पंचमीके दिन सर्वोपस्कर दानकरै ऊखल मूशल सूप
चलनी स्थाली चूल्हा जल कुंभ ये गृहस्थके उपस्कर हैं इनको
गृहस्थी ब्राह्मण के घरमें स्थापन करै यह गृह व्रत सब सुख
देनेहाराहै औ अत्रि मुनिने अनसूयाकोउपदेशकियाहै सुवर्णका
नीलोत्पल शर्करापात्र सहित श्रद्धा से कुटुंबी ब्राह्मणकोदेवै यह
लीलाव्रतहै इसका करनेहारा विष्णुलोक को जाता है आषाढ़
आदि चार महीने तैलाभ्यंग न करै अंत में तिल तैल पूर्ण घृत
घट ब्राह्मणको देवै औ घृत पायस ब्राह्मणको भोजन करावै यह
लोकप्रीतिकर व्रतहै इसको भक्तिसेकरनेहारा पुरुष विष्णुलोक
को जाता है चैत्रमासमें दही दूध घृत औ गुड़ खांड़ आदि इक्षु
विकार त्यागै अंत में ब्राह्मण मिथुनका पूजनकर येसबपदार्थ औ
दो उत्तमवस्त्र उनको देकर (गौरीमेप्रीयताम्)यह वाक्यकहै
गौरीव्रत करनेसे भगवतीलोक की प्राप्ति होती है पौष कृष्ण
त्रयोदशी से नक्तव्रत करै एकवर्ष व्रतकर सप्तधान्य औ दो
वस्त्रों सहित सुवर्ण का अशोक वृक्ष ब्राह्मणको देकर(प्रद्युम्न

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

प्रीयताम्) यह वाक्य कहै यह कामव्रत सब शोक का नाश करनेहारा है इसको जो पुरुष भक्ति से करै वह कल्प भर विष्णुलोक में निवास करता है आषाढ़ आदि चार महीने नख न कटावै औ वृंताक न खाय अन्त में कार्तिक की पूर्णिमा के दिन घृत औ शहद के घट सहित सुवर्ण का वृन्ताक ब्राह्मण को देवै यह शिव व्रत है इसका करनेहारा रुद्र लोक को जाता है पांच पूर्णिमाओं को एकभक्त व्रत कर अन्त में चन्दन से पूर्णिमा की मूर्ति लिख सब उपचारों से पूजन करै पीछे दूध दही घृत शहद औ श्वेत शर्करा इन पांचों का एक२ घट भरके(मनोरथान्पूरयस्व संपूर्णापूर्णिमाह्यसि । पंचकुंभप्रदानेन भूतानांपुष्टिरस्तु मे)यह मंत्र पढ पांच ब्राह्मणों को एक २ कुंभ देवै यह पंचघट व्रत पुष्टि देनेहारा है औ इसके करने से सब मनोरथ सिद्ध होते हैं हेमन्त औ शिशिर ऋतु में पुष्पों का त्यागकरफाल्गुन की पूर्णिमा को सुवर्ण के तीन पुष्प ब्राह्मण को देकर (शिव के शर्वौप्रीयेताम्) यह वाक्य उच्चारण करै यह सौगंध्य व्रत सुगंधि उत्पन्न करता है औ इस व्रत के करने से उत्तम लोक की प्राप्ति होतीहै फाल्गुन कृष्ण आदि तृतीयाओं को लवण न खाय इस प्रकार एक वर्ष व्रत कर अंत में ब्राह्मण मिथुन का पूजन करै सब उपस्करों सहित घर औ उत्तम शय्या उनको देवै औ (गोविंदःप्रीयताम्) यह वाक्य कहै इस सौभाग्यव्रत का करनेहारा गौरी लोक को जाता है सन्ध्या समय एक वर्ष पर्यंत मौन व्रत करै अंत में घृत कुंभ दो वस्त्र औ घंटा ब्राह्मण को देवै यह सारस्वत व्रत विद्या औ रूप देने हारा है इस व्रतके करने से अक्षयवास सरस्वतीलोक में मिलताहै एकवर्ष पंचमीकोउपवास कर अंतमें सुवर्ण का कमल औ उत्तम गौ ब्राह्मण को देवै यह लक्ष्मीव्रत दुःखशोकका हरनेहारा औ कांति सौभाग्यका करने-

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हाराहै इस व्रतका करनेहारा जन्म २ में लक्ष्मीवान् होताहैऔ अंतमें विष्णुलोकको जाताहै जो स्त्री इस व्रतकोकरै वह सौभाग्य पावै औ सपत्नियों का गर्व हरै गौरी सहित रुद्र लक्ष्मी सहित जनार्दन औ राज्ञी सहित सूर्यभगवान् की प्रतिमा विधि पूर्वक स्थापन कर सब उपचारोंसे पूजनकर वस्त्र घंटा पात्र औ दक्षिणा सहित वे मूर्ति ब्राह्मण को देवै यह देवव्रत दिव्यदेह देने हारा है शुक्ल चंदन आदि से शिवलिंग औ विष्णुमूर्ति को नित्य एक वर्ष प्रलेपन करै अंत में जल औ घृतके कुंभ सहित उत्तम धेनु ब्राह्मण को देवै यह शुक्लव्रत सब प्रकार के कल्याण देता है इस व्रतको करनेहारा पुरुष दशहजार जन्मतक राजा होकर अंत में शिवलोक को जाताहै अश्वत्थ सूर्यनारायण औ गंगा का नित्यपूजन कर एकवर्ष पर्यंत एक भक्तव्रत करै अंतमें ब्राह्मण मिथुन का पूजनकर तीन गौ औ सुवर्ण का वृक्ष ब्राह्मणको देवै यह कीर्तिव्रत भूमि औ कीर्तिका देनेहारा है जो पुरुष इस व्रत को करै वह दिव्य विमानमें बैठ स्वर्गमें जाय अप्सराओं के साथ विहार करताहै घृत करके शिव विष्णु ब्रह्मा सूर्य गौरी गणपति को स्नान करावै औ सब उपचारों से नित्य इनकावर्ष भर पूजनकरै औ सामवेद का गायन करै अंतमें सुवर्ण कमल सहित उत्तमगौ ब्राह्मणको देवै यह सामव्रत करनेहारा पुरुष शिवलोकमें निवास करताहै नवमीको एकभक्त व्रतकरै औ अंतमें कंचुकी दोवस्त्र औ सुवर्णका सिंह ब्राह्मण को देवै जोस्त्री इसवीर व्रतको करै वह अनेक जन्मपर्यंत उत्तमरूप सौभाग्य औ सुखपावै औ अंत में शिवलोक में जाय निवास करै एक वर्ष पर्यंतदुग्धाहार कर पूर्णिमाव्रत करै औ श्राद्ध करै अंत में श्राद्ध कर पांच सवत्सा गौ पिशंगवर्ण के वस्त्र औ सौ जलकुंभ ब्राह्मणों को देवै जो इस पितृव्रत को करै वह अपने सौ पुरुषों का उद्धार कर

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

विष्णुलोक में प्राप्त होता है एक वर्ष तांबूल का त्याग कर अंत में तीन तांबूल सुवर्ण के बनाय उन में चूने के बदले मोती रख ब्राह्मण को देवै इस पत्रव्रत को जो नारी करै वह दौर्भाग्य औ मुखका दौर्गंध कभी नहीं पाती इसव्रत के करने से मुख में उत्तम सुगंध औ सौभाग्य प्राप्ति होती है चैत्र आदि चार महीने ज्येष्ठ आषाढ़ में एक मास अथवा पक्षभर हो जलका अयाचित व्रत करै अंतमें जलपूर्ण कलश अन्न वस्त्र घृत सप्तधान्य तिल पात्र औ सुवर्ण ब्राह्मण को देवै यह वारिव्रत करने हारा पुरुष कल्प भर ब्रह्मलोक में निवासकर दूसरे कल्प के प्रारंभ मेंचक्रवर्ती राजा होताहै एक वर्ष पंचामृत से शिव औ विष्णुकोस्नान कराय अंत में गौ शंख औ सुवर्ण ब्राह्मण को देवै इस घृतिव्रत का करनेहारा पुरुष बहुत काल शिवलोक में निवास कर राजा होता है एकमहीनेअथवा वर्षभरमांस न खाय अंत में सुवर्णका हरिण औ सवत्सागौ ब्राह्मणको देवै यहअहिंसा व्रत सर्वशांतिप्रद है इस व्रतको करनेहारा पुरुष अश्वमेधयज्ञ का फलपाताहै माघमास में प्रातःकाल स्नान कर अंत में ब्राह्मण दंपती का वस्त्र भूषण पुष्पमाला आदि से पूजन कर उनको उत्तम भोजन करावै इस सूर्यव्रतको करनेहारापुरुष शरीरारोग्य औ सौभाग्य पाता है औ कल्पभर सूर्यलोक में निवास करताहै आषाढ़आदि चार महीने प्रातःकाल स्नान कर कार्तिकीपूर्णिमा को घृतकुंभ औ गौ कुटुंबी ब्राह्मण को देकर यथाशक्ति ब्राह्मणभोजन करावै इस वैष्णव व्रत के करने से सब मनोरथ सिद्ध होते हैं औविष्णुलोककी प्राप्ति होती है एक अयन से दूसरे अयन पर्यंत पुष्प औ घृत का त्याग करै अंतमेंपुष्प घृत औ धेनु ब्राह्मण को देकर घृत औ पायस ब्राह्मणों को भोजन करावै इस शील व्रत के करने से शील औ आरोग्य की प्राप्ति होती है औ इस व्रतका

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

करनेहारा शिवलोक को जाता है तैल औ मांस का एक वर्ष त्याग कर अंत में सुवर्ण के दीपक चक्र त्रिशूल औ दो वस्त्र ब्राह्मण को देवै इस व्रत के करने से तेज की वृद्धि होती है वस्त्र भूषण पुष्प कुंकुम कर्पूर अगरु चंदन तांबूल औ अनेक प्रकार भोजनों करके सातदिन सुवासिनी का पूजन कर (कुमुदा देवी प्रीयताम्) यह वाक्य कहै इसी प्रकार कमला माधवी गौरी पार्वती उमा औ काली इन एक २ देवी के नाम से सात२ दिन सुवासिनी पूजन करै प्रत्येक सुवासिनी को बाली अँगूठी दर्पण उत्तम २ वस्त्र औ षट्रस भोजन दे संतुष्ट करै औ एक ब्राह्मण का पूजन भी करै यह सप्तसुन्दरक नाम व्रत उत्तम रूप औ सौभाग्य देनेहारा है चैत्र मास में सब सुगंधद्रव्य का त्याग करै अंतमें एक सीपी भर सुगंधद्रव्य शुक्ल दो वस्त्र औ यथाशक्तिदक्षिणा ब्राह्मणों को देवै इस वरुण व्रत के करने से वरुण लोक की प्राप्ति होती है वैशाखमास में लवण का त्याग कर अंत में सवत्सा गौ ब्राह्मणको देवै यह कांति व्रत कीर्ति औ कांति देनेहारा है इस व्रतका करनेवाला पुरुष बहुत काल विष्णु लोक में निवास कर राजा होता है तीन पलसे अधिक सुवर्ण का ब्रह्मांड बनाय द्रोणभर तिलों के ऊपर स्थापन कर ब्राह्मणमिथुन का पूजन कर उनको देवै औ घृत तिलों से हवन कर ब्राह्मण भोजन करावै औ (विश्वात्माप्रीयताम्) यह वाक्य कहै इस ब्रह्मव्रत के करने से निर्वाण पद मिलता है दुग्धाहार करके व्रतकरै औ सुवर्ण सहित उभय मुखी धेनु ब्राह्मण को देवै तो परमपद को प्राप्त हो तीन दिन दुग्धाहार रहकर सुवर्ण का कल्पवृक्ष बनाय चावलों के ढेरपररखउत्तम वस्त्र औ पुष्पमालाओं से आच्छादित कर ब्राह्मण को देवै इस कल्पव्रत का करनेहारा कल्प भर स्वर्ग में निवास करता है अयाचित व्रतसे रह

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कर उत्तम शकटी वस्त्र भूषण तांबूल औ मोदक पात्र व्यतीपात दोनों ग्रहण अथवा अयन संक्रांति के दिन ब्राह्मणको देवै यह व्रत परलोकगमन के खेदको हरनेहारा है वर्षभर अष्टमी को नक्तव्रतकर अंतमें ब्राह्मण को गौ देवै इस सुगति व्रतको करनेहारा पुरुष स्वर्गको जाताहै हेमंत औ शिशिरऋतुमें इंधनदान करै औ अंतमें ब्राह्मण को घृत धेनु देवैयहवैश्वानरव्रतशरीरारोग्य औ कांति देनेहाराहै इस व्रतके करनेहारा मुक्तिपाताहै एकादशीको नक्तव्रत कर चैत्रमास चित्रानक्षत्रमें सुवर्णका शंख औ चक्र ब्राह्मणको देवै इस विष्णुव्रत को करने हारापुरुष विष्णुलोक में निवासकर कल्प के आदिमें राजा होताहै एक वर्ष दुग्धाहार करै अंतमें एक गौ औ एक वृक्ष ब्राह्मण को देवै इस लक्ष्मी व्रतका करनेहारा एक कल्प लक्ष्मीलोकमें निवास करता है एक वर्ष सप्तमी को नक्तव्रत करै अंतमें दुग्धदेनेहारीगौ ब्राह्मणको देवै इस सूर्यव्रतके करनेसे सूर्यलोक की प्राप्तिहोती है चतुर्थी को एकवर्ष नक्त व्रतकर अंतमें सुवर्णका हाथी ब्राह्मण को देवै यह वैनायक व्रत करनेसे सब विघ्न निवृत्त होतेहैंचातुर्मास्य में फलोंका त्यागकरै अंत में वे फल सुवर्ण के बनाय गौ श्वेतवस्त्रऔ घृत पूर्ण घट सहितब्राह्मणकोदेवैयहफलव्रतकरने से संतानकीवृद्धि होतीहैएकवर्षपर्यंतसप्तमी कोउपवासकर अंतमें सुवर्णका कमल औ सबउपकरणोंसहितपांचगौदुग्धदेनेवाली पौराणिक ब्राह्मणको देवैइससौर व्रतकेकरनेसेसूर्यलोक की प्राप्तिहोती है बारह द्वादशी उपवासकर अंतमें वस्त्र सहित जलपूर्ण बारह घट ब्राह्मणोंको देवै यह गोविन्द व्रत सब कार्य सिद्ध करनेहारा है कार्त्तिकी पूर्णिमा को वृषका दान कर नक्त व्रत करै यह वृष व्रत करनेसे गोलोक प्राप्तिहोतीहै कृच्छ्रव्रतके अंत में गोदानकर यथाशक्ति ब्राह्मण भोजनकरावै यहप्रजापत्य

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

व्रत ब्रह्मलोक प्राप्ति कर्त्ता है एक वर्ष चतुर्दशी को नक्तव्रतकर अंतमें वृषभदान करै इस त्र्यंबक व्रत करनेसे शिवलोक प्राप्ति होतीहै सातरात्रि उपवास कर ब्राह्मण को घृतपूर्ण कुंभदेवैयह ब्रह्मव्रत ब्रह्मलोक दायक है एक वर्ष मघामें नक्तव्रतकर अंत में दुग्धदेनेहारी गौब्राह्मण को देवै इस व्रतका करनेहाराएककल्प स्वर्गमें निवास करता है कार्त्तिकशुक्ल चतुर्दशीको उपवासकर रात्रि के समय विलक्षण पंचगव्यपानकरै अर्थात् कपिला गौ का मूत्र कृष्णा गौका गोबर श्वेत गौ कादूध लालगौका दही औ कर्बुर वर्ण गौका घृत लेकर वेदोक्त मंत्रोंसे कुशोदक सहित मिलाकर प्राशनकरै दूसरे दिन प्रभात स्नानकर देवता औ पितरों का तर्पण आदि कर ब्राह्मण भोजनकराय आपभीमौन से भोजनकरै इस ब्रह्मकूर्च व्रतके करने से बाल्य यौवन औ बार्द्धकमें किये सब प्रकार के पापक्षय होते हैं एक वर्ष तृतीया को विना अग्निसिद्ध किया भोजन करै औ अंतमें उत्तम गौ ब्राह्मणको देवै इस ऋषिव्रत के करनेसे शिवलोक में अक्षय वास मिलता है दो पल सुवर्ण का रथ बनाय ब्राह्मण को देवै इस रथ व्रत का करने हारा कल्पभर स्वर्गमें रहता है इसीप्रका उपवास कर दो पल सुवर्ण का हस्ती ब्राह्मण को देवै इस करिव्रत के करने से स्वर्गप्राप्ति होतीहै एक वर्ष ताम्बूल आदि मुखवास का त्यागकर अंतमें ब्राह्मणको गौ देवै इस मुखवास व्रतके करने से कुबेर लोक की प्राप्ति होती है रात्रि भर जलमें निवास कर प्रभातही गोदान करै इस वारुण व्रत का करने हारा पुरुष वरुण लोकमें निवास करता है चंद्रका अयन व्रत करके अंतमें सुवर्णका चन्द्र ब्राह्मण को देवै इस चंद्रव्रत के करने से चंद्रलोक प्राप्ति होती है ज्येष्ठ मास की अष्टमी औ चतर्दशी को पंचाग्नि तपकर सुवर्णसहित गौ ब्राह्मण को

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

देवै इस रुद्र व्रत के करने से शिवलोक प्राप्तिहोती है एक वर्ष भर तृतीया को शिवालय में लेपन करै अंत में गोदान करै इस भवानीव्रत के करने से सब मनोरथ सिद्धहोतेहैं माघमास की सप्तमी को उपवास कर ब्राह्मणको गौ देवै इस तपन व्रत का करनेहारा कल्पभर स्वर्ग में निवास करताहै तीनरात्रिउपवास कर फाल्गुन पूर्णिमाको गोदान करै इसधामव्रतकेकरनेसे सूर्य लोक प्राप्ति होती है पूर्णिमासी को उपवासकर तीनोंकालों में वस्त्रभूषण भोजन आदि करके ब्राह्मण मिथुनका पूजनकरैइस इंदुव्रतकेकरने से मोक्ष प्राप्ति होती है शुक्ल द्वितीया को लवण पूर्ण कांस्यपात्र वस्त्र औ दक्षिणा एकवर्ष पर्यंत ब्राह्मणकोदेता रहै अंतमें गोदानकरै इस सोमव्रतका करने हारा पुरुष कल्प भर शिवलोक में निवासकर अन्त में राजाहोताहै वर्षभर प्रतिपदा को एक भक्तकर अंतमेंकपिलागौ ब्राह्मणकोदेवै इसआग्नेय व्रत के करनेसे अग्निलोक प्राप्ति होतीहै माघमासमेंएकादशी चतुर्दशी औ अष्टमी को एकभक्तव्रतकरवस्त्रजूताकंबलचर्म आदि शीत निवारण करनेहारी वस्तु दान करै इस सौम्य व्रत के करनेसे अश्वमेध यज्ञके फलकी प्राप्तिहोती है एकवर्ष दशमी को एक भक्त व्रत कर अंतमें सुवर्णकी स्त्री रूपदश दिशाओंकी मूर्त्ति द्रोण भर तिलों के ऊपर स्थापनकर धेनुसहितब्राह्मणको देवै इस महापातक हरनेहारे दिग्व्रत के करने से ब्रह्मांड का अधिपत्य मिलता है शुक्ल सप्तमीको सूर्यनारायणका पूजनकर सात धान्य औ लवण ब्राह्मणको देवै इस धान्यव्रत के करनेसे अपना औ सात कुलों का उद्धार होताहै एकमास उपवासकर ब्राह्मण को गौ देवै इस विष्णुव्रत के करनेसे विष्णुलोकप्राप्ति होतीहै एक पक्ष उपवासकर दो कपिला गौ ब्राह्मण को देवै इस ब्रह्मव्रत का करनेहारा ब्रह्मलोक में निवास करताहै बीस

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पल से अधिक सुवर्ण की कुलपर्वतओं समुद्रों सहित भूमिबना कर तिलों के ढेरपर रख ब्राह्मण को देवै औ उसदिन पयोब्रत रहै इस महीब्रत के करनेसे शिवलोक प्राप्ति होती है माघ अथवा चैत्रकी शुक्लतृतीया को सब उपकरणों सहितगुड़ धेनु ब्राह्मण को देवै इस महाब्रतके करनेहारा अप्सराओं करके सेवित गौरीलोकमें निवास करता है एकवर्ष एकभक्त ब्रतकरअंत में गोदानकरै इस रुद्रब्रतके करनेहारा कल्पभर शिवलोक में निवास कर राजा होता है चैत्रमासमें तीनदिन स्नान करनक्त ब्रतकरै अंतमें दुग्ध देनेहारी पांच गौ दरिद्री औ कुटुंबी ब्राह्मण को देवै इस गतिब्रत के करनेहारा सब रोगोंसे औ जन्म मरण से छुट जाता है जो पुरुष कन्यादान करै वह अपनेइक्कीसकुलों सहित ब्रह्मलोकको जाताहै कन्यादान से अधिककोईदाननहीं है इसदान के करने से अक्षयस्वर्गबासमिलता है तिलपिष्टका हाथी बनाय दो रक्तवस्त्र अंकुशचामर कक्ष्यानक्षत्रमालाआदि से उसको भूषित कर ताम्रपात्र में स्थापनकरैपीछे वस्त्रभूषण आदि से ब्राह्मण मिथुन का पूजनकर कंठप्रमाण जलमें स्थित हो वह हस्ती उनको देवै यह कान्तार तरण ब्रतकरनेहारासब प्रकारके संकट औ पापोंसे छुटता है औ सद्गतिपाताहैइसमें कुछ संदेह नहीं जो पुरुष एक दिन भी भक्तिसेपौरंदर ब्रतकरैं उनको प्रलय पर्यंत स्वर्गबास मिलता है पंचमी को पयोब्रत करके सुवर्णका नाग ब्राह्मण को देवै उसको कभी सर्पभय नहीं होता शुक्लपक्षकी अष्टमीकोउपवास कर दो शुक्लवस्त्र औ घंटासेभूषित उत्तम वृष ब्राह्मणकोदेवै इस वृषब्रतकाकरनेहारा कल्पभर शिवलोक में निवासकर राजा होताहै उत्तरायण के दिन सेरभर घृतसे सूर्यनारायण को स्नानकराय उत्तम घोड़ी ब्राह्मण को देवै इस राज ब्रतका करने हारा पुरुष सबअभीष्ट

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कलपाय अंतमें पुत्रभाई आदि सहित सूर्यलोकमें निवासकरता
है नवमी को नक्तव्रत कर बिंध्यवासिनी भगवती का पूजनकरै
औ सुवर्ण का हंस ब्राह्मणको देवै इसआग्नेयव्रत के करनेसे उ-
ाम वाणीकी प्राप्ति होतीहै औ अंतमें अग्निलोक प्राप्तिभीहो-
ीहै द्वादशी को उपवास कर तिल फल इक्षु भोजन औ दक्षिणा
ाह्मण को देवै तो बिष्णुलोक प्राप्तिहोय बिष्कुम्भ आदिसत्ता-
स योगों में नक्तव्रत करके क्रम से घृत तैल फल इक्षु यव गेहूं
ाण मटर चावल लवण दही दूध वस्त्रसुवर्ण कंबल गौवृष कृतरी
ाता कपूर केसर चंदन पुष्प लोहताम्र कांस्य औचांदी ब्राह्मण
ोदेवै इस योगव्रत का करनेहारा सब पापों से छुटताहै औ
सको कभी इष्ट बियोग नहीं होता कार्तिकी पूर्णमासी को
ुवर्णका मेष वस्त्र माला आदिसे भूषितकर ब्राह्मणको देवै मा-
शीर्ष पूर्णिमा को सुवर्णका वृष दान करै इसी क्रमसे बारह मा
ोंकी पूर्णिमाको बारहराशियों का दानकरै अंतमें ब्राह्मणों को
ोजन कराय दक्षिणा देवै इस राशिव्रत के करने से सब उप-
व निवृत होतेहैं औ सोमलोक की प्राप्ति होतीहै इतना कह
ीकृष्णभगवान् बोले कि हे महाराज ये पचासी व्रत हमने कहे
जो इनके विधान को केवल श्रवण अथवापठन करै वह ब्रह्म-
त्या गोहत्या पितृहत्या आदि पातक महापातक औउपपातकों
उसी क्षण छुटजाता है औ जो भक्ति से इनव्रतों को करै उस
ो धनसौख्य संतान स्वर्ग आदि कोई भी पदार्थ दुर्लभ नहीं॥

एकसौदशवां अध्याय॥

श्रीकृष्ण भगवान् कहते हैं कि हेमहाराज सत्ययुगब्राह्मण
ेताक्षत्रिय द्वापर वैश्य औ कलियुग शूद्रहै कलियुग में मनुष्यों
ो स्नानकर्म में शिथिलता रहतीहै तौभी माघस्नान के व्याज

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

से स्नानविधान कहते हैं जिस के हाथ पांव वचन औ मन भली भांति संयतहोयँ औ विद्या तप तथा कीर्ति करके युक्त हो उसको सम्पूर्ण तीर्थफल होता है श्रद्धाहीन पापी नास्तिक संशयात्मा औ हैतुबादी तीर्थफल के भागी नहीं हाते प्रयाग पुष्कर कुरुक्षेत्र आदितीर्थों में अथवा और चाहे जहांमाघस्नानकरनाचाहिये सूर्योदयके समानही स्नान करने से सबमहापातक निवृत्त होतेहैं औ प्राजपत्ययज्ञ का फल प्राप्तहोताहै जो ब्राह्मण सदा प्रातःकाल स्नान करताहै वह सबपापोंसे छुट परब्रह्मपाताहै उष्णोदक का स्नानवृथा बिना वेद जपवृथा श्रोत्रिय बिनाश्राद्धवृथा औ सायंकालके समय भोजन वृथाहोताहै बायव्य बारुण ब्राह्म औ दिव्य ये चारप्रकार के स्नान होते हैं गौओं के रजसे बायव्य स्नान होताहै समुद्रादिकों में बारुण स्नान ब्राह्मय स्नान मंत्रोंसे औ मेघजल से दिव्य स्नान होता है इन सब में बारुणस्नान उत्तम है ब्रह्मचारी गृहस्थ बानप्रस्थ भिक्षु बाल तरुण वृद्ध स्त्री नपुंसक माघमें तीर्थ के बीच स्नान कर उत्तमफल पातेहैं ब्राह्मण क्षत्रिय औ बैश्य मंत्रपूर्बक स्नान करैं औ स्त्री तथा शूद्र मंत्रहीन स्नानकरैं माघ महीने में जल यह कहताहै कि जो किंचित् सूर्य उदय होतेही हममें स्नान करै उसके ब्रह्महत्या सुरापान आदि बड़े२ पापभी हमहरैं माघस्नान करनेहारे पुरुष वहांनिवास करतेहैं जहां सुवर्ण के प्रासाद अप्सराओं के समान नारी औदही दूधकी नदी बहती हैं जिनमें पायसका कर्दम होरहाहै तीर्थयात्रा करै तो यतिकी भांति संयमसे रहै दुष्टों का संग न करै तौचंद्र सूर्यके तुल्य उत्तम भोग पाताहै पौष फाल्गुनके बीच मकरके सूर्य मेंतीन दिन माघस्नान करै माघके प्रथम दिनही संकल्पपूर्बक स्नानका नियम करै बस्त्रबिना ओढ़े स्नान करने जाय तो पद २ में अश्वमेधका फल पावै तीर्थपर जाय स्नानकर मस्तक में मृत्ति-

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by eGangotri Foundation USA

का लगाय सूर्यको अर्घ्यदे पितरों का तर्पण कर जलसे बाहिर निकल इष्टदेव को प्रणाम कर शंख चक्र धारनेहारेपुरुषोत्तमश्री माधवका पूजनकरे सामर्थ्य होय तो नित्य हवन एकबार भोजन ब्रह्मचर्य औ भूमिपर शयनकरै औ असमर्थ धनाढ्य जितना होसके उतनाकरे परंतु प्रातःस्नानअवश्य करना चाहिये तिलों का उबटना तिलोंसे स्नान तिलोंसे पितृतर्पण तिलहोम तिलदान औ तिलों का भोजन माघमास में करै तो कभी कष्ट न पावै तीर्थके ऊपर अग्नि प्रज्वलित करै औ स्नान के लिये तैल औ आमलक देवै इस प्रकार एक मास स्नान कर अंत में वस्त्र भूषण भोजन आदि से ब्राह्मण दंपतीकापूजनकरै औ कंबलवस्त्र रत्न अनेक प्रकार के अंगरखे रजाई जूता और भी जो शीत हरनेहारी वस्तुहैं यथाशक्ति दानकरै औ (माधवःप्रीयताम्) यह वाक्यकहै इस प्रकार माघस्नान करनेहारा अगम्यागमन सुवर्णस्तेय आदि गुप्त प्रकट जितने पातक कियेहों सबसे छुट जाताहै औ पिता पितामह प्रपितामह माता मातामह प्रमातामह आदि इक्कीस कुलसहित विष्णुलोक को जाताहै जो साधारण रीतिसे भी सूर्योदय से अरुणवर्ण हुए नदी जलमें माघ मासमेंस्नानकरैं वेभी अपनेसात पुरुषों सहित स्वर्गकोजातेहैं॥

एकसौग्यारहवां अध्याय॥

श्रीकृष्णभगवान् कहतेहैं कि हे महाराज मनकी प्रसन्नता औ देहकीशुद्धिस्नानविना नहीं होसक्ती इसलिये स्नान अवश्य करना चाहिये नदी आदिमें अथवा घरमें शुद्धजलके बीच (ओं नमोनारायणाय) इस मूल मंत्रसे जलमें तीर्थ कल्पनाकरै चार हाथ लंबाचौड़ा तीर्थ कल्पनाकर हाथमें कुशा लेकर (विष्णुपादप्रसूतासिवै पद्मावीविष्णुदेवता । पाहिनश्चैनसस्तस्मादाजन्म

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मरणांतिकात्। तिस्रःकोट्योर्द्धकोटिश्च तीर्थानांवायुरब्रवीत्।दि-
विभ्व्यंतरिक्षेच तानितेसंतिजाह्नवि। नंदिनीत्येवतेनामदेवेषु
नलिनीतिच। क्षमापृथ्वीचविहगा विश्वकायाशिवास्मृता। विद्या
धरीसुप्रसन्ना तथालोकप्रसादिनी। हेमाह्वयाजाह्नवीच शां-
ताशांतिप्रदायिनी) इन मंत्रों को सात वार पढ़ गंगा का आ-
वाहन करै इन मंत्रोंसे आवाहन करने करके अवश्य गंगाका
सान्निध्य होजाता है फिर अंजलि में जल लेकर तीन चार
पांच अथवा सातवार मस्तक परडाल (अश्वक्रांतेरथक्रांतेवि-
ष्णुक्रांतेवसुंधरे। मृत्तिकेहरमेपापं यन्मयादुष्कृतंकृतम् ॥ उद्धृ-
तासिवराहेणकृष्णेनशतबाहुना। नमस्तेसर्वलोकानांवसुधारि-
णिसुव्रते)इन मंत्रोंसे मृत्तिका को अभिमंत्रणकर शरीरमेंलगाय
स्नान करै पीछे आचमन कर शुक्लवस्त्र पहिन इन मंत्रों से
तर्पणकरै (देवायक्षास्तथानागागंधर्वाप्सरसांगणाःक्रूराःसर्पाः
सुपर्णाश्चराक्षसाजंभकाःखगाः। वाय्वाधाराजलाधारास्तथैवा-
काशगामिनः। निराश्रयाश्चयेजीवाः पापकर्मरताश्चये। तेषामा
प्यायनायैतद्दीयतेसलिलंमया) सव्यसे देवताओंका अपसव्य
से मनुष्योंका औ कंठमें यज्ञोपवीतधार ऋषियों का तर्पणकरै॥
सनकश्चसनंदश्चतृतीयश्चसनातनः। कपिलश्चासुरश्चैव
वोढुःपंचशिखस्तथा। सर्वेतेतृप्तिमायांतु मदत्तेनाम्बुनासदा॥मरी
चिमत्र्यंगिरसौपुलस्त्यंपुलहंक्रतुम्। प्रचेतसंवशिष्ठंचभृगुंनारदमे
वच। देवब्रह्मऋषीन्सर्वान्तर्पयामितिलोदकैः) इन मंत्रोंसेतिल
जल करकेतर्पणकर सव्यजानु भूमिपर रख अपसव्यहो अग्नि-
ष्वात वर्हिषद हविष्मान् आज्यपसोमप आदि दिव्य पितृगण
का तर्पणकर अपनेपितरों का तर्पण करै (येबांधवाबांधवावायेऽ-
न्यजन्मनिबांधवाः।तेतृप्तिमखिलायांतुमदत्तेनांबुनासदा) यहमंत्र
पढ़ आचमन कर अपने आगे अष्टदल पद्म लिख अक्षत पुष्प

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

तिल रक्त चंदन औ जल करके (नमस्तेविष्णुरूपायनमोविष्णु सखायवै। सहस्त्ररश्मयेनित्यंसप्ताश्वायनमोनमः। नमस्तेसर्व-वपुषेनमस्तेसर्वशक्तये। जगत्स्वामिन्नमस्तेस्तुदिव्यचन्दनभूषित। पद्मनाभनमस्तेस्तुनमस्तेयजुषांपते) इन मंत्रों से सूर्यनारायण को अर्घ्यदेकर तीन प्रदक्षिणाकर ब्राह्मण गौ औ सुवर्णकास्पर्श कर घरमें आय विष्णुभगवान् का पूजनकरै इस विधि से नदी तड़ागआदिमेंपापऔअलक्ष्मीनिवर्त्तकस्नाननित्यकरनाचाहिये॥

एकसौबारहवां अध्याय॥

राजायुधिष्ठिर कहतेहैं कि हे श्रीकृष्णचन्द्र सर्व दुष्टोपशम औ सबप्रकार की शान्ति करनेहारे रुद्रस्नान का विधान आप वर्णन करैं यह राजा का वचन सुन श्रीकृष्णभगवान् कहने लगे कि हे महाराज एक समय अगस्त्यमुनि ने स्वामिकार्ति-केय से पूछा कि हे शिवपुत्र रुद्रस्नान का क्या विधान है औ किसको करना चाहिये यह आप वर्णन करैं तब कार्त्तिकेय कहनेलगे कि हे अगस्त्यमुनि मृतवत्सा वंध्या दुर्भगा औ कन्या संतानही जिस नारी के होयँ उस को यह स्नान अवश्य करना चाहिये अष्टमी चतुर्दशी रबिबार भौमवार अथवा और किसी पर्वमें नदीके तटपर महानदियोंके संगम में शिवालय में गोष्ठ में अथवा अपनेघरमें स्नानकरै अग्निहोत्री सदाचार धर्मज्ञ औ रुद्र कर्म में निपुण ब्राह्मण को पहिले निमंत्रण करै गोबर से लिपा बंदनवाल आदिसे अलंकृत अतिसुन्दर चतुरस्त्र मंडप बनाय उसके मध्यमें पंचरंग का कमल लिख कर्णिकाके बीच महादेवजीका स्थापनकरै उनके दोनोंओर पार्वती औ विनायक औ आठों दलोंमें इन्द्रादि लोकपालों को स्थापनकर गंध पुष्प धूप दीप औ गुड़ोदन से पूजनकर मंडपकी चारो दिशाओं में

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

भूत बलिदेवै अग्निकोण में कुंडबनाय लवण सर्षप घृत औ मधुसे। मानस्तोके तनये इत्यादि वैदिकमंत्रकरके हवन करावै औ एक ब्राह्मण श्वेतवस्त्र श्वेत चन्दनश्वेतपुष्पोंकीमालालंकरण कुण्डल अँगूठीआदिसे अलंकृत मण्डलके समीप बैठाग्यारह २ पाठका एक२रुद्रपाठकरै इसी भांतिदूसरा मंडल बनाय श्वेत वस्त्र श्वेतपुष्प आदिसे अलंकृत उस नारीको मंडल में बैठाय रुद्र पूजक आचार्य उसको स्नान करावै औ अर्कपत्र के दोनेमें जल लेकर रुद्रैकादशिनी करके उसका अभिषेक कर सातसौ चार पत्र अर्कके बहुत सुन्दर औ अच्छिद्रलावै औ अश्वस्थान गजस्थान बल्मीक संगम ह्रद वेश्यागण राजद्वार औ गोष्ठ इन स्थानों की मृत्तिका सर्वौषधि रोचना अनेक नदी औ तीर्थों के जल इन सब पदार्थोंको एककलशमें डाल उसको स्नानकरावै औ आठों दिशाओं में अश्वत्थपत्र फल अक्षत सहित जो आठ कलश स्थापनकर रक्खेहैं उनसे क्रम करके स्नान करावै इस प्रकार स्नानकर गौ सुवर्ण वस्त्र आदि सहित सबसामग्रीआचार्य को देवै और भी ब्राह्मणों को भोजन दक्षिणा वस्त्र आदि देकर क्षमापन करावै इस बिधि से जो स्त्री रुद्रस्नान करै वह सौभाग्य सुख औ संतान पातीहै ब्राह्मणोंकी सम्मति से चाहे जिसकालमें रुद्रस्नानकरै उस स्त्रीके शरीर के सब दोष निवृत्त होजाते हैं औ उसके संतान चिरंजीव होते हैं ॥

एकसौतेरहवां अध्याय ॥

राजा युधिष्ठिर कहते हैं कि हे श्रीकृष्णचन्द्र अब हमचन्द्र औ सूर्य के ग्रहण में स्नान का बिधान सुनना चाहते हैं आप वर्णन करैं यह राजाका वचन सुन श्रीकृष्णभगवान् कहनेलगे कि हे महाराज जिस पुरुष की जन्मराशि में ग्रहण हो

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by eGangotri Foundation USA

उसके कल्याण के अर्थ हमस्नानका विधान कहते हैं ग्रहण से प्रथमही ब्राह्मणोंका वरणकर स्वस्तिवाचन कराय शुक्ल वस्त्र आदिसे गुरुका पूजनकर चारकलशचारसमुद्रमानकर स्थापन करै उनमें अश्वस्थान गजस्थान आदिसे मृत्तिकालाकर डालै औ प्रत्येक कुंभमें गोरोचन पंचगव्य पंचरत्न पद्म शंख स्फटिक श्वेत चंदन हाथीदांत केशर उशीर गूगल सर्षप औ तीर्थजल डाल उनमें इन मंत्रोंसे देवताओंका आवाहन करै (सर्वेसमुद्राःसरितस्तीर्थानिजलदास्तथा। आयांतुयजमानस्यदुरितक्षय कारकाः। योसौवज्रधरोदेव आदित्यानांप्रभुर्मतः। सहस्रनयन श्चेन्द्रोपीडामंतर्व्यपोहतु। मुखंयःसर्वदेवानांसप्तार्चिरमितद्युतिः चंद्रोपरागसंभूतामग्निःपीडांव्यपोहतु।यःकर्मसाक्षीलोकानांधर्म राजेतिविश्रुतः।यमश्चंद्रोपरागाच्चपीड़ामत्रव्यपोहतु। रक्षोगणाधिपःसाक्षात्प्रलयानलसप्रभः।खड्गहस्तोतिभीमश्चरक्षःपीड़ांव्यपोहतु। नागपाशधरोदेवःसदामकरवाहनः। सजलाधिपतिश्चंद्र ग्रहपीडांव्यपोहतु। प्राणरूपोहियो लोकान्यातिनित्यं नभोगतिः।वायुश्चन्द्रोपरागोत्थांपीडांसद्योव्यपोहतु॥योसौनिधिपतिर्देवः खड्गशूलगदाधरः। चंद्रोपरागकलुषंधनदोत्रव्यपोहतु। योसौमहेश्वरोदेवः पिनाकीवृषवाहनः। चन्द्रोपरागपापानिसनाशयतुशंकरः। त्रैलोक्येयानिभूतानिस्थावराणीतराणिच। ब्रह्मार्कविष्णुयुक्तानितानिपापंदहंतुवै) इनमंत्रोंसे कलशमें देवावाहन कर इनही मंत्रोंसे उनको अभिमंत्रण करै पीछे तीनों वेद के मंत्र औ इन मंत्रों से यजमान का अभिषेककर ये सब मंत्र पत्रोंमें लिख यजमानके शिरपर रख स्नान करावै ग्रहण के अनंतर शुक्ल वस्त्र माला आदिसे भूषित हो गोदान करै सब सामग्री आचार्य को देवै औ यथाशक्ति ब्राह्मण भोजन कराय वस्त्र दक्षिणा गौआदि ब्राह्मणों को दे संतुष्ट करै इस विधिसे

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

जो स्नान करै उसको कभी ग्रहण जनित पीड़ा नहीं होती औ परमसिद्धि पाता है सूर्यग्रहण होय तो मंत्रों में चन्द्र पद के स्थान में सूर्यपदा लगालेवै जो इस विधान को नित्य श्रवण करै अथवा सुनावै वह सब पापोंसे छुट इन्द्रलोक में निवास करता है॥

एकसौचौदहवां अध्याय॥

राजा युधिष्ठिर पूछते हैं कि हेश्रीकृष्णचन्द्र मरणकेसमय गृहस्थ पुरुषको किस प्रकारसे प्राण त्यागने चाहिये यह आप वर्णनकरैं हमको श्रवण करने का बड़ा कुतूहल है यह राजा का वचन सुन श्रीकृष्ण भगवान् कहनेलगे कि हे महाराज जब पुरुष अपना मृत्युसमीप जानै तो गरुड़ध्वज बिष्णुभगवान् का चिंतनकरै औ शुचिहो स्नानकर सब उपचारोंसे नारायणका पूजनकर अनेकप्रकार के पुण्यस्तोत्रों से स्तुति कर यथाशक्ति गौ भूमि सुवर्ण वस्त्रघर आदि दान करै औ बंधुपुत्र कलत्र क्षेत्र धन धान्य आदिसे अपना चित्त निवृत्त करै मित्र शत्रुको समान समझै औ सब कर्मोंका त्यागकर ये वाक्यकहै। (परित्यजाम्यहंभोगांस्त्यजामिनिखिलान्जनान्। धनादिकंमयं-त्सृष्टमुत्सृष्टंचानुलेपनम्। शुश्रूषणादिकंचैवदानमानादिकंतथा। होमादयःकृतायेयेसदानित्यक्रियामया॥नैमित्तिकास्तथाकाम्याः श्राद्धधर्मामयेप्सिताःत्यक्तश्चाश्रमिणांधर्मो।वर्णधर्मस्तथामया। आभ्यांकराभ्यांविहनन्कुर्वन्कर्मसुदुःसहम् । नपापंकस्यचित्कुर्य्यांप्राणिनःसंतुनिर्भयाःनभसिप्राणिनोयेचयेजलेयेचभूतले। क्षितेर्विवरगायेचयेचपाषाणसंपुटेयेधान्यादिषुवस्त्रेषुशयनेष्वासनेषुचातेतिष्ठंतुसुखंनित्यं दत्तंतेभ्यो ऽभयंमया। नमेसुबांधवः कश्चिद्विष्णुंमत्त्वाजगद्गुरुम्। मित्रपक्षेचविष्णुर्मेखंचोर्ध्वंचतथादि

CC-0. Gurukul Kangri University, Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

शि। पार्श्वतोमूर्द्धहृदये वायव्यांवाचिचक्षुषि। श्रोत्रादिषुचसर्वेषु समेविष्णुःप्रतिष्ठितः) ये मंत्रपढ़ सबका त्याग कर दक्षिणाग्र कुशा बिछाय पूर्व अथवाउत्तर ओर शिर कर शयन कर विष्णु भगवान्का चिंतन करै (विष्णुंकृष्णंहृषीकेशंकेशवंमधुसूदनम्। नारायणंनरंसौरिंवासुदेवंजनार्दनम्। वाराहंयज्ञपुरुषं पुण्डरीकाक्षमच्युतम्। वामनंश्रीधरंकृष्णंसुरेंद्रमपराजितम्। पद्मनाभंहरिंश्रीदं दामोदरमधोक्षजम्।सर्वेश्वरेश्वरंशुद्धं प्रभुंवामनमीश्वरम्। चक्रिणंगदिनंशांतं शंखिनंगरुड़ध्वजम्। किरीटकौस्तुभधरं प्रणमाम्यहमव्ययम्। अहमस्मिजगन्नाथेमयिचास्तुजनार्दन अनयोरन्तरंमास्तुअग्नियुक्ताशमीइवा। अयंविष्णुरयंशौरिरयंकृष्णःपुरोमम। नीलोत्पलदलश्यामः पद्मपत्रायतेक्षणः। एषपुण्यतमोविष्णुं पश्याम्यहमधोक्षजम्) इन मंत्रों को पढ़ता हुआ श्रीविष्णुभगवान्को प्रणामकरै औ (ओंनमोभगवतेवासुदेवाय) इसमंत्र को निरंतर जपै औ प्रसन्नमुख शंखचक्र गदा पद्मधारे केयूर कटक कुंडल श्रीवत्सपीतांबर आदि से भूषित नवीनमेघ के समान श्यामवर्ण ऐसारूप विष्णुभगवान् का ध्यावै अथवा जिस रूपपर अपना मनस्थिर होय उसी का ध्यान करै इस प्रकार जो प्राणत्याग करै वहसब पापों से छूट विष्णु भगवान् में लीनहोजाताहै इतनासुन राजायुधिष्ठिर बोले कि हेश्रीकृष्ण चन्द्र यह विधान जो आपने कहा सो स्वस्थचित्त रहने से होसक्ताहै परंतु मरण के समय तरुण औ आरोग्य पुरुषों की भी चित्तवृत्तिमोहकोप्राप्त होजातीहै वृद्ध औ रोगियोंकी तोकथाही क्या है अति वृद्ध औ रोगग्रस्त क्योंकर कुशा के शयनपर बैठ ध्यान करसक्ता है इसलिये और कोई उपाय आपकहैं कि जिससे निष्फलमरण न होय यह राजाका बचन सुन श्रीकृष्ण भगवान् कहनेलगे कि हे महाराज यही मुख्यउपायहै कि जो

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

और कुछभी न होसकै तो सब ओरसे चित्तवृत्ति रोककर गोविन्द स्मरण करता हुआ प्राणत्याग करै क्योंकि जिस२भाव को स्मरण करताहुआ अंतमें शरीर त्यागै उस२भावकरकेभावितउसीको प्राप्तहोताहै इसलिये सबप्रकारसेवासुदेवकाचिंतन करनाचहियेराज्य उपभोग भोजन वाहनस्त्री गंध माल्य मणि वस्त्रभूषणआदिमें जो अत्यंतमोहसे इच्छारहै उसकानामआर्तिध्यानहै दहन हनन ताड़न प्रहारमेंचित्तजाय दया न उत्पन्नहोय औ मन तथा इन्द्रिय वशमें न रहैं यह रौद्र ध्यानहै सूत्रार्थवेद महा व्रत आदि का भावन इन्द्रियों का उपशम मोक्षकी चिंता शम दम औ गंगादिकों का स्मरण जिसमें होय उसका नाम धर्म ध्यानहै सब इन्द्रिय अपने२ विषयोंसे निवृत होजायँहृदय में इष्ट अनिष्ट का कुछचिंतन न रहै औ आत्मास्थिर होकरपरमेश्वर में निविष्टहोय इसका नाम शुक्लध्यानहै आर्ति औ रौद्र ध्यानसे असद्गति होताहै धर्मध्यान से स्वर्गवासमिलताहै औ शुक्लध्यानसे मोक्ष प्राप्ति होतीहै इसलिये ऐसाही प्रयत्न करना चहिये जिससे शुक्ल ध्यान स्थिर होय सात हजार दिव्य वर्ष जलमें सोलह हजार अग्निमें गौओं के घरमें साठ हजार वर्ष औ युद्धमें प्राणत्यागने करके अस्सीहजार वर्ष स्वर्गवासहोताहै परंतु अनशनव्रत करके प्राण त्यागनेसे अक्षयगति मिलतीहै॥

एकसौपन्द्रहवां अध्याय॥

राजायुधिष्ठिर पूछते हैं कि हे श्रीकृष्णचन्द्र तड़ाग वापी कूप आदि जलाशय का उत्सर्ग किस विधि से औ किससमय में किया जाताहै यह सब आप वर्णनकरैं यह राजा का प्रश्न सुन श्री कृष्णभगवान् कहनेलगे कि हे महाराज आपने बहुत उत्तम बातपूछी अब हम तड़ागआदि का उत्सर्ग विधानकहते

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हैं प्रथम सुन्दर सोपान अर्थात् पैडियों करके युक्त पक्कातलाव बनावै जिसको पाल दृढ़हो औ चारों ओर वृक्षलगावे जब वह तड़ाग कार्त्तिक महीने में जलसे पूर्णहोजाय उस समय स्थिर नक्षत्रों में उसका उत्सर्ग करै अश्वत्थ उदुम्बर प्लक्ष औ वटके काष्ठ के दंडों पर दिक्पालों के रंग की पताका लगाय दिशाओं में स्थापन करै मध्य में पंच रंग का बड़ा ध्वज स्थापन करै यजमान के चार हाथ अथवा पांचहाथ प्रमाण की वेदी मध्यमें यूप करके भूषित बनावै कदम्ब अश्वत्थ पलाश औ विकंकत वृक्षके काष्ठका यूप चारों वर्णों के लिये क्रमसे कहा है औ ब्राह्मण के लिये वट औ विल्व का क्षत्रियको खदिर का वैश्यको उदुम्बर औ शूद्रको महुआ के काष्ठका यूपभी बनाना योग्यहै औ विभीतक उदुम्बर शाक औ शाल्मलि वृक्षका यूप शूद्र बनावै अष्ट दिक्पालों की मूर्त्ति रंग करके लिखै औ ब्रह्मा सावित्री विष्णु लक्ष्मी औ रुद्र पार्वती की मूर्त्ति भी लिखै पीछे उनका सब उपचारों से पूजन कर चारों दिशाओंमें हस्त प्रमाण औतीन मेखला करके युक्त कुण्ड बनावै औउत्तम वस्त्र पहिने सुवर्ण के भूषण औ पुष्प माला चन्दन आदि से अलंकृत सोलह अथवा आठ होता अर्थात् हवन करने वाले ब्राह्मण कल्पनकरै औवेद वेदांग इतिहास पुराण आदि जाननेहारा शांतचित्त आचार्य होय ताम्रपात्र मृत्तिकाके पात्र होमके लिये समिधा तिल और भी जो सामग्री अपेक्षित हो सब एकत्र कर ग्रहयज्ञ के विधान से वेदीमें स्थापन किये देवताओं के नामसे औ वारुण मंत्रोंसे हवनकर इन्द्रादि लोकपालों को अपनी २ दिशामें बलिदेवै मण्डप के द्वारों में सुवर्ण औ पल्लवों सहित कलश स्थापन करै अश्वत्थ पत्रों की वन्दनमालाबांधैसुवर्णका कूर्म ताम्रका मकर चांदीका मत्स्य रांगका मेडक शीशेकाडुंडुभ

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हंस आदि श्वेतपक्षी चांदी के औ चक्रवाक आदि पीतवर्ण पक्षी सोने के औ चांदीकी जलौका बनाय सबको ताम्र पात्र में स्थापन करै नाममंत्र से इन सबकी प्रतिष्ठा औ पूजाकरवैदिक मंत्रोंसे यूप की प्रतिष्ठा करै कुंकुम चंदन आदि से यूप को लिप्तकर पुष्प धूप दीप आदि से उसका पूजन करै फिर आचार्य चरुश्रपण कर व्याहृतियों से हवनकर गीत वाद्य आदि से वरुणका आवाहन कर ताम्र पात्र को जलमें लेजाय वरुण को निवेदन कर और भी रत्न औ अनेक प्रकारके बीज वरुणके निमित्तजलमें छोड़ै फिर एकगौको प्रदक्षिण करयजमानउसका पूंछ पकड़ अपनी भार्या सहित जलका अवगाहन करै फिर जलसे निकल वह गौ औ यथाशक्ति दक्षिणा ब्राह्मणको देवै औ कुदाल आदि आयुधों का पूजन कर कर्मकारों का भी सत्कार करै औ (सामान्यंसर्वभूतेभ्योमयादत्तमिदंजलम् । तेनमेभगवान्नित्यं वरुणःप्रीयतांमुदा) यह मंत्र पढ़ थोड़ाजल तड़ाग में डालै पीछे हजार से लेकर एक तक जितना सामर्थ्य होय उतनी गौ ब्राह्मणों को देवै यह तड़ाग के उत्सर्ग काविधानहै अब हम वापी औ कूपकी प्रतिष्ठा का विधान कहतेहैं कुंडमंडप वेदी यूप भूषण वस्त्र आदि सब सामग्री पूर्वोक्तरीति से इस भी एकत्र कर वापी के चारों कोणों में तीर्थजल से पूर्ण पुष्प चंदन श्वेतवस्त्र आदिसे भूषित चार कलश स्थापन करै औ पूर्वरीति व्याहृतिहोम औ ग्रहहोमकर वरुण औ लोकपालोंको वलिदेकर वरुण सूक्तोंका पाठ करै वेदीके मध्य में पंचरंग से कमल लिख उसके मध्यमें शिव ब्रह्मा औ विष्णुका पूजन कर मत्स्य कच्छप मंडूक आदिका पूर्वरीति से अधिवासन करै(मित्र मित्रोसि भूतानांधनदोधनकारिणाम् । वैद्योऽध्यभिभूतानांशरण्यःशरणार्थिनाम्) इस मंत्र से वरुणका विसर्जनकरै औ पूजा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

केप्रारंभमें (नमस्ते विश्वगुप्तायनमोविष्णोअपांपते । सान्निध्यं कुरुदेवेशसमुद्रेयद्वदत्रवै) इसमंत्रसे आवाहनकरै ब्राह्मणों को दक्षिणा देवै औ एकउत्तम गौ एकब्राह्मणको देवैइनतड़ागआदि की प्रतिष्ठाओं में अनिवारित भोजन देनाचहिये इसमें वित्त-शाठ्य न करै तड़ागादिकोंका जल उत्सर्गकियेबिनाअशुचिहो-ता है बिना मंत्रकुशाग्र करके भी समुद्र का स्पर्शनकरै। अग्नि वाचो इत्यादि वैदिक मंत्र से पहिले अभिमंत्रण कर समुद्र में स्नान करै। श्रावण मास में शतभिषा नक्षत्रमें फलमूलअक्षत आदि करके समुद्रको अर्घ्य देकर पीछे स्नान करै तो हजार जन्मोंमें किये पाप क्षणमात्रमें नष्ट होजाते हैं विधि पूर्वक कर्म करनेसे करता औकारयिता स्वर्गको जातेहैं औविधि हीनकर्म से दोनोंका नरक में पात होताहै तड़ाग आदिबनाकरप्रतिष्ठा न करै तो उसका बनवानाही निष्फल है तड़ाग आदि बनाने हारा रत्न जटित सुवर्ण के बिमान में बैठ दिव्यलोकको जाताहै इसरीतिसे उत्सर्गकर आठदिनतक बड़ा उत्सव करै कर्मकार स्थपति शिल्पी सूत्र धार आदिभी जलाशय बनाने से स्वर्ग को प्राप्त होतेहैं जलाशय खोदनेके समय जितने जीव मरैं वे सब उत्तम गतिको प्राप्त होतेहैं धेनुके शरीर में जितने रोम होयँ उतने दिव्य वर्ष कूप आदि बनानेवाला स्वर्ग में रहता है औ तड़ाग बनानेवाला करोड़ोंयुग पर्यंत स्वर्गसुख भोगता है उसके जो कोई पितर दुर्गति को प्राप्तभये हों वे सबस्वर्ग को जाते हैं पितर नाचते हैं कि हमारेकुल मेंऐसा पुत्र उत्पन्न हुआ जिसने जलाशय बनाया छोटासा भी जलाशय बनावै जिसमें एक गौकी भी तृषा निवृत्तहोय तो अनंतफल होताहै संसारके स्त्रीपुत्र धन आदि सब पदार्थ नश्वरहैं तड़ाग वापी देवालय औ सघनछायावाला वृक्ष ये चारोंसंसारसे उद्धारकरतेहैं इस-

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

लियेसर्वस्वकरके भी एक जलाशय अवश्य बनाना चहियेजिस भांति पुत्रके देखनेसे माताका स्वरूप ज्ञात होताहै इसीभांति जलाशय देखने औ उसका जल पीनेसे कर्त्ताका शुभाशुभज्ञात होताहै इसलिये न्यायसे धन उपार्जनकर तड़ागआदि बनावै जो धूप औ गरमी से व्याकुल पांथ जहां आकरठंढा जल पान कर तटके ऊपर वृक्षोंकी घनी औ ठंढी छायामें विश्रामकरैं तड़ाग आदि बनानेहारा अपने दानों कुलोंका उद्धार करता है इष्टापूर्त करनेहारा पुरुषकृतकृत्य होताहै इस लोक में जोतड़ाग आदि बनाताहै उसीका जन्म सफलहै औ वही अजरअमर है जब तक तड़ागआदि बनेरहैं औ जब तक तड़ाग आदि बनानेकी कीर्त्ति रहै तबतक वह कैलास में सुख भोगताहै धन्यहैं वे पुरुष कि जोहंसआदि पक्षी औ कमल कुवलय आदि पुष्पों करके मंडित अपने बनाये तड़ाग में लोकोंको जल पीते देखते हैं जिसके तलावमेंघट अंजलि मुख चंचु आदिकरके अनेक जीव जल पीतेहैं उसीका जन्म सफल है उत्तम तड़ागबनाय उसके तटपर देवालय भी बनावै तो उनके पुण्यका कहां तक वर्णन करैं देवालयकी ईंट जबतक खंड २ न होजायँतबतक देवालय बनानेवाला स्वर्ग में निवासकरता है ऐसे स्थानमें कूप बनावै जहां बहुत जीवजल पीवैं औ स्वादुजल उसमें होय तो बनानेवालेके सात कुलोंका उद्धार होजाता है जिसके बनाये कूपका स्वादुजल मनुष्य पीवैं उसने सब पुण्य किये जो पुरुष तड़ाग बनाय उसके तटपर वृक्षोंके बीच उत्तमदेवालय बनावै उसकी कीर्त्ति सर्वत्र व्याप्त होतीहै औ बहुतकाल दिव्य भोग भोगकर चक्रवर्ती राजा होताहै जिनके बनायेतलाववापीकूप धर्मशाला आदिहैं जो अन्नदान करते हैं औ जिनके वचन अति मधुर हैं यमराज उनका नामभी नहीं लेते॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

एकसौ सोलहवां अध्याय ॥

राजायुधिष्ठिर कहतेहैं कि हे श्रीकृष्णचंद्र आप वृक्ष लगाने का माहात्म्य औ वृक्षोद्यापनका विधानवर्णनकरैं यह राजाका वचनसुन श्रीकृष्णभगवान् कहने लगे कि हे महाराज आपने बहुत उत्तम बातपूछी पांच वृक्ष लगाये बहुतउत्तम औ दशपुत्र भी उत्पन्न किये किसी अर्थ नहीं धन्यहै वृक्ष कि जो अपनेपुष्प पत्रफल मूल वल्कल काष्ठ औछायाकरकेकिसी अर्थीकोनिराश नहीं करते पुत्र तो क्या जाने वर्ष भर में एकदिन श्राद्ध करैं अथवा न करैं औ वृक्ष नित्यही अपनेफल पुष्पआदि करकेआरोपण करनेहारे का श्राद्ध करते हैं न वह फल अग्निहोत्रआदि कर्मोंसे होय औ न पुत्रउत्पन्न करनेसे जो वृक्षलगाने सेहोताहै सच्छाया सपुष्पाऔ सफला वृक्ष बाटिका कुल स्त्री की भांति अपने भर्त्ता को दोनों लोकोंमें सुखदेनेहारी होतीहैअशोकपल्लव हैं कर जिसके तिल करके भूषित हैं मुख जिसका ऐसीवृक्षबाटिका वेश्याकी भांति सब के उपभोग के योग्य जो लगावै उसको अवश्य उत्तमलोक प्राप्ति होतीहै वह पुरुष नित्यगायत्री जपका नित्यदान का औ नित्य यज्ञ करनेका फल पाताहै जो वृक्ष लगाता है एक पीपल एक नींब एक वट दशइमली कैथ विल्व औ आमलक ये तीन औ पांच आम्रके वृक्षजोपुरुषलगा देवै वह कभी नरक नहीं देखता धनाढ्यों के घरमें अतिथिका सत्कार हो वा न हो परन्तु वृक्षतो फल पुष्पआदि करकेअवश्य ही सबका सत्कार करता है जिस ने जलाशय न बनवाया औ एकभी वृक्ष न लगाया उसने संसार में जन्म लेकर क्या किया वृक्षों के तुल्य कोई परोपकारी नहीं है कि आप धूपमें खड़े रहकर दूसरे को छाया करते हैं औ फलपुष्पआदिसेसबकी

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

शुश्रूषा करनेमें तत्पर रहते हैं पार्वती जीने मंदराचल में अपना पुत्र कल्पनाकर शोकनाशन अशोकवृक्ष लगाया औ जातकर्म आदि सब संस्कार उसके किये अब हम सब पापहरनेहारा औ कीर्त्तिवर्द्धन वृक्षोद्यापन का विधानकहतेहैंकांटोवालाकुबड़ा कोटर युक्त कीट जिसमें लगें औ स्त्रीलिंग जिसकानामहोऐसा वृक्ष न लगावै उत्तम वृक्ष आरोपण कर उसकेचारोंओर जल के लिये आलवाल छोड़ पक्का चौतराबांध उत्तम मुहूर्त्तमेंउस का उद्यापनकरै पहिलेदिन वृक्ष को पताकाओं सेअलंकृतकर रक्तवस्त्र उढ़ाय रक्तसूत्रसे वेष्टितकर उसका अधिवासन करै चारों दिशाओंमें श्वेतवस्त्रोंसे आच्छादित पंचपल्लव भूषितचंदन औ पुष्पमालासे अलंकृत रत्नयुक्तचार कलशस्थापनकरैऔर भी जो वृक्ष उसके समीप हों सब को रक्त सूत्र से वेष्टित कर पताका से अलंकृत करै औ सब के मूलमें एक२कलशस्थापन करै सुवर्ण के पत्र औ फल पंद्रह अथवादश बनाकरसबबीजों सहित ताम्रपात्र में रक्खै औ वाद्य घोषसहित सब दिशाओं में इंद्रादि लोकपालोंको बलि देवै इस प्रकार मंत्रवेत्ताआचार्य अधिवासन करै दूसरेदिन प्रभातही मेखलासहित कुंडबनाय ग्रह यज्ञ विधान से शांतिकर्मका आरंभकरैपहिले सुवर्णवस्त्र आदि करके चार अथवा आठ ब्राह्मणोंका पूजनकरउनसे घृत औ तिलोंका हवन करावै मातृका स्थापनकर पुष्प औअक्षतों करके उनका पूजन करै पीछे पायस औघृत करके परिप्लुत चरु सिद्धकरके होमकरै औ जातकर्म से लेकर गोदान पर्यंत सब संस्कार वृक्ष के करै पहिले वृक्षको स्नानकराय जातकर्म अन्न प्राशन कर सुवर्ण सूची से कर्ण वेध करै चूड़ाकरण कर मुंजकी मेखला औ वस्त्र पहिनावै पीछे गोदान संस्कार करै कोई आचार्यकहतेहैं कि माधवीलता मालतीअथवासल्लकीकेसाथ वृक्ष

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by eGangotri

का बिवाह भी करना चाहिये इसप्रकारप्रतिष्ठाकर ब्राह्मणउस वृक्षकोआशीर्वाददेवैंओ यजमानपुष्पांजलिलेकर(येशाखिनःशिखरिणांशिरसोविभूषायेनंदनादिषुवनेषुकृतप्रतिष्ठाः।येकामदाःसुरनरोरगकिन्नराणांतेमेनतस्यदुरितार्तिहराभवंतु॥एतैर्द्विजैर्दिविधदत्तहुतैर्हुताशः पश्यत्यसावहिमदीधितिरम्बरस्थः। त्वंवृक्षपुत्रपरिकल्पनयावृतोसिकार्यंसदैवभवताममपुत्रकार्यम्) ये मंत्र पढ़ पुष्पांजलिदे घृतमें मुखदेख वृक्षको पुत्र की भांति बार २ लालनकर (अंगादंगात्संभवतिहृदयाच्चाभिजायते आत्मावैपुत्रनामासित्वंजीवशरदांशतम्) यहमंत्र पढ़ आशीर्वाददेवै ब्राह्मणों को दक्षिणादेवै औ आचार्यको उत्तमधेनु देकर बड़ा उत्सवकरै दीन अनाथोंको अनिवारित भोजन देवै औरोंको भी प्रसन्न हो सुरा आसव आदि देवै औ दास कर्मकार आदि सबका यथाशक्ति सत्कार करै सायंकालकेसमय अपने भाई बन्धुओं सहित भोजनकरै इसविधिसे जो वृक्षोंका उत्सवकरै वह दोनों लोकों में अभीष्ट फल पाताहै पुत्रों के बिना मनुष्यों की शुभगति नहीं होती औ कुपुत्रहोने से दोनों लोकोंका नाशहोताहै यह बिचार उत्तमवृक्षलगाय शास्त्रकी रीतिसे उनको पुत्रकल्पना करै॥

एकसौचहवां अध्याय॥

श्रीकृष्ण भगवान् कहतेहैं कि हे महाराज जो पुरुष अतिरमणीय देवालय बनावै उनका यह शरीर नष्ट होजाने पर भी कीर्त्तिमय शरीर स्थिर रहताहै जो शुभ्रवर्ण अति ऊंचे औ पताकाओं करके अलंकृत देवप्रासाद बनावैंवेसंसारमें अनेक प्रकारके सुखभोग स्वर्गको जातेहैं जो उत्तमप्रासाद बनायउनके बीच सुवर्ण चांदी ताम्र पाषाण अथवा लोहकी प्रतिमास्थापन करतेहैं वे अनेक राजाओं करके सेवित चक्रवर्ती राजा होते हैं

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

जो मेरुनामक प्रासाद में देवप्रतिमा स्थापन कर पंचामृत से स्नान कराते हैं वे दिव्य कल्प इन्द्र बनके स्वर्ग का राज्य कर चक्रवर्ती होतेहैं जो उत्तम चन्दन से देवताओं को अनुलेपनकरैं वे दिव्य गंधयुक्त देहधार नन्दन वनमें अप्सराओं के साथ विहार करते हैं जो सुगन्धयुक्त कमल उत्पल आदि दिव्य पुष्पों करके देवताओं का अर्चन करते हैं वे बिमान में बैठ स्वर्ग को जाते हैं जो दिव्य धूपों से देवताओं को धूपित करैं वे दिव्यदेह धार स्वर्ग में जाय देवांगनाओं के साथ विहार करते हैं जो देवता पर वस्त्र चढ़ातेहैं वे दिव्य भूषण वस्त्र औ दिव्य मालाओं करके भूषित हो उत्तम सिंहासन पर बैठते हैं औ दिव्यांगना उनके ऊपर सुवर्ण दंडके चामर धूनन करतीहैं देवालयमेंदीप प्रज्वलित करै तो दिव्य देहधार दिव्यनारियोंकरकेवेष्टितरत्नजटित सुवर्ण के बिमान में दीप्यमान होता है जो देवालय में जागरण कर नृत्य गीत आदि उत्सवकरै उसको अप्सरा औ गन्धर्व गीत नृत्यसे प्रसन्न करते हैं जो पुरुष देवालय में लेपन आदि करैं वे स्वर्गमें जाय रत्न प्रासादों के बीच निवासकरतेहैं जो पुरुष देवालयमें परमभक्ति से घंटावितान छत्र चामरआदि चढ़ावै वह उत्तम रत्नोंका स्वामी औ चक्रवर्तीहोताहै जो पुरुष स्तुति वचनरूप पुष्पों से देवताओं का अर्चन करैं औ प्रणाम करैं वे दोनों लोकों में उत्तम फल पातेहैं ॥

एकसौअठारहवां अध्याय ॥

राजायुधिष्ठिर पूछतेहैं कि हेश्रीकृष्णचंद्रकौनसे तपसेनियम से व्रतसे अथवा दानसे अत्यंततेजोयुक्तशरीर इसलोकमें होता है यहआपकथनकरैंयहराजाकावचनसुनश्रीकृष्णभगवान्कहने लगे कि हे महाराज एकसमय पिंगलनामतपस्वी मथुरामें आये

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

उनको हमारी पत्नी जांबवतीने यहीबातपूछीथी जांबवतीकेप्रति जो उनने कहा वही हम आपकोकथनकरते हैं संक्रांति सूर्यचंद्र ग्रहण वैधृति व्यतीपात उत्तरायण दक्षिणायन विषुव एकादशी शुक्ल चतुर्दशी तिथिक्षय सप्तमी अष्टमीआदि पुण्यदिनोंमें स्नान कर व्रत रख स्त्री अथवा पुरुष अंगण के बीच घृत कुंभ औ वस्त्र-सहित प्रज्वलित दीपक भूमिदेवों को देवै इतना सुन राजा युधिष्ठिर ने पूछा कि भूमिदेव ब्राह्मण किसको कहते हैं यह हमारा संशय प्रथम आप निवृत्तकरैं तब श्रीकृष्णभगवान्कहनेलगे कि हे महाराज पूर्वकालमें सत्ययुग के बीच त्रिशंकुराजा सदेह स्वर्ग को जाना चाहताथा उस का वशिष्ठजी ने चण्डाल बनादिया त्रिशंकुनेयहसबवृत्तान्त विश्वामित्रजीसेकहा विश्वामित्रजीको बड़ा क्रोधहुआ औ दूसरी सृष्टि रचने का आरम्भ किया औ सब देवताओं सहित दूसरा स्वर्ग त्रिशंकु के लिये बनानेलगे शृङ्गाटक नालिकेर ऊंट भेड़ वृन्ताक कोद्रव कूष्मांड आदि पदार्थ बनाये औ नये सप्तर्षि तथा देवताओंकी प्रतिमा बनाईं उस समय इंद्रने आय प्रार्थना कर विश्वामित्र जी को सृष्टि निर्माणसे रोका वे प्रतिमा जो विश्वामित्रजीने बनाई थीं उनमें ब्रह्मा विष्णु आदि देवताओंका सान्निध्यभया वही भूमिदेव कहाये औ अपने भक्तों को वर देनेलगे उनके संमुख दीपदान करना चाहिये चार प्रस्थ घृत का प्रज्वलित दीप रक्तवस्त्र सहित (तद्विष्णोःपरमंपदं) इत्यादिमंत्र से सूर्यनारायणको निवेदन करै पीतवस्त्र युक्त विष्णुभगवान्को श्वेत वस्त्र युक्त शिवजीको कौसंभवस्त्र युक्त रविको लाक्षारस रंजित वस्त्रयुक्त दुर्गाको नीलवस्त्र युक्त कामदेवको खादिरवर्ण वस्त्र युक्त गणेशको नागोंको कृष्णवस्त्र युक्त दीप निवेदन करै औ यह विशेष श्रवण करो कि सूर्यको पूर्णवर्ति शिवको ईश्वरवर्ति विष्णुको

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

भोगवर्ति ब्रह्माको पद्मवर्ति गौरीकोसौभाग्यवर्ति कामकोअशोकवर्ति दुर्गाको रक्तवर्ति औ नागोंको नागवर्ति युक्तदीपक देवै प्रथम देवता का पूजनकर पीछे बड़े पात्र में घृत भरकर दीपदान करै इसविधिसे जो दीपदान करै वह देदीप्यमान विमान में बैठ स्वर्गमें जाताहै औ वहां प्रलयकाल पर्यंत निवासकरता है जिस प्रकार दीप प्रकाशित रहता है उसी प्रकार दीपदान करनेहारा भी प्रकाशित होताहै औदीपकशिखाकीभांतिउसको भी ऊर्ध्वगति होती है घृत से अथवा तैल से दीपदान करै दीपका तैल और किसी काममें न लगावै औ दीपका निर्वापण तथा हरण भी न करै दीप तेलसे कर्मकरनेहारेके नेत्र में फूला पड़ताहै दीप बुझादेनेवाला काणा होताहै औ दीप का हरण करै तो अंधाहोय ललितानाम राणी नित्यदीपदान कियाकरती उसको सपत्नियोंने पूछा कि हे ललिते दीपदान का फल तू हमको भी सुनाव तेरी इतनी भक्ति दीपदान में क्योंकर है तब ललिता कहनेलगी कि हेसखियो मुझे तुम्हारे साथ मत्सर औ ईर्षा नहीं है इसलिये मैं दीपदानका फल तुमको सुनातीहूं ब्रह्माजीने मनुष्यों के उद्धार के लिये साक्षात् पार्वतीजीकोदेविका नदी रूपसे भूमिपर उतारा जिसमें एकबारभी स्नान करै मनुष्य शिवजीका गणहोताहै जहां नृसिंहजीने स्नान किया है उस नृसिंहतीर्थमें स्नान करने से सब पाप निवृत्त होजाते हैं सौवीरकनाम राजा जिसके मैत्रेय पुरोहित थे उसने देविका के तटपर विष्णु मन्दिरबनाया औ नित्यपुष्प धूप दीपनैवेद्यआदि से वहांपूजनकियाकरता एकदिनकार्तिकी पूर्णिमाको वहांदीपदान किया औ बड़ा उत्सव कराया अंतमें सब निद्रावशहोगये उससमय वह दीपनिर्वाण होनेलगा इसीअवसरमें एकमूषिका जो उसीमंदिर में रहती थी दीपका घृत चाटने निकली औ

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

दीपककी बत्ती को अगली ओर खेंचा इससे वह दीप चैतन्य होगया औ जलने के भयसे घृत भी न खासकी वही मूषिका मरकर विदेह राजाकी पुत्री मैं भई जो इस धर्मनिष्ठ राजाकी रानी औ तुम्हारी सपत्नी हूं बिना इच्छा भी मैंने दीपक की बत्ती निकाली उसका यहफल भया जो पुरुष भक्तिसे कार्तिकी पूर्णिमा को विष्णुमंदिर में दीपदान करतेहैं उनके फलका तो क्या वर्णन करैं मैं दीपदान का फल भली भांति जानतीहूं इसीलिये नित्य देवालय में दीप जलाती हूं यह ललिता का बचन सुन उसकी सब सपत्नी भी दीपदान करने लगीं औ बहुतकाल राज्य सुखभोग सबकी सबअपने पति सहितविष्णुलोक को गईं इसप्रकार और भी जो पुरुष अथवा स्त्री दीपदान करै वह उत्तम तेज औ विष्णुलोक में वास पाताहै॥

एकसौउनीसवां अध्याय॥

श्रीकृष्णभगवान् कहते हैं कि हे महाराज कार्तिकी पूर्णिमा आमावास्या अयन संक्रांति चैत्रशुक्ल तृतीया अथवा वैशाख की द्वादशी को चार बछियाओं सहित नीलवर्ण के उत्तम वृष को छोड़ै तो अनंतपुण्य होताहै इसका बिधान गर्गमुनि ने हम को इस प्रकार उपदेश किया है कि पहिले मातृकापूजन कर अभ्युदयकारक मातृश्राद्ध करै फिर रुद्रपूजन कर घृत से हवन करै औ जीवद्वत्सा औ दूध देनेहारी गौ का एक रंगका सर्वांग सुन्दरतरुण बछड़ालेकरवाम भागमें त्रिशूल औ दक्षिण भागमें चक्रसे अंकित कर कुंकुम आदिसे अनुलिप्त करै औचार तरुण बछियाओंको भी भूषितकर उनके कानमें (पतिर्वोबलिनं पुष्टं सुन्दरंतरुणंशुभम्। ददातितेनसहिताःक्रीड़ध्वंहृष्टमानसाः) यहवाक्यकहै फिर उनको वस्त्र उदाय भोजनसे संतुष्ट कर देवा-

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

लयमें गोष्ठमें अथवा नदीसंगमआदिस्थानोंमें छोड़ैस्वेच्छाचारी गर्जता हुआ बड़े ककुद अर्थात् थुही करके युक्त औ अहंकार से पूर्ण ऐसा वृष छोड़नेवाले पुरुष धन्य हैं इस विधि से जो वृषोत्सर्ग करै उसके दश पुरुष पिछले औ दश अगले सद्गति को प्राप्त होते हैं वृष जो नदी में उतरै औ जो जल उसके शृंग आदि से उड़ै औ जिस जल को वह पुच्छ से स्पर्श करै वहसब उसके पितरों को अक्षय तृप्ति देनेहारा होता है शृंगों करके जो भूमि को खोदता है वह उस छोड़नेवाले के पितरों की तृप्ति के लिये मधुकुल्या बनतीहै चार हज़ार हाथ लंबे चौड़े तड़ाग बनाने से जो पितरों को तृप्ति होतीहै वही एक वृष छोड़ने से होती है मधु औ तिल युक्त पिंडदान से भी वहतृप्ति पितरों को नहीं होती जो एक वृषोत्सर्ग करने से होती है बहुत से पुत्र उत्पन्न करनेचाहिये जिनमेंसे एक भी गयाको जायपिंडदान करै अथवा पितरों के निमित्त वृष छोड़ै जो पुरुष अपने पितरों के उद्धार के लिये वृष छोड़ै वह आप भी स्वर्गवास पाता है॥

एकसौबीसवां अध्याय॥

राजा युधिष्ठिर पूछते हैं कि हे श्रीकृष्णचन्द्र फाल्गुन पूर्णिमाको ग्राम २ औ नगर २ में क्यों उत्सव होताहै बालक क्यों क्रीड़ा करते हैं औ घर २ में होली क्यों जलाई जाती है शीतोष्णा औ अडाडा उसको क्यों कहते हैं औ किस देवता का पूजन उस दिन कियाजाता है यह आप वर्णन करैं यह राजा का प्रश्न सुन श्रीकृष्णभगवान् कहने लगे कि हे महाराज सत्ययुग में रघुनाम राजा शूर प्रियवादी सर्वगुण युक्त औ बड़ादानी हुआ वह सब पृथिवी को जीत सब राजाओं को

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अपने बश में कर पुत्रों की भांति प्रजका पालन करताथा उस के राज्य में दुर्भिक्षव्याधि भय अकालमरण आदि कोई उपद्रव नहीं था औ सब प्रजा के लोक धर्म में आसक्त थे एक समय सब पुर के लोक एकत्र हो राजा के द्वारपर आकर त्राहि२ पुकारने लगे राजा ने उनके त्रास का कारण पूछा तब उन सब ने कहा कि महाराज ढोढा नाम राक्षसी नित्य हमारे बालकों को पीड़ादेती है औ औषध मंत्र तंत्र आदि उसपर कुछभीनहीं चलता यह पौरों का वचन सुन राजा ने अपने पुरोहित श्री वशिष्ठ मुनि से पूछा मुनि ने कहा कि हे राजन् सुमाली नाम दैत्य की पुत्री यह ढोढा है इसने बहुत काल उग्रतप कर शिव जी को प्रसन्न किया शिवजी ने प्रसन्न हो इससे कहा कि वर मांग तब इसने यह बर मांगा कि देवता दैत्य मनुष्य आदि कोई मुझे न मार सकैं औ शस्त्र अस्त्रसे वध न होय दिन में रात्रि में शीतकाल उष्णकाल वर्षाकाल में औ भीतर बाहिर कहींमुझ को भय न होय शिवजी ने कहा तथास्तु औ यह भी कहा कि ऋतुसंधि के बीच उन्मत्त औ बालक तुझे त्रास देंगे इतना कह शिव जी अंतर्द्धान भये वही राक्षसी नित्यबालकों को औ प्रजा को पीड़ा देतीहै अडाडा शब्द करके कुटुंबियों का सिद्ध अन्न ग्रहण करती है इसलिये उसको अडाडा कहते हैं यह तो उस राक्षसी का चरित है अब उसके निवारण का उपाय हम कहते हैं फाल्गुनशुक्ल पूर्णिमा को सब लोक निःशंकहो क्रीड़ा करैं अश्लील भाषण करैं नाचैं हसैं बालक काष्ठके खड्ग लेकर योधाओं की भांति हर्ष से युद्ध के लिये उत्सुक हो दौड़ते फिरैं बहुतसासूखा काष्ठ औ उपले इकट्ठे कर उनमें रक्षोघ्न मंत्रों करके अग्निलगाय उसमें हवन करैं सब लोक किलकिलाशब्दकरते ताली बजाते उस अग्नि की तीन प्रदक्षिणा करैं गावैं हसैं औ

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

निःशंकहो जो जिसके मनमें आवै सो बोलैं इसप्रकार लोकों के कोलाहल से रक्षोघ्नमंत्रों करके हवन करनेसे बालकों के खड्ग प्रहार से वह दुष्ट राक्षसी क्षयको प्राप्त होगी यह वशिष्ठजीका बचन सुन राजा ने संपूर्णराज्य में इसी प्रकार बड़ा उत्सव कराया जिससे वह राक्षसी नाश को प्राप्त भई उसी दिन से यहां ढोढाका उत्सव लोकमें प्रसिद्ध हुआ सर्व दुष्टापह औ सर्व रोगोंका शांत करनेहारा होम इस दिन कियाजाताहै इसलिये इसको होलिकाकहतेहैं सब तिथियोंका सार परम आनन्ददेने-हारी पूर्णिमा तिथि है सारत्वसेही इसकानास फल्गुहै गोबर से लिपेहुये अंगण में इसरात्रिकोबालकोंकी रक्षाकरनीचाहिये बहुत से खड्गहस्त बालक अपने घर में बुलावै वे घर में रक्षित बालकों को काष्ठ के खड्गों से स्पर्श करैं हसैं गावैं पीछे उनको गुड़ औ पक्वान्न देकर विसर्जन करै इसरात्रि को बालकों का अवश्य रक्षणकरना चाहिये इसविधि के करनेसे ढोढाका दोष शांत होता है इतना सुन राजा युधिष्ठिरने पूछा कि हे श्रीकृष्ण चन्द्र दूसरे दिन चैत्र मास औ वसंतऋतु का प्रारंभ होता है इस दिन क्या करना चाहिये तब श्रीकृष्ण भगवान् कहनेलगे कि हे महाराज होलीके दूसरे दिन प्रभात उठ आवश्यककाम कर पितर औ देवताओं का तर्पण पूजन कर सर्व दुष्टोपशांति के लिये होलिका की विभूति का बंदन करै औ घर के अंगण में गोबर से लीप रंग औ अक्षतों करके चौक पूरै उसमेंशुक्ल वस्त्र से आच्छादित पीठ रख कर पुष्पमाला आदिसे भूषित औ सुवर्ण सहित कलश स्थापन करै पीछे उस पीठपर चंदन रख सौभाग्यवती स्त्री उत्तम वस्त्र भूषण पहिन दही दूर्वा अक्षत शिरीष पुष्प आदि से उस चन्दन का पूजन करै फिर आम्र के पुष्प सहित उस चन्दन को प्राशन करै औ कामदेव का पूजन

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कर सूत मागध बंदी औ ब्राह्मणों का यथाशक्ति सत्कार कर (कामदेवःप्रीयताम्) यह वाक्यकहै औ भोजन के समय प्रथम पहिले दिनका बासी पक्कान्न थोड़ासा खाकर यथेष्ट भोजन करै इसविधिसे जो फाल्गुनोत्सव करै उसके सब मनोरथअनायास से सिद्धहोतेहैं आधि व्याधि नाशको प्राप्त होतीहैं पुत्र पौत्र धन आदि की प्राप्ति होतीहै यह पूर्णिमा सबविघ्न हरनेहारी जयदा पवित्रा औ सब तिथियों में उत्तमहै शिशिरऋतु की समाप्ति औ वसंत के आरंभ होतेही चैत्र कृष्ण प्रतिपदा को चंदन सहित आम्र पुष्पको जो प्राशन करै वह वर्षभर सुखी रहता है॥

एकसौइक्कीसवां अध्याय॥

राजायुधिष्ठिरपूछतेहैं किहेश्रीकृष्णचंद्र औरभीबहुत उत्तम२ पुष्पहैं उनको छोड़ कर दमनक का अर्पण देवताओं को किस कारण करतेहैं यहआपवर्णनकरैं औ दोलोत्सव तथा रथयात्रोत्सव का विधान भी कथन करैं यह राजा का वचन सुन श्रीकृष्ण भगवान् कहने लगे कि हे महाराज प्रथम मंदराचल में दमनक वृक्ष उत्पन्न हुआ उसका दिव्य गंध आघ्राण कर सब देवांगना कामवश होतीथीं औ उन्मत्त की भांति हँसती गाती थीं सब मुनि भी उसका गंध सूंघ वेदाध्ययन औ तप छोड़ काम वश हुये इसप्रकार सब लोक उसके गंध से उन्मत्त हुये देख ब्रह्मा जी को बड़ा क्रोध हुआ औ दमनक को कहने लगे कि तू बड़ा दुष्टहै तैंने हमारी सब प्रजा आकुल करदी जो एक जीवपर अपकार करै उसको अधमकहतेहैं तैंनेतो बहुतोंकीहानि करीहै इसलिये आज से लेकर दैव पित्र कर्ममें कोई तुझे ग्रहण न करैगा यह ब्रह्मा जीके मुख से शापसुन दमनक ने कहा कि महाराज मैंने द्वेष से अथवा क्रोधसे किसीका अपकार नहीं

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

किया आपनेमुझेऐसाही सुगंध दिया कि जिस से सब आपही उन्मत्त होजाते हैं इसमें मेरा क्या दोष है जिसको जो प्रकृति हो उसको वह क्योंकर त्याग सकताहै परन्तु आपने निरपराध मुझ को शाप दिया यहदमनकका युक्तियुक्त वचनसुन प्रसन्नहो ब्रह्माजी बोले कि हे दमनक हमने तुझे शाप दिया परन्तु अब वर भी देतेहैं कि वसंत ऋतुमें तू सब देवताओं के मस्तक पर चढ़ैगा औ जो मनुष्य भक्ति से तुझ को देवताओं पर चढ़ावेंगे वे सदा सुखी होंगे औ चैत्रमासमें सब पाप हरनेहारी दमनक चतुर्दशी प्रसिद्ध होगी इतना कह ब्रह्माजी अंतर्द्धान भये औ दमनक भी अपने गंधसे त्रिभुवनको वासित करताहुआ ब्रह्माजी से शाप औ बर पाय शिवजीके निवासस्थान उसी मंदराचल में रहा उसी दिनसे लोकमें दमनक पूजा प्रसिद्ध भई श्रीकृष्ण कहतेहैं कि हे महाराज अब हम दोलोत्सव का वर्णन करतेहैं एक समय नन्दनबनमें दोलोत्सवका प्रारंभ हुआ वसन्तऋतु में देवांगना औ देव मिलकर दोलाक्रीड़ा करनेलगे कोई देवांगना दोला पर गाती हैं कोई देवता अपनी प्रियाको आलिंगन कर माधवीलता की दोलापर झूलतेहैं विद्याधर विहारकर रहे हैं गंधर्व गातेहैं औ अप्सरा नाचतीहैं नन्दनबन में यह चमत्कार देख पार्वतीजीने शिवजीसे कहा कि हमारे लिये भी एक दोला बनवाइये जिसपर आपके साथ बैठ मैं भी दोलाक्रीड़ा करूं यह पार्वतीजीका वचनसुन शिवजीने देवताओंको बुलाकर दोला बनाने की आज्ञा दी देवताओंने आज्ञा पातेही दो उत्तम जड़ाऊ सुवर्ण के स्तंभ गाड़ उनपर एक पट्टा रख उसमें वासुकि नाग की दोला बनाई उसका फणही बैठने के लिये रत्नजटित पीठ कल्पना किया उस फणके ऊपर अति मृदु रुईकी गद्दी औ रेशमीवस्त्र बिछाये दोला की शोभा के लिये मोतिन

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by eGangotri Foundation USA

के गुच्छे औ माला चारों ओर लटकाये इसप्रकार अति उत्तम दोला बनाय देवताओंने शिवजीसे प्रार्थना करी कि हे प्रभुदोला सिद्ध होगई है आप आरूढ़ होयँ यह देवताओंकी बिनती सुन प्रसन्न हो पार्वती जी सहित श्रीमहादेवजी दोला पर चढ़ेजया औ विजया दोनों दोला को आंदोलन करने लगीं उस समय पार्वती जीने मधुरस्वर से ऐसा गीत गाया कि शिवजी आनन्द में मग्न होगये गंधर्व गाने लगे अप्सरा नाचने लगीं औ चारण अनेक प्रकारके बाजे बजानेमें प्रवृत्त भये परन्तु शिवजीके दोला विहार से सब कुल पर्वत कांप उठे समुद्र क्षोभ को प्राप्त भये बड़ा प्रचंड पवन चलने लगा औ सब लोक त्रस्त होगये इस प्रकार त्रैलोक्य को अति व्याकुल देख इन्द्र आदि सब देवता शिवजीके शरणमें गये औ प्रणामकर प्रार्थना करी कि हे नाथ अब आप इस दोलालीला को निवृत्त करैं सब भुवन क्षोभ को प्राप्त हो रहे हैं यह देवताओं की प्रार्थना सुन भक्तवत्सल श्री महादेव जी दोला से उतरे औ प्रसन्न होकर यह कहा कि आज से लेकर जो पुरुष इस दोलोत्सव को करैगा वह सब अभीष्ट फल पावैगा श्रीकृष्ण भगवान् कहतेहैं कि हे महाराज दोलोत्सव का विधान हम वर्णन करतेहैं प्रथम वसंत ऋतुमें उपवन के बीच पुष्करिणीके तटपर अति उत्तम दोला बनावै उसको छत्र दर्पण पुष्पमाला सुवर्णके कलश औअनेक प्रकारके विचित्र वस्त्रोंसे अलंकृतकरै पीछे अग्निहोत्र औदिक्पाल बलिकरकेमूल मंत्रसे इष्टदेवताको उसदोलापर चढ़ाय (विश्वतश्चक्षुरुतविश्वतो मुखो)इत्यादि वैदिक मंत्र पढ़ै औ नृत्य गीत वाद्य स्तुतिपाठ औ अनेक प्रकार के मंगल शब्दोंकरके बड़ा उत्सवकरै इसीअवसर से कुंकुम के रंग से भरी क्रीड़ा वापीमें उत्तम स्त्री अपने पतियों सहित प्रवेशकर जलक्रीड़ाकरैं औ परस्पर पिचकारियोंसेसिंचन

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

करैं जो पुरुष इसविधि से दोलोत्सव करैं वेपुत्र पौत्रधन आरोग्य आदि पाय सौ वर्ष संसार का सुख भोग अंतमें उत्तम गतिपाते हैं वसंतऋतु में भक्तिपूर्वक जो मनुष्य दोलोत्सव करतेहैं उनका जन्म सफलहै वे अपने कई कुलोंका उद्धारकर स्वर्गकोजाते हैं॥

एकसौबाईसवां अध्याय॥

श्रीकृष्ण भगवान् कहते हैं कि हे महाराज अब हम रथ-यात्रा का विधान कहतेहैं आप प्रीतिसे श्रवण कीजिये एकसमय वसंत ऋतु में भ्रमण करते हुये नारदजी शिवलोकमें गये वहां प्रणाम कर शिवजीके समीप बैठे शिवजीनेभी उनको कुशल पूछा औ यह भी पूछा कि आप कहां से आयेहैं तब नारदजी कहने लगे कि हे देवदेव अब हम सुख दुःखरूप मर्त्यलोकसे आये हैं वहां कामदेव के मित्र वसंत ऋतु ने सब जगत् वश करलिया है मन्द २ मलय पवन बहता है औ सहकाररूप मस्त हाथी पर कोकिल रूप डिंडिम को स्थापन कर नगर २ औ ग्राम २ में वसंतऋतु यह घोषणा करता फिरताहै कि कौन शिवहै विष्णुकौन है औ जड़ब्रह्माको कौन जानताहै इसजगत् का स्वामी एक कामदेवहै सब उसके शासनमें रहो औ लोग भी यह काम शासन सुनकर सब उन्मत्त हो रहे हैं सीमाओं में गोपगीत गातेहैं शस्यरक्षिका युवती वेवश हो गान करती हैं कुलटा स्त्री बिटोंमें आसक्त हो तांडव करती हैं प्रफुल्लित बन में पशु पक्षी भी काम के वश हो अपनी २ प्रिया को संग ले विहार करते हैं सब के चित्त उत्कंठित हो रहे हैं कोकिल पंचम स्वर बोलते हैं उसको सुन विरहीजनों के प्राणही जाते हैं मलयानिल से कंपित वृक्षोंके पत्र मानो हर्ष से नृत्यही कर रहे हैं बालक इस सुखके अनभिज्ञहैं औ वृद्धों के इन्द्रिय विकल हैं

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

इसलिये इन दोनोंको तो काम की व्यथा नहीं है और सब जगत् उन्मत्त हो रहा है यह विचित्र प्रभाव चैत्रका देख आपको निवेदन करने आयेहैं यह नारद जीका वचन सुन वेदमयदिव्य रथके ऊपर चढ़ गंधर्व अप्सरा मुनिगण औ सब देवताओं को संगले शिवजी मर्त्यलोक में आये औ नारद जीने जैसा कहाथा वैसाही देखा कि सब जगत् आनन्दमें मग्नहै शिवजी वसंतकी शोभा देखतेहीथे कि उनके साथ जोदेवता आदिथे वे भी उन्मत्त भये कोई उत्कंठित हो गाने लगे कोई हर्ष से अनेक प्रकारके वीणा आदि बाद्य बजाने लगे कोई प्रसन्नता से नाचनेही लगे देवताभी अलस दृष्टिहो परस्पर नर्मालाप करनेलगे इसप्रकार शिवजीने सबको क्षुब्ध हुये देख बिचार किया कि यह तो बड़ा अनर्थ हुआ कि ये सब बेवश होगये इसका शीघ्रही उपाय करना चहिये जो मनुष्य अनर्थ को उठते देख उसके विघात के लिये यत्न नहीं करते वे अवश्य आपदा करके पीड़ितहोतेहैं अब हमको इन सबकी उन्माद से रक्षा करनी चहिये औस्वामिभक्त वसंत ऋतुका भी मान रखना चहिये यह शोच वसंत ऋतु को बुलाकर शिवजीने कहा कि हे वसंत चैत्र मास में तुम अपना सब प्रभाव प्रकट करो औ चैत्र शुक्ल पक्षमें सब जीवों को औ विशेष करके देवताओं को सुखदेनेहारे हो औ देवताओं को बुलाकर स्वस्थ किया औ यहभी कहा कि जो पुरुष वसंतऋतु में रथयात्रोत्सव करेंगे वे दिव्य देहधार स्वर्ग सुख भोगेंगे इतना कह सब देवताओं को संगले शिवजी अपने लोकको गये औ बसंत ऋतुभी शिवजीकी आज्ञानुसार बनमें विहार करअंतर्द्धान भया उसी दिनसे लोकमें रथयात्रोत्सवका प्रचार हुआ है इतना सुन राजा युधिष्ठिरने पूछा कि रथयात्रा किस विधि से करनी चहिये उसमें देवता किस प्रकार चढ़ावै औ रथकैसा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

बनावै यह आप वर्णन करैं तब श्रीकृष्ण भगवान् कहनेलगे कि हे महाराज बहुत दृढ़ काष्ठका अथवा बांसकारथ बनाय उत्तम वस्त्र से वेष्टित कर पंचरंगी पताका औ पुष्पमाला आदि से भूषित कर छत्र चामर आदिसे सजाय उत्तम श्वेतवर्ण दो बैलउस में जोड़ देवालयके अंगणमें खड़ाकरै फिर वैश्वदेव ग्रहशांतिऔ शांतिक पौष्टिक आदि कर्म कर मूल मंत्र से औ (रथंतिष्ठन्नय तिवाजिनः) इत्यादि वैदिक मंत्रसे देवताको रथमें विराजमान करै उस समय शंख दुंदुभि काहला आदि बाजे बजें मशाल जलाकर बहुत से मनुष्य रथके साथ चलैं आगे २ नाच तमाशा होता चले इस प्रकार सूर्यास्त होने के अनंतर धीरे २ रथ को नगर में घुमावै रथके साथ जितने मनुष्य हों औ तमाशा देखने वाले जितने हों सबको पुष्पमाला औ तांबूल देवै जो मार्ग में रथका धुरी पहिया युग आदि कोई अंग टूटजाय तोब्राह्मणों से तिल औ घृतका हवन कराय उस अंगको बनवाय आगेरथयात्रा करै नगरके मध्य में रथको स्थापनकर वहां गीत नृत्य नाटक दोला चक्रदोला आदि अनेक प्रकार के उत्सव करै इस बिधिसे जो रथयात्रा करै उसके धन संतान औ पशु वृद्धिको प्राप्त होतेहैं औ अंतमें सद्गति पाता है माघ शुक्ल पक्ष में रथ सप्तमी होती है उस दिन उपवास कर सूर्यनारायण का पूजन कर सुवर्णका दिव्यरथ बनाय निवेदन करै वह मनुष्य सौ बर्ष पर्यंत संसार सुख भोग अंतमें सूर्यलोकको जाता है इसभांति नगर के मध्य में उत्सवकर नगरके पूर्व द्वारपर रथको लेजाय वहां उत्सव करै दूसरे दिन दक्षिण द्वारपर लेजाय रात्रि को जागरण करै औ नट आदिके तमाशे करावै तीसरे दिन पश्चिम द्वारपर चौथे दिन उत्तर द्वारपर औ पांचवें दिन फिर नगर के मध्य में रथको स्थापन करै उत्सव औ जागरण करता हुआ छटे

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

दिन अपने स्थानपर देवता को स्थापन कर महापूजा करै औ बड़ा उत्सव करावै रथयात्रा प्रसंग से सर्बपापहरा रथसप्तमीका भी हमने वर्णन किया अब और भी विशेष आप श्रवणकरैं तृतीया को गौरी का पूजन करै चतुर्थी को गणपति का पंचमीको लक्ष्मी अथवा सरस्वती का षष्ठी को स्कंदका सप्तमी को सूर्य का अष्टमी औ चतुर्दशी को शिवका नवमी को चंडिका का दशमीको वेदव्यास आदि शांतचित्त ऋषियों का एकादशीको विष्णु भगवान् का द्वादशीको इन्द्रका त्रयोदशी को कामदेव का औ पूर्णिमाको सब देवताओं का अर्चन करै इस विधिसे दमनकोत्सव आंदोलनोत्सव औ रथयात्रा अपनी २ तिथिमें सब देवताओंकी करनी चहिये इसप्रकार बसंत ऋतुमें उत्सव करनेहारा पुरुष बहुत काल स्वर्ग सुख भोग चक्रवर्ती राजा होताहै॥

एकसौतेईसवां अध्याय॥

श्रीकृष्णभगवान् कहते हैं कि हे महाराज एक समय हिमालय पर्वत में श्रीमहादेवजी तप करनेलगे औ उस समय हिमालय ने अपनी पुत्री श्रीपार्वतीजी को उनकी सेवाके लिये नियत किया ब्रह्मादि देवताओं ने विचार किया कि जो शिवजी पार्वती से बिवाह करैं औ उनसे पुत्र उत्पन्न होय तो हमारा संकट हरै इसलिये ऐसा उपाय करनाचहिये कि पार्वती के ऊपर शिवजी का अनुराग होय यह विचारकर इस कार्य में कामदेवको नियत किया कामदेव भी रति प्रीति उन्माद वारुणीदर्प शृंगार वसंत आदि अपने परिवारको संगले शिवजी के आश्रममें पहुँचा प्रथम सब आश्रम में वसंत ऋतुकी प्रवृत्ति भई पीछे कामदेवने प्रवेशकिया औ उन्मादन नाम बाण ध-

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नुष पर चढ़ाय शिवजीको मारना चाहा इतनेमें शिवजीने सब कुटिलता कामदेव की देख क्रोध दृष्टि से उसको देखा देखतेही वह भस्महुआ औ कामदेवकी भार्या रति औ प्रीति दोनों विलाप करनेलगीं तब पार्वतीजीके हृदय में अत्यंत करुणा उत्पन्न भई औ शिवजीसे प्रार्थनाकरी कि महाराज मेरे निमित्त कामदेव की यह दशाभई अब आप कृपाकर इसको फिर भी जीवदान देवैं तब प्रसन्न हो शिवजीने कहा कि हे पार्वति सब जगत्में इसने उपद्रवकर रक्खा था इसलिये हमने इसको दग्धकिया अब इसका फिर जीवन क्योंकर होसक्ता है परन्तु चैत्र शुक्ल त्रयोदशी को प्रतिवर्ष एकबार यह जीवितहोगा उस दिन जो इसका पूजन करैंगे वे वर्षभर सुखी रहैंगे इतना कह शिवजी कैलासको गये यह कामदेवका चरितहै अब हम पूजा विधान कहतेहैं चैत्रशुक्ल त्रयोदशी को स्नान कर अशोक वृक्ष बनाय उसके नीचे रति प्रीति औ वसन्तसहित कामदेवकी मूर्ति सिंदूर औ हलदीसे लिखै अथवा सुवर्ण की मूर्ति स्थापन करैं ऐसी मूर्ति बनावै कि अप्सरा जिसकी सेवामें चारों ओर स्थितहैं विद्याधरी हाथ जोड़े संमुख खड़ीहैं गंधर्व नृत्यकर रहे हैं इसप्रकार की मूर्ति बनाय मध्याह्न के समय गंध पुष्प धूप दीप अनेक प्रकार के नैवेद्य औ तांबूल आदि उपचारोंकरके(नमोवामायकामायदेवदेवायमूर्तये।ब्रह्मविष्णुशिवेन्द्राणांमनःक्षोभकरायवै) इस मंत्र से पूजनकरै इसप्रकार स्त्री कामदेव का पूजनकर वस्त्र माला भूषण आदिसे अपने पतिका पूजन करै औ उसको साक्षात् कामदेव जानै रात्रिको जागरणकर उत्सव करै सबको गन्ध तांबूल पुष्पमाला आदि देवै औ शूद्रों को मद्य देकर बड़ा उत्सवकरै इसविधिसे जो प्रति वर्ष कामोत्सव करै वह सुभिक्ष क्षेम आरोग्य यश लक्ष्मी सुख पाता है औ विघ्न

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ब्रह्मा सूर्य चंद्र आदि ग्रह कामदेव वसंतओ सब ब्रह्मर्षि यक्ष गंधर्व असुर राक्षस सुपर्ण नागपर्वत आदि उसपर प्रसन्न हो उसको सुख देतेहैं कभी उसको शोक नहीं होता बसंतऋतु में- रतिप्रीति वसंत मलयानिल आदि अपनेपरिवारसहित काम देव का जो नारी भक्तिसे पूजन करै वह सौभाग्यरूपओ सुख पाती है॥

एकसौचौबीसवां अध्याय॥

राजा युधिष्ठिर पूछतेहैं कि हे श्रीकृष्णचंद्रसब ग्रामोंमें औ नगरोंमेंलोक भूतमाताका उत्सव करते हैं नाचतेगाते हैं उन्म- त्त की भांति प्रलाप करते हैं भूमि पर लोटतेहैं अंग भंग करते हैं यह उत्सवशास्त्रोक्तहै कि लौकिकही है आपइस हमारेसन्देह को निवृत्तकीजियेयहराजाकाप्रश्न सुन श्रीकृष्णभगवान् कहने लगेकि हे महाराजएकसमय मंदराचलमेंशिवजीपार्वती के संग विहार करते थे उनको एकांत में उत्तम शय्या पर क्रोड़ा करते दिव्य सौ बर्ष व्यतीतहुए एक दिनआवश्यक के लिये पार्वतीजी बाहिर निकलीं उसी क्षणकृष्णवर्ण करालमुख पिंगलनेत्रामुक्त- केशी मुंडमाला धारे खट्वांग औ कपालहाथोंमेंलियेव्याघ्रचर्म पहिने डमरु वजाती फूत्कार शब्द से आकाश को भरती अति भयंकर एक नारी उनके मूत्र से उत्पन्नभई औ हजारों उसकी परिचारिकाभी गज चर्मओढ़ेनाचती गाती ताली बजातीहँसती कपाल खट्वांगधारे प्रकट भईइसीभांति ऐसेही रूप करकेयुक्त औ सिंह शार्दूलआदि समान जिनके मुख ऐसे हजारों भूतोंकरके सहित अति भयंकर एक पुरुष शिवजी से भी उत्पन्न हुआ औ वे दोनों स्त्री पुरुष प्रसन्नहो इकट्ठे होगये तब प्रसन्नहो शिवजीने पार्वती जी से कहा कि हे प्रिये ये दोनों हमसे औ तुमसे उत्पन्न

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मूर्तिमान् मानो वीभत्स रसही होंय हास्य करनेहारे स्त्री पुरुष दोनों सदृश हैं इनमें हमको कुछभी अंतर नहीं देख पड़ता भूतमाता भ्रातृभांडा औ अंतकसंविधा ये तीन इनके नाम हैं जो पुरुष भक्ति से इनकापूजन करैंगे वे पशु आरोग्य औ संतान पावैंगे उनके घरमें भूत पिशाच शाकिनी राक्षस आदिकभी पीड़ा न करैंगे औ उनके बालक आरोग्य रहैंगे इतनासुन राजायुधिष्ठिर ने पूछा कि हे श्रीकृष्णचंद्र भूतमाता की पूजा किससमय में औ किस विधान से करनी चहिये यह आप वर्णन करैं तब श्रीकृष्णभगवान् कहनेलगे कि हे महाराज नामभेद कालभेद औ क्रियाभेद से बालकों के हित करनेहारी इस भगवती का पूजन सर्वत्र होताहै ज्येष्ठप्रतिपदा से लेकर पूर्णिमातकभगवती कापूजन करै अनेकप्रकार के हास्य औ वीभत्स तमाशेभगवती के आगे करावै धन लोभ से विश्वास देकर मार्ग में वेदपाठी ब्राह्मण इसने मारा अब इसको शूल पर चढ़ाते हैं इसनेपरस्त्री का स्पर्श कियाइसलिये इसके हाथकाटे जाते हैं इसने स्वामिद्रोह किया इसलिये यह करोत से चीरा जाताहै औ रुधिर की धार शरीर से बहती है इस चोर को राजपुरुष बांधे लिये जाते हैं इस श्वेतकेश औ श्वेतवस्त्रधारीब्राह्मणको लड़केछेड़ते हैं औ पत्थर मारते हैं यहविधवास्त्रीगर्भ रहनेसे पेट बड़ाहोजाने से घरके बाहर क्यों नहीं निकलती इस कृपण को देखो कि धन होकर भी अपने कुटुंबका भरणपोषण नहीं करता औमरा२ पुकारता है इस वृंताक के समान कृष्णवर्ण भील को देखो कि वृक्षके कोटरो में से शुकों के बच्चों को पकड़ २ आग में भूनखंड खंड कर शहत के साथ खाता है इस स्त्री को देखो कि केशखोले हाथ में छुरी लिये हुंकार शब्द करती हुई काला कंवल पहिने सूप बजावती योगिनी की भांति नाचता है इस प्रकारके तमाशे

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

भगवती के आगे नित्य करावै नवमी अथवा एकादशीको दीपक प्रज्ज्वलित कर बड़े उत्सव से भगवती के समीप लेजाय रक्षा वाले पुरुष साथजायँ आगे २ सूप बजाते चलें यह सर्वार्थसाधक दीपक वीरचर्या में कहा है इस प्रकार पूर्णिमातक प्रदोष के समय दीप निकालै औ द्वादशी के दिन भूतमाता का बड़ा उत्सव करै इस प्रकार अनेक प्रकार के हास्यदायक तमाशे औ अनेक प्रकार के उत्सवों से भूतमाता का पूजन करैं वे सपरिवार बर्ष भर प्रसन्न रहतेहैं कोई विघ्न उनकेघरमें नहीं होता॥

एकसौपचीसवां अध्याय॥

राजायुधिष्ठिर कहते हैं कि हे श्रीकृष्णचन्द्र सबपाप औअमंगलका नाश करनेहारा रक्षा विधान आप वर्णनकरैं जिसके एकबार करने से वर्ष भर रक्षा रहै औ भूत प्रेत पिशाच आदि धर्षण न करैं यह राजा का वचन सुन श्रीकृष्णभगवान् कहने लगे कि हे महाराज इसमें हम प्राचीन इतिहास वर्णन करते हैं आप श्रवणकरैं पूर्वकालमें बारहवर्ष पर्यंत देवता औदैत्योंका युद्धभया उसमें देवता पराजित हुये इन्द्रभी अपनी नगरी अमरावती में प्राणबचाने के लिये आयछिपे दानवराजने तीनलोक वश करलिये औ यह आज्ञा सब देवता औ मनुष्यों को दी कि मेरा यजन करो मेरी स्तुति करो मेरा पूजन करो जो मेरी इस आज्ञाका उल्लंघनकरैगा वही बध्य होगा दैत्यराज की इस आज्ञा से यज्ञ उत्सव देवपूजा आदि निवृत्त हुये स्वाहा स्वधा वषट् इत्यादि शब्द कहीं कान में न पड़ते थे सब ने वेद पढ़ना छोड़ दिया सब संसार में अव्यवस्थाहोगई इससे इन्द्र और भी निर्बल हुये इन्द्रको हीनबल देख दैत्योंने अमरावती में भी न टिकने दिया तब इन्द्रव्यग्रहो बृहस्पतिके समीप गये औ उनसे

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

यह कहा कि हे देव गुरो अब हम स्वर्ग में ठहर नहीं सकते इसलिये यही विचारहै कि फिर दैत्योंके साथ युद्ध करैं जय पराजय तो ईश्वरके आधीन है परन्तु उत्साह पूर्वक युद्धकरना अपने अधीन है थोड़ी देर भी प्रज्ज्वलित होना अच्छा औ बहुत काल तक सिलगते २ धूआं करना कुछ नहीं देवैश्वर्य कर्मके आधीनहै औ कर्म पौरुष को कहते हैं इसलिये अब हम पौरुष करैं तो अवश्यही कल्याण होय यह इन्द्र का वचन सुन वृहस्पति बोले कि हे देवराज यह पौरुष का समय नहीं है देशकाल का बिचारकिये बिन जो काम किये जाते हैं वे सफल नहीं होते औ उनमें एक प्रकारका अनर्थ उत्पन्न होजाता है तब इंद्रने फिर कहा कि आप यथार्थ कहते हैं परन्तु जिस कार्य में उत्साह होय वह अवश्यही सिद्धहोताहै जो गुण दोष बिचार कर कार्य का आरंभ करतेहैं वे अवश्यही मनोवांछितफल पाते हैं इसप्रकार इन्द्र औ वृहस्पतिका संवाद देख शचीने इन्द्र से कहा कि आज चतुर्दशी है इसलिये आप युद्ध से निवृत्त रहैं कल मैं आपके रक्षा बांधूंगी जिससे अवश्य आप का जय होगा इन्द्रने भी यह शचीका वचन अंगीकार किया दूसरे दिन शचीने इन्द्र के हाथमें रक्षा पोटली बांधी औ बड़ा उत्सव किया ब्राह्मणोंसे स्वस्तिवाचन कराय ऐरावत हाथी पर चढ़ इन्द्र युद्ध के लिये निकले औ दैत्यसेना में जाय अपना नाम सुनाय वाणोंसे शत्रुओं के शिर काटने लगे दैत्यभी सन्नद्ध हो युद्ध करने लगे परन्तु रक्षाके प्रभाव से इन्द्र के आगे न ठहर सके कोई समुद्र में घुसे कोई पातालको गये कई वहांहींमारेगये इस प्रकार दानवों को पराजयदे फिर इन्द्रनेराज्य पाया औ देवताओं सहित त्रैलोक्य का पालन करनेलगा दानवराजभी युद्ध में हार शुक्र के समीप गये औ उनसेकहा कि हे दैत्यगुरो बड़ेआ-

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

श्चर्यकी बातहै कि इन्द्र ने हमको जीतलिया इससे यहजाना कि दैवही बलवानहै बल पौरुष आदि सब वृथा हैं यह दानवेन्द्र का वाक्य सुन शुक्राचार्य ने कहा कि हे दैत्यराज इसमें आप विषाद न करैं युद्धमें जय पराजय होतेही रहते हैं अबतुम इन्द्रके साथ संधि करलो शची की रक्षाके प्रभाव से इस समय इंद्र को कोई नहीं जीतसक्ता एक वर्ष व्यतीत करो पीछे सब कल्याण होगा यह शुक्रका वचन सुन शोकत्यागकर सब दानव काल प्रतीक्षा करनेलगे यह हमने पुत्र आरोग्य धन सुख औ विजयको देनेहारा रक्षा का प्रभाव संक्षेप से वर्णन किया है इतनी कथा सुन राजायुधिष्ठिरनेपूछा कि हे श्रीकृष्णचन्द्र किस तिथि को औ किस विधिसे रक्षाबंधन करना चहिये यह आप वर्णनकरैं आपके मुखसे अति विचित्र औ बहुत अर्थ करके युक्त कथा सुनते २ हमको तृप्ति नहींहोतीहै यहराजा का वचन सुन श्रीकृष्णभगवान् कहनेलगे कि हे महाराज श्रावणी पूर्णिमाको प्रभातउठ शौच दंतधावन आदिकर श्रुतिस्मृतिविधानसे स्नान करै देवताओंपितरोंका तर्पणकर उपाकर्म विधानसे ऋषि तर्पण करै शूद्रहोयतो मंत्ररहित स्नानदानआदिकर्मकरै पीछेमध्याह्न के अनन्तर कर्पासके अथवा अलसीकेवस्त्रमें अक्षत श्वेत सर्षपऔ सुवर्ण की रक्षापोटली बनाय अंगन में गोबर का चौका लगाय उसके बीच मंडलरच मंडलमें पीठरख पीठकेऊपर उत्तमपात्र में पोटली स्थापनकरै वहां ही मंत्री पुरोहित आदि सहित राजा बैठे वेश्या नृत्य करैं अनेक प्रकार के बाजे बजैं फिर हवन औ शांतिकर (येनवद्धोबलीराजादानवेंद्रोमहाबलः। तेनत्वांप्रतिबध्नामिरक्षेमाचलयाचल) इस मंत्र से रक्षा पोटलीको पुरोहित राजाके दक्षिण हाथमें बांधे पीछे राजा वस्त्र भोजन औदक्षिणा से ब्राह्मणों का पूजन करै यह रक्षाबंधन चारों वर्णों को करना

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

चहिये इसविधिसे जो रक्षावंधनकरावै वह वर्षभर सुखीरहता है औ पुत्र पौत्र धन आदि सब पदार्थ पाता है॥

एकसौछब्बीसवां अध्याय॥

श्रीकृष्णभगवान् कहते हैं कि हे महाराज सब तिथियों में उत्तम महानवमी तिथिहै बर्षभर के सुखके लिये भूत प्रेत पिशाचोंकी निवृत्ति के अर्थ सबप्रकार के मंगल मिलने के लिये औ भगवती की प्रसन्नता के हेतु सब मनुष्यों को औ विशेष करके राजाओं को महानवमी का उत्सव करना चहिये इतना सुन राजा युधिष्ठिरने पूछा कि हे श्रीकृष्णचंद्र यह महानवमी कबसे प्रवृत्त भईहै यशोदा के गर्भसे भगवती उत्पन्न भई तबसे ही इसकी प्रवृत्तिहै कि पहिले सत्ययुग आदिमें भी थी औ इस तिथि को जो बहुत जीव मारेजातेहैं उनकी क्या गति होती है औ मारनेवाला किसगति को प्राप्त होताहै यहसब आपवर्णन करैं यहराजा का बचन सुन श्रीकृष्णभगवान् कहने लगे कि हे महाराज वह परमशक्ति सर्वव्यापिनी भावगम्या अनंता औ लोकविश्रुता है कला काली सुषुम्णा सर्वमंगला माया कात्यायिनी दुर्गा चामुंडा शंकरप्रिया देवी परमेश्वरी भवानी शिवा इत्यादि नामों से औ अनेक रूपों से सर्वत्र पूजन करी जाती है देव दानव राक्षस गंधर्व नाग यक्ष किन्नर नर आदि सब प्रतिनवमी को उसका पूजन करते हैं औ सृष्टि के आरंभ से उसका पूजन चला आया है आश्विन के शुक्लपक्ष में अष्टमी को मूल नक्षत्र होय उसदिन नवमी आजाय उसका नाम महा नवमी है कन्याके सूर्यमें मूल नक्षत्र युक्त शुक्लाष्टमी को नवमी होय वह महानवमी त्रैलोक्य में दुर्लभ है आश्विन शुक्ल की अष्टमी औ नवमी को जगन्माता श्रीभगवती का पूजन करने

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

से सब अत्रुओं को जीतताहै वह तिथि पुण्या पवित्रा धर्म औ सुखको देनेहारी है उस दिन मुंडमालिनी चामुंडा का अवश्य पूजन करना चहिये उस दिन जो महिष मेष आदि जीव वलि दिये जातेहैं वे सब स्वर्गको जातेहैं औ बलि देनेहारे को पाप नहीं होता जैसी प्रसन्नता महिष मेष आदि की बलि से विंध्य-वासिनी श्रीभगवती की होती है ऐसी पुष्प धूप दीप विलेपन नैवेद्य आदि से नहीं होती भवानी के आंगन में जो महिष आदि मारे जाते हैं वे स्वर्ग में जाय अप्सराओं के प्रिय वीर होतेहैं सब कल्प औ मन्वंतरोंमें इस नवमीके दिन सब देवता दैत्य आदि अनेक प्रकारके उपचार औ उपहारों करके भगवती का पूजन करते हैं औ तीनों लोकोंमें अवतार ले २ करमर्यादा का पालन भगवती करतीहै वही भगवती यशोदा के गर्भ से उत्पन्नहो कंसके मस्तक पर पांव रख आकाश को गई हमने उस भगवती को विंध्याचल में स्थापन कर फिर पूजाका प्र-चार किया यह भगवतीका उत्सव पहिलेसे ही प्रसिद्धथापरंतु सब जीवों के उपकार के अर्थ औ सब उपद्रव शांत होने के लिये हमने अपनी भगिनी भगवती की महिमा विशेष करके प्रसिद्ध करी विंध्यवासिनी भगवती के स्थानमें नवरात्र तीन रात्र एकरात्र उपबास अथवा नक्तब्रत कर अनेक प्रकार के उपयाचितों से भगवतीका आराधन करै ग्राम २ में नगर २ में घर २ में औ बन २ में स्नान कर प्रसन्न हो भक्तिपूर्वक ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र स्त्री आदि सब भगवतीका पूजन करैं औ विशेष करके राजाओंको यहउत्सव करना चाहिये अब हम इसका विधान कहते हैं जयकी इच्छावाला राजा प्रतिपदा से अष्टमी पर्यंत लोहाभिसार कर्मकरै पहिले पूर्वोत्तर प्रवणभूमिमें नौ अथवा सात हाथ लंबा चौड़ा पताकाओं से अलंकृत मंडप

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

बनाय तीनमेखला औअश्वत्थपत्राकारयोनिसे भूषितअग्निकोण में अति सुन्दर एकहाथका कुण्ड बनावै पीछे राज्यके अंग छत्र चामर आदि औ सब शस्त्र अस्त्र मंडपमें लाकर अधिवासन करै शुचि ब्राह्मण स्नानकर शुक्लवस्त्र पहिन सबका पूजन करै पूर्व कालमें बड़ा बलवान् लोह नाम दानवहुआ उसको देवताओंने मारखंड२ कियापृथिवीमेंजितना लोहदेख पड़ता है सब उसके अंगोंसे उत्पन्न हुआहैतबसेही यहलोहाभिसार कर्म राजाओंको विजय प्राप्तहोने के अर्थ ऋषियोंने प्रवृत्त किया है घृत संयुक्त पायसका हवन कर हवन शेष हाथी औ घोड़ों को खिलाय सब को अलंकृतकर नगरमें घुमावै राजा भी स्नानकर राजचिह्नों का नित्य पूजन करै हाथी घोड़ों के आगे बाद्य बजते चलैं अब हम पुराणोक्तपूजा मंत्रकहते हैं जिन करके पूजन करने सेकीर्त्ति आयु यश औबलकी प्राप्ति होतीहै (यथाम्बुदश्छादयतिशिवायेमांवसुंधराम्। तथाच्छादयराजानंविजयारोग्यवृद्धये) छत्रमंत्रः (शशांककरसंकाशक्षीरडिंडीरपांडुर। प्रोत्सारयाशुदुरितंचामरामरदुर्लभ) चामरमंत्रः (असिर्विशसनःखड्ग स्तीक्ष्णधारोदुरासदः। श्रीगर्भोविजयश्चैव धर्मधारस्तथैवच। इत्यष्टौतवनामानि स्वयमुक्तानिवेधसा। नक्षत्रंकृत्तिकान्तेतुगुरुर्देवोमहेश्वरः। हिरण्यचशरीरंतेधातादेवोजनार्दनः। पितामहोमहादेवस्त्वांपालयतु सर्वदा) खड्गमंत्रः (शर्मप्रदस्त्वंसमरेधर्मकामयशोर्थदः। रथिनामर्थनीयोसि चर्मानघनमोस्तुते) चर्म मंत्रः (सर्वायुधमहामात्र सर्वदेवारिसूदन । चापमांसर्वदारक्षसाकंसायकसत्तमैः) चाप मंत्रः (सर्वायुधानांप्रथमंनिर्मितासिपिनाकिना । शूलायुधाद्विनिष्कृष्य कृत्वामुष्टिग्रहंशुभम् । चंडिकायाःप्रदत्तासि सर्व दुष्टनिवर्हिणि। तयाविस्तारिताचासि देवानांप्रतिपादिता। सर्व सत्त्वांगभूतासिसर्वासुरनिवर्हिणी। छुरिकेरक्षमांनित्यंशांतिंयच्छ

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नमोस्तुते) क्षुरिकामंत्रः । हुतभुग्वसवोरुद्रावायुःसोमोमहर्षयः। नागकिन्नरगंधर्वयक्षभूतगणाग्रहाः । प्रथमास्तुसहादित्यैर्भूतेशो मातृभिःसह। शक्रःसेनापतिःस्कंदोवरुणश्चाश्रितस्त्वयि । प्रदहंतुरिपून्सर्वान्नराजाविजयमृच्छतु।यानिप्रयुक्तान्यरिभिरायुधानि समंततः।पतंतूपरिशत्रूणांहतानितवतेजसा। हिरण्यकशिपोर्युद्धे-युद्धेदेवासुरेतथा। कालनेमिवधेयुद्धे युद्धेत्रिपुरघातने।शोभितासि तथैवाद्यशोभयास्मांश्चसंस्मर। नीलांश्वेतामिमांदृष्ट्वानश्यंत्वाशुन्नृपारयः । व्याधिभिर्विविधैर्घोरैः शस्त्रैश्चयुधिनिर्जिताः। सद्यःस्वस्थाभवंतिस्मत्वद्धातेनायमार्जिताः। पूतनारेवतीनाम्नाकालरात्रीतिसास्मृता । दहत्वाशुरिपून्सर्वान्पताकेत्वंमयार्चिता) पताकामंत्रः प्रोत्सारणायदुष्टानांसाधुसंरक्षणायच । ब्रह्मणानिर्मितश्चासिव्यवहारप्रसिद्धये।यशोदेहिसुखंदेहिजयदोभवभूपते ताडयस्वरिपून्सर्वान्हेमदंडनमोस्तुते)कनकदंडमंत्रः(दुंदुभेत्वंसपत्नानांघोरोहृदयकंपनः । भक्तभूमिपसैन्यानांतथाविजयवर्द्धनः । यथाजीमूतघोषेणप्रहृष्यंतिचवर्हिणःतथास्तुतवशब्देनहर्षोऽस्माकंमुदावहः। यथाजीमूतशब्देनस्त्रीणांत्रासोऽभिजायते । तथैवतवशब्देनत्रस्यंत्वस्मद्द्विषोरणे दुंदुभिमंत्रः(विजयोजयदोजेतारिपुहंताशुभंकरः । दुःखहाधर्मदःशांतःसर्वारिष्टविनाशनः। येतेष्टोसन्निधौयस्मात्तवसिंहामहाबलाः।तेनसिंहासनेतित्वंवेदैर्मंत्रैश्चमीयसे । त्वयिस्थितःशिवःशांतस्त्वयिशक्रःसुरेश्वरः । त्वयिस्थितोहरिर्देवस्त्वदर्थंतप्यतेतपः । नमस्तेसर्वतोभद्रभद्रदोभवभूपतेः । त्रैलोक्यजयसर्वस्वसिंहासनऽनमोऽस्तुते) सिंहासनमंत्रः(कुलाभिजनजात्याचलक्षणैर्व्यंजनोत्तमैः । भर्त्रारमभिरक्षत्वंशिवंतवभवेदिति । कशाघातमधिष्ठानंक्षमस्वतुरगोत्तम । गंधर्वकुलजातस्त्वंमाभूयाःकुलदूषकः । ब्राह्मणःसत्यवाक्येन सोमस्यवरुणस्यच । प्रभावाच्चहुताशस्यवर्द्धस्वत्वंतुरंगम । तेजसाचैवसूर्यस्य

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मुनीनांतपसातथा। रुद्रस्यब्रह्मचर्येणपवनस्यबलेनच। स्मर त्वंराजपुत्रंचकौस्तुभंचमणिंस्मर। सुरासुरैर्मथ्यमानक्षीरोदादमृतादिभिः। जातउच्चैःश्रवाःपूर्वंतेनजातोसितस्मर। यांगतिंब्रह्महा गच्छेन्मातृहापितृहातथा। भूमिहान्नृतवादीचक्षत्रियश्चपराङ्मुखः। सूर्याचंद्रमसौवायुर्यावत्पश्यंतिदुष्कृतम्। व्रजत्वंतांगतिं क्षिप्रं तच्चपापंभवेत्तव। विकृतिंयदिगच्छेथा युद्धाध्वनितुरंगम रिपुंविजित्यसमरेसहभर्त्रासुखीभव।) अश्वमंत्रः (शक्रकेतोमहावीर्यसुपर्णस्त्वय्युपाश्रितः। पतत्रिराड्वैनतेयो तथानारायणध्वजः। काश्यपेयोरुणभ्राता नागारिर्विष्णुबाहनः। अप्रमेयो दुराधर्षो रणेदेवारिसूदनः। गरुत्मान्मारुतगतिस्त्वयिसन्निहितोयतः। सासिचर्मायुधान्योधान्रक्षत्वंचरिपून्दह) ध्वज मंत्रः (कुमुदैरावणोपद्मःपुष्पदंतोयवामनः। सुप्रतीकोञ्जनोनीलएते ष्टौदेवयोनयः। तेषांपुत्राश्चपौत्राश्च बनान्येतेसमाश्रिताः। भद्रो मंदोमृगश्चैव गजःसंकीर्णएवच। वनेवनेप्रसूतास्तेस्मरयोनिं महागज। पांतुत्वांवसवोरुद्रा आदित्याःसमरुद्गणाः। भर्तारंरक्ष नागेंद्रसमूहःप्रतिपाल्यताम्। अवाप्नुहिजयंयुद्धे गमनेस्वतितेव्रज। श्रीस्तेसोमाद्बलंविष्णोस्तेजःसूर्याज्जवोनिलात्। स्थैर्यंमेरोर्जयंरुद्राद्यशोदेवात्पुरंदरात्। युद्धे रक्षंतुनागास्वा दिशश्चसर्वाहदैवतैः। अश्विनोसहगंधर्वैःपांतुत्वांसर्वतःसदा) हस्तिमंत्रः(इन मंत्रोंसे गन्धपुष्पादि करके सब राज चिह्न औ शस्त्रोंकापूजन करै अष्टमीके दिन पूर्वाह्न में स्नानकर नियम ग्रहण करै औ सुवर्ण चांदी मृत्तिका पाषाण काष्ठ आदि किसी वस्तु की दुर्ग मूर्ति बनाकर उत्तम स्थानके बीच सिंहासन के ऊपर स्थापन करै कुंकुम चंदन सिंदूर आदिसे उस मूर्त्ति को चर्चितकर कुमु कमलआदि पुष्पचढ़ाय धूप दीप नैवेद्य मांस सुरा बलिआदि निवेदन करै उस समय सब प्रकारके बाजे बजैं बंदीजन य

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पढ़ै बहुत से मनुष्य छत्र चामर आदि राजचिह्न लेकर चारों ओर खड़े होयँ दीक्षायुक्त राजा पुरोहित सहित (जयंतीमंगला कालीभद्रकालीकपालिनी। दुर्गाक्षमाशिवाधात्रीस्वाहास्वधानमोस्तुते। अमृतोद्भवंश्रीवृक्षंमहादेवप्रियंसदा। विल्वपत्रंप्रयच्छामि पवित्रंतेम्बिकेमुदा) इस मंत्रसे विल्वपत्र युक्त अर्घ्य देवै औ भगवती को उस दिन द्रोणपुष्प भी चढ़ावै असुरों के साथ युद्ध करने से जो क्षत भगवती के अंगमें भये थे वे सब द्रोणपुष्प से अच्छेहुये इसलिये द्रोणपुष्प भगवतीको प्रियहै फिर शत्रुओं के बधके लिये खड्गको प्रणामकर सुभिक्ष राज्य औ अपना विजय मांगै औ हृदय में इस प्रकार भगवती का ध्यान करै बहुत भुजाओं करके युक्त महिषासुर का बध करनेहारी कुमारी स्वरूप सिंहपर चढ़ी खड्ग उठाये घंटाध्वनिकरती युद्धके मध्यमें विराजमानहै पीछे जय २शब्द कर यह स्तुतिपढ़ै (सर्वमंगलमांगल्ये शिवेसर्वार्थसाधिके। उमेत्रियंबकेगौरि नारायणिनमोस्तुते। कुंकुमेनसमालब्धे चंदनेनविलेपिते विल्वपत्रकृतापीड़े दुर्गेहंशरणं गतः) इसभांति अष्टमी को सब पूजा आदि कर रात्रिको जागरणकरै नट वेश्या आदिका बड़ाउत्सव करावै इस प्रकार रात्रि व्यतीतकर प्रभात होतेही सौ पचास अथवा पचीस महिष औ मेषकी बलि देवै औ सुरा आसव के कुंभोंसे परमेश्वरीकातर्पण करै वह सब कापालिकोंकोदेवै औ दासो दास बंधु औ भगवती के भक्तों को सब बांटकर नवमीके अपराह्न समयमें रथकेबीच भगवती की प्रतिमा स्थापनकर सारे राज्य में भ्रमण करावै अपनी सेना सहित राजा साथ रहै दीपवृक्ष जलते चलैं नंगे खड्ग औ धनुष धारे बड़े २ वीर पुरुष रथके ओर पास चलैं शंख पटह आदि बाजे बजैं वेश्या चारण आदि नृत्य करते चलैं औ एकवीर खड्गधारी उपवास कर मांस रक्त जल अन्न गंध पुष्प

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अक्षत आदि सहितबलि दिशा औ विदिशाओं में (बलिंगृह्णंत्विमंदेवा आदित्यावसवस्तथा। मरुतश्चाश्विनोरुद्राःसुपर्णाः पन्नगाःग्रहाः। असुरायातुधानाश्चपिशाचोरगराक्षसः। डाकिन्यो यक्षवेतालाः योगिन्यःपूतनाःशिवः। जंभकाःसिद्धगंधर्वा मालाविद्याधरानगाः। दिक्यालालोकपालाश्चयेचबिघ्नबिनायकाः। जगतांशांतिकर्तारो ब्रह्माद्याश्चमहर्षयः। माविघ्नंमाचमेपापं मा संतुपरिपंथिनः। सौम्याभवंतुतृप्ताश्च भूतप्रेताःसुखावहाः) इस मंत्रसेदेवै इसविधिसे रथमें अथवा पालकीमें भगवतीकी प्रतिमा स्थापन कर सब राज्यमें घुमावै औ सब बिघ्न निवृत्ति के लिये भूतशांति करै जिससे यात्रा निर्विघ्न होयइस विधिसे जोराजा अथवा और पुरुषभगवतीकी यात्राकरैं वे सब पापोंसे छुटभगवती लोकको जातेहैं औ कभी उनको शत्रु चोरग्रह विघ्न आदि का भय नहीं होताभगवती के भक्त सदा आरोग्य सुखीभोगी औ निर्भय होतेहैं जो यह भगवती के उत्सव का विधान पढ़ै अथवासुनै उसके भी सबअमंगलनिवृत्त होजातेहैं महिषासुर के मस्तकपर चरण रक्खेसिंह पर चढ़ीनंगा खड्ग हाथमें लिये सब भूषणों से भूषित श्रीदुर्गाका पूजन करनेहारे मनुष्य बड़े२ संकटों से भी उत्तीर्ण होजातेहैं॥

एकसौ सत्ताईसवां अध्याय॥

श्रीकृष्णभगवान् कहते हैं कि हे महाराज पूर्वकालमेंदेवासुर संग्राम के बीच इन्द्रकेविजयके लिये ध्वजयष्टि बनाई औ उसको सब देवता सिद्धविद्याधर नाग आदिकों ने मेरु पर्वतपर स्थापनकर सब उपचारों से उसका पूजन किया अनेक प्रकार के भूषण क्षुद्र घंटा किंकिणी आदिसे उसको अलंकृत किया उसको देखतेही दैत्य त्रस्तहोगये औ देवताओंने उनकोपराजित

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कर स्वर्गका राज्य पाया औ दैत्य पातालको गये उस दिन से देवता उस इन्द्रध्वजयष्टिका पूजन औ उत्सव करते थे उसी अवसर में राजा उपरिचरवसु स्वर्गमेंगया उसको प्रसन्नहोइंद्र ने वह ध्वजदिया औ कहा कि इसका तुम पूजनकरो जिस से तुम्हारे राज्यके सब दोष निवृत्त होयँ और भी जो राजा प्रति वर्ष इसका पूजन करैंगे उनके राज्य में क्षेम औ सुभिक्ष रहैगा किसीप्रकारका उपद्रवनहोगा यहइन्द्रकावचनसुनइंद्र ध्वजको ले राजा उपरिचरवसु अपनेनगरमेंआया औ प्रतिवर्षइन्द्रध्वज का बड़ा उत्सवकरनेलगा अब हम इन्द्रध्वजकेउत्सवकाविधान कहतेहैं बीसहाथ लंबी दृढ़ औ उत्तम काष्ठ की यष्टि बनावै औ उसकोविचित्रवस्त्रोंसे वेष्ठितकर पीठोंकेऊपर स्थापनकरै पहिला पीठ श्वेतवर्ण कर्णिकायुक्त चतुरस्र इन्द्र यम वरुण औकुवेर करके युक्तबनावै दूसरा रक्तचूर्ण करके वृत्तयुक्त षडस्र तीसरा श्वेतवर्ण अष्टास्र चौथा अति अरुण वर्णवृत्त पांचवां शुक्लवर्ण अष्टकोण छठाकृष्णवर्ण बुद्बुद शोभितवृत्त सातवांशुक्लवर्णअष्ट कोण विद्याधरोंकरके युक्त आठवां पीतवर्ण वृत्तवेष्ठित चतुरस्र नवां लंबा रक्तवर्ण औ नवग्रहों युक्त दशवां शुक्लवर्ण औ गणेश अंबिका ब्रह्मा विष्णु औ शिव सहित ग्यारहवां कृष्णवर्ण वृत्त यमराजयुक्त बारहवां छत्राकार शुक्लवर्ण तेरहवां पीठ ध्वजा के तुल्य दीर्घ कुशा पुष्पमाला घंटा चामर आदि सहित बनाय उनके ऊपर ध्वजको स्थापनकरै पीछे हवनकराय गुड़के अपूप औ पायस ब्राह्मणोंको भोजन कराय दक्षिणा दे धीरे २ उस ध्वजको खड़ाकरै औ नौदिन अथवा सातदिन राजाबड़ाउत्सव करावै अनेकप्रकारके नाच तमाशे होयँ मल्लयुद्ध औ कुक्कुट मेष आदि जीवोंका युद्धकरावै औ वस्त्र भूषण आदि देकर सबका सम्मानकरै रात्रिको जागरणकरै ध्वजकी भलीभांति रक्षाकरै

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

जो ध्वजपर काक बैठजाय तो दुर्भिक्ष होय उलूकबैठे तो राजा का मरणहोय और ध्वजके ऊपर कपोत बैठे तो दुर्भिक्ष पड़ै इसप्रकार इन्द्रध्वजका बड़ा उत्सव करै जो एकवर्ष करके दूसरे वर्ष न करसकै तो फिर बारहवें वर्ष करै ध्वज के अंग भंग होनेसे बड़ा उपद्रव होताहै इसलिये सावधान हो उसकी रक्षा करै इन्द्रध्वजका उत्थानकर भक्तिसे उसकापूजनकरै जोप्रमाद से ध्वज गिरपड़ै अथवा टूटजाय तो सोने अथवा चांदी का ध्वज बनाय उसका उत्थापन औ अर्चन कर शांतिक पौष्टिक आदि कराय वहध्वज ब्राह्मणकोदेवै फालसा ककड़ी नालिकेर कैथ बीजपूर नारंगी आदि फल औ अनेकप्रार के नैवेद्यों से इन्द्रध्वजकापूजनकर(बज्रहस्तसुरारिघ्नदेवराजपुरन्दर। क्षेमार्थंसर्वलोकस्यपूजेयम्प्रतिगृह्यताम्)यहमंत्रपढ़ै औ श्रवणसे भारणी पर्यंत पूजनकर रात्रि के समय (सार्द्धंसुरासुरगणैःपुरन्दर शतक्रतो उपहारंगृहीत्वेमंमहेंद्रध्वजगम्यताम्)इसमंत्रसे बिसर्जनकरै इसविधिसे जो राजाइन्द्रध्वजकीयात्राकरै उसके राज्य में यथेष्ट वृष्टि होतीहै मृत्यु औ ईतियोंकाभयनहींहोता औ वह राजा शत्रुओंको जीत चिरकाल राज्यभोग स्वर्गमें जाताहै औ उसके देश में कभी परचक्र भय नहीं होता॥

एकसौअट्ठाईसवां अध्याय॥

श्रीकृष्णभगवान् कहतेहैं कि हे महाराज पूर्वकालमें विष्णु भगवान्ने वामनरूपधार बलिकोछला औ इंद्रको राज्यदिलाय बलिको पाताल में स्थापन किया औ एकदिनउसकेराज्यक नियतकिया कार्तिककी अमावास्याको दैत्य यथेष्ट चेष्टा करते औ महीतलमें उनका राज्य होताहै राजायुधिष्ठिरपूछतेहैं कि श्रीकृष्णचंद्र कौमुदी तिथिका विधान विशेष करके आप वर्ण

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

करैं कि उस दिन दान क्यों देतेहैं किस देवताका पूजनकरते हैं औ क्या क्रीड़ा करतेहैं यह राजाका प्रश्न सुन श्रीकृष्णभगवान् कहनेलगे कि हे महाराज कार्त्तिककृष्णचतुर्दशी को प्रभात के समय नरक का भय निवृत्त होनेकेलिये अवश्यही स्नानकरना चाहिये अपामार्गके पत्र शिरके ऊपर भ्रामण कर धर्मराज के नामोंसे तर्पणकरै यम धर्म राज मृत्यु औ अंतक का तर्पण कर देवताओंका पूजनकर नरक को दीप देवै औ प्रदोष के समय शिव विष्णु ब्रह्मा आदिकेमन्दिरोंमें कोष्टागार चैत्य सभा नदी तट तड़ाग उद्यान वापी रथ्या बगीचे हस्तिशाला अश्वशाला आदि स्थानोंमें औ चामुंडा बुद्ध भैरव आदि देवताओं के आलयों में दीपक प्रज्वलितकरै अमावास्या के दिन प्रभात समय स्नान कर देवता औ पितरों का पूजन तर्पण आदि कर पार्वण श्राद्ध करै औ दही दुग्ध घृत औ अनेक प्रकार के पक्वान्न ब्राह्मणोंको भोजन कराय दक्षिणा देवै पीछे मध्याह्नके अनंतरराजाअपने नगरमें यह घोषणा करा देवै कि आज लोकमें बलिका राज्यहै सब यथेष्ट चेष्टा करो नगरके लोक कली से अपनेघरोंको शुभ्र कर वृक्ष पुष्प औवंदनमाला आदिसे औनानाप्रकारकेखिलौनों से भूषित करैं नगर के सब नरनारी उत्तम २ वस्त्र भूषणपहिने कुंकुम का लेपन करैं ताम्बूल चर्वणकरैं द्यूतक्रीड़ा औ पानकरैं परस्पर प्रेमसे ताली देकर हँसै नृत्यगीत आदि बड़ाउत्सवहोय प्रदोष के समय बड़ी दीपमाला प्रज्वलित करैं अनेक प्रकार के दीप वृक्ष खड़े किये जावें उस समय योजना नाम राक्षसी लोक में बिचरती है उसका भय निवृत होनेके लिये नीराजन करैं इस प्रकार अति शोभित नगरकी शोभा देखने के लिये आधीरात्रि के समय अपने मित्र औ मंत्रीआदि सहितराजानि-कलै औ नगर की औ बाजार की शोभा देखता २ धीरे २ पैरों

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सेही फिरै सारे नगरकी रमणीयता देख औ अपने ऊपर बलि राजाको संतुष्टहुये मान अपने महलमें आवै उसी समय सब स्त्री अपने २ घरसे मडु डिंडिम आदि बाजे बजाकर प्रसन्न हो अलक्ष्मीको निकालैं सारीरात्रिलोक उत्सवमें जगते रहैं वेश्या आदि मार्गोंमें घूमैं ब्राह्मण आशीर्वाद देवैं औ बड़ाभारी उत्सव नगर भरमें संपूर्ण रात्रि रहै प्रभात होतेही वस्त्र भूषण आदि से ब्राह्मणोंको सन्तुष्ट कर औरोंको भोजन पान आदि दिलाय मीठे वचनोंसे पंडितों का सत्कार कर सामंत आदिकों को तांबूल सिपाहियों को कंठ भूषण औ कंकण औ अपने समीप-वर्ती सेवकोंको अपने नामांकित भूषण देकर संतुष्ट करै औ मंचके ऊपर बैठ महिष वृष हाथी मल्ल आदि का युद्ध औ नट नर्त्तक चारण आदिके तमाशे राजा देखै गौ महिषी आदि को भूषित करैं मध्याह्न के अनंतर नगरसे पूर्व दिशामें ऊंचेस्तंभ अथवा वृक्षों पर कुश औ काशकी बनी मार्गपाली बांधै फिर हवन कराय अपनी प्रजाके हजार दो हजार मनुष्योंको भोजन करावै उस समय राजाका नीराजन करैं पीछे गौ वृष हाथी घोड़े राजा राजपुत्र ब्राह्मण शूद्र आदि सब उसमार्ग पाली को उल्लंघनकरैं इसमार्गपाली को बँधवानेवाला अपने दोनोंकुल का उद्धारकरताहै औइसको लंघन करनेवाले वर्षभर सुखीरहते हैं फिर भूमि पर पंचरंग से मंडल लिख उसके बीचप्रसन्नमुख द्विभुज किरीट कुंडल धारे कूष्मांड वाण जंभ मुरआदि दैत्यों करके वेष्ठित औ अपनी रानी विन्ध्यावली सहित राजाबलिकी मूर्त्ति स्थापन कर उसका पूजन करै पहिले अर्घ्य देकर कमल कुमुद गंध धूप अक्षत गुड़ के अपूप मद्य मांस लेह्य दीप बलि आदिसे पूजनकर (बलिराजनमस्तुभ्यंविरोचनसुतप्रभो। भावि-ष्येंद्रसुरारातेपूजेयंप्रतिगृह्यताम्) यह मंत्र पढै इसप्रकार पूजन

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कर रात्रिको जागरण औ नट नर्तक आदिका तमाशा करावै और भी नगर के लोग अपने २ घर शय्या में श्वेत तंडुलों करके वलिका स्थापन कर फल पुष्प आदि से पूजन करैं इस दिन वलिराजाके निमित्त जो कुछ दानदेवे वह अक्षय होता है औ विष्णुभगवान्‌की प्रीति होतीहै यहतिथि विष्णुभगवान् ने प्रसन्नहो वलि को दीहै उसी दिनसे यह कौमुदी का उत्सव प्रवृत्त हुआहै यहतिथि सब उपद्रव विघ्न शोक आदि हरनेहारी है औ धन पुष्टि सुखआदि देतीहै कुनाम भूमिकाहै औ मुद हर्ष को कहते हैं भूमि पर सबको हर्षदेने से इसका नाम कौमुदी हुआ जो राजा वर्षभरमें एकदिन वलिराजाका उत्सवकरै उसके राज्य में रोग शत्रु मारी औ दुर्भिक्ष का भय नहीं होता सुभिक्ष क्षेम आरोग्य औ सम्पत्तिकी वृद्धि होतीहै इस कौमुदी तिथि को जो जिस भाव में रहै वह वर्ष उसको उसी भाव में बीतताहै रोवै तो रोदन करतारहै भोग से भोग हर्ष से हर्ष स्वस्थता से स्वस्थता औ इस दिन दीनरहने से वर्ष भर दीनता रहतीहै इसलिये इसतिथिको हृष्ट औ तुष्ट रहना चाहिये यह तिथि वैष्णवीहै औ दानवी भी है दीपमाला के दिन जो पुरुष भक्ति से राजावलि का पूजन करैं उनको वह वर्ष आनन्द से व्यतीत होताहै औ सब मनोरथ उनके सिद्ध होते हैं ॥

एकसौ उनतीसवां अध्याय ॥

राजायुधिष्ठिर कहते हैं हे श्रीकृष्णचन्द्र आप सर्वज्ञ हैं इसलिये सर्व कार्य सिद्ध होने के अर्थ शांतिक औ पौष्टिकविधान कहैं यह राजाका वचन सुन श्रीकृष्णभगवान् कहने लगे कि हे महाराज धन आयुष् पुष्टि औ शांति की इच्छा होय तो ग्रह यज्ञ करना चाहिये अब हम सब पुराणोंका सार ग्रह शांतिका

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

विधान संक्षेप से कहते हैं उत्तम दिनमें ब्राह्मणों से स्वस्तिवाचन आदि कराय ग्रह औ ग्रहों के अधिदेवताओं को स्थापन कर होमका आरम्भकरै ग्रहयज्ञ में तीन प्रकारका होम होता है अयुत होम लक्ष होम औ सब कामना सिद्धकरनेहारा कोटि होम। अब हम अयुतहोम युक्त नवग्रहयज्ञका विधान कहते हैं। प्रथम ईशानकोण में उत्तमवेदी बनाय उसमें बत्तीस देवताओं का स्थापनकरै सूर्य चन्द्र मंगल बुध गुरु शुक्र शनि राहु औ केतु ये नवग्रह हैं मध्यमें सूर्य दक्षिण में भौम उत्तर में गुरु ईशानमें बुध पूर्व में शुक्र अग्नेयमें सोम पश्चिममें शनि नैर्ऋत्यमें राहु औ वायव्यकोण में केतुका शुक्ल तंडुलों करके स्थापन करे शिव पार्वती स्कंद हरि ब्रह्मा इन्द्र यम काल ये ग्रहोंके अधिदेवताहैं ग्रहद घृत दही अथवा पायस करके अष्टोत्तरशत अथवा अट्ठाईस २ आहुति प्रत्येक देवता के नामसे देवै एक२ प्रादेश लंबी सीधी औ अव्रण समिधा सब कर्मोंमें उत्तम होती हैं अपने २ मंत्रसे समिधाहोमकरै आकृष्णेण० इमंदेवा० अग्नि मूर्द्धा० उद्बुध्यस्व० बृहस्पते० अन्नात्० शन्नोदेवी० कयानः० केतुं कृण्वन्न० इत्यादि नवग्रहोंके मंत्रहैं प्रजापति सर्प ब्रह्मा विनायक बायु आकाश सावित्री लक्ष्मी उमा ये ग्रहोंके प्रत्यधिदेवता हैं इन सबका औ अश्वनीकुमारों का आवाहन कर पूजन करे सूर्य भौमका रक्तवर्ण सोम शुक्रकाश्वेत बुध गुरुका पिंगलशनि राहुका कृष्ण औ केतुका धूम्रवर्ण ध्यानकरै इसीरंग के वस्त्र औ पुष्प ग्रहोंको अर्पण करै गंध बलि औ गुग्गुल का धूप सबको निवेदनकरै गुड़ोदन घृत पायस संयावघृत क्षीर दहीभातघृतोदन कृसर मांस औ चित्रोदन क्रम करके सब ग्रहोंको नैवेद्यल गावैईशानकोण में दही अक्षत पंच पल्लव पंचरत्न औ दो वस्त्रों करके भूषित अव्रण कुंभ स्थापन कर उसमें गंगा आदि नदी

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

समुद्र औ सरोवरों युक्त वरुण का आवाहन करै गज अश्व रथ वल्मीक संगम ह्रद गोकुल इनस्थानों की मृत्तिकासर्वौषधिऔर भी सब सामग्री वहां स्थापनकरै (सर्वेसमुद्राःसरितःसरःप्रस्रवणानिच। आयान्तुयजमानस्यदुरितक्षयकारकाः) इस मंत्र से कलशमें आवाहन करै इसप्रकार आवाहन कर घृत यव तिल औ धानोंकरके हवनका आरंभकरै अर्क पलाश खदिर अपामार्ग पिप्पल उदुंवर शमी दूर्वा औ कुश ये ग्रहोंकी समिधा हैं इनसे ग्रह ग्रहदेवता औ ग्रहों के प्रत्यधि देवताओं के मंत्रों करके हवनकरै हवनके अन्तमें अनेकप्रकार के बाद्यों के शब्द औ मंगल गीतों सहित नये कुम्भों करके यजमानको स्नानकरावै औ(स्कंदोगणेशोगिरिजारमावाणीशचीतथा। सुरास्त्वामभिषिंचंतुब्रह्मविष्णुमहेश्वराः। वासुदेवोजगन्नाथस्तथासंकर्षणोविभुः। प्रद्युम्नश्चानिरुद्धश्च भवंतुविजयायते। आखंडलोग्निर्भयदस्तथापुरयजनेश्वरः। वरुणःपवनश्चैव धनदश्चतथाशिवः। देवदानवगंधर्बा यक्षराक्षसपन्नगाः। ऋषयोमनवोदेवाःसिद्धाविद्याधरास्तथा। देवपत्न्योध्रुवोनागादैत्याश्चाप्सरसांगणाः। अस्त्राणिसर्वशस्त्राणि राजानोवाहनानिच। औषधायानिरत्नानि कालस्यैवऋतवस्तथा। सरितःसागराःशैला स्तीर्थानिजलदानदाः।एतेत्वामभिषिंचंतु सर्वकामार्थसिद्धये) इन मंत्रों सेस्नान कर शुक्ल वस्त्रगन्ध माला आदि से अलंकृतहो पत्नी सहित आसनपरबैठ ग्रहोंका पूजनकर कपिलागौ शंख अरुण वृष सुवर्णपीतवस्त्र श्वेत अश्व कृष्णागौ लोह औ अज ये नवग्रहोंको दक्षिणा चढ़ावै औ क्रमसे ये मंत्र पढ़ै (कपिलेसर्वदेवानां पूजनीयासिरोहिणि। तीर्थदेवमयीयास्मा दतःशांतिंप्रयच्छमे। शंखत्वंनिजशब्देन दैत्यविद्रावणस्सदा। विष्णोप्रियो सित्वमतःसदाशांतिंप्रयच्छमे। धर्मस्त्वंवृषरूपेणजगदानन्दकारकः। अष्टमूर्त्तेरधिष्ठान म

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

तःशांतिंप्रयच्छमे। हिरण्यगर्भस्त्वमसि तथावीजंविभावसोः अ-
नंतपुण्यफलद मतःशांतिंप्रयच्छमे। पीतवस्त्रयुगंयस्माद्वासुदेव
स्यवल्लभम्। प्रसादात्तस्यविष्णोस्तदतःशांतिंप्रयच्छतु। कपि-
लासोमयुक्तस्त्वंयस्मादमृतसंभवः। चंद्रार्कवाहनोनित्यमतःशां-
तिंप्रयच्छमे। यस्मात्वंपृथिवीरूपाधेनोर्वैकृष्णसंज्ञिता। सर्वपा-
पहरानित्यमतःशांतिंप्रयच्छमे। यस्मादायसकर्माणितवायत्तानि
सर्वदा। लांगलान्यायुधादीनि तस्माच्छांतिंप्रयच्छमे। यस्मा
त्वंछागयज्ञानामंगत्वेनव्यवस्थितः। योनिर्विभावसोर्नित्यमतः
शांतिंप्रयच्छमे) ये मंत्रपढ़ै पीछेहाथजोड़कर (गवामंगेषुतिष्ठंति
भुवनानिचतुर्दश। यस्मात्तस्माच्छिवंमेस्यादिहलोकेपरत्रच॥य-
थानशून्यंशयनंकेशवस्यशिवस्यच। शय्याममाप्यशून्यास्तु तथा
जन्मनिजन्मनि। यथारत्नेषुसर्वेषुसर्वेदेवाव्यवस्थिताः।तथाशांतिं
प्रयच्छंतुरत्नदानेनमेसुराः।यथाभूमिप्रदानस्य कलांनार्हंतिषोड
शीम् दानान्यन्यानिमेशांतिं तथाभूमिःप्रयच्छतु) येमंत्र पढ़गंध
पुष्पमाला धूपदीप नैवेद्य वस्त्र सुवर्ण रत्नआदिकरकेभक्तिपूर्वक
ग्रहों का पूजन करै इसमें कभी वित्तशाठ्य न करै अब हमनव-
ग्रहोंके ध्यान कहते हैं (पद्मासनःपद्मकरः पद्मगर्भसमद्युतिः।
सप्ताश्वरथयुक्तश्चद्विभुजःस्यात्सदारविः। श्वेतःश्वेतांबरधरःश्वे
ताश्वःश्वेतभूषणः। गदापाणिर्द्विबाहुश्च वरदःस्यात्सदाशशी।
रक्तमाल्यांबरधरोरक्तःशक्तिगदाधरः। चतुर्भुजोमेषगमोवरदस्या
द्धरासुतः। पीतमाल्यांबरधरःकर्णिकारसमद्युतिः। खड्गचर्मगदा-
पाणिःसिंहस्थोवरदोबुधः। पीतांबरःपीतवपुःकुंजरस्थश्चतुर्भुजः।
कमंडलुधरोदंडीवरदःस्यात्सदागुरुः।श्वेतांबरःश्वेतवपुस्तुरगस्थ
श्चतुर्भुजः। अक्षसूत्रकुंडिकाधारीवरदःस्यात्सदाभृगुः। इंद्रनील
द्युतिःशूलीवरदोगृध्रवाहनः। बाणबाणासनधरो ध्यातव्योर्कसु-
तःसदा। सदाशार्दूलवदनःखड्गीशूलीवरप्रदः। नीलसिंहासन-

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

स्थश्च राहुर्ध्येयःसदाबुधै ।धूमादिवाहनाःसर्वे गदिनोविकृतान
नाः । गृह्वासनगतानित्यं केतवःस्युर्वरप्रदाः)यह ग्रहोंकास्वरूप
है इस के अनुसार ध्यान करें औरऐसीही मूर्त्ति बनाकरउनका
पूजन करै हवन के लिये कुंडउत्तमलक्षणों करके युक्त औ यथा-
र्थ बनाना चाहिये मानहीन कुंड अनर्थ करनेहारा होताहै अयुत
होम से दशगुण आहुति औ दक्षिणा लक्षहोममें होती है तीन
मेखला औ योनि करके भूषित चतुरस्र कुंड लक्षहोम के लिये
ईशान कोणमें बनावै औ देवता स्थापनके लियेतीनवस्त्रों करके
वेष्ठित स्थंडिल बनावै उसके ऊपर तंडुलों करके पूर्वोक्त रीति
से आदित्यादि मुख सब देवता स्थापन करै कुंभ स्थापन औ
हवन पूर्ववत् करै अग्नि में वसुधाराका पातन करै औअग्नेय
वैष्णव रौद्र महा वैश्वानर आदिसूक्तसाम औ ज्येष्ठसामकापाठ
करावै यजमान को स्नान पूर्ववत् करावै वेही मंत्र पढ़ैंयजमान
भी काम क्रोध त्याग शांतचित्त हो ऋत्विजों को दक्षिणा देवै
नवग्रह यज्ञ के अयुत होम करने के लिये वेदवेत्ताचार ब्राह्मणों
का अथवा दोका वरण करैलक्षहोममें दश अथवा आठ ऋत्वि-
क् हवन करनेके लिये नियत करने चाहियें अयुत होम से लक्ष
होममें दक्षिणा आदि सब दश गुण होनी चाहियेसबऋत्विजों
को भूषण शय्या वस्त्र कटक कुण्डल आदि वित्तानुसारदेवेवित्त
शाठ्य न करै जो समर्थ होकर न देवै उसका कुलक्षय होताहै
अन्नदान भी यथा शक्ति करै अन्नहीन यज्ञ दुर्भिक्ष करने हारा
होता है अल्प धन मनुष्य कभी लक्ष होम न करै क्योंकि धनके
संकोच से विपरीत फल होताहै एकही ब्राह्मण का भली भांति
पूजन कर अयुतहोम करावै अथवा दो चार ब्राह्मणों का वरण
करै जो घरमें धन होय तो लक्षहोम करै लक्षहोम करनेहारे
पुरुष के सब मनोरथ सिद्ध होतेहैं औ आठसौ कल्प पर्यंत देव

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ताओं करके पूजित वह पुरुष शिवलोकमें निवास करता है जिसकार्य के उद्देशसे लक्ष होम करै वही कार्य सिद्ध होताहै पुत्रार्थी पुत्र धनार्थी धन भार्यार्थी उत्तमभार्या औ राज्यार्थी पुरुषलक्ष होम करने से राज्यपाताहै औ जो निष्काम होकर लक्ष हवन करै तो मुक्ति पावै जो राजा विधिपूर्वक ब्राह्मणोंसे नवग्रहशांति करावै वह ऐश्वर्य संतान औ बिजय पाताहै औ उसके राज्य में दुर्भिक्ष मारी परचक्र आदि कोई उपद्रव नहीं होते ॥

एकसौतीसवां अध्याय ॥

श्रीकृष्णभगवान् कहते हैं कि हे महाराज पूर्वकालमेंप्रतिष्ठाननगरकेबीच पड़ाप्रतापी शस्त्रास्त्रमें निपुण ब्रह्मण्य पितृभक्त देव ब्राह्मण पूजक राजासंवरण नाम हुआ एकसमय ब्रह्माजी के पुत्र सनकऋषि राजा संवरण के पास आये राजाने उनको आसन पर बैठाय प्रणाम किया औ पाद्य अर्घ्य आदिदेकरसब राज्य औ आत्मा उनके आगे निवेदन किया मुनिनेभी राजाका सत्कार अंगीकार किया पीछे अनेकप्रकारके प्राचीन राजाओंके चरित औ इतिहास पुराण आदि की मनोहर कथा कहतेसुनते रहे इसी अवसर में जगत् के औ अपने हितकेलिये बड़ेबिनय से राजासंवरण ने सनक ऋषिसे प्रार्थनाकरी कि हेदेवर्षेभूकंप पांसुवृष्टि ग्रहयुद्ध अनावृष्टि राज्योपद्रव आदि उत्पातोंकी शांति के लिये कोई उपाय धन आरोग्य औ स्वर्ग देनेहारा आपवर्णन करैं। यहराजा की प्रार्थना सुन सनकमुनि बोले कि हे राजन् सब कार्यसिद्ध करनेहारा औ शांतिप्रदकोटिहोमका विधानहम वर्णन करतेहैं जिसके करतेही ब्रह्महत्यादि पातक निवृत्तहोतेहैं सब उत्पात शांत होजातेहैं औ बड़ा सुख उत्पन्न होताहै प्रथम उत्तम मुहूर्त देख देवालय में नदी के तटपर अथवा बनमें कोटि

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

होमकरावै पहिले वेदवेत्ता ब्राह्मणका वरणकर गंध पुष्प माला वस्त्र भूषण आदिसे उसकापूजनकर (त्वंनोमतिःपितामातात्वं-गतिस्त्वंपरायणम्। त्वत्प्रसादेनविप्रर्षे सर्वंमेस्यान्मनोगतम्। आपद्विमोक्षायचमेकुरुयज्ञमनुत्तमम्। कोटिहोमाख्यमतुलंशांत्य-र्थंसर्वकामिकम्) यह मंत्र पढ़ प्रार्थनाकरै आचार्य भी शुक्लवस्त्र आदिसे शोभित हो उत्तम ब्राह्मणों सहित पुण्याह वाचन कर समभूमिमें मण्डपबनावैसौहाथबिस्तारका मंडप उत्तम पचास हाथका मध्यम औ पचीसहाथ लंबा चौड़ा निकृष्ट होताहैशक्ति औ समयके अनुसार मण्डपबनाय उसकेमध्यमें चारहाथलंबा और चारहाथहीचौड़ा तीन मेखलाओं करकेयुक्त औ द्वादशांगु-ल विस्तृत योनि करके भूषित चतुरस्र कुंडबनावैकुण्ड के पूर्व भागमें चार हाथ लंबी चौड़ी औ एकहाथ ऊंची वेदी बनावै वही सब देवता स्थापन करनेका स्थानहै मण्डपकी चारोंदिशा-ओं में भूमिको लेपन कर उसमें पंच पल्लवों करके शोभित जल पूर्ण चार कलश स्थापन करै मंडपके ऊपर वितान औ सब दि-शाओं में तोरण स्थापन करै इस भांति सब संभार एकत्र कर पुण्याहवाचन औ जय शब्द पूर्वक उत्तम दिन से पुरोहित होम का आरंभ करै पूर्वमें ब्रह्मा मध्यमें बिष्णु पश्चिममें रुद्र उत्तर में वसु ईशान में ग्रह अग्निकोणमें मरुत औ बाक़ी दिशाओं में लोकपालों का स्थापन कर गंध पुष्प धूप दीप नैवेद्य आदिसे वैदिक औ पौराणिक मंत्रोंसे उनका अलग२ पूजन कर (आ-दित्याबसवोरुद्रा मरुतोलोकपास्तथा। ब्रह्माजनार्दनश्चैव शू-लपाणिर्भगाक्षिहा सत्रेसन्निहिताःसर्वे भवंतुमखभागिनः। पूजांगृह्णंतुसर्वत्र मयाभक्त्योपपादिताम्। कुर्वंतुचशुभंसर्वे यज्ञ कर्तुःसमाहिताः) इन मंत्रोंसे प्रार्थनाकरै पीछे वेदपाठी ब्राह्मणों सहित कुंडका संस्कारकर उसमें अग्नि प्रज्वलितकर घृतार्चिष्

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

उस अग्नि का नाम रक्खे विद्यावृद्ध वयोवृद्ध गृहस्थ जितेंद्रिय स्वकर्मनिष्ठ शुद्ध औ ज्ञान शील सौ ब्राह्मणों को हवन के लिये नियुक्त करै अथवा जितने ब्राह्मण उत्तम मिलैं उनकाही वरणकरै अग्निको पंचमुख ध्यानकरै जिसमें चारमुख तो सात सात जिह्वाओंकरके युक्तओ पांचवांसर्वकामद मुखएकजिह्वा युक्त ध्यावै प्रज्वलित अग्नि में हवनकरै धूमाय मान अग्नि में वृथाहोमनकरै ऋग्वेदीब्राह्मण पूर्वाभिमुख यजुर्वेदी उत्तराभिमुखसामवेदी पश्चिमाभिमुखओ अथर्वणवेदीब्राह्मणदक्षिणाभिमुख बैठकर हवन करै प्रथम ब्रह्मा का स्थापन कर इस कर्म का आरंभकरै प्रणवादि स्वाहांतव्याहृतियोंसे यह होम करना चाहिये घृत कृष्णतिल औ थोड़े से यवमिलाकर होमकरै पलाशकी समिधाओंसे कोटिहोमकरै औहज़ारआहुतिपूरीहोने पर पूर्णाहुति देताजाय इसविधिसे कोटि हवन करे परंतु सब ब्राह्मण औ यजमान काम क्रोधआदि दोषोंसे बचैं इतना सुन राजा संवरणने कहा कि महाराज यह कोटि होम बहुतकालमें होता है इतने दिन संयमसे रहना अति कठिनहै इसलियेकोई संक्षेप उपाय कोटिहोम का कथन करैं जिससे थोड़ेसे समय में निर्विघ्न यह यज्ञ होजया यह राजाका बचन सुन सनकमुनि कहने लगे कि हे राजन् कोटिहोम चार प्रकार का है शतानन दशानन द्विमुख औ चौथा एकमुख समयानुसार इन चारोंमें से जौनसा बन पड़ै वही करना उत्तम सौकुंड बनाकर एक २ कुंड पर दश२ ब्राह्मणोंको हवनके लिये नियत करै एक कुंडमेंअग्नि का संस्कार कर उसी अग्निको सब कुंडों में प्रज्वलित करै इस विधि करनेसे वह एकही कोटिहोम होताहै यह शतमुख होम कार्य गौरव से औ समय के संकोच से कहा है यह थोड़े दिनों में होजाताहै जो अधिक अवसर होय तो दशकुंडबनाकर प्रत्येक

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कुंडपर बीस २ ब्राह्मण हवन के लिये नियुक्त करै यह दशमुख हवन है जो महीनेदो महीने का अवसर होय तो दो कुंड बनाकर पचास२ ब्राह्मण एक२ कुंड पर हवन के लिये नियुक्त करै यह द्विमुख होमहै और जो कालका संकोच न होय तो एक कुंड में अग्नि स्थापन कर उत्तम कुलोत्पन्नसदाचार औवेदवेत्ताब्राह्मणों से हवन करावै इसमें ब्राह्मणोंकी संख्याका नियम नहीं है औ कालका भी नियम नहीं यह एकमुख होम स्वस्थ यज्ञ कहाता है परंतु यह बहुकाल साध्यहै औ बीचमें अनेकप्रकारके बिघ्नहोते हैं धन औशरीरकी स्थिरता का कुछ भरोसानहीं इसलियेलंक्षेप सेही यह यज्ञ करना चहिये इस विधि यज्ञ समाप्त कर बड़ा उत्सव करावै सब ऋत्विजोंको कटक कुंडलवस्त्र दक्षिणा देवैसौ गौ सौ घोड़ेऔ हज़ार मोहर ब्राह्मणोंको देवै हाथी औ घोड़ोंका पूजनकरै दीन अंध कृपण आदिको भोजन देकै अंतमें अवभृथ स्नानकरै औ लक्षहोमोक्त मंत्रोंसे ब्राह्मण यजमान का अभिषेक करैं इस विधिसे जो राजा कोटि होम करै वह आरोग्य पुत्र राज्यवृद्धि औ ऐश्वर्य पाताहै कभी उसको ग्रह पीड़ा नहीं होती उसके राज्यमें अनावृष्टि उत्पात मारी दुर्भिक्ष आदि कभी नहीं होते सब उपसर्ग पाप औ ग्रह पीड़ाका शमन करनेहारा यह हवन है इसको करनेहारे स्वर्गको जाते हैं॥

एकसौ इकतीसवां अध्याय॥

श्रीकृष्णभगवान् कहते हैं कि हे महाराज राजाओं के हित के लिये सब उपद्रव शांत करनेहारा महादेवजीका कहा महाशांति विधान हम वर्णन करतेहैं राज्याभिषेक के समयमें राजा के यात्राकालमे दुःस्वप्नमें दुर्निमित्त में ग्रहपीड़ा में उल्कापात वज्रनिर्घात भूकंप केतुका उदय छत्र ध्वज आदि का अपने स्थान

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

से गिरना अथवा टूटना घर में काक कपोत उलूक आदि का प्रबेशहोना ग्रहयुद्ध जन्मराशिसे अनिष्टस्थानमें ग्रहोंकी स्थिति सूर्यमंडलमें तामस कीलकों का देख पड़ना वस्त्र शस्त्र मणि शय्या आदिमें अग्निका देख पड़ना अश्वतरी आदिका गर्भधारणा इत्यादिअनेक प्रकारकीउत्पातोंकेशांतिकेलिये महाशांति करनी चहिये उत्तम कुलमें उत्पन्न शुचि शीलवान् चारवेद तीनवेददो वेद अथवा एक अथर्वण वेद जाननेहारे कृच्छ्र पाराक चांद्रायण आदि ब्रतोंमें तत्पर पांच ब्राह्मण इस शांति के लिये बर्ण करै दश हाथ अथवा बारह हाथ लंबा चौड़ा मंडप बनाके मध्यमें चार हाथकी बेदी बनावै अग्नि कोण में तीन मेखला औ योनि करके भूषित एक हस्त प्रमाण कुंड बनावै मंडप को गोबर से लीप तोरण औ बंदनमाला से अलंकृत करै फिर आचार्य स्नानकर शुक्लबस्त्र माला चन्दन आदिसे अलंकृतहो पांच कलश वेदीके ऊपर स्थापन करै मध्यका कलश अष्टदल कमल बनाय उसके ऊपर स्थापन करै सब कलशों को पंचपल्लव औ बस्त्रआदिसे भूषित करै ब्रह्मकूर्च के बिधानसे पंचगव्य सर्बौषधि गोरोचन चंदन पंचरत्न श्वेतसर्षप शमी दूर्वा कुश धानजौ अपामार्ग वट उदुंबर प्लक्ष अश्वत्थ कपित्थ प्रियंगु औ आम्र पल्लव पत्र हाथीकेदांतसे उखाड़ी मृत्तिका तीर्थजल ये सब बस्तु कुंभों में डालै बाचमिति आसिंचेति नदेवाइति ईशावासेति इत्यादि चार वैदिक मंत्रोंसे आग्नेयादि कोणोंमें स्थित चारों कुंभों को अभिमंत्रण करै औ मध्यके कुंभ को भवोद्भवादि मंत्र से मन्त्रित कर गंध पुष्प अक्षत वस्त्र घृतपक्व नैवेद्य दीपक औ नालिकेर आदि फलोंकरके प्रत्येक कुंभका पूजनकर स्वस्तिबाचन कराय अग्निकार्य का आरंभकरै अग्निद्रुतं इत्यादि मंत्र करके अग्निको स्थापनकरै हिरण्यगर्भः इत्यादि मन्त्रसे ब्रह्मासनका नियोजन

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

करै कपोतसुप्रणीतेन इस मंत्र से ब्रह्मा का स्थापन करै। पीछे आज्यसंस्कार कर और भी हवन सामग्री एकत्रकरै पुरुषसूक्त करके पायस सिद्धकर भूमिपर स्थापन करै अठारह समिधाशमीकी औ सातसमिधापलाशकी स्थापन करैघृतके दोभागकर पूर्वक्रमसे जातवेदसे इत्यादि मंत्रकरके सातआहुति देकरउसी मंत्रसे स्थालीपाककी सातआहुति देवै दीर्घसूक्त करके चारआहुति यमायस्वाहा इसमंत्रकरके सातआहुति इदंविष्णु इत्यादि मंत्रसे सात आहुति नक्षत्रेभ्यःस्वाहा इसमंत्रसे सत्ताईसआहुति देकर स्विष्टकृत होमकरके घृत प्लुत समिधाओं से ग्रह होम कर प्रायश्चित्तके लिये आहुतिदेवै इसप्रकार हवनकर काश्मरी वृक्षके काष्ठका पीठ बनवाय उसपर यजमान को बैठाय पांचों कलशों के जलसे वेदोक्त औ पुराणोक्त मंत्रों करके सब अरिष्ट निवृत्त होनेके लिये ब्राह्मण अभिषेक करैं पीछे पुण्याहवाचन कर शांति कर्म समाप्तकरैं भूमि सुवर्ण वस्त्र शय्या आसन दक्षिणा आदि देकर ब्राह्मणोंको संतुष्टकरै दीन अनाथोंको निरंतर भोजन देवै इसविधि से शांति करने करके दीर्घ आयुष औशत्रुओं से जय प्राप्तहोताहै दुर्घट कार्य भी सिद्ध होजाते हैं कुल की वृद्धि होतीहै जिस भांति कवच पहिन लेने से देह में शस्त्र प्रहार नहीं लगता इसीभांति इस महाशांति के करने से दैवी उपद्रव पीड़ा नहीं देसकते अहिंसक जितेन्द्रिय धर्मसे धन उपार्जन करनेहारा औ दयादाक्षिण्य आदि गुणोंकरके जोपुरुष युक्त होय उसपर सब ग्रह अनुग्रह करते हैं इस शांतिके करने से पाप का क्षय धर्म की वृद्धि मनोरथों की सिद्धि उत्पातों की शांति औ उत्तम लोक की प्राप्ति होतीहै॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

एकसौबत्तीसवां अध्याय॥

राजायुधिष्ठिर कहते हैं कि हे श्रीकृष्णचन्द्र अब हम दान का माहात्म्य सुनना चाहते हैं आपकेमुखसे पुण्यकाविषयव्रतों का विस्तार औ संसारकी असारता दिखाने हारा ज्ञान श्रवण किया अब आप यह वर्णन करैं कि क्या दान किस समय में किसको देना चहिये हमारे बिचार में भूमिदान से अधिक कोई दान नहींहै कि जिसको चोर आदि नहीं हर सक्के यह राजा का वचन सुन श्रीकृष्ण भगवान् कहने लगे कि हे महाराज ब्राह्मण को दिया धन बिना व्याज बढ़ताहै औ बिना भूमि में गाड़ी निधि है बड़ा पुष्ट बलवान् औ चिरस्थायी शरीर पाकर क्या फल है जो किसी के ऊपर उपकार न बन पड़ा उपकार हीन जीवनही व्यर्थ है श्वास से आधा अथवा उससे भी आधा अर्थी पुरुषों को क्यों नहीं देते इच्छानुसार धन कब किसी को मिलता है दान नहीं दियाजाता परन्तु धनको चोर लेजाय तो रोते फिरतेहैं धर्म अर्थ औ काम से रहित जिनके दिन व्यतीत होते हैं वे पुरुष लुहार की खाल की भांति श्वास लेते हुये भी मरेही पड़ेहैं जिनने दान न दिया हवन न किया तीर्थ में प्राण न त्यागे सुवर्ण वस्त्र अन्न जल आदिसे ब्राह्मणोंका सत्कार नहीं किया वे पुरुष जन्म २ में नंगे भूखे रोगी औ कपालहाथ में लिये मांगते फिरतेहैं अनेक कष्टों से अर्जित औ प्राणोंसेभी प्यारे धन को दान देना यही धनकी सद्गति है और सब धन के लिये विपत्ति हैं उपभोग से औ दान से कभी सम्पत्ति का क्षय नहीं होता केवल पूर्व पुण्य के क्षीण होने से सम्पत्ति क्षय को प्राप्त होतीहै मरनेके अनन्तर धन पर अपना स्वत्व नहीं रहता इसलिये अपनेही हाथ से पात्र में धनका विनियोग करै

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

जन्मरूप वृक्ष के यही फलहैं कि दान देना तप करना औ परमेश्वर में भक्ति रखना इतना सुन राजायुधिष्ठिरने कहा कि हे श्रीकृष्णचन्द्र विष्णुभगवान् की प्रसन्नता के लिये जो दान जिस विधान से ब्राह्मणों को देने चहियें औ जिनके देने से दोनों लोक में उत्तम सिद्धि प्राप्त होय उनका आप वर्णन करैं यह राजा का वचन सुन श्रीकृष्ण भगवान् कहने लगे कि हे महाराज व्यास वाल्मीकि औ मनुकेकहे दान हम आपके प्रति कथन करते हैं गौ भूमि औ सरस्वती ये तीनदान सबदानों में उत्कृष्ट औ मुख्यहैं ये सात कुलका उद्धार करते हैं इनमें प्रथम हम गोदानका विधान कहते हैं राजायुधिष्ठिर ने कहा कि प्रथम आप गौकेलक्षण औ दानलेनेहारे ब्राह्मणके लक्षण कथन करैं पीछे विधान कहैं तब श्रीकृष्णभगवान् कहने लगे कि हे महाराज तरुणी रूपयुक्त सुशीला सवत्सा दूध देनेहारी औ न्यायसे अर्जित उत्तम गौ श्रोत्रिय अर्थात् वेदवेत्ता ब्राह्मण को देनीचहिये वृद्धा रोगिणी बंध्या हीनांगी मृतप्रजा दुःशीला औ दुग्धरहितगौका कभी दान न करै कुटुंबी वेदवेता दरिद्रीआहिताग्नि औ अतिथियों के सत्कारमें प्रवृत्त ब्राह्मणको उत्तमगुणों करके युक्त गौ देवै अकुलीन मूर्ख लोभी पिशुन औ हव्यकव्यसे हीन ब्राह्मणको कभी गौ न देवै पुण्यदिनमेंस्नानकर पितरोंका तर्पणकर शिव औ विष्णुका घृत औ दुग्धसे अभिषेक करै पीछे सुवर्णशृङ्गी रौप्यखुरी कांस्यकेदोहनपात्र में सहितगौकापुष्पादिकोंसे पूजनकर दक्षिणासहित ब्राह्मणकोदेवै औ (गावोममाग्रतःसन्तुगावोमेसन्तुपृष्ठतः। गावोमेहृदयेसन्तु गवांमध्येवसाम्यहम्) यह मंत्रपढ़ै औ गौकी प्रदक्षिणाकरै ब्राह्मणजब गौको लेकर चलै उसके पीछे आठ कदम जाय इस विधि से जो ब्राह्मण को गौ देवै वह सब अभीष्ट फल पाय स्वर्ग को जाता है

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सात जन्मों में किये पाप तत्क्षण नष्ट होजातेहैं पद २ में अश्व-मेध का औ गोशत का फल पाताहै यह दक्ष के प्रति विष्णु भगवान् ने कहाहै गोदान करनेहारा चौदह इंद्र व्यतीत होयँ तबतक स्वर्गमें रहताहै सबपातक निवृत्त करनेहारा गोदानसे अधिक कोई प्रायश्चित्त नहीं चारों वर्ण इस दानके करने से उ-त्तम लोकोंको प्राप्त होते हैं शास्त्रवेत्ता ऋषि यह कहते हैं कि गोदानसे बढ़कर कोई दान नहीं है इसलिये स्वर्ग की कामना वाले पुरुषोंको अवश्यही ब्राह्मणको गौ देनी चहिये ॥

एकसौतेंतीसवां अध्याय ॥

श्रीकृष्णभगवान् कहते हैं कि हेमहाराज अब हम बराह नारायणका कहा तिल धेनुदानका विधान कहतेहैं जिसदानके करनेसे ब्रह्महा गोघ्न पितृहा गुरुदारगामीबिषदेनेहारा अग्नि लगानेवाला और भी बड़े २ पातकों करकेयुक्त पुरुष सबपापों से छुट स्वर्गको जाताहै भूमिको गोबरसे लीप वस्त्र औ अजिन बिछाय उसके ऊपर श्वेत औ कृष्ण तिल स्थापनकरै एक द्रोण तिलका बत्स औ चार द्रोण तिलोंकी गौ कल्पना करै सुवर्ण के शृंग चांदीके खुर शर्करा की जिह्वा गुड़का मुख गंधद्रव्य के प्राण इक्षुके पाद ताम्र का पृष्ठ मालाका पुच्छ नवनीत के स्तन औ रेशमके रोम उसधेनुके कल्पनाकर उत्तम वस्त्र से आ-च्छादनकर फल दक्षिणा मोती औ वस्त्रसहित वहधेनुपर्वदिनमें ब्राह्मण को देवै औ उसके साथ कांस्य का दोहनपात्र देवै औ (यालक्ष्मीःसर्वभूतानांयाचदेवेष्ववस्थिता। धेनुरूपेणसादेवीमम पापंव्यपोहतु) यह मंत्र पढ़ प्रणाम औ प्रदक्षिणाकर विसर्जनकरै इस विधिसे जो तिलधेनुका दानकरै वहसबपापोंसे छुट ब्रह्म लोक को जाताहै जो पुरुष दानका अनुमोदनकरै प्रसन्नचित्त हो

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

प्रशंसा करैं औ विधि पूर्वककिये इस दानको जो ब्राह्मण ग्रहण करै वे सब ब्रह्मलोकको जातेहैं प्रशांत सुशील वेदव्रतमेंनिष्ठब्राह्मणको तिल धेनुदेनेहारा पुरुष कृत अकृतका शोक नहींकरता तिलधेनु दान करनेहारा पुरुष तीन दिन अथवा एकदिनतिल ही भोजनकरै दानकरके विशुद्ध पाप उस पुरुष को तिल भक्षण चांद्रायणव्रत के तुल्यहै बाल्य यौवन वार्द्धक में मन वचनकर्मसे जो पाप कियेहोंय अभक्ष्यभक्षण अगम्यागमन अपेयपानआदि जो पातक महापातक औ उपपातक कियेहोयँ वेसब तिल धेनु दानसे नाशको प्राप्त होतेहैं यमलोक के मार्ग में महाघोर वैतरणी नदी है जिसके बालूमें पापी दग्ध होते हैं लोह मुख काक औ बड़े भयंकर श्वान जहां पापियोंका मांस नोच २ खातेहैं जहां असिपत्र बन औ लोहका कंटक युक्त शाल्मलिवन है इन सबको उल्लंघनकर सुवर्णके विमानमें बैठाहुआ तिलधेनु देनेहारा पुरुष उत्तम लोक को जाता है गुणहीन धनाढ्य कुण्ड गोल औ लोभी ब्राह्मणको कभी तिलधेनु न देवै एक गौ एक ब्राह्मण को देनी चहिये नैमिषारण्य में कथाप्रसंगके बीच यह विधान मुनियों ने कहा औ हमको नारदमुनि ने उपदेश किया वही हमने आपको श्रवण कराया यह पवित्र पुण्य मांगल्य औ कीर्त्तिवर्द्धन विधान श्राद्धकालमें ब्राह्मणों को श्रवण कराने से अनंत पुण्य होताहै गौ घर शय्या औ स्त्री इनको दान कर बहुत ब्राह्मणोंको न देवै इनका विभाग होनेसे दाता अधोगति को प्राप्त होताहै औ विक्रय होनेसे सात कुल दुर्गति को प्राप्त होतेहैं इसलिये एकबस्तु एक ब्राह्मण को ही देनीचहिये इस दान के प्रभावसे उत्तम विमानमेंबैठ साक्षात् विष्णुभगवान् के समीप पहुँचताहैमाघ अथवा कार्त्तिककी पौर्णमासी अमावास्या चंद्रसूर्यग्रहण अयनसंक्रांति विषुव षडशीतिमुख संक्रांति वैशाख

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अथवा मार्गशीर्षकी पूर्णिमा व्यतीपात औ गजच्छाया योगमें तिल धेनुका दानकरै धेनुके शरीर में जितनेरोम होते हैं उतने हजार वर्ष दानकरनेहारा स्वर्ग मे निवास करताहै दानको जो ग्रहण करै दानकरते को भक्ति से देखैं औ दान का अनुमोदन करैं वेभी स्वर्गको जाते हैं ॥

एकसौचौतीसवां अध्याय ॥

श्रीकृष्ण भगवान् कहतेहैंकिहेमहाराजअबहमजलधेनुदान का विधान कहते हैं जिसदानके करनेसे देवदेव विष्णुभगवान् प्रसन्न होतेहैं उत्तमजलसे पूर्ण कलश स्थापनकर रत्नधान्यदूर्वा पंचपल्लव कूठ मांसी मुरा नेत्रवाला खस औ आमलक उसकुंभ में डाल श्वेत दोवस्त्र यज्ञोपवीत औ पुष्पमालासेउसकोअलंकृत करै उसके पास दोहनपात्र स्थापनकर सब उपचारों से विष्णु भगवान्का पूजनकर दक्षिणा सहित वह कुम्भब्राह्मण को देवै पहिले (विष्णोर्वक्षसियालक्ष्मीःस्वाहा।याचविभावसोः। सोमशक्रार्कशक्तिर्याधेनुरूपेणसास्तुमे)इसमंत्रसेकुंभको अभिमंत्रणकरै औ दान करके(शेषपर्यंकशयनेश्रीमान्शाङ्गविभूषितः।जलशायी जगद्योनिःप्रीयतांममकेशवः) यह मंत्र पढ़ दान करके उसदिन उपवास रक्खै इसविधिसे जल धेनु दानकरनेहारा पुरुष दिव्य औ मानुष सबप्रकार के सुख भोगताहै इसदानसे शरीरारोग्य औ सब मनोरथोंकी सिद्धिप्राप्त होतीहै इसमें हममुद्गलऋषि का वृत्तांत वर्णन करते हैं एकसमय मुद्गलऋषि यमलोक में गये वहांदेखा पापीजीव अनेकप्रकारकेकुम्भीपाकआदि दारुण नरकों में पड़े चिल्लाते हैं औ यमके भयंकर दूत उनको अनेक प्रकारके त्रास देरहेहैं किसीको तेलके कड़ाह में पकाते हैंकिसी के शरीरमें घावकर उनमें क्षार डालतेहैं किसीको विष्ठाके कुण्ड

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

में डुबोते हैं उन नरकके जीवोंको मुद्गलके दर्शनसे कुछ आह्लाद हुआ औ यत्किंचित् सुखी भये इस भांति नरकके जीवों को सुखीदेख मुनिने धर्मराजसे इसका कारण पूछा तब धर्मराज कहनेलगे कि हे मुनि तुम्हारे दर्शन से इतना आह्लाद इनको हुआहै तुमने तीन जन्म पहिले जलधेनु दान किया था उस दानके प्रभावसे तुम्हारा दर्शन सब को आह्लाद देता है जलधेनु दान करनेहारा पुरुष इक्कीस जन्मतक आह्लाद युक्त रहताहै इससेअधिक आह्लाददायक कोई कर्म नहींहै जलधेनु दान करनेहारे पुरुषको हजारों जन्मतक दाह ज्वर आर्त्ति श्रम आदि नहीं होते हे मुद्गल अब आपहमारा किया अर्घ्यपाद्य आदि सत्कार ग्रहणकर अपनेधामको जावैं कृष्णके भक्तों का हम भी सत्कार करते हैं जो कृष्ण का पूजन करैं कृष्णप्रीत्यर्थ व्रतकरैं नित्य कृष्णका ध्यानकरैं दानदेकर (अच्युतःप्रीयताम्) यह बाक्य कहैं चलते फिरते कृष्णका स्मरण करैं सदा कृष्ण अच्युत अनंत बासुदेव इत्यादि नामोंका उच्चारण करतेरहैं वे हमारे लोकमें नहीं आते वह कृष्ण जगत्का प्रभुहै औहमसब उसके आज्ञाकारी हैं लोकोंका संयमन हमकरतेहैं औ हमारा संयमन करनेहारा कृष्णहै यमराजका यह वचनसुनअग्निशस्त्र आदि करके पीड़ित सब नरकके जीव इसविधि पुकारनेलगेकि (नमःकृष्णायहरयेविष्णवेजिष्णवेनमः।देवायहृषीकेशायजगद्धात्रेच्युतात्मने। नमःपंकजनेत्रायनृसिंहायनिनादिने। शार्ङ्गिणे शितखड्गायशंखचक्रगदाभृते। नमोवामनरूपायदैत्यलोकवधायच। वराहरूपायतथानमोयज्ञांगधारिणे। व्याप्ताशेषदिगंताय शांताय परमात्मने। बासुदेवनमस्तुभ्यंनमःकेशिनिसूदन। केशवायनमोनित्यंनमस्तेस्तुमहीधर) इस प्रकार विष्णु भगवान् का स्मरण करतेही नरक का अग्निशीतल होगया शस्त्र कुंठित

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

भये कंटक युक्त शाल्मलि वृक्ष टूटगया क्षार नदी सूखगईलोह मुख पक्षी गिरपड़े अंधकार निवृत्त होगया ऐसा प्रचंड पवन चला कि असिपत्र बन जड़से उखड़गयायमदूत मूर्च्छितहोकर भूमिपर गिरे पूय औ रुधिर की नदियों में उत्तम जल बहने लगा सुगंध औ शीतल मंद २ पवन चलनेलगा औ सबनरक के जीव दुःखसे मुक्त उत्तम वस्त्र भूषण माला लेपन आदि से भूषित तेजकरकेजाज्वल्यमानऔं(नमोनमोस्तुकृष्णायगोविंदायाव्ययात्मने। वासुदेवायदेवायविष्णवेप्रभुविष्णवे)यहबारंबार उच्चारण करतेदेख पड़ेयमराजनेपाद्यअर्घ्यआदिसे सब का पूजन किया औ एकाग्र चित्तहो हाथजोड़ यह स्तुतिकरने लगे (विष्णोर्देवाधिदेवस्यजगद्धातुःप्रजापतेःप्रमाणंयेच कुर्वंति तेषामपिनमोनमः। तस्ययज्ञवराहस्यविष्णोरमिततेजसः। प्रमाणंयेचकुर्वंति तेषामपिनमोनमः। अच्युतस्याप्रमेयस्य माया वामनरूपिणः। प्रमाणंयेचकुर्वंतितेषामपिनमोनमः) यमराज इस प्रकार स्तुति करतेहीथे कि उनके देखते देखतेही सबनरक के जीव दिव्य विमानोंमें बैठ स्वर्गकोगये मुद्गल भी यह सब चरित्र देख अपने स्थानमें आये औ विष्णु भगवान्का प्रभाव औ उनके नामों का माहात्म्य बारंबार स्मरणकर अपनेजीव को इस विधि समझानेलगेकि हेजीव विष्णु भगवान्कीमाया बड़ी दुस्तर औ गहवर है जिसकरके मोहितहुवातू परमेश्वर को नहीं पहिंचानता हे जीव तू कीट जूका मत्कुण वृक्ष लता पक्षी पशु मनुष्यआदि अनेक योनियोंमें भटकता फिरता है औमुक्ति के लिये यत्न नहीं करताबड़ाआश्चर्य्य है कि मायाकरकेमोहित मनुष्य अपना हित नहीं पहिचानते विष्णुमाया यद्यपि दुस्तर है तौभी विष्णु भक्त उसको सुखसे छेदन कर सक्ते हैं धर्म के अविरोधसे विषयोंको भोगताहुआ पुरुष भी विष्णु भगवान

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

में दृढ़ भक्ति रक्खै तो उसकी मायाका पार पाताहै जो मनुष्य जन्म पाय भगवान् का आराधन नहीं करते उनका जन्म ही वृथा है थोड़े परिश्रम सेही जो दोनों लोकोंमें कल्याणदेनेहारा हैं ऐसे विष्णु भगवान् का आराधन कौन पुरुष न करै वे वर्ष मास दिन विषयांध पुरुषोंके व्यर्थहैं जिनमें भगवान् का आराधन नहीं किया जो भगवान् धन वस्त्र भूषण आदि कुछ नहीं चाहता केवल हृदय की भक्ति ही चाहता है हे जीव उससे तू दूर २ क्यों फिरता है हजारों जन्मोंके अनंतर इस कर्मभूमि में मनुष्य जन्म पाकर जो पुरुष बिष्णुभगवान्का आराधनओ जलधेनु दान नहीं करते उनका जन्म भ्रष्ट है औ वे ही माया करके वंचित होते हैं हम ऊपर को भुजा उठाय पुकारते हैं कि हे मनुष्यों दोनों लोकोंमें कल्याण प्राप्तिकेलिये विष्णुभगवान् का आराधन औ जलधेनुका दानकरो नरककी यातना अतिदुःसहहै औ मैंने अपने नेत्रोंसे देखीहै उनसे बचनेके लिये बिष्णु भगवान्को भजो सैकड़ों यज्ञ औ क्लेशदायक अनेक व्रत करने से कुछ प्रयोजन नहीं यमराज का भय निवृत्त करने के लिये एक जलधेनुका दान ही बहुत है॥

एकसौपैंतीसवां अध्याय॥

श्रीकृष्णभगवान् कहते हैं कि हे महाराज अब हम घृतधेनुका विधान वर्णन करते हैं आप प्रीति से श्रवण करैं गौ के घृतसे पूर्ण एक कुंभ स्थापन कर गंधमाला आदि से उसको अलंकृत कर श्वेतवस्त्रसे आच्छादन करै औ इक्षुके पाद चांदी के खुर सुवर्ण के नेत्र अगुरु काष्ठ के शृङ्ग सप्तधान्य के पार्श्व सिहलक औ कपूरकेप्राण फलोंके स्तन सब रसों की जिह्वा गुड़ औ क्षीर का मुख क्षौमसत्र का पच्छ श्वेत सर्षप के रोम

CC-0. Gurukul Kangri University, Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

औ ताम्र का पृष्ठ घृत धेनुका बनावै औ इसी प्रकार वत्सब-
नाकर(आज्यंतेजःसमुद्दिष्टमाज्यंपापहरंपरम। आज्यंसुराणामा-
हारः सर्वमाज्येप्रतिष्ठितम्। त्वंवैघृतमयादेवी कल्पितासिमया
किल। सर्वपापप्रणोदाय सुखायभवभाविनि) इस मंत्र से उस
का पूजनकर दक्षिणा सहित घृतधेनु ब्राह्मणको देवैऔ (दक्षि-
णासहिताधेनुःकल्पिताज्यमयीशुभा। एनांममोपकारायगृहाण
त्वंद्विजोत्तम) यह मंत्र पढ़ै उस दिन घृतकाही आहारकरै इसी
विधानसे नवनीत धेनुकाभी दानकरै घृतधेनु दान करने हारा
पुरुष उस लोकमें निवास करताहै जहां घृतक्षोरकी नदी बहती
हैं औ पायसका जिनमें कर्दम है औ उस पुरुष की सातपीढ़ी
उसी लोकमें निवास करतीहैं जो निष्काम होकरघृत धेनु दान
करै तो निष्कल्मष पदको प्राप्तहोताहै घृत अग्नि है घृत सोम
है औ सर्व देवमय घृतहै इसलिये घृतके दानसे सब देवता प्र-
सन्न होतेहैं मायारूप जिसमें जलहै पुत्र कलत्र आदि जिसके
तरंगहैं लोभ जिसमें बड़ा भारी नक्र है ऐसे संसार सागर का
पार घृतधेनु दानसे प्राप्त होता है॥

एकसौ छत्तीसवांअध्याय॥

राजा युधिष्ठिर कहते हैं कि हे श्रीकृष्णचन्द्र अब आप ऐसा
दान वर्णन करैं जिसके करनेसे सब दानोंका फल प्राप्त होय
सब पाप निवृत्त होयँ औ सब मनोरथ सिद्ध होयँयह राजा का
वचन सुन श्रीकृष्णभगवान् कहनेलगे कि हे महाराज सब द्र-
ब्योंमें लवण उत्तम है जिसके दान करनेसे ब्रह्महा गोघ्न पितृ-
हा गुरुतल्पग विश्वासघाती क्रूरात्मा और भी सब प्रकार के
पाप करनेहारा पुरुष निष्पाप होजाता है औ धन धान्य पशु
दीर्घायुपुत्रोंसंतान पाकर बहुतदिन संसारसुख भोग शिवलोक

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

को जाताहै अब हम लवणधेनु का विधान कहते हैं गोवर से भूमिको लेपनकर उसके ऊपर मेषका चर्म औ वस्त्र बिछाय उसके ऊपर एक आढक अर्थात् चार सेर लवण रक्खै उसी को धेनु कल्पना करै सुवर्णके शृङ्ग चांदी के खुर इक्षु के पाद फलों के स्तन सब रसोंकी जिह्वा गंधके प्राण शुक्तिकेकर्ण चंदनकाष्ठके शृंग औ मोतियोंके नेत्र कल्पनाकर उसके कपालमेंसक्तु पिंड मुख में जौ दोनों पार्श्वों में तिल औगेहूं इस भांति सप्तधान्य उसके अंगों में स्थापन कर ग्रीवा में कंवल पृष्ठमें ताम्र अपान में गुड़का पिंड पुच्छमें कंवल दुग्धके स्थानमें द्राक्षायोनिमें मधु औ सब अंगोंमें फलोंका निवेशकरै ये सब वस्तु लवण के चतुर्थांश के समान रक्खै इस विधि धेनु बनाय वस्त्र भूषण आदिसे उसका पूजनकर दक्षिणा सहित सुशील ब्राह्मण को देवै औ (लवणेवैरसाःसर्वेलवणेसर्वदेवताः। सर्वदेवमयेदेवि लवणाख्येनमोस्तुते) यह मंत्र पढ़ै पीछे उसकी प्रदक्षिणा कर विसर्जन करै लवणधेनुकी प्रदक्षिणा करनेसे सब पृथिवी की परिक्रमा का फल होताहै औसब यज्ञ तथा दानकरनेका पुण्य भी प्राप्त होता है इस बिधिसे जो पुरुष लवणधेनुदान करैवह सौभाग्यआरोग्य सबसंपत्तिऔप्रलयपर्यंतस्वर्गमेंवास पाताहै॥

एकसौ सैंतीसवां अध्याय॥

श्रीकृष्ण भगवान् कहते हैं कि हे महाराज अब हमसुवर्ण धेनु दानका विधानकहतेहैंपचासपलपचीस पल अथवाजितना सामर्थ्यहो उतनासुवर्णलेकर अतिसुन्दर रत्नोंसे जड़ीधेनुबनावै पीछेसे ऊंची बड़ी कुक्षि औ मोटेस्तनों करकेयुक्त कपिलाधेनु बनाय हीरेके दांत वैडूर्यका गलकंवल तांवड़ेकेशृंग मोतीकेनेत्र औ मूंगे की जिह्वा उसकी बनावै कृष्णाजिनके ऊपर प्रस्थभर

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

गुड़ रखकर उसके ऊपर धेनुको स्थापनकरै औ अनेकप्रकारके फल आठ कुम्भअठारहप्रकारकेधान्यछतरी जूताआसनभोजन ताम्र का दोहनपात्र दीपक लवणशर्करा आदिसब पदार्थउसके पास स्थापनकर गुड़ धेनु के बिधान से उसका पूजनकर(त्वंसर्वदेवगणमंदिरभूषणासि विश्वेश्वरत्रिपथगोदधिपंचजानाम्। श्रद्धाम्बुतीक्ष्णशकलीकृतपातकौघैः प्राप्नोतिनिर्वृतिमतीवपरांन मामि। लोकेयथेप्सितफलार्थविधायनीत्वामासाद्यकोहिभवभाग्भवतीहमर्त्यः। संसारदुःखशमनायविमुक्तिहेतोस्त्वांकामधेनुमितिवेदविदोवदंति) यह मंत्र पढ़ सब उपस्कर औ दक्षिणा सहित वह धेनु ब्राह्मण को देवै पीछे प्रदक्षिणा औ प्रणामकर क्षमापन करावै दान कालमें जो देवता औ तीर्थधेनु के अंगमें निवास करते हैं उनकोसुनों नेत्रोंमें चंद्रसूर्य जिह्वामें सरस्वती दंतोंमें मरुत कर्णोंमें अश्विनीकुमार शृंगो में रुद्र औ ब्रह्मा ककुद मेंगंधर्ब औ अप्सरा कुक्षिमेंचारों समुद्रयोनि में गंगा रोम कूपों में ऋषिअपानमेंपृथिवी आत्रोंमेंनदी अस्थियोंमें पर्बतपादोंमें धर्मादिकहुंकारमेंचारोंवेदकंठमें रुद्रपृष्ठवंशमें मेरु औ सब शरीरमें विष्णुभगवान्स्थितहैं इसभांतिसुवर्णधेनु सर्वदेव मयी है इस लियेअवश्य यह दान करनाचाहियेजिसने यह दानकिया उसने सब दान किये कर्म भूमिमें यहदानहोना बहुत दुर्लभहै इसदांन के करनेहारा पुरुष अथवा स्त्री दिव्य विमान में बैठ गंधर्बऔ अप्सराओं करके सेवित स्वर्गकोजाता है वहां सौ कोटि बर्षसे भी अधिककाल सुख भोगकर मनुष्य लोकमें जन्मले आधिव्याधि रहित रूपवान् औ ऐश्वर्यवानहोताहै औ सब मनोरथ उसके अनायाससे सिद्धहोतेहैं औअंत में फिर शिवलोकको जाताहै॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

एकसौ अड़तीसवां अध्याय ॥

श्रीकृष्णभगवान् कहतेहैं कि हेमहाराजअब हमअतिदुर्लभ रत्नधेनु के दानका विधान कहते हैं जिसकेकरने से गोलोक की प्राप्तिहोती है पर्वदिनों में गोबर से भूमिपर लेपन कर कृष्णा जिन बिछाय उसके ऊपर एकद्रोण अर्थात् सोलह सेर लवण रख लवण के ऊपर रत्नधेनुस्थापन करै इकासी पद्मरागमुखमें इकासी पुखराजनासिका में मुक्तावली पुच्छ में सौ गारुत्मत रत्न अपान में स्फटिक दातोंमें और भी सब रत्न अंगोंमें स्थापन कर सुवर्णके खुर शर्करा की जिह्वा गुड़का गोबर घृतकागोमूत्र औ दही दूध प्रत्यक्षही रखकर चामर उसके पुच्छ में लगाय ताम्रका दोहनपात्रउसकेसमीप स्थापनकरै इसके चतुर्थांशतुल्य वत्स बनावै अनेक प्रकारके फल औ भोजन उसके समीप रख गुड़धेनु विधानसे उसका पूजनकर (त्वंसर्वदेवगणवासमितिब्रुवंति रुद्रेंद्रचंद्रकमलासनवासुदेवाः । तस्मात्समस्तभुवनत्रयहेतु युक्ता मांपाहिदेविभवसागरपीड्यमानम्) यह मंत्रपढ़ ब्राह्मण को वह धेनुदेवै पीछे दक्षिणादेप्रदक्षिणाकर क्षमापनकरावैइस विधिसे जो पुरुष रत्नधेनु दान करै वह सौ करोड़ कल्प पर्यंत शिवलोक में सुख भोग अंतमें सर्वकाम समृद्ध औ शत्रुओं को क्षय करने हारा राजा होताहै ॥

एकसौउनतालीसवांअध्याय ॥

राजा युधिष्ठिर पूछते हैं कि हे श्रीकृष्णचंद्र उभयमुखी अर्थात् प्रसव होतीहुई गौ किसविधि से दानकरै औ उसकेदानसे क्या फल होताहै यह आप वर्णनकरैंयहराजाकाबचनसुनश्रीकृष्णभगवान् कहने लगे कि हे महाराज उभयमुखीधेनुबड़े पुण्य-

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वान् मनुष्यों कोप्राप्त होसक्ती है जब तक बछड़ेके पैर भीतरही होयँ केवल शिरहीबाहिरनिकलाहोतबतकवहधेनु साक्षात् सप्त द्वीपवती पृथिवी है उभयमुखी धेनु के दान फलका एकमुख से वर्णन नहीं करसक्ते बहुत यज्ञ औ दान करने से क्या प्रयोजन है केवल उभयमुखी दान सेही अनंत पुण्य प्राप्त होताहै गौओं वत्सके शरीरमें जितने रोम होयँ उतने हज़ार दिव्य बर्षस्वर्गमें निवास करता है उसके पितर नरक से निकल विमान में बैठ उसलोकको जाते हैं जहां के वृक्ष कल्पवृक्ष हैं औ पायस कर्दम युक्त घृत क्षीर की नदी बहतीहैं जो सुवर्ण सहित उभय मुखी दान करै वह गोलोक में निवास कर ब्रह्मलोक को जाता है दुर्बला औ दक्षिणा रहित धेनु दान न करै क्योंकि यह काम्य विधिहै स्त्री भी इसदान को कर चंद्र के समान मुख तप्तसुवर्ण के समान वर्ण कमलसे नेत्र औ बड़ा सौभाग्य पातीहै॥

एकसौचालीसवां अध्याय॥

राजा युधिष्ठिर कहते हैं कि हे श्रीकृष्णचंद्र आपका वचन रूप अमृत पान करते २ मुझे तृप्ति नहीं होती औ श्रवणकरने का बड़ाकुतूहल है इसलिये और भी दान माहात्म्यआपवर्णन करैं यह राजा का वचन सुन श्रीकृष्ण भगवान् कहनेलगेकिहे महाराज सब दानों में उत्तम औ पावन वृषभदान का विधान हम वर्णन करते हैं दशधेनु दान से भी एक वृष के दान करने से अधिक फल प्राप्त होताहै हृष्ट पुष्ट युवा सुशील रूपवान् औ धुरंधरएकही वृष के दान करनेसे सब कुलकाउद्धार होजाताहै पर्व दिन में वृषभ को भूषित कर उसके पुच्छ में चांदी लगाय दक्षिणा सहित ब्राह्मण को देवै औ (धर्मोवृषभरूपेण जगदानंदकारकः। अष्टमूर्तेरधिष्ठानमतःपाहिसनातन) यह मंत्र पढ़

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

प्रणामकर उसका विसर्जन करै इसविधि वृषभदान करने से सातजन्म तक किये सब प्रकारके पाप उसी क्षण नष्ट होजाते हैं अन्तमें वह पुरुष दिव्य वृषभ युक्त देदीप्यमान बिमान में बैठ गोलोकमें जाताहैं वृषभके शरीरमें जितने रोम होंय उतने हजार बर्ष वहां सुख भोग उत्तम ब्रांह्मण के घर में जन्म लेता है औ यज्ञकरनेहारा तथा बड़ातेजस्वी होताहै शांत जितेन्द्रिय वेदवेत्ता अहिंसक औ प्रतिग्रहसे डरनेवाले ब्राह्मण मनुष्यों का उद्धार करनेको समर्थ होते हैं दृढ़ पुष्ट बलवान् भार उठाने में समर्थ औ सबगुणों करके भूषित उत्तमवृषभ जो पुरुषदानकरते हैं वे दश धेनु दान के फल से भी अधिक उत्तम फल पाते हैं ॥

एकसौइकतालीसवां अध्याय॥

श्रीकृष्णभगवान् कहतेहैं कि हेमहाराज पुण्य पवित्रआयुष् औ सुखदेनेहारा महिषीदान माहात्म्य हमकहतेहैं ग्रहणअयन संक्रान्ति शुक्ल चतुर्दशी आदि पर्वदिनों में अथवा जब होसके तबहीं संसाररोग निवृत्तिकेलिये महिषीदानकरै बहुत दूधदेनेहारी तरुण पुष्ट सुशील महिषी उत्तम ब्राह्मणकोदेवै वेद रहित औ दांभिक कोदान न देना चहिये दानके समय यह पौराणिक मंत्रपढ़ै(इंद्रादिलोकपालानांयाराजमहिषीशुभा। महिषीदानमाहात्म्यंसास्तुमेंसर्वकामदा।धर्मराजस्यसाहाय्येयस्यपुत्रःप्रतिष्ठितः।महिषासुरस्यजननीयासास्तुवरदामम)यहमंत्रपढ़ प्रदक्षिणा कर पृष्ठभाग से महिषी का दानकरै वस्त्र भूषण औ दक्षिणासहित महिषीब्राह्मण को देकर क्षमापनकरावै इसविधि से जो पुरुष महिषी दान करै वह इसलोकमें औ परलोक में मनोवांछित फलपाताहै औ राजाबनता है जो नारी महिषी दान करै वह राजमहिषी अर्थात् राजाकी पट्टरानी होती है ब्राह्मण इस

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

दान को करै तो यज्ञ करनेहारा होय क्षत्रिय विजय पावै वैश्य धनधान्य करके युक्तहोय शूद्र इसदानके करनेसे सबप्रकार की संपत्ति पाताहै इसलिये अपने औ अपने कुटुंबके कल्याणके अर्थ धनवान् पुरुषको अवश्यही महिषी दान करनाचहिये दशधेनु दानके समान महिषीदान का फल होताहै यहनारदमुनि कहतेहैं औ बीस धेनुदान के समान वेदव्यासजी बताते हैं सगर काकुत्स्थ धुंधुमार गाधि आदि बड़े२ राजाओंने यहदानकियाहै महिषीदान माहात्म्य को जो पुरुष सदा श्रवण करै वह सब पापों से छुट शिवलोकको जाताहै नवीनमेघकेसमान नीलवर्ण पुष्ट मनोहर औ दुग्ध का मानों समुद्र ऐसी महिषी सुबर्ण औ तिलों सहित ब्राह्मणको देने से दोनों लोक जीतता है॥

एकसौबयालीसवां अध्याय॥

श्रीकृष्णभगवान् कहतेहैं कि हेमहाराज अबहमऔरभीउत्तमदान कहतेहैं जिसके करनेसे सबपाप निवृत्तहोंय सौ मोहर की मेषी अर्थात् भेड़ बनावै उसको उत्तमभूषण रेशमीवस्त्र चंदन पुष्पमाला आदि से अलंकृत करै अथवा प्रत्यक्ष मेषी को ह भूषित कर सब धातु सबरस सप्तधान्य फल पुष्प आदि स सामग्री उसके समीप रक्खै बित्तशाठ्य न करै ग्रहण विषुव अयन आदि पर्वकालोंमें दुःस्वप्नहोंनेपर ग्रहपीड़ामें अथवा जब श्रद्धा उत्पन्न होय तबहीं यह दान करै प्रथम तिल औ घृत से हवन कर वस्त्र भूषण आदिसे ब्राह्मणका पूजन करै पीछे तिल के कुंभपर उसको स्थापनकर उसके संमुख लवण रख विधिपूर्वक उसका पूजन कर (रोमत्वङ्मांसमेदाद्यैः सर्वोपकरणैस्तथा। जगतोहितयुक्तासि सततंपार्थिवोत्थिता॥ वाङ्मनःकायजं नितंयत्किंचिन्ममदुष्कृतम्। तत्सर्वंविलयंयातु तवदानोपसेव
CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नात्) यहमंत्रपढ़ कुटुंबीब्राह्मण को देवै पीछे उस ब्राह्मण के साथ संभाषण न करै औ उस का मुख भी न देखै प्रतिग्रह करके वह ब्राह्मण पातकी होजाता है पूर्वकाल में यह दान पार्वतीजी ने किया जिसके प्रभाव से शिवजीपति मिले इद्राणी ने सुवर्ण के रोमोंकरके युक्त सौ मेषीदानकरने से सब देवताओं का राजा इन्द्र पति पाया नल को गया राज्य मिलाइसीदान के करने से रुक्मिणी को हमपति प्राप्तभये अपुत्र को पुत्र औ निर्द्धन को धन इस दान केप्रभाव से मिलता है जो इस दान बिधान को सुनै वह भी अहोरात्रकृत पाप से छुट जाताहै ॥

एकसौतेतालीसवां अध्याय ॥

श्रीकृष्णभगवान् कहते हैं कि हे महाराज अबहम सवपाप हरनेहारे भूमिदान का विधान कहते हैं जो पुरुष अग्निहोत्री दरिद्र कुटुंबी वैदिकब्राह्मण को दक्षिणा सहित भूमि देवै वह बहुतकाल सब ऐश्वर्य का भोग कर अंत में दिव्यविमान में बैठ बिष्णुलोक को जाताहै औ वहां प्रलय पर्यंत दिव्याङ्गनाओं के साथ विहार करताहै धन धान्य सुवर्ण रत्न भूषण आदि सवदान का फल भूमि देनेहारा पाता है समुद्र नदी पर्वत सम बिषम स्थल सब गंध औ रस क्षीरयुक्त औषधी पुष्प फल कमल उत्पल आदि के समूह सब उसने दिये जिसने भूमिदान किया भूमिदान करने से जो पुण्य होताहै वह दक्षिणायुत अग्निष्टोम आदि यज्ञ करने से भी नहीं प्राप्त होताहै वेदवेत्ता ब्राह्मण को भूमि देकर फिर न हरै तो जबतक लोक हैं तबतकस्वर्ग में निवास करता है औ प्रलय पर्यंत उसके पितर संतुष्ट रहते हैं वृत्तिके निमित्त जो पापपुरुषसे बन पड़तेहैं गोचर्म्ममात्रभूमिदेने से वे सब पाप निवृत्त होजाते हैं हजार मोहरदेने से जो फल

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

होता है उतनाही गोचर्म प्रमाण भूमिदान से भी होताहै एक हजार कपिला गौ दान करने के समान पुण्य गोचर्ममात्रभूमि देने से होताहै मध्यम अर्थात् न बहुत लंबे औ न ठिंगने पुरुषके व्यामअर्थात्सीधीफैलाई दोनों भुजाओं के समान एकदण्डहोता है तीस दंडका गोचर्मओ चारगोचर्मके तुल्य एक निवर्तन होता है सगर आदि अनेक राजाओं ने इस भूमिका उपभोगकिया है परंतु अपने २ आधिपत्य में जिस २ नेभूमिदान किया सबको फल हुआ यमदूत मृत्युदंड असिपत्रबन वरुण के घोरपाशरौरव आदि अनेक नरक औ उनकी दारुणयातना कोई भी भूमिदान करनेवाले के समीप नहीं आतीं चित्रगुप्त मृत्युकाल यम आदि सब उसकापूजन करतेहैं षट्कर्म करनेहारा वेदवेत्ता आहिताग्नि दरिद्र सदाचार औ अतिथि सत्कार में तत्पर ब्राह्मणको भूमि देनी चहिये जिसभांति गौ अपने वत्सका पालन करतीहैइसी विधि भूमिदान करनेहारेकाभूमिभी पालन करती है जिसभांति जल के सेचन से वीज अंकुरित होजाते हैं इसी प्रकार भूमिके देने से सब मनोरथ अंकुरित हो सुफल होतेहैं जिसभांति सूर्य सब अंधकार को हरता है इसीभांति भूमिदान सब पाप हरने-हारा है औरकी दान करी भूमि कोजो हरै उसको वारुण पाशों से बांध यमदूत रुधिर औ राद के कुंड में डालते हैं अपनी दी अथवा और की दी भूमि जो पुरुष हरै वह प्रलय पर्यंत नरका-ग्निमें जलता है भूमिहरी जाने से ब्राह्मणकेजो अश्रुविंदुगिरते हैं वे हरनेहारे पुरुष की तीन पीढ़ी को नरकमें पहुंचातेहैं ब्रा-ह्मण को भूमि देकर फिर हरै उसकोउलटा लटकाय कुंभीपाक नामनरक में पकाते हैं दिव्य हजार वर्षकेअनंतरकुंभीपाकसेनि-कल भूमि पर जन्म लेताहै औ सातजन्मपर्यंत अनेक क्लेशभोग-ताहै आप भूमिदान करने से दूसरे की दी भूमि को नहरने में

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अधिक पुण्यहै ब्राह्मणका धन हरनेहारे पुरुष निर्जल अरण्यमें सूखे वृक्ष के कोटर के बीच कृष्ण सर्पबनतेहैं जो प्रसन्न चित्तहो कर ब्राह्मणको भूमिदेवै उसके सबमनोरथसिद्धहोतेहैं भूमिदान से अधिक कोई पुण्यनहीं औ भूमिहरणसे बढ़कर कोई पातक नहीं भूमिदानकरनेहारेपुरुष प्रलयपर्यंत स्वर्गसुख भोगते हैं॥

एकसौचवालीसवां अध्याय॥

राजायुधिष्ठिर कहतेहैं कि हे श्रीकृष्णचन्द्र भूमिदान क्षत्रिय कर सकतेहैं औरोंसे न तो भूमिदान होसके न दी भूमिकापालन होय इसलिये सबके कल्याणके अर्थ ऐसादान आप कहैं जिस के करने से भूमिदान के समान फलहोय यह राजाकाबचनसुन श्रीकृष्णभगवान् कहने लगे कि हे महाराज जो प्रत्यक्ष भूमि न देसकै तो सुवर्ण की भूमि बनाय ब्राह्मण को देवै तौभीवही फल होताहै अब हम इसदानका विधान कहतेहैं ग्रहणसंक्रांति युगादि तिथि व्यतिपात आदि पुण्य समयों में पापक्षय के औ यश प्राप्तिके अर्थ यह दान करै सौ पल से औ पांच पल तक सामर्थ्यानुसार सुवर्णकी भूमिबनावै जंबूद्वीपआदिद्वीप मेरुआदि पर्वत नदी अनेकप्रकारकी खेती औ रत्नादिकोंसे उसको अलंकृत कर दश अथवा बारहहाथलंबाचौड़ा मंडपबनायउसमें चारहाथ की वेदीबनावै ईशानकोण में देवता स्थापन करै औ अग्निकोण में कुंडबनाके पताका आदि से मंडपको शोभित कर लोकपाल औ ग्रहोंकासबउपचारोंसे पूजनकरै पीछेब्राह्मणोंसे हवनकरावै ब्राह्मणभी वस्त्र भूषण चंदन आदिसेअलंकृत प्रसन्नचित्तहोहवन करैं शंखतूर्य आदि अनेकप्रकारके बाजेबजैं वेदीकेऊपर अष्टादश धान्यलवण आदि सब रस आठ पूर्णकलश रेशमी वितानअनेक प्रकार के फल नानाभांति के वस्त्र चन्दनकेटकड़े और भी सब

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by eGangotri Foundation USA

सामग्रीको स्थापनकर सबका अधिवासनकरै फिर होमके अंत में यजमान श्वेतवस्त्र माला आदि से अलंकृतहोसुवर्णकीबनाई भूमिकी प्रदक्षिणाकर पुष्पांजलि लेकर (नमस्तेसर्वदेवानां त्व मेवरचनायतः । धात्रीचसर्वभूतानामतः पाहिवसुंधरे । वसुधार यसेयस्मात्सर्वसौख्यप्रदायकम् । वसुन्धरातताजाता तस्मात्पा हिभयादलम् । चतुर्मुखोपिनोगच्छेद्यस्मादंतंतवाचले । अनन्ता यैनमस्तस्मात्पाहिसंसारकर्दमात् । त्वमेवलक्ष्मीर्गोबिन्दे शिवे गौरीतिसंस्थिता । गायत्रीब्रह्मणःपार्श्वे ज्योत्स्नाचंद्रेरवौप्रभा । बुद्धिर्बृहस्पतौख्याातामेधामुनिषुसंस्थिता । विश्वंप्राप्यस्थितायस्मात्ततोविश्वंभरामता।धृतिःक्षितिःक्षमाक्षोणीपृथिवीवसुधामही एताभिर्मूर्त्तिभिःपाहि देविसंसारसागरात् (ये मंत्र पढ़ पृथ्वीपर पुष्पांजलि चढ़ावै पीछे उसको दान कर ब्राह्मण को देवै औ अपने धनका अर्द्ध अथवा चतुर्थांश गुरुके अर्पण करै इस विधि से जो पुरुष पर्वदिनमें सुवर्णभूमिकादानकरै वह अति प्रकाशमान् विमान में बैठ विष्णुलोकको जाताहै वहांतीन कल्प पर्यंत उत्तमभोग भोगकर भूमिपर जन्मलेकर सातजन्म पर्यंतविजयी धर्मनिष्ठ शतकोटि धनका स्वामी चक्रवर्ती राजा होताहै ॥

एकसौपैंतालीसवां अध्याय ॥

श्रीकृष्णभगवान् कहते हैं कि हे महाराज अब हम सर्वपाप हरनेहारा औ सर्व सौख्यप्रदायक ऐसा दान कहते हैं जिस एकदान के करने सेही सबदानोंका फल प्राप्तहोय चार बैलों करके युक्त एक हल होता है ऐसे दशहल होने से एक पंक्ति होतीहै प्रथम उत्तम दृढ़ काष्ठ के दशहल बनवाय सुवर्णके पट्ट औ रत्नों से भूषित कर तरुण सुन्दर बली अठ्यंग ऊंचे वस्त्र भूषण आदिसे अलंकृत उत्तम वृष उन हलों में जोतै औ उत्तम

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

खेती करके युक्त बड़ाग्राम छोटाग्राम अथवा सौनिवर्तन परिमित भूमिदान के लिये नियत करै जो इतना सामर्थ्य न होय तो पचास निवर्तनही देवै पीछे वेदवेत्ता सदाचार संपूर्णांग अलंकृत सपत्नीक दशब्राह्मणों को निमंत्रण देवै दशहाथ का मंडप बनाय उसमें अति सुन्दर हस्त प्रमाण कुंड बनावै उसमें वे सब ब्राह्मण पलाशकी समिधा घृत कृष्णतिल औ पायसकरके व्याहृतियों से पर्यन्यसूक्त से औ रुद्र मंत्रों से हवन करैं फिर पर्वकाल में यजमान स्नान कर शुक्लवस्त्र आदि से अलंकृत हो सप्तधान्य के ऊपर हलपंक्तिको स्थापन कर उसमें वृषभ जोड़ै उस समय अनेक प्रकार के बाजे बजैं औ वेदध्वनि होय औ यजमान पुष्पांजलि ग्रहणकर ये मंत्र पढ़ै (यस्मादेवगणाःसर्वे हलेतिष्ठंतिसर्वदा। वृषस्कंधेसुनिहितास्तस्माद्भक्तिःशिवेस्तुमे। यस्माच्चभूमिदानस्य कलांनार्हंतिषोड़शीम्। दानान्यन्यान्यतो भक्तिर्ममैवास्तुसदादृढ़ा) फिर ब्राह्मण उनहलोंको धीरे२चलावै औ यजमान रत्नोंसहित सब बीज सुवर्ण औ चांदी ब्राह्मणों के हाथसे निर्बपन करावै अर्थात् बुवावै पीछे भूमि औ वे सबहल उन ब्राह्मणों को अर्पण करै इसप्रकार जो पुरुष हलपंक्ति का दानकरै वह अपने इक्कीस कुलोंसहित स्वर्गको जाता है सात जन्म पर्यंत उस पुरुष को दारिद्र्य दौर्भाग्य औ व्याधि नहीं होतीहै औ सेनाका अधिपति बनताहै जो भक्तिसे इस दानको देखै वह भी जन्म भर किये पापों से छुटताहै यह दान दिलीप ययाति शिवि भरत आदि सबराजाओंने कियाहै इसीके प्रभाव से वे आज तक स्वर्गसुख भोगते हैं इसलिये भक्तिपूर्वक सब स्त्री पुरुषों को यह दान करना चहिये जो हलपंक्ति का दान करनेका समर्थ्य न होय तो पांच चार अथवा एकही हल दान करै हलसे जितने रेणु उठैं औ वृषभों के शरीर में जितनेरोम

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by eGangotri Foundation USA

होयँ उतने हजार वर्ष शिवलोक में निवास कर अंत में वह पुरुष राजा होता है॥

एकसौछियालीसवां अध्याय॥

राजा युधिष्ठिर कहते हैं कि हे श्रीकृष्णचंद्र आप ऐसाकोई दान कहैं जिसके करनेसे मनुष्य बहुपुत्र बहुधन औ बहुभाग्य होजाय यह राजा का वचन सुन श्रीकृष्ण भगवान् कहनेलगे कि हे महाराज इसमें एक इतिहास हम कहते हैं आप प्रीति से श्रवण कीजिये पूर्वकाल में इसी भरतवंश के बीच वब्रुवाहन नाम एक राजा हुआ वह बड़ा प्रतापी आरोग्यबली औ शत्रुओं को जीतनेहाराथा परंतु न तो उस के कोई ऐसामन्त्री था जो राज्यभार उठासकै न पुत्र न मित्र औ न कोईसुख देनेहारा बंधु था इसकारण वह राजा सदा व्यग्र रहता एकदिन महायोगी पिप्पलाद मुनि वहां आये राजाकी रानी शुभावती ने पाद्य अर्घ्य आदि से उनका पूजन किया औ आसन पर बैठाय प्रार्थना करी कि महाराज यह निष्कंटक राज्य पायापरंतु मन्त्री मित्र पुत्र आदि हम को क्योंनहीं प्राप्तहोते इस का आप कारण कथन करैं यह रानी का वचन सुन पिप्पलाद मुनिकहने लगेकि हे रानी यह कर्मभूमि है इस में जितना कर्मकरो उतनाही फल प्राप्त होता है जो पदार्थ पूर्वजन्म में मनुष्य ने संपादन नहीं किया होय वह पदार्थ शत्रु मित्र बांधव राजा आदि कोई भी नहीं दे सकते पूर्वजन्म में तुमने राज्य का अर्जन किया सो पाया बिना संपदान किये पुत्र मित्र आदि अब कहां से मिल जायँ यह मुनिका वचन सुन रानी शुभावती ने कहा कि महाराज पीछे की बात गई सो गईअब भी कोई व्रत दान उपवास मन्त्र अथवा सिद्धयोग आप ऐसा बतावैं जिससे

CC-0.Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हम बहुत पुत्र बहुत भृत्य मित्र औ धन पावैं यह रानीकावचन सुन पिप्पालद मुनिने उनको अपाकदान का बिधान उपदेश किया जिसके करनेसे राजा बभ्रुवाहन ने बहुत पुत्र भृत्य मंत्री औ मित्र पाये इतना कह श्रीकृष्णभगवान् बोले कि हे महाराज सर्वकामप्रद उस दान का बिधान हम आपके प्रति कथन करते हैं अच्छे मुहूर्त्त में अगरु चंदन धूप पुष्प वस्त्र भूषण नैवेद्य आदि से शुक्र का पूजन करै औ (त्वंमेभांडानिचित्राणि गुरूणिचलघूनिच। माणिक्यादीनिशुभ्राणिहारांश्चसुमनोहरान्। संपादयमहाभागविश्वकर्मात्वमेवाहि। भार्गवत्वंप्रसन्नेनमनसापाहिमांसदा) यह मंत्र पढ़ै फिर अपाक अर्थात् बिनाअग्नि सिद्ध किये पदार्थों सहित एक हज़ार भांड अर्थात् पात्र वहां स्थापन करै सायंकाल के समय हवन कर रात्रि को जागरण औ गीत वाद्य आदिका उत्सव करै प्रभात होतेही यजमान स्नान कर श्वेतवस्त्र पहिने उन भांडों के ऊपर यथाशक्ति सोने चांदी ताम्र अथवा लोह के सोलह भांड स्थापन कर सबको रक्त वस्त्र से ढक पुष्प मालाओं से उन का अर्चनकरै ब्राह्मणों से स्वस्तिबाचन आदि करवाय शुक्र का पूजन करै सौभाग्यवतीनारियों का पूजनकर करै भांडों की प्रदक्षिणाकरै औ भांडरूपाणियान्यत्र कल्पितानिमयाकिल। भूत्वासत्पात्र रूपाणि उपतिष्ठन्तुतानिमे) यह मंत्र पढ़ उन सब भांडों को बांटदेवै अथवा लुटादेवै जिस की इच्छा होय सो आपही लेलेवे इस विधि से जो पुरुष अथवा स्त्री यह दान करै उसके ऊपर तीन जन्म तक विश्वकर्मा संतुष्टरहते हैं औ पुत्रमित्र भृत्य घरआदि सब पदार्थ मिलते हैं जोस्त्री इसदान को भक्ति से करै वह सौभाग्य पति के साथ अवियोग पुत्र पौत्र आदि सब पदार्थ पाती है औ अन्तमें अपने पति सहित स्वर्ग को जातीहै॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

एकसौसैंतालीसवां अध्याय ॥

राजायुधिष्ठिर कहते हैं कि हे श्रीकृष्णचंद्र आपसबशास्त्रका तत्त्व जानते हैं इसलिये गृहदान का माहात्म्य बर्णन करैं तब श्रीकृष्ण भगवान् कहने लगे कि हे महाराज गृहस्थ धर्म से अधिक कोई धर्म नहीं असत्य से अधिक पाप नहीं ब्राह्मण से बढ़कर कोई पूज्य नहीं औ गृहदान से उत्तम कोई दान नहीं धन धान्य पुत्र स्त्री हाथी घोड़े गौ भृत्य आदि से परिपूर्ण घर स्वर्ग से भी अधिक सुख देनेहारा है जिसभांति सब जीवमाता के आश्रय से जीते हैं इसी बिधि सब आश्रम गृहस्थके आश्रय से जीते हैं अपने घरमेंरात्रि के समय पैर पसार कर सुखपूर्वक सोने में जोआनंदहै वह स्वर्ग में भीनहीं जो पुरुष शैव वैष्णव योगी दीन अनाथ अभ्यागत आदि के लिये धर्मशाला बनातेहैं उन को सब व्रत औ दानों का फल प्राप्त होता है पक्कीईंटोंका बहुत दृढ़ ऊंचा शुभ्रवर्ण जाली झरोखे स्तंभ कपाट अर्गल आदि युक्त जलाशय औ पुष्पवाटिका से भूषित उत्तम अंगन करके शोभितबहुत रमणीयघर बनाय लोहे सोने चांदी पीतल ताम्र काष्ठ मृत्तिका आदि के सब उपस्कर वस्त्र चर्म वल्कल तृण पाषाण अजिन सातों धातुओंके पात्र रत्न भूषण गौ भैंस घोड़े वृषभ सब धान्य घृत तैल गुड़ तिल चावल धान्य इक्षु मूंग गौ धूम सर्षप मटर अरहर चने मसूर कंगुनी उड़द लवण खजूर द्राक्षा जीरा धनियां चूल्हा चक्की छलनी छाज ऊखल मूसल हाँड़ी मथानीमार्जनी जलकुंभ इत्यादि सब छोटे बड़े गृहस्थ के उपकरण उस घरमें स्थापनकरै फिर अच्छे मुहूर्त्त में कुलशील युक्त औ वेदशास्त्र जाननेहारे सपत्नीक ब्राह्मणों को बुलाय वस्त्र भूषण आदिसे उनका पूजन कर शांतिकर्म

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by eGangotri Foundation USA

में उनको नियुक्तकरै घरके अंगन में मेखला सहित कुंड बनाय ब्राह्मण उसमें हवन करैं औ रक्षोघ्न सूक्त पढ़ें पीछे वास्तु पूजा कर दिशाओं में भूतवलि देवै इसविधि शान्तिकर्म कर वहगृह उन ब्राह्मणों को देवै जो शक्तिहोय तो एक २ गृह एक २ ब्राह्मण को देवै अथवा एक गृहही सर्वोपस्कर सहित एक सत्पात्र ब्राह्मण के अर्पणकरै शीत वायु औ धूप की हरनेहारी तृणकी कुटी भी ब्राह्मण का देवै तो स्वर्गको जाताहै फिर उत्तमघरदेने का तौ पुण्य कहांतक कहैं गौ भूमि सुवर्ण आदि के दान औ अनेक प्रकार के यम नियम गृहदान की षोड़शीकला की भी तुल्यता नहीं करसक्ते सब सामग्री सहित बहुतदृढ़ और सुन्दर गृह उत्तम ब्राह्मण को जो पुरुष देवै वह उत्तम विमान में बैठ शिवलोक को जाता है औ वहां बहुतकाल दिव्य अप्सराओं के साथ बिहार करताहै॥

एकसौअड़तालीसवां अध्याय॥

श्रीकृष्णभगवान् कहते हैं कि हे महाराज पूर्वकाल में मुनियों ने जो अन्नदान माहात्म्य कहाहै वह हम कहतेहैंआप एकाग्र चित्त हो श्रवण करैं हे महाराजअन्नदीजिये अन्नदीजियेअन्नदीजिये जिससे सद्यः सबको संतोषहोताहै और दानों से क्याप्रयोजन है बन के बीच रामचंद्रजीने निर्वेद से यह कहा कि हे लक्ष्मण संपूर्ण पृथिवी अन्नसे पूर्णहै परन्तु हमको अन्न नहींप्राप्त होता इससेयही जानतेहैं कि हमने अन्नदान नहींकिया जोकर्मबीज मनुष्यबोतेहैं उसी का फल खातेहैं हमने ब्राह्मणोंकेमुखमें अन्नका हवननहींकिया बिनादिया कोई पदार्थ नहींमिलता यह लोकप्रवाद सत्य है सत्य से परे पुण्यनहीं बुद्धि से अधिकलाभ नहीं संतोष से परे सुख नहीं औ अन्नदान से बढ़कर कोईदान

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नहीं स्नान अनुलेपन भूषण वस्त्र आदिचाहे जितने पदार्थमिलैं परंतु अन्न बिना सुख औ संतोष नहीं होता अर्थात् भूखे को ये कोई पदार्थ अच्छे नहीं लगते पूर्वकाल में श्वेतनामक चक्रवर्ती राजा हुआहै जिसनेबहुत यज्ञकिये अनेक संग्रामों में जयपाया दान दिये धर्मसे राज्य कियावह राजा अनेक उत्तम भोग बहुत काल भोगकर राज्यको त्याग वानप्रस्थहुआ औ बहुतकालतप करके अंतमें दिव्यविमान पर बैठ स्वर्गकोगया वहा बिद्याधर किन्नर आदि उसके साथ विहार करते अप्सरा उसकी सेवा में रहतीं गंधर्व उसको गीतसुनाकर रिझातेइंद्र भी उसका बहुत सत्कार करते औ सदा दिव्यवस्त्र भूषण माला आदि पहिनने को मिलतेपरंतु भोजन के समय विमानपर बैठ भूलोकमेंआता औ वहां अपने पूर्वशरीर का मांस नित्य खाता औ वह शरीर नित्य भक्षण करने परभी न घटता इससे अत्यंत व्याकुल हो राजा ने एकदिन ब्रह्माजी से प्रार्थना करी किमहाराज स्वर्ग में मेरा निवास सब देवता मेरा सत्कार करैं औ सब उपभोग मेरे लिये उपस्थित रहते हैं परंतु यह पापिनी क्षुधा मुझेनिरंतरसताती है औअपने पूर्वशरीर का मांस खाते मुझे अत्यंत घृणा होती है मैंने ऐसा कौन पाप किया कि जिससे उत्तम भोजन नहीं मिलता अब आप कृपाकर ऐसा उपाय बतावैं जिससे यहकष्ट निवृत्त होय यह राजा का वचन सुन ब्रह्मा जी कहनेलगेकि हे राजन् तुमने सब दान किये परंतु ब्राह्मणोंको उत्तम २ भोजनों से संतुष्ट नहीं किया उसीका फल अब भोगते हो अन्नकेबिना दूसरा कोई संजीवन औषध नहींहै इससे इसी को अमृत जानना चाहिये इसलिये अब तुमभूमिपर जायवेदशास्त्र जानने हारे तपोनिष्ठ औ जितेंद्रिय ब्राह्मणको भोजन कराओ तो तुम्हारा यह क्लेश निवृत्त हो यह ब्रह्माजी का वचन सुन राजा श्वेत

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

भूमिपर आया औ वहांआय परमभक्तिसे अगस्त्यमुनि को भोजन कराय अपनेकंठसे दिव्य मोतियोंकी एकावली उतार उन को दक्षिणादी अगस्त्यजी को भोजन करातेही राजा संतुष्टहोगया औ सब देवता वहां आय बड़े आदर से राजाको बिमान में बैठाय स्वर्गको लेगये रामचन्द्रजीने जब रावणको मारदिया तब वह एकावली अगस्त्यजीने रामचन्द्रजी को दी यह अन्नदानका माहात्म्य है हमारा बचन सत्य मानो कि अन्न से बढ़कर कोई उत्तम पदार्थ नहीं अन्न जीवोंका प्राणहै अन्नही तेज बल औ सुखहै इस कारण अन्नदेने हारा प्राणदायक होता है भूखे मनुष्य दूसरे जिसके घर आशाकरके आवैंओ तृप्त होकर वहांसे जांय वह पुरुष धन्यहै जो भूखे को अन्न न देसके उसका गृहस्थाडंबर वृथाहै अन्नके बिना कोई जी नहीं सक्ता जैसा अन्न खाकर पुरुष मैथुन में प्रवृत्त होय वैसेही पुत्र उत्पन्न होते हैं मनुष्योंका दुष्कृत अन्नमें रहताहै इसलिये जो जिसका अन्न खाय वहउसका दुष्कृतभक्षणकरताहै चन्द्रमा जब बनस्पतियों में प्राप्तहोताहै उसदिन जो परान्न भोजनकरै उसका एकमहीने का किया पुण्य अन्नदाता को प्राप्तहोजाताहै इसलिये उसदिन परान्न भोजन न करै जिस अन्नके देनेका इतनाफलहैफिरक्यों न अन्नदानकरैंब्राह्मणकोभिक्षा हंतकारअथवातृप्तिपूर्वकभोजन दिये बिना जो पुरुष भोजनकरतेहैं वे केवल किल्बिषही भक्षण करतेहैं जिसने दशहज़ार अथवा हज़ारही ब्राह्मणों को भोजन कराया उसने ब्रह्मलोक को जानेकेलिये मानो कमर बांधी पूर्व कालमें काशीके बीच प्राणिंजीवी वैश्यों में देव ब्राह्मण पूजक धनेश्वर नाम एक वैश्यथा उसके घरमैं सर्पिणी एकअंडाछोड़गई वैश्यने उस अंडे को देखा औ दयासे उसका रक्षण किया कुछ दिनके अनन्तर अंडेको फोड़कर कृष्ण सर्पका बच्चानिकला

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वैश्य भी उसको नित्य दूध पिलाने लगा वह सर्प कभी वैश्यके अंगको चाटता कभी पैरों में लोटता औ सारे घरमें फिरता वैश्य उसकी भली भांति रक्षा करता कुछकालमें वह बड़ाभयंकर सर्पहोगया एकदिन वैश्य गंगास्नानकोगयाथा औ उसका पुत्र दुकानपर सौदा बेचताथा उससमय वह सर्प चंचलता से बणिकपुत्रके पैरोंके बीचसे निकला इससे उसको त्रासहुआ औ सर्पको उसने तर्जनकिया तर्जनकरतेही उछलकर सर्प वैश्यपुत्र के मस्तकपर जाबैठा औ क्रोधकर बोला कि रे मूर्ख तेरेपिताके मैं शरणमेंहूं उसीने मेरा पालन पोषण किया इसलिये मैं तेरा भी भलाही चाहताथा परंतु तैंने मुझे बिना अपराध ताड़नकिया इसलिये अबतुझेजीता न छोड़ूंगायहसर्पका वचनसुनतेहीउसके घरमें रोनापीटना मचगया इतनेमें अच्युत अनंत गोविंदआदि नाम उच्चारण करता धनेश्वर भी स्नान करके घर आया औ पुत्रकोदेखा सर्पनेकहाकिहेधनेश्वर तेरेपुत्रने निरअपराधमुझको ताड़नकिया इसलिये तेरेसंमुखही मैं इसकेप्राणहरताहूं जिससे फिर कोई पुरुष ऐसाकाम न करै यहसुन धनेश्वर बोला कि हे सर्प जो उपकार भक्ति स्नेह आदि सबको भूलकर उत्पथमें चलै उसको कौन रोकसक्ताहै परंतु क्षणमात्र तू इस बालक को दंश मतकर जबतक यह अपना और्ध्वदैहिक अपनेहाथ करलेवै सर्प ने यहबात स्वीकारकरली वैश्यनेभी वेदवेत्ता औ जितेन्द्रिय एक हज़ार ब्राह्मणोंको घृतपायस भोजनकराया औ सबकोदक्षिणा दी ब्राह्मणोंने प्रसन्नहो (हे वैश्य पुत्र तू चिरंजीवहो तेरेसबशत्रु नष्टहोंय औ सब मनोरथ सिद्धहोंय) ये वाक्य कहकर अक्षतऔ पुष्प वैश्यपुत्रके मस्तकपर डाले अक्षतगिरतेही ब्राह्मणोंकेवाग् बज्रसेताड़ितपर्वतकीभांतिवहसर्पगिराऔमरगयासर्पकोमरदेख धनेश्वरकोबड़ापश्चात्तापहुआ औ शोचनेलगाकि यहसर्पमैंनेपुत्र

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

की भांति पाला औ बहुत इसका लालनकिया अब यह मेरेही दोषसे मृत्युवशहुआ यह बड़ाही अनुचित कर्म बनपड़ा उपकार करनेहारे में जो साधुताकरै उसकी साधुता प्रशंसा योग्यनहीं होती अपकारियों में जो साधुत्वरक्खै उसकी साधुता सराहिये इसभांति अनेकप्रकार के पश्चात्ताप वैश्यनेकिये औ दुःखकेमारे नतो भोजनकिया औ न रात्रिको सोया प्रभातहोते ही गंगा में स्नानकर देवता पितरों का पूजन तर्पण आदि कर घर आय एकहज़ार सदाचार ब्राह्मणोंको अनेक प्रकारके उत्तम २ भोजनों से संतुष्ट किया औ दक्षिणा दी ब्राह्मणोंने प्रसन्न होकर कहा कि हे धनेश्वर हम बहुत संतुष्टहुये तूभी बरमांग तब वैश्य ने यहीबरमांगा कि महाराज यह सर्प जीउठै यही वरचाहताहूं यह वैश्यका वचनसुन ब्राह्मणोंने अभिमंत्रित जल से उस सर्प को प्रोक्षणकिया प्रोक्षण करतेही पर्वतकी भांति वह सर्प उठा औ दोनोंजीभ लपलपानेलगा उसको देख धनेश्वर बड़ाप्रसन्न हुआ औ सब नगरके लोग धनेश्वर की प्रशंसा करनेलगे यह सहस्र ब्राह्मण भोजन का संक्षेपसे माहात्म्य वर्णन कियाहै जो पुरुष ब्राह्मणों को औ अभ्यागतोंको अन्न देते हैं वे बहुत दिन संसार सुख भोगकर विष्णुलोक को जातेहैं॥

एकसौउनचासवां अध्याय॥

राजायुधिष्ठिर कहतेहैं कि हे श्रीकृष्णचन्द्र आपके मुख से अन्नदानमाहात्म्यसुन एकबात हमारेभीस्मरणआई वह अपने नेत्रोंसे देखी आपको सुनातेहैं। जब द्यूतके छलसे दुर्योधन कर्ण शकुनि आदिने हमारा राज्य औ धन हरलिया औ हम वल्कल पहिन बनकोगये उससमय सबनगरकेलोग औसदाचारब्राह्मण स्नेहसे हमारे साथ चले उनको देख हमको बड़ानिर्वेदहुआ औ

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by eGangotri Foundation USA

यहशोचा कि जो पुरुष ब्राह्मण मित्र भृत्य आदिका पोषण करै उसका जीवन सफलहै अपना पेट तो सबही भरतेहैं अभ्यागत सुहृद्वर्ग औ कुटुंबकोछोड़ जो अपनाही पेटभरै वह पापीजीताही मराहै यह मनमें शोच उन ब्राह्मणों से हमने कहा कि आप सब त्रिकालज्ञ औ ज्ञान विज्ञानके पारगामी मेरेस्नेहसेआयेहैं अब कुछ अपने भोजन के लिये उपाय कहैं जिससे भाई भृत्य बंधु औ आपसहित हमारा बारहबर्ष निर्जन बनमें निर्बाहहोय यह हमारा बचनसुन मैत्रेय मुनि बोले कि हे महाराज एक प्राचीन वृत्तान्त हमने दिव्य दृष्टिसे देखाहै वह हम कहतेहैं आप श्रवण करैं पूर्वकाल में तपोबन के बीच दुर्भगा औ दरिद्रा एक ब्रह्मचारिणी ब्राह्मणी थी वह इसदशा में भी नित्य ब्राह्मणोंका पूजन कियाकरती उसका शम दम औ श्रद्धादेख एकदिन प्रसन्नहो ब्राह्मणोंने कहा कि हे ब्राह्मणि हम तुझसे बहुत प्रसन्नहैं बरमांग तब ब्राह्मणी ने कहाकि महाराज कोई ब्रत अथवादान ऐसा बताइये जिसके करने से पतिकी प्रिया बहुपुत्रा धनाढ्या लोकमें प्रशंसा योग्य औ त्रिवर्ग भागिनी होजाऊं यह ब्राह्मणी का वचन सुन वशिष्ठजी कहने लगे कि हे ब्राह्मणि सब मनोरथ सिद्ध करनेहारा दान हम तेरेको बताते हैं वह तू कर पचीस पल बारहपल अथवा छ पल ताम्र की एक हांडो बनावै जो सामर्थ्य न होय तो मृत्तिका की उत्तम हांडी लेकर उसको चावलों से भर चंदन से चर्चितकर मंडल के बीच स्थापन करै उसके समीप सबप्रकारकी तरकारी शाक औ घृतकापात्र स्थापन कर पुष्प धूप दीप वस्त्र आदि से उसका पूजनकर (ज्वल ज्ज्वलनपार्श्वस्थेतंडुलैरपिपूरिते । त्वयाबिनानसंसिद्धिर्भूतानां सिद्धकामिनाम्। अतस्त्वांप्रणमेनित्यंसत्यंकुरुवचोममा।अक्षयान्न प्रदानित्यंतथाभववरप्रदा) यहमंत्र पढ़ वह हंडिका आचार्य के

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by eGangotri

अर्पण करै यह दान रविवार संक्रांति चतुर्दशी अष्टमी एकादशी अथवा तृतीया को करै यह वशिष्ठजी का उपदेश मान वह ब्राह्मणी नित्य ब्राह्मणों को स्थाली देनेलगी उस पुण्य के प्रभाव से जन्मांतर में वह तुम्हारी भार्या द्रौपदी भई इतना कह मैत्रेय मुनिने कहा कि हे महाराज अब जो द्रौपदी अपनी स्थाली सेअन्न देवै तो संपूर्ण जगत्को तृप्तकर सकती है यह मैत्रेय का बचन सुन हमने भी वैसाही किया औ सब ब्राह्मणों को नित्य भोजन कराने लगे इतना कह राजा युधिष्ठिर बोले कि हे श्रीकृष्णचंद्र अन्नदान के प्रसंग से यह स्थालीदान विधान हमने कहा सो आपने क्षमा करनाजो पुरुष सुंदर ताम्रकी स्थाली बनाय तंडुलों से पूर्ण कर पर्व दिनों में इस विधान से ब्राह्मण को देवै उनके घर में सुहृत् संबंधी बांधव मित्र भृत्य औ अतिथि नित्य भोजन करैं तौभी भोजन का संकोच नहीं होता॥

एकसौ पचासवां अध्याय॥

श्रीकृष्णभगवान् कहते हैं कि हे महाराज अब हम भक्तिसें औ स्नेह से आपको दासीदान का विधान कहते हैं जो आज तक किसीने न कहा होगा चारों आश्रमों में गृहस्थाश्रम सब से उत्तम है गृहस्थ में गृह औ गृह में उत्तम स्त्री सार हैं जिस में पूर्ण चंद्रमुखी औ पीनोन्नतस्तनी नारी होयँ उसीको घर कहना चहिये जिस घर में स्त्रियों काआदर होय वहां सब देवता निवास करते हैं औ जहां इनका अनादर होय वे गृह नाश को प्राप्त होते हैं अनादर करीहुई नारी जिन घरों को शापदेती हैं वे घर मानों कृत्याकरकेहत होजायँ शीघ्रही पराभव को प्राप्त होते हैं अमृत के मानों कुंड सुख की मानों राशि रति के मानों निधान ऐसी नारी किसने त्यागी हैं श्यामा मंथरगामिनी घनपीन

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by eGangotri Foundation USA

पयोधरा ऐसी नारी औ महिषी घर २ में नहीं होतीहैं अर्थात् कोई पुण्यवान्ही पाताहै जिस घर में सुवर्ण दासी बालक औ दही दूध आदि न होयँ वह घर साक्षात् नरकही जानो अधिपति बिना ग्राम दासी बिना घर औ घृतबिना भोजन येतीनों वृथा हैं रूप लावण्ययुक्त दासी जिस घरमें होयँ वहां साक्षात् कमलहस्ता लक्ष्मी निवासी करती हैं जिस घरमें शौच आचार होय व्यवहार शुद्ध होय औ दासी दासों का भली भांति पोषण होय वहां लक्ष्मी का निवास होताहै बहुत लोकों करके आकुल ग्राम दासी दासों करके आकुल घर औ धर्म करके आकुलबुद्धि उत्तम होतीहै जिस घरमें भार्या गृहस्थ व्यवहार में चतुर होय दासी अपने २ काम में तत्पर होयँ औ सेवक सदाउद्यमी होयँ वहांत्रिवर्ग अर्थात् धर्म अर्थ औ काम का निवास होताहै वेदमें लिखाहै किजो २ पदार्थअपनेकोप्रिय होयँसोसबब्राह्मणोंको देने चहियें यहबात मनमें बिचार ब्राह्मणको उत्तम दासी देनीचहिये स्थिर नक्षत्रमें औ सौम्य ग्रहान्वित लग्नमें वस्त्र भूषण आदिसे यथा शक्ति दासीको अलंकृतकर(इयंदासीमयातुभ्यंभगवन्प्रतिपादिता। सर्वकर्मसुयोज्येयंयथेष्टंभद्रमस्तुमे)यहमंत्रपढ़ब्राह्मणको देवै पीछे सुवर्ण वस्त्र सुगन्धद्रव्यआदिब्राह्मण को देकरक्षमापन करावैइसीविधिसे देवालयमेंभी दासीअर्पण करै इसप्रकार जो पुरुषदासीदान करै वह बिद्याधरों करके सेवित अप्सरालोकमें निवास करता है॥

एकसौ इक्यावनवां अध्याय॥

राजायुधिष्ठिरकहतेहैं कि हे श्रीकृष्णचंद्रअब आपप्रपाअर्थात् जलशाला का विधान कहैं किस कालमें औ किस बिधि से जलशाला दान होताहै औ उसके दानसे क्या फल है यहसब

CC-0. Sarvajanik Kangri University Haridwar Collection. Digitized by eGangotri

आप वर्णन करैं यह राजाका वचनसुन श्रीकृष्णभगवान् कहने लगे कि हे महाराज चैत्रमहीने के आरंभ में उत्तम मुहूर्त्त देख नगरके मध्यमें रस्तेके किनारे देवालयमें चैत्यवृक्षके नीचेअथवा निर्जल बनमें सुन्दर मंडप घनी औ ठंढी छायायुक्तबनावै उसके बीच ठंढे जल से पूर्ण गीले वस्त्र से वेष्ठित बड़े २ मटके औ शीतलजल जिनमें रहैं ऐसी सुराही रक्खै औ सुशील कुटुंबी ब्राह्मणको उसमें नियुक्त करै जो निरन्तर सबको जल पिलायाकरै उस ब्राह्मण के निर्बाह योग्य जीविका कल्पनाकर देवै इसप्रकार उत्तम मुहूर्त्त में प्रपा बनवाय यथा शक्ति ब्राह्मण भोजन कराय (प्रपेयंसर्वसामान्याभूतेभ्यःप्रतिपादिता। अस्याः प्रदानाल्पितरस्तृप्यंतुचपितामहाः) यह मंत्र पढ़ प्रपा का दानकरे उसदिनसे लेकर चार अथवा तीन मास तक निरन्तर जल पिलावै औ यथा शक्ति अन्नभी देवै सुगन्ध शीतलसुस्वादु औ उत्तम पात्रमें स्थित जल सबको पिलावै औ यथा शक्तिनित्यही ब्राह्मण भोजन करावै इसविधिसे जो पुरुष ग्रीष्मऋतुमें जलदान करै वह सौ कपिला गोदानका फल पाताहैऔ अंतमें दिव्य कुम्भाकारबिमानपरबैठ स्वर्ग्गमेंजाय तीसकल्पपर्यंतसुख भोगताहै औ यक्ष गंधर्ब आदि उसका सेवनकरतेहैं फिरभूमिपर जन्मले चतुर्वेदवेत्ता ब्राह्मण होताहै औ उत्तमकर्मकरमुक्तिपाताहै प्रपादानकीसामर्थ्य न होय तो ठंढेजल से पूर्णघट जिसका मुख वस्त्रसे ढकाहो नित्य ब्राह्मणकेघरदेवै औ प्रतिमासउसकाउद्यापनकरै अनेकप्रकारकेपक्वान्न औ वस्त्रदक्षिणाआदिसेशिवअथवा विष्णुका उद्देशकर ब्राह्मणका पूजनकरैऔ(एषधर्मघटोदत्तोब्रह्म विष्णुशिवात्मकः।अस्यप्रदानात्सकलाममसंतुमनोरथाः) यहमंत्र पढ़ ब्राह्मण को जलपूर्णघट अर्पण करै इस विधान से जो धर्म घट दानकरै वह प्रपादान के फलको प्राप्त होताहै जो धर्म घट

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by eGangotri Foundation USA

भी न देसकै नित्य अश्वत्थका सेवनकरै नमस्कार औ प्रदक्षिणा कर (अनेनाश्वत्थसेवनेनमेजनार्दनःप्रीयताम्) यह वाक्य उच्चारणकरै अश्वत्थवृक्ष के नीचे जो सत्कर्म करै वह अनन्त फलदायक होताहै औ अश्वत्थसेवनसे सबपाप नाश को प्राप्त होते हैं स्वादु औ शीतलजलकी प्रपा जो पुरुष ऐसेस्थानमें लगावै जहां बहुत मनुष्य जल पीवैं वह इस मृत्युलोक में धन्यहै॥

एकसौबावनवां अध्याय॥

राजायुधिष्ठिर पूछतेहैं कि हे श्रीकृष्णचन्द्र शीतकालमें दयालु पुरुष अग्निष्ठिका अर्थात् अंगीठी का दान किस बिधिसे करतेहैं यह आप वर्णन करैं यह राजा का वचनसुन श्रीकृष्णभगवान् कहनेलगे कि हे महाराज सब जीवों के सुख देनेहारे अग्निष्ठिका दान का बिधान हमकहतेहैं आप प्रीति से श्रवण कीजिये मार्गशीर्ष के आरंभ में उत्तम मुहूर्त्त देख देवालय मठ घर अथवा बड़े चौकमें प्रभात औ सायंकाल बहुतसा सूखाकाष्ठ एकत्रकर अग्निप्रज्वलितकरै इसीविधिसे शीतकाल भर दोनों वक्त अग्निजलावै औ सब दीन अनाथ बस्त्र हीनवहां सेकैं जो उनमें कोई भूखाहोय उसको भोजन देवै किसीको निषेध न करै इसविधिसे जो पुरुष अग्निदान करै वह दिव्य बिमान में बैठ ब्रह्मलोकको जाताहै वहां साठ हजार वर्ष सुख भोग कर भूमि पर जन्मलेताहै औ चतुर्वेदवेत्ता यज्ञकरनेहारा आरोग्यधनवान् औ तेजस्वी ब्राह्मण होता है जो पुरुष चैत्य देवालय सभा घर आदिमें हेमंत औ शिशिरऋतु के बीच जीवों के सुख देने हारी अंगीठी दोनोंकाल देतेहैं वे सब सुखभोगकरस्वर्गको जाते हैं॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

एकसौतरेपनवां अध्याय ॥

राजायुधिष्ठिर कहते हैं कि श्रीकृष्णचन्द्र अनेक प्रकार के गोदान औ भूमिदान के विधान माहात्म्यसहित आपके मुखसे श्रवणकिये अबहम विद्यादानका माहात्म्य श्रवणकिया चाहते हैं आपकथनकरैं यहराजाका वचनसुन श्रीकृष्णभगवान्कहने लगे कि हे महाराज जिस प्रकार विद्या दान करना चहिये औ दानसे जो फल होताहै वह हम बर्णन करते हैं शुभ मुहूर्त्त में स्वस्तिकादि भूषित चतुरस्र मंडलबनाय उसकेमध्यमेंपुस्तकको स्थापनकर गंध पुष्प आदिसे उसका पूजनकरै पीछे लेखक का पूजनकर सुवर्णकी कलम औ चांदी की दवात उसको देवै वह सुशील औ अप्रमादीलेखक पुस्तकलिखनेका आरम्भकरैमात्रा अनुस्वार संयुक्त पदच्छेद सहितलिखै औ एकाग्रचित्तहोकरसम बर्तुल न बहुत मोटे न अति सूक्ष्म जिनके शिर समान होयँ ऐसे अक्षर लिखे इसविधि शैव अथवा वैष्णव शास्त्र लिखवाय अंत में वस्त्र भूषण आदिसे लेखक का पूजनकरै फिर उस पुस्तक को दो वस्त्रोंसे वेष्ठनकर दक्षिणा सहित व्युत्पन्न प्रियंवदऔ उत्तम बाचक ब्राह्मणको देवै अथवा सर्व सामान्य देवालय आदि में उस पुस्तकको रक्खै औ जिसकी इच्छाहोय सो बांचै इसविधि से जो पुरुष पुस्तक दानकरै वह तीर्थयात्रा करने औ यज्ञ करने से भी कोटिगुण अधिक फलपाताहै हजार कपिलागौका विधि पूर्वक दानकरनेसे जोफल होताहै वह एकपुस्तककेदेने से प्राप्त होताहै पुराणरामायण औ महाभारत देनेसे जोफलप्राप्तहोता है उसका कौन वर्णनकरसक्ताहै प्रभातउठ जो पुरुष शिष्योंको वेदशास्त्र नृत्य गीत वेदांग आदिपढ़ावै वहधन्यहै जो उपाध्याय कोवृत्ति देकर विद्यार्थियों को पढ़ावै उसने कौन दान न किया

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

विद्यार्थियोंको भोजन वस्त्र भिक्षा पुस्तक आदिके देने से मनुष्यों के सबमनोरथ सिद्धहोते हैं विद्या देनेहारा विवेक दीर्घजीवित धर्म अर्थ काम औ संपत्ति सब कुछ देताहै शास्त्र शस्त्रविद्याकला आदि जो पुरुष सीखनाचाहैं उनका यथाशक्ति सहायकरनाओ उनके ऊपर सदा उपकार करनेकी इच्छारखनी हजार बाजपेय यज्ञ विधिपूर्बक करने से जो फल प्राप्त होताहै वही विद्यादान से भी होता है शिव अथवा सूर्य के भवन में जो पुरुष नित्य पुस्तक बँचवावै वह गौ भूमि सुवर्ण औ वस्त्र के दान का नित्य फल पाता है विद्याहीन पुरुष धर्म अधर्म नहीं जानसक्ता इसलिये सदा विद्यादानमें तत्पर रहनाचहिये तीनलोक चार वर्ण चार आश्रम औ ब्रह्मादिक देवता सब विद्यादानमें प्रतिष्ठितहैं विद्यादान करनेहारा पुरुष एककल्प विष्णुलोकमें निवास कर भूलोक में जन्म लेकर दाता भोगी रूप सौभाग्य युक्त दीर्घायु नीरोग पुत्र पौत्र युक्त औ धर्मात्मा राजाहोताहै औ सौ वर्ष राज्य करता है विद्यादान से अधिक कोई दान जगत् में नहीं विद्यादान करनेहारापुरुष गौ भूमि सुवर्ण हाथी घोड़े रथआदि सब दानोंका फल पाता है॥

एकसौचौवनवां अध्याय॥

श्रीकृष्णभगवान् कहते हैं कि हे महाराज पूर्वकालमें प्रियब्रत नामराजा बड़ाप्रतापी औ धर्मात्माहुआ जो तीसहजारवर्ष राज्यकर सातोंद्वीप अपने सात पुत्रोंकोदे विषयोंसे चित्तकोखैंच तप करने के लिये बनमें गमनकिया राजा को तपोबन में प्राप्त हुये सुन बड़े २ महात्मा औ तपस्वी मुनि राजाको मिलनेआये राजाने भी विधिपूर्वक पाद्य अर्घ्य आचमन आदिसे पूजन कर मधुर बचनों से कुशलप्रश्न पूछ उन सबको आसन पर बैठाया

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

इसी अवसर में ब्रह्माजी के पुत्र बड़े तेजस्वी मानो दूसरे सूर्य पुलस्त्यमुनि वहांआये उनकोदेख राजा सहित सब मुनिउठेऔ बड़े सत्कार से उनको बैठाया पाद्यादिकोंसे उनका पूजनकिया पीछे अनेकप्रकार की कथा कहनेलगे उस समय मुनियों ने पूछा कि हे पुलस्त्य मुनि किसदान व्रत नियम आदि से पुरुष औ स्त्रियों को सद्गति प्राप्त होतीहै यह आप वर्णनकरैं आपके मधुर बचन श्रवण करने की हमको औ इस राजा प्रियव्रत को बड़ी अभिलाषा है यह मुनियोंका बचन सुन पुलस्त्यमुनिकहने लगेकिहेमुनीश्वरो अतिरहस्यसबदानोंमें उत्तमऔ सबपापहरने हारादानहमकहतेहैं जिसके करनेसे ब्रह्महा गोघ्न पितृघ्नगुरु-दारगामी झूठा साक्षी आदि अनेकपापी मनुष्य सब पापोंसेछुट दिव्य देहधारी होतेहैं ब्रह्मलोक की इच्छाहोय तो कृच्छ्रचान्द्रा-यण आदि व्रतकरै परंतु येकाय क्लेश ब्राह्मण भिक्षु औ बिधवा नारियों केलिये कहेहैं राजा औ धनवान् गृहस्थ इसकृच्छ्रसाध्य धर्म को नहीं संपादन कर सकते हैं मनुष्यों के बहिश्चर प्राण धनहैं इसलिये धनाढ्य पुरुषों को धन करके धर्मका अर्जन क-रना चहिये सब द्रव्यों में श्रेष्ठ औ देवताओं में मुख्य अग्निका संतान सुवर्ण है सुवर्ण दान से सब पाप दूर होते हैं औ दिव्य देह प्राप्ति होतीहै इतनाकह पुलस्त्यमुनिने ऋषियोंके औराजा के प्रति तुलादान का बिधान कहाश्रीकृष्णभगवान् कहतेहैं कि हे महाराज वही बिधान ऋषीश्वरों ने हमको कहाऔहम आप को श्रवणकरातेहैं आप सावधान होकर सुनैं व्यतीपात अयन विषुव ग्रहणग्रहपीड़ादुःस्वप्नदर्शनकार्त्तिकीअथवामाघीपूर्णिमा इत्यादि पर्वदिनों में अथवा जब धनहोय उसी समय यह दान करना चाहिये धर्मके समय तो यही बिचारै कि मृत्यु ने हमारे केश पकड़ रक्खेहैं जो कुछ करलेवैं वहीहमाराहै जब श्रद्धाहोय

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by eGangotri Foundation USA

उसी समय दान आदि करने चहियें श्रद्धासेही फल होता है अपने घरके अथवा देवालय के अंगनमें सोलह हाथ लंबाचौंड़ा औ पताका तोरण आदि से अलंकृत मंडप बनाय उसके मध्यमें सात हाथ लंबी चौंड़ी औ एक हाथऊंची चतुरस्त्रवेदीबनायवेदी के मध्य में बिधिपूर्वक तुलाकोस्थापन करै दोहाथ भूमिमें गाड़ै औ चार हाथस्तंभ ऊपर रक्खै चंदन खदिर बिल्व शाकइंगुदी तिंदुक देवदारु औ श्रीपर्ण इन आठ वृक्षों मेंसे किसी के काष्ठ का स्तंभ बनावै अथवा और किसी दृढ़काष्ठवाले याज्ञिक वृक्षका स्तंभ रचै उनकेऊपर उसी काष्ठका चार हाथलंबा तिर्यक्काष्ठ रक्खै उसमें छियानबे अंगुललंबे लोह पाश लगावै औ मध्यमें तुला पुरुष बनाय रत्न बस्त्र चंदन आदि से तुला को भूषित कर स्तंभों को भी पुष्प माला औ वस्त्रों करके अलंकृत करै तीन २ मेखला औ यानि करके युक्त हस्त प्रमाण चार कुंड बनावै ईशान कोणमेंहस्तप्रमाण वेदी बनायउसकेऊपर ग्रह औ दिक्पालोंका पूजनकरै औ गंधपुष्प अक्षत फलबस्त्र आदिकरके शिवजीका पूजनकरै क्षीरवृक्ष के तोरण बनावै मंडपकेचारोंद्वारों में पुष्पमाला रत्न पल्लव आदिसे शोभित कुंभ सप्तधान्य के ऊपर स्थापन करै ऋग्वेद आदि जाननेहारे ब्राह्मणोंको क्रमसेपूर्बादि दिशाओंके कुंड पर हवन के लिये नियुक्त करै कईऋषीश्वरोंका मतहै कि सोलह ऋत्विक् हवन के लिये नियुक्त करने चहियें प्रत्येकऋत्विक् को दो २ ताम्रपात्र औ एक २ आसन देवै तिल घृत समिधा बिष्टर पुष्प कुश स्रुक् स्रुव आदिसब हवन कीसामग्री एकत्र करै लोकपालोंकेरंग की पताका दिशाओं में लगावै औ बीचमें पंचरंग का महाध्वज खड़ाकरै इस प्रकार सब सामग्री संपादन कर ब्राह्मण वर्द्धकी अर्थात् बढ़ई औ कारीगरका वस्त्र भूषण आदिसे सत्कार करै पीछे पूर्वदिनमें यजमान स्नान

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कर शुक्लवस्त्र पहिन दिक्पालों को बलि देवै उस समय अनेक प्रकार के शंख तूर्य आदि बाजे बजैं औ वेदध्वनि होय अब हम बलि मंत्र कहतेहैं (एह्यहिसर्वामरसिद्धसाध्यैरभिष्टुतोबज्रधरामरेश। गंधर्वयक्षाप्सरसांगणेनरक्षाध्वरंनोभगवन्नमस्ते)ओंइन्द्रायनमः(एह्यहिसर्वामरहव्यवाहमुनिप्रवीरैरभितोभियुष्टातेजोवतांलोकगणेनसार्द्धममाध्वरंरक्षकृतेनमस्ते) ओंअग्नयेनमः(एह्यहिवैवस्वतधर्मराजसर्वामरैरर्चितदिव्यमूर्ते। शुभाशुभानांचकृतामधीशशिवायनःपाहिमखंनमस्ते) ओंयमायनमः(एह्येहिरक्षोगणनायकत्वंविशालवेतालपिशाचसंघैः। ममाध्वरंपाहिपिशाचनाथलोकेश्वरस्त्वंभगवन्नमस्ते) ओंनिर्ऋतयेनमः(एह्यहियादोगणवारिधीनांगणेनपर्जन्यसहाप्सरोभिःविद्याधरेंद्रामरगीयमानपाहित्वमस्मान्भगवन्नमस्ते)ओंवरुणायनमः(एह्येहिवायोममरक्षणाय मृगाधिरूढ़ः सहसिद्धसंघैः प्राणाधिपः कृष्णगतेःसहायोगृहाण पूजांभगवन्नमस्ते)ओंवायवेनमः (एह्यहियक्षाधिपराजराजसुयक्षरक्षोगणपूज्यमान धनादिनाथोनरवाहनस्त्वंगृहाणपूजांभगवन्नमस्ते)ओंकुबेरायनमः(एह्यहिगंगाधरभूतनाथसुरासुरैः पूजितपादपद्मदेवेशदक्षाध्वरनाशकारिन्रक्षाध्वरंनोभगवन्नमस्ते)ओंईशानायनमः(एह्यहिपातालधराहिनाथनागांगनाकिन्नरगीयमानारक्षोनरेंद्रामरलोकनाथ नागेशरक्षाध्वरमस्मदीयम्) ओंअनंतायनमः) एह्यहिविश्वाधिपतेमुनींद्र लोकेनसार्द्धंपितृदेवताभिः। विभोभवत्वंसततंशिवायपितामहंत्वांसततंनतोऽस्मि) ओंब्रह्मणेनमः(त्रैलोक्येयानिभूतानिस्थावराणिचराणिच।ब्रह्मविष्णुशिवैःसार्द्धंरक्षांकुर्वंतुतानिमे। देवदानवगंधर्वायक्षराक्षसपन्नगाः। ऋषयोमुनयोगावोदेवमातरएवच। सर्वेममाध्वरेरक्षांप्रकुर्वंतुमुदान्विताः) इनमंत्रों से सबदेवताओं का औ दिक्पालों का पूजनकर बलिदेवै कटक कुंडल कंठभूषण अंगुलीयक औ अनेक प्रकार के

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

विचित्र वस्त्र ब्राह्मणोंको देवै औ ब्राह्मणों से द्विगुण वस्त्र भूषण आदि करके गुरुका पूजन करै फिर ब्राह्मण आधार औ आज्य भागकरके प्रणवादि स्वाहांतनाम मंत्रोंसेहवनकरैं यहां जोदेवता स्थापन कियेहोयँ उनके नामसे औ ग्रहलोकपाल बनस्पति ब्रह्मा विष्णु शिव आदिके नामसे होमकरैं होमके अंतमें अनेक प्रकारके मंगल शब्दहोयँ औ शुक्लबस्त्र पहिन तुलाकी तीन प्रदक्षिणाकर यजमान पुष्पांजलि लेकर (नमस्तेसर्वदेवानां शक्तिस्त्वंशक्तिमास्थिता। साक्षीभूताजगद्धात्री निर्मिताविश्वयोनिना। एकतःसर्वसत्यानि तथानृतशतानिच। धर्माधर्मकृतांमध्ये स्थापितासिजगद्धिते। त्वंतुलेसर्वभूतानांप्रमाणमिहकीर्तिता।मांतोलयंतीसंसारादुर्द्धरस्वनमोस्तुते। योसौतत्त्वाधिपोदेवःपुरुषःपंचविंशकःसएषोधिष्ठितोदेवोत्वयितस्मान्नमोनमः।नमोनमस्तेगोविंद तुलापुरुषसंज्ञक। त्वंहरेतारयस्वास्मानस्मात्संसारकर्दमात्) ये मंत्र पढ़ पुष्पांजलि देवै पीछे पुण्यकाल के बीच परमात्माकोप्रणामकर भूषण वस्त्र आदिसेअलंकृतहो खड्ग कवच ढालआदि धारण कर तुला के ऊपर चढ़ै औ दूसरे ओर अन्न दधि सुवर्ण आदि चढ़ावे इतना तुला द्रव्य चढ़ावै कि वह पलड़ा भूमि पर टिकजाय क्षणमात्र बैठ (नमस्तेसर्वभूतानांसाक्षिभूतेसनातनि पितामहेनदेवित्वंनिर्मितापरमेष्ठिना।त्वयाधृतंजगत्सर्वंसहस्थावरजंगमम्। सर्वभूतात्मभूतस्थे नमस्तेविश्वधारिणि) ये मंत्र पढ़ै पीछे तुलासे उतर आधा तुलाद्रव्य गुरुको औ चतुर्थांश ऋत्विजोंको देकर शेष चतुर्थांश दीन अनाथ औ ब्राह्मणोंको बांट देवै तुलाद्रव्यको बहुतकालघरमेंनरक्खै घरमें रखनेसे शोकभयऔ व्याधि होतीहैं इसी विधानसे चांदी औ कर्पूरकी भी तुलाकरते हैं सौभाग्यकीइच्छावाली स्त्री केसर लवणऔगुड़की तुलाकरती हैं इसविधिसे अन्न आदि करके जो स्त्री पुरुष तुला दान करैं वे

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

उत्तम अप्सराओंकर के युक्तगंधर्व नगरके समानअनेक पुष्पफल युक्तवृक्षोंसेभूषित शय्याआसनपताकाघंटाआदिसे अलंकृत सब ऋतुओंमें सुखदेनेहारे जिसमेंमोतियोंकीझालर लटकती हैं ऐसे मनोहर विमानमें बैठ सूर्यलोकको जाते हैं वहां एक कल्प सुख भोगकर विष्णुलोक विश्वेदेवोंके लोक इन्द्रलोक धर्मराजलोक वरुणलोककुबेरलोक आदिमें करोड़ों कल्प निवास कर मनुष्यलोकमें जन्मले बड़ा धर्मात्मा दानी औ शत्रुओं का क्षय करनेहारा राजा होता है जो इस दान माहात्म्य को भक्ति से श्रवण करै वह भी त्रिविधपाप से छुटता है ब्रह्मा विष्णु औ शिव से उत्तम कोई पूजनीय देवता नहीं अश्वमेध के समान यज्ञ नहीं गङ्गा सम तीर्थ नहीं औ तुला पुरुषके तुल्य दान नहींहै॥

एकसौ पचपनवां अध्याय॥

राजा युधिष्ठिर कहते हैं कि हे श्रीकृष्णचंद्र कोई और भी ऐसादान अथवा व्रत कहैं जिसके करने से आयुष्यश औ ऐश्वर्य की वृद्धिहोय यह राजाका बचन सुन श्रीकृष्णभगवान् कहने लगे कि हे महाराज लोकोंके हितकेलिये हम वह उपाय कहते हैं कि जिसके करनेसे हमारे समान मनुष्य होजायँ व्रतउपवास तीर्थयात्रा महादान यज्ञ वेदाध्ययन आदि से विष्णुलोक प्राप्त होता है जो देवताओं को भी दुर्लभ है जो पुरुष गो ब्राह्मण के निमित्त प्राण त्यागै प्रयागमें अनशन व्रतकरै अथवा शिवाराधनकरै वह ब्रह्मलोकको जाताहै यह सनातनी श्रुतिहै अबहम आप के स्नेहसे हिरण्यगर्भनामक दानका विधान कहतेहैंजिस के करनेसे इन कर्मोंके समान फलप्राप्तहोय अग्निकासंतान सुवर्ण है सब धातुओंमें श्रेष्ठ औपवित्रहै उसीकापर्यायनामहिरण्यहै जो पुरुष भक्तिसे ब्राह्मण को सवर्ण देवै वह हमारे तुल्य

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

होता है अयन विषुव ग्रहण व्यतीपात कार्त्ति की पूर्णिमा जन्म नक्षत्र ग्रह पीड़ा दुःस्वप्न दर्शन आदि कालों में प्रयाग पुष्कर नैमिष अर्बुदाचल गंगा यमुना गङ्गासागरसंगम और भी पुण्य नदियोंके तटपर यह दान देनाचहिये अथवा घर देवालय बाग तड़ाक आदि पवित्रस्थल में यह दान करै प्रथम भूमि शोधनकर बारह हाथ लंबा चौड़ा मंडप बनावै उसको स्तंभपताका आदि से अलंकृतकर मध्यमें पांचहाथ की वेदी बनाय मध्यमें हिरण्यगर्भ रचै अब हम उसका विधान कहते हैं ब्राह्मणों से स्वस्तिवाचन कराय वस्त्र भूषण आदि से शिल्पी अर्थात् कारीगर का पूजनकर कर्मका आरम्भकरै उत्तम सुवर्णसे हिरण्यगर्भ बनावै चौंसठ अंगुल उसकादैर्घ्य कहाहै मूल में उसका विस्तारत्रिभाग हीन करना चहिये मध्यमें बर्तुलकर्णिका दशपत्र औ ग्रंथिबर्जित नाल बनाय नीचे ताम्रका पीठ रचै उसके समीप सुवर्णका कमण्डलु छत्रजड़ाऊपादुकाआदि सबउपकरण स्थापनकरै फिरवेदघोषकरतेहुयेब्राह्मण उसको मण्डपमें लाकर वेदीमें एक द्रोण तिलोंके ऊपर स्थापन करैं पीछे सबको कुंकुमसे लिप्तकर रेशमी वस्त्रोंसेढक पुष्पमालाओंसे अलंकृतकर धूप दीप आदि से पूजनकर (भूलोकप्रमुखालोकास्तवगर्भेव्यवस्थिताः। ब्रह्मादयस्तथादेवानमस्तेभुवनोद्भवानमस्तेभुवनाधारनमोबैभुवनेश्वरनमोहिरण्यगर्भायगर्भेयस्यपितामहः) यहमंत्रपढ़पूजनकर एक रात्रि उसका अधिवासन करै वेदी के चारों ओर चतुरस्र चार कुंड बनावै जिनमें चार वेद जाननेहारे सुशील ब्राह्मण क्रमसे मौन पूर्वक हवनकरैंब्रह्मस्थानमें भी उतनेही ब्राह्मण नियुक्त करै वेभी उत्तम भूषण औ नये वस्त्र पहिनेहोयँ गन्ध धूप आदि सहित दो२ ताम्रपात्र सबको देवै वेदी के ईशान कोण में ग्रह वेदी बनाय उसके ऊपर ग्रह दिक्पाल औ ब्रह्मा विष्णु महेश्वर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

की सुवर्णकी मूर्ति स्थापनकर गंध पुष्प वस्त्र आदि से उनका पूजन कर पताका तोरण आदिसे मंडपको अलंकृत करै औ द्वरों में रत्न युक्त दो २ कलश स्थापनकरै तुला दानोक्त रीतिसेदिक्पाल वलिदेवै पलाश की समिधा हवनके लिये उत्तमहोतीहैं तिल गौके घृत औ समिधाओंकरके व्याहृतियोंसेऔ नाममंत्रों से दशहजार अथवा पांच हजार आहुति देवै फिरपर्वके समय यजमान स्नानकर श्वेत वस्त्र पहिन हिरण्यगर्भ का पूजनकरै औ(नमोहिरण्यगर्भायविश्वगर्भायवैनमः। चराचरस्यजगतोगृह भूतायवैनमः। मात्राहंजनिपूर्वेणमर्त्यधर्मासुरोत्तमः। तद्गर्भसंभवानद्योदेवदेव्योभवाम्यहम्) यह मंत्र पढ़ भक्तिसे उसकीप्रदक्षिणा करै बामहस्त में सुवर्ण का धर्म राज औ दहिने में सूर्य लेकर दोनों जानुओं के बीच शिरकरके हिरण्य गर्भ को उठावै पीछे ब्राह्मण गर्भाधान पुंसवन सीमंतोन्नयन औ जातकर्म संस्कार हिरण्यगर्भ का करैं इतनाकाल यजमान किसीका मुख न देखै फिर उठ प्रदक्षिणाकर वेदघोष पूर्वक हिरण्य गर्भको स्नानकरावैं सुवर्ण चांदी ताम्र अथवा मृत्तिका के आठ कलश दही अक्षत पुष्प पल्लव आदिसे भूषित लेकर (देवस्यत्वा) इत्यादि मंत्रसे आठब्राह्मण उसका अभिषेककरैं औ (आद्यजात स्यतेङ्गानिअभिषिंच्यामहेवयम्। दिव्येनान्नेनचायुष्मन्चिरजीवीभवेतः) यह मंत्र पढ़ैं फिर यजमानसंकल्प पूर्वक वहहिरण्यगर्भ ब्राह्मणोंको देवै यज्ञके सब उपकरण गुरुके अर्पण करै पादुका छत्र जूता वस्त्र आसन भोजन आदिसब सभासदब्राह्मणों को देवै दीन अंध कृपण आदिको अनिवारितभोजन देवै इस विधिसे जो यह दानकरै वह अपने कुलका उद्धारकरताहै औ आपभी स्वर्गको जाताहै भक्तिसे इसदानकाकरनेहारापुरुष पांच योजन लंबे चौड़े बापी कूप तड़ाग बाग सरोवर प्रसाद

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

आदि से शोभित सैकड़ों उत्तम नारियों करकेसेवित वेणुवीणा मृदंग आदिके मनोहर शब्दोंसे पूरित मणिमय भूमि का औ जड़ाऊ वेदियों करकेअलंकृतहजारस्तंभ औ विचित्रपताकाओं करके भूषित सूर्यके समान प्रकाशवान् विश्वकर्मा के बनाये बिमान में बिराजमान हो विद्याधरों कर के सेवित स्वर्ग्को जाता है वहां सौ मन्वंतर पर्यंत इन्द्रके समान सुख भोगकर भूलोक में जन्मले पराक्रमी धार्मिकसत्यवादी ब्रह्मण्यगुरुभक्त औ शत्रुओं को जीतनेहारा दश जन्मतक संपूर्ण जम्बूद्वीप का राजाहोता है जो पुरुष इस विधानको श्रवणकरै वह सौ वर्ष से भी अधिक स्वर्ग सुख भोगता है इस विधि हिरण्य गर्भ बनाय सब संस्कार कर उस के बीच से निकल ब्राह्मण को भक्ति पूर्वक देवै तो मार्कंडेयकी भांति दिव्य देह धार स्वर्ग में निवास करताहै॥

एकसौछप्पनवां अध्याय॥

श्रीकृष्णभगवान् कहते हैं कि हेमहाराजअबहम अगस्त्यजी का कहा ब्रह्मांडदान कहतेहैं जिस दान के करनेसे तीनप्रकार के पाप निवृत्त होते हैं औ धन यशआयुष् मंगल औ सद्गतिकी प्राप्ति होतीहै आप प्रीतिपूर्वक श्रवण कीजिये एक वितस्ति से सौ अंगुल पर्यंत लंबा चौड़ा यथाशक्ति सुवर्णका ब्रह्मांड बनावै उसमें देवता असुर मनुष्य गंधर्व नाग राक्षसनदी समुद्रपर्वत सरोवर बिमान आदि बनावै औ बीचमें मेरुपर्वत जिसके तीनों शिखरोंपर ब्रह्मा विष्णु औ शिवकी पुरीरचै आठों दिग्गज बनावै औ चौदह भुवन कल्पना करै दो कलशों करके युक्त औ संपुटाकार ब्रह्मांड बीसपल सुवर्णसेअधिकसुवर्णकरके बनवावै फिरअयन विषुव ग्रहणआदि कालोंमें पुष्पमंडपिकाबनायउस

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar. Collection digitized by eGangotri Foundation USA

में द्रोण भर तिलके ऊपरब्रह्मांडको स्थापनकरै औ केसरचंदन से चर्चितकर दो वस्त्रोंसे ढक गन्ध धूपआदिसेउसकापूजनकरै उसके चारों ओर पूर्ण कलश स्थापन करै अठारह प्रकार के धान्य एक २ द्रोण वहां रक्खै खड़ाऊं जूता छतरी पात्र दर्पण भोजन आदि सब सामग्री भी उसके समीप स्थापन करै इस विधि घरमें अथवा मंडप में ब्रह्मांड स्थापनकर हस्त प्रमाण चतुरस्र कुंड बनावै उसमें चारों वेद जानने हारे चार ब्राह्मण वस्त्र भूषण आदिसे अलंकृत होकर हवनकरैं औ उपाध्याय तथा राजा का पुरोहित भी हवन करैं ग्रहयज्ञ विधान से हवन करैं विष्णु शिव ब्रह्मा आदि देवताओं के नाम मंत्रों से तिलों की आहुति देकर दशहजार आहुति व्याहृतियोंकरकेदेवैं औ ब्राह्मण रुद्रपाठ भी करैं फिर यजमान स्नानकर श्वेत वस्त्र पहिन सब उपचारों से ब्रह्मांड का पूजनकर पुष्पांजलि ले (नमोजगत्प्रतिष्ठाय विश्वधाम्नेनमोस्तुते। वाङ्मनोतीतरूपाय ब्रह्मांड शुभकृद्भव। ब्रह्माण्डोदरवर्तीनि यानिभूतानिकानिचित्। तानि सर्वाणिमेतुष्टिंप्रयच्छन्त्वतुलांसदा। ब्रह्माविष्णुश्चरुद्रश्च लोकपालास्तथाग्रहाःनक्षत्राणितथानागाऋषयोमरुतस्तथा। सर्वेभवंतुसुप्रीताः सप्तजन्मांतराणिमे) येमंत्रपढ़ पुष्पांजलिदेवै औ दक्षिणा सहित वह ब्रह्मांड ब्राह्मणके अर्पण करै॥

सत्ययुगके बीच बड़ा ऐश्वर्यवान् औ दशहजार हाथियों का बल धारण करनेहारा सुद्युम्न नाम राजा हुआ वह तीस हजार वर्ष निष्कंटक राज्य कर विरक्त हो बन में गया वहां बहुतकाल उग्रतप कर अंतसमय दिव्य विमान पर आरूढ़ हो इंद्रादिलोकों को उल्लंघन करता हुआ ब्रह्मलोक में प्राप्तहुआ ब्रह्माजी ने भी राजाका बड़ा सत्कार किया औआसनपरबैठाया राजा भी सुखपूर्वक वहां निवास करनेलगा एकदिन राजा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ने ब्रह्माजी से पूछा कि महाराज मैंने कौनऐसा शुभकर्मकिया कि जो आप के समीप निवास पाया यह आप कृपा कर मुझे बतावैं तब ब्रह्माजी कहने लगे कि हे राजन् तुमने सुवर्ण का ब्रह्मांड दानकर ब्राह्मण को दिया उसदान के प्रभाव से तुम हमारे लोकमें प्राप्तभये ब्रह्मांड दान बिना और किसीप्रकार से हमारा लोकनहो प्राप्तहोता अब तुम कल्पांतमें हमारेसाथ मुक्तिको प्राप्तहोगे धन यश आयुष् औ सर्व प्रकारके सुख देने हारा ब्रह्मांड दान जिसने किया उसने सब दान किये॥

एकसौ सत्तावनवां अध्याय॥

राजा युधिष्ठिर कहते हैं कि हेश्रीकृष्ण चन्द्र अबआपभुवन प्रतिष्ठा का विधानकहैं यह राजाका वचन सुन श्रीकृष्णभगवान् कहनेलगे कि हे महाराज लोकों के उपकार के लिये आपने बहुतउत्तम बात पूछी अब हमपरमरहस्य भुवनप्रतिष्ठा का बिधान संक्षेप से कहते हैं भुवन प्रतिष्ठा करनेसे देवअसुर नाग गन्धर्व यक्ष राक्षस प्रेत पिशाच भूतआदि सबकी प्रतिष्ठा हो जातीहै पहिले उत्तम मुहूर्त्तदेख सातहाथ लंबा चौड़ा दृढ़ स्वच्छ श्वेतवर्ण पट बनवाय उस में चित्रकार से सब भुवन लिखवावै तरुण आरोग्यरूपवान् औ चतुर चित्रकारकोबुलाय बस्त्र भूषण लेपन पुष्प आदि से उसका पूजनकर चित्रकर्म में नियुक्त करै उस समय सब ब्राह्मण औ आचार्यकाभी वस्त्र भूषण आदिसे अर्चनकरै ब्राह्मण वेदध्वनिऔ पुण्याह बाचनकरैं औ शंख भेरी आदि के अनेक मंगल शब्द होयँ इस विधि से आरंभकर पुराणोक्त विधिसे सब भुवन लिखवावै मध्य में जंबूद्वीप उसके मध्य में मेरु पर्वत जिसके तीनों शिखरों पर ब्रह्मा विष्णु शिवकी पुरी औ दिशाओंमें अष्ट दिक्पाल पुरी

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

लिखवावै सात द्वीपों करके युक्त पृथिवी सात कुलाचल सात समुद्र नदीनद सरोवर सप्तपाताल भूभुव आदि सात लोक ब्रह्मादि देवताओं के लोक ध्रुवमार्ग ग्रह औ तारागणों करके वेष्टित सूर्यदेव दानव गंधर्व यक्ष राक्षस नाग ऋषि मुनिगौवेद माता गरुड़ आदि पक्षी औ ऐरावत आदि आठ दिग्गजउसमें लिखै औ उसको जल तेज वायु आकाश अहंकार महत्तत्व अव्यक्त मन तमोगुण रजोगुण सत्वगुण करके उत्तरोत्तर वेष्टित कल्पनाकर सबको पुरुष करके भीतर बाहिर आवृत मानै इस भांति चित्रपट बनवावै फिर अति मनोहर मंडप बनाय उसके मध्यमें उसको स्थापन करै औ चतुरस्र हस्तप्रमाण चार कुंड बनवाय उन में दो २ ब्राह्मणों को हवन के लिये नियुक्त करै ब्राह्मण भी वस्त्र भूषणआदिसे अलंकृत हो चित्र पटस्थ देवताओं के नाम मंत्रोंसे हवन करैं यजमान भी स्नान कर श्वेत वस्त्र पहिन आचार्यसहितगंधपुष्पादि करके पटका पूजनकर (ब्रह्मांडोदरवर्त्तीनिभुवनानिचतुर्दश। तानिसन्निहितान्यत्र पूजितानिभवंतुमेब्रह्माविष्णुस्तथारुद्रोह्यादित्यावसवस्तथा। पूजिता सुप्रतिष्ठाश्चभवंतुसततंमम) येमंत्रपढ़ै औ प्रदक्षिणाकर अनेक प्रकारके भक्ष्य भोज्य नैवेद्य लगायरात्रिको जागरण करै अनेक प्रकार के बाजे बजैं वेदध्वनि होय गीत नृत्यआदि करके बड़ा उत्सवकरावैप्रभातहोतेहीस्नानकरवस्त्रभूषणपहिन पूर्वोक्तरीति से चित्र पटका पूजनकर सौगौ ऋत्विजोंको देवै फिर सुंदरदृढ़ रथलाकर पताका ध्वजआदिसे उसको अलंकृतकर दो हाथी उस में जोतै हाथी नहोयँ तो घोड़ेही रथमें लगावैउसपरचित्रपटको रख हजारमोहर ब्राह्मणों को बांट देवालयकेबीचचित्रपटको पहुंचावै वहां उसको स्थापनकर महा पूजाकरै औबड़ा उत्सव करै उत्तमवस्त्र घंटा ध्वज चामर आदि उपकरण चढ़ावै

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by eGangotri

गुरु औ ब्राह्मणोंकोयथाशक्तिदक्षिणादेवै दीन अंध कृपणआदि को अनिवारित भोजन दिलावै औ अपनेमित्र स्वजन बंधुआदि को भी भोजन करावै इस विधान से जो पुरुष अथवा स्त्री सार्व लौकिकी प्रतिष्ठा करै उसने सचराचर त्रैलोक्य स्थापनकिया औ अपने कुलका उद्धार भी किया जबतक वह चित्रपट वहां स्थापित रहै तबतक उसकी अक्षयकीर्त्ति त्रैलोक्य में फैलती है औ जितने दिन लोकमें कीर्त्ति रहै उतने हज़ार वर्ष भुवन प्रतिष्ठा करनेहारा स्वर्गमें निवासकरता है गन्धर्व औ अप्सरा उसकी सेवा में रहते हैं बहुत काल स्वर्ग सुखभोग पुण्यक्षय होनेपर भूमिपर जन्मले धर्मात्मा दीर्घायु ऐश्वर्य्यवान् प्रतापी औ पुत्र पौत्र आदि करके युक्त दश जन्मपर्य्यंत राजा होताहै पूर्वकाल में बड़ा प्रतापी रघुनाम चक्रवर्त्ती राजाहुआहै जिस ने सब भूमिको जीता औ दैत्योंको मार स्वर्गमें इंद्रका राज्य जमाया एक दिन वह राजा अपनी सभामें बैठाथा उसी अवसर मेंब्रह्माजी के पुत्र पुलस्त्यमुनि वेद वेदांग के पारगामी अपने शिष्योंसहित वहांआये राजाने उन को बड़ी भक्ति से पाद्यअर्घ्य मधुपर्क आदि से पूजनकर आसनपर बैठाया औ बड़े विनय से यह पूछा किमहाराजइतनाऐश्वर्यऐसाअव्याहत तेजबल पुष्टि धनधान्य पुत्र पौत्रआदि सब पदार्थ मैंने किसदान तप अथवा नियमके प्रभाव से पाये यह आप कृपा करबर्णनकरैं आप त्रिकालज्ञहैं यह राजाकावचनसुन पुलस्त्य मुनि कहने लगे किहे राजन् सात जन्म पहिले बड़े धनाढ्य पुत्रभृत्य आदि सहितसत्यवादी औधर्मात्मा वैश्यतुमथे तुमने पुराणश्रवणकियाऔ अनेक दानदिये औभुवन प्रतिष्ठाकरीउसी के प्रभावसे तुम सातजन्म से राजा होते आते हो औ आगेभी सात जन्म राजाहोगे औ अंत में मुक्ति पावोगे जो तुमने पूछा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वह सब हमने कहा जो पुरुष अथवा स्त्री भुवनप्रतिष्ठा करैं वे कृतकृत्य होते हैं इतना कह पुलस्त्य मुनि अपने धाम को गये हे महाराज धर्मकी वृद्धि अभीष्टकी सिद्धि औ पापका क्षय इस भुवनप्रतिष्ठा से होता है ऐसा कोई कार्य नहीं जो इस भुवन प्रतिष्ठा के करनेसे सिद्ध न होय इसलिये यह अवश्य करनी चहिये ॥

एकसौअट्ठावनवां अध्याय ॥

राजायुधिष्ठिर कहते हैं कि हे श्रीकृष्णचन्द्र और तो सब दानोंका विधान आपके मुख से श्रवण किया अब आप नक्षत्रों का दान कल्प वर्णन कीजिये यह राजा का वचन सुन श्री कृष्णभगवान् कहने लगे कि हे महाराज एक समय देवर्षि नारद द्वारकामें आयेथे उनको हमारी माता देवकीने यहीबात पूछी उस समय नारदजी ने जो नक्षत्रदान कहा वह हमवर्णन करते हैं कृत्तिका नक्षत्रमें घृत पायस करके साधु ब्राह्मणों को संतुष्ट करै तो उत्तम लोक पावे रोहिणी नक्षत्र में घृत दुग्ध औ रत्न अनृण होनेके लिये ब्राह्मणको देवै मृगशिरानक्षत्र में सब-त्सा दूधदेनेहारी गौ ब्राह्मणको देवै तो विमान में बैठ स्वर्ग को जाय आर्द्रानक्षत्रमें तिलोंसहित कृसर देनेसे मनुष्य सब प्रकार के संकटों से छुटता है पुनर्वसुनक्षत्र में घृतपक्व अपूप ब्राह्मण को देवै तो उत्तम कुलमें जन्म पाकर यश लक्ष्मी औ रूप पावै पुष्यनक्षत्र में सुवर्ण देवै तो कृतकृत्यहोकर दिव्यलोक में चंद्रमा की भांति विराजमान होय आश्लेषानक्षत्रमें ब्राह्मणों को चांदी देवै तो निर्भय औ शास्त्रवेत्ताहोय मघानक्षत्र में तिलपूर्णशराव अर्थात् सकोरे देवै तो पशुवान् औ पुत्रवान् होय पूर्वाफाल्गुनी में खंडका पात्र ब्राह्मणकोदेवैतोप यलोकोंमें जाय निवास करै

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

उत्तराफाल्गुनी में सुवर्ण का कमल देवै तो सब बाधाओं से छुट सूर्यलोक को जाता है हस्तनक्षत्र में सुवर्ण का हाथीबनाय ब्राह्मणको देवैतो दिव्य हस्ती पर आरूढ़ हो इन्द्रलोकको जाय चित्रानक्षत्र में उत्तम वृषभ औ अनेक प्रकारके सुगन्धद्रव्यदेवै तो अप्सराओं के साथ नन्दन बनमें बिहार करै स्वाती में जो पदार्थ अपने को अतिप्रिय होंय उनका दान करै तो बहुत यश औ अंतमें सद्गति पावै विशाखामें उत्तम वृषों करके युक्त औ धान्य वस्त्र सहित शकटदान करै तो सूर्य भगवान् संतुष्ट होते हैं औ दान करनेहारा पुरुष सब पापों से छुट उत्तमगति पाता है अनुराधानक्षत्र में कंबल औ वस्त्र ब्राह्मणों को देवै तो दिव्य सौबर्ष से भी अधिक स्वर्गमें देवताओं के समीप निवास करता है ज्येष्ठा नक्षत्रमें फल औ शाक ब्राह्मण को देवै तो अभीष्टगति पावै मूलनक्षत्र में ब्राह्मणों को फल मूल आदि देवै तो अपने पितरोंको प्रसन्न करै औ उत्तम गतिपावै पूर्वाषाढ़ा में दधिपात्र कुलीन औ वेदवेत्ता ब्राह्मणोंको देवै तो पुत्र पौत्र पशु धन औ ऐश्वर्य पावै उत्तराषाढ़ामें घृत शहद औ फाणित अर्थात् बताशे ब्राह्मणको देवै तो सबकाम पावै अभिजित् में घृत मधु सहित दुग्ध देवै तो स्वर्ग में निवास करै श्रवण नक्षत्र में पुस्तक दान करै तो विमान में बैठ अपनी इच्छा से सब लोकों में बिचरै धनिष्ठानक्षत्र में गो युग देवै तो अनेकजन्मोंतक सुखीहोय शतभिषा में अगरु औ चंदन देवै तो अप्सराओं के लोक में जाय पूर्वाभाद्रपदा में राजमाषदेवै तो सब प्रकारके भक्ष्यभोज्यपावै औ जन्मांतर में सुखीहोय उत्तराभाद्रपदा में वस्त्र सहित जल पात्र ब्राह्मण को देवै तो पितरों को संतुष्ट करै औ सद्गति पावै कांस्यदोहन युक्त धेनु रेवतीनक्षत्र में ब्राह्मण को देवै तो उस के सब मनोरथ सिद्ध होंय औ जन्मांतरमेंसद्गति पावै अश्विनी

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नक्षत्र में उत्तम अश्वों करके युक्त रथ ब्राह्मण को देवै तो हाथी घोड़े रथ आदि पावै औ तेजस्वी होय भरणी नक्षत्र में ब्राह्मण को तिलधेनु देवै तो उत्तमगौ यश औसद्गतिपावै इतनाकहश्री कृष्णभगवान्ने कहाकिहे महाराज यहनारदजीका कहानक्षत्र-कल्प आपको कथन किया इसके करने से सब पाप औ उपद्रव निवृत्त होते हैं दानमें वार का औ काल का कुछ नियम नहीं श्रद्धाही मुख्य है सब वेदों को देख यह दान बिधान ब्रह्माजी के पुत्र नारद ने कहाहै जो इस दान को देवै वह सबदानों का फल पाता है ॥

एकसौउनसठवांअध्याय॥

श्रीकृष्णचंद्र कहतेहैं कि हे महाराज सबपाप औ विघ्नहर-नेहारे तिथिदान का बिधान हम कहतेहैं जिस दानके करने से मानस वाचिक औ कायिक पाप उसी क्षण कटजातेहैं श्रावण कार्तिक बैशाख अथवा फाल्गुन के शुक्लपक्ष के आरंभ से यह दान देना चहिये वृत्त श्रद्धा सहाय औ सत्पात्रकी प्राप्ति जब होय वही उत्तम दानकाल है तीर्थ देवालय गोष्ठ अथवा घरमें ही श्रद्धा पूर्वक दान देवै तो अनंत फलपावै प्रतिपदा के दिन ब्राह्मण औ ब्रह्माका पूजन कर सुवर्ण का अष्टदल कमल बन-वाय सुगंध घृतसे पूर्ण ताम्रपात्र पर उसको रख पुष्प धूपआदि से उसका पूजन कर ब्राह्मणको देवै तो अभीष्टलक्ष्मी पावै औ निष्काम हो यह दान करै तो मुक्तिभागी होय द्वितीयाके दिन सुवर्ण की अग्नि की प्रतिमा बनाय गुड़घृतसे पूरित ताम्रपात्र में रक्खै औ उसपात्र को जलपूर्ण कलश के ऊपर स्थापन करै फिर व्याहृतियों से अष्टोत्तरशत आहुति घृतऔ तिलों करके दे पूर्णाहुतिदेवै औ वस्त्रमाला अनेक प्रकार के भक्ष्य भोज्यों करके

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

उसमूर्तिका पूजन कर ब्राह्मणको देवै औ (वह्निर्मेप्रीयताम्) यह बाक्य उच्चारण करै तो जन्मभरकिये पापोंसे छुट वह्नि-लोक में निवास करै यह नारद मुनिने कहाहै तृतीया के दिन सुवर्ण की गोधाबनाय ताम्रपात्र में रख लवणके ऊपर स्थापन करै औ दो रक्त वस्त्रोंसे उसको आच्छादन कर जीरा कुटकीके टुकड़े औ गुड़ उसके पास रख गंध पुष्प धूपदीप नैवेद्य आदि से उसका पूजन कर ब्राह्मणको देवै तो इतना फल होताहैकि जिसका वर्णन नहीं करसकते सुवर्ण के जहां प्रासाद हैं पायस के कर्दम युक्त जहां नदी हैं औ गंधर्ब अप्सरा जहां बसतेहैंउन लोकोंमें वह पुरुष बहुत काल सुख भोगकर मर्त्यलोक में जन्म ले सुरूप सुभग दाता भोगी धनाढ्य औ पुत्र पौत्रयुक्त होताहै औ स्त्रीभी इस दानको करै तो ये सब फल पावे चतुर्थी के दिन सुवर्ण का हस्ती बनाय कुशा सहित द्रोण भर तिलों के ऊपर स्थापन कर वस्त्र पुष्प नैवेद्य आदिसे उसका पूजन कर ब्राह्मण को देवै औ (गणेशःप्रीयताम्) यह बाक्य कहै जो पुरुष यह दानकरै उसके किसी कार्य में बिघ्न नहीं होता औ सात जन्म तक मत्तहस्तियों का स्वामी होता है औ गजेंद्र पर चढ़सबलोक को जीतता है पंचमीके दिन एक कर्षभर सुवर्ण कानागबनाय घृतदुग्ध पूर्णपात्रमें उसको स्थापनकर बिधिपूर्बक पूजन करै औ ब्राह्मण को देकर प्रणाम कर क्षमापनकरावै यहदान नागों के उपद्रव को दूर करता है औ दोनों लोकों में सुख देताहै औ सर्पके काटनेसे जो पुरुष मृतहुआ होय उसके उद्धार के लिये शिव जी ने यह प्रायश्चित्त कहा है षष्ठी के दिन मयूर पर चढ़े शक्ति हस्त सुवर्ण माला पहिने ऐसी कार्तिकेय की सुवर्ण की प्रतिमा बनाय द्रोण भर चावलों के ऊपर स्थापन कर सब उपचारों से उसका पूजन कर कुटंबी ब्राह्मण को देवै

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

इसदानका करनेहारा पुरुषबहुत ऐश्वर्य पाय अंतमेंस्वर्गकोजाताहै औ शूद्र इस दानको करैतो जन्मांतरमें ब्राह्मणहोय सप्तमी को सुवर्णकी सूर्यप्रतिमा बनाय सब उपचारों से उसका पूजन कर दक्षिणा सहित ब्राह्मणों को देवै तो गंधर्व संतुष्टहोतेहैं औ वह पुरुष सूर्यलोक में निवास करताहै अष्टमी के दिन धुरंधर वृषको दोश्वेत वस्त्र उढ़ाय उसके गलमें घंटा बांध पूजन करब्राह्मणको देवै औ(वृषध्वजः प्रीयताम्) यहवाक्य उच्चारणकरै औ प्रदक्षिणा कर द्वारतक उसके साथ जाय इसदानके करनेहारेको शिवलोक प्राप्ति होतीहै वृषके स्कंधमें चौदह भुवन निवास करतेहैं इसलिये वृषदान करनेसे चौदह भुवन दान करनेका फल प्राप्त होताहै नवमीके दिन सुवर्णका सिंह बनाय नील वस्त्र से आच्छादित कर दुष्टदैत्यनिवर्हणी भगवतीका स्मरण कर मोती के आठ पानोंसहित उत्तम ब्राह्मण को देवै तो सब उत्तम फल पावै औ वनदुर्ग कांतार आदिमेंचोर व्यालआदि हिंसक जीवों का कभी उसको भय नहीं होता औ अंतसमय सुरासुरों करके पूज्यमान देवीलोक को जाताहै वहां बहुत काल सुख भोग कर पुण्यक्षीण होनेसे मर्त्यलोक में जन्मले धर्मात्मा राजाहोताहै दशमी के दिन शालिके दश पिंडबनाय उनका पूजन कर लवण गुड़ जीरा निष्पाव तिल चावल उड़द दूध दही औ घृत सहित जोपुरुष ब्राह्मणको देवै उसके सब मनोरथ सिद्ध होतेहैं औबहुत कालस्वर्ग सुख भोग उत्तम कुलमें जन्म पाताहै एका दशीकेदिन सुवर्णकी बिश्वेदेवप्रतिमा बनायताम्रपात्रमें रख घृत पूर्णकलशके ऊपर स्थापनकर सब उपचारों से उसका पूजन करै पीछे पौराणिक ब्राह्मणको देवै तोविष्णुलोक पावै द्वादशीकेदिन गौ वृष महिषी अश्व सुवर्ण सप्तधान्य गुड़ पुष्प फल रसघृत औ अनेक प्रकार के रस ये बारह पदार्थ यथाशक्ति एकत्र कर सब को

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by eGangotri Foundation USA

वस्त्र से आच्छादित कर उनका पूजनकरै पीछेसत्पात्रब्राह्मणों को देवै वह पुरुष बहुत कीर्ति औऐश्वर्य पाय अंत में बिष्णु-लोक को जाताहै वहां बहुत काल निवास कर पुण्यक्षय होने सेभूमिपर जन्म ले यज्ञ करनेहारा दानी औ प्रतापी राजा होताहै औ सौ बर्ष जीता है त्रयोदशी के दिन सत्पात्र ब्राह्मण कोस्नान कराय उत्तम वस्त्र पहिनाय गंध पुष्प आदि से अलं-कृत कर उत्तम भोजन करावै औ दक्षिणा देकरप्रेत नाथ रौद्र वैवस्वत महिष वाहन यम आदि धर्म्मराज के नामउच्चारण कर प्रणाम पूर्वक उस को विसर्जन करैइस विधिसे जो पुरुषयम-राज का अर्चन करै वह सब रोगों से छुटताहै औ यम मार्ग में कष्ट नहीं पाता औ पितृलोक में बहुत काल निवास कर मर्त्य-लोकमें जन्मले सुखी औ पुत्रवान् होताहै चतुर्दशी के दिन उत्तम कुंभ सुवर्ण वस्त्र औ घंटा आदि से भूषित वृष कुटुंबी ब्राह्मण को देवैतो शिवलोक कोजाय वहां बहुत काल सुख भोग ती-न सौ जन्म तक आरोग्य धन औ उत्तम कुल में जन्म पाताहै पूर्णमासी के दिन चांदी की चंद्र प्रतिमा बनाय गंध पुष्प नैवे-द्य आदिसे उसका पूजन कर वस्त्र भूषण सहित ब्राह्मण को देवै औ (क्षीरोदार्णवसंभूतगगनांगनदीपक । उमापतिशिरोरत्न शिवनेत्रनमोनम :) यहमंत्रपढ़ै पीछे बिधि पूर्वक वृषोत्सर्ग करै इस दानका करनेहारा प्रलयपर्यंत अप्सराओं के साथबिहार करताहै औ चंद्रमा के समान कांतिमान् होताहै जो पुरुषइस क्रमसेप्रतिपदा आदितिथियोंमेंदानकरै वहब्रह्मलोकबिष्णुलोक आदिमें बहुत काल बिहार कर अंतमें शिवजी के साथ एकता को प्राप्त होता है ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

एकसौसाठवां अध्याय॥

श्रीकृष्णभगवान् कहतेहैं किहेमहाराज अबहमसबपापहरनेहारे पवित्र औ सबदानोंमें उत्तम वराहदानका विधान कहते हैं जो वराहभगवान्ने भूमिके प्रतिकहाहै संक्रांति ग्रहण द्वादशी यज्ञोत्सव बिवाह दुःस्वप्न दर्शन आदि कालोंमें अथवा जब श्रद्धा होय तबही यहदानकरै कुरुक्षेत्र आदितीर्थगंगाआदिनदी गोष्ठ देवालय अथवा अपने घरके अंगनमें यह दान विधिपूर्वक कुटुंबी ब्राह्मणको देवै परंतु वह ब्राह्मण वेद वेदांग जाननेहारा सुशील औ संपूर्णांग होनाचहिये ये देशकाल औ पात्र हमने कहे अब दान बिधान कहतेहैं ईशानकोण में गोबरसेलेपनकर उसपर कुशा बिछाय उसके ऊपर चार द्रोण तिलोंकरकेवराह की मूर्ति कल्पनाकरै जो चारद्रोण का सामर्थ्य न होय तो एक द्रोण अथवा आढ़क अर्थात् चारसेर तिलोंकीही बनावैसुवर्णका उसका मुख चांदीकी दंष्ट्रा बनाय पद्मराग मणिसे भूषित करै सुवर्णकी बनमाला शंख औ चक्रउसकेपासस्थापनकरै सुवर्णकी भूमि बनाय सब धान्य वस्त्र भूषण आदिसे शोभित कर उसकी दंष्ट्राके ऊपर स्थापनकरै चांदीकेखुर औकुशाके रोम बनाय वराह भगवान् को वस्त्रोंसे आच्छादितकरै फिर नवग्रह यज्ञ औ तिलोंसे होम करके (वराहाशेषदुःखानि सर्वपापफलानिच। त्वं मर्दयमहादंष्ट्रभास्वत्कनककुंडल।शंखचक्रासिहस्तायहिरण्यकांतिकायच। दंष्ट्रोद्धृतक्षितिमूतेत्रयीमूर्त्तेनमोनमः) येमंत्रपढ़बिधिपूर्वक पूजनकर प्रदक्षिणा औ नमस्कारकरै पीछे वस्त्र भूषणऔदक्षिणासहितब्राह्मणको देवैइसकादान चरणमेंकरै इस बिधिसे आचार्यको यहदानदे कुछदूरतक पहुंचानेकेलिये अनुगमनकरै औ क्षमापनकरावै इसदानकेकरनेसे जोपुण्य प्राप्तहोताहै उसका

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वर्णनकौन करसक्ताहै सबयज्ञ औसबदान करनेसे जोफलप्राप्त होताहै वहइसएक दानसेही मिलताहै वराह भगवान्नेजिसप्र कार भूमिका उद्धारकिया उसीभांति यहदान करनेहारा पुरुष अपने कुलका उद्धार करताहै औ विष्णुलोकको जाताहै ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र स्त्री शैव वैष्णव योगी आदि सबको यह दान करनाचहिये वेदवेत्ता ब्राह्मणको जो पुरुषतिलोंका वराहबनाय सुवर्ण वस्त्र सहित देवै वह अपने पूर्व पुरुषोंका उद्धारकर मित्र कलत्र सहित स्वर्गको जाताहै॥

एकसौइकसठवां अध्याय॥

राजायुधिष्ठिरकहतेहैं कि हे श्रीकृष्णचंद्र आपके मुखसेहम और भी दानोंका माहात्म्य श्रवणकिया चाहतेहैं आपकथनकरैं जिनके करनेसे अक्षयपदकी प्राप्तिहोय यहराजाका वचनसुनश्री कृष्णभगवान् कहनेलगे कि हेमहाराज जोदान माहात्म्यरुद्रने नारदको औ मत्स्यरूपभगवान्ने मनुको कथनकियाहै वह दश प्रकारका पर्वतदान हम आपको श्रवणकरातेहैं जिसके करनेसे सबमनोरथ सिद्धहोतेहैं औ उत्तमलोककी प्राप्तिहोतीहै धान्या-चल लवणाचल गुड़ाचल सुवर्णाचलतिलपर्वत कर्पासपर्वतघृत पर्वतरत्नपर्वतरजतपर्वत औशर्कराचल येदशप्रकारकेपर्वतदानहैं अबइन का क्रमपूर्बक हम विधान कहतेहैं अयन बिषुवव्यतीपा तअबमदिन शुक्लतृतीयाग्रहण अमावास्याबिवाहोत्सव यज्ञद्वाद-शी पूर्णिमा औरभीपुण्य दिनोंमें ये दान विधिपूर्वक करनेचहिये तीर्थ देवालय गोष्ठ नदीसंगम आदि स्थानों में उत्तराभिमुख अथवा पूर्वाभिमुख चतुरस्र मंडप बनाय गोबर से लेपन कर कुशा बिछाय उसके ऊपर धान्य पर्वत बनावै हजारद्रोणधान्य का उत्तम पांचसौ द्रोणका मध्यम औ तीनसौ द्रोण धान्य का

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by eGangotri Foundation USA

निकृष्ट पर्वत होताहै इसप्रकार पर्वतबनाय सुवर्णके तीन वृक्ष उसपर लगावै पूर्व में मोतीहीरे दक्षिण में गोमेद पुखराज पश्चिम में पन्ना नीलम औ पर्वतके उत्तर में वैदूर्य औ पद्मराग रक्खै चंदनके टुकड़े औमूंगे उसमें स्थापनकर शुक्तिकी शिला कल्पना करै ब्रह्मा विष्णु शिव औ सूर्यकी सुवर्णकीमूर्तिउसके ऊपर स्थापन करै सुवर्ण रजत आदि धातु उसमें रक्खै घृतके झरने औ वस्त्रोंकेमेघ कल्पनाकरै पूर्वादि दिशाओंमेंक्रमसे श्वेत कृष्ण कर्वुर औ रक्त वस्त्ररक्खै चांदीकेइंद्र आदि अष्टदिक्पाल स्थापन करै अनेक प्रकारके फल पुष्प पर्वतमें रख पंचरंग का वितान उसके ऊपर लगावै औ उसको पुष्पमालाओं से भूषित करै इस प्रकार धान्यका मेरुपर्वत बनाय पूर्वदिशा में अनेकफल सुवर्णके कदंबवृक्ष औ अनेक वस्त्रादिकों से भूषित सर्वान्न का मंदराचल स्थापन करै दक्षिण में चांदी का अथवा गोधूम का गंधमादन पर्वत बनाय सुवर्णका जंबूवृक्ष चांदी वस्त्र आदि से उसको अलंकृत करै पश्चिम में तिलोंका विपुलाचलस्थापन करै औ उसको सुवर्णके अश्वत्थ वृक्षसुवर्णके हार वस्त्र आदिसे भूषित करै उत्तरमें उड़दोंका सुपार्श्व पर्वत स्थापन कर सुवर्ण के वट वृक्षसुवर्ण की धेनु सुवर्ण रत्न वस्त्र सब रस फल पुष्प आदिसे उसको अलंकृतकरै इस प्रकार सबपर्वत बनायपूर्वादि दिशाओंमें हस्त प्रमाण चतुरस्त्रकुंड बनावै उनमें चार वेदवेत्ता ब्राह्मण तिलघृतसमिधा औकुशाओंसे होमकरें पीछे यजमान स्नान आदिकर उनपर्वतोंका पूजनकरै औ हाथ जोड़ (त्वंसर्व देवगणधामविधिंविरुद्धमस्मद्गृहष्वमरपर्वतनाशयाशु।क्षेमंविधत्स्वकुरुशांतिमनुत्तमांमेसंपूजितःपरमभक्तिमतामयाहि।त्वमेवभगवानीशोब्रह्माविष्णुर्दिवाकरः।मूर्तामूर्तंपरंवीजमतःपाहिसनातन।यस्मात्त्वंलोकपालनांविश्वमूर्तिश्चमण्डलम्।केशवार्कवसूनांच

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

तस्माच्छांतिंप्रयच्छमे। यस्मान्नशून्यममरैर्नारीभिश्चशिरस्तव तस्मान्मामुद्धराशेष दुःखसंसारसागरात्। यस्माच्चैवरथेनत्वं भद्राश्ववरिषेणच। शोभसेमन्दरक्षिप्रमतस्तुष्टिकरोभव। यस्माच्चूडामणिर्जंबूद्वीपेत्वंगंधमादन।गंधर्ववरशोभावानतःकीर्त्तिर्दृढास्तुमे। यस्मात्त्वंकेतुमान्मौलौवैभ्राजेनवनेनच। हिरण्यजाश्वत्थशिखस्तस्मात्तुष्टिंविधत्स्वमेउत्तरैःकुरुभिर्यस्मात्सावित्रेणवनेनच सुपार्श्वराजसेनित्यमतःश्रीरक्षयास्तुमे) ये मन्त्र पढ़ उन सब को अभिमन्त्रण करै दूसरे दिन स्नानकर मध्यका मुख्यपर्वत गुरुके अर्पणकरै औ वे चारों दिशाओंके पर्वत उनचारों ब्राह्मणोंको देवै फिर चौवीस दशसात छः पांच अथवा एकही कपिला गौ दुग्ध देनीहारी गुरुको देवै यही बिधान सब पर्वतों के दान का है ग्रह लोकपाल पर्वत औ ब्रह्मादि देवताओं के नाम मंत्रों से हवन करै उस दिन उपवास अथवा नक्तब्रतकरै औ (अन्नंब्रह्मयतः प्रोक्तमन्नेप्राणाः प्रतिष्ठिताः। अन्नाद्भवंतिभूतानिजगदन्नेनवर्द्धते। अन्नमेवयतोलक्ष्मीरन्नेनेवजनार्दनः। धान्यपर्वतरूपेणपाहितस्मान्नगोत्तम)ये मंत्रपढ़ैइसबिधान से जोपुरुषधान्याचलदानकरै वहसौमन्वंतरपर्यंत स्वर्गमेंनिवासकरताहैऔगंधर्व अप्सराआदि उसकी सेवामें रहतेहैं औपुण्यक्षय होनेपर राजा होताहैजो पुरुषसुवर्णवृक्षोंकरके शोभितऔचारविष्कंभ पर्वतों सहितधान्याचलभक्तिसेब्राह्मणकोदेतेहैं वे ब्रह्मलोककोजातेहैं॥

एकसौबासठवां अध्याय॥

श्रीकृष्णचंद्र कहतेहै कि हे महाराज अब हम लवणाचल दान विधान कहतेहैं जिसके करने से मनुष्यको शिवलोकप्राप्त होता है सोलह द्रोण लवणका उत्तम आठ द्रोण का मध्यम औ चार द्रोण लवणका लवणाचल अधम होता है इनमें यथा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by eGangotri Foundation USA

शक्ति लवणाचल बनाय उसके चतुर्थांश के तुल्य चार विष्कंभ पर्वत बनावै ब्रह्मादि देवता वृक्षसरोवर लोकपाल धेनु आदिसब पूर्वरीति से बनाय विधिपूर्वक उसका पूजनकर (सौभाग्यरससंपूर्णःसंभूतोलवणोरसः। दानात्मकत्वेननमःपाहिपापान्नगोत्तम। यस्मादन्नरसाःसर्वेनोत्कृष्टालवणंविना। प्रियंचशिवयोर्नित्यंतस्माच्छांतिप्रदोभव। विष्णुदेहसमुद्भूतोयस्मादारोग्यवर्द्धनः तस्मात्पर्वतरूपेणपाहिसंसारसागरात्) येमंत्र पढ़ ब्राह्मण को देवै इसविधिसे जो पुरुष लवणाचलका दानकरै वह एक कल्प उमालोकमें निवासकर पुण्यक्षय होनेसे धर्मात्मा औ पुत्रपौत्र युक्त राजा होता है औ सौ बर्ष आयुष भोगता है जो भक्ति से लवणाचल दान करैं वे विमानपर बैठ स्वर्गको जायँ औ वहां गन्धर्व अप्सराओं करके सेवित बहुतकाल सुख भोगकरें॥

एकसौ तरेसठवां अध्याय॥

श्रीकृष्णचंद्र कहते हैं कि हे महाराज अब हम गुड़ पर्वत के दान का विधान कहते हैं जिसके करने से स्वर्ग प्राप्ति होती है दशभार गुड़का उत्तम पांच भार का मध्यम औ तीन भार गुड़का निकृष्ट होता है इसमें धान्याचल के विधान से विष्कंभपर्वत वृक्ष देवता लोकपाल आदि बनावै औ उसी विधिसे होम पूजन आदिकर (यथादेवेषुविश्वात्माप्रवरोयंजनार्दनः। सामवेदस्तुवेदानांमहादेवस्तुयोगिनाम्॥ प्रणवःसर्वमंत्राणांनारीणांपार्वतीयथा।तथारसानांप्रवरःसदैवेक्षुरसोमतः॥ ममतस्मात्पुरालक्ष्मींप्रयच्छगुडपर्वत। सुरासुराणांसर्वेषांनागयक्षर्क्षपत्रिणाम्॥ निवासश्चासिपार्वत्यास्तस्मान्मांपाहिसर्वदा) ये मंत्र पढ़ ब्राह्मण को देवै इस विधि से जो पुरुष गुड़पर्वत दान करै वह गन्धर्वोंकरके पूजित गौरीलोकको प्राप्त होताहै औ सौ

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कल्पपर्यंत वहां सुख भोगकर दीर्घायुष् बड़ा प्रतापी औ चक्रवर्त्ती राजा होताहै पूर्वकालमें मरुत्तराजा की सुलभा नाम बड़ी पतिब्रता औ सुशीलारानी थी राजामरुत्त का भी उस में बहुत अनुराग था एक समय वहां दुर्वासामुनि आये उनका राजाऔ रानी ने बड़ा सत्कार किया औ पाद्य अर्घ्यदे आसनपर बैठाय बड़े विनय से रानी ने पूछाकि महाराज किस पुण्य के प्रभाव से मेरे पतिका मुझमें इतना अनुरागहै औ सब सपत्नी भी मेरा हित चाहती हैं आप कृपाकर कथन कीजिये यहरानीका बचन सुन दुर्वासामुनि कहने लगे कि हे सुलभे हम तेरे पूर्वजन्म का वृत्तांत कहते हैं सावधान होकर श्रवणकर पूर्वजन्म में गिरिब्रज पुरके बीच रहनेवाले वैश्य की तू भार्या थी सदा पति की सेवामें तत्पर रहती एक समय तैंने ब्राह्मणों के मुख से दान माहात्म्य श्रवणकिया उसमें बिशेष करके गुड़पर्वत दान का माहात्म्य सुना औ विधिपूर्वक गुड़ाचल का दानकिया उसदान के प्रभावसे रूप सौभाग्य औ आरोग्य पाया चार जन्म रानी होते व्यतीत होचुके औ अभी सातजन्म पर्यंत आगे भी राजमहिषी होगी औ उत्तम संतान पावैगी इतना कथन कर दुर्वासामुनि अपने धाम को गये औ रानी ने भी दान के प्रभाव से मनोबांछित फलपाये यह दान नारियोंके लिये बिशेष करके फलदायकहै जो स्त्रीअथवा पुरुष इसदानको बिधानसेकरैं उन पर गौरी भगवती प्रसन्न होतीहैं॥

एकसौ चौसठवां अध्याय॥

श्रीकृष्णचंद्र कहते हैं कि हे महाराज अब हमसुवर्णपर्वतके दानका विधान कहतेहैं जिसके करनेसे ब्रह्मलोक की प्राप्तिहोतीहै हजारपल सुवर्णका पर्वत उत्तम पांचसौ का मध्यम औअ-

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ढ़ाईसौ का निकृष्ट होताहै परंतु सामर्थ्यके अनुसार एकपल सुवर्ण पर्यंत भी होसकताहै इसका सब बिधान धान्यपर्वतकी भांति हैपर्वत का पूजन आदि कर (नमस्ते ब्रह्मवीजाय ब्रह्मगर्भायवैनमःयस्मादनंतफलदस्तस्मात्पाहिशिलोच्चय॥ यस्मादग्नेरपत्यंत्वंयस्मादुल्वंजगत्पतेःहेमपर्वत रूपेणतस्मात्पाहिनगोत्तम) यहमंत्रपढ़ै इसविधिसे जोपुरुष सुवर्ण पर्वतदानकरैवह स्वर्गको जाताहै वहां दिव्य सौबर्ष निवासकर परम गतिको प्राप्त होता हैसुवर्णाचलसे बढ़कर कोईदान नहींहै मणिके शृङ्गो से भूषित औअष्टलोकपालोंसहित सुवर्णाचलका जोपुरुष भक्ति पूर्वकदानकरै वह एककल्प पर्यंत अग्नि लोकमें निवास करताहै॥

एकसौ पैंसठवां अध्याय॥

श्रीकृष्ण भगवान् कहतेहैंकि हे महाराज अबहम तिलपर्वत दानका बिधानकहतेहैंजिसके करनेहारा पुरुष बिष्णु लोकको जाताहै सब पदार्थोंमें तिल पवित्रहैं औ बिष्णुभगवान्के देहसे उत्पन्नहुये हैं इसलिये उत्तम गिनेजातेहैं पूर्वकालमें मधुकैटभ नामदो दैत्यभयेमधुकेसाथएकहजारबषभगवान्ने युद्धकिया तब परिश्रम होनेसे भगवान्के शरीर से प्रस्वेद भूमि पर गिरा उससे तिल औ कुशउत्पन्नभये औवहदैत्यभीभगवान् ने मारा जिसके मेदसे सब भूमि प्लुत होगई इसी से मेदिनी कहाई उस दैत्यके मरनेसे देवता बहुत प्रसन्नभये औबिष्णु भगवान् कीस्तुति करनेलगेकि हे भगवन् यहजगत् आपनेही उत्पन्नकियाऔ आपहीइसकापालनकरतेहैं ये तिल आपके अंगसे उत्पन्नहुयेहैं ये सदा हव्य कव्य का पालनकरैं औ दैव पित्र्यकर्म में मनुष्य इनको लगावैं औ जहां तिल प्रयुक्त कियेजायँ वहांदैत्य पिशाच आदि कोई बिघ्न नकरैं यहदेवताओं का बचन सुन बिष्णु-

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

भगवान् ने कहा कि ये तिल तीनोंलोकों की रक्षा के लिये होंगे जोपुरुष स्नानकरके श्रद्धायुक्त शुक्लपक्षमें देवताओंकोऔकृष्ण-पक्षमें पितरोंको तिलोदक देवेंगे अथवा सातआठ तिलों सहित जलांजलि देवेंगे उनके देवता औपितर संतुष्ट होंगे श्वान काक पतित आदिके संग से जो पाप हुआ होय वह तिल तर्पणमात्र से निवृत्त होजाताहै ऐसे उत्तम तिलोंकरके पर्वत बनाय ब्राह्मण को देना चहिये दशद्रोण तिलोंका उत्तम पांचका मध्यम औ तीनद्रोण तिलोंकानिकृष्ट होताहै तिल पर्वतका भी पूजन आदि-पूर्वरीतिसे करके(यस्माद्वैमधुनायुद्धेविष्णोः स्वेदसमुद्भवाःतिलाः कुशाश्चमाषाश्चतस्माच्छन्नोभवत्विह। हव्येकव्येचयस्माच्चतिलरेवाभिमंत्रणम्। तस्मादुद्धरशैलेंद्रतिलाचलनमोस्तुते)यह मंत्र पढ़ै इस विधि से जो पुरुष तिलपर्वत का दानकरै वहदीर्घआयुष भोगकर देवता औ पितरों करके पूज्यमान स्वर्गको जाताहै औ पुण्यक्षय होनेपर मृत्युलोक में जन्मले धार्मिक राजा होता है नारी इसदानको करै तोरूप सौभाग्य धन औपुत्रपौत्रपातीहै निर्धन पुरुषभी इस विधानकेश्रवणकरनेसेकपिलादान के तुल्य फल पाता है तिल पर्वतसमान कोई दान नहीं है जिन तिलों से देवता औ पितर तृप्तहोते हैं उनके पर्वतके दानका पुण्य तो कौन बर्णन करसकै॥

एकसौछियासठवां अध्याय॥

श्रीकृष्णभगवान् कहते हैं कि हेमहाराज अबहम कर्पास पर्वतके दानका बिधान कहतेहैं जो सब देवताओंको प्रियहै औ सब दानोंमें उत्तमहै बीसभार कर्पास का उत्तम दश का मध्यम औ पांचभार कर्पासका पर्वत अधम होताहै पूर्वरीतिसे कर्पासाचल बनाकर धान्य पर्वत की रीति से जागरण औ अधिवासन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

करै फिर दूसरे दिन पूजन आदिकर सत्पात्र ब्राह्मण को देवै कर्पासाचल दान जो पुरुष श्रद्धासे विधिपूर्वककरै वह एककल्प रुद्रलोक में निवास कर भूमि पर जन्मले राजा होय रूप धन विद्या लक्ष्मी औ पराक्रमपावै इसीप्रकार पांचजन्मपर्यंत राजा होय नारी इसदानकोकरै तो रूपसौभाग्यसंतान औ धनपावै ॥

एकसौसतसठवां अध्याय ॥

श्रीकृष्णभगवान् कहतेहैं कि हे महाराज अब हम सर्वपाप हरनेहारे घृताचलका बिधान कहतेहैं पचास घृतकुंभ का उत्तम पचीसका मध्यम औ इससेभी अर्द्ध निकृष्टहोताहै इसप्रकार घृतपर्वतबनाय चारभार घृतके विष्कंभ पर्वत बनावै उनके ऊपर चावलोंसे पूर्णकलश रक्खै इक्षु केला आदि अनेकप्रकारके फल उनके समीप स्थापनकरै औ उसको वस्त्रसे वेष्ठितकर धान्य पर्वतके विधान से अधिवासन होम देवार्चन आदि करै दूसरे दिन पूजन आदिकर (संयोगाद्घृतमुत्पन्नंयस्मादमृततेजसोः । तस्माद्घृतोर्चिर्विश्वात्माप्रीयतांममशंकरः ।यस्मातेजोमयंब्रह्मघृते चैवव्यवस्थितम् । घृतपर्वतरूपेणतस्मान्नःपाहिशंकर) ये मंत्र पढ़ मुख्य पर्वत गुरुको निवेदन करै औ विष्कम्भ पर्वत ऋत्वजों को देवै इसविधि से जो पुरुष घृताचल दान करै वह चाहै महापातक करनेहारा भी होय परंतु सबपातकोंसे छुट शिवलोकको जाताहै हंस सारस आदि पक्षियों करके शोभिकिंकिणीमालाओं करके भूषित दिव्यविमानमें बैठ अप्सरा गंधर्व सिद्ध विद्याधर आदि करके सेवित प्रलयपर्यंत पितरोंके साथ बिहारकरत है ॥

एकसौअठसठवां अध्याय ॥

श्रीकृष्णभगवान् कहतेहैं कि अब हम रत्नाचल दान विधा-

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by eGangotri Foundation USA

न का माहात्म्य कहतेहैं जिसदान के करनेसे सप्तर्षि लोक की प्राप्ति होतीहै हजार मोती का पर्वत उत्तम पांचसौ का मध्यम औ तीनसौ का निकृष्ट होताहै मोतियों का पर्वत बनाय उसके चतुर्थांश के समान विष्कंभ पर्वत बनावै इन्द्र नील औ गोमेद का पूर्वमें पुखराज औ पन्ने का दक्षिण में पद्मराग औ सुवर्ण का पश्चिम में औ विद्रुम सहित वैदूर्य का पर्वत उत्तर में बनावै सुवर्ण के वृक्ष औ देवता स्थापन करै आवाहन पूजन आदि सब बिधान धान्य पर्वत की रीति से कर (यथादेवगणा सर्वेसर्वरत्नेषुवस्थिताःपंचरत्नमयोनित्यमतःपाहिमहाचलायस्मा-द्रत्नप्रदानेनतुष्टिमेतिजनार्दनः । सरत्नाचलदानेनप्रीतोभवतुमेस दा) येमंत्र पढ़ मुख्य पर्वत गुरुको औ विष्कंभ पर्वत ऋत्विजों को देवै इसविधान से जो पुरुषरत्नाचलदान करैवहविष्णुलोक को जाय वहां दिव्य सौ वर्ष पर्यंत सुख भोगकर मर्त्य लोक में जन्मले रूप आरोग्य बल आदि करके युक्त चक्रवर्त्ती राजा होय इसदानके करने से अनेक जन्मो में किये हुये ब्रह्महत्या आदि पाप निवृत्त होजाते हैं ॥

एकसौउनहत्तरवां अध्याय ॥

श्रीकृष्णभगवान् कहतेहैं कि अब हम रजताचल दान का विधान कहते हैं जिसके करने से मनुष्य सोमलोक को जाता है हजार पल चांदी का उत्तम पांचसौ पल का मध्यम औ अढ़ाई सौ पल चांदी का निकृष्ट होताहै सामर्थ्यके अनुसार बीसपल तक भी रजताचल बनाकर दान करै इसके चतुर्थांश के तुल्य विष्कंभपर्वत बनावै उनके ऊपर चांदी के लोकपाल औ ब्रह्मा बिष्णुशिव बना कर स्थापन करै सुवर्ण का पर्वत औ वृक्ष आदि बनावै पूर्ववत् होम जागरण पूजन आदि कर (पितृणां

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by eGangotri Foundation USA

बल्लभंयस्माद्धर्मोदानकरस्यच । तस्माद्रजतमांपाहिघोरात्सं सारसागरात्) यहमंत्र पढ़ मध्य पर्वत गुरुको औ चारों के पर्वत ऋत्विजों को देवै इसविधि से जो रौप्याचल का दान करै वह दशहजार गोदान का फल पाताहै पूर्वकाल में एक बड़ा प्रतापी सूर्यबंशमें सोमप्रभराजा हुआ जिसकी सोमवती नाम अति रूपवती औ पतिव्रता रानीथी जो दशहजार नारियों में मुख्य औ राजा की अतिप्रियाथी एकदिन सभा के बीच अपने पुरोहित श्रीवशिष्ठ मुनिसे राजाने बिनय पूर्वक पूछा कि हे भगवन् किस पुण्यसे उत्तम तेज औ ऐश्वर्य मैंने पाया यह आप कृपाकर कथनकीजिये यह राजा का प्रश्न सुन वशिष्ठजी कहने लगे कि हे राजन् पूर्वकाल में परम शिवभक्ता लीलावती नाम एक वेश्याथी उसने चतुर्दशी के दिन सुवर्णवृक्षों सहितलवणाचल दानकर अपने गुरुको दिया वहां एक शौंडनाम सुनारथा उसने सुवर्णके वृक्ष औ देवता श्रद्धासे बहुत सुंदरबनाये औधर्म का काम समझ भृति अर्थात् घड़ाई भी नहींली वृक्ष आदिऐसे उजलाये कि अतिमनोहर होगये औ सुवर्णकारकीस्त्रीनेभी उन वृक्ष औ मूर्त्तियोंको प्रीतिसे स्वच्छ किया औ दोनों स्त्री पुरुषोंने दानकेकाममें भलीभांति शुश्रूषाकरी लीलावतीवेश्याने दानकर अपनेगुरुको दिया कुछकाल के अनंतर वेश्या मृत्युबश भई औ सबपापोंसे छुट शिवलोककोगई सुबर्णकारजिसने दरिद्रीहोकर भी घड़ाई न ली वहसप्तदीपके स्वामी चक्रवर्त्ती तुमभयेऔउत्तम तेज पाया औ वह सुवर्णकार की स्त्री देव प्रतिमाओं के उजलाने से अति रूपवती तुम्हारी रानी बनी दरिद्र होकर भी सुवर्णकार औ उसकी भार्याने लवणाचल का सब काम भृति के विना श्रद्धासे किया उस के प्रभाव से यह उत्तम फलपाया हे राजन् अबतुम श्रद्धासे धान्याचल आदि दश पर्वतोंका दा-

CC-0. Gurukul Kangri University, Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

न कीजिये यह वशिष्ठजी का वचन सुन राजाने धान्याचल आदि सब पर्वतों का दानकिया औ बहुत काल राज्यभोग अंत में देवताओं करके सेवित शिवलोक को गया जो निर्धन पुरुष इस मेरुदान को श्रद्धासे देखै इसके विधान को प्रीतिसे श्रवण करै अथवा दान करने के लिये किसी को बुद्धि देवै वह भी स्वर्गको जाताहै इन धान्याचल आदि दानों के विधान को श्रवण करनेहारा ही दिव्य विमानमें बैठ स्वर्गको जाताहैफिर श्रद्धासे दान करने का तो पुण्य कहांतक बर्णनकरैं॥

एकसौसत्तरवां अध्याय॥

राजायुधिष्ठिर कहते हैं कि हे श्रीकृष्णचन्द्र आपके मुखसे प्रतिपदा आदि तिथियों के व्रत रहस्य मंत्र सहित व्रतोद्यापन नवग्रह यज्ञ विधान हवन विधान देवताओं के अनेक उत्सव अनेक प्रकार के दान धर्म्म तड़ाग वृक्ष आदि का उत्सर्ग इत्यादि हमने औ इन महर्षियोंने श्रवणकिये परंतु हमारा मन मोहकोही प्राप्त हुआ आपने अनेक देवता औ भांति २के व्रत कहे तिथिक्रमसे पूजा मंत्र उपवास आदिका वर्णनकिया ध्यानयोग में निष्ठ मुनीश्वर एक परमात्मा को ही सर्व व्यापी औ सबका प्रभु कहते हैं यह सब आपने वर्णन किया परन्तु वर्ण आश्रमोंके धर्म्म औ सदाचारका आपने कथन न कियाइसलिये अब आप वर्णाश्रम धर्म वर्णन कीजिये येसब मुनीश्वर भी आप के बचन श्रवण करनेको उत्सुक होरहे हैं यह राजा का वचन सुन श्रीकृष्णभगवान् कहनेलगे कि हे महाराज व्रत औ दानों का लेशमात्र हमने वर्णन किया है संपूर्ण तो कौन वर्णन करसकताहै अब हम वर्णाश्रम धर्म कथन करते हैं संसार के सब जीव दुःखों से छुट कल्याण के भागी होयँ सब आरोग्य रहैं

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by eGangotri Foundation USA

कोई दुःख भागीन होय हमने व्रतोंमें अनेक देवताओंका पूजन आदि कहा परंतु वास्तव में कुछ भेद नहीं जो ब्रह्मा सो बिष्णु जो विष्णु सो शिवजो शिव सो सूर्यजो सूर्यसो अग्नि जोअग्नि सो कार्तिकेय जो कार्तिकेय सो गणपति इनमें कुछ भेद नहीं है इसी प्रकार गौरी लक्ष्मीसाबित्रीआदि शक्तियोंमें भीभेद का-लेश नहीं चाहे जिस देवी देवता के उद्देश से व्रत करै परंतु भेद वुद्धि न रक्खै क्योंकि सब जगत् शिव शक्तिमय है जगत् अनेक प्रकार का भासता है परंतु परमार्थवेत्ता इस भेद कोनहीं मानते किसी देवता का आश्रय लेकरनियम व्रतआदिकरैकेवल त्रयीधर्म का आचरण करना चहिये यही इसमेंमुख्य कारण है परंतु जितने हमने व्रतदान आदिकहे वे सब आचार युक्त पुरुष के सफल होतेहैं आचारहीन पुरुष कोवेद पवित्र नहींकरते चाहे छहों अंगो सहित पढ़े होयँ जिस भांति पंख जमने पर पक्षियों के बच्चे घोंसले को छोड़कर उड़ जातेहैं इसी भांति आचारहीन पुरुष को वेद भी मृत्यु के समय त्याग देतेहैं बुरे पात्र में जल अथवा श्वान के चर्ममें दुग्ध रहने से जिस भांति अपवित्र हो-जाता है इसी प्रकार आचार हीन में स्थित शास्त्र भी व्यर्थ है वृत्त अर्थात् आचरण का यत्न से रक्षण करै वित्त अर्थात् धनतो कभी आता है औ कभी जाता है वित्तहीन जीता औ वृत्तहीन नहीं जीसकता आचारही धर्म औ कुलका मूलहै आचारसेहीन पुरुष धर्म औ कुल से भी हीन होजाता है दुष्ट पुरुषोंके कुल से भी क्या उपयोग है क्या सुगंध युक्त उत्तम पुष्पों में कृमि नहीं उत्पन्न होतेहैं हीन कुलमें भी उत्पन्न पुरुष जो शौच आचारस-हितहोय तो सैकड़ों कुलीनोंसे वह एक उत्तमहै कुलको कुलन-हीं कहते आचार को कुल कहतेहैं आचारहीन पुरुषन इसलो-कमें औ न परलोक में सुखपाता है इतना सुन राजा युधिष्ठिर

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by eGangotri Foundation USA

ने पूछाकि हे श्रीकृष्णचंद्र अब हम सदाचार श्रवण कियाचाहते हैं कि सर्वधर्ममय सदाचार किसको कहतेहैं यह राजाकाबचन सुन श्रीकृष्ण भगवान् कहने लगे कि हे महाराज आचारहीप्रथमधर्म है औजिनमें आचार होय वे सत्पुरुष कहातेहैं सत्पुरुषों का जो आचरण उसी का नाम सदाचार है जो पुरुष अपना हित चाहै उसको अवश्यही आचार निष्ठहोना चहिये पुरुष में पाप आदि जितने अलक्षण हैं वे सब आचारसे निवृत्त होजातेहैं धर्मनिष्ठ परनिन्दा से रहित सत्कर्म में प्रवृत्तओ शौचआचार में परायण पुरुष सबका प्रिय होता है नास्तिक क्रियाहीन अधर्मी गुरुकी आज्ञा लंघन करने हारे औ आचार भ्रष्ट पुरुष अल्पायुष् होजाते हैं सबलक्षणों से हीन भी पुरुष श्रद्धावान् असूया रहित औ सदाचारयुक्तहोयतो अपने सब मनोरथपाता है ब्राह्ममुहूर्त में उठधर्म औ अर्थका चिंतनकरै औ आचमनस्नान आदिकर प्रातः संध्या करै इसीभांति मौन से सायंसंध्या वंदनभी करै सूर्यको उदय औ अस्त होतेन देखैतो दीर्घ आयुष्पाताहै जो ब्राह्मण दोनों कालकासंध्यावंदननहींकरतेउनकोराजा शूद्र कर्मोंमें नियुक्तकरै दिन में उत्तराभिमुख औ रात्रि के समय दक्षिणाभिमुख होकर मूत्रपुरीषका त्यागकरै जो ऐसा स्थान न होय तौ यथेच्छ त्यागै भूमिको तृणोंसे आच्छादितकर अपने शिरको वस्त्रसेढक पुरीषोत्सर्ग करै ग्राम आवसथ तीर्थ क्षेत्र गोष्ठ आदिमें शौच न करै जलके भीतर से आवसथ से मूषक के बिलसे बल्मीक से मृत्तिका लेकर शौच न करै औ शौच शेष मृत्तिका सेभी शौच न करै देवार्चन आदि क्रिया औभोजन सदा आचमन करकेकरै फेन रहित गंधवर्ण शब्दसे रहित पबित्रजल करके पूर्वाभिमुख अथवा उत्तराभिमुख होकर आचमन करैविद्वान् पुरुष धन उपार्जन करने के लिये सदा यत्नकरै औ त्रिवर्ग

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अर्थात् धर्म अर्थ औ काम इनका भी सदा साधन करता रहै इनके साधन से गृहस्थीको दोनोंलोकमें सिद्धि होती है जितना धन प्राप्त होय उसका चतुर्थांश परलोक के निमित्त लगावै चतुर्थांश संचयकरैऔ आधेद्रव्यसे नित्यनैमित्तिक सहित अपना निर्वाह करै इस प्रकार चलने से धर्मादिक सिद्ध होते हैं केश प्रसाधन दंतधावन देवदर्शन औ पूजन आदि काम मध्यान्ह के पूर्व करने चहियें अग्निकासेवन दूरसे करै मूत्रपुरीषका त्याग घरसे दूर जाकर करै लोष्ट अर्थात् ढेला मर्दन करनेहारा तृण-च्छेदन करनेहारा दांतसे नखकाटनेहारा सदा उच्छिष्ट रहने-हारा औसंकर करनेहारा पुरुष बहुत आयुष् नहीं भोगता नंगी परस्त्री कोनदेखै अपनी बिष्टानदेखै रजस्वला स्त्रीके साथ संभा-षण न करै औ उसका दर्शन औ स्पर्शभी नकरै जलके बीच मूत्र बिष्टाका त्याग औ मैथुन न करै मूत्रविष्ठा केश भस्म तुषअंगार अस्थि धूलि आदिके ऊपर न बैठै जो वृद्धहोयँ उनको अभिबा-दन करै आसन पर बैठावै हाथ जोड़ उनके संमुख रहै औ जब वे उठकर जायँ तब कुछ दूरतक उनके पीछे चले फूटे पात्र में भोजन नकरैऔ कांस्यके फूटेपात्रको बिशेष करकेत्यागै केशखो-लकर भोजन न करै नग्न होकर स्नान न करै नग्न औ उच्छिष्टहो कर शयन न करै उच्छिष्ट हाथ से शिरको स्पर्शन करै क्योंकि सब प्राण उसके आश्रयहैं शिरमें प्रहार न करै परंतु शिक्षाकेलि ए शिष्य औ पुत्रको शिरमें भी ताड़नकरै दोनों हाथों से शिरको ना खुजावै बिना कारण निरंतर शिरस्नान न करै ग्रहणकेबिना रात्रिको स्नान न करैभोजनके अनंतर स्नान न करै औ गहरेज लाशय में भी न नहावे शिरस्नान करके किसी अंगमें तैल का स्पर्श न करै तिल पिष्टन खायतो आयुष् का क्षय नहीं होता है गुरुका दुष्कृतन कहै धर्मका सदा साधन करै परनिंदा न करै

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by eGangotri

औ दूसरा मनुष्य पर निन्दा करता होय तो न सुनैसदानयेऔ सुंदर वस्त्रपहिने उत्तम औषधी धारे केशोंको निर्मल औ चिकने रक्खै सुगंध द्रव्य धारै औ उत्तम वेष रक्खै श्वेतपुष्प धारण करै यत्किंचित् भी पराई वस्तु न हरै औ कभी अप्रिय बचन न बोलै प्रिय बचन भी असत्य होय तो न बोलै असत्यसे सदा बचतारहै दूसरेके छिद्र ढूंढ़ना औ बैर करना कभी भला नसमझै विद्वेषी पतित उन्मत्त बड़ा वैरी संकर व्यभिचारिणी कुलटापति क्षुद्र मत्त हठी क्रोधी आदिके साथ मैत्री नकरै एकाकी मार्गमेंन चलै जलाशयमें अवगाहन न करै प्रदीप्त घरमें प्रवेशनकरै पर्बत के शिखर पर न चढ़ैदांत नपीसै नासिका को न खोदै बिनामुख ढके उवासी न लेवै ऊंचे स्वरसे न हसै शब्दसहित पवन नत्यागै रात्रिके समय चतुष्पथ श्मशान उपबन मे औ वृक्ष की छाया में न जाय दुष्ट कासंग न करै ग्रीष्म औ बर्षामें छतरी धारण करै रात्रि के समय औ बन में दंड धारणकरै जूता पहिने बिना न फिरै केश अस्थि कांटे भस्म तुष बलि औ स्नान के जलसेभीगी हुई भूमि इनको दूरसे त्यागै ब्राह्मण गौ राजा विद्वान् गर्भिणी स्त्री मूक अंध बधिर मत्त उन्मत्तऔ भार करके पीड़ित इन सबको रस्ता देना चहिये अर्थात् ये आगेसे आवैं तो मार्गछोड़देवै जूता वस्त्र औ पुष्पमाला दूसरे केधारे हुये धारण नकरै परस्त्री संगसे सदा बचै इससे अधिक आयुष्का क्षय करनेहारा कोई कर्म नहींहै यत्नसे स्त्री की रक्षा करै ईर्षा न करै ईर्षा करने से आयुष घटता है मूर्ख उन्मत्त व्यसनी कुरूप मायावी हीनांग अधिकांग विद्याहीन आदि पुरुषों को कभी दान न देवे परंतु अन्न और जल इनको भी देना चहिये अर्द्धरात्रिके समय भोजन नकरै खड़ा होकर न पढ़ै बहुत हास्यन करैपैरसे आसनकोखैंच कर न बैठै ब्राह्मण क्षत्रिय औ सर्पइनसे बैर न करै येतीनोंतुल्य

CC-0. Gurukul Kangri University, Haridwar. Collection. Digitized by eGangotri Foundation, USA

हैं बिना बदला लिये नहीं रहते प्रभात सायंकालऔ मध्याह्न में गमन न करै अपरिचित मनुष्यों के साथयात्रा न करै औपरिचित मनुष्यों में भी सबके आगे न चले अरुंतुद अर्थात् किसीके मर्म को स्पर्श करनेहारा न होय क्रूरवचन न बोलै निकृष्टपुरुष से वेद ग्रहण न करै जिस वाणी से दूसरे को उद्वेग होय उसको न बोलै वह वाणी अलक्ष्मी का रूप है औ नरक देनेहारी है वचन रूप वाण मुखसे निकलते हैं जिन करके ताड़ित पुरुष दिन रात शोचता है वेदुर्वचन वाण दूसरे के मर्मों में लगते हैं इसलिये पंडित पुरुष वे दुर्वचन वाण औरों में न छोड़ैं शस्त्र का घाव भरजाता है परंतु दुष्ट औ वीभत्स वचनों का घाव नहीं भरता नास्तिकत्व वेदनिंदा द्वेष स्तंभ अभिमान क्रूरता औ वेदों का कुत्सन इनका सदा त्याग करै ब्राह्मण की निंदा न करैनक्षत्र न दिखावै पक्षके आदिकी तिथि न कहै इससे आयुष् नहीं घटता छींकलेकर निष्ठीवन करके उवासी लेकर वस्त्र पहिन आचमनकरै जिसदेशमें शत्रुओंके जीतनेवाला औ धर्मात्मा राजा होय उस देश में निवासकरना चहिये जहांदुष्ट राजा होय वहां बसनेसे सुख नहीं होता जहांकेलोक मत्सर आदिसे रहित न्याय में तत्पर औ परस्पर मिलकर रहनेहारे होयँवहां बसने से सुख होताहै जिसदेशके कृषीवल अर्थात् किसान अन्नभोगी होयँ जहां पूर्व बैर होय निरंतर मनुष्य उत्सवोंमेंव्यग्र रहैं औ जिगीषु राजाहोय वहां निवास न करै जिसदेशमेंऋणदेने हारा वैद्यश्रोत्रिय अर्थात् वेदवेत्ता ब्राह्मण औ सजलानदी होय उस देशमें निवास न करै मलिन दर्पण में मुख न देखै औ रात्रिके समयमें भी दर्पण न देखै इससे आयुष घटता है सुनार के घर में कभी भोजन न करै न सुनार का विश्वासकरै सुनार के घर में निवास करै औ न सुनार को अपने घरमें

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by eGangotri

रहने देवै फूटा पात्र टूटीखाट कुक्कुट औ श्वान इनको घरमें न रक्खै औ कांटोंके वृक्षभी घरमें न लगावै ये सबअप्रशस्त हैं फूटा पात्र घरमें होनेसे नित्य कलह होताहै टूटीखाट रहने से बाहनों का क्षय कुक्कुट औ श्वानके रहने से उस घरमें पितर भोजन नहीं करते औ कंटकी वृक्षोंके नीचे पिशाच रहते हैं बिना स्नान किये भोजन करनेहारा मल भोजन करताहै पंचयज्ञ कियेबिना पूय औ रुधिर के समान भोजन है औ असंस्कृत अन्न मूत्र के तुल्यहै सुवासिनी गर्भिणी वृद्ध बालक रोगी आदिको प्रथम भोजन कराय पीछे गृहस्थी भोजन करै देखते हुये मनुष्यों को बिनादियेजोभोजन करै वह केवल पाप भोजन करताहैपहिले वैश्वदेवकरआहुति देवै। ब्रह्मणेनमः। भूतानांपतयेनमः। गृह्येभ्योनमः। कश्यपायनमः। भूपतयेनमः इन मंत्रों से आहुति देकर गोग्रासदेवै फिरि पूर्वादि दिशाओं में इंद्रादि दिक्पालों को वलि देकर। ब्रह्मणेनमः। अंतरिक्षायनमः। सूर्यायनमः। विश्वेभ्योदेवेभ्योनमः। विश्वभूतेभ्योनमः। इन मंत्रों से वलिदेवै पीछेअपसव्य करके यमको वलिदेकर अग्निको निकाल हंतकारकल्पना करै औ विधिपूर्वक ब्राह्मण को देवै फिर अतिथि ब्राह्मण गुरु आदिको भोजन करायउत्तम गंध औ माल्यधारण कर हाथ पैर आर्द्र करके पूर्वाभिमुख अथवा उत्तराभिमुखबैठ प्रसन्नचित्त हो भोजन करै दुष्ट पुरुषका लाया हुआ जुगुप्सित असंस्कृत औ उच्छिष्ट अन्नको भोजन न करै बहुत मनुष्योंके बीच अतिकाल होजाने पर क्रोध करके व्याकुल होकर औ पात्रविना भोजन न करै आसनपर बैठ उत्तमपात्र में एकाग्रचित्त होकर भोजन करै पहिले मीठा भोजन कर लवण अम्ल कटु तिक्त आदि रस भोजन करै प्रथम मृदु भोजन के मध्यमें गरिष्ठ पदार्थ औ अंतमें फिर कोमल भोजन करै दिन में

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by eGangotri Foundation USA

अम्लके बीच रात्रि में दहीसत्तूके बीच औ सर्वकालमें कोविदार के बीच अलक्ष्मी का निवास होता है भोजन के समय अन्नकी निंदा न करै मौनसे भोजन करै प्राणायस्वाहा इत्यादि मंत्रोंसे पांचग्रास मौनपूर्वक लेकर पीछे भोजन करै भलीभांति भोजन कर पूर्वाभिमुख अथवा उत्तराभिमुख होकर आचमन करै पीछे हाथ पैर धोकरइष्टदेवताका स्मरण कर (प्राणापानसमानाना मुदानव्यानयोस्तथा।अन्नंपुष्टिकरंचास्तुममास्त्वव्याहतंसुखम् । अगस्तिरग्निर्वडवानलश्चभुक्तंमयान्नंजरयंत्वशेषम् । सुखंचतन्मेपरिणामसंभवं गच्छन्त्वरोगंखलुवासुदेव) ये मंत्रपढ़ अपने उदर पर हाथ फेरै सायंकाल के समय जो अतिथि आवैउसको पैर धोने के लिये जल देवै औ भोजन कराय उत्तम शय्यापर सुलावै आपभी रात्रिके समय उत्तम शय्यापर सोवै जिस खाट में जीव न होयँ कोमल बिछौना बिछा होय बहुत ऊंची नीची औ टूटी न होय उसपर शयन करै पूर्व अथवा दक्षिण की ओर शिर करके सोवै और दिशाओं में शिर करने से रोग उत्पन्न होतेहैं विहित कालमें प्रसन्नचित्त होय सामर्थ्य के अनुसारस्त्री संग करै रजस्वला गर्भिणी अस्नाता क्रोधयुक्त रोगिनीकुरूपा परस्त्री कामरहित क्षुधाकरके पीड़ित औ अति भोजन कियेहोय ऐसी नारीसेसंग न करै आपभी स्नानकर भूषितहोकर सकाम सानुराग औ प्रसन्नचित्त होकर नतो क्षुधित औ न बहुतभोजन करके एकांत में स्त्रीसंग करै चतुर्दशी अष्टमी पंचदशी आदि पर्व दिनोंमें स्त्रीसंग औ तैलाभ्यंग न करै ऋतुके अनंतर युग्म रात्रियों में स्त्रीसंग करै क्षौर कराय स्त्री संभोगकर तैलळगाय औ श्मशान में जाकर सचैल स्नानकरना चहिये गुरु पतिव्रता तपस्विनी आदि स्त्रियोंकी निन्दा न करै औ इनके साथ हास्य भी न करै जल औ अग्निको साथही धारण न करै देवतागुरु

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

औ ब्राह्मण की ओर पांव न पसारै अंजलि से जल न पीवै धूप
औ प्रचंड वायुका सेवन न करै जो पुरुष बंधुओं का संमान करै
भयभीतका आश्वासनकरै औ सदाचारमें रहै उसकेधर्म अर्थ औ
कामकोहानि नहींहोती वृथा मांस भक्षण न करै आक्रोशविवाद
औ पैशुन्यका त्यागकरै मांस कृसर शष्कुली खीर आदि पदार्थ
केवल अपने अर्थपाक न करै देवता औ पितरोंके निमित्त बनावै
रक्तपुष्पों की माला धारण न करै श्वेत पुष्पमाला धारै कमलों
औ कुवलय पुष्पों की माला का निषेध नहीं है शयनके समय
देव पूजन समय औ भोजन के समय अलग २ वस्त्र धारण करै
पिप्पल वट पनस लकुच औ गूलर के फल न खाय इनकेखाने से
संतानकी वृद्धि नहीं होती पतित मनुष्योंका ससर्ग न करै वृद्ध
यति दरिद्री मित्र इनको अपने घरमें निवासदेवै इनके रहने से
घरकी वृद्धिहोती है पारावत शुक औ मैना घर में रखने चहिये
छुछुंदरी चमगीदड़ आदि दुष्ट पक्षियों को घरमें न रहने देवै
बकरा बैल चंदन वीणा दर्पण घृत शहत जल औ अग्नि सदा
घरमें रखने चहिये हाथी रथ अश्व आदिउत्तमवाहनोंपर चढ़ना
योग्यहै राजा को सदा प्रजापालन करना चहिये प्रजापालन
करनेहारा राजापाप करके लिप्त नहीं होता यज्ञशास्त्रशब्द शास्त्र
गांधर्वशास्त्र पुराण इतिहास आदि सब जानने चहिये इतना कह
राजायुधिष्ठिर के प्रति श्रीकृष्णभगवान् कहतेभयेकि हे महाराज
यह सदाचार का लक्षण हमने संक्षेप से कहा है विशेष करके
सदाचारवृद्धोंसे सीखना चहियेआचार से ऐश्वर्य कीर्त्ति आयुष्
बढ़ते हैं आचार अलक्षण को दूर करताहै सब आगमोंमें आ-
चार को श्रेष्ठ कहाहै आचार से धर्मकी उत्पत्ति है आचार से
धनकी औ संतान की वृद्धि होतीहै यह सदाचार लक्षण यश
आयुष स्वर्ग औ मंगल देनेहारा है आचार के सेवन से

CC-0. Gurukul Kangri University, Haridwar Collection. Digitized by eGangotri Foundation Use

त्रिवर्ग की प्राप्ति होतीहै इसलिये बुद्धिमान् पुरुष शास्त्रोक्त रीति से सर्वदा सदाचार का सेवन करै॥

एकसौइकहत्तरवां अध्याय॥

श्रीकृष्णभगवान् कहतेहैं कि हे महाराज व्रत औ दानमय धर्म हमने आपको श्रवण कराया धर्म सबका मूलहै इसलिये धर्मका सेवन करना चहिये अर्थ औ काम का हमने जान कर वर्णन नहीं किया क्योंकि अर्थ औ काममें लोकों की स्वयमेव प्रवृत्ति होरहीहै कामी पुरुषको काममें प्रेरणा करना औलोभी को लोभमें प्रवृत्त करना अंधेको कुवेमें डालना है इसलियेअर्थ औ कामका किसीको उपदेश न करना चहिये सदाचार पुरुषों के हितके लिये यह भविष्योत्तर हमने कहा है इतिहास पुराण वेद वेदांग आदिमें जो कुछदेखा सो वर्णन किया लोक औ वेद से विरुद्ध जो बात होय उसमें श्रद्धा नहीं करना वह केवलमत्त प्रलापहै ऋषियोंके संमुख अति स्नेहसे हमने यह पुराण वर्णन किया है दांभिक शठ नास्तिक दुराचार आदिको यहप्रकाशित नहीं करना चहिये साधु जितेंद्रिय सदाचार औ देव ब्राह्मणभक्त जो पुरुष होयँ वे इसके पठन श्रवणके अधिकारीहैं वर्णआश्रम देवता ऋषि आदिकों के सब व्यवहार इस भविष्य पुराण में वर्णितहैं जहां यह पुराण रहै उसघर में सदा लक्ष्मी का निवास रहताहै औ महामारी आदि उपद्रव नहीं होते संक्रांतिग्रहण व्यतीपात आदि पर्वोंमें दक्षिणा सहित इसपुराण का दान करै वह दिव्य विमानमें बैठ स्वर्ग को जाता है औ उसके पितरोंका अक्षय स्वर्गवास होताहै हे महाराज आप धर्म का अवतार हैं औ धर्मका तत्व भली भांति समझतेहैं इसीलियेआपके स्नेहसे यह धर्मोपदेश हमने किया इस कारण सब लोकों को

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

इस पर श्रद्धा रखनी चहिये जो पुरुष सदाचार ब्राह्मण के मुख से इस पुराणका श्रवणकरैं औ दक्षिणा भोजन आदि से पौराणिक को संतुष्टकरैं वे धन संतान ऐश्वर्य यशपातेहैं औ बहुत दिन संसार सुख भोग कर विष्णुलोक को जातेहैं राजा शतानीक के प्रति इतनी कथा श्रवणकराय सुमंतुमुनि कहते भये कि हे राजन् आपके पितामह राजायुधिष्ठिरके प्रति इसप्रकार धर्मोपदेशकर श्रीकृष्णभगवान्ने कहा कि हे महाराज अबहम द्वारका कोगमन किया चाहते हैं फिर जब आप स्मरण करोगे तब आवेंगे सब संसार कालके वश है यह जान कर पुरुषको सदा प्रसन्न रहना चहिये पांडवोंने भी सत्कार पूर्वक श्रीकृष्ण भगवान् को द्वारका जानेकेलिये विदाकिया श्रीकृष्णभगवान् भाई बंधु जातिके लोग औ इष्टमित्रों से मिल ब्राह्मणों को प्रणामकर द्वारका के प्रति यात्रा करते भये याज्ञवल्क्य मुनिके प्रति ब्रह्माजीने जो उपदेश किया औ श्रीकृष्णभगवान् ने जो राजा युधिष्ठिरको श्रवण कराया वहीहमारे गुरुमहर्षि श्रीवेदव्यासजीनेरचा औहमनेआपकोउपदेशकिया इतनीकथासुनाय राजा शतानीकसे विदाहोय सुमंतु मुनिअपने आश्रमको जाते भये ॥ श्लोक ॥ जयतिपराशरसूनुःसत्यवतीहृदयनंदनोव्यासः। यस्यास्यकमलगलितंवाङ्मयममृतंजगत्पिबति ॥ दोहा ॥ भाषा माहिंविचारिकैतजिमनकोपरमाद।रचोरुचिरयहहरिकथाबुधदुर्गापरसाद १ हरनेहारीश्रवणतैंभक्तनकेभवफंद। बनीरहैयहभूमिपरजबलौंसूरजचंद २ भविष्यपुराणका उत्तरभाग समाप्त ॥

श्री भविष्यपुराण सम्पूर्ण भया ॥

मुंशीनवलकिशोरकेछापेखानेमुक्तामलखनऊमेंछपासितम्बरसन् १८८६ ई०
प्रकटहोकिइसपुस्तककी रजिस्ट्री बमूजिबदफा १८ ऐक्ट २५ सन् १८६७ ई० कनम्बर २९८ परहुईहै इसकारण मतबेकीआज्ञाबिना कोईछापनेकाअधिकारीनहींहै ॥
CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नामकिताब
दुर्गायननवकाण्ड
देवीभागवतभाषाबारहों-
कंस्ध
दास्तानअमीरहमज़ा
दैवज्ञाभरण
दोहावलीरत्नावली
(न)
निर्णयसिंधु
नाममाहात्म्य
नानार्थनवसंग्रहावली
नबीनसंग्रह
नवरत्नभाष्य
निघंटभाषा
नारीबोध
(प)
परमार्थसार
प्रेमसागर
पारसभाग
प्रेमरत्न
प्रेमामृतसार
पद्मावतभाषा
पत्रासंवत् १९४३
पटवारियोंकीपुस्तककेइतीनों भाग
प्रबोधचन्द्रोदयनाटक
पत्रहितैषिणीनागरीवकैथी
प्रेमप्रकाश
पद्यसंग्रह
(ब)
बृहज्जातक

नामकिताब
बृहत्संहिता
बिनयपत्रिकामूल व टीका सहित
ब्रजबिलास
ब्रजबिलाससारावली
ब्रह्मोत्तरखण्ड
बिष्णुपुराणभाषा
बारहपुराण
बीजककबीरदास
बीजगणितदोभाग
बैतालपच्चीसी
बकावलीसुमन
बैद्यजीवन
बैद्यमनोत्सव
बैद्यप्रिया
बालशिक्षा दो भाग
(भ)
भक्तमाल
भविष्यपुराण
भोजप्रबन्धसार
भाषाव्याकरण
भाषातत्वदीपिकाव्याकरण
भूगोलतत्व
भाषाचन्द्रोदय
भूगोलवर्णन
(म)
मार्कण्डेयपुराण सटीक
माधव निदान
मुहूर्तचक्रदीपिका
मुहूर्तचिन्तामणि सटीक

नामकिताब
मुहूर्तमार्तण्डसटीक
मुहूर्तगणपति
मुहूर्तदीपक
महाभारतदर्पण
तथाअलग २ उन्नीसों पर्व
महाभारत सबल
सिंहकीबनाई
मिश्रितमाहात्म्य
मनमोहनी
मनमोहन
महारामायण
मनुस्मृति
मंगलकोष
(य)
याज्ञवल्क्यस्मृति
योगवाशिष्ठ
युगुलसंबादबोधप्रकाश
यमुनालहरी
युगलबिलास
(र)
रेखागणितदोनोंभाग
रघुवंशसंस्कृत व भाषा दो जिल्दोंमें
रामायण मू० तु० कृत मोटेअक्षरकी
रामायणमूलतुलसीकृत
रामायणतुलसीकृत मूल छो० भैकांड
तथा मोटे और चिकने

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नामकिताब
कागज़की
रामायणतु०कृ०छापा टैप
रामायणतुलसीकृत सटीक
रामायण शुकदेवजी की मै कांड
रामायणटीका रामचरण की मैकांड
रामायणकी मानसप्रचा०
रामायण तुलसीकृत का शब्दार्थ कोष
रामायणतु०कृ०काइतिहास
रामायण तुलसीकृत की मानसदीपिका
रामायणकवितावलीतुलसीकृतमूलवसटीक
तथाश्रीवैद्यनाथजीकीटीका सहित
रामायण गीतावली मूल
तुलसीकृतवसटीक
श्रीमद्वाल्मीकीयरामायण भाषामैकांड
रामचन्द्रिका सटीक
रामायणरामबिलास
अद्भुत रामायण
रामायणअध्यात्मबिचार
रामब्याहोत्सव
रासलीला
रामगीता
रसचंद्रोदयवरसवृष्टि
रागप्रकाश
रागसंग्रह

नामकिताब
राविन्सनक्रूसोकाइतिहास
रसमंजूषा
रसायनप्रकाश
राजनीति
(ल)
लघुसिद्धांत कौमुदी
लग्नचंद्रिका
लिपिपुस्तकर२-सेट्टनं०तक
लिंगपुराण
लोधेश्वर माहात्म्य उर्दू व नागरी
लक्ष्मी सरस्वती संवाद दोनोंभाग
(श)
शार्गधरभाषाटीका सहित
शिवसहस्रनाम
शनिश्चरकी कथा
शिवविवाह व वंशावली
शंकर दिग्विजय
शिवपुराण भाषा
शंकरचरित्रसुधा
शृंगारलतिका
शिवसिंहसरोज
शृंगारबत्तीसी
शुकबहत्तरी
शिक्षापत्र
शालागीतचंद्रिका
शुक्रनीतिभाषा
शिक्षाप्रबन्ध
शिक्षावली

नामकिताब
शिशुबोध
शृंगारसुधाकर
शीघ्रबोध
सतशयी सटीक
(ष)
षट्पंचाशिका
(स)
सिद्धांतचंद्रिका
समासचक्र
संध्योपासन पंचमहायज्ञ
संग्रहशिरोमणि
सदाचारप्रकाश
सुधामंदाकिनी
सकीलदायरा
सामुद्रिक
सीताबनवास
सुखसागरकई प्रकारकी
स्कंदपुराणकासेतुबंधखंड
सत्यनामबिहारबृंदावन
सुंदरीतिलक
सूरसागरदोप्रकारकी
सहस्रजनीचरित्र
स्वयंबोध
स्त्रीसुबोधनी
सरक्युलरनम्बर(८०)अलिफसन्१८०७ई०
सवालजवाबपुलिस
सृष्टिकावर्णन
स्त्रियोंकीहितोपदेशिका इत्यादि

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

150670

ARCHIVES DATA BASE
2011 - 12

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA